

COLLECTION OF HINDU LAW TEXTS

No. 25 (5)

Śrī VAIDYANĀTHA DĪKSHITA'S

SMRTIMUKTĀPHALAM

( PART V )

KĀLA KĀNDĀ (5) and PRĀYAŚCHITTA KĀNDĀ (6)

EDITED BY

J. R. GHARPURE, B. A., LL. B. (Honours-in-Law), F. R. S. A.

*Principal, Law College, Poona; Senior Advocate, Federal Court  
of India, Fellow of the University of Bombay.*

BOMBAY.

---

First Edition

---

( All Rights Reserved. )

---

1940

---

---

Printed at the Aryabhushan Press, 915/1 Bhamburda Peth,  
Poona City, by Mr. V. H. Barve and  
Published by Mr. V. J. Gharpure, M. A., LL. B. at the Office  
of the Collection of Hindu Law Texts,  
Angre's Wadi, Vithalbhai Patel Road, Bombay 4.

---

---

धर्मशास्त्र ग्रन्थ माला.

[ ग्रन्थाङ्कः २५ (५) ]

श्री

वैद्यनाथदीक्षितीय-

**समृतिमुक्तापलम्**

( पञ्चमः खण्डः )

**कालकाण्डम् (५), प्रायश्चित्तकाण्डः (६)**

~~~~~♦०००♦~~~~~

जगन्नाथ रघुनाथ धारपुरे,

बी. ए., एलएल. बी., ( ऑनर्स-इन-लॉ )

पुण्यपत्तनस्थव्यवहारशालाया आचार्यः, मुम्बईविश्वविद्यालयसदस्यः

भारतसङ्घन्यायसभासदस्यः, लंदनराजकलासंघसदस्यः

इत्यनेन संशोधितं, मुद्रापितं, प्रकाशितं च ।

प्रथमावृत्तिः

शकाब्दाः १८६२

क्रिस्ताब्दाः १९४०

( सर्वेऽधिकाराः स्वायत्तीकृताः )

---

पुण्यपत्तने 'आर्यभूषण' मुद्रणालये 'विट्ठल हरि बर्वे' इत्यनेन मुद्रितः;  
मोहमय्यां 'विश्वनाथ जगन्नाथ धारपुरे,' इत्यनेन प्रकाशितश्च ।

---

श्री

## विषयानुक्रमणिका कालकाण्डम् (५)

| विषयः                                             |     | पृष्ठम् | विषयः                                   |     | पृष्ठम् |
|---------------------------------------------------|-----|---------|-----------------------------------------|-----|---------|
| कालनिरूपणम्                                       | ... | ...     | सप्तमी—पूर्वविद्वा—ग्राह्या ...         | ... | ८३१     |
| निमेषादिलक्षणम्                                   | ... | ...     | पूर्वविद्वाया अलाभे उत्तरविद्वा „       | ... | „       |
| तिथिस्वरूपम्                                      | ... | ...     | अष्टमीनिर्णयः                           | ... | „       |
| खण्डतिथिलक्षणम्                                   | ... | ...     | शुक्लाष्टमी परविद्वा ग्राह्या ...       | ... | „       |
| तत्र निर्णयः                                      | ... | ...     | द्वूर्वाष्टमीवते „ „ „                  | ... | ८३२     |
| “ विधिनिषेधादि                                    | ... | ...     | कृष्णजन्माष्टमी                         | ... | „       |
| प्रतिपाद्निर्णयः                                  | ... | ...     | अस्मिन्वते तिथिरेव निमित्तम्            | ... | „       |
| सा द्विविधा, शुद्धा विद्वा च                      | ... | „       | अत्र श्रावण इति मुख्यकल्पः              | ... | „       |
| पूर्वविद्वायाः पूज्यत्वम्                         | ... | „       | तत्स्वरूपम्                             | ... | „       |
| संमुखत्वम्                                        | ... | ...     | जयंतीवतम्                               | ... | „       |
| उत्तरविद्वाया निषेधः                              | ... | „       | तत्करणे फलम्                            | ... | „       |
| खर्वादपाहिंसादितिथिभेदाः                          | ... | „       | अकरणे प्रत्यवायः                        | ... | „       |
| तिथीनां वेधः                                      | ... | ...     | जयंतीवते फलविशेषः                       | ... | ८३३     |
| कार्तिकशुक्लप्रतिपदि बल्युत्सवः                   | ... | „       | ग्राह्या तिथिः                          | ... | „       |
| ज्योतिःशास्त्रप्रसिद्धाभावे स्मृत्यापादित्यहणम् „ |     |         | चत्वारः कल्पाः                          | ... | ८३४     |
| तत्रापवादः                                        | ... | ...     | पारणानिर्णयः                            | ... | ८३५     |
| एकभक्तवतम्                                        | ... | ...     | नवमीनिर्णयः                             | ... | „       |
| नक्तवतम्                                          | ... | ...     | दुर्गासरस्वतीवतादौ पूर्वविद्वा ग्राह्या | ... | „       |
| तत्र कालभेदेनाधिकारव्यवस्था                       | ... | „       | रामनवमीनिर्णयः                          | ... | ८३६     |
| त्रिमुहूर्तात्मकप्रदोषव्यापिन्यां तिथौ कार्यम् „  |     |         | दशावतारकालाः                            | ... | ८३७     |
| दानवतादीनां क्रमः                                 | ... | ...     | दशमीनिर्णयः                             | ... | „       |
| द्वितीयानिर्णयः                                   | ... | „       | एकादशीनिर्णयः                           | ... | „       |
| परविद्वाया उपोष्यत्वम्                            | ... | „       | उपवासः „                                | ... | ८३८     |
| तृतीयानिर्णयः                                     | ... | ...     | वैष्णवानां विशेषाः                      | ... | ८३९     |
| परविद्वैव ग्राह्या                                | ... | „       | वैष्णवशब्दार्थः                         | ... | „       |
| चतुर्थी— „                                        | ... | „       | स्मार्तैकादशीनिर्णयः                    | ... | ८४०     |
| विनायकव्रतानुष्ठाने मध्यान्हव्यापिनी ...          | „   | „       | अष्टादशभेदपूर्वकमुपवासनिश्चयः           | ... | ८४१     |
| पंचमी—पूर्वविद्वा ग्राह्या „                      | ... | „       | एकादश्या न्हासवृद्धिः                   | ... | ८४२     |
| षष्ठी—परविद्वा— „                                 | ... | „       | दिनत्रयविषये                            | ... | ८४३     |

| विषयः                                      | पृष्ठम् | विषयः                           | पृष्ठम् |
|--------------------------------------------|---------|---------------------------------|---------|
| दिनक्षये                                   | ... ८४४ | त्रयोदशीनिर्णयः                 | ... ८५० |
| नैमित्तिककाम्यौ                            | ... ८४५ | चतुर्दशी „                      | ... ८५१ |
| श्रवणद्वादशीनिर्णयः                        | ... ८४६ | अनन्तव्रतम्                     | ... „   |
| द्वादश्यां माध्यान्हकालः                   | ... ८४७ | शिवरात्रिव्रतनिर्णयः            | ... ८५२ |
| एकादश्युपवासे अधिकारिणः                    | ... „   | दिनद्वयव्यापिन्याम्             | ... ८५३ |
| पतिमत्या उपवासनिषेधः                       | ... „   | तत्र विवेकः                     | ... „   |
| उपवासासमर्थविषयः                           | ... ८४८ | इष्टिकालनिर्णयः                 | ... ८५४ |
| सूतकादावुपवासविचारः                        | ... „   | संधिमत्यां तिथौ                 | ... ८५५ |
| एकादश्यां नित्यनैमित्तिकशाङ्के उपवासभेदः „ |         | तिथिक्षयवृद्ध्योः संधौ          | ... ८५६ |
| काम्यकादशव्रितानुष्ठानक्रमः                | ... ८४९ | बौद्धायनमतानुसारिणाममावास्यायां |         |
| नित्योपासविषयः                             | ... ८५० | विशेषः                          | ... ८५७ |
| द्वादशीनिर्णयः                             | ... „   | नक्षत्रादिनिर्णयः               | ... ८५८ |

## प्रायश्चित्त काण्डः ( ६ )

| विषयः                        | पृष्ठम् | विषयः                                   | पृष्ठम्      |
|------------------------------|---------|-----------------------------------------|--------------|
| प्रायश्चित्ताधिकारिणः        | ... ८५९ | प्रायश्चित्तविधानस्थलम्                 | ... ८७१      |
| अकरणे दोषः                   | ... „   | ब्रह्महत्याप्रायश्चित्तम्               | ... ८७२      |
| एकविंशति नरकाः               | ... „   | वधोद्यमे                                | ... ८७२      |
| पापफलानि                     | ... ८६० | प्रायश्चित्ताकरणे                       | „ „          |
| रहस्यकृतपापफलम्              | ... ८६० | जनकादिहत्यायाम् „                       | ... ८७३      |
| नरकानुभवानन्तरं जन्मान्तराणि | ... ८६१ | क्षत्रियादिकृतब्रह्महत्याप्रायश्चित्तम् | ... „        |
| नवविधपापानि                  | ... ८६२ | क्षत्रियादिवधे                          | „ „          |
| ब्रह्महत्यादिमहापातकानि      | ... „   | शस्त्रग्रहणविचारः                       | ... ८७४      |
| प्रयोजकादीनां फलतारतम्यम्    | ... „   | गोवधप्रायश्चित्तम्                      | ... ८७५      |
| अतिपातकानि                   | ... ८६३ | गोवधनिमित्तकानि                         | ... „        |
| ब्रह्महत्यासमानि             | ... ८६४ | दण्डलक्षणम्                             | ... ८७६      |
| सुरापानसमानि                 | ... ८६५ | द्विगुणप्रायश्चित्तस्य निमित्तान्तरम्   | ... „        |
| स्वर्णस्तेय „                | ... „   | गृहे बद्धस्य गोर्मरणे                   | ... „        |
| गुरुतल्प „                   | ... „   | कवित्प्रायश्चित्तभावः                   | ... „        |
| उपपातकानि                    | ... ८६६ | शृङ्गभङ्गादौ                            | ... „        |
| कामाकामकृतपापविचारः          | ... ८६७ | प्राण्यन्तरहनने                         | ... ८७८, ८७९ |
| प्रकाशरहस्यप्रायश्चित्तम्    | ... ८६८ | वृक्षच्छेदादिप्रायश्चित्तम्             | ... ८७७      |
| परिषलक्षणम्                  | ... ८६९ | सुरापानादिप्रायश्चित्तम्                | ... ८७८      |
| परिषद्योग्याः                | ... ८७० | प्रायश्चित्ताकरणे दण्डः                 | ... ८७९      |

## विषयानुक्रमाणिका

३

| विषयः                              |     | पृष्ठम् | विषयः                                                                                                    |         | पृष्ठम् |
|------------------------------------|-----|---------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------|---------|
| प्रमादतः पाने                      | ... | ...     | रजस्वलागमने प्रायश्चित्तम्                                                                               | ...     | ८९०     |
| कामकारे „                          | ... | ...     | विधवागमने                                                                                                | „       | ८९१     |
| विष्णुवादिभक्षणे प्रायश्चित्तम्    | ... | „       | दास्यादिगमने                                                                                             | „       | „       |
| चंडालघटस्थजलपाने                   | ... | ८८१     | मुखमैथुने                                                                                                | „       | „       |
| „ वाप्यादिजलपाने                   | ... | „       | पश्वादिगमने                                                                                              | „       | „       |
| उच्छिष्टविषयापवादाः                | ... | „       | अवकीर्णप्रायश्चित्तम्                                                                                    | ...     | ८९२     |
| निषिद्धक्षीरपाने                   | ... | ८८२     | ब्रह्मचारिणो रेतस्वलने                                                                                   | ...     | „       |
| सुवर्णस्तेये                       | ... | „       | नैषिकादीनां तु कृतप्रायश्चित्तानामपि न                                                                   |         |         |
| स्तेयस्वरूपम्                      | ... | ८८३     | व्यवहारः                                                                                                 | ...     | „       |
| मनसापहारे                          | ... | „       | क्रतुकालातिक्रमे                                                                                         | ...     | „       |
| अल्पस्वर्णपहरणे                    | ... | „       | स्त्रीबालातुराणामर्धप्रायश्चित्तम्                                                                       | ...     | ८९३     |
| क्षत्रियादीनां स्तेयप्रायश्चित्तम् | ... | ८८४     | शपथोल्लंघने                                                                                              | „       | „       |
| रजतस्तेये                          | „   | „       | क्षत्रियादीनां द्राहणीगमने „                                                                             | „       | „       |
| ताम्रस्तेये                        | „   | „       | स्त्रियाः परपुरुषगमने „                                                                                  | „       | „       |
| कांस्यादिस्तेये                    | „   | „       | व्यभिचारिस्त्रीणां त्यागविचारः                                                                           | ...     | ८९४     |
| धनधान्यादिस्तेये                   | „   | „       | अनिमित्ततया भर्तृभार्यापरित्यागे „                                                                       | „       |         |
| भूम्यपहारे                         | „   | ८८५     | विधवाया गर्भत्यागः                                                                                       | ...     | ८९५     |
| वस्त्रादिस्तेये                    | „   | „       | शाङ्कितव्यभिचारे स्त्रीणां कर्तव्यम्                                                                     | ...     | „       |
| अजादिहरणे                          | „   | „       | बन्धुराहित्येन गमने                                                                                      | ...     | „       |
| गृहोपकरणहरणे                       | „   | „       | पुनरागमने प्रतीक्षणकालः                                                                                  | ...     | „       |
| सालग्रामादेः पूजोपकरणस्य च हरणे    | ... | „       | स्वातन्त्र्येण गताया अत्यागे }<br>भर्त्रादीनां प्रायश्चित्तम् }<br>ताडनादिना निर्गच्छन्त्याः त्यागविचारः | ...     | ८९६     |
| मध्यस्थेन धनग्रहणे                 | „   | „       | व्यभिचारिण्या गृहप्रवेशे शुद्धिप्रकारः                                                                   | „       |         |
| अग्न्यागमनप्रायश्चित्तानि          | ... | ८८६     | ब्रह्मण्याश्राण्डालादिगमने प्रायश्चित्तम्                                                                | „       |         |
| गुरुतल्पगमने                       | „   | „       | म्लेच्छरजकादिगमने „                                                                                      | ...     | ८९७     |
| „ तत्समानि                         | „   | „       | संसर्गस्य महापातकविचारः                                                                                  | ...     | „       |
| रेतस्सेकात्पूर्वनिवृत्तौ           | „   | „       | कर्मण एव पातित्यहेतुत्वम्                                                                                | ...     | „       |
| कामकृतगमने प्रायश्चित्तम्          | ... | ८८७     | कलौ संसर्गस्य पापमात्रहेतुत्वम्                                                                          | ...     | ८९८     |
| सवर्णागमने                         | „   | „       | तत्र प्रायश्चित्तम्                                                                                      | ...     | „       |
| सम्बन्ध्यादिस्त्रीगमने             | „   | ८८८     | गोचर्मक्षेत्रलक्षणम्                                                                                     | ...     | ८९८     |
| स्वैरिणीगमने                       | „   | „       | मिथ्याभिशंसने प्रायश्चित्तम्                                                                             | ८९८,८९९ |         |
| गर्भेत्पादने                       | „   | „       | ब्रह्मणापगुरणे                                                                                           | „       | ८९९     |
| चण्डाल्यादिगमने                    | „   | „       | ब्रह्मणतिरस्कारे                                                                                         | „       | „       |
| घोडशविधचण्डालीगमने प्रायश्चित्तम्  | ... | ८९९     | „ ताडना }                                                                                                | „       | „       |
| चर्मकारस्त्रीगमने                  | „   | „       |                                                                                                          |         |         |
| ब्रह्मचण्डालीगमने                  | „   | ८९०     |                                                                                                          |         |         |

## विषयानुक्रमणिका

| विषयः                                | पृष्ठम्  | विषयः                                         | पृष्ठम् |
|--------------------------------------|----------|-----------------------------------------------|---------|
| गुरुपित्राद्यधिक्षेपे प्रायश्चित्तम् | १००      | उपरागभोजने प्रायश्चित्तम्...                  | ११०     |
| पतनीये समुद्रयानादौ „ ...            | „ „      | भिन्नपात्रभोजने „ „                           | १११     |
| दुर्जनसेवाप्रायश्चित्तम् ...         | „ „      | रजस्वलापकाशभोजने „ „                          | „ „     |
| शूद्रसेवा „ „ ...                    | „ „      | निषिद्धदिने द्विर्भोजने „ „                   | „ „     |
| अशुचिकरणाम् „ „ ...                  | १०२      | ब्रह्मयज्ञानकरणे „ „                          | „ „     |
| अभिचारशापादि „ „ ...                 | „ „      | स्वस्वकाले गर्भाधानाद्यकरणे „                 | „ „     |
| भूतकाध्यापनाद्ययने „ „ ...           | „ „      | उष्णोदकस्नाने „                               | ११२     |
| ब्रह्मोज्ज्वे „ „ ...                | १०२      | यज्ञोपवीतादिना विना भोजने „                   | „ „     |
| अनाश्रमवासे „ „ ...                  | „ „      | शिखोपवीतप्रंशो „                              | „ „     |
| पञ्चाशद्वत्सरादुपरि विवाहनिषेधः      | „ „      | भोजनकाले क्षुतादौ „                           | „ „     |
| ऊढायाः पुनरुद्धाहे प्रायश्चित्तम्    | „ „      | शिवनिर्माल्यभोजने „                           | „ „     |
| सगोत्रादिविवाहे „ „ ...              | „ „      | पत्न्या सह भोजने „                            | ११३     |
| परिवित्त्यादेः „ „ ...               | १०३      | नीलवस्त्रधारणनिषेधः „                         | „ „     |
| उष्ट्रादियुक्त्यानारोहणे „ „ ...     | „ „      | पराव्रभोजने प्रायश्चित्तम् „                  | „ „     |
| खराद्यारोहणे „ „ ...                 | „ „      | नवश्राद्धादिभोजने „                           | „ „     |
| कारागृहवासप्रायश्चित्तम् ...         | „ „      | श्राद्धभोजने ब्रह्मचारिणः „                   | ११४     |
| कुण्डामवासे „ „ ...                  | १०४      | क्षत्रियादिश्राद्धभोजने „                     | „ „     |
| दुर्देशगमने „ „ ...                  | „ „      | नान्दीश्राद्धभोजने „                          | „ „     |
| श्वशूगालादिदंशने „ „ ...             | „ „      | श्राद्धशिष्टान्नभोजननिषेधः „                  | ११५     |
| शरीरे कूम्युत्पत्तौ „ „ ...          | १०५      | चौलाद्यन्नभोजने „                             | „ „     |
| दुर्वाह्णणगृहभोजने „ „ ...           | १०६, १०७ | अविक्रेयविक्रये „                             | ११६     |
| राजाद्यन्नभोजने „ „ ...              | १०६      | ऋणादि कृत्वा व्रताद्याचरणनिषेधः „             | ११७     |
| व्यतीपातादिभोजने „ „ ...             | १०७      | ब्राह्मणादिविक्रये प्रायश्चित्तम् „           | ११७     |
| अयुतसहस्रभोजने „ „ ...               | १०८      | श्रुतिस्मृत्यादेः विक्रये „ „ ...             | ११८     |
| शूद्रादिगृहे स्वयंपाकभोजनेऽपि        | „ „      | जलाग्न्यादिषु मर्तुमुद्यम्य निवृत्तस्य „ „    | „ „     |
| संघान्नभोजने „ „ ...                 | „ „      | पारिव्राज्यात् प्रचयुतौ „                     | ११९     |
| क्रीतान्नभोजने प्रायश्चित्तम्        | १०८      | आत्मघातिनः शवदहनादौ „                         | „ „     |
| यागान्नभोजने „ „ ...                 | १०९      | अनृतभाषणे „                                   | १२०     |
| अस्त्रात्वा भोजने „ „ ...            | „ „      | मिथ्याभूतचर्तुर्वर्णवधशपथे „                  | „ „     |
| अशुचिकालभोजने „ „ ...                | „ „      | कच्चित्तु निमित्तविशेषे अनृतमपि वक्तव्यम् १२१ | „ „     |
| पर्युषितान्नभोजने „ „ ...            | „ „      | श्रौताग्नित्यागे प्रायश्चित्तम् ...           | „ „     |
| ओदनवटकमाषवटकादिभक्षणे „              | „ „      | नास्तिक्यप्रायश्चित्तम् ...                   | १२२     |
| परमान्नकूसरभक्षणे नियमाः             | ११०      | एकपंक्तौ वैषम्येण दाने „                      | „ „     |
| व्रात्यकुष्टचायन्नभोजने „ „ ...      | „ „      | अपाङ्गेयपंडित्यभोजनादौ „                      | „ „     |
| अन्तःशवधामभोजने „ „ ...              | „ „      | पलाशदारुशयनादौ „                              | „ „     |

| विषयः                                                 | पृष्ठम् | विषयः                           | पृष्ठम् |
|-------------------------------------------------------|---------|---------------------------------|---------|
| श्राद्धे निमन्त्रितस्य कालातिक्रमे प्रायश्चित्तम् ९२३ |         | पादकृच्छ्राः                    | ... ९३६ |
| क्षत्रियाद्यभिवादनादौ „ „                             | ९२४     | तत्र वर्णभेदेन व्यवस्था         | ... ९३६ |
| शूद्रस्य वेदवाक्यश्रवणे „ „                           | ९२५     | अतिकृच्छ्रलक्षणम्               | ... ९३७ |
| <b>प्रतिग्रहविचारः</b>                                |         | कृच्छ्रातिकृच्छ्र „             | ... „ „ |
| वृत्त्यर्थं सत्प्रतिग्रहे न प्रायश्चित्तापेक्षा ... „ | ९२६     | तस्कृच्छ्र „ „                  | ... „ „ |
| तत्र व्यवस्था ... ... ९२४                             |         | सांतपनकृच्छ्र „                 | ... „ „ |
| तुलापुरुषादिप्रतिग्रहे प्रायश्चित्तम् ... „           | ९२८     | महासांतपनम्                     | ... ९३८ |
| ब्रह्माण्डघटविषये „ ... ... ९२५                       |         | पराकलक्षणम्                     | ... „ „ |
| हिरण्यगर्भविषये „ ... ... „                           | ९२६     | पर्णकृच्छ्र „ „                 | ... „ „ |
| कल्पतरुविषये „ ... ... ९२६                            |         | फलकृच्छ्रादि „ „                | ... „ „ |
| गोसहस्रप्रतिग्रहे प्रायश्चित्तम् ... ९२७              |         | वारुणस्त्रीसौम्यकृच्छ्रादि „ „  | ... „ „ |
| हिरण्यकामधेनुप्रतिग्रहे „ ... ... „                   | ९२८     | तुलापुरुषकृच्छ्राः „ „          | ... ९३९ |
| हिरण्याश्वप्रतिग्रहे „ ... ... „                      | ९२८     | अघमर्षणकृच्छ्रलक्षणम्           | ... „ „ |
| हिरण्याश्वरथप्रतिग्रहे „ ... ... ९२८                  |         | दैवतकृच्छ्र „ „ „               | ... „ „ |
| हिरण्यहस्तिप्रतिग्रहे „ ... ... „                     | ९२९     | यशकृच्छ्र „ „ „                 | ... „ „ |
| पञ्चलाङ्गलप्रतिग्रहे „ ... ... „                      | ९२९     | यावककृच्छ्र „ „ „               | ... „ „ |
| धराप्रतिग्रहे प्रायश्चित्तम् ... ... ९२९              |         | प्रसृतियावककृच्छ्र „ „          | ... „ „ |
| विश्वचक्रप्रतिग्रहे „ ... ... „                       | ९२९     | चांद्रायणकृच्छ्र „ „ „          | ... ९४० |
| कल्पलता „ „ ... ... „                                 | ९२९     | तत्र पिपीलिकामध्यम „ „          | ... „ „ |
| सप्तसागर „ „ ... ... „                                | ९२९     | वपनादिक्रमः                     | ... „ „ |
| चर्मधेनुप्रतिग्रहे „ „ ... ... „                      | ९२९     | चान्द्रायणानि                   | ... ९४१ |
| महाभूतघट „ „ ... ... ९३०                              |         | तेषां स्वरूपम्                  | ... „ „ |
| साधारणप्रायश्चित्तम् ... ... „                        | ९२९     | तत्र ग्रासपरिमाणम्              | ... „ „ |
| अतिपातकिप्रायश्चित्तम् ... ... ९३१                    |         | चान्द्रायणफलम्                  | ... „ „ |
| संकरीकरणादौ „ „ ... ... „                             | ९२९     | व्रतग्रहणप्रकारः                | ... „ „ |
| उपपातकिप्रायश्चित्तम् ... ... „                       | ९२९     | असमापने प्रत्यवायः              | ... „ „ |
| रहस्यपापप्रायश्चित्तानि ... ... ९३२, ९३३              |         | ब्रह्मकूर्चस्वरूपं तत्परिमाणं च | ... ९४२ |
| तत्र प्रतिपदोक्तप्रायश्चित्तम् ... ... ९३४            |         | देशविशेषाः                      | „ „ „   |
| रहस्यसुरापानादौ „ „ ... ... ९३५                       |         | प्राजापत्यादिप्रत्याम्नायाः     | ... „ „ |
| उपपातकरहस्यप्रायश्चित्तम् ... „                       | ९३६     | चान्द्रायणादीनां „ „            | ... ९४३ |
| अधिकारभेदेन प्रयोगान्तरम् ... ... ९३६                 |         | महानदीपरिगणनम्                  | ... „ „ |
|                                                       |         | गोदानादावशक्तेन तेभ्यस्तूपदानम् | ... ९४४ |

## स्मृतिमुक्ताफलम् कालकाण्डम् ( ५ )

---

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ कालो निरूप्यते ॥ स च कर्मण्यंगभूतः । तदाह गार्यः—  
“ तिथिनक्षत्रवारादि साधनं पुण्यपापयोः । प्रधानगुणभावेन न स्वातंत्र्येण ते क्षमाः ” ॥ इति ।

व्यासोऽपि—“ यन्तिथौ यच्च नक्षत्रे वारे यत्र च यद्यथा ।

५

“ विहितं वा निषिद्धं वा पालयन्त्रिदिवं ब्रजेत् । अपालयन् पुनर्मोहादपवित्रं पदं ब्रजेत् ” ॥ इति ।

निमेषादिलक्षणम् । काल एकोऽप्युपाधिभेदादनेकप्रकारः । तथा च गार्यः—

“ अक्षिपक्षमपरिक्षेपो निमेषः परिकीर्तिः । द्वौ निमेषौ त्रुटिर्नाम द्वौ त्रुटी तु लवः स्मृतः ॥

“ द्वौ लवौ क्षण इत्युक्तः काष्ठा प्रोक्ता दश क्षणाः ।

“ त्रिंशत्काष्ठाः कलाः प्रोक्ताः कलास्त्रिंशन्मुहूर्तकः । ते तु त्रिंशदहोरात्र इत्याह भगवान्हरः ” ॥ इति । १०

तिथिस्वरूपम् । तिथिस्वरूपमुक्तं कालादर्शे—

“ रवीन्द्रोर्योगविरहौ क्रमाद्वर्षश्च पूर्णिमा । कलाः प्रवेशनिर्याणैस्तिथयोऽन्याश्च पक्षयोः ” ॥ इति ।

सूर्याचंद्रमसोः सञ्चिकर्षे दर्शः । विप्रकर्षः पूर्णिमा भवति । इंदोः कलानां रवौ प्रवेशनिर्याणैः

सूर्याचंद्रमसोः कृष्णशुक्लपक्षयोः प्रतिपदादयः तिथयो भवेयुरित्यर्थः ।

खण्डतिथिलक्षणम् । तत्र संपूर्णतिथौ नास्ति संदेहः । यदा ज्ञासवृद्धिवशेन संडतिथि- १५  
भवति तदा निर्णयोऽपेक्ष्यते । ज्ञासवृद्धी च गार्येण दर्शिते—

“ सर्वा दर्पा तथा हिंसा त्रिविधं तिथिलक्षणम् । धर्मधर्मवशादेव तिथिस्त्रेधा विवर्तते ” ॥ इति ।

सर्वा समतिथिः । दर्पा वृद्धियुक्ता । हिंसा क्षययुक्ता ।

खंडतिथौ विधिनिषेधव्यवस्थामाह वृद्धगार्यः—

“ निमित्तं कालमादाय वृत्तिर्विधिनिषेधयोः । विधिः पूज्यतिथौ तत्र निषेधः कालमात्रके ” ॥ २०

“ तिथीनां पूज्यता नाम कर्मानुष्ठानयोग्यता । निषेधस्तु निवृत्यात्मा कालमात्रमपेक्षते ” ॥ इति ।

“ दर्शे स्नात्वा पिवृभ्यस्तु दद्यात्कृष्णतिलोदकम् ” इत्यादिविधिः कर्मानुष्ठानयोग्यतिथिमपेक्षते ।

“ अमावास्यायां न गच्छेत्प्राप्तकालमपि स्त्रियम् । तैलं च न सृशेदामं वृक्षादीश्च न छेदयेत् ” ॥

इत्यादिको निषेधस्तिथिमात्रमपेक्षत इत्यर्थः । एवं च सति खंडतिथौ पूज्यत्वं निर्णेतव्यं भवति ।

तत्र प्रतिपदमारभ्य पंचदश्यंतास्तिथयः क्रमेण निर्णयन्ते । २५

प्रतिपञ्चिर्णयः । प्रतिपद द्विविधा । शुद्धा विद्वा चेति । या सूर्योदयमारभ्य पुनरुदयपर्यंता भवति सा शुद्धा

“ सर्वा द्वेताश्च तिथय उदयादोदयस्थिताः । शुद्धा इति विनिश्चेयाः षष्ठिनाडन्तो हि वै तिथिः ” ॥ इति  
स्मृतेः । शुद्धत्वात्प्रतिपदादिविहितं सर्वं निःश्वेत्प्राप्तव्रानुष्ठेयम् । विद्वा च द्विविधा । पूर्वदिने दर्श-  
युक्ता उत्तरदिने द्वितीयायुक्ता चेति । तत्र पूर्वविद्वायाः पूज्यत्वमाह पैठीनसिः— ३०

“ पंचमी सप्तमी चैव दशमी च त्रयोदशी । प्रतिपञ्चवमी चैव कर्तव्या संमुखा तिथिः ” ॥ इति ।

संमुखत्वं च स्कांदपुराणे विवेचितम्—

“संमुखा नाम सायाह्नव्यापिनी दृश्यते यदा । प्रतिपत्संमुखा कार्या या भवेदापराह्लिकी” ॥ इति ।

व्यासोऽपि—“प्रतिपत्सैव विजेया या भवेदापराह्लिकी” ॥ इति ।

एतस्यैव पक्षस्यानुग्राहक उत्तरविद्वाया निषेधो बृहद्वसिष्ठेन स्मर्थते—

५ “द्वितीया पंचमी वेदादशमी च त्रयोदशी । चतुर्दशी चोपवासे हन्युः पूर्वोत्तरे तिथी” ॥ इति ।

द्वितीयादयः स्ववेदेन पूर्वमुत्तरां च तिथिं हन्युरित्यभिधानादुत्तरविद्वा प्रतिपदुपवासे निषिद्धा भवति । तथा च ब्रह्मकैवर्ते—

“प्रतिपत्पंचमीभूतसावित्रव्रतपूर्णिमा । नवमी दशमी वैव नोपोष्याः परसंयुताः” ॥ इति ।

सावित्रव्रतपूर्णिमा सावित्रव्रतयुक्ता पौर्णमासी । एतच्च पूर्वविद्वायाः प्रतिपदः पूज्यत्वाभिधानं

१० शुक्लप्रतिपद्विषयम् । अत एवोक्तं निगमे—

“युग्माश्चियुग्मूतानां षण्मुन्योर्वसुरंवयोः । रुद्रेण द्वादशी युक्ता चतुर्दश्या च पूर्णिमा ॥

“प्रतिपद्यमावास्या तिथ्योर्युग्मं महाफलम्” ॥ इति । युग्मं द्वितीया । अग्निस्तृतीया । युग्मं चतुर्थी । भूतं पंचमी । षट् षष्ठी । मुनिः सप्तमी । वसुरष्टमी । रंधं नवमी । रुद्र एकादशी । अत्र युग्माग्न्यादिसप्तयुग्मेषु पूर्वी तिथिरुत्तरविद्वा ग्राह्या । उत्तरा तु पूर्वविद्वेत्युक्तं भवति ।

१५ स्मृत्यंतरेऽपि—

“एकादशी तथा षष्ठी अमावास्या चतुर्थिका । उपोष्याः परसंयुक्ताः पराः पूर्वेण संयुताः” ॥ इति । अन्यत्रापि—

“षष्ठचष्टमी अमावास्या कृष्णपक्षे त्रयोदशी । एताः परयुताः पूज्याः पराः पूर्वेण संयुताः” ॥ इति ।

अत्र ‘प्रतिपद्यमावास्या पराः पूर्वेण संयुता’ इति चामावास्यायुतायाः प्रतिपदः उपोष्यत्वा-

२० भिधानात् शुक्लप्रतिपद्विषयत्वं स्फुटमवगम्यते । न हेतानि वचनानि कृष्णपक्षविषयतायाः कथंचिदपि योजायितुं शक्यन्ते । एतदनुसारेण “प्रतिपत्सद्वितीया स्यात् द्वितीया प्रतिपदुता” इत्यापस्तम्बवचनं कृष्णपक्षविषयत्वैव संकोचनीयम् । एवं च ‘नोपोष्याः परसंयुता’ इति द्वितीयायुतोपवासनिषेधः शुक्लपक्षविषयतया योजनीयः । यत्तु गोभिलवचनम्—

“खर्वा दर्पा तथा हिंसा त्रिविधं तिथिलक्षणम् । खर्वादर्पे परे कार्ये हिंसा स्यात्पूर्वकालिकी” ॥ इति ।

२५ यदपि बोधायनवचनम्—

“वर्धमानस्य पक्षस्य उदया पूज्यते तिथिः । यदा पक्षः क्षयं याति तदा स्यादापराह्लिकी” ॥ इति । उदया उदयंगतेत्यर्थः । यदपि स्मृत्यंतरवचनम्—

“सा तिथिस्तद्होरात्रं यस्यामभ्युदितो रविः । वर्धमानस्य पक्षस्य न्हासे त्वस्तमया तिथिः” ॥ इति ।

बृद्धौ तिथिरुदयगता पूज्या क्षये त्वस्तगता पूज्येत्यर्थः । एतान्येकोद्दिष्टाद्विविषयाणि ।

३० तथाह व्यासः—

“द्वितीयादिक्युग्मानां पूज्यतानियमादिषु । एकोद्दिष्टादिवृद्ध्यादौ न्हासवृद्ध्यादिचोदना ॥” इति । नियमादिष्टित्यादिशब्देन पितृकर्मविद्यतिरिक्तव्रतोपवासादिसकलकर्मणां ग्रहणम् । एकोद्दिष्टादीत्यादि-  
शब्देन पार्वणश्राद्धस्य ग्रहणम् ।

**कालादर्शेऽपि—**

“प्रत्यादिकादिशान्द्रादौ वृद्धिर्हसादिचोदना । द्वितीयादिकयुग्मानां ब्रतादौ पूज्यता भवेत् ॥” इति ।  
तदेवं वृद्धिर्हसानादरेण उपवासे शुक्लप्रतिपत् पूर्वविद्वा ग्राह्या कृष्णप्रतिपदुत्तरविद्वेति स्थितम् ।  
तिथीनां वेधः पैठीनसिना दर्शितः—

“पश्चद्येऽपि तिथयस्तिथिं पूर्वा तथोत्तराम् । त्रिभिर्मुहूर्तैर्विध्यंति सामान्योऽयं विधिः स्मृतः” ॥ इति । ५  
पूर्वव्युरुदयानंतरमभावास्या त्रिमुहूर्ता ततोऽधिका वा सा प्रतिपदं विध्यति । परेवुरस्तमयात्प्राक्  
द्वितीया त्रिमुहूर्ता ततोधिका वा साऽपि पूर्वा प्रतिपदं विध्यतीत्येवं सर्वतिथिसाधारणो वेधो  
विशेषवचनाभावविषये द्रष्टव्यः । वेध्यापि प्रतिपदिवा त्रिमुहूर्ता ततोधिका वा भवेत् सा वेधार्हा  
भवेत् । न न्यूना । तदुक्तं कालनिर्णये—

“शुद्धा विद्वा तिथिः शुद्धा हीना तिथ्यान्ययाहनि । उद्ये पूर्वया तिथ्या विध्यते त्रिमुहूर्तकैः” ॥ १०

“सायं तूत्तरया तद्वन्न्यूनया तु न विध्यते । वेध्यापि त्रिमुहूर्तैव न न्यूना वेधमर्हति ॥

“शुक्लपक्षे दर्शविद्वा कृष्णे विद्वा द्वितीयया । उपोष्या प्रतिपच्छुक्ले मुख्या स्यादापराह्निकी ॥

“तदभावे तु सायान्हव्यापिनी परिगृह्यताम् । प्रातः संगवमध्यान्हापराह्नाः सायमित्यसौ ॥

“अत्रान्हः पंचधा भागो मुख्यो द्वित्यादिभागतः” ॥ इति । पूर्वाण्होऽपराण्ह इति द्वेधा  
विभागः । पूर्वाण्हो मध्यान्होऽपराह्न इति त्रेधा विभागः । पूर्वाण्हो मध्यान्हः अपराण्हः सायान्ह १५  
इति चतुर्था विभागः । प्रातः संगवो मध्यान्होऽपराण्हः सायान्ह इति पंचधा विभागः । द्वित्यादि-  
विभागात् पंचधाविभागस्य बहुश्रुतिस्मृतिसंमतत्वात् स एव मुख्य इत्यंतिमश्लोकार्थः । एवं च  
सत्युक्तेषु पंचस्वन्हो भागेषु पंचमं सायान्हभागं व्याप्य ततः पूर्व चतुर्थमपराण्हभागं या शुक्ल-  
प्रतिपत्सृशति तादृशी पूर्वविद्वोपवासे पूज्या । स चोपवासः भविष्योत्तरपुराणे कार्तिक-  
मासांतदर्शे पायसभोजनादिनियमं विधाय प्रतिपदि विहितः—

२०

“मार्गशीर्षे ततो मासि प्रतिपद्यपरेऽहनि । स्पृष्टा गुरुं चोपवसेन्महादेवं स्मरन्मुहुः” ॥ इति  
स्कंदपुराणे कार्तिकशुक्लप्रतिपदि बल्युत्सवो विहितः । एवमन्यत्रापि द्रष्टव्यम् । पूर्वविद्वायां  
शुक्लप्रतिपदि योऽयमुपवासो विहितः तस्य प्रातरेव संकल्पः कार्यः । तदानीं ज्योतिःशास्त्र-  
प्रसिद्धप्रतिपदभावेऽपि स्मृतिभिरापादितायाः प्रतिपदः सत्वात् । अत एव देवलः—

“यां तिथिं समनुप्राप्य त्वस्तं याति दिवाकरः । सा तिथिः सकला ज्ञेया दानाध्ययनकर्मसु” ॥ इति । २५  
अत्र कर्मस्विति बहुवचनादुपवासादिनिस्तिलदैवकर्मपरिग्रहः । अत्रास्तमयात्पूर्वं मुहूर्तत्रय-  
व्यापिनीं तिथिं समनुप्राप्येति व्याख्येयम् । न तु ततोऽप्तव्यात्तिर्न विवक्षिता ।  
तथा च वृद्धवासिष्ठः—

“यस्यां तिथावस्तमियात्सूर्यस्तु त्रिमुहूर्तकैः । यागदानजपादिभ्यस्तामेवोपक्रमेत्तिथिम्” ॥ इति ।

**स्कांदेऽपि—**

“यां तिथिं समनुप्राप्य यात्यस्तं पद्मिनीप्रियः । सा तिथिस्तद्विनो प्रोक्ता त्रिमुहूर्तायदा भवेत्” ॥ इति ।  
स्तौरेऽपि—

“यां प्राप्यास्तमुपेत्यर्कः स्याद्वेत्सा त्रिमुहूर्तगा । धर्मकृत्येषु सर्वेषु संपूर्णां तां विदुर्बुधाः” ॥ इति ।

एवं च सायंतनत्रिमुहूर्तशुक्लप्रतिपदुपेतायां तिथौ प्रातरेव संकल्प्य प्रतिपदुपवासः कर्तव्य इति  
निश्चयः । पूर्वविद्वायां शुक्लप्रतिपदि उपवासं कृत्वा परेवुः तिथ्यन्ते पारणं कुर्यात् । तदाह सुमंतुः— ३५

“तिथिनक्षत्रनियमे तिथिभान्ते च पारणम् । अतोऽन्यथा पारणे तु ब्रतभंगमवाप्नुयात्” ॥ इति ।

निगमे—“पूर्वविद्वासु तिथिषु भेषु च श्रवणं विना । उपोष्य विधिवत्कुर्यात्तदंते तु पारणम्”॥ इति ।  
स्कांडेऽपि—

“ तिथीनामेव सर्वासामुपवासव्रतादिषु । तिथ्यंते पारणं कुर्याद्विना शिवचतुर्दशी ” ॥ इति ।  
अस्य तिथिभांतपारणस्यापवादः क्वचित् स्मर्यते—

५ “ तिथ्यंते चैव भांते च पारणं यत्र चोद्यते । यामत्रयोर्ध्वर्वर्तिन्यां प्रातरेव हि पारणम् ” ॥ इति ।  
यत्तु देवलवचनम्—

“ उपवासेषु सर्वेषु पूर्वाङ्गे पारणं भवेत् । अन्यथा तत्फलस्यार्थं धर्ममेवोपसर्पति ” ॥ इति । धर्मो  
यमः । तत्पूर्वविद्वाव्यतिरिक्तपरविद्वाशुद्धतिथ्युपवासविषयम् । पूर्वविद्वायां विहितस्योपवासस्य  
केनापि निमित्तेन तत्रानुष्ठानासंभवे सत्युत्तरविद्वा गौणकालत्वेन ग्राह्या । “ पौर्वाङ्गिकास्तु तिथयो  
१० देवकार्ये फलप्रदा ” इति सामान्येन स्मरणात् । उक्तं च कालनिर्णयसंघ्रहे—

“ अभावेऽपि प्रतिपदः संकल्पः प्रातरिष्यते । तिथिस्त्रियामतोर्वाङ्कु चेत् तिथ्यंते पारणं भवेत् ॥

“ मुख्यतिथ्यंतरत्वे तु तिथिशेषोऽपि गृह्यताम् ” ॥ इति ।

एकभक्तव्रतनिर्णयः । अथैकभक्तं निर्णयते । तच्च त्रिविधम् । स्वतंत्रमन्यांगं उपवासप्रति-  
निधिरूपं चेति । तेषु स्वतंत्रं ब्रह्मपुराणे पूर्यते—“प्रतिपदेकभक्ताशी समाप्ते कपिलाप्रदा”॥ इति ।  
१५ तत्र कर्मकालव्यापिनी तिथिर्ग्राह्या “ यो यस्य विहितः कालस्तत्कालव्यापिनी तिथिः ”  
इति स्मृतेः । कर्मकालस्तत्कर्मस्वरूपं चेत्युभयं स्कंदपुराणे दर्शितम्—

“ दिनार्धसमयेऽतीते भुज्यते नियमेन यत् । एकभक्तमिति प्रोक्तमतस्तत्स्याद्वैव हि ” ॥ इति ।  
देवलोऽपि—

“ दिनार्धसमयेऽतीते भुज्यते नियमेन यत् । एकभक्तमिति प्रोक्तं न्यूनं ग्रासत्रयेण तु ” ॥ इति ।  
२० अत्र दिनार्धस्योपरि सार्धमुहूर्तपरिमितः काल एकभक्तस्य मुख्यः । दिनार्धऽतीते सति समनन्तर-  
भावित्वादस्तमयात् प्राचीनो गौणः कालः । दिवेत्यभ्यनुज्ञानात् । अत्र मुख्यकालव्यापिनी तिथिर्ग्राह्या ।  
अत एव पाद्मे—“मध्यान्हव्यापिनी ग्राह्या एकभक्ते सदा तिथिः ” ॥ इति । बोधायनोऽपि—

“ मध्यान्हव्यापिनी ग्राह्या एकभक्तव्रते तिथिः ” ॥ इति । अत्र निर्णेतव्यो विषयः षोढा भिवते ।  
पूर्वविद्वरेव मध्यान्हव्यापित्वं परेद्युरेव तद्वापित्वम् उभयत्र साम्येन तदेकदेशव्यापित्वं वैषम्येण  
२५ तदेकदेशव्यापित्वं चेति । तत्र प्रथमद्वितीययोर्मध्यान्हव्यापित्वस्यैव निर्णयिकत्वम् । तृतीये पूर्व-  
विद्वा ग्राह्या । मुख्यकालव्याप्तिः समत्वेऽपि गौणकालव्याप्तिः आधिकत्वात् । चतुर्थेऽपि पूर्वविद्वैव ।  
उभयत्र मुख्यकालव्याप्त्यभावेऽपि गौणकालव्याप्तिलाभात् । पञ्चमेऽप्ययमेव न्यायो योज्यः । षष्ठे तु  
यस्मिन् दिने आधिकव्याप्तिः सैव ग्राह्या । एवं स्वतंत्रैकभक्तं निर्णीतम् । अन्यांगं त्वपराणहादौ  
कार्यम् । “ पूजावतेषु सर्वत्र मध्यान्हव्यापिनी तिथिः ” इति ‘ मध्यान्हे पूजयेन्द्रूप ’ इत्यादि  
३० शास्त्रारंगिनः पूजादैर्मध्यान्हे विहितत्वेन एकभक्तस्य मुख्यकालासंभवात् उपवासप्रतिनिधिरूपमेक-  
भक्तमुपवासतिथौ कार्यम् । तस्य गौणोपवासत्वात् ।

अत एव सुमंतुः—“ तिथौ यत्रोपवासः स्यादेकभक्तेऽपि सा तिथिः ” ॥

नक्तव्रतम् । अथ नक्तं निरूप्यते । तच्च वराहपुराणे पठ्यते—

“मार्गशीर्षे सिते पक्षे प्रतिपदा तिथिर्भवेत् । तस्यां नक्तं प्रकुर्वीत रात्रौ विष्णुं च पूजयेत्”॥ इति ।  
नक्तं कुर्वीत दिवा अभुंजानो रात्रिभोजनं कुर्वीतेत्यर्थः । तस्य काल उक्तः कालादृशे—

“ त्रिमुहूर्तस्तमानात्प्राक् परतश्च तथाविधा । तस्या नक्तव्रतं कुर्याद्वरिनक्तव्रताद्वते ” ॥ इति ।  
कौर्मेऽपि—

“ प्रदोषव्यापिनी यत्र त्रिमुहूर्ता यदा दिवा । तदा नक्तव्रतं कुर्यात्स्वाध्यायस्य निवेदवत् ” ॥ इति ।  
एतत्प्रदोषव्यापिस्तिर्मुख्यः कल्पः सायंकालव्यापिरनुकल्प इत्येवंपरम् । तथा च कालद्वयं भविष्यत्पुराणे  
दर्शितम्—“मुहूर्तोन्दिनं नक्तं प्रवद्दति मनीषिणः । नक्तव्रदर्शनान्नक्तमहं मन्ये गणाधिप” ॥ इति ।  
अस्य च कालद्वयस्याधिकारिभेदेन व्यवस्थामाह देवलः—

“ नक्तव्रदर्शनान्नक्तं गृहस्थस्य बुधैः स्मृतम् । यतेर्दिनाष्टमे भागे तस्य रात्रौ निषिध्यते ” ॥ इति । १०  
स्मृत्यंतरेऽपि—

“ नक्तं निशायां कुर्वीत गृहस्थो विधिसंयुतः । यतिश्च विधवा चैव कुर्यात्तस्दिवाकरम् ॥

“दिवा नक्तं तु तत्प्रोक्तमंतिमे घटिकाद्वयम् । निशा नक्तं तु विजेयं प्रवदन्ति मनीषिणः ॥

“ नक्तव्रदर्शनान्नक्तं यामार्दे प्रथमे सदा ” ॥ इति । रात्रिनक्तभोजने कालमाह व्यासः—

“ त्रिमुहूर्तः प्रदोषः स्याद्वानावस्तंगते सति । नक्तं तत्र तु कर्तव्यमिति शास्त्रविनिश्चयः ” ॥ इति । १५  
नक्तं त्रिमुहूर्तात्मकप्रदोषव्यापिन्यां तिथौ कार्यम् । यदाह वत्सः—

“ प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या सदा नक्तव्रते तिथिः । एकादशीं विना सर्वा शुक्लकृष्णे तथा स्मृता ” ॥ इति ।

अयमपि विषयः षोढा भिष्यते । पूर्वेद्युरेव प्रदोषव्यापिः परेद्युरेव तद्यासिः उभयत्रापि तद्यासिः  
उभयत्र तदभावः । उभयत्र साम्येन तदेकदेशव्याप्तिः । उभयत्र वैषम्येण तदेकदेशव्याप्तिरिति ।

तत्र प्रथमद्वितीययोः प्रदोषव्यापिनियामिका । उभयत्र तद्यातौ परतिथिरेव । तदाह जाबालिः— २०

“ सदैव तिथ्योरुभयोः प्रदोषव्यापिनी तिथिः । तत्रोत्तरत्र नक्तं स्यादुभयत्रापि सा तिथिः ” ॥ इति ।

उभयत्रापि दिवारात्रावपि सा तिथिर्विद्यते इत्यर्थः । उभयत्र प्रदोषव्याप्त्यभावेऽपि परैव ।

तदाह जाबालिः—“ अतथात्वे परत्र स्याद्वार्गस्तंगते हि सा ” इति । प्रदोषे तदभावेपि अस्त-  
मयादर्वाग्यतः सा विद्यते सा ग्राह्येत्यर्थः । ईदृशे विषये गृहस्थोऽपि यतिवत् दिवा नक्तमाचरेत् ।

तदुक्तं स्कांडे—“ प्रदोषव्यापिनी न स्याद्विवा नक्तं विधीयते ।

२५

“ आत्मनो द्विगुणच्छायामतिक्रामति भास्करे । तन्मन्त्रं नक्तमित्याहुर्न नक्तं निशिभोजनम् ॥

“ एवं ज्ञात्वा ततो विद्वान्सायान्हे तु भुजिक्रियाम् । कुर्यान्नक्तवती नक्तफलं भवति निश्चितम् ” ॥ इति ।

प्रदोषव्यापिन्यां तिथौ भानुवारसंक्रान्त्यादिना गृहस्थस्यापि यदा रात्रिभोजननिषेधः तदा दिवैव  
नक्तं कुर्यात् । तथा च भविष्यत्पुराणे—

“ ये त्वादित्यदिने ब्रह्मन्तरं कुर्वति मानवाः । दिनांते तेऽपि कुर्वीरन्निषेधाद्रात्रिभोजने ” ॥ इति । ३०

अस्मिंश्च दिवाभोजने उत्तमोऽतिमुहूर्तः । मध्यम उपान्त्यः । ततः प्राचीनो जघन्यः । एवं च  
सति अन्तिमाष्टमभागत्रिमुहूर्तवचनान्युपपद्यन्ते । रात्रिभोजनेऽपि घटिकात्रयमुत्तमः कालः ।  
घटिकाषट्कं मध्यमः कालः

“ प्रदोषोऽस्तमयादूर्ध्वं घटिकात्रयमिष्यते । त्रिमुहूर्तः प्रदोषः स्याद्रवावस्तंगते सति ” ॥ इति च स्मृतेः ।

निशीथपर्यंतो जघन्यः कालः । नक्तं प्रकुर्वीति रात्रौ कुर्वीतेति सामान्येनाभिधानात् । असौर-  
नक्तेषु साम्येन वैषम्येण वा दिनद्वये प्रदोषैकदेशव्याप्तौ परेद्युरेव नक्तं कार्यं सायंकालस्य  
गौणस्य तिथिव्याप्तत्वात्सौरनक्तेषु सायंकालैकदेशव्याप्तौ पूर्वपूर्वतिथिर्ग्रहा प्रदोषकालस्य तत्तिथि-  
व्याप्तत्वात् । “अर्कद्विपर्वरात्रौ च चतुर्दश्यष्टमी दिवा” इत्यनेन दिवाच्चतुर्दश्यष्टमीयोगे सति  
५ भोजनं प्रायश्चित्तविधानात् दिवा तत्संबंधसमये भोजननिषेधो गम्यते “निषेधस्तु निवृत्यात्मा  
कालर्घमपेक्षते” इति स्मृतेः । तत्संबंधाभावसमये तु भोजनं न निषिध्यते । अत एव रात्रौ  
पर्वयोगे भोजने निषिद्धे तद्विगमे सति क्वचिद्दोजनमन्यनुज्ञायते  
मनुना—“चंद्रसूर्यग्रहे नादादद्यात् स्नात्वा विमुक्तयोः” इति ।  
व्यासोऽपि—“नादात्सूर्यग्रहात्पूर्वमन्हि सायं शशिग्रहात् ।

१० “ग्रहकाले च नाभीयात्सनात्वाऽश्रीयाच्च मुक्तयोः । मुक्ते शशिनि भुंजीत यदि न स्यान्महानिशा”॥ इति ।  
वृद्धगौतमोऽपि—  
“चंद्रसूर्यग्रहे नादात्सम्ब्रहनि पूर्वतः । ग्रहोर्विमुक्तिं विज्ञाय स्नात्वा कुर्वीत भोजनम्”॥ इति ।  
चतुर्दश्यष्टमी दिवेत्यस्य नक्तव्रतत्वाभावाभक्तन्यायोऽप्यन्न नावतरति । तदेवं प्रतिपद्युपवास एक-  
भक्तनक्तानि निर्णीतानि । तत्र शुक्लप्रतिपत्पूर्वविद्वैवोपोष्या कृष्णप्रतिपदुत्तरविद्वा । एकभक्त-  
१५ नक्तयोस्तु सर्वासु तिथिषु मध्यान्हप्रदोषव्याप्त्या निर्णयः ।

दानव्रतादीनां कालः । दानव्रतादीनि उत्तरविद्वायां प्रतिपदि कर्तव्यानि । तेषां दैवत्वात् ।  
तदाह वृद्धयाज्ञवल्क्यः—“पौर्वाह्निकास्तु तिथयो दैवकार्ये फलप्रदाः” इति । अन्हः पूर्वो भागः  
पूर्वाणहः । स च मुहूर्तत्रयात्मकः प्रातःकालः । कर्मकालव्याप्तिं च वृद्धयाज्ञवल्क्य आह—  
“कर्मणो यस्य यः कालस्तत्कालव्याप्तिनी तिथिः । तथा कर्माणि कुर्वीत ह्रासवृद्धी न कारणम्”॥ इति ।  
२० गार्यश्च—

“यो यस्य विहितः कालस्तत्कालव्याप्तिनी तिथिः । तथा कर्माणि कुर्वीत ह्रासवृद्धी न कारणम्”॥  
एवं च उदयानंतरं मुहूर्तत्रयव्याप्तिनी दानादौ तिथिर्ग्रहा ।  
“यां तिथिं समनुप्राप्य उदयं याति भास्करः । सा तिथिः सकला ज्येया स्नानदानजपादिषु ॥  
“व्रतोपवासस्नानादौ धटिकैका यदा भवेत् । उदये सा तिथिर्ग्रहा श्राद्धादावस्तगामिनी”॥  
२५ इति दैवलादिवचनं वैश्वानराधिकरणन्यायेन त्रिमुहूर्तव्याप्तिप्रशंसापरम् । अत्रापि षोडा  
भिद्यते । उदयकाले पूर्वेद्युरेव त्रिमुहूर्तव्याप्तिनी परेद्युरेव तद्याप्तिनी उभयत्रापि त्रिमुहूर्त-  
व्याप्तिनी नोभयत्र त्रिमुहूर्तव्याप्तिनी साम्येन वैषम्येण वा त्रिमुहूर्तैकदेशव्याप्तिनीति । तत्र  
प्रथमद्वितीययोर्नास्ति संदेहः । त्रिमुहूर्तव्याप्तिनी चतुर्षु पक्षेष्वस्तमयव्याप्तेः कर्मकालबाहुल्यस्य च  
लाभात् पूर्वेद्युरेवानुष्ठानमिति निर्णयः । पित्र्यकालस्तु श्राद्धकांडे निरूपितः । इति प्रतिपन्निर्णयः ।  
३० अयमेव निर्णय उत्तरासु सर्वासु तिथिषु सामान्येन संचारयितव्यः । विशेषस्तु तत्र तत्राभिधास्यते ।

द्वितीयानिर्णयः । तत्र द्वितीयायाः परविद्वायाः उपोष्यत्वं भृगुराह—  
“एकादश्यष्टमी षष्ठी द्वितीया च चतुर्दशी । त्रयोदशी त्वमावास्या उपोष्याः स्युः परान्विताः”॥ इति ।  
व्यासः—“त्रिमुहूर्तव्याप्तिनी चतुर्दशी युता कार्या द्वितीया न तु पूर्वया” इति । यदा तु पूर्वेद्युरुदयमारभ्य  
परेद्युरुदयस्योपरि त्रिमुहूर्तं वर्तते तदा पूर्वेद्युरेव संपूर्णतिथित्वादुपवासः । तदुक्तं कालनिर्णये—  
३५ “पूर्वेद्युरसती प्रातः परेद्युस्त्रिमुहूर्तगा । सा द्वितीया परोपोष्या पूर्वविद्वा ततोऽपरा”॥ इति ।

१ खगघ-मात्र । २ जैमिनीय न्या । ११८।१२ (सू. १७-२३) जातेष्टिन्द्यायः । ३ पृ. ७२३-७५२

**तृतीयानिर्णयः ।** तृतीया परविद्वैव ग्राह्या । रंभाख्यवते तु पूर्वविद्वा ग्राह्या ।  
तदुक्तं ब्रह्मकैवर्ते—

“रंभाख्यां वर्जयित्वा तु तृतीयां द्विजसन्तम् । अन्येषु सर्वकार्येषु गणयुक्ता प्रशस्यते” ॥ इति ।  
गणश्चतुर्थी । स्मृत्यंतरेऽपि—

“द्वितीयया तु विद्वा चेत्तृतीया न कदाचन । कर्तव्या व्रतिभिस्तात धर्मकामार्थतत्परैः ॥ ५

“विहायैकां च रंभाख्यां तृतीयां पुण्यवर्धनीम्” ॥ इति ।

**चतुर्थोनिर्णयः ।** चतुर्थ्येषु परविद्वैव ग्राह्या । यदाह ब्रूहद्वसिष्ठः—

“एकादशी तथा षष्ठी अमावास्या चतुर्थिका । उपोष्याः परसंयुक्ताः पराः पूर्वेण संयुताः” ॥ इति ।

विनायकवतानुष्ठाने तु मध्यान्हव्यापिनी चतुर्थी ग्राह्या । तदाह ब्रूहस्पतिः—

“चतुर्थीगणनाथस्य मातृविद्वा प्रशस्यते । मध्यान्हव्यापिनी चेत्स्यात्परतश्चेत्परेऽहनि” ॥ १०  
मातृविद्वा तृतीयाविद्वा । स्मृत्यंतरेऽपि—

“मातृविद्वा प्रशस्ता स्याच्चतुर्थीगणनायके । मध्यान्हे परतश्चेत्स्यान्नागविद्वा प्रशस्यते” ॥ इति ।

नागः पञ्चमी । एकमन्त्रन्यायेन मध्यान्हव्याप्तेः षोढा भेदे सति यदा परेद्युरेव मध्यान्हव्याप्तिः  
तदा परा । इतरेषु पञ्चसु भेदेषु जयायोगस्य प्रशस्तत्वात्पूर्वेद्युरेव सा भवति ।

**पञ्चमीनिर्णयः ।** पञ्चमी पूर्वविद्वैव ग्राह्या । तदाह हारीतः—

१५

“चतुर्थीसंयुता कार्या पञ्चमी परया न तु । दैवे कर्मणि पित्र्ये च शुक्लपक्षे तथाऽस्ति” ॥ इति ।

**षष्ठीनिर्णयः ।** षष्ठी परविद्वा ग्राह्या । तदुक्तं विष्णुधर्मोत्तरे—

“एकादश्यष्टमी षष्ठी शिवरात्रीचतुर्दशी । अमावास्या तृतीया च ता उपोष्याः परान्विताः” ॥ इति ।  
स्कंदवते तु षष्ठ्याः पूर्वविद्वाया ग्राह्यत्वमाह वसिष्ठः—

“कृष्णाष्टमी स्कंदषष्ठी शिवरात्रिश्चतुर्दशी । एताः पूर्वयुताः कार्यास्तिथ्यंते पारणं भवेत्” ॥ इति । २०

यदि कदाचित्तिथिक्षयवशाद्वत्तरविद्वा न लभ्यते तदा स्कांदवतवदन्यान्यपि व्रतानि पञ्चमी-  
विद्वायां कर्तव्यानि । तदाह वसिष्ठः—

“एकादशी तृतीया च षष्ठी चैव त्रयोदशी । पूर्वविद्वा तु कर्तव्या यदि न स्यात्परेऽहनि” ॥ इति ।

**सप्तमीनिर्णयः ।** सप्तमी पूर्वविद्वैव ग्राह्या । “षष्ठ्यायुता सप्तमी च कर्तव्या तत्र सर्वदा” ॥

इति स्मृतेः । उत्तरविद्वाप्रतिषेधः स्कंदपुराणे दर्शितः—

२५

“षष्ठ्येकादश्यमावास्या पूर्वविद्वा तथाऽष्टमी । सप्तमी परविद्वा च नोपोष्यं तिथिपञ्चकम्” ॥ इति ।

पूर्वविद्वायाः सप्तम्या अलाभे तूत्तरविद्वा ग्राह्या । तदुक्तं कालनिर्णये—

“सप्तमी पूर्वविद्वैव व्रतेषु निश्चिलेष्वपि । अलाभे पूर्वविद्वायाः परविद्वापि गृह्णताम्” ॥ इति ।

**अष्टमीनिर्णयः ।** अथाष्टमी निर्णयिते । तत्र शुक्लाष्टमी परविद्वा ग्राह्या । तथा च निगमे—

“शुक्लपक्षेऽष्टमी चैव शुक्लपक्षे चतुर्दशी । पूर्वविद्वा न कर्तव्या कर्तव्या परसंयुता” ॥ ३०

“उपवासादिकार्येषु ह्येष धर्मः सनातनः” ॥ इति । स्कांदेऽपि—

“अष्टमी नवमी मिश्रा कर्तव्या भूतिमिच्छता । सप्तम्या चाष्टमी चैव न कर्तव्या शिसिध्वज” ॥ इति ।

कृष्णपक्षे पूर्वविद्वायाः परिग्रहः परविद्वायाः प्रतिषेधश्च निगमे पठ्यते—

“कृष्णपक्षेऽष्टमी यत्र कृष्णपक्षे चतुर्दशी । पूर्वविद्वा तु कर्तव्या परविद्वा न कस्यचित् ॥

“उपवासादिकार्येषु ह्येष धर्मः सनातनः” ॥ इति । व्रतविशेषे तु तत्र तत्रोक्तं द्रष्टव्यम् ।

३५

तथा द्वार्ष्टमीसंजकवतविशेषविषये भविष्यतपुराणम्—

“श्रावणी दुर्गनवमी तथा द्वार्ष्टमी च या । पूर्वविद्वैव कर्तव्या शिवरात्रिर्बलेदिनम्” ॥ इति ।

कृष्णजन्माष्टमी । कृष्णजन्माष्टमीव्रतात् जयन्तीव्रतं भिन्नम् । जन्माष्टमीव्रते तिथिरेव निमित्तम् । जयन्तीव्रते तु रोहिणीयोगः । तथा च स्मर्यते—

६ “श्रावणे बहुले पक्षे कृष्णजन्माष्टमीव्रतम् । न करोति नरो यस्तु भवति क्रूरराक्षसः ॥

“श्रावणस्य च मासस्य कृष्णाष्टम्यां नराधिप । रोहिणी यदि लभ्येत जयन्ती नाम सा तिथिः” ॥ इति ।

वसिष्ठसंहितायाम्—

“श्रावणे वा नभस्ये वा रोहिणी सहिताष्टमी । यदा कृष्णा नरैर्लब्धा सा जयन्तीति कीर्तिता ॥

“श्रावणेन भवेद्योगो नभस्ये तु भवेद्भ्रुवम् । तयोरभावे योगस्य तस्मिन् वर्षे न संभवः” ॥ इति ।

१० अत्र श्रावण इति मुख्यकल्पः । नभस्य इत्यनुकल्पः । एतदेवाभिप्रेत्य विष्णुरहस्येऽपि—

“अष्टमी कृष्णपक्षस्य रोहिणी ऋक्षसंयुता । भवेत्प्रोष्ठपदे मासि जयन्ती नाम सा स्मृता” ॥ इति ।

हरिवंशे—

“आभिजिन्नाम नक्षत्रं जयन्ती नाम शर्वरी । मुहूर्तो विजयो नाम यत्र जातो जनार्दनः” ॥ इति ।

अत्र श्रावणनभस्यप्रौष्ठपदशब्दाः सिंहश्रावणादिपराः । तथा च ज्योतिषार्णवे—

१५ “श्रावण्यां प्रौष्ठपद्यां वा यदा सिंहगतो रविः । जयन्त्याराधनं कुर्यात् तु कर्कटकन्ययोः” ॥ इति ।

वाराहेऽपि—“सिंहराशिगते सूर्ये गगने जलदाकुले । मासि प्रौष्ठपदेऽष्टम्यामर्घरात्रे विधूदये ॥

“बुधवारे वृषे लघ्ने रोहिण्याश्वरमांशके । शुभे हर्षणयोगे च कौलवेन युते तथा ॥

“वसुदेवेन देवक्यामहं जातोऽस्मि पद्मजे” ॥ इति । यस्मिन्वर्षे श्रावणे वा नभस्ये वा जयन्ती न संभवति तस्मिन्वर्षे श्रावणमास एव कृष्णाष्टमीव्रतमनुष्टेयम् । तस्य स्वरूपमुपवासमात्रम्—

२० “कैवलेनोपवासेन तस्मिन्जन्मदिने मम । सप्तजन्मकृतात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः” ॥ इति स्मृतेः ।

यदि शिष्यास्तत्रापि जागरणदानादिकमनुतिष्ठन्ति अनुतिष्ठन्तु नाम । अविरुद्धैः पुण्यविशेषैः वतस्योपेद्वलनसंभवाच्छास्त्रेण तु प्रापितमुपवासमात्रम् । जयन्तीव्रतस्य तु दानादिसहित उपवासः स्वरूपम् । तथा च भविष्योत्तरे—“मासि भाद्रपदेऽष्टम्यां निशीथे कृष्णपक्षके ।

“शशांके वृषराशिस्थे ऋक्षे रोहिणिसंजके । योगेऽस्मिन्वसुदेवाद्वि देवकी मामजीजनत् ॥

२५ “तस्मान्मां पूजयेत्तत्र शुचिः सम्यगुपोषितः । ब्राह्मणान्मोजयेद्वक्त्या ततो दद्याच्च दक्षिणाम् ॥

“हिरण्यं मेदिनीं गावो वासांसि कुसुमानि च । यदिष्टतमं तत्तत्कृष्णो मे प्रीयतामिति” । जयन्तीं प्रकृत्य नारदीयसंहितायां स्मर्यते—

“उपोषणं जन्मदिने कुर्याज्जागरणं च यः । अर्धरात्रयुताष्टम्यां सोऽश्वमेधफलं लभेत्” ॥

शुद्धं नित्यं जन्माष्टमीव्रतं करणे फलविशेषस्मरणात् अकरणे प्रत्यवायस्मरणाच्च । नित्यं काम्यं

३० च जयन्तीव्रतं अकरणे प्रत्यवायस्मरणात्कलविशेषस्मरणाच्च ।

तथा हि जन्माष्टम्या अकरणे प्रत्यवायः स्मर्यते—

“कृष्णजन्मदिने प्राप्ते यो भुक्ते तु द्विजोत्तमः । त्रैलोक्यसंभवं पापं तेन भुक्तं द्विजोत्तम” ॥ इति ।

स्कंदपुराणेऽपि—

“ये न कुर्वति जानतः कृष्णजन्माष्टमीव्रतम् । ते भवन्ति नराः पापा व्याला व्याघ्राश्च कानने” ॥ इति ।  
तथा जयंतीव्रतस्याकरणे स्कान्दे प्रत्यवायः स्मर्यते—

“शूद्रान्बेन तु यत्पापं शवहस्तस्थभोजने । तत्पापं लभते कुन्ति जयन्त्यां भोजने कृते ॥

“ब्रह्मस्य सुरापस्य स्त्रीवधे गोवधेऽपि वा । न लोको यदुशार्दूलं जयंतीविमुखस्य च ॥

“न करोति यदा विष्णोर्जयंतीसंभवं व्रतम् । यमस्य वशमापन्नः सहते नारकीं व्यथाम् ॥

“जयंतीवासरे प्राप्ते करोत्युद्धरपूरणम् । संपीड्यतेऽतिमात्रं तु यमदूतैः कलेवरम्” ॥ इति ।

जयंतीव्रते फलविशेषोऽभिहितो भविष्योन्नरे—

“प्रतिवर्षं विधानेन मद्भक्तो धर्मनन्दन । नरो वा यदि वा नारी यथोक्तं फलमाप्नुयात् ॥

“पुत्रसंतानमारोग्यं सौभाग्यमतुलं भवेत् । सदा धर्मरतिर्भूत्वा मृतो वैकुंठमाप्नुयात् ॥

“तत्र दिव्येन मानेन वर्षलक्षं युधिष्ठिर । भोगान् नानाविधान्भुक्त्वा पुण्यशेषादिहागतः ॥

“सर्वकामसमृद्धे तु कुले महति जायते” ॥ इति । पाद्मेऽपि—

“प्रेतयोनिगतानां तु प्रेतत्वं नाशितं नरैः । यैः कृता श्रावणे मासि अष्टमे रोहिणी युता” ॥ इति ।

“किं पुनर्बुधवरेण सोमेनापि विशेषतः” ॥ इति ।

ननु जन्माष्टमीव्रतेऽपि फलं स्मर्यते “सप्तजन्मकृतात् पापान्मुच्यते नात्र संशयः” ॥ इति ।  
अतस्तदपि नित्यं काम्यमिति चेन्मैवम् । उपात्तदुरितक्षयमात्रेण काम्यत्वे संध्यावद्नादेरपि  
काम्यत्वप्रसंगात्सत्यपि पापक्षये फलांतरास्मरणात् । अतः केवलं नित्यं जन्माष्टमीव्रतम् । नित्यं  
काम्यं च जयंतीव्रतम् ।

नन्वेवं व्रतमेदे सति यदा दिनद्वयेऽष्टमी वर्तते रोहिणी तूत्तरदिन एव तदा पूर्वदिने  
जन्माष्टम्युपवासः परेद्युर्जयंत्युपवास इति नैरंतर्येणोपवासद्वयं प्रसज्येतेति चेन्न । रोहिणीयोगसंभवे ॥  
जन्माष्टम्या आपि तत्रैव कर्तव्यत्वात् । संवर्तिथिष्वलभ्ययोगस्य केवलतिथेरुत्कृष्टत्वेन केवलाया-  
स्तिथेस्तत्रोपेक्षणीयत्वात् । यदा त्वेकस्मिन्नेव दिने अष्टमी वर्तते रोहिण्या च युज्यते तदा  
जन्माष्टमीजयंत्योः सह प्रयोगस्यावश्यंभावित्वेन जयंतीव्रत एव जन्माष्टमीव्रतमंतर्भवतीति न  
पृथगुपवासप्रसंगः । तदुक्तं कालनिर्णये—

“यस्मिन्वर्षे जयंत्याख्यो योगो जन्माष्टमी तदा । अंतर्भूता जयंत्यां स्याद्वक्षयोगः प्रशास्यते” ॥ इति ॥  
ग्राह्या तिथिर्निरूप्यते । जन्माष्टम्या जयंत्याश्वार्धरात्रप्रधानत्वात् तद्योगोऽतिप्रशस्तः ।  
तदुक्तं वसिष्ठसांहितायाम्—

“अष्टमी रोहिणीयुक्ता निश्चयेऽपि यदि दृश्यते । मुख्यकाल इति ख्यातस्तत्र जातो हरिः स्वयम्” ॥  
विष्णुरहस्येऽपि—

“रोहिण्यार्धरात्रे तु यदा कृष्णाष्टमी भवेत् । तस्यामभ्यर्चनं शौर्रेहति पापं त्रिजन्मजम्” ॥ इति । ३०  
एवं च सत्यर्धरात्रसद्वाव एवात्र कर्मकालव्याप्तिः । तत्र योगीश्वरः—

“रोहिणीसहिता कृष्णा मासे च श्रावणेऽष्टमी । अर्धरात्रादधश्चोर्ध्वं कलयाऽपि यदा भवेत् ॥

“जयंती नाम सा प्रोक्ता सर्वपापप्रणाशिनी” ॥ इति । पक्षांतरमाह स एव—

“अर्धरात्रादधश्चोर्ध्वमेकार्धघटिकान्विता । रोहिणी चाष्टमी ग्राह्या उपवासव्रतादिषु” ॥ इति ।

<sup>१</sup> क्ष-पूर्वत्र ।

एकघटिकान्विता वा अर्धघटिकान्विता वा । तत्रायमर्थः संपदते । पूर्वभागावसन एका घटिका उत्तरभागादावेका मिलित्वा निशीथशब्दवाच्यं मुहूर्तं तावत्परिमाणं मुख्यः कल्पः । तदसंभवे उभयत्र अर्धघटिका तस्या अप्यसंभवे कलेति । एवं चार्धरात्रे कलामात्रमष्टमीसद्भावेऽपि जयन्ती-योगस्य प्रतिपादनात् “अह्नि चेत् सप्तमी विद्धा तस्यां नाराधयेद्धरिम्” इति वचनं ५. निर्मूलम् । सोऽयमर्धरात्रयोगो मुख्यः कल्पः । कृत्स्नाहोरात्रयोगोऽत्यंतमुख्यः ।

यदा कदाचित् मुहूर्तयोगः स्वल्पयोगश्चानुकल्पः तदा वसिष्ठसंहितायाम्—

“अहोरात्रं तयोर्योगो ह्यसंपूर्णो भवेद्यदि । मुहूर्तमप्यहोरात्रे योगश्चेत्तामुपोषयेत् ॥

“वासरे वा निशायां वा यत्र स्वल्पाऽपि रोहिणी । विशेषेण नभोमासे सैवोपोष्या मनीषिभिः” ॥इति । यो जयन्तीवते योगनिर्णयः स एव जन्माष्टमीवतेऽपि द्रष्टव्यः

१० “दिवा वा यदि वा रात्रौ नास्ति चेद्रोहिणीकला । रात्रियुक्तां प्रकुर्वीत विशेषेणेन्दुसंयुताम् ॥

“अष्टमी शिवरात्री च अर्धरात्रादधो यदि । दृश्यते घटिका या सा पूर्वविद्धा प्रकीर्तिता” ॥इति स्मृतेः ।

तत्र जन्माष्टमी द्विविधा । शुद्धा सप्तमीविद्धा चेति । सूर्योदयमारभ्य प्रवर्तमानाष्टमी शुद्धा ।

निशीथादर्वाक्सप्तम्या कियत्यापि युक्ता विद्धा । शुद्धापि पुनर्निशीथव्याप्त्यव्याप्तिभ्यां द्विविधा ।

तत्र “निशीथव्यापिनी मुख्या विशेषेणेन्दुसंयुताम्” इति वचनात् “निशीथव्याप्तिरहितापि

१५ रात्रियुक्तां प्रकुर्वीत” इति वचनात् गृहीतव्या भवति ।

ननु पूर्वेद्युर्निशीथादूर्ध्वमारभ्य परेद्युर्निशीथादर्वाग्या समाप्यते तस्यामुभयत्र रात्रिसंबंधसत्वात् कुत्रोपवास इति चेत्परेद्युरेवोपवासः कार्यः । प्रातः संकल्पकालमारभ्य प्रवर्तमानत्वात् ।

२० सप्तमी विद्धापि त्रिविधा । पूर्वेद्युरेव निशीथव्यापिनी परेद्युरेव तद्यापिनी उभयत्रापि निशीथव्यापिनी चेति । तत्र प्रथमद्वितीययोः पक्षयोर्निशीथिव्यात्प्रयोजकत्वेन “या निशीथव्यापिनी सा विशेषेणेन्दुसंयुताम्” इति वचनेन ग्रहीतव्या भवति । तृतीये तु पक्षे परेद्युरुपवासः प्रातःसंकल्पमारभ्य तिथिव्याप्तिसंभवात् ।

२५ रोहिणीसहिताष्टमी चतुर्विधा । शुद्धा विद्धा शुद्धाधिका विद्धाधिका चेति । तत्र शुद्धायां संपूर्णयोगो निशीथयोगो यत्किञ्चिन्मुहूर्तयोग इति त्रैविध्यं भवति । एवं विद्धायामपि त्रैविध्यं ।

३० एतेषु षट्सु पक्षेषु दिनांतरे योगाभावादुपवासे संदेहो नास्ति । किन्तु योगतारतम्यात् प्राशस्त्य- तारतम्यं भवति । यत्किञ्चिन्मुहूर्तयोगः प्रशस्तः । निशीथयोगः प्रशस्तरः । संपूर्णयोगः

३५ प्रशस्तमः । शुद्धाधिका तु सूर्योदयमारभ्य प्रवृत्ता परेद्युः सूर्योदयमतिक्रम्य एषा वर्धते । सा च त्रिविधा । पूर्वेद्युरेव रोहिणीयुक्ता परेद्युरेव तद्युक्ता दिनद्वयेऽपि रोहिणीयुक्ता चेति । तत्राव्ययोर्नास्ति संदेहः । रोहिणीयोगस्य नियामकत्वात् । तृतीये तु रोहिणीयोगस्य उभयत्र समानत्वेऽपि गुणाधिक्यात्पूर्वोपोष्या । तथा हि सा रोहिणीयोगभेदात् त्रिविधा भिवते । अष्टमी-

४० वत्सूर्योदयमारभ्य प्रवृत्ता रोहिणी कदाचित्परेद्युरपि कियती वर्धते । कदाचित् पूर्वेद्युर्निशीथमारभ्य रोहिणी प्रवर्तते । कदाचिन्निशीथादूर्ध्वमारभ्य प्रवर्तते । तत्र प्रथमद्वितीययोर्निशीथयोगस्य सत्वा-

४५ त्पूर्वेद्युरेवोपवासः । तृतीयपक्षे दिनद्वयेऽपि निशीथे जयन्तीयोगो नास्ति । पूर्वेद्युर्निशीथे केवलाष्टमी परेद्युः केवलरोहिणी । तत्र निशीयोगाभावेऽपि रात्रियोगस्य सत्वादृष्टम्याः प्राधान्याच्च

पूर्वेद्युरुपवासः । तदेवं शुद्धाधिका पूर्वोपोष्या । निशीथादर्वाक्सप्तम्या युक्ता परेद्युरपि विद्यमाना

५५ विद्धाधिका । सा च त्रिविधा । पूर्वेद्युरेव रोहिणीयुक्ता विद्धाधिका परेद्युरेव रोहिणीयुक्ता उभयत्र

रोहिणीयुक्ता विद्वाधिकोति । प्रथमद्वितीयोस्तु रोहिणीयोगो नियामकः । या तूभयत्र रोहिणी-युक्ता विद्वाधिका साऽपि निशीथे जयंतीयोगमपेक्ष्य चतुर्वा भिद्यते । पूर्वेद्युरेव निशीथयोगवती परेद्युरेव निशीथयोगवती उभयत्रापि तादृशी उभयत्रापि निशीथयोगरहिता चेति । तत्र प्रथम-द्वितीययोः निशीथयोगो नियामकः । तृतीयचतुर्थयोः परदिन एवोपवासः । परेद्युः संकल्पकाले तिथिनक्षत्रयोगस्य सत्वात् । जयंतीभेदेष्वपवासादिने यदि सोमवारो बुधवारो वा भवति तदा ५ फलाधिक्यं भवति । तदुक्तं ब्रह्मपुराणे—

“प्रेतयोनिगतानां तु प्रेतत्वं नाशितं नरैः । यैः कृता श्रावणे मासि अष्टमी रोहिणीयुता ॥

“किं पुनर्बुधवारेण सोमेनापि विशेषतः । किंपुनर्नवमी युक्ता कुलकोद्घास्तु मुक्तिदा” ॥ इति ।  
दिनद्वयेऽप्यर्धरात्रसंबन्धाभावे स्कांडेऽपि—

“उदये वाष्टमी किंचिन्नवमी सकला यदि । भवेत्तु बुधसंयुक्ता प्राजापत्यक्षसंयुता । १०

“अपि वर्षशतेनापि लभ्यते वाऽथ वा न वा” ॥ इति ।

पारणनिर्णयः । यथोक्तरीत्या विहिततिथावुपवासं कृत्वा परेद्युः

“पूर्वाङ्गे पारणं कृत्वा उपवासं समापयेत् । उपवासेषु सर्वेषु पूर्वाङ्गे पारणं भवेत् ॥

“पारणान्तं व्रतं ज्ञेयं व्रतान्ते द्विजभोजनम् । असमाप्ते व्रतं पूर्वे नैव कुर्याद्वातांतरम्” ॥ इति स्मृतेः ।  
एवं सामान्यतः पूर्वाङ्गे पारणप्राप्तौ क्वचिदपवादः स्मर्यते— १५

“अष्टम्यामथ रोहिण्यां न कुर्यात्पारणं क्वचित् ।

“तिथिरष्टगुणं हंति नक्षत्रं तु चतुर्गुणम् । तस्मात्प्रयत्नतः कुर्यात्तिथिभांते च पारणम्” ॥ इति ।

नारदीये—“तिथिनक्षत्रसंयोगे उपवासो यदा भवेत् । पारणं तु न कर्तव्यं यावन्नैकस्य संक्षयः ॥

“सांयोगिके व्रते प्राप्ते यश्वैकोऽपि वियुज्यते । तत्रैव पारणं कुर्यादेवं वेदविदो विदुः” ॥ इति ।

ब्रह्मकैवर्ते— २०

“सर्वेष्वेवोपवासेषु द्विवा पारणमिष्यते । अन्यथा पुण्यहानिः स्याद्वते धारणपारणम्” ॥ इति ।

स्मृत्यंतरे—

“तिथ्यक्षयोर्यदा च्छेदो नक्षत्रांतमथापि वा । अर्धरात्रेऽपि वा कुर्यात्पारणं च परेऽहनि” ॥ इति ।

उपवासदिनादपरेऽहनि दिवसे यद्युभयांतः तदा पारणमिति मुख्यः कल्पः । नक्षत्रांतमित्यनेन

एकतरांतत्वमभिहितम् । सोऽयमनुकल्पः । यदि रात्रौ निशीथादर्वागुभयांत एकतरांतो वा २५

भवति तदा दिवसे मुख्यानुकल्पयोरुभयोरप्यसंभवाद्रात्रौ पारणस्य निषिद्धत्वाच्च तत्राप्युपवास-

प्रसक्तौ पारणस्य प्रतिप्रसवः क्रियते । “अर्धरात्रेऽपि वा कुर्यात्” इति । अशक्तस्य तिथिनक्षत्रयो-

रुभयोरनुवर्त्तमानयोरपि प्रातर्देवं संपूज्य क्रियमाणं पारणं नैव दुष्यति

“जयन्त्यां पूर्वविद्वायामुपवासं समाचरेत् । तिथ्यंते वोत्सवांते वा व्रती कुर्वीत पारणम्” ॥

इति वचनात्— ३०

नवमीनिर्णयः । अथ नवमी निर्णयिते । सा च दुर्गासरस्वतीव्रतादौ पूर्वविद्वैव ग्राह्या

“अष्टम्या नवमी युक्ता कर्तव्या फलकांक्षिभिः । न कुर्यान्नवमीं तात दृश्यां तु कदाचन” ॥

इति स्मरणात् । महानवम्यां तु—

“आश्वयुक्तशुक्लनवमी तथा नक्तं चतुर्दशी । जयायुक्ता न कर्तव्या पूर्णायुक्ता प्रशस्यते” ॥

जया अष्टमी । पूर्णा दशमी । ३५

श्रीरामनवमीनिर्णयः ।

श्रीरामनवमीवितमुक्तमगस्त्यसंहितायाम्—“ श्रीरामनवमी प्रोक्ता कोटिसूर्यग्रहाधिका ।

“ तस्मिन्दिने महापुण्ये राममुद्दिश्य भक्तिः । यत्किंचित्कियते कर्म तद्वक्षयकारणम् ।

“ उपोषणं जागरणं पितृनुद्दिश्य तर्पणम् । तस्मिन्दिने तु कर्तव्यं ब्रह्मावात्मिमीप्सुभिः ” ॥ इति ।

५ तत्रोपवासो जयंतीवन्नित्यकाम्यरूपः । द्वैरूप्यं च तस्य द्विविधप्रमाणबलाद्वसीयते । उपवास-विधिवाक्येषु नित्यशब्दसदाशब्दादीनां नित्यत्वसाधकानां श्रवणान्नित्यत्वसिद्धिः । तानि च साधकानि संग्रहकारेण संगृहीतानि—“नित्यं सदा यावदायुर्न कदाचिद्वितिकमेत्” इत्युक्त्वाऽतिक्रमे दोषश्रुतेरत्यागच्छोदनात् । “फलाश्रुतेवीप्सया च तन्नित्यमिति कीर्तिंतम् ” इति ।

अत्र नित्यादिपदान्यभिधीयते । अकरणे प्रत्यवायश्च स्मर्यते अगस्त्यसंहितायाम्—

१० “ नित्यमेव तु कर्तव्यं श्रीरामनवमीवितम् ।

“ चैत्रे मासि नवम्यां तु शुक्लायां रघुनंदनः । प्रादुरासीत्पुरा ब्रह्मन् परं ब्रह्मैव केवलम् ॥

“ तस्मिन्दिने तु कर्तव्यमुपवासव्रतं सदा ।

“ प्राप्ते श्रीरामनवमीदिने मर्त्यो विमूढधीः । उपोषणं न कुरुते कुंभीपाकेषु पच्यते ” ॥ इति ।

स्मृत्यंतरेऽपि—

१५ “ यस्तु रामनवम्यां तु भुक्ते मोहाद्विमूढधीः । कुंभीपाकेषु घोरेषु पच्यते नात्र संशयः ” ॥ इति ।

काम्यत्वं च फलश्रवणाद्वसीयते । तथा च तत्रैव—

“ कुर्याद्रामनवम्यां य उपोषणमतांद्रितः । न मातुर्गर्भमाप्नोति स वै रामो भवेत्स्वयम् ॥

“ तस्मात्सर्वात्मना सर्वे कृत्वैव नवमीवितम् । मुच्यन्ते सर्वपापेभ्यो यांति ब्रह्मसनातनम् ” ॥ इति ।

अन्ये त्वाहुः व्रतमिदं केवलं नित्यं न तु काम्यमपि पशुपुत्रस्वर्गादिकलस्याश्रवणात् ।

२० “ संध्यामुपासते ये तु सततं संशितव्रताः । विधूतपापासते यांति ब्रह्मलोकं सनातनम् ” ॥ इति ।

फलश्रवणेऽपि संध्योपासनस्य यथा नित्यत्वं तथा पापक्षयद्वारा मोक्षार्थस्यास्य नित्यत्वमिति ।

अत्र मध्यान्हव्यापिनी तिथिर्ग्राह्या ।

“ इषं पूषणि संप्राप्ते लभे कर्कटकावह्ये । आविरासीत्स्वकलया कौसल्यायाः परः पुमान् ॥

“ चैत्रशुद्धा तु नवमी पुनर्वसुयुता यदि । सैव मध्यान्हयोगेन महापुण्यतमा भवेत् ” ॥ इति स्मृतेः ।

२५ यस्मिन्वर्षे पुनर्वसुयोगो नास्ति तस्मिन्वत्सरे केवलनवम्युपोष्या । “ केवलाऽपि सदोपोष्या नवमी-शब्दसंग्रहात् ” इति वचनात् । सा च द्विविधा । शुद्धा विद्धा वेति । सूर्योदयमारभ्य प्रवर्त्तमाना शुद्धा । त्रिमुहूर्तया तदधिकया वाऽष्टम्या युक्ता विद्धा । तत्र शुद्धा त्रिविधा । शुद्धाधिका शुद्धसमा शुद्धन्यूना चेति । अत्र नास्ति संशयः । दिनांतरे मध्यान्हव्याप्त्यभावात् । सा च पुनः प्रत्येकं द्विविधा पुनर्वसुनक्षत्रयुक्ता तद्रहिता चेति । तत्र पुनर्वसुयुक्तशुद्धाधिका त्रिविधा । पूर्वेद्युरेव नक्षत्र-

३० युक्ता परेद्युरेव तद्युक्ता उभयत्र तद्युक्ता चेति । तत्र ग्रथमद्वितीययोर्नक्षत्रयोगो नियामकः ।

“ पुनर्वस्वृक्षसंयोगः स्वल्पोऽपि यदि दृश्यते । चैत्रशुक्लनवम्यां तु सा तिथिः सर्वकामदा ” ॥ इति स्मृतेः ।

वृतीये तु मध्यान्हे पुनर्वसुयुक्तदिनं ग्राह्यम् । तथाऽगस्त्यः—

“ चैत्रशुद्धा तु नवमी पुनर्वसुयुता यदि । सैव मध्यान्हयोगेन महापुण्यतमा भवेत् ” ॥ इति ।

एवं विद्वायामपि कृष्णाष्टम्यादिवत् पक्षभेदो निर्णयश्च द्रष्टव्यः । विद्वानिषेधस्तु वैष्णवविषयः ।  
“नवमी चाष्टमी विद्वा त्याज्या विष्णुपरायणैः । तदन्येषां तु सर्वेषां ब्रतं तत्रैव निश्चितम्”॥ इति स्मृतेः ।

**दशावतारकालाः । दशावतारकालाः संग्रहकारेण संगृहीताः—**

“ चैत्रे मास्यसिते पक्षे त्रयोदश्यां तिथौ विभुः । उद्भून्मत्स्यरूपेण रक्षार्थमवनेर्हरिः ॥  
“ ज्येष्ठमासे तथा कृष्णद्वादश्यां भगवानजः । मंदरं पृष्ठतः कृत्वा कूर्मरूपी हरिदधौ ॥ ५  
“ चैत्रकृष्णे तु पञ्चम्यां जज्ञे नारायणः स्वयम् । भुवं वराहरूपेण शृंगाम्यामुदधेर्जलात् ॥  
“ वैशाखे शुक्लपक्षे तु चतुर्दश्यामिनेऽस्तगे । उद्भूवासुरद्वेषी वृसिंहो भक्तवत्सलः ॥  
“ मासि भाद्रपदे शुक्लद्वादश्यां वामनो विभुः । अदित्यां काश्यपाजज्ञे नियंतुं बलिमोजसा ॥  
“ मार्गशीर्षे द्वितीयायां कृष्णपक्षे तु भार्गवः । दुष्क्षत्रियविद्वेषी रामोऽभूत्तापसाग्रणीः ॥  
“ चैत्रशुक्लनवम्यां तु मध्यान्हे रघुनन्दनः । दशाननवधाकांक्षी जज्ञे रामः स्वयं हरिः ॥ १०  
“ वैशाखे शुक्लपक्षे तु द्वितीयायां हलायुधः । संकर्षणो बलो जज्ञे रामः कृष्णाग्रजो हरिः ।  
“ मासि तु श्रावणाष्टम्यां निशीथे कृष्णपक्षके । प्राजापत्यक्षसंयुक्ते कृष्णं देववयजीजैनत् ।  
“ मासे भाद्रपदे शुक्लद्वितीयायां जनार्दनः । म्लेच्छाकांते कलावंते कलिकरूपो भविष्यति ।  
“ अवतारदिने पुण्ये हरिमुद्दिश्य भक्तिः । उपवासादि यत्किंचित्तदानन्त्याय कल्पते ” ॥ इति ।

**दशमीनिर्णयः । अथ दशमी निर्णयते । तस्याश्च न तिथ्यंतरवद्वेयोपादेयविभागोऽस्ति । १५**  
**तथा चांगिराः—**

“ संपूर्णा दशमी कार्या परया पूर्वयाऽथवा । युक्ता न द्वौषिता यस्मात्तिथिः सा सर्वतोमुखी”॥ इति ।  
यथा संपूर्णा तिथिर्दोषरहिता तथा पूर्वविद्वा परविद्वा चेत्यर्थः । अत्र व्यवस्थामाह इंखः—  
“ शुक्लपक्षे तिथिर्गृह्या यस्यामभ्युदितो रविः । कृष्णपक्षे तिथिर्गृह्या यस्यामस्तमितो रविः”॥ इति ।  
“ नवमी दशमी चैव नोपोष्या परसंयुता ” इति वचनं कृष्णपक्षविषयतया योजनीयम् ॥ २०

**एकादशीनिर्णयः । अथैकादशी निर्णयते । तत्रोपवासो नित्यकाम्यरूपः उपवासविधिषु**  
नित्यत्वसाधकानां नित्यादिपदानां श्रवणात् । सायुज्यादिफलश्रवणाच्च ।  
नित्यशब्द उदाहृतो गारुडपुराणे—“उपोष्यैकादशी नित्यं पक्षयोरुभयोरपि” ॥ इति ।  
सदाशब्द उक्तः सनत्कुमारसंहितायाम्—“एकादशी सदोपोष्या पक्षयोः शुक्लकृष्णयोः” ॥ इति ।  
एवमन्यान्यपि वचनानि—“ उपोष्यैकादशी राजन्यावदायुः सुवृत्तिभिः । २५  
“ न करोति हि यो मूढ एकादश्यामुपोषणम् । स नरो नरकं याति रैरवं तमसा वृतम् ।  
“ समादाय विधानेन द्वादशीव्रतमुत्तमम् । तस्य भंगं नरः कृत्वा रैरवं नरकं बजेत् ॥  
“ मातृहा पितृहा चैव भ्रातृहा गुरुहा तथा । एकादश्यां तु यो भुक्ते पक्षयोरुभयोरपि” ॥  
इत्यादीनि नित्यसाधकानि द्रष्टव्यानि । काम्यत्वसाधकं फलं च श्रूयते विष्णुरहस्ये—  
“ यदीच्छेत् विष्णुसायुज्यं सुखं संपदमात्मनः । एकादश्यां न भुंजीत पक्षयोरुभयोरपि” ॥ इति । ३०

**स्कांदेपि—**

“ यदीच्छेद्विपुलान्भोगान्मुक्तिं चात्यंतदुर्लभाम् । एकादश्यामुपवसेत्पक्षयोरुभयोरपि ” ॥ इति ।

**नारदोऽपि—**“ एकादशीसमं किंचित्पापत्राणां न विद्यते ।

“ स्वर्गमोक्षप्रदा ह्येषा राज्यपुत्रप्रदायिनी । सुकलत्रप्रदा ह्येषा शरीरारोग्यदायिनी ” ॥ इति ।

**कौर्मेऽपि—**

“ यदीच्छेद्विष्णुसायुज्यं श्रियं संततिमात्मनः । एकादश्यां न भुंजीत पक्षयोरुभयोरपि ” ॥ इति ।

तदेवं नित्यादिशब्दश्रवणान्नित्यत्वं फलश्रवणात् काम्यत्वं च सिद्धम् । उक्तं च कालादर्शे—

“ सर्वस्मृतिपुराणेतिहासादिषु विनिश्चितम् । एकादशीव्रतं तच्च नित्यं काम्यमिति द्विधा ” ॥ इति ।

५ सर्वासु स्मृतिषु सर्वेषु पुराणेषु इतिहासेषु भारतादिषु च एकादशीव्रतं विनिश्चितं विशेषेण प्रमितम् ।

अनेन निर्मूलत्वभ्रान्त्या ये मूढाः संदिहते निरस्तास्ते वेदितव्याः । स्मृतयस्तावदुदाहियंते ।

**विष्णुस्मृतौ—**“ एकादश्यां न भुंजीत कदाचिदपि मानवः ” ॥ इति ।

**कात्यायनः—**“ एकादश्यामुपवसेत्पक्षयोरुभयोरपि ” ॥ इति ।

**कण्वः—**“ एकादशीमुपवसेन कदाचिदतिक्रमेत् ” ॥ इति । **सनत्कुमारः—**

१० “ निष्कृतिर्मध्यपस्योक्ता धर्मशास्त्रे मनीषिभिः । एकादश्यन्नकामस्य निष्कृतिः क्रापि नोदिता ” ॥ इति ।

**नारदेऽपि—**“ एकादशीसमं किञ्चित्पापत्राणं न विद्यते ” ॥ इति । **प्रचेताः—**

“ एकादशीविवृद्धा चेच्छुक्ले कृष्णे तथैव च । उत्तरां तु यतिः कुर्यात्पूर्वामुपवसेद् गृही ” ॥ इति ।

**बृहद्वसिष्ठः—**

“द्वादशी घटिकाऽल्पा वा यदि न स्यात्परेऽहनि । दशमीमिश्रिता कार्या महापातकनाशिनी” ॥ इति ।

१५ **हारीतोऽपि—**

“ ब्रयोदश्यां यदा न स्यात् द्वादशी घटिकाद्वयम् । दशम्यैकादशी विद्वा सैवोपोष्या कदाचन ” ॥ इति ।

**ऋष्यशूङ्गः—**

“ एकादशी न लभ्येत सकला द्वादशी भवेत् । उपोष्या दशमी विद्वा ऋषिरुद्धालकोऽव्रीत् ” ॥ इति ।

**काम्योपवासमधिकृत्यांगिराः—**

२० “ सायमाद्यन्तयोरन्होः सायंग्रातश्च मध्यमे । उपवासफलेष्ट्पुर्जहाद्धक्तचतुष्यम् ” ॥ इति ।

**देवलोऽपि—**

“ दशम्यामेकभक्ताशी मांसमैथुनवर्जितः । एकादशीमुपवसेत्पक्षयोरुभयोरपि ” ॥ इति ।

**पुलस्त्यः—**“ एकादश्यां न भुंजीत नारी दृष्टे रजस्यपि ” ॥ इति ॥ **गोभिलः—**

“ न शंखेन पिबेत्तोयं नाश्रीयात्कूर्मसूकरौ । एकादश्यां न भुंजीत पक्षयोरुभयोरपि ” ॥ इति ।

२५ एवमादीनि स्मृतिवचनानि द्रष्टव्यानि । पुराणवचनान्युदाहियंते । नारदीये वसिष्ठः—

“ एकादशीसमुत्थेन वन्हिना पातकेन्धनम् । भस्मतां याति राजेन्द्र अपि जन्मशतोद्धवम् ॥

“ नेहशं पावनं किञ्चिन्नराणां भूप विद्यते । याह्वशं पद्मनाभस्य दिनं पातकहनिदम् ॥

“ न गंगा न गया भूप न काशी न च पुष्करम् । न चापि कौरवं क्षेत्रं न देवा न च देविका ॥

“ यमुना चंद्रभागा च तुल्या नृप हरोदिनात् । अनायासेन राजेन्द्र प्राप्यते वैष्णवं पदम् ॥

३० “ प्रसंगादथवा दंभालोभाद्वाऽथ नराधिप । एकादश्यामनश्वन्यः सर्वदुःखाद्विमुच्यते ” ॥ इति ।

**कौर्मेऽपि—**

“ वदंतीह पुराणानि भूयो भूयो वरानने । न भोक्तव्यं न भोक्तव्यं संप्राप्ते हरिवासरे ” ॥ इति ।

**विष्णुरहस्येऽपि—**

“ परमापदमापन्नो हर्षे वा समुपस्थिते । सूतके मृतके चैव न त्यजेत् द्वादशीव्रतम् ” ॥ इति ।

एवमादीन्युपवासपराणि वचनानि बहूनि संति । तानि विस्तरभयान्न लिख्यन्ते ।

वैष्णवानामुपवासाङ्गतिथिर्निर्णयः । अथ वैष्णवानामुपवासांगतिथिर्निर्णयते । तन्निर्णयस्य च वेधाधीनत्वात्प्रथमं दशमीवेधो निरूप्यते । स च वेधः त्रिविधः । अरुणोदयवेधः सूर्योदयवेधः पञ्चदशनाडीवेधश्चेति । तत्रारुणोदयवेधो भविष्यत्पुराणे दर्शितः—

“अरुणोदयकाले तु दशमी यदि दृश्यते । सा विद्वैकादशी तत्र पापमूलमुपोषणम्” ॥ इति । अरुणोदयस्य प्रमाणं स्कंदनारदाभ्यामुक्तम्—“उदयात् प्राक्चतस्वस्तु नाडिका अरुणोदयः” इति । ५  
गोभिलः—

“अरुणोदयवेलायां दशमीसंयुता यदि । संपूर्णकैकादशीं तां तु मोहिन्यै दत्तवान्विभुः” ॥ इति ।  
सौरधर्मे—

“आदित्योदयवेला या प्राङ्मुहूर्तद्वयान्विता । सैकादशीति संपूर्ण विद्वाऽन्या परिकीर्तिता” ॥ इति । १०  
सूर्योदयवेधः कण्वेन दर्शितः—

“उदयोपरि विद्वा तु दशम्यैकादशी यदा । दानवेभ्यः प्रीणनार्थं दत्तवान्पाकशासनः” ॥ इति ।  
स्मृत्यंतरेऽपि—

“दशम्याः प्रांतमादाय यत्रोदेति दिवाकरः । तेन स्पृष्टं हरिदिनं दत्तं जंभासुराय तु” ॥ इति ।  
पञ्चदशनाडीवेधस्तु स्कांडे दर्शितः—

“नागो द्वादशनाडीभिः दिवपञ्चदशभिस्तथा । भूतोष्टा दशनाडीभिर्दूषयत्युत्तरां तिथिम्” ॥ इति । १५  
नागः पञ्चमी । दिक् दशमी । पञ्चदशनाडीबोधस्य वेधांतरस्य च विषयव्यवस्था निगमे दर्शिता—

“सर्वप्रकारवेधोऽयमुपवासस्य दूषकः । सार्धः सप्तमुहूर्तं तु वेधोऽयं बाधते ब्रतम्” ॥ इति ।  
यत्तु स्मर्यते—

“अर्धरात्रात्परा यत्र एकादशयुपलभ्यते । तत्रोपवासः कर्तव्यो दशमी न तु वै कला” ॥ इति ।  
न तद्वेधाभिप्रायेण किं तु अर्धरात्रवेधोऽपि यदा वर्ज्यः तदा किमु वक्तव्यमरुणोदयवेध इति २०  
कैमुत्यप्रदर्शनपरम् । तथा ब्रह्मकैवर्ते—

“अर्धरात्रे तु केषांचिद्वशम्या वेध इष्यते । अरुणोदयवेलायां नावकाशो विचारणे” ॥ इति ।  
विद्वानिषेध उक्तो नारदीये—

“कलावेधोऽपि विप्रेन्द्र दशम्यैकादशीं त्यजेत् । सुराया बिन्दुना स्पृष्टं गंगांभ इव निर्मलम्” ॥ इति ।  
स्मृत्यंतरेऽपि—

“कलार्थेनापि विद्वा स्यादशम्यैकादशी यदि । तदाप्येकादशीं त्यक्त्वा द्वादशीं समुपोषयेत्” ॥ इति ।  
सोऽयं कलाद्विवेधः अरुणोदये सूर्योदये च समानः । तत्रारुणोदयवेधे वैष्णवविषयः ।  
तच्च गारुडपुराणे स्पष्टमवगम्यते—

“दशमीशेषसंयुक्तो यदि स्यादरुणोदयः । नैवोपोष्यं वैष्णवेन तद्विनैकादशीब्रतम्” ॥ इति ।  
वैष्णवशब्दार्थः । वैखानसं पांचरात्राद्वैष्णवागमोक्तदीक्षां प्राप्तो वैष्णवः ।

“पांचरात्राद्यागमोक्तदीक्षां प्राप्तस्तु वैष्णवः” इति स्मृतेः । स्कांडेऽपि—

“परमापद्मापन्नो हर्षे वा समुपस्थिते । नैकादशीं त्यजेयस्तु यस्य दीक्षा तु वैष्णवी ॥

“समात्मा सर्वजीवेषु निजाचारादविष्टुतः । विष्णवर्पिताखिलाचारः स हि वैष्णव उच्यते” ॥ इति ।  
उक्तलक्षणं वैष्णवं प्रति तिथिरेवं निर्णेतव्या । एकादशी द्विविधा । अरुणोदयवेधवती शुद्धा चेति ।

तत्र वेधवती सर्वथा त्यज्या ‘तद्वि नैकादशीव्रतम्’ इत्यादिभिः प्रतिषेधात् । तत्रारुणोदयवेधस्य प्रतिषेधे सूर्योदयवेधस्य त्याज्यत्वमर्थसिद्धम् । कण्ववचनं चात्र पूर्वमुदाहृतम् । या तु वेधरहिता अरुणोदयमारभ्य प्रवृत्ता शुद्धैकादशी सा द्विविधा । आधिक्येन युक्ता तद्रहिता चेति । आधिक्यं चतुर्विधम् । एकादश्याधिक्यं द्वादश्याधिक्यमुभयाधिक्यमुभयानाधिक्यं । तत्राद्येषु त्रिषु पक्षेषु ५ शुद्धामप्यरुणोदयमारभ्य प्रवृत्तां परित्यज्य परेद्युरुपवासः कर्तव्यः । तत्रैकादश्याधिक्ये स्मृत्यंतरम्—

“एकादशी यदा पूर्णा परतः पुनरेव सा । पुण्यं क्रतुशतस्योक्तं त्रयोदश्यां तु पारणम्” ॥ इति । नारदोऽपि—

“संपूर्णैकादशी यत्र द्वादश्यां वृद्धिगामिनी । द्वादश्यां लंघनं कार्यं त्रयोदश्यां तु पारणम्” ॥ इति ।

१० द्वादश्याधिक्ये व्यास आह—

“एकादशी यदा लुप्ता परतो द्वादशी भवेत् । उपोष्या द्वादशी तत्र यदीच्छेत्परमां गतिम्” ॥ इति । स्मृत्यंतरेऽपि—

“एकादशी तु संपूर्णा द्वादशी वृद्धिगामिनी । वंचुलीं नाम सा प्रोक्ता कोटियज्ञफलप्रदा ॥

“वंचुलीं द्वादशीं त्यक्त्वा यः कुर्यात्पूर्ववासरे । सप्तजन्मार्जितं पुण्यं तत्क्षणादेव नश्यति” ॥ इति ।

१५ उभयाधिक्ये तु नारद आह—

“संपूर्णैकादशी यत्र प्रभाते पुनरेव सा । सर्वेवोक्तरा कार्या परतो द्वादशी यदि” ॥ इति ।

गुरुरपि—

“संपूर्णैकादशी यत्र प्रभाते पुनरेव सा । तत्रोपोष्या द्वितीया तु परतो द्वादशी यदि” ॥ इति ।

उभयाधिक्यरहितायां तु शुद्धायां न कोऽपि संदेहः । इति वैष्णवदीक्षायुक्तानामेकादशी निर्णीता ।

२० स्मातैकादशीनिर्णयः । अथ श्रौतस्मार्तपर्यवसितानां आगमोक्तदीक्षारहितानामेकादशी निर्णीयते । अरुणोदयवेधस्य वैष्णवविषयत्वे व्यवस्थिते सत्युदयवेधः स्मार्तविषयत्वेन परिशिष्यते । अत एव स्मर्यते—

“अतिवेधा महावेधा ये वेधास्तिथिषु स्मृताः । सर्वेऽप्यवेधा विज्ञेया वेधः सूर्योदये मतः” ॥ इति । वेधादीनां स्वरूपमुक्तं ब्रह्मकैवर्ते—

२५ “चतस्रो घटिकाः प्रातररुणोदयसंज्ञिताः । चतुष्टयविभागोऽत्र वेधादीनां किलोदितः ॥

“अरुणोदयवेधः स्यात्सार्धं तु घटिकात्रयम् । अतिवेधोऽपि घटिका प्रभासंदर्शनाद्रवेः ॥

“महावेधोऽपि तत्रैव दृश्यतेऽकों न दृश्यते । तुरीयस्तत्र विहितो योगः सूर्योदये बुधैः” ॥ इति । अरुणोदयकाले घटिकार्धे दशमीसद्धावो वेधः घटिकाव्याप्तिरतिवेधः । उदयात्पूर्वं कृत्स्नारुणोदय-कालव्याप्तिर्महावेधः । सूर्योदयकाले दशमीसद्धावो योगः उदयवेध इति यावत् । वेधातिवेधमहा-

३० वेधयोगश्चत्वार उपवासस्य दूषकाः । तत्र

“दशमीशेषसंयुक्तो यदि स्यादरुणोदयः । नैवोपोष्यं वैष्णववेन तद्वि नैकादशीव्रतम्” ॥ इति वचनेनारुणोदयवेधस्य वैष्णवविषयत्वे निश्चिते सति पारिशेष्यात् ‘सर्वेऽप्यवेधा विज्ञेया’ इति वचनाच्च सूर्योदयवेधः स्मार्तविषय इति निश्चीयते । एवं च सूर्योदयवेधमपेक्ष्य द्वेधा भिद्यते । शुद्धा विद्धा चेति । शुद्धैकादशी वृद्धिसाम्यन्हासैस्त्रिविधा । शुद्धाधिका शुद्धसमा शुद्धहीनेति ।

एवं विद्वापि त्रिधा । विद्वाधिका विद्वसमा विद्वहीनेति । तत्र शुद्धाप्रकारेषु त्रिषु विद्वा-  
प्रकारेषु त्रिषु च एकैका एकादशी द्वादशी वृद्धिसाम्यहीनतागुणैर्भूयस्त्रिविधा । शुद्धाधिका  
द्वादश्यधिका शुद्धाधिका द्वादशीसमा शुद्धाधिका द्वादशीहीना शुद्धसमा द्वादश्यधिका शुद्धसमा  
द्वादशीसमा शुद्धसमा द्वादशीहीना शुद्धहीना द्वादश्यधिका शुद्धहीना द्वादशीसमा शुद्धहीना  
द्वादशीहीना विद्वाधिका द्वादश्यधिका विद्वाधिका द्वादशीसमा विद्वाधिका द्वादशीहीना विद्व- ५  
समा द्वादश्यधिका विद्वसमा द्वादशीहीना विद्वहीना द्वादश्यधिका विद्वहीना द्वादशीसमा  
विद्वहीना द्वादशीहीनेति । एवमष्टादशधा भिन्नैकादशी । तदुक्तं ब्रह्मासिद्धांते—

“ शुद्धा विद्वा दशम्या क्वचिदपि च ततो द्वैधमेकादशीयं

“ प्रत्येकं च त्रिधाऽसौ पुनरपि समतान्यूनताधिक्ययोगात् ।

“ पक्षाः प्रत्येकभिन्नाः पुनरपि षड्मी द्वादशीन्यूनताद्यैः । १०

“ संबंधादेवमष्टादश स्तु मिलिताः कल्पनाः संभवन्ति ” ॥ इति ।

अष्टादशभेदप्रतिपादनपूर्वकं यथाक्रममुपवासनिश्चयमाह कालादर्शकारः—

“ शुद्धा विद्वा द्विधा वृद्धिसाम्यहासैः पुनस्त्रिधा । तत्रैकैका द्वादशीस्था वृद्धिसाम्योनतागुणैः ॥

“ आद्योपोष्या परोर्ध्वे द्वे पौर्वपर्यात् व्यवस्थिते । गृहियत्योरुत्तरासु षट्सु पूर्वैव संमता ॥

“ तिसृष्ट्वंत्यासु विद्वैव तत्पूर्वे तु व्यवस्थिते । अविद्वैव तु शेषासु वृतीयासु व्यवस्थिता” ॥ इति । १५

आद्योपोष्या परेति द्वादश्यधिक्ययुक्ता शुद्धाधिकैकादशी परैवोपोष्या । तदाह नारदः—

“ संपूर्णैकादशी यत्र प्रभाते पुनरेव सा । तत्रोपोष्या द्वितीया तु पुत्रपौत्रविवर्धनी ” ॥ इति ।

गारुडपुराणे—“संपूर्णैकादशी यत्र प्रभाते पुनरेव सा । तत्रोपोष्या परा पुण्या परतो द्वादशी यदि” ॥

स्मृत्यंतरे—“संपूर्णैकादशी यत्र प्रभाते पुनरेव सा । वैष्णवी चेत्रयोदश्यां घटिकैकाऽपि दृश्यते ॥

“ गृहस्थोऽपि परां कुर्यात्पूर्वी नोपवसेत्तदा । पूर्णाऽप्येकादशी त्याज्या वर्धतो द्वितयं यदि ” ॥ इति । २०

वैष्णवी द्वादशी । वाराहेऽपि—

“ एकादशी विष्णुना चेत् द्वादशी परतः स्थिता । उपोष्या द्वादशी तत्र यदीच्छेत्परमं पदम् ” ॥ इति ।

ऊर्ध्वे द्वे एकादश्यै । द्वादशीसाम्ययुक्ता शुद्धाधिका द्वादशीहानियुक्ता शुद्धाधिकेति द्वे एका-  
दश्यौ पौर्वपर्यात्पूर्वा गृहस्थानां परा यतीनामिति व्यवस्थिते । तदाह स्कंदः—

“ संपूर्णैकादशी यत्र प्रभाते पुनरेव सा । उत्तरां तु यतिः कुर्यात्पूर्वमुपवसेद् गृही ” ॥ इति । २५

स्कंदेऽपि—“ प्रथमेऽहनि संपूर्णा व्याप्त्याऽहोरात्रसंयुता ।

“ द्वादश्यां च तथा किञ्चिद् दृश्यते पुनरेव च । पूर्वा कार्या गृहस्थैस्तु यतिभिश्चोत्तरा विभो ” ॥ इति ।

स्मृत्यंतरे—“ पुनः प्रभातसमये घटिकैका यदा भवेत् ।

“ अत्रोपवासो विहितः चतुर्थाश्रमवासिनाम् । विधवायाश्च तत्रैव परतो द्वादशी न चेत् ” ॥

गारुडपुराणेऽपि—

३०

“ पुनः प्रभातसमये घटिकैका यदा भवेत् । अत्रोपवासो विहितो वनस्थस्य यतेस्तथा ॥

“ विधवायाश्च तत्रैव परतो द्वादशी न चेत् । पुण्यं क्रतुशतस्योक्तं त्रयोदश्यां तु पारणम् ” ॥ इति ।

**मार्कंडेयः—**

“ संपूर्णे कादशी यत्र प्रभाते पुनरेव सा । पूर्वामुपवसेत् कामी निष्कामस्तूत्तरां सदा ” ॥ इति ।  
कानिपदं गृहस्थोपलक्षणं निष्कामपदं यत्युपलक्षणम् ।

केचिद्गृहस्थस्यापि निष्कामित्वे उत्तरा तिथिरुपोष्येत्याहुः । तथा विष्णुरहस्ये—

५ “ निष्कामस्तु गृही कुर्यादुत्तरकादशीं सदा । सकामस्तु सदा पूर्वामिति बोधायनो मुनिः ” ॥ इति ।  
यन्तु स्मृत्यंतरवचनम्—

“ संपूर्णे कादशी यत्र प्रभाते पुनरेव सा । लुप्यते द्वादशी तस्मिन्नुपवासः कर्थं भवेत् ॥

“ उपोष्ये द्वे तिथी तत्र विष्णुप्रीणनतत्परैः ” ॥ इति तत् गृहियत्योर्व्यवस्थितं यत्पौर्वापर्यं तदभिप्रायेण । अत एवोक्तं कालनिर्णये—

१० “ एकादशीमात्रवृद्धौ गृहियत्योर्व्यवस्थितिः । उपोष्या गृहीभिः पूर्वा यतिभिस्तूत्तरा तिथिः ” ॥ इति ।  
उत्तरासु षट्सु पूर्वैव द्वादश्याधिक्ययुक्ता शुद्धसमा द्वादशीसाम्ययुक्ता शुद्धसमा द्वादशी-हानियुक्ता शुद्धसमा द्वादश्याधिक्ययुक्ता शुद्धहीना द्वादशीसाम्ययुक्ता शुद्धहीना द्वादशी-हानियुक्ता शुद्धहीनेति षट्स्वेकादशीषु पूर्वैवोपोष्या । तदाह स्कंदः—

“ शुद्धा यदा समा हीना समा क्षाणाऽधिकोत्तरा । एकादशीमुपवसेन्न शुद्धां वैष्णवीं सदा ” ॥ इति ।

१५ यन्तु स्मृत्यंतरेऽभिहितम्—“ शुद्धाऽप्येकादशी त्याज्या परतो द्वादशी यदि ” इति यदपि वचनांतरं  
“ द्वादशी तु त्रयोदश्यां कलामात्रापि दृश्यते । द्वादशद्वादशीर्हन्ति पूर्वस्यां पारणं कृतम् ” ॥ इति ।  
यदपि स्कांदवचनम्—

“ एकादशी भवेत्पूर्णा परतो द्वादशी यदि । तदा ह्येकादशीं त्यक्त्वा द्वादशीं समुपोषयेत् ” ॥ इति ।  
यदपि कालिकापुराणवचनम्—

२० “ एकादशी यदा पूर्णा परतो द्वादशी भवेत् । उपोष्या द्वादशी तत्र तिथिवृद्धिः प्रशस्यते ” ॥ इति ।  
यदपि स्मृत्यंतरवचनम्—

“ एकादशी तु संपूर्णा द्वादशी वृद्धिगामिनी । वंचुली नाम सा प्रोक्ता कोटियज्ञफलप्रदा ॥

“ वंचुलीं द्वादशीं त्यक्त्वा यः कुर्यात्पूर्ववासरे । सप्तजन्मार्जितं पुण्यं तत्क्षणादेव नश्यति ” ॥ इति ।

एवमादीनि द्वादशीमात्रवृद्धौ परदिनोपवासविधायीनि वचनानि वैष्णवविषयाणि । स्मार्तानामपि

२५ विद्वैकादशीविषयाणि । तथा च स्मर्यते—

“ आदित्योदयमारभ्य भवेदेकादशीतिथिः । परेऽहि द्वादशी पूर्णा त्रयोदश्यां च वर्धते ॥

“ उपोष्या द्वादशी तत्र वैष्णवैर्मोक्षकाङ्क्षिभिः ” ॥

**ठ्यासः—**

“ एकादशी यदा लुप्ता परतो द्वादशी भवेत् । उपोष्या द्वादशी तत्र यदीच्छेत्परमां गतिम् ” ॥ इति ।

३० लुप्ता आदौ दशमीभिश्रितत्वात्परतो वृद्ध्यभावाच्च क्षयं गतेति यावत् । उक्तं च कालनिर्णये—

“ द्वादशीमात्रवृद्धौ तु शुद्धाविद्वे व्यवस्थिते । शुद्धा पूर्वोत्तरा विद्धा स्मार्तानिर्णय ईदृशः ” ॥ इति ।

विद्वाधिका द्वादश्याधिका विद्वाधिका द्वादशीसमा विद्वांसमा द्वादश्याधिका इति पक्षत्रयेऽपि परदिन एवोपवासः । तथा भविष्यत्पुराणे—

“ एकादशीं दिशायुक्तां वर्वमाने विवर्जयेत् । क्षयमार्गस्थिते सेमे कुर्वीत दशमीयुता ” ॥ इति ।

१ घ-विद्वाधिका द्वादशीहीनेति ।

**स्मृत्यंतरेऽपि—**

“ एकादशी यदा लुता परतो द्वादशी भवेत् । उपोष्या द्वादशी तत्र यदीच्छेत्परमां गतिम् ॥  
“ कलार्धेनापि विद्वा स्याद्वशम्यै कादशी यदा । तदा त्वेकादशीं त्यक्त्वा द्वादशीं समुपोषयेत् ” ॥ इति ।  
पक्षत्रयेऽपि पूर्वत्रोपवासं निषेधति नारदः—  
“ नोपोष्या दशमी विद्वा सदैवैकादशी तिथिः । तामुपोष्य नरो ज्यात्पुण्यं वर्षशतोऽन्नवम् ” ॥ इति । ५  
तथा—

“ दशमीशेषसंयुक्ता गांधार्या समुपोषिता । तस्याः पुत्रशतं नष्टं तस्मात्तां परिवर्जयेत् ” ॥ इति ।  
एवमन्यान्यपि वचनानि विद्वानिषेधपराण्यत्रैव विषये योजनीयानि ।

विद्वादिका द्वादशीहीनेति पक्षे पूर्ववत् गृहियत्योर्व्यवस्था द्रष्टव्या । तदाह प्रचेताः—

“ एकादशी विवृद्धा चेच्छुक्ले कृष्णे विशेषतः । उत्तरां तु यतिः कुर्यात्पूर्वमुपवसेद्गृही ” ॥ इति । १०  
न चैतच्छुद्धाधिक्ये चरितार्थमिति शंकनीयं बाधकाभावेन विद्वाधिक्येऽपि तद्वचनप्रवृत्तेनिवारयितु-  
मशक्यत्वात् । विद्वसमा द्वादशीसमा विद्वसमा द्वादशीहीना विद्वहीना द्वादश्यधिका विद्वहीना  
द्वादशीसमा विद्वहीना द्वादशीहीनेति पंचमु पक्षेषु विद्वैकादश्येवोपोष्या । तथा च स्मृत्यंतरे—  
“ एकादशी न लभ्येत सकला द्वादशी भवेत् । उपोष्या दशमी विद्वा क्षमिष्यद्वालकोऽव्रवीत् ” ॥ इति ।  
ऋष्यशूङ्गः—

“ सर्वत्रैकादशी कार्या दशमीमिश्रिता नरैः । प्रातर्भवतु वाऽमा वा तस्यां नित्यमुपोषणम् ” ॥ इति ।

तथा—

“ त्रयोदश्यां न लभ्येत द्वादशी यदि किंचन । उपोष्यैकादशी तत्र दशमीमिश्रिता त्वपि ” ॥ इति ।

**विष्णुरहस्येऽपि—**

“ एकादशी भवेत्काचिद्वशम्या दूषिता तिथिः । वृद्धिपक्षे भवेद्वौषः क्षयपक्षे तु पुण्यदा ” ॥ इति । २०  
विद्वैकादश्याः क्षये सति पूर्वत्रोपोष्येत्यर्थः । अत्र पक्षपञ्चके परदिनोपवासे सति त्रयोदश्यां पारणं  
प्रसन्न्येत । तच्च निषिद्धम् । तथा च भविष्यत्पुराणं—

“ पारणं तु त्रयोदश्यां यः करोति वृपोत्तम । द्वादशद्वादशीहीति नात्र कार्या विचारणा ” ॥ इति ।  
ऋष्यशूङ्गः—

“ पारणाय न लभ्येत द्वादशी यदि कुत्रचित् । तदानीं दशमी विद्वाऽप्युपोष्यैकादशी तिथिः ” ॥ इति । २५

**विष्णुरहस्येऽपि—**

“ द्वादशीतिथिरत्पाऽपि यदि न स्यात्परेऽहनि । दशमीमिश्रिता कार्या न दोषोऽस्तीति वेधसः ” ॥ इति ।  
वचनमिति शेषः । विद्वसमा द्वादशीसमा विद्वसमा द्वादशीहीनेति पक्षद्वये पौवांपर्येण गृहि-  
यत्योर्व्यवस्था कालादर्शकारेण प्रतिपादिता ‘तत्पूर्वे तु व्यवस्थिते’ इति । अत्र प्रमाणं चिंत्यम् ।  
सर्वमेतत्संगृह्य दर्शयति कालनिर्णयकारः—“ शुद्धाविद्ययोरुभयोरप्येष निर्णयसंग्रहः । एका- ३०  
दशीद्वादश्योरुभयोरपि वृद्धौ परेव्युरुपवासः द्वयोरप्यवृद्धौ पूर्वेव्युः । एकादशीमात्रवृद्धौ गृहियत्यो-  
र्व्यवस्था पूर्वेव्युर्गृहस्थः उत्तरेर्व्युयतिः । द्वादशीमात्रवृद्धौ शुद्धायां सर्वेषां पूर्वेव्युः विद्वायां  
परेव्युरिति । दिनत्रयविषयाणि कानिचिद्वचनान्युपलभ्यते । तदाह नारदः—

“ यदि दैवात्मा संसिद्ध्येदेकादश्यां तिथित्रयम् । तत्र क्रतुशतं पुण्यं द्वादशीपारणे भवेत् ” ॥ इति ।

**कौर्मे—**

“ द्विस्पृगेकादशी यत्र तत्र संनिहितो हरिः । तामेवोपवसेत्काममकामो विष्णुतत्परः ” ॥ इति । अत्राद्यंतयोर्दशमीद्वादश्योर्मध्ये एकादशीत्येतादृशं दिनत्रयं यदा प्राप्नोति तदा परतो द्वादशी वृद्धिरवृद्धिश्चेत्युभयं संभवति । तत्र यद्यवृद्धिः तदा यथोक्तं दिनत्रयमुपोष्यम् । तदुक्तं पुराणांतरे—  
५ “ दिनत्रयमृते देवि नोपोष्या दशमीयुता । सैवोपोष्या सदा पुण्या परतश्चेत्योदशी ” ॥ इति । द्वादशीवृद्धौ एकादशी यदा लुतेत्यनेन व्यासवचनेन परेद्युरुपवासः कर्तव्यः । यदा त्वाद्यंतयोरेकादशीत्रयोदश्योर्मध्ये द्वादशीत्येतादृशं दिनत्रयं तदा गृहस्थानां पूर्वदिन उपवासः । परदिने निषेधात् । तथा कौर्मे—

“ एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी । उपवासं न कुर्वीत पुत्रपौत्रसमन्वितः ” ॥ इति ।

**१० पाद्मेऽपि—**

“ एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी । त्रयहस्पृक्तदहोरात्रं नोपोष्यं तु सुतार्थिभिः ” ॥ इति । पुत्रपौत्रसमन्वितः सुतार्थिभिरिति विशेषणायतीनामत्र विषये परदिन एवोपवासः । एतदेवाभिप्रेत्याह नारदः—

“ एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी । तत्र कतुशतं पुण्यं त्रयोदश्यां तु पारणम् ॥

१५ “एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी । त्रिस्पृशी नाम सा प्रोक्ता ब्रह्महत्यां व्यपोहति” ॥ इति ।

**कौर्मेऽपि—**

“ द्विस्पृगेकादशी यत्र तत्र संनिहितो हरिः । पुण्यं कतुशतस्योक्तं त्रयोदश्यां तु पारणम् ” ॥ इति । वैष्णवानामपि परदिन एवोपवासः “ नैवोपोष्या वैष्णवेन ” इति पूर्वदिनोपवासस्य निषिद्धत्वात् । यन्तु स्मर्यते—

२० “आदित्येऽहनि संक्रांत्यां व्यतीपाते दिनत्रये । पारणं चोपवासं च न कुर्यात्पुत्रवान्गृही” ॥ इति ।

**यदपि मत्स्यवचनम्—**

“ दिनक्षये तु संक्रांत्यां ग्रहणे चंद्रसूर्ययोः । उपवासं न कुर्वीत पुत्रपौत्रसमन्वितः ॥

“ द्वौ तिथ्यंतवेकवारे यस्मिन्स स्याद्दिनक्षयः ” ॥ इति । अत्र दिनक्षयादिष्ठूपवासनिषेधो दिनक्षयादिनिमित्तकः नैकादशीनिमित्तकः । तदुक्तं कालादर्शे—

२५ “ संक्रांत्यादिनिषेधश्च संक्रांत्यादिनिमित्तकः । उपवासं निषेधन्ति न ते त्वैकादशीव्रतम् ” ॥ इति ।

**कात्यायनः—**

“ तत्रप्रयुक्तोपवासस्य निषेधोऽयमुदाहृतः । प्रयुक्तचंतरयुक्तस्य न विधिर्न निषेधनम् ” ॥ इति ।

**जैमिनिरपि—**

“ तन्निमित्तोपवासस्य निषेधोऽयमुदाहृतः । नानुषंगकृतो ग्राह्यो यतो नित्यमुपोषणम् ” ॥ इति ।

३० अयमर्थः—एकादश्युपवासस्य नित्यत्वात्संकान्त्याद्युपवासस्य काम्यत्वात्काम्योपवासनिषेधेन नित्योपवासनिषेधो न सिध्यतीति । काम्योपवासश्च वसिष्ठेनोक्तः—

“ एकस्मिन्सावने त्वन्हि तिथीनां त्रितयं यदा । तदा दिनक्षयः प्रोक्तस्तत्र साहस्रिकं फलम् ॥

“ अमावास्या द्वादशी च संक्रांतिश्च विशेषतः । एताः प्रशस्तास्तिथयो भानुवारस्तथैव च ॥

“ अत्र स्नानं जपो होमो देवतानां च पूजनम् । उपवासस्तथा दानमेकैकं पावनं स्मृतम् ” ॥ इति ।

पितामहस्तु दिनक्षय एकादश्युपवासं निषेधति—

“एकादश्यां दिनक्षय उपवासं करोति यः । तस्य पुत्रा विनश्यति मधायां पिंडदो यथा”॥ इति ।  
ईदृशे विषये व्यवस्था दर्शिता कालानिर्णये—

“उपवासे निषिद्धे तु भक्ष्यं किञ्चित् प्रकल्पयेत् । न दूष्यत्युपवासोऽत्र उपवासफलं भवेत् ॥

“नकं हविष्यान्नमनोदनं वा फलं तिळाः क्षीरमथांबुवाऽज्यम् ।

“यत्पंचगव्यं यदि वाऽपि वायुः प्रशस्तमत्रोत्तरमुत्तरं च”॥ इति । स्मृत्यंतरे—

“अष्टैतान्यव्रतधनानि आपो मूलं घृतं पयः । हविर्बाह्यणकाम्या च गुरोर्वचनमौषधम्”॥ इति ।

एवं कृष्णैकादश्यां गृहस्थस्योपवासे निषिद्धे भक्ष्यं प्रकल्पनीयम् । तत्रोपवासं निषेधति कात्यायनः—

“एकादशीषु कृष्णासु रविसंक्रमणे तथा । चंद्रसूर्योपरागे च न कुर्यात्पुत्रवान्गृही”॥ इति । १०

गौतमः—

“आदित्येऽहनि संक्रात्यामसितैकादशीषु च । व्यतीपाते कृते श्राद्धे पुत्री नोपवसेत् गृही”॥ इति ।

पाद्मोऽपि—

“संक्रात्यामुपवासेन पारणेन युधिष्ठिर । एकादश्यां च कृष्णायां ज्येष्ठपुत्रो विनश्यति”॥ इति ।

नारदोऽपि—

१५

“इन्दुक्षयेऽर्कसंकांतौ एकादश्यसिते रवेः । उपवासं न कुर्वीत यदीच्छेत्संततिं ध्रुवम्”॥ इति ।

यत्तु कूर्मवचनम्—“एकादश्यां न भुजीत पक्षयोरुभयोरपि”॥ इति । यदपि विष्णुधर्मोत्तरे वचनम्—

“स ब्रह्महा स गोघनश्च स्तेयी च गुरुतल्पगः । एकादश्यां तु यो भुक्ते पक्षयोरुभयोरपि”॥ इति ।

यत्तु कूर्मवचनम्—

२०

“यथोत्तरे दक्षिणे वा अयने चैव कीर्तिं । तुल्यं पुण्यमवाप्नोति द्वादश्योरुभयोरपि”॥ इति ।

“सायंप्रातर्यथा सन्ध्ये सायंप्रातर्यथाहुती । तथा सितासिते पुण्ये द्वादश्यौ धर्मतः समे”॥ इति ।

यानि चान्यान्येतादृशानि शुक्रकृष्णैकादश्युपवासप्रतिपादकानि तानि सर्वाणि वानप्रस्थयतिविधवाविषयाणि । तदुक्तं कालादर्शे—

“उपोष्यैकादशी कृष्णा शुक्रावदिति वादिनः । विधवाविपिनस्थादिविषयत्वेन सार्थकम्”॥ इति । २५

कौर्मोऽपि—“एकादश्यां न भुजीत पक्षयोरुभयोरपि । वानप्रस्थयतिधर्मोऽयं शुक्रामेव सदा गृही”॥

स्कान्देऽपि—“एकादश्यां न भुजीत पक्षयोरुभयोरपि । वानप्रस्थो यतिश्वैव शुक्रामेव सदा गृही”॥ इति

नैमित्तिककाम्योपवासौ कृष्णायामपि कर्तव्यौ । तत्र नैमित्तिकं स्मृत्यंतरे पठ्यते—

“शयनिवोधनी मध्ये या कृष्णैकादशी भवेत् । सैवोपोष्या गृहस्थेन नान्या कृष्णा कदाचन”॥ इति ।

काम्योपवासस्तु मात्स्ये दर्शितः—

३०

“एकादश्यां तु कृष्णायामुपोष्य विधिवन्नरः । पुत्रानायुः समुद्धिं च सायुज्यं च समृच्छति”॥ इति ।

स्कान्देऽपि—“पितृणां गतिमन्विच्छन् कृष्णायां समुपोषयेत्”॥ इति । सनत्कुमारोऽपि—

“भानुवारेण संयुक्ता कृष्णा संक्रातिसंयुता । एकादशी सदोपोष्या सर्वसंपत्करी तिथिः”॥ इति ।

श्रवणद्वादशीनिर्णयः । यदा द्वादश्यां श्रवणनक्षत्रं भवेत्तदा शुद्धैकादशीमपि परित्यज्य द्वादश्यामेवोपवसेत् । तथा च नारदः—

“ शुक्रा वा यदि वा कृष्णा द्वादशी श्रवणान्विता । तयोरेवोपवासश्च त्रयोदश्यां तु पारणम् ॥

“एकादश्यां त्वविद्वायां द्वादश्यां श्रवणं यदि । उपोष्या द्वादशी पुण्या सर्वपापश्यावहा” ॥ इति ।

५ स्मृत्यंतरेऽपि—

“ एकादशीं परित्यज्य द्वादशीं समुपोषयेत् । पूर्वोपवासजं पुण्यं सर्वं प्राप्नोत्यसंशयम् ” ॥ इति ।  
शक्तस्तूपवासद्वयं कुर्यात्

“ एकादशीमुपोष्यैव द्वादशीं समुपोषयेत् । तत्र द्विघोपवासः स्यादुभयोर्देवता हरिः ” ॥ इति ।  
अत्र देवतैक्यात्पूर्वोपवासस्य पारणं नास्तीत्युक्तं भवति ।

६० विद्वायामपि द्वादश्यां फलाधिक्यमुक्तं स्मृत्यंतरे—

“ द्वादश्येकादशीयुक्ता तत्र च श्रवणं यदि । सा विष्णुशृङ्खला ज्ञेया सायुज्यफलदायिनी ” ॥  
गौतमोऽपि—

“ द्वादशीं श्रवणर्क्षं च स्फृशेदेकादशी यदि । स एव वैष्णवो योगो विष्णुशृङ्खलसंजकः ” ॥ इति ।  
इयं च श्रवणद्वादशी नित्या

१५ “ द्वादशीं श्रवणोपेतां यो नोपोष्यति दुर्मतिः । पञ्चसंवत्सरकृतं पुण्यं तस्य विनश्यति ” ॥  
इत्यकरणे प्रत्यवायस्मरणात् । काम्यत्वमपि मार्कण्डेय आह—

“ द्वादश्यामुपवासेन सिद्धार्थो भूप सर्वशः । चक्रवर्तित्वमस्तिलं संप्राप्नोत्यस्तिलां श्रियम् ” ॥  
यत्तु वचनम्—

“ नभस्यशुक्रद्वादश्यां नक्षत्रं श्रवणं यदि । श्रवणद्वादशी नाम सा प्रोक्ता मुनिपुण्गवैः ” ॥ इति ।

२० तद्वामनजयंत्यभिप्रायम्

“ मासि भाद्रपदे शुक्रद्वादशी श्रवणान्विता । उपोष्या वामनप्रीत्यै जातस्तत्र यतो हरिः ” ॥ इति ।  
स्मरणात् । “ शुक्रा वा यदि वा कृष्णा द्वादशी श्रवणान्विता ” इति वचनाद्यदाकदाचिदपि श्रवण-  
द्वादशीसंभवे तत्रोपवासः कार्यं एव । एतच्च श्रवणद्वादशीव्रतं न तिथिप्रधानं

“याः काश्चित्तिथयः पुण्याः प्रोक्ता नक्षत्रयोगतः तास्वेव तद्वतं कुर्याच्छ्रवणद्वादशीं विना” ॥ इति स्मृतेः ।

२५ नक्षत्रप्राधान्येऽपि इतरनक्षत्रोपवासवशस्तमयव्यापि नक्षत्रं याह्यम्

“ यस्मिन्नस्तंगतः सूर्यो निशि यद्युतमिंदुना । तदैवोपवसेटक्षे नक्षत्रं श्रवणं विना ” ॥ इति ।  
श्रवणपर्युदासात् । अतः “ उदये त्रिमुहूर्तस्थं नक्षत्रं ब्रतदानयोः ” इति वचनाद्यादित्रिमुहूर्त-  
व्यापिश्रवणनक्षत्रं किंचित् द्वादशीस्मृष्टं यदि ग्राह्यम् । त्रिमुहूर्तव्याप्त्यभावे पूर्वद्युरोपवासः ।  
द्वादशीयुक्तस्य श्रवणस्य दिनद्वये त्रिमुहूर्तव्यापित्वे पूर्वदिन उपवासः । तत्र नक्षत्रस्य पूर्णत्वात् ।

३० श्रवणद्वादश्युपवासे त्रयोदश्यामेव पारणं कार्यं “ त्रयोदश्यां तु पारणम् ” इत्युक्तत्वात् ।  
एकादश्युपवासे तु हरिवासरवर्जितद्वादश्यां पारणं कार्यम्

“ चतुर्मुहूर्तं द्वादश्यामाद्यमेकादशीतिथौ । अन्ते चतुर्मुहूर्तं यत् तत्कालं हरिवासरम् ॥

“ महादोषकरं चान्मं संप्राप्ते हरिवासरे । न कार्यं पारणं तत्र विष्णुप्रीणनतत्परैः ” ॥ इति स्मृतेः ।

यदा त्रयोदश्यां द्वादश्याः कलाद्वयं कलात्रयं वा संभवति तदा द्वादशीकाल एव पारणं कुर्यात्तदुक्तं

नारदीये—

“एकादश्याः कला ह्येका द्वादश्यास्तु कलाद्वयम् । द्वादशद्वादशीर्हति त्रयोदश्यां तु पारणम्” ॥ इति ।

स्मृत्यंतरेऽपि—

“कलाद्वयं त्रयं वापि द्वादशीं न त्वतिक्रमेत् । पारणे मरणे नृणां तिथिस्तात्कालिकी स्मृता” ॥ इति ।

द्वादश्यां माध्याह्निककालः । द्वादशीकाले यदा पारणं तदा तत्प्रागेव सर्वाः क्रियाः ५  
कर्तव्याः । तदुक्तं नारदीये—

“अल्पायामपि विषेद्र द्वादश्यामरुणोदये । स्नानार्चनक्रियाः कार्या दानहोमादिसंयुताः” ॥ इति ।

गारुडपुराणोऽपि—

“यदा त्वल्पा द्वादशी स्यादपकर्षो भुजेर्भवेत् । प्रातर्मध्यान्हिकस्यापि तत्र स्यादपकर्षणम्” ॥ इति ।

स्काँदेऽपि—

“यदा भवेदतीवाल्पा द्वादशी पारणादिने । उषःकाले द्वयं कुर्यात्प्रातर्मध्यान्हिकं च तत्” ॥ इति ।

उदितहोमनोऽग्निहोत्रिणो अग्निहोत्रहोमानंतरं पारणं कार्यम् ‘विप्रतिषेधे श्रुतिलक्षणं बलीय’

इति स्मरणात् । न च वाच्यम्

“आहिताग्निनरङ्गुञ्च ब्रह्मचारी च ते त्रयः । अश्रंत एव सिध्यन्ति नैषां सिद्धिरनश्वताम्” ॥

\*इत्यापस्तंबस्मरणादाहिताग्नेरुपवास एव नास्तीति “ब्रह्मचार्याहिताग्निश्च त्यजेन्नैकादशीव्रतम्” इति १५

स्मृतेः । आपस्तंबवचनस्य एकादशीव्यतिरिक्तविषयत्वावगमात् कालयोर्भेजनमिति वचन-

प्राप्तं यत्कालद्वयभोजनं तत्र नियमाभावप्रतिपादनपरत्वाच्च द्वादशीकाले पारणासंभवे आद्धिः  
पारणं कुर्यात् । तदाह कात्यायनः—

“संध्यादिकं भवेन्नित्यं पारणं तु निमित्ततः । अद्धिस्तु पारयित्वाऽथ नैत्यकांते भुजिर्भवेत्” ॥ इति ।

द्वैवलोऽपि—

२०

“संकटे विषमे ग्रासे द्वादश्यां पारणं कथम् । अद्धिस्तु पारणं कुर्यात् पुनर्भुक्तं न दोषकृत्” ॥ इति ।

“अशितानशिता यस्माद्रापो विद्वद्धिरीरिताः । अम्भसा केवलेनैव करिष्ये व्रतपारणम्” ॥ इति

संकल्प्य गायत्र्या अभिमन्त्र्य त्रिवारं चुलकोदकं “प्रणवेन पिबेत् तोयं जलपारणमुच्यते ॥

“आपः पवित्रममलं पावनाः सर्वकर्मसु । व्रतलोपभयादेतपारणार्थं पिवाम्यहम्” ॥ इति ।

एकादश्युपवासे अधिकारिणः । एकादश्युपवासे अधिकारिणं दर्शयति कात्यायनः— २५

“अष्टवर्षाधिको मर्त्यो ह्यसंपूर्णशीतिवत्सरः । एकादश्यामुपवसेत्पक्षयोरुभयोरपि ” ॥ इति ।

नारदः—

“अष्टाब्दादधिको मर्त्यो ह्यपूर्णशीतिहायनः । भुक्ते यो मानवो मोहादेकादश्यां स पापकृत्” ॥ इति ।

पतिमत्या उपवासनिषेधः । पतिमत्यामूपवासं निषेधति विष्णुः ( २५।१६ )—

“पत्यौ जीवति या नारी उपोष्य व्रतमाचरेत् । आयुष्यं हरते भर्तुर्नरकं चैव गच्छति” ॥ इति । ३०

मनुरपि ( ५।१५४ )—“नास्ति स्त्रीणां पृथग्यज्ञो न व्रतं नाप्युपोषणम्” ॥ इति ।

पत्युरनुमत्या पत्नी व्रतादिष्वधिकारिणी भवेत् । तदाह कात्यायनः—

“भार्या भर्तुर्भुक्तेनैव व्रतादीनाचरेदिति” ॥ मार्कंडेयः—

“नारी खल्वननुज्ञाता भर्त्रा पित्रा सुतेन वा । निष्कलं तु भवेत्तस्या यत्करोति व्रतादिकम्” ॥ इति ।

**पराशरोऽपि—**

“अपृष्ठा चैव भर्तां या नारी कुरुते व्रतम् । सर्वं तद्राक्षसान् गच्छेदित्येवं मनुरब्रवीत्”॥ इति ।

उपवासासमर्थविषयः । उपवासासमर्थस्तु एकभक्तादीनि कुर्यात् । तथा च कात्यायनः—

“उपवासे त्वशक्तानामशीतेहर्धर्जीविनाम् । एकभक्तादिकं कार्यमाह बोधायनो मुनिः”॥ इति ।

**५ मार्कंडेयः—**

“एकभक्तेन नक्तेन तथैव याचितेन च । मुन्यन्नेन च दानेन न निर्द्वादशिको भवेत्”॥ इति ।

**स्मृत्यन्तरेऽपि—**

“एकभक्तेन नक्तेन बालवृद्धातुरः क्षपेत् । पयोमूलं फलं वाऽपि न निर्द्वादशिको भवेत्”॥

**भविष्यत्पुराणेऽपि—**

१० “एकादश्यामुपवसेन्नकं वापि समाचरेत् । अथवा विप्रमुख्येभ्यो दानं द्वात्स्वशक्तिः”॥ इति ।

एकभक्तादावप्यशक्तः प्रतिनिधिना कारयेत् । तथा च विष्णुरहस्ये—

“असामर्थ्ये शरीरस्य व्रते च समुपस्थिते । कारयेद्वर्मपत्नीं वा पुत्रं वा विनयान्वितम्”॥ इति ।

**पैठीनस्ति—**

“भार्या भर्तुर्वतं कुर्याद्धार्यायाश्च पतिर्वतम् । असामर्थ्ये परस्ताभ्यां व्रतभंगो न जायते”॥ इति ।

१५ **स्कांडेऽपि—**“पुत्रं वा विनयोपेतं पत्नीं वा आतरं तथा ।

“एषामभाव एवान्यं ब्राह्मणं विनियोजयेत् । भगिनीमथवा शिष्यं ब्राह्मणं दक्षिणादिभिः”॥ इति ।

कात्यायनः—“पितृमातृस्वसृभ्रातृगुर्वर्थे च विशेषतः । उपवासं प्रकुर्वाणः पुण्यं क्रतुशतं लभेत् ॥

“दक्षिणा नात्र दातव्या शुश्रूषा विहिता च सा । नारी च पतिमुद्दिश्य एकादश्यामुपोषिता ॥

“पुण्यं क्रतुशतं प्राहुर्मुनयः पारदर्शनाः । उपवासफलं तस्य पतिः प्राप्नोत्यसंशयम्”॥ इति ।

**२० स्मृत्यन्तरेऽपि—**

“पितृमातृपतिभ्रातृशूगुर्वादिभूभुजाम् । अदृष्टार्थमुपोषित्वा स्वयं च फलभागभवेत् ॥

“मातामहादीनुद्दिश्य एकादश्यामुपोषणे । कर्त्ता दशगुणं पुण्यं प्राप्नोत्यत्र न संशयः ॥

“यमुद्दिश्य कृतं सोऽपि संपूर्णफलमाप्नुयात्”॥ इति । प्रतिनिधौ कश्चिद्विशेषः स्मर्यते—

“काम्ये प्रतिनिधिर्नास्ति नित्ये नैमित्तिके च सः । क्राम्येऽप्युपक्रमादूर्ध्वं केचित्प्रतिकृतिं विदुः”॥ इति

**२५ उपवासाकरणे प्रायश्चित्तं स्मर्यते—**

“अर्के पर्वद्वये रात्रौ चतुर्दश्यष्टमी दिवा । एकादश्यामहोरात्रं भुक्त्वा चांद्रायणं चरेत्”॥

**सूतकादावुपवासविचारः ।** सूतकादौ उपवासमात्रं कार्यमाह पुलस्त्यः—

“सूतके च नरः स्नात्वा प्रणम्य मनसा हरिषि । एकादश्यां न भुंजीत व्रतमेतत्र लुप्यते ॥

“सूतकेऽपि न भुंजीत ह्येकादश्यां सदा नरः । एकादश्यां न भुंजीत नारी दृष्टे रजस्यपि”॥ इति ।

३० **काम्येऽपि दानार्चनरहितमुपवासमात्रं कार्यम् ।** एतदुक्तं कौर्मे—

“काम्योपवासे प्रक्रांते त्वन्तरा सूतसूतके । तत्र काम्यव्रतं कुर्यात् दानार्चनविवर्जितम् ॥

“सूतकांते नरः स्नात्वा पूजयित्वा जनार्दनम् । दानं दत्वा विधानेन व्रतस्य फलमश्रुते ॥

“संप्रवृत्तेऽपि रजसि न त्याज्यं द्वादशीव्रतम् । पंचमेऽहनि शुद्धा स्याद्वै पित्र्ये च कर्मणि”॥

**एकादश्यां नित्यनैमित्तिकश्राद्धे उपवासभेदः ।** एकादश्यां सांवत्सरिकश्राद्धे संप्राप्ते

३५ श्राद्धं कृत्वा पितृसेवितशेषं समाधायोपोषणं कुर्यात् । तदाह कात्यायनः—

“उपवासो यदा नित्यः श्राद्धं नैमित्तिकं भवेत् । उपवासं ततः कुर्यादाधाय पितृसेवितम्”॥ इति ।

ननु “ भुंजतिवै कृते श्राद्धे पुत्री नोपवसेद् गृही ” ॥ इति । तथा—

“ श्राद्धं कृत्वा तु यो विप्रो न भुंक्ते तु कदाचन । देवा हव्यं न गृह्णति कव्यानि पितरस्तथा ” ॥  
इत्यादिवचनविरोधः स्यात् । मैवम् । आग्राणेनापि भोजनकार्यस्य सिद्धेः तस्य भोजनकार्ये विधानात् ।  
अनुकल्पं कुर्वन्नशक्तस्तु भुंजीत

“ अनुकल्पं यदा कुर्वन्नशक्तः पक्षयोर्द्वयोः । एकादश्यां तु भुंजीत श्राद्धं कृत्वा दिवैव च ” ॥ इति स्मृतेः ॥ ५  
कृष्णैकादश्यां गृहस्थस्य ओदनव्यतिरिक्तपितृशेषभोजनेऽप्यदोषः । तस्य शुक्लैकादश्यामेव  
नित्योपवासविधानात् । कृष्णैकादश्यामुपवासनिषेधेन भक्ष्यविधानाच्च । ब्रह्माण्डपुराणे तु—

“ कर्ता नोपवसेच्छाद्वे पित्र्येऽप्येकादशीव्रते । तयोरप्यधिकं ब्रूयुः पितृशेषं महर्षयः ” ॥ इति ।  
कर्तृग्रहणात् ज्ञातीनामाग्राणमेव

“ कर्तृभ्योऽन्यैर्भोक्तव्यं श्राद्धे प्राप्ते हरेद्दिने । पितृशेषं तमाग्राय उपवासफलाप्तये ” ॥ इति ॥ १०  
भोक्तुरपि दोषो नास्तीत्युक्तं तत्रैव—

“ पात्राभावे द्विजः श्राद्धे भुञ्जीयाद्वरिवासरे । नोपवासव्रतम्बं तबो चेत्तच्छाद्धहा भवेत् ॥

“ परदिने तु कर्तव्या पारणा द्वादशीदिने । उपवासफलं सम्यक् प्राप्नोति व्रतभाङ्गं नरः ॥

“ एकादश्यां न भुंजीत कदाचिदपि मानवः । स्वयं प्रार्थ्यं न भुङ्गते चेत् प्रार्थितोऽन्यैर्दोषभाक् ” ॥ इति ।

काम्यैकादशीव्रतानुष्ठानक्रमः । अयमिह काम्यवतानुष्ठानक्रमः । प्रथमं दशम्यामेक- १५  
भुक्तं कृत्वा दंतधावनं कुर्यात् । “ दशम्यामेकभुक् भूत्वा खादयेदंतधावनम् ” इति स्मरणात् ।  
दशम्यां रात्रौ नियम उक्तो ब्रह्मकैवर्ते—

“ प्राप्ते हरिदिने सम्यक् विधाय नियमं निश्चि । दशम्यामुपवासस्य प्रकुर्याद्वैष्णवं व्रतम् ” ॥

नारदीये—

“ अक्षारलवणाः सर्वे हविष्यान्ननिषेवणाः । अवनीतल्पशयनाः प्रियासंगविवर्जिताः ” ॥ इति ॥ २०  
ततः प्रातस्तथायैकादश्यां बाह्यांतरशुद्धिं विदध्यात् । तत्पकारस्तु कालनिर्णयेऽभिहितः—

“ शरीरमतःकरणोपघातं वाचश्च विष्णुर्भगवानशेषम् ।

“ शमं नयत्वस्तु ममेह शर्मं पापादनंते हृदि संनिविष्टे ॥

“ अंतःशुद्धिं बहिःशुद्धिं शुद्धो धर्ममयोऽच्युतः । स करोतु ममैतस्मिन् शुचिरेवास्मि सर्वदा ॥ ।

“ बाह्योपघातादनधो बोद्धा च भगवानजः । शमं नयत्वनंतात्मा विष्णुश्चेतसि संस्थितः ” ॥ इति ॥ २५  
अनंतरं व्रतसंकल्पं कुर्यात् । तत्र मंत्रमाह विष्णुः—

“ एकादश्यां निराहारः स्थित्वाऽहमपरेऽहनि । भोक्ष्यामि पुण्डरीकाक्षं शरणं मे तवाच्युत ।

“ इत्युच्चार्यं ततो विद्वान्पृष्ठांजलिमथापयेत् ” ॥ इति ।

अनंतरकृत्यमाह कात्यायनः— “ गृहीत्वौदुंबरं पात्रं वारिपूर्णमुदङ्गमुखः ।

“ अष्टाक्षरेण मंत्रेण त्रिजप्तेनाभिमंत्रितम् । उपवासफलप्रेषुः पिबेत्पात्रगतं जलम् ” ॥ इति ॥ ३०  
औदुंबरं ताप्रपात्रम् । ब्रह्मपुराणे—

“ संपूज्य विधिवद्रात्रौ कृत्वा तु जागरम् । याति विष्णोः परं स्थानं नरो नास्त्यत्र संशयः ” ॥ इति ।

“ एवं संपूज्य विधिवद्रात्रौ कृत्वा तु जागरम् । याति विष्णोः परं स्थानं नरो नास्त्यत्र संशयः ” ॥ इति ।

द्वादश्यां कर्तव्यमाह कात्यायनः—“ प्रातः स्नात्वा हरिं पूज्य उपवासं समापयेत् ।  
“ अज्ञानतिभिरांधस्य व्रतेनानेन केशव । प्रसीद सुमुखो नाथ ज्ञानटृष्णिप्रदो भव ॥  
“ मंत्रं जपित्वा हरये निवेदोपोषणं व्रती । द्वादश्यां पारणं कुर्याद्वर्जयित्वा ह्युपोतैकीम् ” ॥ इति ।  
बृहस्पतिः—

५ “ सायमाद्यंतयोरन्होः सायं प्रातश्च मध्यमे । उपवासफलप्रेमुर्जह्याद्बुक्तचतुष्टयम् ” ॥ इति ।  
नित्योपवासविषयः । नित्योपवासप्रकारमाह कात्यायनः—

“ नित्योपवासी यो मर्त्यः सायंप्रातर्भुजिक्रियाम् । वर्जयेन्मतिमान्विप्रः संप्राप्ते हरिवासरे ।  
“ विशेषनियमाशक्तोऽहोरात्रं भुक्तवर्जितम् । शक्तिमांस्तु पुनः कुर्यान्नियमं सविशेषणम् ” ॥ इति ।  
कालादशेऽपि—“ जह्याद्बुक्तं द्वयं नित्ये काम्ये भक्तचतुष्टयम् ” ॥ इति ।

१० उपवासे वर्ज्यानि । उपवासे वर्जनाह विष्णुः—

“ असकृज्जलपानं च दिवा स्वापं च मैथुनम् । तांबूलचर्वणं मांसं वर्जयेद्वत्वासरे ” ॥ इति ।  
वासिष्ठः—

“ उपवासे तथा श्राद्धे न खादेद्वन्तधावनम् । दंतानां काषसंयोगो हंति सप्त कुलानि च ” ॥ इति ।  
दंतधावने प्रायश्चित्तमुक्तं विष्णुरहस्ये—

१५ “ श्राद्धोपवासदिवसे खादित्वा दंतधावनम् । गायत्र्याः शतसंपूतमंबु प्राश्य विशुद्ध्यति ” ॥ इति ।  
हारीतः—“ पतितपाषंडनास्तिकसंभाषणमन्वताश्लीलादिकमुपवासे वर्जयेत् ” ॥ इति ।

विष्णुधर्मे—“ असंभाष्यांस्तु संभाष्य तुलस्यतसिकादलम् ॥

“ द्वादश्यामच्युतफलमागस्त्यं पत्रमेव वा । आमलक्याः फलं वापि पारणे प्राश्य शुद्ध्यति ” ॥ इति ।  
बृहस्पतिः—

२० “ दिवा निद्रां परान्नं च पुनर्भोजनमैथुने । क्षौद्रं कांस्यामिषे तैलं द्वादश्यामष्ट वर्जयेत् ॥

“ कृत्वा चैवोपवासं तु योऽश्वाति द्वादशीदिने । नैवेयं तुलसीमिश्रं हत्याकोटिविनाशनम् ॥

“ द्वादश्यामाद्यपादस्तु कीर्तिं हरिवासरः ॥

“ महादोषकरं चान्नं संप्राप्ते हरिवासरे । न कार्यं पारणं तत्र विष्णुप्रीणनतत्परैः ” ॥

स्मृत्यंतरे—“ चतुर्मुहूर्तं द्वादश्यामाद्यमेकादशीतिथौ । अंते चतुर्मुहूर्तं यत् तत्कालो हरिवासरः ” ॥ इति ।

२५ इत्येकादशीनिर्णयः । द्वादशीनिर्णयः । अथ द्वादशी निर्णयते । सा च पूर्वविद्वा ग्रहीतव्या ।  
तदुक्तं स्काँदे—

“ द्वादशी च प्रकर्तव्या एकादश्या युता विभो । सदा कार्या च विद्वद्विर्विष्णुभक्तैश्च मानवैः ” ॥ इति ।  
उत्तरविद्वां प्रतिषेधति बृहद्वासिष्ठः—

“ द्वितीया पंचमी चैव दशमी च त्रयोदशी । चतुर्दशी चोपवासे हन्त्युः पूर्वोक्ते तिथी ” ॥ इति ।

३० द्वादश्यां च काम्योपवासो भार्कडेयेन दर्शितः—

“ द्वादश्यामुपवासेन सिद्धार्थी भूप सर्वशः । चक्रवर्तित्वमतुलं संप्राप्तां अतुलां श्रियम् ” ॥ इति ।

त्रयोदशीनिर्णयः । अथ त्रयोदशी निर्णयते । सा च शुक्लकृष्णपक्षभेदेन व्यवतिष्ठते ।  
तत्र शुक्लत्रयोदशी पूर्वविद्वा ग्राह्या । तदुक्तं ब्रह्मकैवर्ते—

“ त्रयोदशी प्रकर्तव्या द्वादशीसहिता मुने । भूतविद्वा न कर्तव्या दर्शः पूर्णा कदाचन ” ॥ इति ।

**निगम—**

“षष्ठ्यष्टमी अमावास्या कृष्णपक्षे त्रयोदशी । एताः परयुताः पूज्याः पराः पूर्वयुतास्तथा” ॥ इति ।  
अत्र कृष्णपक्षे इति विशेषणात् पूर्वविद्वावचनस्य शुक्लपक्षविषयत्वं परिशिष्यते ।

चतुर्दशीनिर्णयः । अथ चतुर्दशी निर्णीयते । वृसिंहचतुर्दशी रात्रिव्यापिनी ग्राह्या ।  
वृसिंहस्य सायंकाले आविर्भावात् ।

“मधुश्रवणमासस्य शुक्ला या च चतुर्दशी । सा रात्रिव्यापिनी ग्राह्या परा पूर्वाह्नगमिनी” ॥ इति वचनात् । परा अनन्तचतुर्दशी । त्रिमुहूर्तमेव पूर्वाह्नः । तत्र शुक्लचतुर्दशी परविद्वा ग्राह्या । तथा व्यासः—“शुक्ला चतुर्दशी ग्राह्या परविद्वा सदा व्रते” इति । नारदीयेऽपि—

“तृतीयैकादशी षष्ठी शुक्लपक्षे चतुर्दशी । पूर्वविद्वा न कर्तव्या कर्तव्या परसंयुता” ॥ इति ।

अनन्तब्रतम् । यत्तु भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यामनंतव्रतमुक्तं भविष्योन्तरे—तत्र ‘दैवे हौदायिकी ग्राह्या’ इति वचनेन युग्मशास्त्रादिभिश्चोदयव्यापिनी ग्राह्या । तत्र तिथ्यंतरव्रत-त्रिमुहूर्तव्याप्तिमुख्यः कल्पः । द्विमुहूर्तव्याप्तिरनुकल्पः । यत्तु—

“मध्यान्हे भोज्यवेलायां समुक्तीर्य सरित्तिटे । ददर्श लीला सा स्त्रीणां समूहं रक्तवाससाम् ॥

“चतुर्दश्यामर्चयंतं भक्त्या देवं जनार्दनम्” ॥ इति तत्तु अर्थवादत्वात् स्वातंत्र्येण कस्यचिदर्थस्य प्रापकं न चात्र मध्याह्नः कर्मांगकालो विहितः । सति प्रमाणांतरे तस्योपोद्गलक- १५ मर्थवादत्वाक्यं भवति । न चात्र प्रमाणांतरमस्तीति कालनिर्णये निरूपितम् । कृष्णचतुर्दशी तु पूर्वयुक्तैव ग्राह्या । तथा चापस्तंबः—

“कृष्णपक्षेऽष्टमी चैव कृष्णपक्षे चतुर्दशी । पूर्वविद्वा तु कर्तव्या परविद्वा न कस्यचित्” ॥ इति ।

शिवरात्रिव्रतनिर्णयः । अथ शिवरात्रिवतं निर्णीयते । शिवस्य रात्रिः शिवरात्रिरिति तत्पुरुषसमासेन योगेन प्रवर्त्तमानः शब्दो रुद्ध्या माघकृष्णचतुर्दशीरूपे कालविशेषे नियम्यते । २० शिवप्रिया रात्रिर्यस्मिन्वत इति बहुदीहिसमासेन योगेन प्रवृत्तः शब्दो रुद्ध्या व्रतविशेषे नियम्यते । यथा पंकजशब्दः पंकजाज्ञायत इति योगं स्वीकृत्य भेकादीष्वतिप्रसंगो रुद्धिस्वीकारेण निवार्यते तद्वदत्रापि यौगिकत्वे सति शिवव्रतोपेतेषु त्रयोदश्यादितिथ्यंतरेषु शिवरात्रिवतं प्रसक्तं रुद्धि-परिग्रहेण निवार्यते । अतः कालविशेषे व्रतविशेषे च योगलङ्घोऽयं शिवरात्रिशब्दः ।

तथा च स्कांदे—

२५

“माघस्य कृष्णपक्षे या तिथिश्चैव चतुर्दशी । तस्या रात्रिः समाख्याता शिवरात्रिः शिवप्रिया ॥

“तस्यां सर्वेषु लिंगेषु तदा संक्रमते हरः । यानिकान्यत्र लिंगानि चराणि स्थावराणि च ॥

“तेषु संक्रमते देवि तस्यां रात्रौ यतो हरः । शिवरात्रिस्ततः प्रोक्ता तेन सा हरवल्लभे” ॥ इति ।

कामिकेऽपि—

“माघमास्यसिते पक्षे विद्यते या चतुर्दशी । तद्रात्रिः शिवरात्रिः स्यात्सर्वपुण्यशुभावहा” ॥ इति । ३०

ईशानसंहितायाम्—

“शिवरात्रिवतं नाम सर्वपापहरं नृणाम् । आचंडालं मनुष्याणां भुक्तिमुक्तिप्रदायकम्” ॥ इति ।

अनेनास्य सर्वाधिकारित्वमुक्तम् । तच्च शिवरात्रिवतमेकादशीवन्नित्यं काम्यं चेत्युभयविधिम् ।

तत्र नित्यत्वमकरणे प्रत्यवायवीसानित्यशब्दैरवगंतव्यम् ।

ते च स्कांदे पठ्यन्ते— “परात्परतरं नास्ति शिवरात्रिः परात्परा ।

“न पूजयन्ति भक्त्येशं रुद्रं त्रिभुवनेश्वरम् । जंतुर्जन्मसहस्रेण ब्रमते नात्र संशयः ॥

“वर्षे वर्षे महादेवि नरो नारी पतिवता । शिवरात्रौ महादेवं कामं भक्त्या प्रपूजयेत् ॥

“माघकृष्णचतुर्दश्यां यः शिवं संशितवतः । मुमुक्षुः पूजयेन्नित्यं स लभेतेप्सितं पदम्” ॥ इति ।

५ काम्यत्वं च फलश्रवणादवगंतव्यम् । तच्च स्कांदे पठ्यते—

“शिवं च पूजयित्वा यो जागर्ति च चतुर्दशीम् । मातुः पयोधररसं न पिवेत्स कदाचन ॥

“सर्वान्भुक्त्वा महाभोगान्स मृतो न प्रजायते” ॥ इति ।

काम्यत्वतस्येशासनसंहितायां वर्षसंख्या पठ्यते—

“एवमेतत् व्रतं कुर्यात् प्रतिसंवत्सरं प्रति । द्वादशाब्दिकमेतत्स्याच्चतुर्विंशाब्दिकं तु वा ॥

१० “सर्वान्कामानवाप्नोति प्रेत्य चेह च मानवः” ॥ इति ।

उपवासे जागरणं पूजा चेति त्रयं समप्राधान्येन व्रतस्वरूपम् । तदुक्तं नागरखंडे—

“उपवासप्रभावेन बलादपि च जागरात् । शिवरात्रेस्तथा तत्र लिंगस्यापि प्रपूजनात् ॥

“अक्षयांलभते भोगाऽन्तिर्छवसायुज्यमाप्नुयात्” ॥ इति ।

यत्तु स्कांदपुराणे द्वयमेकैकं वा पठ्यते “अथवा शिवरात्रिं च प्रजा जागरणैनयेत् ।

१५ “अखंडितव्रतो यो हि शिवरात्रिमुपोषयेत् । सर्वान्कामानवाप्नोति रुद्रेण सह मोदते ॥

“कश्चित्पुण्यविशेषेण व्रतहीनोऽपि यः पुमान् । जागरं कुरुते तत्र स रुद्रसमतां व्रजेत् ॥

“यः पूजयति भक्त्येशमनेकफलतां व्रजेत्” ॥ इति तत् अथवेत्यनुकल्पोपक्रमादशक्तविषयम् ।

प्रदोषनिशीथवेधावत्र ग्राह्यौ । प्रदोषवेधो वायुपुराणे दर्शितः—

“त्रयोदश्यस्तगे सूर्ये चतुर्षुवे नाडिषु । भूतविद्वा तु या तत्र शिवरात्रिवतं चरेत्” ॥ इति ।

२० कामिकेऽपि—

“आदित्यास्तमये काले त्वस्ति चेद्या चतुर्दशी । तद्रात्रिः शिवरात्रिः स्यात्सा भवेदुत्तमोत्तमा” ॥ इति ।  
स्मृत्यन्तरेऽपि

“प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या शिवरात्रिश्चतुर्दशी । रात्रौ जागरणं यस्मात्स्मात्तां समुपोषयेत्” ॥ इति ॥  
निशीथवेधो नारदीयसंहितायां दर्शितः—

२५ “अर्धरात्रियुता यत्र माघकृष्णचतुर्दशी । शिवरात्रिवतं तत्र सोऽश्वमेधफलं लभेत्” ॥ इति ।

ईशानसंहितायाम्—

“पूर्वेद्युरपेरेद्युर्वा महानिशि चतुर्दशी । व्याप्ता सा दृश्यते यस्यां तस्यां कुर्याद्वितं नरः ॥

“मम प्रियकरी ह्येषा माघकृष्णचतुर्दशी । महानिश्यन्विता यत्र तत्र कुर्यादिदं व्रतम्” ॥ इति ॥

एवं च सति पूर्वेद्युरेव वाऽपरेद्युरेव वा यत्र प्रदोषनिशीथोभयव्याप्तिः तत्र व्रतमाचरणीयम् ।

३० तथा च स्कांदे—

“त्रयोदशी यदा देवि दिनमुक्तिप्रमाणतः । जागरे शिवरात्रिः स्यान्निशि पूर्णा चतुर्दशी ॥

“निशाद्वये चतुर्दश्यां पूर्वा ह्याज्या शुभान्विता” ॥ इति दिनमुक्तिरस्तमयः । दिनद्वयेऽप्युभयः

ह्याप्तिस्तु न संभाव्यते । यामद्वयद्वयभावात् । दिनद्वयेऽप्युभयव्याप्त्यभावोऽपि त संभवति

यामद्वयक्षयस्याभावात् । एकैकस्मिन्दिने यद्यैकैकव्याप्तिः तत्र पूर्वेद्युनिश्चिथव्याप्तिः परेद्युः प्रदोषव्याप्तिरित्यत्रैकैकव्याप्तेदिनद्वये समानत्वेऽपि जयायोगस्य प्रशस्तत्वादर्शयोगस्य निंदित-त्वाच्च पूर्वेद्युरेवोपवासः । त्रयोदशीयोगप्राशस्त्यं दर्शयोगनिंदा च स्कांदे पठ्यते—

“ कृष्णाष्टमी स्कंदषष्ठी शिवरात्रिश्चतुर्दशी । एताः पूर्वयुताः कार्याः तिथ्यन्ते पारणं भवेत् ॥

“ महतामपि पापानां दृष्टा वै निष्कृतिः पुरा । न दृष्टा कुर्वतां पुंसां दर्शयुक्तां तिथिं पराम् ” ॥ इति । ५

यदा पूर्वेद्युनिश्चिथादूर्ध्वं प्रवृत्ता चतुर्दशी परेद्युः क्षयवशात् निश्चिथादवर्गेव समाप्ता तदा पूर्वेद्युः प्रदोषनिश्चिथव्याप्त्योरुभयोरप्यसंभवातपरेद्युः प्रदोषव्याप्तेरेकस्याः संभवाच्च परविद्वैव ग्राह्या । एतदेवाभिप्रेत्य स्मर्यते—

“ माघासिते भूतदिनं कदाचिदुपैति योगं यदि पञ्चदश्याः ।

“ जयाप्रयुक्तां न तु जातु कुर्यात् शिवस्य रात्रिं प्रियकृच्छिवस्य ” ॥ इति । १०

यदा पूर्वेद्युः प्रदोषादूर्ध्वं प्रवृत्ता चतुर्दशी परेद्युः क्षयवशात्प्रदोषादवर्गेव समाप्ता तदा परेद्युव्याप्तिद्वयभावात् पूर्वेद्युनिश्चिथव्याप्तेः सद्भावेन जयायोगाच्च पूर्वेद्युरेवोपवासः ।

अत्रायं विवेकः—दिनद्वयेऽपि निश्चिथव्याप्तौ तदव्याप्तौ च प्रदोषव्याप्तिर्नियामिका । तथा दिनद्वयेऽपि प्रदोषव्याप्तौ तदव्याप्तौ च निश्चिथव्याप्तिर्नियामिका । एकैकस्मिन्दिने एकैकव्याप्तौ जयायोगो नियामक इति । १५

वारविशेषेण योगविशेषेण च युक्ता त्रिस्पृशी च शिवरात्रिः प्रशस्ता । तथा च स्कांदे—

“ माघकृष्णचतुर्दश्यां रविवारो यदा भवेत् । भौमो वाऽथ भवेदेवि कर्तव्यं व्रतमुत्तमम् ॥

“ शिवयोगस्य योगो वै तद्भवेदुत्तमोत्तमम् । त्रयोदशी कलाऽप्येका मध्ये चैव चतुर्दशी ।

“ अंते चैव सिनीवाली त्रिस्पृश्यां शिवमर्चयेत् ” ॥ इति । ननु यदा पूर्वविद्वायामुपवासः तदा परेद्युः किं तिथ्यन्ते पारणं उत तिथिमध्ये । शास्त्रं तु पश्चद्वयेऽपि समानम् । तत्र तिथ्यन्ते पारण-२० वचनानि पूर्वोदाहृतानि । तिथिमध्ये पारणवचनं तु स्कांदे पठ्यते—

“ उपोषणं चतुर्दश्यां चतुर्दश्यां तु पारणम् । कृतैः सुकृतलक्षैश्च लभ्यते वाऽथ वा न वा ।

“ ब्रह्मांडोदरमध्ये तु यानि तीर्थानि संति वै । संस्थितानि भवंतीह भूतायां पारणे कृते ।

“ तिथीनामेव सर्वासामुपवासवतादिषु । तिथ्यन्ते पारणं कुर्याद्विना शिवचतुर्दशीम् ” ॥ इति ।

बाढं अस्ति द्विविधं शास्त्रम् । तस्य च द्विविधशास्त्रस्य प्रतिपत्प्रकरणोक्तन्यायेन व्यवस्था द्रष्टव्या । २५

यदा यामत्रयादवर्गेव चतुर्दशी समाप्तये तदा तिथ्यन्ते पारणम् । यदा चतुर्दशी यामत्रयमतिक्रामति तदा चतुर्दशीमध्ये पूर्वाह्ले पारणं कुर्यात् । इति शिवरात्रिनिर्णयः ।

पञ्चदशीनिर्णयः । अथ पञ्चदशी निर्णीयते । सा च व्रतादौ परिविद्वैव ग्राह्या । तु तथा च ब्रह्मकैवर्ते—

“ भूतविद्वा न कर्तव्या अमावास्या च पूर्णिमा । वर्जयित्वा मुनिश्रेष्ठ सावित्रीव्रतमुत्तमम् ” ॥ इति ३०

स्कांदेऽपि—

“ भूतविद्वा सिनीवाली न तु तत्र व्रतं चरेत् । वर्जयित्वा तु सावित्रीव्रतं तु शिखिवाहन ” ॥ इति सावित्र्या राजकल्याणा चीर्ण सावित्रीव्रतम् । तच्च भविष्योत्तरे दर्शितम्—

“ कथयामि कुलस्त्रीपाणां महिस्नो वर्धनं परम् । यथा चीर्ण व्रतं पूर्वं सावित्र्या राजकल्याणा ” ॥ इति ।

भूष्मन् पौर्णिमामुख्यामावास्यायां च विहितम् । तास्मिन्वते पूर्वविद्वा ग्राह्या । ३५

एतदेवाभिप्रेत्य नारदीये—

“ दर्श च पौर्णमासं च पितुः सांवत्सरं दिनम् । पूर्वविद्वामकुर्वणो नरकं प्रतिपद्यते ” ॥ इति ।  
दर्शादिश्चकालः श्राद्धकांडे निष्पितः\* ।

इष्टिकालनिर्णयः । इष्टिकालस्तु निर्णीयते । अत्र गोभिलः—

५ “ पक्षांता उपवस्तव्याः पक्षादयो हि यष्टव्याः ” इति । अत्रोपवासशब्देनाग्न्युपस्तरणं विवक्षितम् ।  
तस्मिन्क्रियमाणे यजमानसमीपे देवतानां निवासात् । तथा च श्रुतिः ( तै. सं. १६।७ )—  
“ उपास्मिज्ञ्यु यक्ष्यमाणे देवता वसंति एवं विद्वानग्निमुपस्तृणाति ” ॥ इति । उपवासशब्दा-  
भिधेयाग्न्युपस्तरणांतस्य पर्वदिनकर्तव्यस्यान्वाधानादेश्चतुरंशवति पर्वणि आद्यास्त्रयोऽशाः कालाः  
पर्वणश्चतुर्थौऽशाः प्रतिपद आद्यास्त्रयोऽशाश्च यागस्य कालः । तदाह लोकाक्षिः—

१० “ त्रनिंशानौपसथ्यस्य यागस्य चतुरो विदुः । द्वावंशावत्सूजेदंत्यौ यागे च वतकर्मणि ” ॥ इति ।  
यागकालं यज्ञपार्श्वोऽप्याह—

“ पंचदश्याः परः पादः पक्षादेः प्रथमास्त्रयः । कालः पर्वणयागे स्यादथांते तु न विद्यते ” ॥ इति ।  
वृद्धशातातपोऽपि—

“ पर्वणो यश्चतुर्थौऽश आद्याः प्रतिपदस्त्रयः । यागकालः स विज्ञेयः प्रातरुक्तो मनीषिभिः ” ॥ इति ।

१५ अत्र प्रातरिति विशेषणात् “ सूर्योदयस्योपरि मुहूर्तत्रयं यागस्य मुख्यः कालः ” इति कालनिर्णये ।  
प्रतिपदश्चतुर्थाश्च निषेधति कात्यायनः—

“ न यष्टव्यं चतुर्थौऽशे यागैः प्रतिपदः क्वचित् । रक्षांसि ताद्विलुप्तं प्रतिरेषा सनातनी ” ॥ इति ।  
यदा पर्वप्रतिपदावुदयमारभ्य संपूर्णतिथी भवतः तदा न कोऽपि संदेहः । यदा तु संदातिथी तदा  
निर्णयमाह गोभिलः—

२० “ आवर्तने यदा संधिः पर्वप्रतिपदोर्भवेत् । तदर्हयाग इष्ट्येत परतश्चेत्परेऽहनि ॥

“ पर्वप्रतिपदोः संधिरवागावर्तनाद्यदि । तस्मिन्नहनि यष्टव्यं पूर्वेद्युस्तदुपक्रमः ॥

“ आवर्तनोत्तरः संधिर्यदि तस्मिन्नुपक्रमः । परेद्युरिष्टिरित्येष पर्वद्यविनिश्चयः ” ॥ इति ।

लोकाक्षिरपि—

“ पूर्वाङ्गे वाऽथ मध्याङ्गे यदि पर्व समाप्यते । उपोष्य तत्र पूर्वेद्युस्तदहर्याग इष्ट्यते ॥

२५ “ अपराणहेऽथ वा रात्रौ यदि पर्व समाप्यते । उपोष्य तस्मिन्नहनि श्वोभूते याग इष्ट्यते ” ॥ इति ।  
अन्हो मध्यं मध्याङ्गे इति द्युत्पत्तेरावर्तनमत्र मध्यान्हशब्देनाभिधीयते । एवमपराङ्ग-  
शब्दोऽप्यत्र यौगिकः । न तु पंचधाविभागमाश्रित्य प्रवृत्तः । अत एव गोभिलेनावर्तनशब्दः  
प्रयुक्तः । शातातपोऽपि—

“ पूर्वाङ्गे मध्यमे वापि यदि पर्व समाप्यते । तदोपवासः पूर्वेद्युः तदहर्याग इष्ट्यते ” ॥ इति ।

३० अङ्गः पूर्वो भागः पूर्वाङ्गः । अन्होऽपरो भागोऽपराणः । अतस्ताभ्यां शब्दाभ्यामावर्तनात्  
पूर्वोत्तरभागावर्भवियेते कालादशेऽपि—“ पूर्वप्रतिपदोः संधिर्मध्याङ्गे पूर्वतोऽपि वा ।

“ अन्वाधानं पूर्वदिने तदिने याग इष्ट्यते । परतश्चेत्परेह्नीष्टिस्तद्विनेऽन्वाहितिर्भवेत् ” ॥ इति ।

वाजसनेयिनां पौर्णमास्यां विशेष उक्तस्तत्रैव—

“ आवर्तनादधः संधिर्यद्यन्वाधाय तदिने । परेद्युरिष्टिरित्याहुर्विप्रा वाजसनेयिनः ” ॥ इति ।

थदि मध्यान्हातपूर्वं संधिः स्यात् तदा संधिदिने अन्वाधाय परेद्युरिष्टिः कार्येति वाजसनेयिमतानुवर्त्तिं आहुरित्यर्थः । तदाह भाष्यार्थसंग्रहकारः—

“मध्यंदिनात्स्यादहनीह यस्मिन् प्राक्पर्वणः सन्धिरियं तृतीया ।

“सा खर्विका वाजसनेयिमत्यस्तस्यामुपोष्याथ परेद्युरिष्टिः” ॥ इति । आवर्तनादूर्ध्वमस्तमयादर्वाग्यदा संधिर्भवति तदा संधिमती तिथिः प्रथमा रात्रौ संधिश्वेत्सा तिथिद्वितीया । ५ ते उभे अपेक्ष्य पूर्वाण्हे संधिमतीतिथिस्तृतीया । तत्र पूर्वकालस्याल्पत्त्वात्सारवर्तिकेत्युच्यते । एवं च सति वाजसनेयिनां न क्वापि संधिदिनात्पूर्वेद्युरन्वाधानादिकमस्ति । वाजसनेयिव्यतिरिक्तानामावर्तने ततः पूर्वं वा यदा संधिर्भवति तदा संधिदिने पूर्वचतुर्थश्च इष्टिर्भवति । तत्र विशेषमाह गर्गः—

“प्रतिपद्यप्रविष्टायां यदि चेष्टिः समाप्यते । पुनः प्रणीय कृत्सनेष्टिः कर्तव्या यागवित्तमैः” ॥ इति । १० पर्वणश्चतुर्थैऽशप्रतिपदत्रयैऽशाश्व यागकालत्वेन विहिताः । तत्र पर्वचतुर्थाशस्य विषय उदाहृतः । प्रतिपदंशानां तु विषय उदाह्रियते । उषःकाले सन्धौ प्रतिपदः प्रथमांशो यागकालः । निशीथे संधौ द्वितीयांशः । रात्रिप्रारंभे संधौ तृतीयांशः । नन्वनेन न्यायेनापराह्ने संधौ प्रतिपच्चतुर्थाशस्य यागकालत्वं प्राप्नोति । तच्च प्रतिषिद्धं ‘न यष्टव्यं चतुर्थशः’ इति स्मृतेः । अतस्तादृशे विषये याग एव लुप्यते इति चेन्मैवम् । वृद्धशातातपेन प्रतिप्रसवाभिधानात्— १५

“संधिर्यद्यपराह्ने स्याद्यागं प्रातः परेऽहनि । कुर्वणः प्रतिपद्मागे चतुर्थैऽपि न दूष्यति” ॥ इति । कालादर्शेऽपि—

“चतुर्थः पर्वणो योऽशो येऽशाः प्रतिपदस्यः । आद्यास्तस्याश्चतुर्थैऽपि यागकाल उदाहृतः” ॥ इति । तस्याः प्रतिपदः चतुर्थैऽप्यंशो यागकाल इत्यर्थः । एवं तर्हि चतुर्थश्च यागप्रतिषेधो निर्विषयः स्यादिति चेन्मैवम् । सद्यःकालविषये चरितार्थत्वात् । तं च विषयं दर्शयति कात्यायनः— २०

“संधिश्वेत्संगवादूर्ध्वं प्राक्चेदावर्तनाद्रवेः । सा पौर्णमासी विजेया सद्यःकालविधौ तिथिः” ॥ इति । भाष्यार्थसंग्रहकारोऽपि—

“अन्वाहितिश्वास्तरणोपवासः पूर्वेद्युरेते स्वलु पौर्णमास्याम् ।

“आवर्तनात्प्राग्यदि पर्वसंधिः सद्यस्तदा वा क्रियते समस्तम्” ॥ इति । कालादर्शेऽपि—

“पूर्णिमा प्रतिपत्संधिः यदि संगवमंतरा । आवर्तनं च स्यात्तर्हि सद्यस्कालविधिर्भवेत्” ॥ इति । २५ आपस्तंबोऽपि—“पौर्णमास्यां त्वन्वाधानपरिस्तरणोपवासः सद्यो वा सद्यःकालायां सर्वं क्रियते” इति। संगवावर्तनयोर्मध्ये पौर्णमासी प्रतिपदोः संधौ सति संधिदिनात्पूर्वेद्युर्वा अन्वाधानादिपरिस्तरणांतं संधिदिने वा अन्वाधानादिकं सर्वं क्रियत इत्यर्थः । एवं सति प्रतिपच्चतुर्थाशप्रतिषेधवचनमत्र विषये सावकाशम् । विकृतिरूपाया इष्टेस्तु कालमाह कात्यायनः—

“आवर्तनात्प्राग्यदि पर्वसंधिः कृत्वा तु तस्मिन्प्रकृतिं विकृत्याः” ॥ ३०

“तत्रैव यागः परतो यदि स्यात्तस्मिन्विकृत्या प्रकृतेः परेद्युः” ॥ इति । आवर्तने ततः पुरा वा पर्वसंधौ तस्मिन्संधिदिने प्रथमं प्रकृतियागं कृत्वा पश्चाद्विकृतेः संबंधि यागः कर्तव्यः । यदि आवर्तनात्परतः संधिः तदा केवलविकृतियागः संधिदिने कर्तव्यः । प्रकृतियागस्तु केवलसंधिदिनात्परेद्युरनुष्ठेय इत्यर्थः । आवर्तने ततः पूर्वकाले ततः परकाले वा संधिरित्येतेषु त्रिष्वपि पक्षेषु संधिदिन एव विकृतेरनुष्ठानं प्रकृतेस्तु पूर्वोक्तरीत्या संधिदिने परेद्युश्चानुष्ठानं व्यवतिष्ठते । ३५

तदेवं संपूर्णतिथौ इष्टिपशुसोमविकृतीनां केवलपर्वे कालः । संडतिथौ तु पूर्वोक्तः कालः । तदेतदापस्तंब आह “यदीष्टचा यदि पशुना यदि सोमेन यजेतामावास्यायां पौर्णमास्यां वा यजेत्” ॥ इति । पर्वप्रतिपदोः संधिमुपजीव्यान्वाधानेष्टिकालौ व्यवस्थापितौ । अत्र तिथिक्षय-वृध्योः सन्धिविषयं कंचिद्विशेषमाह कात्यायनः—

५ “परेऽन्हि घटिका न्यूनास्तथैवाभ्यधिकास्तु याः । तदर्धकूप्त्या पूर्वस्मिन् हासवृध्या प्रकल्पयेत्” ॥ इति ।  
लोकाक्षिरपि—“तिथे: परस्या घटिकास्तु या स्युन्यूनास्तथा वा अभ्यधिकास्तु तासाम् ।

“अर्धं वियोज्यं च तथा प्रयोज्यं न्हासे च वृद्धौ प्रथमे दिने स्यात्” ॥ इति ।

कालादर्शेऽपि—

“पर्वणि क्षयगे वृद्धौ परस्यान्हः क्षयोर्जिती । अर्धकूप्त्या यथान्यायं दिने पूर्वत्र योजयेत्” ॥ इति ।

१० पर्वणि पूर्णिमायाममायां च क्षयगे क्षयगामिनि सति वृद्धौ वृद्धिगामिनि सति परस्याह्नः प्रतिपदः क्षयोर्जिती न्हासवृद्धी अर्धकूप्त्या अर्धकल्पनेन यथान्यायं यथासंख्यकमेण पूर्वत्रदिने योजयेदित्यर्थः । पूर्वेद्युः पूर्णिमा अमावास्या वा पञ्चदशघटिका परेद्युः प्रतिपदपि तावती तदा यथास्ति तामेवोपजीव्य सन्धिविज्ञेयः । यदा तु प्रतिपदि षड्घटिकाः क्षीयन्ते तदा घटिकात्रयक्षयः पर्वणि योजनायिः । तस्मिन् योजने द्वादशघटिकामावस्या भवति । अनेन न्यायेन षड्घटिकावृद्धौ १५ घटिकात्रये योजिते अष्टादशघटिका अमावास्या भवति । तथा सत्यावर्तनादूर्ध्वं संधिर्भवति । तदेवं संधिं विज्ञाय तदनुसारेणान्वाधानेष्टी अनुष्टातव्ये ।

बोधायनमतानुसारिणाममावास्यायां विशेषः । बोधायनकात्यायनमतानुसारिण-ममावास्यायां विशेषमाह कात्यायनः—

“सिनीवाल्यपराह्ने चेष्टगापस्तंबसामिनाम् । सायाह्ने द्वित्रिनाडी चेत्सा बोधायनकण्वयोः” ॥ इति ।

२० श्राद्धेऽप्येवमेव तिथिर्ग्राह्या । यतः स एवमाह—

“चतुर्दशीदिनांते तु चतुर्दशिघटिका यदि । अमाभूते च कर्तव्यं श्राद्धं वाजसनेयिभिः” ॥ इति । कालनिर्णये—“अस्तमयादर्वाङ् स्वल्पामावास्योपेतायामपि चतुर्दश्यां श्राद्धान्वाधाने कर्तव्ये” इति । एतच्च तिथिसाम्ये द्रष्टव्यम् । तिथिक्षये तु अस्तमयात्परं चतुर्दश्यनुवृत्तावपि तस्मिन्नेव दिने श्राद्धान्वाधाने । तथा च बोधायनः—

२५ “चतुर्दशी तु संपूर्णा द्वितीया क्षयकारिणी । चरुरिष्टिरमायां स्याद्भूते कव्यादिका क्रिया” ॥ इति । अस्यार्थः—चतुर्दशी संपूर्णा अस्तमयपर्यंतवर्तिनी अधिका वा द्वितीया क्षयकारिणी प्रतिपदिने सायाह्नवर्तिनी अत्रामायां चरुः स्थालीपाक इष्टिश्च स्याद्भूते चतुर्दश्यां कव्यादिका श्राद्धान्वाधाने इत्यर्थः । स एव—

“चतुर्दशीचतुर्थामे त्वमावास्या न दृश्यते । श्वोभूते प्रतिपद्यत्र भूते कव्यादिका क्रिया” ॥ इति ।

३० अस्यार्थः—चतुर्दशीदिनचतुर्थामे अमावास्या न दृश्यते श्वोभूते अमावास्यायामस्तमयात्प्रागेव प्रतिपद् दृश्यते । तदा भूते चतुर्दश्यां कव्यादिका क्रियेत्यर्थः । स्मृत्यंतरेऽपि—

“अमायां तु दिवा युक्ता प्रतिपद्घटिकाऽपि वा । तत्रैवेष्टिसमाप्तिः स्यात्तिथिवृद्धिर्भवेत् चेत्” ॥ इति ।

“द्वितीयास्तमये काले घटिकैकाऽपि दृश्यते । अत्र यागं न कुर्वति विश्वेदेवाः पराङ्मुखाः” ॥

“द्वितीया तु दिवा युक्ता नाड्येका प्रतिपत्तिथौ । अमावास्या चतुर्थेऽशे यागस्तत्र समाप्तते” ॥ इति ।  
पूर्वेवुरन्वाधानं अमावास्यायां यागसमाप्तिरित्यर्थः । बोधायनः—

“यदा चतुर्दशीयाम् तुरीयमनुपूरयेत् । अमावास्या क्षीयमाणा तदैव श्राद्धमाचरेत्” ॥ इति ।  
अस्यार्थः—चतुर्दश्यास्तुरीयं याम् यदामावास्या अनुपूरयेत् स्वशेत् सा च पुनः क्षीयमाणा परेद्युः  
चतुर्थयामे प्रतिपद्युक्ता तदैव अमावास्यास्पृष्टचतुर्दशीदिन एव श्राद्धान्वाधाने कुर्यादित्यर्थः । ५  
बोधायनवृद्धशातातपौ—

“द्वितीया त्रिमुहूर्ता चेत्प्रतिपद्याऽपराणिहकी । अन्वाधानं चतुर्दश्यां परतः सोमदर्शनात्” ॥ इति ।  
प्रतिपद्यिने सोमदर्शनादमायामिष्ठिरित्यर्थः । कालादशेऽपि—

“द्वितीया त्रिमुहूर्ता चेत् प्रतिपद्यापराणिहकी । भूतेन्वाहितिरिष्टस्तु श्वश्वन्दस्य दर्शनात्” ॥ इति ।  
प्रतिपद्यस्तमयात्पूर्वं द्वितीया त्रिमुहूर्ता चेत्तदा भूते चतुर्दश्यामन्वाधानं इष्टस्तु श्वः चतुर्दश्याः १०  
परेद्युभवेत् । तस्माच्छुश्चंद्रस्य दर्शनात् चतुर्दश्युत्तरादिने चंद्रस्य दर्शनात् तत्रेष्ठिर्न कर्तव्येत्यर्थः ।  
त्रिमुहूर्तेति घटिकामात्रस्याप्यपलक्षणम्—

“अर्वागस्तमयाद्यत्र द्वितीया घटिका भवेत् । तत्र यागं न कुर्वति तदा चंद्रस्य दर्शनात्” ॥ इति स्मृतेः ।  
चंद्रदर्शनराहित्यमेवाभिप्रेत्य बोधायनकारिकासु पठ्यते—

“इष्टेरलं प्रतिपदोऽन्हि तदैव नाड्यः सप्ताष्ट वा यत्र भवन्ति तस्मात् । १५

“क्षीणासु नाडीषु दिनस्य पूर्वः कल्पोऽथ वृद्धौ तु भवेत् द्वितीया” ॥ इति । अयमर्थः—अमावास्यातिथेः संबंधिनीषु नाडीषु क्षीणासु सतिषु तस्मिन्दिने अस्तमयात्पूर्वं प्रतिपदः संबंधिन्यो  
नाड्यः सप्ताष्ट वा यदि भवन्ति तदा तदिनमिष्टेरलं योग्यम् । सोऽयमेकः पक्षः । अमावास्याप्रतिपदौ  
यदा वर्धते अस्तमयात्परं प्रतिपदमनुवर्तते तदा द्वितीयः कल्पो भवेत् । अमावास्यायामन्वाधाय  
सोमदर्शनरहिते प्रतिपद्यिने यागः कर्तव्य इति । एवं च तिथिवृद्धिप्रक्रमे चतुर्दश्यामस्तमयात्पूर्व- २०  
ममावास्यायोगे अमावास्यायां चास्तमयात्पूर्वं प्रतिपद्योगे च प्रतिपद्यिने अस्तमयात्परं प्रतिपदनु-  
वृत्तौ तिथिवृद्धिभवेत् चेदिति पूर्वोक्तवचनात् प्रतिपद्युतामावास्यायामन्वाधानं प्रतिपदि यागः  
कर्तव्यः । तिथिसाम्ये तिथिक्षये च चतुर्दश्यामन्वाधानं पर्वणि यागः । स्मृत्यंतरेऽपि—

“आदित्येऽस्तमिते चंद्रः प्रतीच्यामुदियाद्यदा । प्रतिपद्यतिपत्तिः स्यात्पञ्चदश्यां यजेत्तदा ॥

“अमावास्याऽस्य पूर्वेद्युः अदृष्टेषुः प्रशस्यते । दृष्टचंद्रेन कर्तव्यो यागस्तत्र परेऽहनि ॥ २५

“दृष्टचंद्रदिने चेत्स्यादेवा यांति पराङ्मुखाः” ॥ इति । प्रतिपद्यिने अस्तमयात्पूर्वं  
घटिकामात्रद्वितीयासंभवे चंद्रस्य दर्शनात् तत्र यागो न कर्तव्य इत्यर्थः ।

कात्यायनोऽपि—“अन्वाधानं भूतिथ्यां तु कुर्यात्सायादौ चेत्संप्रविष्टा द्वितीया ।

“तस्यां तिथ्यां दर्शनात्प्रत्यगिंदोः पर्वण्युक्तो यागकालो नितांतः” ॥ इति ।

वृद्धवासिष्ठः—

“इंदौ निरुपे हविषि पुरस्तादुदिते विधेः । यद्वैगुण्यं हुते तस्मिन्पश्चादपि हि तद्ववेत्” ॥ इति ।  
अयमर्थः—संपूर्णचतुर्दश्यामविचारेणामावास्याबुद्धिं कृत्वा हविर्निर्विष्टे कृते तस्मिन्दिने उषः-  
काले: पूर्वस्यां दिशि चंद्रमा उदेति तदा दर्शकालस्याप्राप्तत्वात्कालापराधं निमित्तीकृत्य दर्शदेवता  
अपनीय दात्रादिगुणविशिष्टान्यगन्यादिदेवतांतराण्युद्दिश्य यागो विहितस्तैत्तिरीयब्राह्मणे-

“ यस्य हविर्निरुपं पुरस्ताच्चंद्रमा अभ्युदेति व्रेधा तंडुलान्विभजेदे मध्यमाः स्युस्तानग्रये दात्रे पुरोडाशमष्टाकपालं कुर्यात् ” इत्यादिना ( तै. सं. २१५।५ ) । सोऽयं दृष्टांतः । हविषि निरुपे सति तत ऊर्ध्वं पूर्वस्यां दिशि चंद्रमस्यभ्युदिते यद्वैगुण्यं तदेव वैगुण्यं होमदिने पश्चिमदिशि चंद्रोदये भवतीति । एतदेव बोधायनमतमुपोद्वलयति श्रुतिः—“यस्मिन्नहनि पुरस्तात्पश्चात्सोमो न दृश्यते ५ तद्हर्थजेत् ” इति । चंद्रदर्शनेपेतायां शुक्लप्रतिपादि यागानुष्ठाने प्रायश्चित्तमाह कात्यायनः—

“यजनीयेऽनिह सोमश्वेत् वारुण्यां दिशि दृश्यते । तत्र व्याहतिभिर्हृत्वा दंडं दद्यात् द्विजातयः”॥ इति । यत्तु बोधायनवचनम्—

“ मध्याह्नात्परतो यत्र चतुर्दश्यनुवर्तते । सिनीवाली तु सा ज्ञेया पितृकार्ये तु निष्फला ” ॥ इति तद्वोधायनीयव्यतिरिक्तविषयम् । अन्यथा पूर्वोक्तवचननिचयविरोधः स्यात् । पौर्णमासे १० बोधायनमतावलंबिनां विशेषादर्शनात् वाजसनेयिनामेव विशेषदर्शनात् वाजसनेयिव्यतिरिक्तानां सर्वेषां पूर्वोक्त एव प्रकारोऽवगतव्यः । इति इष्टिनिर्णयः—

**नक्षत्रादिनिर्णयः । अथ नक्षत्रादिनिर्णयः । तत्र मार्कंडेयः—**

“ तन्नक्षत्रमहोरात्रं यस्मिन्नस्तमितो रविः । यास्मिन्नुदेति सविता तन्नक्षत्रं दिनं भवेत् ” ॥ इति । अयमर्थः—द्विविधो नक्षत्रसंबंधिकालविशेषः । अहोरात्रौ दिनं च । अनुष्टेयं कर्मापि द्विविधम् । १५ अहोरात्रसाध्यं दिनसाध्यं च । उपवासैकमक्तादिकमहोरात्रसाध्यम् । यद्यप्यल्पकालनिष्पाद्यं भोजनमेकमक्तनक्तयोः स्वरूपं तथाप्यहोरात्रे भोजनांतरस्य एकमुक्तादिनिधातितया भोजनांतरपरित्यागसहितस्यैव भोजनस्यैकमक्तादिस्वरूपत्वादहोरात्रसाध्यत्वं विरुद्धम् । दानव्रतश्राद्धानामहन्येव कर्तव्यतया दानादिकं दिनसाध्यम् । तत्रोपवासादौ निशीथव्यापि अस्तमयव्यापि वा नक्षत्रं ग्राह्यम् । वतदानादौ तु सूर्योदयव्यापि नक्षत्रं ग्राह्यमिति । तदुक्तं स्कान्दपुराणे—

२० “ तत्रैवोपवसेद्वक्षे यन्निश्चिये यदा भवेत् । उपोषितव्यं नक्षत्रं यस्मिन्वास्तमियाद्रविः ॥

“ उपवासे यद्वक्षं स्यात् तद्विनक्तैकमुक्तयोः ” ॥ इति । अस्तमययोगो मुख्यः । निशीथयोगोऽनुकल्पः । विष्णुधर्मोन्तरे—

“ सा तिथिस्तच्च नक्षत्रं यस्मिन्नभ्युदितो रविः । तथा कर्माणि कुर्वीत ह्रासवृद्धी न कारणम् ” ॥ इति । एतदुपवासव्यतिरिक्तव्रतादिविषयम् । यद्यप्यत्र सूर्योदयकाले नक्षत्रसङ्घावमात्रं प्रतीयते न तु परिमाण-२५ विशेषः तथापि त्रिमुहूर्तपरिमाणस्य तिथिषु कृपत्वात् तन्न्यायेनोदये ‘ त्रिमुहूर्तस्थं नक्षत्रं व्रतदानयोः ’ इति वचनेन चोदयादित्रिमुहूर्तव्यापि नक्षत्रं ग्राह्यम् । नक्षत्रश्राद्धे तु अपराह्नस्य पार्वणश्राद्धकालत्वेन तद्वापिराश्रयणीया । एवं विष्कम्भादियोग उपवासादौ अस्तमयव्यापी ग्राह्यः । दानव्रतयोदयादित्रिमुहूर्तव्यापी ग्राह्यः । श्राद्धे तु कर्मकालव्यापी ग्राह्यः । एवं बवादिकरणानां तिथ्यर्धपरिमितत्वेन दिनद्वयव्यापित्वसंदेहाभावादुदयेऽस्तमये वा यस्मिन्दिने करणसङ्घावस्तस्मि-३० नेव दिने तत् कर्मनुष्टेयम् । संकांतिग्रहणादिकालो नैमित्तिकस्नानादिप्रकरणे निरूपितः ॥

इति वैद्यनाथदीक्षितविरचे स्मृतिमुक्ताफले कालनिरूपणं नाम पञ्चमः परिच्छेदः  
तिथिनिर्णयकाण्डः समाप्तः ॥ हरिः ओम् ।

( श्रीयवतेश्वरार्पणमस्तु । शके १७६७ विश्वावसूनामाब्दे भाद्रपदकृष्णदशम्यां भृगुवासे तद्विने इदं पुस्तकं यवतेश्वरस्थशङ्करनारायणद्विडेन लिखितम् । स्वार्थपरार्थं च । यदक्षरप )

## प्रायश्चित्तकाण्डः षष्ठः ।

॥ शुभमस्तु ॥

श्रीरामचरणाभ्योजलीनमानसषट्पदः । वैद्यनाथाध्वरी प्रायश्चित्तं संगृह्य भाषते ॥

अथ प्रायश्चित्तकाण्डमार्भते । प्रायो नाम तपः चित्तं निश्चयः । अनुष्टितेन द्वादशवार्षिकादिना अवश्यं पापं निवर्तत इति विश्वासयुक्तव्रतानुष्ठानलक्षणं तपः प्रायश्चित्तम् । ५  
तदाहाङ्गिरः—

“ प्रायो नाम तपः प्रोक्तं चित्तं निश्चय उच्यते । तपो निश्चयसंयुक्तं प्रायश्चित्तमिहोच्यते ” ॥ इति ।  
तच्च विहिताकरणादिनिमित्तवन्तं प्रति चोदनानैमित्तिकम् । तथा च बृहस्पतिः—

“ विहितस्याननुष्ठानान्विन्दितस्य च सेवनात् । प्रायश्चित्तं यत्क्रियते तच्चैमित्तिकमुच्यते ” ॥ इति ।  
विज्ञानेश्वरः (पृ. २३५ पं. २४) — “ प्रायश्चित्तशब्दः पापक्षयार्थं नैमित्तिके कर्मविशेषे रूढः ” इति । १०  
तदेवं प्रायश्चित्तशब्दः योगेन लूद्या च पापनिवर्तनक्षमं धर्मविशेषमाच्छै ।

प्रायश्चित्ताधिकारिनिरूपणम् । तत्र अधिकारिणं दर्शयति मनुः ( ११४४ )—

“ अकुर्वन्विहितं कर्म निन्दितं च समाचरन् । प्रसृजंश्वेन्द्रियार्थेषु प्रायश्चित्तीयते नरः ” ॥ इति ।  
याज्ञवल्क्योऽपि ( प्रा. २१९—२२० )—

“ विहितस्याननुष्ठानान्विन्दितस्य च सेवनात् । अनिग्रहाच्चेन्द्रियाणां नरः पतनमृच्छति ” ॥ १५  
प्रत्यवायीभवति ।

“ तस्मात्तेनेह कर्तव्यं प्रायश्चित्तं विकुद्धये । एवमस्यान्तरात्मा च लोकश्वैव प्रसीदति ” ॥  
एवं प्रायश्चित्ते कृते अस्यान्तरात्मा शुद्धतया प्रसीदति लोकश्च संव्यवहर्तुं प्रसीदतीत्यर्थः ।

एकविंशति नरकाः । प्रायश्चित्ताकरणे दोषमाह स एव ( प्रा. २२१—२२५ )—

“ प्रायश्चित्तमकुर्वाणः पापेषु निरता नराः । अपश्चात्तापिनः कष्टान्नरकान्यान्ति दारुणान् ॥ २०

“ तामिसं लोहशङ्कुं च महानिरयश्लमली । रौरवं कुड्हैमलं पूर्तिं<sup>५</sup> मृत्तिकां कालसूत्रकम् ॥

“ संघातं लोहितोदं च सविषं संप्रतापनम् । महानरककौलं सञ्जीवनमहाप॑यम् ॥

“ अवीचिमन्धतामिसं कुम्भीपाकं तथैव च । असिपत्रवनं चैव तंपनं चैकविंशकम् ” ॥

“ महापातकजैर्घोरैरूपपातकजैस्तथा । अन्विता यान्त्यचारितप्रायश्चित्ता नराधमाः ” ॥ इति ।

एकविंशकमित्येतत् प्रधाननरकापेक्षयोक्तम् । महापातकजैरिति उर्पपापमात्रोपलक्षणम् । २५

तथा च पापतारतम्यात् फलतारतम्यं दर्शितं विष्णुधर्मोन्तरे—

“ अष्टाविंशतिकोद्यः स्युर्धोराणि नरकाणि वै । महापातकिनश्वात्र सर्वे स्युर्नरकाबिधिषु ॥

“ आ चन्द्रतारकं यावत्पीड्यन्ते विविधैर्वर्धैः । अतिपातकिनश्वान्ये निर्यार्णवकोटिषु ॥

“ एकविंशतिसंख्येषु पादोनब्रह्मकल्पकम् । चतुर्दशसु पच्यन्ते कल्पार्धं समपापिनः ॥

“ उपपातकिनश्वापि तदर्धं यान्ति मानवाः । शेषैः पापैस्तदर्धं च कालकृतिरियं स्मृता ” ॥ इति । ३०

१ ग-भ्य । २ ग-सक्त । ३ क-कश्मल । ४ ग-पूतिमृत्तिकं । ५ क्ष-लोकं च । ६ क्ष-वशि ।

७ तापनमिति मुद्रिते पाठः । ८ ग-पाप ।

रहस्यकृतपापफलनिरूपणम् । रहस्यकृतपापफलमाह पराशारः—

“पातके तु सहस्रं स्यान्महति द्विगुणं तथा । उपपातके तुरीयं स्यान्नरकं वर्षसंख्यया”॥ इति ।

नरकानुभवानन्तरं तिर्यगादिजन्मनिरूपणम् । एवं नरकमनुभूय कर्मशेषात्पुनरिह संसारे दुःखबहुलतिर्यगादिषु योनिषु जायन्ते । तदाह याज्ञवल्क्यः ( प्रा. २०६-२०८ )—

५ “महापातकजान् घोरान्नरकान्प्राप्य दारुणान् । कर्मक्षयात्प्रजायन्ते महापातकिनस्त्वह ॥

“मृगश्वसूकरोष्टाणां ब्रह्महा योनिषुच्छति । खरपुल्कसवेणानां सुरापो ब्राह्मणो व्रजेत् ॥

“कृमिकीटपतङ्गत्वं स्वर्णहारी समाप्नुयात् । वृणगुल्मलतात्वं च क्रमशो गुरुतल्पगः” ॥

एतचाकामकारविषयम् । कामकारे तु अन्यास्वपि दुःखबहुलयोनिषु संसरति ।

यथाह मनुः ( १२१४-२८ )—

१० “बहुवर्षगणान् सर्वान्नरकान्प्राप्य तत्क्षणात् । संसारान्प्रतिपद्यन्ते महापातकिनस्त्वह ॥

“श्वसूकरखरोष्टाणां गोमायुमृगपक्षिणाम् । चण्डालपुल्कसानां च ब्रह्महा योनिषुच्छति ॥

“कृमिकीटपतङ्गानां विट्भुजां चैव पक्षिणाम् । हिंस्नाणां चैव सत्त्वानां सुरापो ब्राह्मणोऽसकृत् ॥

“लूताहिसरटानां च तिरश्वां चांबुचारिणाम् । हिंस्नाणां च पिशाचानां स्तेनो विप्रः सहस्रशः ॥

“तृणगुल्मलतानां च ऋव्यादां दंष्ट्रिणामपि । कूरकर्मकृतां चैव शतैशो गुरुतल्पगः” ॥ इति ।

१५ लूता ऊर्णनाभिः<sup>१</sup> । सरटः कृकलासः । एवं रौरवादिनरकेषु श्वसूकरादियोनिषु च दारुणं दुःख-मनुभूयानन्तरं दुरितशेषेण जननमरणसमय एव क्षयरोगादिलक्षणयुक्तो दुःखप्रचुरेषु मानुषशरीरेषु संसरति । तथा च याज्ञवल्क्यः ( प्रा. २०९-२१० )—

“ब्रह्महा क्षयरोगी स्यात्सुरापः श्यावद्वन्तकः । हेमहारी तु कुनखी दुश्चर्मा गुरुतल्पगः ॥

“यो येन संवसत्येषां स तल्लिङ्गो हि जायते” ॥ इति । श्यावद्वन्तकः स्वभावतः कृष्ण-२० दशनः । दुश्चर्मा कुष्ठी । एतेषां ब्रह्महादीनां मध्ये येन पुरुषेण यः संवसति स तल्लिङ्गो जायते इत्यर्थः । एवं महापातकव्यतिरिक्तेष्वन्येष्वपि पापेषु अकृतप्रायश्चित्तानां नरकानुभवानन्तरं तिर्यगादिषु जननम् । स एवाह ( प्रा. २१७ )—

“यथाकर्मफलं प्राप्य तिर्यक्त्वं कालपर्ययात् । जायन्ते लक्षणभ्रष्टा दरिद्राः पुरुषाधमाः” ॥ इति । तथान्यन्त्र—

२५ “चरितव्यमतो नित्यं प्रायश्चित्तं विशुद्धये । निन्द्यैर्हि लक्षणैर्युक्ता जायन्तेऽनिष्कृतैनसः” ॥ इति । मनुरापि ( ११४८ )—

“इह दुश्चरितैः केचित् केचित्पूर्वकृतैस्तथा । प्राप्नुवन्ति दुरात्मानो नरा रूपविपर्ययम्” ॥ इति ।

इह दुश्चरितैरस्मिन् जन्मन्याजितैः उत्कटैः पापैरिह तत्कलं पूर्वमनुभूय पश्चान्नरकादिकमनुभवन्ति ।

“अत्युत्कटैः पुण्यपापैरिहैव फलमश्रुते । त्रिभिर्वर्षेण्मिभिर्मासैष्मिभिः पक्षैष्मिभिर्दिनैः” ॥ इति स्मृतेः ।

३० पूर्वकृतैस्तु पापैर्नरकाद्यनुभवानन्तरं रूपविपर्ययं प्राप्नुवन्तीत्यर्थः । स एव ( १२५०-५८ )—

“संयोगं पतिरैर्गत्वा परस्यैव च योषितम् । ब्रह्मस्वमपहत्यापि भवन्ति ब्रह्मराक्षसाः ॥

“पिशुनः पूतिनासत्वं सूचकः पूतिवक्तताम् । धान्यचोरोऽङ्गहीनत्वमातिरेक्यं तु मिश्रतः” ॥

“अन्नहर्तामियावित्वं मत्स्यं वागपहारकः । वस्त्रापहारकः श्वैर्व्यं पर्शुतामश्वहारकः ॥

“एवं कर्मविशेषेण जायन्ते सद्विर्गर्हिताः । जडमूकान्धबधिरा विकृताकृतयस्तथा ॥

३५ “मणिमुक्ताप्रवालानि हृत्वा लोभेन मानवाः । विविधानि च रत्नानि जायन्ते लोहकर्वृषु ॥

<sup>१</sup> क्ष-त्वियं । <sup>२</sup> क्ष-कृमि । <sup>३</sup> ग-क्रमशो; क्ष-चमरो । <sup>४</sup> ग-भः । <sup>५</sup> ग-पतितेन ।

<sup>६</sup> अ. ११५०-५२; ६१-६८; ७ क-त्वं; क्ष-व्यं । <sup>८</sup> ग-पद्मगु ।

“धान्यं हृत्वा भवत्याख्यः कांस्यं हंसो जलं पूवः । मधुदंशः पयः काको रसं श्वा नकुलो घृतम् ॥  
 “मांसं गृधो वसां मद्गुस्तैलं तैलपकः खगः । चिरवाकस्तु लवणं बलाकः शकुनिर्दीधि ॥  
 “कौशेयं तित्तिर्हित्वा क्षौमं हृत्वा तु दूर्दूरः । कार्पासं तान्तवं क्रौञ्चो गोधा गां वाग्गदो गुडम् ॥  
 “चुचुन्दरिः शुभान् गन्धान् पत्रशाकं तु बहिणः । श्वावित् कृतान्नं विविधमकृतान्नं तु शल्यकः ॥  
 “बको भवति हृत्वाग्निं गृहकारी ह्युपस्करम् । रक्तानि हृत्वा वासांसि जायते जीवजीवकः ॥ ५  
 “वृको मृगेभं व्याग्रोऽश्वं फलपूष्पं तु मर्कटः । स्त्रीमृक्षस्तोकको वारि यानान्युष्टः पशुनजः ॥  
 “यद्वा तद्वा परद्रव्यमपहृत्य बलान्नरः । अवश्यं याति तिर्यकृत्वं जग्धवा चैवाहुतं हविः ॥  
 “याद्वशेन हि भावेन यद्यत्कर्म निषेवते । ताद्वशेन शरीरेण तत्तत्कलमुपाश्वुते” (१२८१) ॥ इति।  
 याज्ञवल्क्योऽपि ( प्रा. २१०-२१५ )—“अन्नहर्ताऽमयावी स्यान्मूको वागपहारकः ।  
 “धान्यहर्ताऽतिरिक्ताङ्गः पिशुनः पूतिनासिकः । तैलहृत्तेलपायी स्यात् पूतिवक्तस्तु सूचकः ॥ (२१०) १०  
 “हीनजातौ प्रजायेत रत्नानामपहारकः ॥ (२१३)  
 “श्वित्री वस्त्रं श्वा रसं तु चीरी लवणहारकः । आमयावी अजीर्णान्नो मौक्यं वागपहारकः ॥ ॥  
 पुस्तकहारी अननुजाताध्यायी च । तैलपायी कीटविशेषः । सूचकः सद्वैषसंकीर्तकः ।  
 “पत्रशाकं शिखी हृत्वा गन्धान् चुचुन्दरी शुभान् ।  
 “मूषको धान्यहारी स्याद्यानमुष्टः फलं कपिः । जलं पूवः पयः काको गृहकाँरी ह्युपस्करम् ॥ (११४) १५  
 “मधु दंशः फलं गृधो गां गोर्धाग्निं बकस्तथा” । चुचुन्दरिः राजदुरिताख्यो मूषकविशेषः । गृहकारि  
 कीटविशेषः । उपस्करः मुसलादि । चीरी उच्चैस्वरः कीटविशेषः । शङ्खो विशेषमाह—  
 “ब्रह्महा कुष्ठी तैजसहारी मण्डली देवब्राह्मणाक्रोशकः खलतिर्गरदाग्निदावुन्मत्तौ गुरुप्रति-  
 हन्तापस्मारी गोद्धश्वान्धः धर्मपत्नीमृतौ त्यक्त्वाऽन्यत्र प्रवृत्तः शब्दवेदी प्राणिविशेषः । कुण्डाशी  
 दंशभक्षः । देवब्राह्मणस्वापहारी पाण्डुरोगी । न्यासापहारी काणः । स्त्रीवर्ष्योपजीवः षण्डः २०  
 कौमारदारत्यागी दुर्भगो मृष्टैकाशी वातगुल्मी अभक्ष्यभक्षको गण्डमाली ब्राह्मणीगामी निर्बीजः  
 कूरकर्मा वामनः वस्त्रापहारी पतङ्गः शाध्यापहारी क्षपणकः शङ्खशुक्त्यहारी कपाली दीपापहारी  
 कौशिकः मित्रधुक् क्षयी मातापित्रोराक्रोशकः कारण्डकः” इति ।

वृद्धगौतमोऽपि कचित् विशेषमाह—“अनृतवाक् खलः मुहुर्मुहुः संचलनवाक् जलोदरो  
 दारत्यागी श्रीपदी कूटसाक्षी उच्छ्रितजंघाचरणः । विवाहविद्वकर्ता छिन्नोष्टः गोरक्षणे च्छिन्न- २५  
 हस्तः मातृघोऽन्धः । स्नुषागामी वातवृषणः । चतुष्पथे विणमूत्रविसर्जनो मूत्रकुच्छ्री । कन्यादूषकः  
 षण्डः । ईर्ष्यालुः मशकः । पित्रा विवद्मानोऽपस्मारी । न्यासापहारी अनपत्यः । रत्नापहारी  
 अत्यन्तदरिद्रिः । विद्याविक्रियी पुरुषमृगः । वेदविक्रियी<sup>१</sup> द्वीपी । बहुवाँचको जलपूवः । अयाज्य-  
 याजको वराहः । अनिमित्तिभोजी वायसः । मृष्टैकभोजी वानरः । यतस्ततोऽन्नमश्वन्मार्जारः । कक्ष-  
 वनदाहकः खद्योतः । दारकाचार्यो मुखविद्युगन्धः । पर्युषितभोजी कृमिः । अदक्षादायी बलीवर्दः । ३  
 मत्सरी भ्रमरः । अग्न्युत्सादी मण्डलकुक्षी । शूद्राचार्यः श्वपाकः । गोहती सर्पः । स्नेहापहारी क्षयी ।  
 अन्नापहारी अजीर्णी । ज्ञानापहारी मूकः । चण्डालीपुल्कसीगर्मैकः रजकः । प्रवजितागमने मरुपिशाचः  
 शूद्रागमने दीपधर्टः । सवर्णागमने दरिद्रिः । जलहारी मत्स्यः । पञ्चमहापातकानि मिथ्यः । क्षारहारी

<sup>१</sup> ग-काश; ‘चीरी’ मु. पाठः । २ ‘छुछु’ । ३ क्ष-त्ना । ४ ‘मूलं’ क्ष-मु । ५ क्ष-धा;  
 ग-धाम्या । ६ ‘मिश्रो’ मु. पाठः । ७ क्ष-रिष्पु । ८ क्ष-नि । ९ ग-वाक्यो । १० ग-गोरवगूर ।  
 ११ ग-द्वि । १२ ग-याज । १३ क्ष-य । १४ ग-षी । १५ ग-गामी । १६ ग-दीर्घकीटः ।

बलाकः । वार्धुषिकोऽङ्गहीनः । अविक्रेयविक्रीयी गृथः । राजमहिषीगामी नपुंसकः । दुराक्रोशी गर्दभः । गोगामी मण्डूकः । अनध्यायाध्यायी मृगालः । परद्रव्यापहारी परप्रेष्यः । मत्स्यवेधो गर्दभः” इति । ख्लियोऽप्येतेषु पूर्वोक्तास्वेव जातिषु स्त्रीत्वमनुभवन्ति । यथाह मनुः ( १२।६९ )—  
“ ख्लियोप्येतेन कल्पेन हृत्वा दोषमवाप्नुयुः । एतेषामेव जन्तुनां भार्यात्वमुपयान्ति ताः” ॥ इति ।

५ स एव ( १२।७८-८१ )—

“ असकृत गर्भवासेषु वसन् जन्म च दारुणम् । बन्धनानि च कष्टानि परप्रेष्यत्वमेव च” ॥ इति ।  
“ बन्धुप्रियवियोगं च संसर्गं चाप्रियैर्जैः । द्रव्यं जनं च नाशं च मित्रामित्रस्थ चार्जनः ॥  
“ जरां चैवाप्रतीकारां व्याधिभिश्चोपपीडनम् । क्लेशांश्च विविधांस्तांस्तान्मृत्युमेव च दुर्जयम् ॥  
“ यादृशेन हि भावेन यद्यत्कर्म निषेवते । तादृशेन शरीरेण तत्त्फलमुपाश्नुते” ॥ इति ।

१० दुर्लक्षणमनुष्यजन्मानन्तरं प्राक् भवीयसुकृतविशेषेण महाकुले भोगविद्याधनधान्यसंपन्नो जायते । तदाह याज्ञवल्क्यः ( प्रा. २१८ )—

“ ततो निष्कल्पषीभूताः कुले महति भोगिनः । जायन्ते विद्ययोपेता धनधान्यसमन्विताः” ॥ इति । निष्कल्पषीभूताः नरकाद्युपभोगद्वारेण क्षीणपापा इत्यर्थः ।

नवविधपापानि । प्रायश्चित्तनिमित्तानि तानि पापानि नवविधानि । महापाताकन्यति-  
१५ पातकानि समपातकान्युपपातकानि सङ्करीकरणानिम लिनीकरणान्यपात्रीकरणानि जातिभ्रंशकराणि प्रकीर्णकानीति । यथाह विष्णुः ( ३३।१-५ ) “ पुरुषस्य कामकोधलोभास्यं रिपुत्रयं सुधोरं भवति तेनायमाक्रान्तो महापातकातिपातकसमपातकोपपातकेषु प्रवर्तते सङ्कीर्णकरणेषु मलापेषु अपात्रीकरणेषु जातिभ्रंशकरणेषु प्रकीर्णकेषु च” इति ।

ब्रह्महत्यादिमहापातकानि । तत्र महापातकान्याह मनुः ( ११।५४ )—

२० “ ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः । महान्ति पातकान्याहुः संयोगैश्चैव तैः सह” ॥ इति । याज्ञवल्क्योऽपि ( प्रा. २२७ )—

“ ब्रह्महा मद्यपः स्तेनः तथैव गुरुतल्पगः । एते महापातकिनो यश्च तैः सह संवसेत्” ॥ इति । यद्यापारसमनन्तरं वा कालान्तरे वा कारणान्तरानिरपेक्षः प्राणवियोगो भवति स ब्राह्मणं हतवानिति ब्रह्महा । मद्यपः निषिद्धसुरायाः पाता । स्तेनो ब्राह्मणस्वर्णहारी । गुरुतल्पगो गुरुभार्यागामी । यश्च २५ तैर्ब्रह्महादिभिः प्रत्येकं संवत्सरं सह वसति सोऽपि महापातकीत्यर्थः ।

प्रयोजकादीनां फलतारतम्यम् । अनुग्राहकस्यापि हिंसाफलसंबन्धमाह मनुः—

“ वहूनामेककार्याणां सर्वेषां शस्त्रधारिणाम् । यद्येको धातयेत्तत्र सर्वे ते धातैकाः स्मृताः” ॥ इति । विष्णुः—

“ आकृष्टस्ताडितो वापि धनैर्वा विप्रयोजितः । यमुद्दिश्य त्यजेत्प्राणांस्तमाहुर्ब्रह्मघातैकम् ॥  
३० “ ज्ञातिमित्रकलत्रार्थं सुहृत्क्षेत्रार्थमेव च । यमुद्दिश्य त्यजेत्प्राणान् तमाहुर्ब्रह्मघातैकम् ॥  
“ रागद्वेषात्प्रमादाद्वा स्वतः परत एव वा । धातयेत् ब्राह्मणं कंचित्स भवेत् ब्रह्मघातकः ।  
“ भूतको यस्य तं हन्यात्सोऽपि च ब्रह्मघातकः” ॥ इति ।

हेमाद्रौ—“धनार्थं क्षेत्रदारार्थं पश्वर्थं वा जनेश्वर । यमुद्दिश्य त्यजेत्प्राणान् तमाहुर्ब्रह्मघातकम् ॥  
“नारी वा पुरुषो वाऽथ विधवा वा मनस्त्विनी । यमुद्दिश्य त्यजेत्प्राणान् तमाहुर्ब्रह्मघातैकम्” ॥ इति ।

१. ग-वासं । ग-मलिनीकरणेषु । ३. ग-संसर्गश्चापि । ४ ग-तु ।

**स्मृत्यन्तरेऽपि—**

“ हन्ता मन्त्रोपदेष्टा च तथा संप्रतिपादकः । प्रोत्साहकः सहायश्च तथा मार्गानुदेशकः ॥

“ आश्रयः शस्त्रदाता च भक्तदाता च कर्मिणम् । उपेक्षकः शक्तिमांस्तु दोषवक्ताऽनुमोदकः ॥

“ अकार्यकारिणां तेषां प्रायश्चित्तं प्रकल्पयेत् ” ॥ इति । आपस्तम्बः ( २११२९११-२ )—

“ प्रयोजयिता मन्ता कर्तैति स्वर्गनरकफलेषु कर्मसु भागिनो यो भूय आरभते तस्मिन् फलविशेषः ” ॥ इति ५  
प्रयोजकादीनां प्रत्यासत्तिव्यवधानपेक्षया व्यापारगतगुरुलाघवपेक्षया च फले गौरवलाघवात् प्राय-  
श्चित्तेऽपि गौरवलाघवं बोध्यम् । तथा सुमन्तुः—

“ तिरस्कृतो यदा विप्रो हत्वाऽऽत्मानं मृतो यदि । निर्गुणः सहसा क्रोधात् गृहक्षेत्रादिकारणात् ॥

“ त्रैवार्षिकं व्रतं कुर्यात्प्रतिलोमां सरस्वतीम् । गच्छेद्वाऽपि विशुद्धचर्यं तत्पापस्येति निश्चितम् ॥

“ क्रोधादौ प्रियते यस्तु निर्निभित्तं च भर्त्सितः । वत्सरत्रितयं कुर्यात्तरः कृच्छ्रं विशुद्धये ॥ १०

“ भर्त्सको यः स विद्वांश्चेद्वर्धेणैकेन शुद्ध्यते । केशश्मश्रुनसादीनामकृत्वा वपनं वने ” ॥ इति ।

उपकारार्थं प्रवृत्तौ दोषाभावः । परोपकारार्थं प्रवृत्तौ दोषाभावमाह संवर्तः—

“ औषधं स्नेहमाहारं दद्वदोब्राह्मणादिषु । दीयमाने विपत्तिः स्यान्न स पापेन लिप्यते ॥

“ दाहच्छेदसिराभेदप्रयत्नैरुपकुर्वताम् । प्राणसन्त्राणसिद्धचर्यं प्रायश्चित्तं न विष्वते ” ॥ इति ।

एतच्च निपुणभिषग्विषयम् । इतरस्तु ‘भिषड्मिथ्याचारं दाप्य’ इति दोषस्मरणात् । १५

यत्र मन्युनिमित्ताकोशादिकमकुर्वतोऽपि नाम गृहीत्वा उन्मादादिना आत्मानं व्यापादयति  
तत्रापि न दोषः

“ अकारणात्तु यः कश्चित् द्विजः प्राणान्परित्यजेत् । तस्यैव तत्र दोषः स्यान्न तु यं परिकीर्तयेत् ” ॥ इति  
स्मरणात् । तथा यत्राकोशादिजनितमन्युरात्मानं खड्गादिना प्रहृत्य मरणादर्वागकोशादिकर्त्ता  
धनादिना सन्तोषितो यदि जनसमक्षमुच्चैः श्रावयति नात्राकोशकस्यापराध इति तत्रापि वचनान्न २०  
दोषः । यथाह विष्णुः—

“ उद्दिश्य कुपितो भूत्वा तोषितः श्रावयेत्पुनः । तस्मिन् मृते न दोषोऽस्ति तस्य चोच्छ्रावणे कृते ” ॥ इति।

**अतिपातकानि । अतिपातकान्याह मनुः ( १११८७-८८ )—**

“ हत्वा गर्भमविज्ञातमेतदेव व्रतं चरेत् । राजन्यवैश्यावीजानावात्रेयीमेव च स्त्रियम् ॥

“ उक्त्वा चैवानृतं साक्ष्ये प्रतिरुद्धं गुरुं तथा । अपहृत्य च निक्षेपं कृत्वा च स्त्रीसुहृदधम् ” ॥ २५

ईजानौ यागदीक्षामध्यवर्तिनौ । आत्रेयी अत्रिगोत्रजानिक्षेपं ब्राह्मणसंबन्धिनम् । स्त्री आहिताग्नि-  
पत्नी पातिवत्यादिगुणयुक्ता वा । अविज्ञातगर्भहननादीनामतिपातकत्वम्

“ अतिदिष्टं तु यत्पापमतिपातकमुच्यते । अतिदुष्टेषु सर्वत्र पादोनं तत् व्रतं चरेत् ” ॥ इति  
वचनादवगम्यते । यमः—

“ मातृष्वसा मातृसखी दुहिता च पितृष्वसा । मातुलानी स्वसा श्वश्रूर्गत्वा सद्यः पतेत् द्विजः ” ॥ इति ३०

गौतमः ( २११-२ )—“ मातृपितृयोनिसंबन्धागस्तेननास्तिकनिंदितकर्माभ्यासिपतितात्याग्यपतित-  
त्यागिनः पतितापातकसंयोजकाश्च ” इति । बोधायनोऽपि ( २११४१ )—“ अथ पतनीयानि ।

समुद्रयानं ब्रह्मस्वन्यासापहरणं भूम्यनृतवदनं सर्वापण्यैर्यवहरणं शूद्रसेवनं शूद्राभिगमनं यश्च  
शूद्रायामभिप्रजायते तदपत्यं च भवति ” इति । आपस्तम्बोऽपि ( १९१३४२३ )—

“ धर्मार्थसंन्निपातेऽर्थग्राहिण एतदेव ” इति

३५

**याज्ञवल्क्यः** ( प्रा. २५२ )—“ चरेद्वतं महत्त्वापि धातार्थं चेत्समाहितः ।

“ पितुः स्वसारं मातुश्च मातुलानीं स्नुषामपि । मातुः सपत्नीं भगिनीमाचार्यतनयां तथा ।

“ आचार्यपत्नीं स्वसुतां गच्छंस्तु गुरुतल्पगः” ॥ इति ( प्रा. २३२-२३३.) ।

**विष्णुः** ( ३४।१ )—“ मातृगमनं दुहितृगमनं स्नुषागमनम् ” इति अतिपातकानीति ।

**५ नारदः** ( १२।७३-३५ )—

“ माता मातृष्वसा श्वश्रूमातुलानी पितृज्वसा । पितृव्यसस्त्रिष्यस्त्री भगिनी तत्सखी स्नुषा ॥

“ दुहिताचार्यभार्या च सगोत्रा शरणागता । राज्ञी प्रवाजिता साक्षी धात्री वर्णोत्तमा च या ॥

“ आसामन्यतमां गच्छन् गुरुतल्पग उच्यते । आश्रितां विदुषः पत्नीमाहिताग्रेश्च योगिनः ॥

“ एषां पत्नीं स्वंपुत्रीं च गत्वा तल्पवतं चरेत् । चण्डाल्यां गर्भमाधाय गुरुतल्पवतं चरेत्” ॥ इति ।

**१० अत्र माता मातृसपत्नी । भविष्यत्पुराणे—**

“ अग्निहोत्रार्थकपिलां हत्वा ब्रह्महणो व्रतम् । दुस्थितं संस्थितं वापि शिवलिङ्गं न चालयेत् ॥

“ अन्यथा तु क्रुते लिङ्गे अतिपातकमाप्नुयात् । उत्तमानां चामराणामन्यथाकरणे सति ॥

“ विप्रस्यैव व्रतं कृयात् विप्रदेवौ समौ स्मृतौ ।

“ गर्भिण्युदक्या विज्ञाताः कन्यामातृमनिच्छतीम् । गुरुतल्पं चरेत् गत्वा गामयोनिं सखीं स्त्रियम्” ॥ इति ।

**१५ याज्ञवल्क्यः** ( प्रा. २९८ )—

“ नीचाभिगमनं गर्भधातनं भर्तृनाशनम् । विशेषपतनीयानि स्त्रीणामेतान्यपि ध्रुवम्” ॥

**व्याघ्रपादः—**

“ अतिदेशस्योपदेशान्यूनत्वात्तद्रतं न हि । अतिदेष्टेषु सर्वत्र पादोनं तद्रतं चरेत्” ॥ इति ।

एवं महापातकातिदेशादन्यान्यप्यतिपातकानि द्रष्टव्यानि ।

**२० ब्रह्महत्यासमपातकानि । ब्रह्महत्यासमपातकान्याह मनुः** ( १।५५ )—

“ अनृतं च समुक्तर्षे राजगामि च पैशुनम् । गुरोश्वालीकनिर्बन्धः समानि ब्रह्महत्यया ” ॥

**याज्ञवल्क्यः** ( प्रा. २२८ )—

“ गुरुणामध्यधिक्षेपो वेदनिन्दा सुहृदधः । ब्रह्महत्यासमं ज्ञेयमधीतस्य च नाशनम् ” ॥ इति

गुरुणामाधिक्येनाधिक्षेपोऽवृत्ताभिशंसनं “कौटसाक्ष्यं राजगामि च पैशुनं गुरोरवृत्ताभिशंसनं पातक-

२५ समानि ” इति गौतमस्मरणात् ( २।१० ) । एतच्च लोकाविदितदेषाभिशंसनविषयम् । “दोषं

बुद्ध्वा न पूर्वः परेभ्यः पतितस्य समाख्याने स्यात्” इत्यापस्तम्बस्मरणात् ( १।७।२।१२० ) ।

नास्तिक्याभिनिवेशेन वेदकुत्सनं सुहृन् मित्रं तस्याब्राह्मणस्यापि वधः । अधीतस्य वेदस्या-

सच्छास्त्रविनोदेनालस्यादिना वा नाशनं विस्मरणम् । पराशरः—

“ मुञ्जानेषु तु विप्रेषु योऽप्ये पात्रं परित्यजेत् । स मूढः स च पापिष्ठः ब्रह्मघः स खलूच्यते ” ॥ इति ।

**३० विष्णुधर्मोत्तरे—**

“ यस्तु विद्याभिमानेन नीचो जयति सद्विजम् । उदासीनं समामध्ये ब्रह्महा स प्रकीर्तिः ॥

“ परदोषमविज्ञाय वृपकर्णे जपेत्तु यः । पापीयान् पिशुनः क्षुद्रः स चैवं ब्रह्महा स्मृतः ।

“ देवद्विजगतां भूमिं पूर्वमुक्तां हरेत् यः । प्रणष्टामपि कालेन तमाहुर्ब्रह्मधातकम् ” ॥ इति ।

**विष्णुः ( ३३।१ )**—“यागस्थस्य क्षत्रियस्य वैश्यस्य रजस्वलायाश्वान्तर्वत्न्याश्वात्रिगोत्रजाया अविज्ञातगर्भस्य शरणागतस्य च घातनं ब्रह्महत्यासमम्” इति ।

यागस्थक्षत्रियादीनामतिपातकत्वेन परिगणितानां समपातकत्वाभिधानमकामकृताभिप्रायम् । कामकारे तु तेषामतिपातकत्वम् ।

**सुरापानसमपातकानि । सुरापानसमान्याह मनुः ( ११।५६ )** ५

“ब्रह्मोज्ज्ञता वेदनिन्दा च कौटसाक्ष्यं सुहद्वधः । गर्हितानाद्ययोर्जग्धिः सुरापानसमानि षट्”॥ इति । गर्हितं लशुनादि । अनाद्यममेध्यादि । याज्ञवल्क्यः ( प्रा. २२९ )—

“निषिद्धभक्षणं जैह्यमुत्कर्षे च वचोऽनृतम् । रजस्वलामुखास्वादसुरापानसमानि तु”॥ इति । निषिद्धं लशुनादिकं तस्य मतिपूर्वभक्षणम् । ‘पलाण्डुं गृञ्जनं चैव मत्या जग्धवा पतेद्विजः’ इति स्मरणात् । जैह्यं कौटिल्यम् । अन्याभिसंधानेनान्यवादीत्वमन्यकर्तृत्वं च । तच्च गुरुविषयमिति ॥० विज्ञानेश्वरः ( पू. २४०, पं. २४-२५ ) । तथा समुत्कर्षनिमित्तं राजकुलादावचतुर्वेद एव चतुर्वेदोऽहमित्यनृतभाषणम् । स्मृत्यन्तरे—

“नालिकेरोदकं कांस्ये गोक्षीरं लवणान्वितम् । स्नानं रजकतीर्थे च ताप्रे गव्यं सुरासमम्”॥ इति ।

अत्रिः—

“तोयं पाणिनखाग्रेषु ब्राह्मणो न पिवेत् कचित् । सुरापानेन तच्चुल्यमित्येवं मनुरबवीत्”॥ १५ शातातपोऽपि—

“उद्धृत्य वामहस्तेन यत्तोयं पिबति द्विजः । सुरापानेन तच्चुल्यं मनुराह प्रजापतिः”॥ इति ।

**स्वर्णस्तेयसमपातकानि । स्वर्णस्तेयसमान्याह मनुः ( ११।५७ )**—

“निक्षेपस्यापहरणं नराश्वरजतस्य च । भूमिवस्त्रमणीनां च रुक्मस्तेयसमं स्मृतम्”॥ इति ।

याज्ञवल्क्यः ( प्रा. २३० )—

२०

“अश्वरत्नमनुष्यस्त्रीभूधेनुहरणं तथा । निक्षेपस्य च सर्वं हि स्वर्णस्तेयसमं मतम्”॥ इति ।

विष्णुः ( ३३।३ )—“ब्राह्मणभूम्यपहरणं स्वर्णस्तेयसमम्” इति ।

हेमाद्रौ—“हत्वा शतपलं ताप्रं स्वर्णस्तेयसमं विदुः”॥ इति ।

**गुरुतल्पसमपातकानि । गुरुतल्पसमान्याह मनुः ( ११।५८ )**—

“रेतःसेकः स्वयोनीषु कुमारीष्वन्त्यजासु च । सख्युः पुत्रस्य च स्त्रीषु गुरुतल्पसमं विदुः”॥ २५

स्वयोनीषु भगिनीषु । याज्ञवल्क्यः ( प्रा. २३१ )—

“सखिभार्याकुमारीषु स्वयोनिष्वन्त्यजासु च । सगोत्रासु सुतस्त्रीषु गुरुतल्पसमं स्मृतम्”॥ इति ।

पुराणसारे—

“अपि वा मातरं गच्छेन्न गच्छेदेवदारिकाम् । यदि गच्छेत्प्रमादेन गुरुदारसमं स्मृतम्”॥ इति ।

विष्णुः ( ३३।४-७ )—“पितृव्यमातामहमातुलश्वशुरनृपपत्न्यभिगमनं गुरुदारगमनसद्वशम् । पितृष्वसृ-

३०

मातृष्वसृगमनं च । श्रोत्रियऋत्विगुपाध्यायमित्रपत्न्यभिगमनं च । स्वसुः सख्युः पत्न्याः सगोत्राया

उत्तमवर्णायाः कुमार्याः रजस्वलायाः शरणागतायाः प्रवजितायाः निक्षितायाश्व गमनम्” इति ।

अतिपातकेषु परिगणितानां केषात्रिदिह ग्रहणमकामकारविषयम् ।

१ ग-ज्ञ । २ ग-सख्याः ।

उपपातकानि । उपपातकान्याह याज्ञवल्क्यः ( प्रा. २३४-२४२ )

“ गोवधो व्रात्यता स्तेयमृणानां चानपक्रिया । अनाहिताश्चिता पण्यविक्रियः परिवेदनम् ॥

“ भूताद्ध्ययनादानं भूतकाध्यापनं तथा । पारदार्थं पारिवित्त्यं वार्धुष्यं लवणक्रिया ॥

“ स्त्रीशूद्रविद्वक्षत्रवधो निन्दितार्थोपजीवनम् । नास्तिक्यं व्रतलोपश्च सुतानां चैव विक्रियः ॥

५ “ धान्यकुप्यपशुस्तेयमयाज्यानां च याजनम् । पितृमातृगुरुत्यागस्तटाकारामविक्रियः ॥

“ कन्याया दूषणं चैव परिविन्दक्याजनम् ।

“ आत्मनोऽर्थे क्रियारंभो मध्यपस्त्रीनिषेवणम् । स्वाध्यायाश्चित्तयागो बान्धवत्याग एव च ॥

“ इन्धनार्थं द्रुमच्छेदः स्त्रीहिंसौषधजीवनम् । हिंस्यन्त्रविधानं च व्यसनान्यात्मविक्रियः ॥

“ शूद्रप्रेष्यं हीनसख्यं हीनयोनिनिषेवणम् । तथैवानाश्रमे वासः परान्परिष्टता ॥

१० “ असच्छास्त्राधिगमनमाकरेष्वधिकारिता । भार्याया विक्रियश्चैषामेकैकमुपपातकम् ” ॥ इति ।

काले अनुपनीतत्वं व्रात्यता । सत्यविकारेऽनाहिताश्चिता । ज्येष्ठे सति कर्णीयसो द्वाराश्चिहोत्रसंयोगः परिवेदनम् । गुरुदारव्यतिरिक्तं पारदार्थम् । कर्णीयसि कृतविवाहे ज्येष्ठस्य विवाहराहित्यं पारिवित्त्यम् । वार्धुष्यं निषिद्धवृद्धिप्रयोगः । लवणक्रिया लवणोत्पादनम् । निन्दितार्थोपजीवनम् अंराजस्थापितार्थोपजीवनम् । व्रतलोपः ब्रह्मचारिणः ऋयादिप्रसङ्गः । कन्याया दूषणं

१५ अङ्गुल्यादिना योनिविदारणं न तु संयोगः । हिंस्यन्त्रस्य तिलेशुपीडाकरस्य प्रवर्तनम् ।

व्यसनानि मृगयादीनि अष्टादश । आकरेषु स्वर्णाद्वित्तिस्थानेषु । मनुरपि ( ११५९-६६ )—

“ गोवधोऽयाज्यसंयाज्यं पारदार्थात्मविक्रियौ । गुरुमातृपितृत्यागः स्वाध्यायाग्न्योः सुतस्य च ॥

“ परिवित्ता चानुजेन परिवेदनमेव च । तयोर्दीनं च कन्यायास्तयोर्यजनमेव च ॥

“ कन्याया दूषणं चैव वार्धुषिक्यं व्रताच्चयुतिः । तटाकारामदाराणामपत्यस्य च विक्रियः ॥

२० “ व्रात्यता वान्धवत्यागो भूताध्यापनमेव च । भूत्या चाध्ययनादानमपण्यानां च विक्रियः ॥

“ सर्वाकरेष्वधीकारो महायन्त्रप्रवर्तनम् । हिंसौषधस्त्रयुपजीवोऽभिचारो मूलकर्म च ॥

“ इन्धनार्थमशुष्काणां द्रुमाणामवपातनम् । आत्मार्थे च क्रियारम्भो निन्दितान्नादिनं तथा ॥

“ अनाहिताश्चिता स्तेयमृणानामनपक्रिया । असच्छास्त्राधिगमनं कौटिल्यं व्यसनक्रिया ॥

“ धान्यरौप्यपशुस्तेयं मध्यपस्त्रीनिषेवणम् । स्त्रीशूद्रविद्वक्षत्रवधो नास्तिक्यं चोपपातकम् ” ॥ इति ।

२५ वोधायनः ( २। १।४३-४४ )—“ अथोपपातकान्यगम्यागमनं गुर्वीं सखीं गुरुसखीमपपात्रां पतितां च

गत्वा भैषज्यकरणं ग्रामयाजनं रङ्गोपजीवनं नाट्याचार्यता गोमहिषरक्षणं यच्चान्यदप्येवमयुक्तं

कन्यादूषणमिति ” । स्मृत्यन्तरेऽपि—“ विद्वद्ब्राह्मणव्रतभेदाचरणविधवादेवदासीवेश्यावार्धकी-

दासीगमनान्युपपातकानि ” इति । शङ्खलिखितौ—“ कृतघ्नः कूटव्यवहारी ब्राह्मणवृत्तिस्त्रो

मिथ्याभिशंसी पतितात्यागी अभोज्यभोजी असत्प्रतिश्रव्ही ” इति । बृहद्विष्णुः—“ अभोज्यानां

३० च भक्षणं परस्वापहरणं परदाराभिगमनमयाज्यानां च याजनं द्रुमगुल्मलतौषधीनां हिंस्या जीवन-

मभिचारमूलकर्मसु प्रवृत्तिर्देवर्षिपितृणामृणानपक्रिया कुशीलवता ” इति ।

संकरीकरणादीन्याह मनुः ( ११६८ )—

“ खरोष्ट्राश्वमृगेभाणामजाविकवधस्तथा । संकीर्णकरणं ज्ञेयं मीनाहिमहिषस्य च ॥

“ क्रिमिकीटवधोहत्यामयानुगतभोजनम् । फलैधःकुसुमस्तेयमधैर्य च मलावहम् ॥ ( ७० )

“निन्दितेभ्यो धनादानं वाणिज्यं शूद्रसेवनम् । अपात्रीकरणं ज्ञेयमसत्यस्य च भाषणम् ॥ (६९)

“ब्राह्मणस्य रुज्जः कृत्याग्रातिरब्रेयमव्ययोः । जैह्यं च पुंसि मैथुन्यं जातिभ्रंशकरं स्मृतम्” (६७)॥ इति।

विष्णुः—(३८१-६) “ब्राह्मणस्य रुज्जः करणमब्रेयमव्ययोग्रातिः जैह्यं पशुष्वयोनिषु पुंसि च मैथुनम्”

इति । एतानि जातिभ्रंशकराणि । ग्रामारण्यपशूनां हिंसनं संकरीकरणं निन्दितेभ्यो धनादानं

वाणिज्यं कुसीदजीवनमसन्यभाषणं शूद्रसेवनमित्यपात्रीकरणानि । पक्षिणां जलचराणां जलजानां ५

च घातनं क्रिमिकीटघातनं मधानुगतभोजनमिति मलावहानि । यदनुकं तत् प्रकीर्णकम्” (३९-१,

४०।१,४१।१-४।४२।१) इति । तदेवं नवविधानि पापानि । यत्तु कात्यायनेनोक्तम्—

“महापापं चातिपापं तथा पातकमेव च । प्रासङ्गिकोपपापमित्येवं पञ्चको गणः”॥ इति ।

अत्र पातकमिति समपातकान्युक्तानि । उपपातकेषु कानिचिदगम्यागमनादीन्यवान्तरभेदाविवक्षया

प्रासङ्गिकमित्युक्तानि । अतिपातकाध्यवान्तरभेदाविवक्षया त्रैविध्यमुक्तं विज्ञानेश्वरीये (पृ. १०  
२४२ पं. १९-२०)—

“महापातकतुल्यानि पापान्युक्तानि यानि वै । तानि पातकसंज्ञानि तन्न्यूनमुपपातकम्”॥ इति ।

कामाकामकृतपापविचारः । अकामकृतानां पापानां प्रायश्चित्तैर्नाश इह व्यवहारश्च  
भवति । कामकृतानां त्विह व्यवहार्यत्वमात्रम् । तथा च याज्ञवल्क्यः ( प्रा. २२६ )—

“प्रायश्चित्तैरपैत्येनो यदज्ञानैकृतं भवेत् । कामतो व्यवहार्यस्तु वचनादिः जायते”॥ १५  
छागलेयः—“प्रायश्चित्तमकामानां कामावास्तौ न विद्यते”।

वसिष्ठोऽपि ( १८।१ )—“नाभिसन्धिकृते प्रायश्चित्तम्” इति । मनुः ( ११।४६ )—

“अकामतः कृते पापे प्रायश्चित्तं विदुर्बुधाः । कामकारकृतेऽप्याहुरेके श्रुतिनिर्दर्शनात्”॥

जावालिः—

“अकामकृतपापानां ब्रुवन्ति ब्राह्मणा व्रतम् । कामकारकृतेऽप्येके द्विजानां वृषलस्य च”॥ इति । २०

देवलोऽपि—

“अभिसन्धिकृते पापेऽसकृदा नेह निष्कृतिः । अपरे निष्कृतिं ब्रूयुरभिसन्धिकृतेऽपि च”॥  
अङ्गिरास्तु कामकृते द्विगुणं प्रायश्चित्तमाह—

“अकामतः कृते पापे प्रायश्चित्तं न कामतः । स्यादकामकृते यत्तत् द्विगुणं बुद्धिपूर्वकम्”॥ इति ।

स्मृत्यन्तरेऽपि—“विहितं यदकामानां कामात्तु द्विगुणं भवेत्”॥ इति । तथा— २५

“म्लेच्छेनाधिगता शूद्रा ह्यज्ञानात्तु कथंचन । कृच्छ्रत्रयं प्रकुर्वीत ज्ञाने तु द्विगुणं भवेत्”॥ इति ।

अत्र माधवीये व्यवस्थापितम्—अकामकृते न विप्रतिपत्तिः । कामकृतस्य तु विप्रतिपत्तौ केचि-  
न्निर्णयमाहुः । द्विविधा पापस्य शक्तिः । नरकोत्पादिका व्यवहारनिरोधिका चेति । तन्निवर्तकस्यापि

प्रायश्चित्तस्य शक्तिर्द्विविधा । नरकनिवारिका व्यवहारजननी चेति । तत्र प्रायश्चित्ताभाव-  
बादिनां मुनीनां नरकनिवारणाभावः अभिप्रेतः । सद्ग्राववादिनां तु व्यवहारजननी शक्तिरभिप्रेता । ३०

द्विगुणप्रायश्चित्तेन इह लोके व्यवहारः सिध्यति । अपरे पुनः—‘कामतो व्यवहार्यस्तु वचनादिः  
जायते’ ( प्रा. २२६ ) इति याज्ञवल्क्यवचने अव्यवहार्य इति पदं छित्वा कृतप्रायश्चित्तोऽपि

अव्यवहार्यः नरकस्य निवृत्तिरस्तीति वदन्ति । अत्र चोपोद्ग्रालकं मनुवचनम् ( ११।१९० )—

“बालम्बां च कृतद्वांश्च विशुद्धावपि धर्मतः । शरणागतहन्तृश्च स्त्रीहन्तृश्च न संवसेत्”॥ इति ।

- अन्ये तु पूर्वोक्ताङ्गिरःस्मृत्यन्तरवचने कामकृते विशेषेण द्विगुणप्रायश्चित्तावगमात् मनुना ( ११४५ )—“ कामकारकृतेऽप्याहुरेके श्रुतिनिर्दर्शनात् ” इति । तत्र विशेषेण प्रायश्चित्ताङ्गीकारात्, आपस्तम्बेन च ( ११२६७ )—“ दोषवच्च कर्माभिसन्धिपूर्वं कृत्वानभिसन्धिपूर्वं वा ऽब्लिङ्गाभिरप उपस्थृशेद्वासणीभिर्वा ” इति व्यवहारादिविशेषानभिधानेन कामाप् कामयोः शुद्ध्यभिधानात्, गौतमेन च ( १०२-९ )“ शिष्टस्याक्रियाप्रतिषिद्धेवनमिति च । तत्र प्रायश्चित्तं कुर्यादिति मीमांसते न कुर्यादित्याहुः । न हि कर्म क्षीयत इति । कुर्यादित्यपरे । पुनःस्तोमेनेष्वा पुनस्सवनमायान्तीति विज्ञायते । ब्रात्यस्तोमैऽचेष्वा तराति सर्वं पाप्मानं तराति ब्रह्महत्यां योऽश्वमेधेन यजते ” इति पूर्वोत्तरपक्षभंग्या पापक्षयस्य दर्शितत्वात्, अकामकृतानां सर्वेषां पापानां तत्तदुक्तप्रायश्चित्तैरहामूलं च शुद्धिर्भवति । कामकृतानां च १० पतनीयव्यातिरिक्तानां द्विगुणप्रायश्चित्तैर्नरकनिवृत्तिरिह व्यवहारश्च सिध्यति । “ नाभिसन्धिकृते प्रायश्चित्तम् ” इति वासिष्ठादिस्मरणं ( १८१ ) पतनीयपापविषयम् । तथा च मनुः ( ११४६ )—“ अकामतः कृतं पापं वेदाभ्यासेन शुद्ध्यति । कामतस्तु कृतं मोहात्प्रायश्चित्तैः पृथग्विधैः ॥ “इयं विशुद्धिरुदिता प्रमाण्याकामतो द्विजम् । कामतो ब्राह्मणवधे निष्कृतिर्न विधीयते” ( ८९ ) ॥ इति । ब्राह्मणवध इति सुरापानादेरप्युपलक्षणम्
- १५ “ब्रह्महत्यासुरापानस्वर्णस्तेयेषु कामतः । कृतेषु निष्कृतिर्नास्ति विहितान्मरणाद्वते” ( ५५ ) ॥ इति । “यः कामतो महापापं नरः कुर्यात्कथञ्चन । न तस्य निष्कृतिर्दृष्टा भृगवग्निपतनाद्वते” ॥ इति स्मृतेः । एवं च पतनीये कर्मणि कामकृते मरणान्तिकप्रायश्चित्तेषु कल्मषक्षयो भवत्येव । फलान्तराभावात् “नास्यास्मिन् लोके प्रत्यापत्तिर्विद्यते । कल्मषं तु निर्हण्यत” ( ११२४२५ ) इत्यापस्तंबस्मरणात् । एतच्च मरणान्तिकप्रायश्चित्तं ब्राह्मणानां कलौ निषिद्धम्
- २० “ प्रायश्चित्तविधानं च विग्राणां मरणान्तिकम् । भृगवग्निपतनं चैव वृद्धादिमरणं तथा ” ॥ इति कलियुगनिषिद्धधर्ममध्ये परिगणनात् । “ मिथ्यैतदिति हारीतः । यो ह्यात्मानं परं वाभिमन्यते अभिशस्त एव स भवति ” इत्यापस्तंबस्मरणात् ( ११०२८१६-१७ ) । अयमर्थः—एतन्मरणान्तिकप्रायश्चित्तं मिथ्या न कर्तव्यम् । य आत्मानं परं वाभिमन्यते मारयति सोऽभिशस्त एव ब्रह्महैव भवतीति । अतः कामकृतमहापातकानां मरणान्तिकप्रायश्चित्तस्य कलौ निषेधात् द्वादशवार्षिकादिप्रायश्चित्तैः पापक्षयाभावादिह व्यवहार्यत्वमात्रं सिध्यति । “ कामतो व्यवहार्यस्तु ” इति याज्ञवल्क्यवचनं च महापापविषयम् । उपपातकादावपतनीये पुनः कामकृतेऽपि प्रायश्चित्ते कृते पापक्षयो भवत्येव मनुवचनात् ( ११४६ )—“ अकामतः कृतं पापं वेदाभ्यासेन शुद्ध्यति । कामतस्तु कृतं पापं प्रायश्चित्तैः पृथग्विधैः ” ॥ इत्याहुः ।
- प्रकाशरहस्यप्रायश्चित्तम् । द्विविधानि पापानि । प्रकाशकृतानि रहस्यकृतानि चेति ।
- ३० तत्र प्रकाशकृतानां परिषदोऽनुमत्या प्रायश्चित्तं कार्यम् । तथा च याज्ञवल्क्यः ( प्रा. ३०१ )—“ विस्वातदोषः कुर्वीत परिषदोऽनुमते वतम् ” ॥ इति । पराशारः ( ८१२ )—“ वेदवेदाङ्गविदुषां धर्मशास्त्रं विजानताम् । स्वकर्मरतविग्राणां स्वकं पापं निवेदयेत् ” ॥ इति । यत्पापं कर्तव्यतिरिक्तेन केनचिदपि न ज्ञातं तद्रहस्यं तस्य प्रायश्चित्तमपि रहस्येव कर्तव्यम् ।

१ कग—मकृतयोः । २ ग—मेने ।

तथा च हारीतः—“रहस्ये रहस्यं प्रकाशे प्रकाशम्” इति । रहस्यत्वादेव नास्ति तत्र परिषदनु-  
मत्यपेक्षा । मनुः ( ११२२६-२२९ )—

“एतौद्विजातयः शोध्या बतैराविष्कृतैनसः । अनाविष्कृतपापांस्तु मन्त्रैर्हीमैश्च शोधयेत् ॥

“स्व्यापनेनानुतापेन तपसाऽध्ययनेन च । पापकृन्मुच्यते पापात्तथा दानेन चापदि ॥

“यथा यथा नरोऽर्थम् स्वयं कृत्वाऽनुभाषते । तथा तथा त्वचेवाहिस्तेनाधर्मेण मुच्यते ॥ ५

“यथा यथा मनस्तस्य दुष्कृतं कर्म निन्दति । तथा तथा शरीरं हि तेनाधर्मेण मुच्यते” ॥ इति ।

परिषिद्धक्षणमाह मनुः ( १२११०-११३ )—

“दशावरा वा परिषिद्धं धर्मं पैरिकल्पयेत् । ऋयवरा वापि वृत्तस्था तद्धर्मं न विचालयेत् ।

“त्रैविद्यो हैतुकस्तकीं नैरुक्तो धर्मपाठकः । त्रयश्चाश्रमिणः पूर्वे परिषित्स्यात् दशावरा ॥

“ऋग्वेदविद्यजुर्विच्च सामवेदविदेव च । ऋयवरा परिषित् ज्ञेया धर्मसंशयनिर्णये ॥ १०

“एकोऽपि वेदविद्धर्मं यं व्यवस्थेद्विचक्षणः । स विजेयः परो धर्मो नाज्ञानां गदितोऽयुतैः” ॥ इति ।

याज्ञावल्क्यः ( आ. ९ )—

“चत्वारो वेदधर्मज्ञाः पर्षत्रैविद्यमेव वा । सा ब्रूते यं स धर्मः स्यादेको वाऽध्यात्मवित्तमः” ॥ इति ।

पराशरः ( ८१५-३४ )—

“चत्वारो वा त्रयो वापि यं ब्रूयुर्वेदपारगाः । स धर्म इति विजेयो नेतैरस्तु सहस्रशः” ॥ ( १५ ) १५

“चत्वारो वा त्रयो वापि वेदवन्तोऽग्निहोत्रिणः । ब्राह्मणानां समर्था ये परिषित्सा विधीयते ॥

“अनाहिताग्नयो येऽन्ये वेदवेदाङ्गपारगाः । पञ्च त्रयो वा धर्मज्ञाः परिषित्सा प्रकीर्तिता ॥ ( १९ )

“मुनीनामात्मविद्यानां द्विजानां यज्ञायज्ञिनाम् । वेदवतेषु स्नातानामेकोऽपि परिषित् भवेत् ॥ ( २० )

“प्रमाणमार्गं मार्गन्तो यं धर्मं प्रवदन्ति ये । तेषामुद्विजते पापं सज्जावर्गुणवादिनाम् ॥ ( १६ )

“यथाश्मनि स्थितं तोयं मास्तार्केण शुष्यति । एवं परिषिदादेशान्नाशयेत्तत्र दुष्कृतम् ॥ ( १७ ) २०

“नैव गच्छति कर्तारं नैव गच्छति पर्षदम् । मास्तार्कादिसंयोगात्पापं नश्यति तोयवत् ॥ ( १८ )

“अमेध्यानि तु सर्वाणि प्रक्षिप्यन्ते यथोदके । तथैव किल्बिषं सर्वं प्रक्षिपेच्च द्विजानले ॥ ( ३० )

“ये पठन्ति द्विजा वेदं पञ्चयज्ञरताश्च ये । त्रैलोक्यं तारयन्त्येते पञ्चेन्द्रियरता अपि ॥ ( २८ )

“धर्मशास्त्ररथारुद्धा वेदसङ्घधरा द्विजाः । क्रीडार्थमपि यं ब्रूयुः स धर्मः परमो मतः ॥ ( ३३ )

“चातुर्विद्यो विकल्पी चाङ्गविद्धर्मपाठकः । वृद्धाश्रमाश्रमिणो मुख्याः पर्षदेषां दशावरा” ॥ ( ३४ ) इति । २५

चतुर्णां वेदानां पारगश्चातुर्वेद्यः । विकल्पादिकस्वरूपमुक्तमङ्गिरसा—

“धर्मस्य संपदश्चैव प्रायश्चित्क्रमस्य च । त्रयाणां यः प्रमाणज्ञः स विकल्पी भवेत् द्विजः ॥

“शब्दे छन्दसि कल्पे च शिक्षायां च सुनिश्चितः । ज्योतिषां गणिते चैव स नैरुक्तोऽङ्गविद्धवेत् ॥

“वेदविद्याव्रतस्नातः कुलशीलसमान्वितः । अनेकधर्मशास्त्रज्ञः पठ्यते धर्मपाठकः” ॥ इति ।

“ब्रह्मचर्याश्रमादूर्ध्वं विप्रो बृद्धः प्रकीर्त्यते” । चातुर्वेद्यत्वादिकथितविशेषविशिष्टा गृहस्थाश्रम- ३०

वर्तिनो दशसंख्याकः पर्षच्छब्दवाच्याः । चत्वारो वापीति ये पूर्वपक्षाः पूर्वमुक्ताः ते सर्वे महापापेभ्योऽर्वाचीनविषया वा युगान्तरविषया वा । यदाह देवलः—

“पापानां तारतम्येन विप्राणां गुरुलाघवम् । एको नार्हति तत्कर्तुमनूचानोऽप्यनुग्रहम् ॥

“ उशान्तानां च विदुषां कलौ सङ्घः प्रशस्यते । धर्मजा बहवो विप्राः कर्तुमर्हन्त्यनुग्रहम् ” ॥

यत्कृतमङ्गिरसा—

“ पातके तु शतं पर्षत्सहस्रं महदादिषु । उपपातके तु पञ्चाशत् स्वल्पे स्वल्पं तथा भवेत् ” ॥ इति  
तदभ्यासविषयम् । अङ्गिराः—

५ “ आर्तानां मार्गमाणानां प्रायश्चित्तानि ये द्विजाः । जानन्तो न प्रयच्छन्ति ते तेषां समभागिनः ॥

“ तस्मादार्ती समासाद्य ब्राह्मणं तु विशेषतः । जानद्विर्धमिपन्थानं न भाव्यं तु पराङ्मुखैः ॥

“ अनर्थितैरनाहूतैरपृष्ठैश्वैव संसदि । प्रायश्चित्तं न दातव्यं जानद्विरपि सर्वदा ॥

“ यत्पुण्यमुद्घृते विप्रे भ्रियमाणे जलादिषु । तत्पुण्यं तारिते पापात्प्रायश्चित्तैस्तु मानवैः ॥

“ प्रायश्चित्तविधानेन दुष्कृतान्मोचयेन्नरम् । इहामुत्र सुखं विन्देद्विद्वानायुर्यशो बलम् ” ॥ इति ।

१० परिषद्योग्याः ।

नामधारकविप्राणां परिषत्त्वं नास्तीत्याह पराशरः ( ८२२ )—

“ अत ऊर्ध्वं तु ये विप्राः केवलं नामधारकाः । परिषत्त्वं न तेष्वस्ति सहस्रगुणितेष्वपि ” ॥ इति ।  
अत ऊर्ध्वं वर्णितभ्यो गुणवद्भ्यो ब्राह्मणेभ्यः ऊर्ध्वं तद्यातिरिक्ता गुणवद्द्वयं ऊर्ध्वमन्ये गुणरहिता  
इति यावत् । स एव ( ८११ )

१५ “ सावित्र्यश्चापि गायत्र्याः सन्ध्योपास्त्यग्रिकार्थयोः । अज्ञानात्कृषिकतर्तो ब्राह्मणा नामधारकाः ॥

“ यथा काष्ठमयो हस्तिर्था चर्ममयो मृगः । ब्राह्मणोऽप्यनधीयानस्त्रयस्ते नामधारकाः ॥

“ प्रायश्चित्तं प्रयच्छन्ति ये द्विजा नामधारकाः । ते द्विजाः पापकर्माणः समेता नरकं ययुः ” ॥  
ययुः यान्तीत्यर्थः । स एव ( ८१२-१४, ३५ )—

“ अव्रतानाममन्त्राणां जातिमात्रोपजीविनाम् । सहस्राः समेतानां परिषत्त्वं न विद्यते ॥

२० “ यद्वदान्ति तमोमूढा मूर्खा धर्ममताद्विदः । तत्पापं शतधा भूत्वा तद्वक्तृनधिगच्छति ।

“ अज्ञात्वा धर्मशास्त्राणि प्रायश्चित्तं ददाति यः । प्रायश्चित्ती भवेत् पूतः किल्बिषं पार्षदं व्रजेत् ॥

“ राजश्चानुमते स्थित्वा प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् । स्वयमेव न कर्तव्यं कर्तव्या स्वल्पनिष्कृतिः ” ॥

प्रायश्चित्तविधानस्थलम् । स एव ( ८३७ )—

“ प्रायश्चित्तं यदा दद्यादेवतायतनाग्रतः । आत्मकृच्छ्रं ततः कृत्वा जपेद्वै वेदमातरम् ” ॥ इति ।

२५ देवतायतनाग्रत इति शैवस्य वैष्णवस्य वा पुरः स्थित्वा निर्देष्टव्यम् । एतत् पुण्यतीर्थदेवापलक्षणम्

“ देवालये नदीतारे शुचौ देशो सभास्थले । उपविश्य यथाशास्त्रं प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ” ॥ इति स्मृतेः ।

एवं प्रायश्चित्तं विनिर्दिश्यानन्तरं निर्देष्टारः सर्वे स्वात्मशुद्ध्यर्थं तत्प्रायश्चित्तानुसारेण किञ्चित्  
कृच्छ्रं चरित्वा अनन्तरं वेदमातरं गायत्रीं यथाशक्ति जपेयुः । अङ्गिराः—

“ उपस्थानं व्रतादेशः चर्याशुद्धिः प्रकाशनम् । प्रायश्चित्तं चतुष्पादं विहितं धर्मकर्तृभिः ” ॥ इति ।

३० पराशरः—“ पापं प्रख्यापयेत्पापी दत्त्वा धेनुं तथा वृषम् । तिस्रो धेनुर्महापापे दत्त्वा प्रख्यापयेन्नरः ॥

“ द्विगुणे व्रत आदिष्टे दक्षिणा द्विगुणा भवेत् । यावद्वतं तु कर्तव्यं दक्षिणा तावती भवेत् ॥

“ वित्तशाक्यं न कुर्वीत सति द्रव्ये फलप्रदम् । विज्ञाप्य पापं सम्यानां किञ्चिद्वत्वा व्रतं चरेत् ” ॥ इति ।

**ब्रह्महत्याप्रायश्चित्तम् । अथ प्राणिहननप्रायश्चित्तमुच्यते । तत्र ब्रह्मवधस्य महापातकस्य प्रायश्चित्तमाह पराशारः ( १२।५८ )—**

“ चातुर्विद्योपन्नस्तु विधिवद्ब्रह्मघातके । समुद्रसेतुगमनं प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ” ॥ इति । चातुर्विद्योपन्नः वेदाध्ययनानुष्ठानवान् । अनेन सर्वा परिषिद्धुपलक्ष्यते । समुद्रे दाशरथिना बद्धसेतुः समुद्रसेतुः । तथात्रां ब्राह्मणघातके पुरुषे यथाविध्यनुष्ठेयत्वेन निर्दिशेदिति विधिवदित्युक्तम् । ५ कोऽसौ विधिरित्याकांक्षायां तदितिकर्तव्यतामाह स एव ( १२।५९-६३ )—

“ सेतुबन्धपथे भिक्षां चातुर्वण्यात् समाचरेत् । वर्जयित्वा विकर्मस्थां छत्रोपानद्विवर्जितः ॥

“ अहं दुष्कृतकर्मा वै महापातककारकः । गृहद्वारेषु तिष्ठामि भिक्षार्थी ब्रह्मघातकः ॥

“ गोकुलेषु वसेच्चैव ग्रामेषु नगरेषु च । तपोवनेषु तीर्थेषु नदीप्रस्तवणेषु च ॥

“ एतेषु ख्यापयन्नेनः पुण्यं गत्वा तु सागरम् । १०

“ दशयोजनविस्तीर्णं शतयोजनमायतम् । रामचन्द्रसमादिष्टं नलसञ्चयसञ्चितम् ॥

“ सेतुं दृष्ट्वा समुद्रस्य ब्रह्महत्यां व्यपोहति । सेतुं दृष्ट्वा विशुद्धात्मा अवगाहेत सागरम् ” ॥ इति ।

छत्रोपानद्विवर्जित इति न केवलं भिक्षावेलायां किन्तु मार्गिगमनेऽपि ति द्रष्टव्यम् । अहं दुष्कृत-

कर्मेति भिक्षमानेन वक्तव्य इति उक्तिप्रकारोऽभिहितः । अध्वशान्तः तपोवनादिषु निवसेत् ।

तत्र व्याघ्रादिभये सति ग्रामे नगरे वा प्रविश्य गोशालादेवतायतनादौ पुण्यप्रदेशे निवसेत् । १५

एतेषु ख्यापयन्निति न केवलं भिक्षागृहेष्वैव पापप्रख्यापनं किन्तु निवासस्थानेष्वपीत्यर्थः ।

सेतुयात्रां समाप्य पुनः कर्तव्यमाह स एव ( १२।६४-६६ )—

“ पुनः प्रत्यागतो वेशम वासार्थमुपसर्पति । सपुत्रः सह भूत्यैश्च कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥

“ गाश्चैवैकशतं द्व्याच्चतुर्वेद्येऽथ दक्षिणाम् । ब्राह्मणानां प्रसादेन ब्रह्महा तु विशुद्ध्यते ” ॥ इति ।

सेतुं द्रष्टुमशक्नुवतो भूपतेः प्रायश्चित्तान्तरमाह स एव ( १२।६४ )—“ यजेत वाश्वमेधेन २० राजा तु पृथिवीपतिः ” इति । कलौ पराशरोक्तं प्रायश्चित्तमेव मुख्यम् ( १।२३ )—

“ कृते तु मानवा धर्मस्त्रितायां गौतमाः स्मृताः । द्वापरे शंखलिखिताः कलौ पाराशराः स्मृताः ” ॥

इति स्मरणात् । व्यासोऽपि—

“ गत्वा सेतुं समुद्रस्य स्नात्वा तत्र महोदधौ । दृष्ट्वा रामेश्वरं लिङ्गं ब्रह्महा तु विशुद्ध्यति ” ॥ इति ।

श्रीरामायणे—

“ सेतुबन्ध इति ख्यातं बैलोकयेनाभिपूजितम् । एतत्पवित्रं परमं महापातकनाशनम् ” ॥ इति ।

प्रायश्चित्तान्तरमाह याज्ञवल्क्यः ( प्रा. २।४३ )—

“ शिरःकपाली ध्वजवान् भिक्षाशी कर्म वेदयन् । ब्रह्महा द्वादशाब्दानि मितभुक्शुद्धिमाप्नुयात् ” इति ।

मनुः ( १।१७२ )—

“ ब्रह्महा द्वादशसमाः कुटीं कृत्वा वने वसेत् । भैश्वाश्यात्मविशुद्ध्यर्थं कृत्वा शवाश्चिरोध्वजम् ” ॥ इति । ३६

हेमाद्रौ—

“ अज्ञानात् ब्राह्मणं हत्वा चीरवासा जटी भवेत् । स्वैर्नैव हतविप्रस्य कपालं धारयेन्मुदा ॥

“ तद्भावेऽन्यदीर्यं वा पानार्थं बिभूयात्सदा । तद्वत्त्रं ध्वजदण्डे तु धृत्वा वनचरो भवेत् ॥

“ वन्याहारो भवेन्नित्यमेकाहारो मिताशनः । सम्यक् सन्ध्यामुपासीत त्रिकालं स्नानमाचरेत् ॥

१ क्ष-कादृशं । २ क्ष-शाब्दानि ।

- “ अध्यापनं चाध्ययनं वर्जयन् संस्मरेद्वरिम् । ब्रह्मचर्यवतं नित्यं चरेत् गन्धादिवर्जितः ॥
- “ तीर्थान्युपवसेच्चैव पुण्यक्षेत्राश्रमाणि च । यदि वन्यैर्न जीवेत् ग्रामे भिक्षां समाचरेत् ॥
- “ अस्वप्णेन शारवेण रक्तवर्णेन वर्णतः । वदेच्च ब्रह्महाऽस्मीति सर्वागाराणि पर्यटेत् ॥
- “ चतुर्वर्णेषु वा भैक्षं त्रिवर्णेष्वयथ वा चरेत् । मृष्टामृष्टाविवेकेन तदन्नं चाविकुत्सयन् ॥
- ५ “ द्वादशाब्दं व्रतं कुर्यादेवं हरिपरायणः । ब्रतमध्ये मृगैर्वाङ्गिपि रोगैर्वाङ्गिपि हतो यदि ॥
- “ गोनिमित्तं द्विजार्थं वा नार्यर्थं यदि वा भ्रियेत् । ब्रह्महा शुद्धिमाप्नोति द्वादशाब्दब्रतेन वै ” ॥ इति ।
- आपस्तंवः ( ११२४२० )—“ द्वादशवर्षाणि चरित्वा सिद्धः सद्भिः संप्रयोगः ” ॥ इति ।
- अत्र हरदत्तः—सद्भिः संप्रयुज्यते येन विधिना स कर्तव्यः स उच्यते । कृतप्रायश्चित्तः स्वहस्ते यवसं गृहीत्वा गामाह्येत् । सायमागत्य श्रद्धाना भक्षयाति तदा सम्यग्नेन व्रतं चरितमिति जानीयात् ।
- १० अन्यथा नेति । प्रायश्चित्तान्तरमाह मनुः ( ११७६-७९ )—
- “ सर्वस्वं वा वेदविदे ब्राह्मणायोपपादयेत् । धनं वा जीवनायालं गृहं वा सपरिच्छदम् ।
- “ ब्राह्मणार्थे गवार्थे वा सम्यक् प्राणान् परित्यजेत् । मुच्यते ब्रह्महत्याया गोप्ता गोब्राह्मणस्य च ” ॥ इति ।
- स्वमरणमभ्युपगम्य गोब्राह्मणरक्षणे प्रवृत्तो यदि कथञ्जिजीवेत्तदा गोब्राह्मणयोः स गोप्ता जीवन्नपि ब्रह्महत्याया मुक्तो भवति । स एव ( ११७४-७५,७७ )—
- १५ “ यजेत् वाऽश्वमेधेन स्वर्जिता गोसेवेन वा । अभिजिद्विश्वजिद्भ्यां वा त्रिवृतामिष्टुतापि वा ॥
- “ जपन्वान्यतमं वेदं योजनानां शतं व्रजेत् । ब्रह्महत्यापनोदाय मितमुड्डियतेन्द्रियः ॥
- “ हविष्यमुग्वा सुतरेत्प्रतिस्तोतां सरस्वतीम् । जपेद्वा नियताहारस्त्रिवै वेदस्य संहिताम् ” ॥
- याज्ञवल्क्यः ( प्रा. २४४-४५ )—
- “ ब्राह्मणस्य परित्राणाद्वां द्वादशकस्य वा । तथाऽश्वमेधावभृथस्तानाद्वा शुद्धिमानुयात् ॥
- २० “ दीर्घतीवामयग्रस्तं ब्राह्मणं गामथापि वा । दृष्ट्वा पथि निरातङ्कुङ्कुत्वा वा ब्रह्महा शुचिः ” ॥ इति ।
- आवृत्त्या ब्रह्मवधे आचतुर्थाद्वितमावर्तनीयम् । तदाहतुर्मनुगालवौ—
- “ वधे<sup>१</sup> प्राथमिकादस्मात् द्वितीये द्विगुणं चरेत् । दृतीये त्रिगुणं चैव चतुर्थे नास्ति निष्कृतिः ” ॥ इति ।
- वधोद्यमे प्रायश्चित्ताम् । वधोद्यमेऽपि “ वधप्रायश्चित्तमाह याज्ञवल्क्यः ( प्रा. २५२ )—
- “ चरेद्वितमहत्त्वाऽपि धातार्थं चेत्समाहितः ” ॥ इति । स्मृत्यन्तरेऽपि—“ अहत्वाऽपि यथावर्णं
- २५ ब्रह्महत्याव्रतं चरेत् ” ॥ इति । यनु वशिष्ठवचनं ‘द्वादशरात्रमब्रूमक्षो द्वादशरात्रमुपवसेत् ’ इति ।
- तन्मनोध्यवसितब्रह्महत्यस्य तदैवोपरतजिधांसस्य वेदितव्यमिति माधवीये ।
- उक्तप्रायश्चित्ताकरणे राजकृत्यमुक्तम्—
- “ पूर्वे वा स्वराष्ट्रे वा यो विषो ब्रह्महा भवेत् । ब्रह्महत्यां विनिश्चित्य त्रुटिवा तच्छिखां ततः ॥
- “ ब्रह्मसूत्रं तथा छित्वा पिशिताशनवाहनम् । आरोहयित्वा तु तत्काले शवं तसमयं लिखेत् ॥
- ३० “ गुरुतल्पे भगः कार्यः सुरापाने सुराध्वजः । स्तेये तु श्वपदं कार्यं ब्रह्महण्यशिराः पुमान् ॥
- “ एवं कृत्वा तु शास्त्रेण निर्वास्यो विषयाद्विहिः ।
- “ तत्पुत्रा ब्रह्महनने सहायास्ते यदाऽभवन् । तानप्येवं पुनः कृत्वा निर्वास्याः पूर्ववद्विहिः ॥
- “ तत्क्षेत्रं बहुलं धान्यं पश्वारामादिकं च यत् । तत्सर्वं देवताप्रीत्यै राजा कुर्यात्समाहितः ॥

<sup>१</sup> ग-सा । २ ग-नुसरेत् । ३ क्ष-कृत्वा । ४ कगघ-विधेः । ५ क्ष-विविध । ६ ग-तने ।

७ क्ष-विहित । ८ क्ष-तले श्वानं ।

“ विचार्यं बहुधा राजा तत्पलीं पुत्रकान् बहून् । दोषवन्तस्तथा तेऽपि कर्तव्या राजवद्धमैः ॥

“ नो चेत्तद्वृत्तिधान्यादीन् तेभ्यो दत्वाऽथ शिक्षयेत् ” ॥ इति । पुत्रादीनां दोषाभावे तद्रव्यं तेभ्य  
एव दत्वा ब्रह्महन्त्रा सह संभाषणादिकं न कार्यमिति पुत्रादीन् शिक्षयेदित्यर्थः । स्मृत्यन्तरे—

“ अयोरूपं द्विजं कृत्वा मूर्धीनं प्रतापयेत् । अङ्गयित्वा ललाटे तु देशान्निर्वासयेद्वहिः ॥

“ द्वादशाब्दविधानेन शुद्धो भवितुमर्हति । अशक्तो व्रतमाचर्तुमेवं कृत्वा विशुद्ध्यति ” । ५  
जनकादिहत्यायां प्रायश्चित्तान्तरमुक्तम् स्कान्दे—

“ अज्ञानाज्ञनकं हन्यान्निमित्तैर्बहुभिर्दिंजः । चतुर्विंशति वर्षाणि व्रतं कृत्वा विशुद्ध्यति ॥

“ द्विगुणं च गवां दानं कृत्वा शुद्धिमवान्नयात् । दीक्षितं ब्राह्मणं हत्वा द्विगुणं व्रतमाचरेत् ॥

“ मातामहं मातुलं च स्यालं जामातरं तथा । आचार्यस्य वधे चैव व्रतमुक्तं चतुर्गुणम् ” ॥ इति ।  
स एव—“ स्नातकं ऋत्विजं हत्वा द्विगुणं व्रतमाचरेत् ” ॥ इति । चत्वारिंशतसंस्कारपूतः १०  
स्नातकः । उत्पाद्य पुत्रं संस्कृत्येत्युक्तलक्षण आचार्यः । दक्षः ( ३।२६ )—

“ सममब्राह्मणे देयं द्विगुणं ब्राह्मणब्रुवे । आचार्ये शतसाहस्रं सोदर्ये दत्तमक्षयम् ” ॥ इति  
प्रतिपाद्योक्तवान्

“ समद्विगुणसाहस्रमानन्त्यं च यथाक्रमम् । दाने फलविशेषः स्याद्विंसायां तद्वदेव हि ” ॥ इति ।

आपस्तम्बः ( १।१२।४।२४ )—“ गुरुं हत्वा श्रोत्रियं वा कर्मसमाप्तमेतेनैव विधिनोत्तमादुच्छ्वा- १५  
साच्चरेत्तास्यास्मिन् लोके प्रत्यापत्तिर्विद्यते कल्मषं तु निर्हण्यते ” इति । गुरुः पित्राचार्यादिः ।  
श्रोत्रियोऽधीतवेदः । सोमान्तानि कर्माणि समाप्तानि यस्य स कर्मसमाप्तः । तौ हत्वा एतेन कुटिं  
कृतेत्यनन्तरोक्तेन । ओत्तमादुच्छ्वासादाप्राणवियोगादित्यर्थः । भ्रूणहत्याया अपि यावज्जीवं  
व्रतधारणमुक्तमापस्तम्बेन ( १।१२।४।२४ )—“ एतेनैव विधिनोत्तमादुच्छ्वासाच्चरेत् ” । इति ।  
“ भ्रूणहा द्वादशसमाः कपाली ” बोधायनवचनं भ्रूणहत्यासमपापविषयम् । भ्रूणः साङ्घवेदीति निश्चयः ॥ २०

क्षत्रियादिकृतब्रह्महत्याप्रायश्चित्तम् । क्षत्रियादीनां ब्राह्मणवधे प्रायश्चित्तमाह द्व्यासः—

“ अज्ञानात् बाहुजो विप्रं हत्वा विविधसाधनैः । पश्चात्तापसमायुक्तो द्विगुणं व्रतमाचरेत् ॥

“ अज्ञानाद्वूरुजो हत्वा ब्राह्मणं त्रिगुणं चरेत् । पादजो ब्राह्मणं हत्वा मुसलैर्वर्धमर्हति ॥

“ केचित्कारीषदाहेन वधमिच्छन्ति पावनम् । ब्राह्मणीं स्थविरां हत्वा विधवां च सुवासिनीम् ॥

“ बालं कन्यां यदा हन्यात्कारीषेणैव दाहयेत् ” ॥ स्मृत्यन्तरेऽपि— २५

“ द्विगुणं क्षत्रियस्योक्तं त्रिगुणं तद्विशः स्मृतम् । ब्राह्मणं हन्ति यः शूद्रस्तस्य दण्डो वधः स्मृतः ॥

“ कन्याबालवधे गर्भबाधने विप्रयोषिताम् । पूर्ववद्णडयेद्राजा हन्यथा नरकं वजेत् ” ॥ इति ।

गौतमः ( १२।१ )—“ शूद्रो द्विजातीनितिसन्धायाभिहत्य च वाक्दण्डपारुष्याभ्यामंगमोच्यो  
येनोपहन्यात् ” ॥ इति । क्षत्रियादिवधे प्रायश्चित्तमाह मनुः ( १।१२।६-१३० )—

“ तुरीयो ब्रह्महत्यायाः क्षत्रियस्य वधे स्मृतः । वैश्येऽष्टमांशो वृत्तस्थे शूद्रे ज्ञेयस्तु षोडशः ॥ ३०

“ अकामतस्तु राजन्यं विनिपात्य द्विजोत्तमः । क्रष्णैकसहस्रां गां दद्याच्छुद्ध्यर्थमात्मनः ॥

“ प्रमाण्य वैश्यं वृत्तस्थं दद्याच्चैकशतं गवाम् । एतदेव व्रतं कृतसं षाणमासाच्छुद्रहा चरेत् ॥

“ क्रष्णैका दशा वापि दद्याद्विप्राय गास्तथा ” ॥ इति ।

अज्ञानादपहतस्य सुवर्णस्य पुनर्दनि तु प्रायश्चित्तं स एवाह—

“ब्रह्मस्वं यस्तु हृत्वा च पश्चात्तापमवाप्य च । पुनर्दत्वा तु विप्रेभ्यः प्रायश्चित्तमिदं चरेत् ॥

“कृच्छ्रं सान्तपनं कृत्वा द्वादशाहोपवासतः । शुद्धिमाप्नोति विप्रेन्द्र अन्यथा पतितो भवेत्” ॥ इति ।

क्षत्रियादीनां स्तेयप्रायश्चित्तम् । राजां स्तेयप्रकारोऽभिहितः शिवरहस्ये—

५ “अन्यायाद्विप्रग्रामेषु अनाथेभ्यो धनं च यत् । अदण्डन्येभ्योऽपि यद्वित्तं स्तेयं तद्भूम्जामिह ॥

“स्तेयं कृत्वा सुरां पीत्वा मृत्वा राजा विशुद्धति” । नागरखण्डे—

“ऊरुजस्तु सुरां पीत्वा हृत्वा स्वर्णं द्विजन्मनाम् । राजा च शुद्धिमाप्नोति यच्छेद्वा व्ययुतं गवाम् ।

“पादजस्तु सुरां पीत्वा हृत्वा हेमं द्विजन्मनाम् । राजा दण्डन्यः स्वधर्मेण मुसलेन हतः शुचिः” ॥ इति ।

कात्यायनः—

१० “विप्रादीनां तु नारीणां स्तेयं वा पानमेव वा । संभवेद्यदि दैवेन नेच्छन्ति मरणं बुधाः ॥

“त्याज्या एव स्त्रियस्तात्त्वं न पोष्या धर्मलिङ्गुभिः” ॥ इति ।

रजतस्तेयप्रायश्चित्तम् । रजतस्तेये नारदः—

“सुवर्णमानं यस्मिन्वै रजतं स्तेयकर्मणि । कुर्यात्सान्तपनं सम्यगन्यथा पतितो भवेत् ॥

“दशनिष्कान्तपर्यन्तमूर्ध्वनिष्कचतुष्टयात् । हृत्वा तु रजतं विद्वान् कुर्याच्चान्द्रायणं द्विजः ॥

१५ “ततो विंशतिनिष्कान्तं रजतस्तेयकर्मणि । चान्द्रायणद्वयं प्रोक्तं तत्पापं परिशोधनम् ॥

“शतादूर्ध्वं सहस्रान्तं प्रोक्तं चान्द्रायणद्वयम् । सहस्रादीधिकस्तेये ब्रह्महत्याव्रतं चरेत्” ॥

तात्रस्तेये प्रायश्चित्तम् । तात्रस्तेये हैमाद्रौ—

“पलद्वये पञ्चगव्यं पीत्वा शुद्धिमवाप्नुयात् । प्राजापत्यं पञ्चपले तस्म दशपले स्मृतम् ।

“विंशत्पले तु चान्द्रं स्यात्स्यात्पञ्चाशति तु त्रयम् । तात्रं षष्ठिपले प्रोक्तं मासं कृत्वा अधर्मर्षणम् ॥

२० “कण्ठदण्डजले स्थित्वा शुद्धिमाप्नोति पूर्वजः । ताम्रेऽशीतिपले तत्र स्तेयं कृत्वा तु पूर्वजः ॥

“भूपरिक्रमणं कृत्वा भूयश्चान्द्रं ततः परम् । हृत्वा शतपलं तात्रं स्वर्णस्तेयसमं विदुः” ॥ इति ।

स्वर्णचतुष्टयपरिमितं पलम्

“पलं सुवर्णं चत्वारि तत्त्वारि ध्रुवो भवेत् । चत्वारिंशदध्रुवाणां च भार इत्युच्यते बुधैः” ॥ इति स्मृतेः ।

कांस्यादिस्तेये प्रायश्चित्तम् । चतुर्विंशतिमते—

२५ “कांस्यपित्तलमुख्येष्वयस्कान्तेषु पञ्चसु । सहस्रनिष्कमानं तु पारध्यं परिकीर्तिंतम् ॥

“प्रायश्चित्तं तु लोहानां स्तेये रजतवत्स्मृतम्” ॥ इति ।

धनधान्यादिस्तेयप्रायश्चित्तम् । मनुः ( १११६२-१६९ )—

“धान्यान्धनचौर्याणि कृत्वा कामाद् द्विजोत्तमः । स्वजातीयगृहदेव कृच्छ्राद्बदेनैव शुद्धति ॥

“मनुष्याणां तु हरणे स्त्रीणां क्षेत्रगृहस्य च । कूपवापीजलानां च शुद्धिश्चान्द्रायणं स्मृतम् ॥

३० “द्रव्याणामल्पसाराणां स्तेयं कृत्वा अन्यवैश्मनः । चरेत्सान्तपनं कृच्छ्रं निर्यात्यात्मविशुद्धये ॥

“भक्ष्यभोज्यापहरणे यानशश्यासनस्य च । पुष्पमूलफलानां च पञ्चगव्यं विशोधनम् ॥

“तृणकाष्ठदुमाणां च शुष्कान्धस्य गुडस्य च । चेलचर्मामिषाणां च त्रिरात्रं स्यादभोजनम् ॥

“मणिमुक्तप्रवालानां तात्रस्य रजतस्य च । अयःकांस्योपलानां च द्वादशाहं कणान्तता ॥

“कांपर्सकीठजीर्णानां द्विखुरैकखुरस्य च । पक्षिगन्धौषधीनां च रज्जवाश्च त्रिरहः पयः ॥

३५ “एतैर्वैरपोहेत पापं स्तेयकृतं द्विजः” ॥

भूम्यपहारप्रायश्चित्तम् । भूम्यपहारे दोषाधिक्यमाह पराशरः ( ७५ )—

“ वापिकूपतटाकाद्यैर्वाजपेयशैरपि । गवां कोटिप्रदानेन भूमिहर्ता विशुद्धति ” ॥

नारदः—“ केदारे तस्मृच्छ्रं स्याद्ग्रहादेश्वान्द्रमीरितम् ” ॥ इति ।

राजदण्डमाहापस्तम्बः ( २।१०।२।७।६-१७) “ अयमस्य दण्डः । पुरुषवधे स्तेये भूम्यादान इति । चक्षुनिरोधस्त्वेतेषु ब्राह्मणस्य ” इति । भूम्यादानं भूम्यपहारः । पुरुषवधादिषु शूद्रो वध्यः । ५ ब्राह्मणस्य तु पद्मबन्धादिना चक्षुषी निरोद्धव्ये न तत्पाठयितव्ये ‘ न शारीरो ब्राह्मणे दण्ड ’ इति ‘ अक्षतो ब्राह्मणो बजेत् ’ इत्यादिस्मरणात् । वस्त्रादिस्तेयप्रायश्चित्तम् । देवस्वामी—

“ स्थूलतन्तुकृते वस्त्रे स्तेयं कृत्वा तु पूर्वजः । पश्चात्तापसमायुक्तः प्राजापत्यं समाचरेत् ॥

“ सूक्ष्मतन्तुकृते वस्त्रे पराकं मुनिचोदितम् । पीतवस्त्रं मुषित्वा तु तस्मृच्छ्रद्वयं चरेत् ॥

“ नीलमये सूक्ष्मवस्त्रे चरेच्चान्द्रायणत्रयम् ।

“ मूल्याधिके पद्मवस्त्रे कौशेये च मुनीश्वराः । सद्यः पतति पापात्मा घृताक्तोऽग्निं विशेत्तदा ” ॥

अजादिहरणे प्रायश्चित्तम् । जावालिः—

“ अजं बस्तं गृहेऽरण्ये पारक्यं गर्वितो द्विजः । मुषित्वा निष्कृतिं तत्र प्राजापत्यं समाचरेत् ” ॥

मार्कण्डेयः—

“ मार्जारं नकुलं सर्पे भारद्वाजं कपिं तथा । कृच्छ्रार्धमाचरेद्द्वृत्वा ज्ञात्वा तद्विगुणं चरेत् ॥ १५

“ द्विजानां तल्पहरणे प्रायश्चित्तं प्रजापतिः । प्राह चान्द्रं पराकं च तसं चैव यथाक्रमम् ” ॥ इति ।

मरीचिः—

“ यो विप्रः पापमज्ञात्वा उपानत्पादुके हरेत् । स तु देहविशुद्ध्यर्थं प्राजापत्यं समाचरेत् ॥

“ छत्रं हरेद्विजो यस्तु महातपनिवारणम् । वस्त्रावृते पराकं स्यात्केतकीपर्णसंवृते ॥

“ यावकं तारुपत्रैश्च निर्मितं राजवल्लभे । पञ्चगव्यं पिबेत्पश्चात्सर्वपापविनाशनम् ॥ २०

“ पुष्पजालं हि पारक्यं देवंपूजार्थमीदूरात् । सुगन्धिकरवीरादि हृत्वा विप्रः स पापभाक् ॥

“ देवार्थं पुष्पहरणे चान्द्रं वत्सरसेवनात् । पराकं ब्रह्मनिर्मणे कायं क्षत्रियवैश्ययोः ” ॥ इति ।

देवलः—

“ कदलीमातुलुङ्गं च नालिकेरं च पानसम् । द्राक्षाखर्जूरजम्बीरचूतजम्बुफलानि च ॥

“ फलानि विविधानीह देवप्रियकराणि वै । हृत्वा विप्रस्तु पारक्यं प्रायश्चित्तमिदं चरेत् ॥ २५

“ ऋतुत्रये पराकं स्याद्वत्सरे चान्द्रमुच्यते ” ॥ इति ।

गृहोपकरणहरणे प्रायश्चित्तमाह गौतमः—“ मुसलं दृषदं चैव द्युलूखलमनन्तरम् ।

“ वेणुपात्रं तथा शूर्पं मृन्मयं भाण्डमेव च । गृहोपकरणं हृत्वा पुनः संस्कारमर्हति ” ॥ इति ।

सालग्रामादेः पूजोपकरणस्य च हरणे प्रायश्चित्तम् । देवलः—

“ सालग्रामं शैवलिङ्गं प्रतिमां चक्रपाणिनः । घण्टामुपस्करं विप्रो यो हरेत्पापवृद्धिमान् ॥ ३०

“ सालग्रामे तु चान्द्रं स्याच्छिवलिङ्गे तथैव च । प्राजापत्यं चक्रपाणेरितरेषु तथैव च ॥

“ शतादूर्ध्वं तु रुद्राक्षं हृत्वा चान्द्रत्रयं स्मृतम् । शते पराकमल्ये तु गायत्रीजपमाचरेत् ” ॥

नारदः—“ लेखनीं बन्धसूत्रं च पुस्तकं फलकं तथा ।

“ हृत्वा दत्वा तु तद्द्रव्यं पश्चात्तापसमन्वितः । प्राजापत्यं चरेत्कृच्छ्रं तदा देहविशुद्धये ” ॥

माध्यस्थयेन धनग्रहणे प्रायश्चित्तम् ।

देवलः—“ व्यंवहारादिकलहे प्रायश्चित्तादिकर्मसु । धनं गृहीत्वा यो विप्रः कौटसाक्षं वदेत चेत् ॥

“ तस्य पुत्राश्च पौत्राश्च तदा नाशमवाप्नुयुः । तस्य देहविशुद्धयर्थं महाचान्द्रमुदीरितम् ” ॥ इति ।

बुद्धिः कामः । व्यर्थचेष्टामात्रमकामः । ताभ्यामुत्पादितः । क्रोधो यस्यासौ दण्डादिभिर्यदि  
हन्यात्तदा मरणमन्तरेण केवलं प्रहृता स्यात् कामकृतसंप्रहारो घातः । अकामकृतं तु मारणं  
घात इत्यर्थः । दण्डलक्षणमुक्तं तेनैव ( ९२ )—

“ अङ्गुष्ठमात्रस्थूलस्तु बाहुमात्रप्रमाणकः । आद्रस्तु स पलाशश्च दण्ड इत्यभिधीयते ” ॥

५ आधिकप्रमाणदण्डादिभिर्मारणे तु प्रायश्चित्तद्विगुणमाह स एव ( ९३ )—

“ दण्डादूर्ध्वं यदाऽन्येन प्रहाराद्यादि पातयेत् । प्रायश्चित्तं तदा प्रोक्तं द्विगुणं गोवधे चरेत् ” ॥  
दण्डाधिकमानेन लगुडादिना मारणे अकामकृतेऽपि द्विगुणं चरेदित्यर्थः ।

द्विगुणस्य प्रायश्चित्तस्य निमित्तान्तरमाह स एव ( ९४६ )

“ व्यापनानां बहनां च बन्धने रोधनेऽपि च । द्विगुणं विहितं तस्य प्रायश्चित्तं विशुद्धये ” ॥ इति ।

१० कामकृते गोवधे निमित्तविशेषानुपजीव्यप्रायश्चित्तविशेषान् दक्षिणासहितानाह स एव ( ९२० )—

“ काष्ठलोष्टकपाषाणैः शस्त्रैणौद्धतो बलात् । व्यापादयति यो गां तु तस्य शुद्धिं विनिर्दिशेत् ॥

“ चरेत्सान्तपनं काष्ठे प्राजापत्ये तु लोष्टके । तस्कृच्छ्रं तु पाषाणे शस्त्रपातेऽतिकृच्छ्रकम् ।

“ पञ्च सान्तपने गावः प्राजापत्ये तथा त्रयः । तस्कृच्छ्रे भवत्यष्टावतिकृच्छ्रे त्रयोदशा ” ॥ इति ।

सान्तपनादीनां स्वरूपमग्रे वक्ष्यते ।

१५ गृहे बद्धस्य गोवन्धनिमित्ते मरणे प्रायश्चित्तमाह स एव ( ९३२ )—

“ बन्धपाशनिबद्धाङ्गे ग्रियेत यदि गोपशुः । भवने तस्य पापी स्यात् प्रायश्चित्तार्थमर्हति ” ॥ इति ।

शृङ्गभङ्गादौ स एवाह ( ९१७ )—

“ पाषाणैनैव दण्डेन गावो येनाभिधातिताः । शृङ्गभङ्गे चरेत्पादं द्वौ पादौ नेत्रघातने ॥

“ लाङ्गूले पादकृच्छ्रं तु द्वौ पादावस्थिभङ्गने । त्रिपादं चैव कर्णं तु चरेत्सर्वं निपातने ॥

२० “ अतिदाहे चरेत्पादं द्वौ पादावतिवाहने । नासिक्ये पादहीनं तु चरेत्सर्वं निपातने ॥

“ एका चेद्ग्रहुभिः काचिदैवाद्यापादिता यदि । पादं पादं तु हत्यायाश्वरेयुस्ते पृथक् पृथक् ॥

“ वाहनात्तु विपद्येत् अनङ्गान्योक्त्रयन्त्रितः । उक्तं पराशरेणैव ह्येकं पादं यथाविधि ॥

“ प्रेरयन् कूपवापीषु वृक्षछेदेषु पातयन् । गवाशनेषु विक्रीणन् ततः प्राप्नोति गोवधम् ” ॥ इति ।

अङ्गुष्ठप्रमाणदण्डेन सञ्चारणाय प्रहारे कचित्प्रायश्चित्ताभावमाह स एव ( ९११ )—

२५ “ मूर्च्छितः पतितो वापि दण्डेनाभिहतः स तु । उत्थितस्तु यदा गच्छेत्पञ्च सप्त दशैव वा ॥

“ ग्रासं वा यदि गृहीयात्तोयं वापि पिबेद्यदि । पूर्वं व्याध्युपसृष्टश्वेत्प्रायश्चित्तं न विद्यते ” ॥ इति ।

अन्यत्रापि कचित्प्रायश्चित्ताभावमाहाङ्गिराः—“ सायं सङ्गोपनार्थं तु न दूष्येद्रोधबन्धयोः ” इति ।

पराशरोऽपि ( ९१ )—

“ गवां संरक्षणार्थाय न दूष्येद्रोधबन्धयोः । तद्वधं तु न तं विद्यात्कामाकामकृतं तथा ॥

३० “ कूपखौते तटाखौते नदीखौते तथैव च । अन्येषु धर्मखौतेषु प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥

“ सङ्ग्रामप्रहृता ये च ये दग्धा वेशमकेषु च । दवाग्निग्रामघातेषु प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥

“ ग्रामघाते शरौघेण वैशमभङ्गान्विपातने । अतिवृष्टिहतानां च प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥

“ यन्त्रिता गौश्चिकित्सार्थं गूढगर्भविमोचने । यत्ने कृते विपद्येत् नु प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥

“ केशानां रक्षणार्थाय द्विगुणं ब्रतमाचरेत् । द्विगुणे ब्रत आदिष्टे द्विगुणां दक्षिणां भवेत् ॥

“ राजा वा राजमात्रो वा ब्राह्मणो वा बहुश्रुतः । अकृत्वा वपनं तस्य प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ॥  
 “ सर्वान् केशान् समुच्छित्य छेदयेदङ्गुलिद्रयम् । एवं नारीकुमारीणां शिरसो मुण्डनं स्मृतम् ॥  
 “ न स्त्रिया केशवपनं न दूरे शयनासनम् । गृहेषु नियतं तिष्ठेच्छुचिर्नियममाचरेत् ।  
 “ इह यो गोवधं कृत्वा प्रच्छादयितुमिच्छति । स याति नरकं धोरं कालसूत्रमसंशयः ॥  
 “ विमुक्तो नरकात्तस्मान्मर्त्यलोकेषु जायते । क्लीबो दुःखी च कुष्ठी च सप्तजन्मनि वै नरः ॥ ५  
 “ तस्मात्प्रकाशयेत्पापं स्वधर्मं सततं चरेत् । स्त्रीबालनृपगोविप्रेष्वतिकोपं विवर्जयेत् ” ॥  
 हेमाद्रौ—“यो विप्रो वृषभं हन्याच्छिवलिङ्गाङ्गितं तनौ । त्रिवारं क्षमां परिक्रम्य ब्रह्मचर्यवते स्थितः ॥  
 “ धनुष्कोटिं ततो गत्वा गन्धमादनपर्वते । तत्र स्नात्वा त्रिरात्रं च रामलिङ्गं निरीक्ष्य च ॥  
 “ कृत्वा चान्द्रायणं कृच्छ्रमथ शुद्ध्येन संशयः ” ॥ तत्रैव—  
 “ अनद्वान् हन्यते विप्रैरश्मदण्डशिलादिभिः । तस्मृच्छ्रवत्रयं कृत्वा पिबेयुः पञ्चगव्यकम् ॥ १०  
 “ शुद्धिमाप्नुयेरेतेन नान्यथा शुद्धिरिष्यते ” ॥ इति ।

प्राण्यन्तरहनने प्रायश्चित्तम् । प्रसङ्गतप्राण्यन्तरहननस्यापि प्रायश्चित्तमुच्यते ।  
 तत्र मनुः ( १११३१-१३२, १४० )—  
 “ मार्जरनकुलौ हत्वा चाषं मण्डूकमेव च । श्वगोधोलूककाकांश्च शूद्रहत्यावतं चरेत् ॥  
 “ पयः पिबेत् त्रिरात्रं वा योजनं वा वने व्रजेत् । उपस्थृतेस्त्रवन्त्यां वा सूक्तं वाग्दैवतं जपेत् ॥ १५  
 “ अस्थिमतां तु सत्त्वानां सहस्रस्य प्रमापणे । पूर्णे चानस्यानस्थानां तु शूद्रहत्यावतं चरेत् ” ॥  
 पक्षिषु कृम्यादिषु च अस्थिमत्सहस्रवधे शकटपरिमितानस्थिमद्वधे च शूद्रहत्यावतं चरेदित्यर्थः ।  
 आपस्तम्बः—( १११२५११३ ) “ वायसप्रचलाकबर्हिणचक्रवाकहंसभासमण्डूकनंकुर्लंडेरिका-  
 श्वहिंसायां शूद्रवत्प्रायश्चित्तम् ” इति । प्रत्येकवधे तु स एव—  
 “ किञ्चिदेव तु विप्राय दद्यादस्थिमतां वधे । अनस्थानां चैव हिंसायां प्राणायामेन शुद्ध्यति ” ॥ २०  
 पराशारः ( ६१३ )—

“ हत्वा मूषिकमार्जरसर्पांजगरुण्डुभान् । कृसरं भोजयेद्विप्रान् लोहदण्डश्च दक्षिणा ” ॥ इति ।  
 कृसरं तिलमुद्भवित्रमन्नम् । लोहं कृष्णायसम् । याज्ञवल्क्यः ( प्रा. २७०-२७६ )—  
 “ मार्जरगोधानकुलमण्डूकांश्च पतत्विणः । हत्वा ऋयं पिबेत्क्षीरं कृच्छ्रं वा पादकं चरेत् ॥  
 “ गजे नीलवृषाः पञ्च शुकवत्सो द्विहायनः । खराजमेषेषु वृषो देयः क्रौञ्चे द्विहायनः ॥ २५  
 “ हंसश्येनकपिकव्याऽजलस्थलशिखणिङ्गनः । भासं च हत्वा गां दद्यात्कव्यादं तु सवत्सकाम् ॥  
 “ उरगेष्वायसो दण्डः पण्डके त्रपुसीसकम् । कोले घृतघटो देय उष्ट्रे कुञ्जो हयेऽशुकम् ॥  
 “ तित्तिरौ तु तिलद्रोणं गजादीनामशकुवन् । दातुं दानं चरेत्कृच्छ्रमेकैकस्य विशुद्धये ॥  
 “ किञ्चित्सास्थिवधे देयं प्राणायामस्त्वनस्थिके । वृक्षगुल्मलतावीरुच्छेदने जप्यमृक्षशतम् ॥  
 “ स्यादौषधिवृथाच्छेदे क्षीराशीगोनुगो दिनम् ” ॥ इति । ३०  
 पराशारः—“ गजस्य चतुरङ्गस्य महिषोद्धूनिपातने । प्रायश्चित्तमहोरात्रं त्रिसन्ध्यामवगाहनम् ॥  
 “ कुरुद्वं वानरं सिंहं चित्रं व्याघ्रं तु घातयन् । शुद्ध्यतेऽथ त्रिरात्रेण विप्राणां तर्पणेन च ॥  
 “ वृक्षजम्बूकऋक्षाणां तरक्षुश्वानघातकः । तिलप्रस्थं द्विजे दद्याद्वायुभक्षो दिनत्रयम् ॥  
 “ मृगरोहिङ्गराहाणां वैधे वस्तस्य घातकः । अफालकृष्णमश्रीयादहोरात्रमुपोष्य सः ॥

“शिंशुमारं तथा गोधां हत्वा कूर्मं च शल्यकम् । वृन्ताकफलभक्षीं चाप्यहोरात्रेण शुद्धयति ॥  
 “एवं चतुष्पदानां च सर्वेषां बनचारिणाम् । अहोरात्रोषितस्तिष्ठेजपन्वै जातवेदसम् ॥  
 “क्रौञ्चसारसहंसांश्च चक्रवाकांश्च कुक्कटम् । जालपादं च शरभमहोरात्रेण शुद्धयति ॥  
 “बलीकटिद्विभौ वापि शुकपारावतावपि । अहिनक्रौञ्चिविघाती च शुद्धयते नक्तभोजनात् ॥  
 ५ “वृक्ककाककपोतानां शारीतित्तिरिघातकः । अन्तर्जले उभे सन्ध्ये प्राणायामेन शुद्धयति ॥  
 “गृध्रश्येनशाशादानामुलूकस्य च घातकः । अपकाशी दिनं तिष्ठेत्रिकालं मारुताशनः ॥  
 “वल्गुलीटिद्विभानां च कोकिलाखञ्जरीटिके । लाविकारक्तपक्षेषु शुद्धयते नक्तभोजनात् ॥  
 “कारण्डवचकोराणां पिङ्गलाकुररस्य च । भारद्वाजादिकं हत्वा शिवं पूज्य विशुद्धयति ॥  
 “भेरूण्डचाषभासांश्च पारावतकपिञ्चलौ । पक्षिणां चैव सर्वेषामहोरात्रमभोजनम्” ॥  
 १० हेमाद्रौ—“महिषीहनने विप्रो महासान्तपनं चरेत् । स चेद्वैग्रधी बालवत्सा महासान्तपनद्वयम्” ॥

## वृक्षच्छेदादिप्रायश्चित्तम् ।

“इन्धनार्थं द्वुमच्छेदीं तद्वैष्टस्योपशान्तये । प्राजापत्यं सकृत्कृत्वा शुद्धिमाप्नोत्यनुत्तमाम् ॥  
 “कृष्णर्थमिन्धनार्थं वा यज्ञवृक्षविभेदने । पराकं तत्र कुर्वीत शुद्धो भवति वृक्षहा ॥  
 “बिल्वाश्वत्थौ यदा छिंद्यात्तदा चान्द्रायणं चरेत् । पुष्पारामस्य विच्छेदीं वनद्वैहीति गद्यते ॥  
 १५ “तद्वैष्टपरिहारार्थं गायज्या लक्षमुच्यते ।  
 “तिन्तिणीचूतयोश्छेदे वहुजन्तूपकारकात् । कपित्थामलक्ष्येदे सम्यक् चान्द्रायणं चरेत् ॥  
 “कोविदारतरौ निम्बे प्राजापत्यं विशेषनम् । खर्जूरे नालिकेरे च तालहिन्तालयोस्तथा ॥  
 “तसकृच्छ्रं चरेद्विद्वान् छेददोषोपशान्तये ।  
 “जम्बरिमातुलङ्गादि चित्तवा पापविशुद्धये । सम्यक् स्नात्वा शुचिर्भूत्वा गतिशास्त्रं पठेक्तमात् ।  
 २० “तटाककूपकासारच्छेदने विप्रसत्तमः । पूर्ववत्तं दृढं कृत्वा प्राजापत्यं समाचरेत् ।  
 “विष्णवालयादिविच्छेदे तद्रूपद्वैन्दवमाचरेत् । शून्यालयस्य विच्छेदे पराकं द्विजसत्तमः” ॥ इति ।  
 याज्ञवल्क्यः ( प्रा. २९६ )—

“वृक्षगुलमलतानां तु छेदने जप्यमृक्षशतम् । स्याद्वैष्टशीवृथाश्वेदीं क्षीराशी गोनुगो दिनम्” ॥ इति ।  
 अत्र वृथाश्वेदीति विशेषणाऽन्तर्जार्थं छेदने न दोषः । यत्तु शङ्खवचनम्—“संवत्सरं व्रतं कुर्यात्  
 २५ चित्तवा वृक्षं फलप्रदम्” इति तत् छेदनावृत्तिविषयम् । दृष्टार्थत्वेऽपि कर्षणाङ्गभूतहलाद्यर्थत्वे  
 न दोषः । “फलपुष्पोपवनादीन्द्र हिंस्यात् । पादपान् कर्षणार्थमुपहन्यात्” इति स्मृतेः ।  
 महातटाकछेदे विशेषमाह देवलः—“वहुधान्योद्दवस्याथ तटाकस्य विभेदने ।  
 “ब्रह्महत्याव्रतं कृत्वा कपालध्वजवार्जितः । पुनः संस्कारकृत्पञ्चाच्छुद्धिमाप्नोत्यसंशयः” ॥

सुरापानादिप्रायश्चित्तम् । अथ सुरापानादेः प्रायश्चित्तमुच्यते । पिष्टादिजन्यो द्रव्य-  
 ३० विशेषः सुरा । तथा च मनुः ( ११९४, ९३, ९५ )—

“गौडी पैष्टी च माध्वी च विज्ञेया त्रिविधा सुरा । यथैवैका न पातव्या तथा सर्वा द्विजोत्तमैः ॥  
 “सुरा वै मलमन्नानां पाप्मा च मलमुच्यते । तस्माद्वाह्निराजन्यौ वैश्यश्च न सुरां पिबेत् ॥  
 “यक्षरक्षःपिशाचान्नं मध्यं मांसं सुरासवम् । तद्वाह्निने नात्तव्यं देवानामन्नर्महति” ॥ इति ।

१ ग-का । २ क्ष-अदीनवकघाती । ३ क्ष-हे । ४ क्ष-गायज्याहितगम्यते ।

राजन्यवैश्ययोः सुरापाननिषेधः पैष्टीविषयः । गौडीमाध्व्योरेकादशसु मद्येष्वनुकमणात्तत्पाने तयो-  
दर्देषाभावात् । अत एव ‘सुरासर्वं सुरारूपं मद्यं ब्राह्मणेन नाक्तव्यम्’ इति ब्राह्मणस्य तन्निषेधः ।  
पैष्ट्या अकामकृते सकृत्पाने गौडीमाध्व्योरसकृत्पाने कामकृते च ब्राह्मणस्य प्रायश्चित्तं तुल्यम् ।  
श्रुतिरपि—“न सुरां पिबेत् न कलञ्जं भक्षयेत् । न तस्य वै प्रायश्चित्तम् । मरणान्तमेव” इति ।  
मरणान्तमेव प्रायश्चित्तमन्यत्तु नास्तीत्यर्थः । तथा चापस्तम्बः ( ११२५१३ )—“सुरापोऽग्नि- ५  
र्स्पर्शा सुरां पिबेत् मृतः शुद्धो भवति ” इति । पराशरः—

“सुरापानं सकृत्कृत्वाऽग्निवर्णा सुरां पिबेत् । स पावयेदथात्मानमिह लोके परत्र च ” ॥ इति ।

मनुः ( ११९०-९१ )—

“सुरां पीत्वा द्विजो मोहादग्निवर्णा सुरां पिबेत् । तया काये विनिर्दिग्धे मुच्यते किल्बिषात्ततः ॥

“गोमूत्रमग्निवर्णं वा पिबेदुदकमेव वा । पयोधृतं वा मरणात् गोशकृद्रसमेव वा ” ॥ इति । १०

कलौ मरणान्तप्रायश्चित्तस्य निषिद्धत्वात् तदाभिप्रायेण प्रायश्चित्तान्तरमाह स एव ( ११९२ )—

“कणान्वा भक्षयेदब्दं पिण्याकं वा सकृचित्तिः । सुरापानापनुत्यर्थं वालवासा धवजी जटी ” ॥

एतजिज्ञास्पृष्टमात्रविषयमित्यन्ये । याज्ञवल्क्यः ( प्रा. २५३-२५६ )—

“सुराम्बुधृतगोमूत्रपथसामग्निसन्निभम् । सुरापोऽन्यतमं पीत्वा मरणचुद्धिमाप्नयात् ॥

“वालवासा जटी वापि ब्रह्महत्यावतं चरेत् । पिण्याकं वा कणान्वापि भक्षयेत्तु समाचित्तिः ॥ १५

“अज्ञानात् सुरां पीत्वा रेतोविषमूत्रमेव च । पुनःसंस्कारमर्हन्ति त्रयोवर्णा द्विजातयः ॥

“पतिलोकं न सा याति ब्राह्मणी या सुरां पिबेत् । इहैव सा शुनी गृध्री सूकरी वापि जायते” ॥ इति ।

गौतमः ( २३१-३ )—“सुरापस्य ब्राह्मणस्योष्णामासित्वेयुः सुरामास्ये मृतः शुद्धेदमत्या  
पाने पयोधृतमुदकम्” इति । “ततोऽस्य संस्कारो मूत्रपुरीषरेतसा च प्राशने” इति च ।

यत्वद्विन्नरोवचनम्—

२०

“भूमिप्रदानं कुर्यात् सुरां पीत्वा द्विजोत्तमः । पुनर्न च पिबेजजातु संस्कृतः स विशुद्ध्यति” ॥ इति  
तत् गौडीमाध्व्योः सकृत्पानविषयमिति माधवीये । यत्तु बृहस्पतिनोक्तम्—

“गौडीं माध्वीं सुरां पीत्वा पैष्टीं विप्रः समाचरेत् । तसकृच्छ्रं पराकं च चान्द्रायणमनुक्रमात्” ॥ इति  
तत्सङ्कल्पमात्रविषयम् । प्रायश्चित्ताकरणे दण्डनमुक्तं हेमाद्रौ—

“सुरापं दण्डयेद्राजा मरणं यदि नेच्छति । ब्रह्मसूत्रं शिखां सम्यक् त्रुटित्वा वापयेच्छिरः ॥ २५

“सुराभाण्डं ललाटे तु तापयित्वाऽङ्गयेत्सुधीः । आनीय मृत्युं भाण्डं सुरापूरितमादरात् ॥

“बध्वा कण्ठे खरं यानमारोप्य नगरात्ततः । निस्सार्य ध्वनयन् भृत्यैरटित्वा नगराद्विः ।

“प्रतार्य सद्यो निर्वास्य शुद्धिमाप्नोति नान्यथा” ॥ इति । “प्रोत्सार्य सहसा राजा न दुष्टस्तेनं कर्मणा ॥

“स पापी द्वादशाब्दं तु कपालध्वजवर्जितम् । ब्रह्महत्यावतं कृत्वा शुद्धिमाप्नोति नान्यथा” ॥

तत्रैव—“यदि रोगनिवृत्त्यर्थमौषधार्थं सुरां पिबेत् ।

३०

“रोगे<sup>१</sup> तस्मिन्निवृत्ते तु तस्य चान्द्रद्वयं विदुः । उपोष्य रजनीमेकां पञ्चगव्येन शुद्ध्यति” ॥ इति ।

पराशरः ( १०-२७ )—

“पतत्यर्थं शरीरस्य यस्य भार्या सुरां पिबेत् । पातितार्थशरीरस्य निष्कृतिर्न विधीयते” ॥ इति ।

उक्तादन्येन शुद्धिरित्यर्थः ।

<sup>१</sup> ग-तस्योपनयनं भूयः ।

प्रायश्चित्तमाह स एव ( १०२८ )—

“ गायत्रीं जपमानस्तु कृच्छ्रं सान्तपनं चरेत् । गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् ॥

“ एकरात्रोपवासश्च कृच्छ्रं सान्तपनं स्मृतम् ” । इति । एतच्च त्रिविधसुरापानविषयम् ।

मध्यपाने तु प्रायश्चित्तमाह बृहस्पतिः—

५ “ पीत्वा प्रमादतो मध्यमतिकृच्छ्रं चरेद्विजः । कारयेत्स्य संस्कारं शक्त्या विश्रांस्तु भोजयेत् ” ॥

कामकारे पराशरः ( १२।६७ )—

“ मध्यपश्च द्विजः कुर्यान्नदीं गत्वा समुद्रगाम् । चान्द्रायणे ततश्चीर्णे कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥

“ अनडुत्सहितां गां च दद्याद्विग्रेषु दक्षिणाम् ” ॥ इति ।

पनसादिजन्यमद्करणद्रव्यं मध्यम् । तदाह पुलस्त्यः—“ पानसद्राक्षमाधूकखार्जुरं तालमैक्षवम् ।

१० “ मधूत्थं सैरमारिष्टं मेरेयं नालिकेरजम् । समानानि विजानीयान्मध्यान्यकोदशैव तु ” । इति ।

द्विजो ब्राह्मणः ।

“ कामादपि च राजन्यो वैश्यो वाऽपि कथंचन । मध्यमेव सुरां पीत्वा न दोषं प्रतिपद्यते ” ॥ इति ।

बृहद्याज्ञवल्क्यस्मरणात् । मध्यं सुरा गौडी माध्वी च पैष्टी निषिद्धैव । एकादशानामन्यतमपाने विप्रो महानदीतीरे चान्द्रायणं चरित्वा ब्राह्मणभोजनं कृत्वा दक्षिणां दद्यात् । हेमाद्रौ—

१५ “ माधूकं शैलमारिष्टमैरेयं नालिकेरजम् । तालं हिन्तालजं चैव द्राक्षाखर्जूरसंभवम् ॥

“ वृक्षोद्भवमिदं मध्यं नवधा परिकीर्तिंतम् । एषामन्यतमं पीत्वा द्विजो गच्छेन्महानदीम् ॥

“ चान्द्रायणं चरित्वाऽथ कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् । सुरापसृष्टमन्नं च सुराभाण्डोदकं तथा ॥

“ सुरापानसमं प्राहुः तत्र चान्द्रस्य भक्षणम् । तस्योपनयनं भूयो पञ्चगव्यस्य सेवनम् ” ॥ इति ।

मनुः ( ११।९७ )—

२० “ यस्य कायगतं ब्रह्म मध्येनाप्नुव्यते सकृत् । तस्य व्यपैति तद्व्रह्म शूद्रत्वं च स गच्छति ॥

“ अज्ञानाद्वारुणीं पीत्वा संस्कारेणैव शुद्ध्यति । मतिपूर्वमनिर्देश्यं प्राणान्तिकमिति स्थितिः ॥

“ अपः सुराभाजनस्था मध्यभाण्डस्थितास्तथा । पञ्चरात्रं पिबेत्पीत्वा शंखपुष्पीशृतं पयः ॥

“ स्पृष्टा दत्वा च मादिरां विधिवत् प्रतिगृह्य च । शूद्रोच्छिष्टाश्च पीत्वाऽपः कुशवारि पिबेत्यहम् ॥

“ ब्राह्मणस्य सुरापस्य गन्धमाद्याय सोमपः । प्राणानप्सु त्रिरायम्य घृतं प्राश्य विशुद्ध्यति ॥

२५ “ अज्ञानात्प्राश्य विष्णुत्रसुरासंसृष्टमेव च । पुनसंस्कारमर्हन्ति त्रयो वर्णा द्विजातयः ” ॥

देवलः—

“ हिन्तालतालखर्जूरनालिकेरमधूद्ववम् । गन्धं वायुवशात्प्राप्तं द्रात्वा विप्रस्य दक्षिणम् ॥

“ हस्तमाद्राय सहसा शुद्धिमाप्नोति तत्क्षणात् । अभावे भास्करं दृष्ट्वा स्पृष्टा कर्णं स्मरेद्वरिम् ” ॥

विष्णुत्रादिभक्षणप्रायश्चित्तम् । पराशरः ( १२।२-३ )—

३० “ अज्ञानात्प्राश्य विष्णुत्रं सुरासंसृष्टमेव च । पुनसंस्कारमर्हन्ति त्रयो वर्णा द्विजातयः ॥

“ अजिनं मेखला दण्डो भैक्षचर्या व्रतानि च । निवर्तन्ते द्विजातीनां पुनसंस्कारकर्मणि ॥

“ विष्णुत्रस्य च शुद्ध्यर्थं प्राजापत्यं समाचरेत् । पञ्चगव्यं प्रकृत्वा त्वां पीत्वा शुचिर्भवेत् ” ॥

स्नात्वा पञ्चगव्येन । एतच्च पुनसंस्कारात्प्रागेव कार्यम् । कामकारे तु स एव ( ११।१ )—

“ अमेध्येरेतोगोमांसं चण्डालान्नमथापि वा । यदि भुक्तं तु विप्रेण कृच्छ्रं चान्द्रायणं चरेत् ” ॥

३५ अमेध्यं विष्णुत्रादि । तथा च मनुः ( ११।१५४ )—“ प्राश्य मूत्रपुरीषादि द्विजश्वान्द्रायणं चरेत् ” ।

यत्तु चतुर्विंशतिमतेऽभिहितम्—

“ विष्णुत्रभक्षणे विप्रश्चरेच्चान्द्रायणद्वयम् । श्वादीनां चैव विष्णुत्रं चरेच्चान्द्रायणत्रयम् ” ॥ इति । तदेतदभ्यासविषयमिति माधवीये ।

यमः—“ द्विजोऽज्ञानान्मलं मूर्त्रं स्वरमानुषयोः कपेः । मयूरहंसगृधाणां सङ्कृत् भुक्त्वा तु पातकी ॥

“ पुनःकर्म प्रकृत्वा तस्मकृच्छ्रं विशोधनम् ।

“ रोगिणो न पुनःकर्म कुच्छ्रमात्रमुदीरितम् । सुखी भूत्वा पिबेदूगव्यं नारीणामर्धमीरितम् ” ॥ इति ।

चंडालघटस्थजलपाने प्रायश्चित्तम् ।

पराशरः ( ६।२३,२६ )—

“ चंडालघटसंस्थं तु यत्तोयं पिबति द्विजः । तत्क्षणात् क्षिपते यस्तु प्राजापत्यं समाचरेत् ॥

“ यदि न क्षिप्यते तोयं शरीरे यस्य जीर्यते । प्राजापत्यं न दातव्यं कुच्छ्रं सान्तपनं चरेत् ” ॥ इति । १० ॥

प्रथममज्ञानात्पीत्वा पश्चात्दानीमेव यदि वमेत् तदा प्राजापत्यम् । तज्जरणे सान्तपनं कुच्छ्रं

परिषदा दातव्यम् । न तु प्राजापत्यम् ।

बुद्धिपूर्वं तत्पाने वर्णमेदेन प्रायश्चित्तमेदमाह स एव ( ६।२७ )—

“ चरेत्सान्तपनं विप्रः प्राजापत्यमनन्तरः । तदर्थं तु चरेद्वैश्यः पादं शूद्रस्य दापयेत् ” ॥ इति ।

रजकाद्यन्त्यजभांडोदकादिपाने प्रायश्चित्तमाह स एव ( ६।२८ )—

“ भाण्डस्थमन्त्यजानां तु जलं दधि पयः पिबेत् । ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्चैव प्रमादतः ॥

“ ब्रह्मकूर्चीपवासेन द्विजातीनां तु निष्कृतिः । शूद्रस्य चोपवासेन तथा दानेन शक्तिः ” ॥ इति ।

ब्रह्मकूर्चस्वरूपमण्डे वक्ष्यते । तत्सहित उपवासः वैवार्णिकस्य चतुर्थस्य ब्रह्मकूर्चस्थाने दानं द्रष्टव्यम् ।

चण्डालवाप्यादिजलपाने प्रायश्चित्तम् ।

पराशरः ( ६।२३,२४ )—

२०

“ चण्डालस्वातवापीषु पीत्वा सलिलमग्रजः । अज्ञानाद्वोक्तुकेन त्वहोरत्रेण शुद्ध्यति ।

“ चण्डालभाण्डसंस्पृष्टं पीत्वा कूपगतं जलम् । गोमूत्रयावकाहारः त्रिरात्राच्छ्रुद्विमाप्नुयात् ” ॥ इति ।

चण्डालस्वामिकवाप्युदकपाने एकभुक्तं कामकारे तु उपवासः । चण्डालभाण्डसंस्पृष्टकूपस्थजलपाने गोमूत्रसहितयवपिष्टादिकं दिनत्रयमाहारत्वेन स्वीकुर्यादित्यर्थः ।

उच्छिष्टविषयतद्वपवादौ ।

२५

देवलः—

“ विप्रस्य पीतशेषं यत्तोयमन्यः पिबेद्यदि । मध्यपानसमं प्रोक्तं तत्तोयं मुनिपुंगवैः ॥

“ पीत्वाऽज्ञानात् द्विजः कुर्यात्त्राजापत्यं विशुद्धये ” ॥ इति । वृथक्यात्राभावे तु मार्कण्डेयः—

“ पात्राभावे वृषार्तस्तु पीतशेषं पिबेत् द्विजः । भूमौ किञ्चिन्निपात्याथ पीत्वा विप्रो न दोषभाक् ” ॥ इति ।

वृद्धशातातपः—

३०

“ पीतशेषं तु यत्किञ्चित् भाजने मुखनिःसृतम् । अभोज्यं तत् विजानीयात् भुक्त्वा चान्द्रायणं चरेत् ॥

“ पीतोच्छिष्टं च पानीर्यं पीत्वा तु ब्राह्मणः क्वचित् । त्रिरात्रं तु व्रतं कुर्याद्वामहस्तेन वा पुनः ” ॥ इति ।

एतत् स्वोच्छिष्टविषयम् । हारीतः—

“ रुयुच्छिष्टस्थिता आपो यदि कञ्चित्पित्रेत् द्विजः । शंखपुष्प्या विपक्वेन ऋहं क्षीरेण शुद्ध्यति ॥

“ शूद्रोच्छिष्टजलं पीत्वा त्रिरात्रं यावकं पिबेत् ” ॥

## निषिद्धकीरपानप्रायश्चित्तम् । स एव—

“ मृतवत्सापयः पीत्वा मुखेनापि जलं द्विजः । उपोष्य रजनीमेकां पञ्चगव्येन शुद्ध्यते ” ॥ इति ।

चतुर्विंशतिमते—

“ स्त्रीकीरं तु द्विजः पीत्वा कथश्चित्काममोहितः । पुनः संस्कृत्यं चात्मानं प्राजापत्यं समाचरेत् ॥

५ “ अजोष्ट्रीसंधिनीकीरं मृगाणां वनचारिणाम् । अनिर्दशाया गोश्चैव पीत्वा दिनमभोजनम् ” ॥ इति ।

अत्रिः—

“ अविकोष्ट्रच्याश्र यत्कीरं मृगाणां वनचारिणाम् । छागजं गार्दभं क्षीरं भुक्त्वा दिनमभोजनम् ” ॥ इति विष्णुः ( ५१-३८ )—“ गोऽजामहिषीवर्जी सर्वपयांसि प्राश्योपवसेत् ” ॥ इति ।

अयं चैकादिनोपवासो ज्ञानकृते संस्कृत्याने वेदितव्यः । असंकृत्याने तु पराशरः ( १११० )—

१० “ पीयूषं इवेतलशुनं वृन्ताकफलगृञ्जनम् । पलाण्डुं वृक्षनिर्यासं देवस्वकवकानि च ॥

“ उष्ट्रीकीरमविकीरमज्ञानाद्भुज्ञते द्विजः । त्रिवात्रमुपवासेन पञ्चगव्येन शुद्ध्यते ” ॥ इति ।

पीयूषः अभिनवं पयः । पयसोऽभिनवत्वं दशाहान्तःप्रतित्वम् । कामकृते तु शंखः—

“ क्षीराणि यान्यपेयानि तद्विकाराशने ब्रुधः । सप्तरात्रं व्रतं कुर्यात्प्रयत्नेन समाहितः ” ॥ इति ।

कामतोऽभ्यासे तु—

१५ शातातपः—“ सन्धिन्या अन्तर्दशाहाया अवत्सायाश्र गोक्षीरप्राशने वृथामांसे प्राजापत्यमुष्ट्री-स्वरीमानुषीकीरप्राशने चान्द्रायणं पुरुषस्य पुनरुपनयनं च ” ॥ इति ।

स्मृतिस्तारे—“ क्षीरं लवणसम्मिश्रमुच्छेऽपि च यत् घृतम् । पानं रजकतीर्थेषु ताप्त्रे गव्यं सुरासमम् ” ॥

यमः—“ ताप्रपात्रस्थितं गव्यं नालिकेरोदकं तथा । लवणाक्तं पयश्चैव मध्यगन्धं तथैव च ॥

“ पीत्वा द्विजश्चेच्चान्द्रं प्राजापत्यमकामतः ” ॥ इति ।

२० प्राशरः—

“ सकांस्यं नालिकेराम्बु कांस्ये च रसमैक्षवम् । नालिकेररसं पक्षमभूमिष्ठं जलं तथा ॥

“ नालिकेरोदकं ताप्रपात्रस्थं गव्यमेव च । लवणाक्तं पयश्चैव मध्यग्राणं तथैव च ॥

“ द्विजः कामाच्चरेच्चान्द्रं पीत्वा ज्ञानात्प्रजापतिम् ” ॥

देवलः—“ ताप्रपात्रस्थितं दुग्धं गोमूत्रं तकमेव च । नालिकेरोदकं तत्स्थं पीत्वा चान्द्रायणं चरेत् ” ॥

२५ निमित्तान्तरे च भोजनप्रकरणे प्रायश्चित्तमुक्तम् ।

सुवर्णादिस्तेयप्रायश्चित्तम् । अथ स्तेयप्रायश्चित्तमुच्यते ।

तत्र स्वर्णस्तेयप्रायश्चित्तमाह मनुः ( ११।३९-१०२ )—

“ सुवर्णस्तेयकृद्विप्रो राजानमभिगम्य तु । स्वकर्म ख्यापयन् ब्रूयान्मां भवाननुशास्त्विति ॥

“ गृहीत्वा मुसलं राजा सकृद्बन्ध्यात्तु तं स्वयम् । वधेन शुद्ध्यते स्तेनो ब्राह्मणस्तपसैव वा ॥

३० “ तपसापनुन्तुस्तु सुवर्णस्तेयजं मलम् । चीरवासा द्विजोऽरण्ये चरद्वाहणो व्रतम् ॥

“ एतैर्वैरपोहेत तत्पापं स्तेयकृत् द्विजः ” ॥ वधपक्षो नामधारकमात्रविप्रविषयः तपःपक्षस्तु वनस्थत्वादिगुणोपेतब्राह्मणविषय इति माधवीये ।

अत्र सुवर्णशब्दः परिमाणविशेषोपेतहेमवचनः । तथा च याज्ञवल्क्यः ( आ. ३६२-३६३ )—

“ जालसूर्यमरीचिस्थं त्रसरेणुरजः स्मृतम् । तेऽष्टौ लीक्षा तु तास्तिस्तो राजसर्षप उच्यते ।

“ गौरस्तु ते ब्रयः षट् ते यवमध्यस्तु ते ब्रयः । कृष्णलः पञ्च ते माषस्ते सुवर्णं तु षोडशः” ॥ इति ।  
स्तैयस्वरूपमाह व्यासः—

“ समक्षं वा परोक्षं वा बलाच्चौर्येण वा पुनः । परस्वानामुपादानं स्तैयमित्युच्यते बुधैः” ॥  
अपहृतं धनं स्वामिने दत्त्वैव स्तैयप्रायश्चित्तं कर्तव्यम्

“ स्तैये ब्रह्मस्वभूतस्य सुवर्णदिः कृते पुनः । स्वामिनेऽपहृतं दत्त्वा हत्यानिष्कृतिमाचरेत् ” ॥ इति ५  
स्मरणात् ।

यदा सुवर्णमपहृत्य तदभुक्त्वा तदानीमेवानुतापेन प्रत्यर्पयेत् तदा आपस्तम्बोक्तं  
द्रष्टव्यम् ( १२५।१० )—“ चतुर्थकालं मिताशनेन त्रिवर्षमवस्थानम् ” इति ।

मनसापहारे तु सुमन्तुराह—“ स्वर्णस्तैयी द्वादशरात्रं वायुभक्षः पूर्तो भवति ” ॥ इति !  
याज्ञवल्क्यः ( प्रा. २५७-२५८ )—

“ ब्राह्मणः स्वर्णहारी तु राजे मुसलमर्पयेत् । स्वकर्म रूपापयंस्तेन हतो मुक्तोऽपि वा शुचिः ” ॥

“ अनिवेद्य नृपे शुद्ध्येत् सुरापव्रतमाचरेत् । आत्मतुल्यं सुवर्णं वा द्व्याद्विप्राय तुष्टिकृत् ” ॥ इति ।

पराशरः ( १२६९-७० )—

“ अपहृत्य सुवर्णं तु ब्राह्मणस्य ततः स्वयम् । गच्छेन्मुसलमादाय राजानं स्वयमेवं तु ॥

“ ततः शुद्धिमवाप्नोति राजाऽसौ मुक्त एव च । कामतस्तु कृतं यत्स्यान्नान्यथा वधमर्हति ” ॥ इति । १५  
आपस्तम्बः ( १९।२५।४ )—“ स्तेनः प्रकीर्णकेशोऽसे मुसलमादाय राजानं गत्वा कर्माचक्षीति ।  
तेनैनं हन्याद्वधे मोक्षः ” ॥ इति ।

हेमाद्रौ—“ हृत्वा ब्रह्मस्वमज्ञात्वा द्वादशाब्दं तु पूर्ववत् । कपालध्वजहीनं तु ब्रह्महत्याक्रतं चरेत् ॥

“ यद्वाऽसे मुसलं धृत्वा विस्वस्यात्मशिरोरुहान् । गत्वा राजानमाचष्टे प्रहृतस्तेनमस्तके ॥

“ मृत्वा शुद्धिमवाप्नोति नान्यथा शुद्धिरिष्यते ॥ २०

“ गुरुणां यज्ञकर्तृणां धर्मिष्ठानां तथैव च । श्रोत्रियाणां द्विजानां तु हृत्वा हेम कथं भवेत् ॥

“ तच्छुद्ध्यर्थं स्वदेहे तु संपूर्णं लेपयेत् धृतम् । कारीषाच्छादितो दग्धः स्तैयपापात्रमुच्यते ” ॥

अल्पस्वर्णपहरणे प्रायश्चित्तमाह गौतमः—

“ त्रसरेणुसमं हेम हृत्वा कुर्यात्समाहितः । प्राणायामद्वयं सम्यक् तेन शुद्धेन संशयः ॥

“ प्राणायामत्रयं कृत्वा हृत्वा लीक्षाप्रमाणकम् । प्राणायामाश्च चत्वारो राजसर्षपमात्रतः ॥ २५

“ गौरसर्षपमात्रं तु हृत्वा हेम विचक्षणैः । स्नात्वा च विधिवत्कार्यं गायत्र्यष्टसहस्रकम् ॥

“ यवमध्यसुवर्णस्य स्तैये शुद्धो जपेद्विजः । आ सार्यं प्रातरारभ्य गायत्रीं वेदमातरम् ॥

“ हेमः कृष्णलमात्रस्य हृत्वा सान्तपनं चरेत् । माषमात्रसुवर्णस्य प्रायश्चित्तं तु कथ्यते ॥

“ गोमूत्रपक्यवभुक् देवार्चनपरायणः । मासत्रयेण शुद्धिः स्यान्नारायणपरायणः ॥

“ रूप्यमात्रसुवर्णस्य स्तैयं कृत्वा प्रमादतः । जपेद्वै लक्षगायत्रीमन्यथा दोषमाप्नुयात् ॥ ३०

“ निष्कमात्रस्य हेमस्तु हरणे विप्रसत्तमः । ब्रह्महत्याक्रतं कृत्वा षटब्दं शुद्धिमाप्नुयात् ॥

“ किञ्चिन्न्यूनसुवर्णस्य स्तैये तु द्विजसत्तमः । गोमूत्रपक्यवभुगब्दैकेन शुद्ध्यति ।

“ संपूर्णस्य सुवर्णस्य स्तैयं कृत्वा मुनीश्वरं । ब्रह्महत्याक्रतं कुर्याद्वादशाब्दान्समाहितः ” ॥

अज्ञानादपहतस्य सुवर्णस्य पुनर्दनि तु प्रायश्चित्तं स एवाह—

“ब्रह्मस्वं यस्तु हृत्वा च पश्चात्तापमवाप्य च । पुनर्दत्वा तु विप्रेभ्यः प्रायश्चित्तमिदं चरेत् ॥

“कृच्छ्रं सान्तपनं कृत्वा द्वादशाहोपवासतः । शुद्धिमाप्नोति विप्रेन्द्र अन्यथा पतितो भवेत्” ॥ इति ।

क्षत्रियादीनां स्तेयप्रायश्चित्तम् । राजां स्तेयप्रकारोऽभिहितः शिवरहस्ये—

५ “अन्यायाद्विप्रग्रामेषु अनाथेभ्यो धनं च यत् । अदण्डयेभ्योऽपि यद्वित्तं स्तेयं तद्भुजामिह ॥

“स्तेयं कृत्वा सुरां पीत्वा मृत्वा राजा विशुद्ध्यति” । नागरखण्डे—

“ऊरुजस्तु सुरां पीत्वा हृत्वा स्वर्णं द्विजन्मनाम् । राजा च शुद्धिमाप्नोति यच्छेद्वा द्वायुं गवाम् ।

“पादजस्तु सुरां पीत्वा हृत्वा हेम द्विजन्मनाम् । राजा दण्डयः स्वधर्मेण मुसलेन हतः शुचिः” ॥ इति ।

कात्यायनः—

१० “विप्रादीनां तु नारीणां स्तेयं वा पानमेव वा । संभवेद्यदि दैवेन नेच्छन्ति मरणं बुधाः ॥

“त्याज्या एव स्त्रियस्ताश्च न पोष्या धर्मलिप्सुभिः” ॥ इति ।

रजतस्तेयप्रायश्चित्तम् । रजतस्तेये नारदः—

“सुवर्णमानं यस्मिन्वै रजतं स्तेयकर्मणि । कुर्यात्सान्तपनं सम्यग्न्यथा पतितो भवेत् ॥

“दशनिष्कान्तपर्यन्तमूर्वनिष्कचतुष्टयात् । हृत्वा तु रजतं विद्वान् कुर्याच्चान्द्रायणं द्विजः ॥

१५ “ततो विंशतिनिष्कान्तं रजतस्तेयकर्मणि । चान्द्रायणद्वयं प्रोक्तं तत्पापं परिशोधनम् ॥

“शतादूर्ध्वं सहस्रान्तं प्रोक्तं चान्द्रायणद्वयम् । सहस्रादधिकस्तेये ब्रह्महत्यावतं चरेत्” ॥

ताम्रस्तेये प्रायश्चित्तम् । ताम्रस्तेये हैमाद्रौ—

“पलद्वये पञ्चगव्यं पीत्वा शुद्धिमवाप्नुयात् । प्राजापत्यं पञ्चपले तप्तं दशपले स्मृतम् ।

“विंशत्पले तु चान्द्रं स्यात्त्यात्पञ्चाशति तु त्रयम् । ताम्रं षष्ठिपले प्रोक्तं मासं कृत्वा ऽधर्मर्षणम् ॥

२० “कण्ठदध्नजले स्थित्वा शुद्धिमाप्नोति पूर्वजः । ताप्रेऽशीतिपले तत्र स्तेयं कृत्वा तु पूर्वजः ॥

“भूपरिकमणं कृत्वा भूयश्चान्द्रं ततः परम् । हृत्वा शतपलं ताम्रं स्वर्णस्तेयसमं विदुः” ॥ इति ।

स्वर्णचतुष्टयपरिमितं पलम्

“पलं सुवर्णं चत्वारि तत्त्वारि धुवो भवेत् । चत्वारिंशद्भुवाणां च भार इत्युच्यते बुधैः” ॥ इति स्मृतैः ।

कांस्यादिस्तेये प्रायश्चित्तम् । चतुर्विंशतिमते—

१५ “कांस्यपित्तलमुख्येष्वयस्कान्तेषु पञ्चसु । सहस्रनिष्कमानं तु पारव्यं परिकीर्तितम् ॥

“प्रायश्चित्तं तु लोहानां स्तेये रजतवत्स्मृतम्” ॥ इति ।

धनधान्यादिस्तेयप्रायश्चित्तम् । मनुः ( १११६२-१६९ )—

“धान्यान्धनचौर्याणि कृत्वा कामाद् द्विजोत्तमः । स्वजातीयगृहादेव कृच्छ्राब्देनैव शुद्ध्यति ॥

“मनुष्याणां तु हरणे स्त्रीणां क्षेत्रगृहस्य च । कूपवापीजलानां च शुद्धिश्चान्द्रायणं स्मृतम् ॥

१० “द्रव्याणामल्पसाराणां स्तेयं कृत्वा ऽन्यवेशमनः । चरेत्सान्तपनं कृच्छ्रं निर्यात्यात्मविशुद्धये ॥

“भक्ष्यभोज्यापहरणे यानशब्द्यासनस्य च । पुष्पमूलफलानां च पञ्चगव्यं विशोधनम् ॥

“तृणकाष्ठद्रुमाणां च शुष्कान्नस्य गुडस्य च । चेलचर्मामिषाणां च त्रिरात्रं स्यादभोजनम् ॥

“मणिमुक्तप्रवालानां ताम्रस्य रजतस्य च । अयःकांस्योपलानां च द्वादशाहं कणान्ता ॥

“कार्पासकीठजीर्णानां द्विखुरैकखुरस्य च । पक्षिगन्धौषधीनां च रज्जवाश्च त्रिरहः पयः ॥

३५ “एतैवर्तैरपोहेत पापं स्तेयकृतं द्विजः” ॥

भूम्यपहारप्रायश्चित्तम् । भूम्यपहारे दोषाधिवयमाह पराशरः ( ७५ )—

“ वापिकूपतटाकाद्यैर्वाजपेयशैरपि । गवां कोटिप्रदानेन भूमिहर्ता विशुद्धति ” ॥

नारदः—“ केदारे तस्मृच्छ्रं स्याद्गृहदेश्वान्द्रमीरितम् ” ॥ इति ।

राजदण्डमाहापस्तम्बः ( २१०२७१६-१७ ) “ अयमस्य दण्डः । पुरुषवधे स्तेये भूम्यादान इति ।

चक्षुर्निरोधस्त्वेषु ब्राह्मणस्य ” इति । भूम्यादानं भूम्यपहारः । पुरुषवधादिषु श्लदो वध्यः । ५

ब्राह्मणस्य तु पद्मबन्धादिना चक्षुषी निरोद्धव्ये न तत्पाटयितव्ये ‘न शारीरो ब्राह्मणे दण्ड ’ इति

‘अक्षर्तो ब्राह्मणो जनेत्’ इत्यादिस्मरणात् । वस्त्रादिस्तेयप्रायश्चित्तम् । देवस्वामी—

“ स्थूलतनुकृते वस्त्रे स्तेयं कृत्वा तु पूर्वजः । पश्चात्तापसमायुक्तः प्राजापत्यं समाचरेत् ॥

“ सूक्ष्मतनुकृते वस्त्रे पराकं मुनिचोदितम् । पीतवस्त्रं मुषित्वा तु तस्मृच्छ्रद्ययं चरेत् ॥

“ नीलमये सूक्ष्मवस्त्रे चरेज्ञान्द्रायणत्रयम् ।

“ मूल्याधिके पद्मवस्त्रे कौशेये च मुनीश्वराः । सध्यः पतति पापात्मा घृताक्तोऽग्निं विशेषतदा ” ॥

अजादिहरणे प्रायश्चित्तम् । जाबालिः—

“ अजं बस्तं गृहेऽरण्ये पारक्यं गर्वितो द्विजः । मुषित्वा निष्कृतिं तत्र प्राजापत्यं समाचरेत् ” ॥

मार्कण्डेयः—

“ मार्जारं नकुलं सर्पं भारद्वाजं कपिं तथा । कृच्छ्रार्धमाचरेद्द्वृत्वा ज्ञात्वा तद्विगुणं चरेत् ॥ १५

“ द्विजानां तल्पहरणे प्रायश्चित्तं प्रजापतिः । प्राह चान्द्रं पराकं च तसं चैव यथाक्रमम् ” ॥ इति ।

मरीचिः—

“ यो विप्रः पापमज्ञात्वा उपानत्पादुके हरेत् । स तु देहविशुद्ध्यर्थं प्राजापत्यं समाचरेत् ॥

“ छत्रं हरेद्विजो यस्तु महातपनिवारणम् । वस्त्रावृते पराकं स्यात्केतकीपर्णसंवृते ॥

“ यावकं तालपत्रैश्च निर्मितं राजवंडुमे । पञ्चगव्यं पिबेत्पश्चात्सर्वपापविनाशनम् ॥ २६

“ पुष्पजालं हि पारक्यं देवपूजार्थमौद्रात् । सुगन्धिकरवीरादि हृत्वा विप्रः स पापभाक् ॥

“ देवार्थं पुष्पहरणे चान्द्रं वत्सरसेवनात् । पराकं ब्रह्मनिर्मणे कायं क्षत्रियवैश्ययोः ” ॥ इति ।

देवलः—

“ कदलीमातुलुङ्गं च नालिकेरं च पानसम् । द्राक्षाखर्जूरजम्बीरचूतजम्बूफलानि च ॥

“ फलानि विविधानीह देवप्रियकरणि वै । हृत्वा विप्रस्तु पारक्यं प्रायश्चित्तमिदं चरेत् ॥ २५

“ क्रतुत्रये पराकं स्याद्वत्सरे चान्द्रमुच्यते ” ॥ इति ।

गृहोपकरणहरणे प्रायश्चित्तमाह गौतमः—“ मुसलं द्वषदं चैव ह्युलूखलमनन्तरम् ।

“ वेणुपात्रं तथा शूर्पं मृन्मयं भाष्टमेव च । गृहोपकरणं हृत्वा पुनः संस्कारमर्हति ” ॥ इति ।

सालग्रामादेः पूजोपकरणस्य च हरणे प्रायश्चित्तम् । देवलः—

“ सालग्रामं शैवलिङ्गं प्रतिमां चक्रपाणिनः । घण्टामुपस्करं विप्रो यो हरेत्पापबुद्धिमान् ॥ ३०

“ सालग्रामे तु चान्द्रं स्याच्छिवलिङ्गे तथैव च । प्राजापत्यं चक्रपाणेरितरेषु तथैव च ॥

“ शताद्वूर्धं तु रुद्राक्षं हृत्वा चान्द्रत्रयं स्मृतम् । शते पराकमल्ये तु गायत्रीजपमाचरेत् ” ॥

नारदः—“ लेखनीं बन्धसूत्रं च पुस्तकं फलकं तथा ।

“ हृत्वा दत्वा तु तद्द्रव्यं पश्चात्तापसमन्वितः । प्राजापत्यं चरेत्कृच्छ्रं तदा देहविशुद्धये ” ॥

माध्यस्थयेन धनग्रहणे प्रायश्चित्तम् ।

३५

देवलः—“ व्यवहारादिकलहे प्रायश्चित्तादिकर्मसु । धनं गृहीत्वा यो विप्रः कौटसाक्ष्यं वदेत चेत् ॥

“ तस्य पुत्राश्च पौत्राश्च तदा नाशमंवाप्नुयुः । तस्य देहविशुद्धर्थं महाचान्द्रमुदीरितम् ” ॥ इति ।

मनुः—“द्विजवादे महाचान्द्रं धर्मशास्त्रे तदर्थतः । इतरेषु विवादेषु कायकृच्छ्रं समाचरेत्” ॥ इति ।

द्वैवलः—“ग्रामणीः प्राणिवाकश्च राजद्वारे पुरोहितः ।

“प्रजाभ्यः कार्यसिद्धचर्यं यो हरेत्तस्य निष्कृतिः । एकवरे तु चान्द्रं स्यान्महाचान्द्रं द्विवारतः” ॥ इति ।

मनुः ( ८३४० )—

५ “वानस्पत्यं फलं मूलं दार्वग्न्यर्थं तृणानि च । तृणं च गोभ्यो गृह्यार्थमस्तेयं मनुरब्रवीत् ॥

“चणकवीहिंगोधूमयवानां मुद्ग्रामाषयोः । अनिषिद्धो ग्रहीतव्यो मुष्टिरेकोऽध्वनिस्थितैः” ॥ इति ।

आपस्तम्बः ( १११०।२।११-५ )—“यथाकथा च परपरिग्रहमभिमन्यते स्तेनोह भवतीति कौत्सहरीतौ तथा कण्वपौष्करसादी । सन्त्यपवादाः परिग्रहेष्विति वाष्यायिणिः । शम्योषा युग्म्यघासो न स्वामिनः प्रतिषेधयन्त्यभिव्यपहारो भवति । सर्वत्रानुमतिपूर्वमिति हारीतः” इति ।

१० शम्योषाः कोशधान्यानि माषमुद्गादयः । ध्वनिस्थितैः गौतमः ( १२।२५ )—

“गोग्न्यर्थे तृणमेधान्वीरुद्धनस्पतीनां च पुष्पाणि स्ववदाददीति फलानि चापरिवृतानाम्” ॥ इति ।

मनुः ( ८३४२ )—

“द्विजोऽध्वगः क्षीणवृत्तिद्वाविक्षू द्वे च मूलके । आददानः परक्षेत्रान्न हस्तच्छेदमर्हति” ॥ इति ।

अत्र द्विज इति विशेषणाच्छूद्रस्तु दण्ड्य एव । तथा च स्मृत्यन्तरेऽपि—

१५ “तृणं वा यदि वा काष्ठं मूलं वा यदि वा फलम् । अनापृष्टस्तु गृह्णानो हस्तच्छेदनमर्हति” ॥ इति ।

अथागम्यागमनप्रायश्चित्तम् । गुरुतल्पगमने प्रायश्चित्तम् ।

गुरुतल्पगमनस्य प्रायश्चित्तमाह मनुः ( ११।१०३-१०७ )—

“गुरुतल्प्यभिभाष्यैनस्तसे स्वप्यादैयोमये । सूर्मा ज्वलन्तीमाश्लिष्य मृत्युना स विशुद्ध्यति ॥

“स्वयं वा शिश्रवृषणावुत्कृत्याधाय चाङ्गलौ । नैऋतीं दिशमातिषेदा निपातादजिज्ञागः ॥

१० “खट्टाङ्गी चीरवासा वा इमश्रुलो निर्जने वने । प्राजापत्यं चरेत् कृच्छ्रमब्दमेकं समाहितः ॥

“चान्द्रायणं वा त्रीन्मासानभ्यस्येन्नियतेन्द्रियः । हविष्येण यवाग्वा वा गुरुतल्पापनुत्ये ॥

“एतैर्वैरपोहेर्युर्महापातकिनो मलम्” ॥ इति । याज्ञवल्क्यः ( प्रा. २५९-२६० )—

“तप्तेऽयःशयने सार्वमायस्या योषिता स्वपेत् । गृहीत्वोत्कृत्य वृषणौ नैऋत्यां वोत्सृजेत्तनुम् ॥

“प्राजापत्यं चरेत्कृच्छ्रं समा वा गुरुतल्पगः । चान्द्रायणं वा त्रीन्मासानभ्यसेद्वैदसंहिताम्” ॥ इति ।

१५ पराशरः ( १०।१०-११ )—

“मातरं यदि गच्छेत्तु भगिनीं स्वसुतां तथा । एतास्तु मोहितो गत्वा त्रीणि कृच्छ्राणि सञ्चरेत् ।

“चान्द्रायणत्रयं कुर्यात् शिश्नच्छेदेन शुद्ध्यति” ॥ एतद्वाख्यातं माधवीये—मातरं जनर्नीं भगिनीमेकोदराम् । अत्र त्रीणि प्रायश्चित्तानि । प्राजापत्यत्रयमेकं चान्द्रायणत्रयं द्वितीयं शिश्नच्छेदसृतीयम् । तच्च त्रयं मैथुनप्रकारभेदविषयतया योजनीयम् । मैथुनं चाष्टविधम्—

१० “स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यमाषणम् । सङ्कल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिर्वृत्तिरेव च ॥

“एतन्मैथुनमष्टाङ्गं प्रवदन्ति मनीषिणः” ॥ इति स्मरणात् । तत्र आद्यं व्रतमल्पत्वादप्रवर्तक-

स्मरणादिपञ्चविधापराधविषयम् । द्वितीयं तु सङ्कल्पाध्यवसायविषयम् । त्रीतीयं त्वतिमहत्वात्

क्रियानिर्वृत्तिविषयम् इति । रेतस्सेकात्पूर्वं तु निवृत्तौ ब्रह्महत्याव्रतं कार्यम्

“रेतःसेकात्पूर्वमेव निवृत्तो यदि मातरम् । ब्रह्महत्याव्रतं कुर्यात् कपालध्वजवर्जितम्” ॥

१ ग-निर्जितः । २ ग-ग्रहो । ३ क-ति । ४ क-यसो । ५ क्ष-वदान्ति ब्रह्मचारिणः ।

“रेतस्सेकान्तनिर्वृत्तौ मुष्कच्छेदनमहीति” । इति स्मृतेः । वसिष्ठः (अ. २० सू. १३) ॥  
 “सवृष्टं शिश्रमुक्त्याङ्गलावाधाय दक्षिणामुखो गच्छेत् यत्रैव प्रतिहतस्तत्रैव तिष्ठेदाप्रलयात्” इति ।  
 आपस्तम्बः (१९२५१) — “गुरुतल्पगामी सवृष्टं शिश्रं परिवास्याङ्गलावाधाय दक्षिणां दिश-  
 मनावृत्तिं ब्रजेत् ज्वलितां वा सूर्मिं परिष्वज्य समाप्नुयात्” इति । अत्र हरदत्तः—गुरुत्र पिता  
 नाचार्यादिः । तल्पशब्देन शयनवाचिना भार्या लक्ष्यते । सा च साक्षाज्जननी । न तत्सप्तनी । ५  
 तां गत्वा साण्डं शिश्रं क्षुरादिना छित्वाङ्गलावाधाय दक्षिणां दिशमनावर्तमानो गच्छेत् । आयसी  
 ताप्रमयी वाऽन्तस्सुषिरा स्त्रीप्रतिकृतिसूर्मिः । तामग्नौ तसां परिष्वज्य समाप्नुयात् भ्रियेत वा ।

संवर्तः—

“पितृदारान् समारुद्ध्य मातृवर्जं नराधमः । भगिनीं मातुरासां वा स्वसारं वाऽन्यमातृजाम् ॥

“एतां गत्वा द्वियो मोहात् तस्तकुच्छृं समाचरेत्” इति । पराशारः (१०१३-१४) १०

“पितृदारान् समारुद्ध्य मातुरासां च ब्रातृजाम् । गुरुपत्नीं स्नुषां चैव ब्रातृभार्या तथैव च ॥

“मातुलानीं सगोत्रां च प्राजापत्यत्रयं चरेत् । गोद्वयं दक्षिणां दत्वा शुध्यते नात्र संशयः” ॥ इति ।  
 माधवीये व्याख्यातमेतत्—मातुरासा मातुः सखी । ब्रातृजा ज्येष्ठस्य कनिष्ठस्य वा सुता । गुरवः  
 आचार्यविद्यादातृज्येष्ठब्रातृक्षत्विजः । अभयदाताऽन्दाता च । अकामतः सकृत् गमने इदं  
 प्रायश्चित्तमिति । अकामकृतगमने रेतस्सेकात् प्राइनिवृत्तौ तु शंखः— १५

“चण्डालीं पुल्कसीं म्लेच्छीं स्नुषां च भगिनीं सखीम् । मातापित्रोः स्वसारं च निक्षिप्तां शरणागताम् ॥

“मातुलानीं प्रव्रजितां सगोत्रां वृपयोषितम् । शिष्यभार्या गुरोर्भार्या गत्वा चान्द्रायणं चरेत्” ॥ इति ।

कामकृतगमने रेतःसेकान्तनिर्वृत्तौ नारदः (१२।७३-७५) —

“माता मातृष्वसा श्वश्रूमातुलानी पितृष्वसा । पितृव्यसस्त्रिशिष्यस्त्री भगिनी तत्सखी स्नुषा ॥

“दुहिताचार्यभार्या च सगोत्रा शरणागता । राजी प्रव्रजिता धात्री साध्वी वर्णोत्तमा च या ॥ २०

“आसामन्यतमां गत्वा गुरुतल्पग उच्यते । शिश्रस्योत्कर्तनं तत्र नान्यो दण्डो विधीयते” ॥ इति ।

पराशारोऽपि—

“मातृष्वसृगमेऽप्येवमात्मेदानिकृन्तनम् । अज्ञानेन तु यो गच्छेत् चरेचान्द्रायणद्वयम् ॥

“दश गोमिथुनं दद्याच्छुद्दिं पाराशरोऽब्रवीत्” । इति । अत्र मातृष्वसृग्रहणं श्वश्वादे-  
 रूपलक्षणम् । कलौ मरणान्तप्रायश्चित्तस्य निषेधात् । “खट्टाङ्गीं चीरवासा वा” इति (११।१०५) २५  
 मन्वाद्युक्तं प्रायश्चित्तान्तरं कर्तव्यम् ।

सवर्णागमने प्रायश्चित्तम् । सवर्णागमने प्रायश्चित्तमाह आपस्तम्बः (२।१०।२७।१-१३) —

“सवर्णायामन्यपूर्वायां सकृत्सन्निपाते पादः पततीत्युपदिशन्त्येवमभ्यासे पादः पादश्वतुर्थे सर्वमिति” ॥

अत्र हरदत्तः—अन्यः पूर्वः पतिर्यस्याः सा अन्यपूर्वा परभार्या । तस्यां सवर्णायां सकृदभिगमने  
 पादः पतति । पतितस्य द्वादशवार्षिकं प्रायश्चित्तम् । तस्य तुरीयोऽशस्त्रीणि वर्षाणि । एतच्च ३०  
 श्रोत्रियभार्यायां क्षतुकाले कामतः प्रथमदूषकस्य ब्राह्मणस्य । एवमभ्यासे प्रत्यम्यासं पादः पादः  
 पतति । अतश्वतुर्थे सन्निपाते सर्वमेव पतति । ततश्व पूर्णं द्वादशवार्षिकं कर्तव्यम् । तृतीये  
 नववर्षाणि द्वितीये षडिति ” । संवर्तः—

“ब्राह्मणो ब्राह्मणीं गत्वा प्राजापत्यं समाचरेत् । एवं शुद्धिः समाख्याता संवर्तवचनं यथा” ॥ इति ।

व्याघ्रः—“ब्राह्मणो ब्राह्मणीं गच्छेदकामां यदि कामतः । कृच्छ्रं चान्द्रायणं कुर्यादिर्धमेव प्रमादतः ॥

“अर्धकृच्छ्रं सकामायां तप्तकृच्छ्रं सकृद्गतौ । अर्धमर्धं नृपादीनां दारेषु ब्राह्मणश्वरेत् ॥

“एतद्वतं चरेत्सार्धं श्रोत्रियस्य परिग्रहे । अश्रोत्रियश्वेद्विगुणमगुप्तामर्थमेव च” ॥

क्षेत्रिणः प्रायश्चित्तविशेषानादेशात्सामान्यप्रायश्चित्तं द्रष्टव्यम् । तच्च याज्ञवल्क्येन दर्शितम्—  
५ ( प्रा. ३०६ )—

“प्राणायामशतं कुर्यात्सर्वपापापनुत्तये । उपपातकजातानामनादिष्टस्य चैव हि ” ॥ इति ।

### संबन्ध्यादिस्त्रीगमने प्रायश्चित्तम् ।

चतुर्विंशतिमते—“संबन्धिनः खियं गत्वा सपादं कृच्छ्रमाचरेत् ॥

“विधवागमने कृच्छ्रमहोरात्रसमन्वितम् । व्रतस्थागमने कृच्छ्रं सपादं तु समाचरेत् ॥

१६ “सखिभार्या समारुद्ध्य ज्ञातिस्वजनयोषितः । स कृत्वा प्राकृतं कृच्छ्रं पादं कुर्यात्ततः पुनः ।

“कुमारीगमने विप्रश्वरेच्चान्द्रायणं व्रतम् । पतितां तु द्विजो गत्वा तदेव व्रतमाचरेत् ” ॥

स्वैरिणीगमने प्रायश्चित्तम् । स्वैरिणीगमने शंखलिखितौ—“स्वैरिण्यां वृषत्यामवकीर्णः

सचेलः स्नात उदकुंभं दद्यात् । ब्राह्मणाय वैश्यायां चतुर्थकालाहारो ब्राह्मणान् भोजयेत् ।

क्षत्रियायां त्रिरात्रोषितो यवाढकं दद्यात् । ब्राह्मण्यां त्यहमुपोष्य धूतपात्रं दद्यादिति ” ।

१५ वर्धकीगमने षड्ङिशो प्रायश्चित्तमुक्तम्—

“ब्राह्मणीं वार्धकीं गत्वा किञ्चिद्दद्यात् द्विजातये । राजन्यां तु धनुर्दद्यात् वैश्यां गत्वा तु चेलकम् ।

“शूद्रां गत्वा तु वै विप्र उदकुंभं द्विजातये । दिवसोपोषितो वा स्यात् दद्याद्विप्राय भोजनम्” ॥ इति ।

तद्वक्षणं स्मृत्यन्तरेऽभिहितम्—“चतुर्थे स्वैरिणी प्रोक्ता पञ्चमे वर्धकी भवेत् ” ॥ इति । इदं च गर्भानुत्पत्तिविषयम् । तदुत्पत्तौ तु उशनाः—“गमने तु व्रतं यत्स्यात् गर्भे तद्विगुणं चरेत् ” ।

२० गर्भोत्पादने प्रायश्चित्तम् । जातिभेदेन गर्भाधाने चतुर्विंशतिमतेऽभिहितम्—

“ब्राह्मणीगमने कृच्छ्रं गर्भे सान्तपनं स्मृतम् । राजीगर्भे पराकं स्याद्विङ्गर्भे तु त्यहाधिकम् ॥

“शूद्रागर्भे द्विजः कुर्यात्तद्वच्चान्द्रायणव्रतम् । चण्डाल्यां गर्भमारोप्य गुरुतल्पवतं चरेत् ” ॥ इति ।

चण्डाल्यादिगमने प्रायश्चित्तम् । चण्डालीगमने पराशरः ( ५।१० )—

“चण्डालीं वा श्वपाकीं वाऽप्यनुगच्छति यो द्विजः । त्रिरात्रमुपवासित्वा विप्राणामनुशासनात् ॥

२५ “सशिखं वपनं कृत्वा प्राजापत्यद्वयं चरेत् । गोद्वयं दक्षिणां दद्याच्छुद्धिं पराशरोऽब्रवीत् ” ॥ इति ।

ब्राह्मण्यां शूद्राजाता चण्डाली । आरूढपतिताज्ञाता सगोत्राज्ञाता च । एतत्रिविधचण्डाल-  
सन्ततौ जाता स्त्री चण्डाली । उग्रात् क्षत्तायां जाता श्वपाकी । द्विजो ब्राह्मणः । यमः—

“चण्डालपुल्कसानां तु गत्वा भुक्त्वा च योषितम् । कृच्छ्राब्दमाचरेत् ज्ञानादज्ञानादैन्दवद्वयम्” ॥

एतदभ्यासविषयम् । नारदः—

३० “चण्डालीं तु द्विजः पूर्वमज्ञात्वा कामपीडितः । पञ्चात् ज्ञात्वा तु चण्डालीं शुद्धिमिच्छन्मनस्यथ ॥

“रामसेतुमुपागम्य चापाग्ने प्रत्यहं शुचिः । प्रातः स्नात्वा मासमात्रं पूर्ववच्छुद्धिमान्तुयात् ” ॥ इति ।

गौतमः—“द्विजः कामातुरो गच्छन्नविचार्य च सङ्गमम् ॥

“पञ्चाच्चाण्डालजातीयां ज्ञात्वा शुद्धिं परायणः । रामेश्वरधनुष्कोट्यां प्रातः स्नात्वा विशुध्यति ” ॥

यमः—

“रेतः सिक्त्वा कुमारीषु स्वयोनिष्वन्त्यजासु च । सपिण्डापत्यदारेषु प्राणत्यागो विधीयते” ॥ इति।

एतत्संवत्सराभ्यासविषयम् । जाबालिः—

“चण्डालीं रूपसंपन्नां दृष्टा विप्रोऽसकृद् व्रजन् । स चण्डालसमो ज्ञेयः कारीषवधमर्हति ॥

“चापाग्रे मासमात्रं तु प्रातःस्नानाद्विशुध्यति । तद्भर्भारणे विप्रो मुष्कच्छेदनमर्हति” ॥ इति । ५  
देवलः—

“चण्डालश्च तुलुष्कश्च द्वावेतौ तुल्यपापिनौ । तदङ्गना तथा ज्ञेया विप्रैः पापभयातुरैः ॥

“ज्ञात्वाऽज्ञात्वा तुलुष्कीं यो द्विजः कामातुरः सकृत् । गत्वा शुद्धिमवापोति चण्डालीगमने यथा” ॥ इति।

संवर्तः—

“पुल्कसीगमनं कृत्वा कामतोऽकामतोऽपि वा । कृच्छ्रं चान्द्रायणं कुर्यात्तो मुच्येत किल्बिषात् ॥ १०

“नटीं शैलूषकीं चैव रजकीं बुरुडीं तथा । एतासु गमनं कृत्वा चरेच्चान्द्रायणद्वयम्” ॥

चान्द्रायणद्वयमभ्यासविषयं बलात्कारविषयं च । तथा जाबालिः—

“द्विजः कामातुरो ग्रामचण्डालीं रजकाह्वयाम् । अज्ञानाद्रमयेत्पापी प्रायश्चित्तं समाचरेत् ॥

“उभयोरैकमत्यं चेत्तत्र चान्द्रं विदुर्बुधाः । बलात्कारेण द्वैगुण्यमभ्यासे च तथा स्मृतम्” ॥ इति।

“रेतःसेकात्पूर्वमेव प्राजापत्यं विशेषधनम् । नटिनीं च द्विजो गच्छन् चरेच्चान्द्रायणव्रतम् ॥ १५

“तां गत्वाऽनेकवारं तु चरेच्चान्द्रायणद्वयम् । केशसंवपनं कृत्वा पुनःसंस्कारमर्हति ॥

“वर्षाद्वूर्ध्वं तु पतितः स्यादेवात्र न संशयः” ॥ नटिनीस्वरूपमुक्तं हेमाद्रौ—

“देवालये राजगृहे गृहीत्वा भूतिमादरात् । मासि मासि च वर्षे वा प्रत्यहं वाऽथ चृत्यति ॥

“सोऽयं नट इति रुद्यातः सर्वधर्मबहिष्कृतः । तस्य संबन्धिनी नारी नटिनीति स्मृता जनैः” ॥ इति।

स्मृत्यन्तरे—

२०

“अपि वा मातरं गच्छेन्न गच्छेद्वदारिकाम् । तां गत्वा तु सकृन्मोहाद्विजश्वान्द्रायणं चरेत्” ॥

नागरखण्डे—

“ये वै कटकुटीरस्था भाषावर्णविर्भेदिनः । मध्यमांसं निषेवन्ते बुरुडास्ते समीरिताः ॥

“तदङ्गनेयं बुरुडी सर्वपापालया सदा । एकवारं द्विवारं वा दिनत्रयमथापि वा ॥

“तां गत्वा मासमात्रं वा वत्सरं वा विशेषतः । यावकं तसकृच्छ्रं च प्राजापत्यं तथैन्दवम् ॥ २५

“वत्सरे पतितो भूयाद्भर्मे तद्वर्णवान् भवेत्” ॥ इति।

षोडशविधग्रामचण्डालीगमने प्रायश्चित्तम् । पराशरः—

“रजकश्वर्मकारश्च नटो बुरुड एव च । कैवर्तमेदभिलाश्च स्वर्णकारश्च सौचिकः ॥

“तक्षकस्तिलयन्त्री च सूनश्वकी तथा ध्वजी । नापितः कारुकश्वैवं षोडशैते जघन्यजाः ॥

“तत्त्वियो ग्रामचण्डाल्यो विप्रैर्वर्ज्याः प्रयत्नतः” ॥ इति।

३०

तत्र चर्मकारस्त्रीगमने देवस्वामी—

“चर्मकारस्त्रीयं गत्वा पराकं दिनमात्रतः । दिनत्रये तु चान्द्रं स्थात् षण्मासात् त्रिंशदाचरेत् ॥

“वत्सरे पतितं विद्यात्कुर्यात्प्रतिवत्तदा । गर्भे तु निष्कृतिनीस्ति कारीषदहनादृते” ॥

मार्कण्डेयः—

“कैवर्तस्य द्वियं गत्वा बुरुडीगमनोदितम् । प्रायश्चित्तं द्विजः कुर्यात्पुनःसंस्कारमर्हति ॥

३५

“मेदस्त्रीगमनेऽप्येवं प्रायश्चित्तं समाचरेत्” । मेदः वेणुकारः ।

**नागरखण्डे—**

“चण्डालवत्पशून् निघ्नन् प्रत्यहं भावमेदनः । स भिलु इति विख्यातः सर्ववर्णबहिष्कृतः ॥

“भिलुस्त्रियं द्विजो गत्वा चण्डालीगन्तृवच्चरेत् ।

५ “स्वर्णकारस्त्रियं गच्छेत् यो विप्रः काममोहितः । एकवारं द्विवारं वा त्रिवारं मासमेव वा ॥

“यावकं च पराकं च प्राजापत्यं तथैन्दवम् । यथाक्रमं योजनीयं देहशुद्ध्यर्थमादरात् ॥

“तस्योपनयनं भूयो वर्षान्ते पतितो भवेत्” ॥ इति । **नारदः—**

“सौचिको वस्त्रसन्धानी यदि तस्य स्त्रियं रमेत् । दिनं दिनत्रयं मासं वर्षं वा गर्भधारणात् ॥

“यावकं च पराकं च तप्तमैन्दवमेव च । यथाक्रमं प्रकुर्वीत पतितो गर्भधारणे” ॥ इति ।

१० **जाबालिः—** “तक्षा च तिलयन्त्री च ग्रामचण्डालसंज्ञिकौ ॥

“तयोर्यदि रमेन्नारीं ब्राह्मणः कामपीडितः । रामचन्द्रधनुष्कोट्यां स्नानान्मासेन शुद्ध्यति” ॥

**मार्कण्डेयः—**

“सौचिंकस्य स्त्रियं गत्वा प्राजापत्यं समाचरेत् । मासैत्रये तु चान्द्रं स्यात्तदूर्ध्वं पतितो भवेत् ॥

“कुलालस्य स्त्रियं गच्छेद्विजो यः काममोहितः । तस्यैषा निष्कृतिर्दृष्टा पूर्ववन्मुनिसत्तमैः ॥

१५ “मध्यविक्रियिणो नारीं यो द्विजः कामपीडितः । तस्योपनयनं भूयः प्राजापत्यं दिनत्रये ॥

“मासे चान्द्रसूतौ तत्तु द्विगुणं मुनिभिः सूतम् । अतः परं न शुद्धिः स्यात्कारीषद्वनाद्वते ॥

“अयस्कारस्त्रियं गत्वा क्षौरकस्य तथैव च” ॥ इति ।

**ब्रह्मचण्डालीगमने प्रायश्चित्तम् । ब्रह्मचण्डालस्त्रीगमने प्रायश्चित्तमाह मनुः—**

“अस्थीनि परकीयानि भूत्यर्थं यो हरेद्विजः । पादप्रस्थानमात्रेण स चण्डालसमौ भवेत् ॥

२० “मूल्यं गृहीत्वा दाहादिप्रेतकृत्यं करोति यः । काशीं गच्छेत्परार्थं यस्तौ चण्डालसमौ स्मृतौ ॥

“एतेषां यः स्त्रियो गच्छेच्छण्डालीगमनोदितम् । प्रायश्चित्तं प्रकुर्वीत कारीषवधवर्जितम् ॥

“पुनःसंस्कारविधिना कर्तव्यं विधिचोदनात्” ॥ इति ।

**रजस्वलागमने प्रायश्चित्तम् । रजस्वलागमने पराशरः ( ७।१९ )—**

“प्रथमेऽहनि चण्डाली द्वितीये ब्रह्मधातिनी । तृतीये रजकी प्रोक्ता चतुर्थेऽहनि शुद्ध्यति” ॥

२५ चण्डाल्यादिगमने यदुकं तदुदव्यागमनेऽपीत्यर्थः । तथा च मार्कण्डेयः—

“यो विप्रः पञ्चवाणार्तो यमेत्पत्नीं रजस्वलाम् ॥

“प्रथमेऽहनि चेत् गच्छेच्छण्डालीगमने च यत् । तत्कृत्वा शुद्धिमाप्नोति ह्यन्यथा दोषभाक् भवेत् ॥

“द्वितीयेऽहनि ब्रह्मधनी गमने यदुदाहतम् । तदत्रापि नियोक्तव्यं नान्यथा शुद्धिमाप्नुयात् ॥

“तृतीये रजकी सङ्गे प्रायश्चित्तं तदत्र हि । कुत्वा शुद्धिमवाप्नोति इह लोके परत्र च” ॥ इति ।

३० अज्ञानकृते रजस्वलागमने मनुः ( १।१।७३ )—

“अमानुषीषु पुरुषे उदव्यायामयोनिषु । रेतः सिक्त्वा जले चैव कुच्छ्रुं सान्तपनं चरेत् ।

**संवर्तः—**

“रजस्वलां च यो गच्छेत् गर्भिणीमष्टमासिकीम् । तस्य पपविशुद्ध्यर्थमतिकृच्छ्रुं विशोधनम्” ॥ इति ।

**गौतमः—**

३५ “यदा रहः पुष्पवर्तीं द्विजस्तामुद्धेद्यदि । कालान्तरे यदा गैच्छेत्तदा तां परिवर्जयेत् ॥

“ यदहे तन्मनःशुद्धि तदा चान्द्रायणं चरेत् । कामातुरस्तदा वर्तेत्स चण्डालसमो भवेत् ॥  
“ पुत्रोत्पत्तिर्यदा भूयात्तदा पतित एव सः । माता पिता च पुत्रश्च त्रयस्ते वृषलाः स्मृताः ” ॥

विधवागमने प्रायश्चित्तम् । विधवागमने देवलः—

“ ब्राह्मणो मदलोभेन विधवां विप्रनन्दिनीम् । यमेत्कामातुरः पश्चात् ज्ञात्वाऽसौ पतिवर्जिता ॥  
“ इति तत्र वजेहून्वमादनं पर्वतोत्तमम् । तत्र चापाग्रमासाद्य प्रातः स्नायादिनेदिने । ५

“ मासमात्रेण शुद्धिः स्यादन्यथा दोषभाक् भवेत् ” ॥ ज्ञानपूर्वके तु गमने पराशरः—

“ ज्ञात्वा विप्रः सकृद्गत्वा विधवां कामपीडितः । न तस्य निष्कृतिर्दृष्टा कारीषदहनादृते ॥

“ उभयोरपि सम्मत्या गच्छेत्तु विधवां द्विजः । त्रिवरं इमां परिक्रम्य पुनस्संस्कारपूर्वकम् ॥

“ पञ्चगव्यं पिवेत् पश्चाच्छुद्धिमाप्नोति पौर्विकीम् ” ॥

एतद्भानुत्पत्तिविषयम् । गर्भोत्पाते तु पतितप्रायश्चित्तम् । तथा हेमाद्रौ— १०

“ यो विप्रो विधवां साध्वीं गच्छेद्वा गर्भवारणात् । स चण्डालसमो ज्ञेयः पतितः स्यान्न संशयः ” ॥

यत्तु चतुर्विंशतिमतेऽभिहितम्— “ विधवागमने कृच्छ्रमहोरात्रसमन्वितम् ” इति तद्रेतः  
सेकात्प्राङ्मनिवृत्यभिप्रायम् । भार्कण्डेयः—

“ दासी मानधनं हन्ति वेश्या हन्ति सर्वं हन्ति पराङ्मना ” ॥ ११

दास्यादिगमने प्रायश्चित्तम् ।

“ एकस्मिन्नाहि यो दासीं यमेत्कामातुरः सकृत् । यावकं तत्र कर्तव्यं पराकं तु दिनत्रये ॥

“ प्राजापत्यं तथा मासे वर्षे चान्द्रं प्रकल्पितम् । अतःपरमवाप्नोति चण्डालत्वं विगर्हितम् ॥

“ द्विजः कामातुरोऽभीक्षणं वेश्यां यदि यमेद्दुवि । यदीच्छेच्छुद्धिमतुलां षडब्दं कृच्छ्रमाचरेत् ॥

“ पाषण्डशूद्रं पतितबौद्धेष्वीभिर्यमेद्यदि । दिनत्रये यावकं स्यात्तपं मासे प्रकीर्तिम् ॥

“ गर्भे वा पुत्रजनने बहिष्कारो विधीयते । मध्यपानरतां नारीं द्विजः कामातुरो यमेत् ॥ २०

“ मासमात्रे तु चान्द्रं स्यात् षाण्मासे तु षडब्दकम् । वत्सरे पतितो भूयात्तप्रायश्चित्तमाचरेत् ॥

“ तस्योपनयनं भूयः प्रायश्चित्तं ततः परम् ” ॥ इति । प्रायश्चित्ताकरणे आपस्तम्बः (२१०१२७८) ॥

“ नाश्य आर्यः शूद्रायाम् ” इति । आर्यस्त्रैवर्णिकः शूद्रायां परभार्यायां प्रसक्तो नाश्यः  
राजा राष्ट्रान्विरास्य इत्यर्थः । संवर्तः—

“ शूद्री तु ब्राह्मणो गत्वा मासं मासाधीमेव वा । गोमूत्रयावकाहारो मासार्घेन विशुद्धति ” ॥ २५

आपस्तम्बः (११०१२७११०) —

“ अनार्या शयने बिश्रददद्वृद्धिं कषायपः । अब्राह्मण इव वन्दित्वा तृणेष्वासीति पृष्ठतः ” ॥

अनार्या शूद्रामुपगच्छन् ददद्वृद्धिं वृद्ध्या जीवन् सुराव्यतिरिक्तं मध्यं कषायः तस्य पाता कषायपः ।

यश्चाब्राह्मण इव सर्वान् वन्दित्वा स्तौति सः सर्वोऽपि तृणेष्वूदयादारभ्यासीति यावदादित्यः पृष्ठं  
तपति पश्चाद्गां तपतीत्यर्थः । अभ्यासे एवमभ्यासो यावता शुद्धिं मन्यते । ३०

मुखमैथुने प्रायश्चित्तम् । मुखमैथुने उशनाः— “ यस्तु ब्राह्मणो धर्मपत्नीं मुखे मैथुनं  
सेवेत स दुष्यति प्राजापत्येन शुद्धयति ” ।

पश्चादिगमने प्रायश्चित्तम् ॥ पश्चादिगमने पराशरः (१०१५) —

“ पशुवेश्यादिगमने महिष्युद्धीकपीस्तथा । कौरिणीं सूकरीं गत्वा प्राजापत्यं समाचरेत् ” ॥ इति ।

सकृद्गमने त्वाह स एव ( १०१६ )—“ महिष्युष्टीखरीगामी त्वहोरात्रेण शुद्ध्यति ” ॥ इति ।

स एव ( १०१६ )—“ गोगामी च त्रिरात्रेण गमेकां ब्राह्मणे ददृत् ” ॥ इति ।

इदं रेतःसेकातपूर्वनिवृत्तौ वेदितव्यम्

“ रेतःसेकान्तगमने कुर्यात्सान्तपनं बुधः । तत्सकृच्छ्रं चरेद्गत्वा गां द्विजो मदनातुरः ” ॥ इति ।  
५ स्मरणात् । मनुः ( १११७४ )—

“ मैथुनं तु समासेव्य पुंसि योषिति वा द्विजः । गोयानेऽप्सु दिवा चैव सवासा स्नानमाचरेत् ” ॥ इति ।

गोयाने शकटादौ रेतःस्वलने प्रायश्चित्तम् । रेतःस्वलने पराशरः ( १२५७ )—

“ गृहस्थः कामतः कुर्यात् रेतसः स्वलनं भुवि । सहस्रं तु जपेद्वेष्याः प्राणायामैत्रिभिः सहः ” ॥ इति ।  
भुवीत्येतद्वस्त्रादेरुपलक्षणम्

१० “ वस्त्रे जले तथा मार्गे कटादौ रेत उत्सृजेत् । परेद्युर्वा तदानीं वा सचेलः स्नानमाचरेत् ॥

“ जपेत्सहस्रं गायत्रीं ततः शुद्धिमवाप्नुयात् ” ॥ इति स्मृतेः । अकामकृते याज्ञवल्क्यः ( प्रा. २७८ )—

“ यन्मेऽद्य रेत इत्याभ्यां स्कन्धं रेतोऽभिमन्त्रयेत् । स्तनान्तरं भ्रुवोर्मध्यं तेनानामिकया स्पृशेत् ” ॥ इति ।

“ यन्मेऽद्य रेतः पुनर्मामैत्रिविन्द्रियम् ” इति द्वाभ्यामनामिकया रेत आदाय स्तनयोर्भ्रुवोर्मध्यमुपस्पृशेत् ।  
कण्वः—“ यत्नोत्सर्गं गृहीत्वा च वारुणीभिरुपस्पृशेत् । वानप्रस्थो यतिश्वैव चरेच्चान्द्रायणव्रतम् ” ॥

१५ शाणिडल्यः—

“ वानप्रस्थो यतिश्वैव स्वलने सति कामतः । पराक्रत्रयसंयुक्तमवकीर्णिवतं चरेत् ” ॥ इति ।

काश्यपः—

“ सूर्यस्य त्रिन्मरकारं स्वप्ने सिक्त्वा गृही चरेत् । वानप्रस्थो यतिश्वैव त्रिः कुर्याद्वर्मणम् ” ॥ इति ।

अवकीर्णिप्रायश्चित्तम् । ब्रह्मचारिणो रेतःस्स्वलने मनुः ( १११२०-१२२-१२३ )—

२० “ कामतो रेतसः सेकं व्रतस्थस्य द्विजन्मनः । अतिक्रमं व्रतस्याहुर्धर्मज्ञा ब्रह्मवादिनः ॥

“ एतस्मिन्नेनसि प्राप्ते वसित्वा गर्दभाजिनम् । सप्तागारं चरेद्दैश्चं स्वकर्म परिकीर्तयन् ॥

“ तेभ्यो लब्धेन भैक्षण वर्तयन्नैककालिकम् । उपस्पृशांत्विषवणमब्दैनैकेन शुद्ध्यति ॥

“ अवकीर्णिविशुद्ध्यर्थं चान्द्रायणमथापि वा ” ॥ ( ११७ )

“ अवकीर्णी तु काणेन गर्दभेन चतुष्पथे । स्थार्णीपाकविधानेन यजन्नैकतिभिर्निशि ” ॥ ( ११८ ) इति ।

२५ संवर्तः—

“ ब्रह्मचारी तु यः स्कन्देत् कामतः शुक्रमात्मनः । अवकीर्णिवतं कुर्यात्स्नात्वा शुद्ध्येद्कामतः ” ॥ इति ।

बोधायनः ( २११२९-३१ )—“ यो ब्रह्मचारी श्वियमुपेयात्सोऽवकीर्णी । स गर्दभं पशुमालभेत् ।

नैर्कृतः पशुः पुरोडाशश्च रक्षोदैवतो यमदैवतो वा ” ॥ इति । जातुकर्णिः—

“ खण्डितं व्रतिना रेतो येन स्यात् ब्रह्मचारिणा । कामतोऽकामतः प्राहुरवकीर्णीति तं बुधाः ॥

३० “ आलभेत विशुद्ध्यर्थं नैर्कृतं गर्दभं पशुम् ” इति ।

कौशिकस्तु नैषिकादीनां कृतप्रायश्चित्तानामपि इह व्यवहारो नास्तीत्याह—

“ नैषिकानां व्रतस्थानां यतीनां चावकीर्णिनाम् । शुद्धानामपि लोकेऽस्मिन्प्रत्यापत्तिर्न विद्यते ” ॥ इति ।

ऋतुकालातिक्रमे प्रायश्चित्तम् । ऋतुकालातिक्रमे पराशरः ( ४१४ )—

“ ऋतौ न गच्छेद्यो भार्या सोऽपि कृच्छ्रार्धमाचरेत् ” ॥

कात्यायनः—

“ क्रतुस्नातां द्विजो भार्या व्रतश्राद्धविवर्जितः । स्वयं च रोगरहितो यमेत्सन्तानकाम्यया ॥

“ अनिमित्ततया विप्रः पत्नीमृतुमर्तीं त्यजेत् । ब्रूणहत्यामवामोति प्राजापत्यार्थमाचरेत् ” । इति ।

बोधायनः—

“ क्रतौ न गच्छेयो भार्या नियतां धर्मचारिणीम् । नियमातिक्रमे तस्य प्राणायामशतं स्मृतम्” ॥ इति । ५  
कुच्छार्थप्रत्याम्नायत्वेन प्राणायामशतं कार्यमिति भावः ।

स्त्रीबालावृद्धातुराणामर्धप्रायश्चित्तम् ।

क्रतुस्नातायाः स्त्रिया अनुपसर्पणे तदर्थं प्रायश्चित्तमुन्नेयम् । तथा च भृगुः—

“ अशीतिर्यस्य वर्षाणि बालो वाऽप्यूनषोडशः । प्रायश्चित्तार्धमर्हन्ति स्त्रियो व्याधित एव च” ॥ इति ।

शपथोलङ्घने प्रायश्चित्तम् ।

१

“ केनचिन्निमित्तेन शपथमुल्लंघितवतः प्रायश्चित्तमाह पराशारः ( १३५०-५२ )—

“ यस्तु कुच्छः पुमान् ब्रूयात् जायायास्तु अगम्यताम् । पुनरिच्छति चेदेनां विप्रमध्ये तु श्रावयेत् ॥

“ श्रान्तः कुच्छस्तमोऽन्धो वा क्षुत्पिपासाभयादितः । दानं पुण्यं कुत्तं कुत्वा प्रायश्चित्तं दिनत्रयम् ॥

“ उपसृष्टेत्विषवणं महानद्युपसङ्घमे । चीर्णान्ते चैव गां दद्यात् ब्राह्मणान् भोजयेद्दश ” ॥ इति ।

विप्रमध्ये परिषिन्मध्ये स्वपापं निवेदयेत् । अहं शपथप्रतिज्ञावेलायां श्रान्त आसन् । अतः श्रमादि- १५  
दोषप्रयुक्तमिदम् । अगम्यता प्रतिज्ञानं न तु विवेकपूर्वकम् । तस्मादस्य पापस्य प्रायश्चित्तमनु-  
गृह्णन्तु भवन्त इति । यश्च दानं काशीयात्रादिपुण्यं च प्रतिज्ञाय पश्चादश्रुद्वया न करोति तेषु  
त्रिषु निमित्तेषु विप्रैर्निर्दिष्टमिदं प्रायश्चित्तं कुर्यादित्यर्थः ।

क्षत्रियादीनां ब्राह्मणीगमने प्रायश्चित्तम् । क्षत्रियादीनां ब्राह्मणीगमने संवर्तः—

“ कथश्चित् ब्राह्मणीं गच्छेत्क्षत्रियो वैश्य एव वा । गोमूत्रयावकाहारो मासार्धेन विशुद्ध्यति ॥ २०

“ शूद्रस्तु ब्राह्मणीं गत्वा कथंचित्काममोहितः । गोमूत्रयावकाहारो मासेनैकेन शुद्ध्यति ” ॥

एतदत्यन्तव्यभिचारिब्राह्मणीविषयम् । इतरविषये वधस्त्मरणात् । तथा च वसिष्ठः ( २११ )—

“ शूद्रश्चेत् ब्राह्मणीमुपगच्छेद्विरपौर्वैष्टयित्वा शूद्रमग्नौ प्रास्येत् । ब्राह्मण्याः शिरसि वपनं कारयित्वा  
सर्पिषाऽभ्यज्य नग्नां कृष्णं सरमारोप्य महापथमनुसंवाजयेत् पूता भवतीति विज्ञायते ” ॥

आपस्तम्बः ( २१०।२।७।९ )—“ वध्यः शूद्र आर्यायामिति ” । त्रैवर्णिकायामित्यर्थः । एतच्च २५  
योऽन्तःपुरादिष्वधिकृतो भवति रक्षकस्तद्विषयम् । अन्यत्र शिश्रव्वेदनम् । तथा च गौतमः

( १२२-३ )—“ आर्यस्त्वयभिगमने लिङ्गोद्धारः स्वहरणं च गोपा चेद्वोऽधिकः ” इति ।

कात्यायनः—“ वर्णत्रयस्य विप्राणां भार्यामातेति गीयते । तद्वारे यदा गच्छेद्वर्णत्रयमकामतः ॥

“ शिश्नछेदस्वहरणं कार्यं क्षत्रियवैश्ययोः । शूद्रस्य मौसलं प्राहुरिति शास्त्रेषु निश्चितम् ” ॥ इति ।

स्त्रियाः परपुरुषगमने प्रायश्चित्तम्—

३०

स्त्रियाः परपुरुषगमने प्रायश्चित्तमुक्तं चतुर्विंशतिमते—

“ रजसा शुद्ध्यते नारी परपुंसाभिगमिनी । तथापि मुनिना प्रोक्तं प्रायश्चित्तं समाचरेत् ॥

“ कुच्छार्थं ब्राह्मणी कुर्याद्विप्रस्य गमने सति । क्षत्रियस्य चरेत्कुच्छं वैश्ये सान्तपनं चरेत् ॥

“ शूद्रस्य गमने चैव पराकं च समाचरेत् ” ॥ इति । एतत्स्कृद्धमनविषयम् ।

अभ्यासे तु उशनाः—“ व्यभिचारिणीं भार्या कुचेलपिण्डपरिभूतां निवृत्ताधिकारां चान्द्रायण- ३५  
प्रायश्चित्तं प्राजापत्यं वाचारयेत् ” ॥ इति ।

**मनुः ( १११७६।१७७ )—**

“ विप्रदुष्टां स्त्रियं भर्ता निरुन्व्यादेकवेशमनि । यत्पुंसः परदारेषु तच्चैनां चारयेतद्वम् ॥

“ सा चेत्पुनः संप्रदुष्येत्सदृशेनोपमन्त्रिता । कृच्छ्रुं चान्द्रायणं चैव तदस्याः पावनं स्मृतम् ”॥ इति ।

**संवर्तः—**

५ “ ब्राह्मण्याः शूद्रसंपर्के कथंचित्समुपागते । कृच्छ्रुं चान्द्रायणं तस्याः पावनं परमं स्मृतम् ”॥

**याज्ञवल्क्यः ( व्य. २८६ )—**“ प्रातिलोम्ये वधः पुंसां स्त्रीणां नासाद्विकृन्तनम् ”॥

**मनुः ( ११५५ )—**

“ ब्राह्मणक्षत्रियविशां स्त्रियः शूद्रेण सङ्गताः । अप्रजाता विशुद्ध्यन्ति प्रायश्चित्तेन नेतराः ”॥

गर्भे पाते च ब्राह्मण्याः प्रायश्चित्तम् । स्मृत्यन्तरेऽपि—

१० “ विप्रगर्भे पराकं स्यात् ब्राह्मण्या क्षत्रियस्य तु । गर्भे चान्द्रं वैश्यगर्भे पराकेण समन्वितम् ॥

“ चान्द्रायणं शूद्रगर्भे तस्यास्त्यागो विधीयते ”॥ इति । गर्भो द्विविधः । पतिजन्योऽन्य-  
जन्यश्च । सवर्णजोऽसवर्णजश्च । तत्र सर्वत्र गर्भपाते प्रायश्चित्तमुक्तं चतुर्विंशतिमते—

“ गर्भपाते समुद्दिष्टं यथावर्णविधिवतम् । राजगर्भे विशेषः स्यात् यथोक्तमृषिभिः पुरा ॥

“ ब्रह्मगर्भवधे कृच्छ्रमब्दं सान्तपनादिकम् । क्षत्रगर्भवधे चैव चरेच्चान्द्रायणद्वयम् ॥

१५ “ वैश्यस्य चैन्दवं प्रोक्तं पराकं शूद्रघातने । प्रायश्चित्तमिदं प्रोक्तं गर्भपाते विशेषतः ”॥ इति ।

**व्यभिचारिस्त्रीणां त्यागविचारः । याज्ञवल्क्यः ( आ. ७२ )—**

“ व्यभिचारक्रतौ शुद्ध्येत् गर्भे त्यागो विधीयते । गर्भभृत्ववादौ च तथा महति पातके ”॥

क्रतौ शुद्धिरिति मानसव्यभिचाराभिप्रायम् । “ रजसा स्त्री मनोदुष्टा ” इति स्मृतेः । शूद्रगर्भे  
तस्यास्त्यागः । तथा गर्भवधे भर्तृवधे महापातके च । आदिग्रहणेन शिष्यादिगमने च त्यागः ।

२० तथा च वसिष्ठः ( २११० )—

“ चतस्रस्तु परित्याज्याः शिष्यगा गुरुगा च या । पतिन्नी तु विशेषेण जुड़िन्तोपगता च या ”॥ इति ।

जुड़िन्तः श्वपाकादिः । चतुर्विंशतिमते—

“ चतस्र एव सन्त्याज्याः पतने सत्यपि स्त्रियः । श्वपाकोपहताया तु भर्तृन्नी पितृपुत्रगा ”॥ इति ।

त्यागश्च उपभोगर्थकार्ययोः । न तु सर्वथा तस्याः । तथा चतुर्विंशतिमते—

२५ “ स्त्रीणां नास्ति परित्यागो ब्रह्महत्यादिभिर्विना । तत्रापि ग्रहमध्ये तु प्रायश्चित्तानि कारयेत् ॥

“ परित्यक्ता चरेत्पापं ब्रह्मप्नं वापि किञ्चन । तत्पापं शतधा भूत्वा बान्धवानधिगच्छति ”॥

माधवीये तु परित्यागनिषेधोऽनुतापोपेतप्रायश्चित्ताधिकारिस्त्रीविषयः ‘ प्रायश्चित्तानि कारयेत् ’  
इत्यभिधानात् । अनुतापरहितायाः शूद्रगर्भादौ सर्वथा त्याग एवेत्युक्तम् ।

अनिमित्ततया भर्तृभार्यान्यतरपरित्यागे प्रायश्चित्तम् । अनिमित्ततया भार्यापरित्यागे

३० भर्तृपरित्यागे चापस्तंबः ( ११०१२८।१९-२० )—“ दारव्यतिक्रमी खराजिनं बहिलोमं परि-  
धाय दारव्यतिक्रमिणे भिक्षामिति सप्तागाराणि चरेत् । सा वृत्तिः षाण्मासान् । स्त्रियास्तु भर्तृ-  
व्यतिक्रमे कृच्छ्रद्वादशरात्राभ्यासः तावन्तं कालम् ”॥ इति । षाण्मासान्प्राजापत्याभ्यासः इत्यर्थः ।

आपन्नायाः बलाच्छूद्रादिसंपर्के सति रेतःसेकासेकयोः प्रायश्चित्तद्वयमाह पराशरः  
( १०१२५-२६ )—

३५ “ बन्दीग्रहेण या भुक्ता हत्वा बध्वा भयाद्वलात् । कृत्वा सान्तपनं कृच्छ्रुं शुद्ध्येत्पाराशरोऽवीत् ”॥ इति ।

“ सङ्कुच्छुक्ता तु या नारी नेच्छन्ती पापकर्माभिः । प्राजापत्येन शुद्धोत क्रतुप्रस्त्रवणेन च ” ॥  
इति भयाद्व्यमुत्पादेत्यर्थः ।

विधवाया गर्भे त्यागः । विधवाग्मने पुरुषस्य यत्प्रायश्चित्तं तदर्थं विधवायाः द्रष्टव्यम् ।  
विधवायाः गर्भधारणे परित्यागमाह पराशारः ( १०१२० )—  
“ जारेण जनयेद्वर्भं मृते व्यक्ते गते पतौ । तां त्यजेदपरे राष्ट्रे पतितां पापकारिणीम् ” ॥ इति । ५  
नागरखण्डे—

“ वर्णत्रयाद्वा विधवा स्वर्णाद्वाऽथ गर्भिणी । विप्रैस्तस्याः परित्यागः कार्यो धर्मपरायणैः ॥

“ तदर्शनान्महापापमवाप्नोतीह पूर्वजः ” ॥

### विष्णुधर्मे—

“ वर्णत्रयात्स्वर्णाद्वा गर्भिणी विधवा यदि । तस्या दर्शनमात्रेण ब्रह्महत्यामवाप्नुयात् ॥ १०

“ अतस्त्यागो मुनिश्रेष्ठविधवाया विधीयते ” ॥ इति ।

शङ्कितव्यभिचारे स्त्रीणां कर्तव्यम् । शङ्कितव्यभिचारां ब्राह्मणीं प्रत्याह पराशारः ( १०१३५ )—  
“ ब्राह्मणीं तु यदा गच्छेत्परपुंसा समन्विता । सा तु नष्टा विनिर्देश्या न तस्या गमनं पुनः ” ॥ इति ।  
पित्रादिभ्यो व्यतिरिक्तः पुमान्पर इत्युच्यते । तेन पुंसा समन्विता प्रीत्यतिशयव्योतकहास्यादि-  
पुरस्सरं सम्यग्नविता ब्राह्मणस्त्री केनचिद्बाजेन ग्रामान्तरं देशान्तरं वा गत्वा चिरं निवसेत् । १५  
सा बन्धुमध्ये नष्टेति प्रस्थापनीया । न तस्याः पुनः गृहगमनमास्ति । स्वगृहं प्रत्यागतापि  
निर्वासनीयेत्यर्थः ।

परपुरुषेण यथोक्तसमन्वयाभावेऽपि स्वातन्त्र्येण चिरं निर्गता स्त्री परित्याज्येत्याह स एव ( १०१३२ )—

“ कामान्मोहान्तु या गच्छेत्यक्त्वा बन्धुन्सुतान् पतिम् । सा तु नष्टा परेलोके मानुषेषु विशेषतः ” ॥ इति ।  
बन्धवादीनामन्यतमस्य समीपे स्थातव्यं इति स्त्रीधर्मः । तथा च याज्ञवल्क्यः ( आ. ८६ )— २०

“ पितृमातृसुतप्रावृश्वश्रूश्वशुरमातुलैः । हीना न स्याद्विना भर्ता गर्हणीयाऽन्यथा भवेत् ” ॥ इति ।  
एवं च सति या स्त्री कामाद्वा यथोक्तस्त्रीधर्मपरिज्ञानाद्वा बन्धवादीन्परित्यज्य ग्रामान्तरादौ चिरं  
वस्तुं गच्छेत्सा परलोके नष्टा नरकं प्राप्नोति । बन्धवादिषु च प्रवेशं न लभते ।

बन्धुराहित्येन गमनेऽपि त्यागापवादः । उक्तार्थस्य निमित्तविशेषेणापवादमाह  
स एव—“ मद्मोहहता नारी क्रोधाद्वण्डादिताडिता । अद्वितीयागता चैव पुनरागमनं भवेत् ” ॥ इति । २५  
मदः पतिश्वशुरादितिरस्कारजनको मानसो दोषः । पतिश्वशुष्पृष्ठं स्त्रीणां परमो धर्म इति  
विवेकाभावो मोहः । उक्तदोषद्वयोपेतां नारीं शिक्षितुं पत्यादयो यदा दण्डादिभिस्ताडयेयुः  
तदा व्यथिता सा यथोक्तबन्धवादिसहायं विना स्वयमेकाकिन्येव यद्यपि निर्गच्छेत्तथापि स्वगृहे  
पुनरागमनं प्राप्नुयादित्यर्थः । पुनरागमने प्रतीक्षणकालविधिमाह पराशारः ( १०१३३ )—

“ दशमे तु दिने प्राप्ते प्रायश्चित्तं न विद्यते । दशाहं न त्यजेन्नारीं त्यजेन्नष्टश्रुतां तथा ” ॥ इति । ३०  
पुनरागमने प्रतीक्षां दश दिनानि कुर्यात् । दशमदिने तया गृहे प्राप्ते सति नेयं प्रायश्चित्तभागभवेत् ।  
ऊर्ध्वं तु व्यभिचारोचितप्रायश्चित्तभागभवति । दशाहमध्ये तदीयव्यभिचाराश्रवणे तां न परित्यजेत् ।  
यदि नष्टवेन सा श्रूयेत तदा दशाहमध्ये त्वकृतप्रायश्चित्तां तां परित्यजेदित्यर्थः ।

स्वातन्त्र्येण गताया अत्यागे भर्तादीनां प्रायश्चित्तम् । नष्टां श्रुत्वापि यदि भर्ताद्यस्तां  
न परित्यजेयुः तदा तेषां प्रायश्चित्तमाह स एव ( १०१३४ )—“ भर्ता चैव चरेत्कृच्छ्रं कृच्छ्रार्थं चैव । ३५

बान्धवाः” इति । अकृतप्रायश्चित्तानां तेषां गृहे भोजनादिकमाचरन्नुपवासेन शुद्ध्यतीत्याह स एव ( १०।३४ )—“ तेषां भुक्त्वा च पीत्वा चाहोरात्रेण शुद्ध्यते ” ॥ इति ।

ताडनादिना निर्गच्छन्त्याः त्यागविचारः । ताडनादिना निर्गच्छन्त्याः पुरुषान्तर-समन्वयाभावेऽपि दशाहादूर्ध्वं त्यागे को हेतुरित्यत आह स एव ( १०।३५ )—

५ “ ब्राह्मणी तु यदा गच्छेत्परपुंसा विवर्जिता । गत्वा पुंसः शतं याति त्यजेयुस्तां तु गोत्रिणः ” ॥ इति । यद्यपि क्रोधादिना निर्गच्छन्ती न तदानीं पुरुषान्तरेण समवैति तथापि गत्वा कालान्तरेण शत-संख्याकेषु पुरुषेषु सञ्चरतीति मत्वा बान्धवास्तां परित्यजेयुः । ब्राह्मण्या अपि बहुपुरुषसञ्चारिण्या गणिकात्वं भवति । तदाह प्रजापतिः—

“ अभिगच्छति या नारी बहुभिः पुरुषैर्मिथः । व्यभिचारिणीति सा ज्ञेया प्रत्यक्षं गणिकेति च ” ॥ इति ।

१० व्यभिचारिण्या गृहप्रवेशे शुद्धिप्रकारः । सा यद्गृहं प्रविशति तस्य शुद्धिप्रकारमाह पराशारः ( १०।३६-४२ )—

“ पुंसां यदि गृहं गच्छेत्तदशुद्धं गृहं भवेत् । पितृमातृगृहं यच्च जारस्येव तु तद्गृहम् ॥

“ उल्लिख्य तद्गृहं पञ्चात्पञ्चगव्येन सेचयेत् । त्यजेच्च मून्मयं पात्रं वस्त्रं काष्ठं च शोधयेत् ॥

“ संभारान् शोधयेत्सर्वान् गोवालैश्च फलोद्भवान् । ताम्राणि पञ्चगव्येन कांस्यानि दश भस्मभिः ॥

१५ “ प्रायश्चित्तं चरेद्विप्रो ब्राह्मणौरुपपादितम् । गोद्वयं दक्षिणां द्व्यात्प्राजापत्यद्वयं चरेत् ॥

“ इतरेषामहोरात्रं पञ्चगव्येन शोधनम् ॥

“ उपवासैर्वतैः पुण्यैः स्नानसन्ध्यार्चनादिभिः । जपहोमदयादानैः शुद्ध्यन्ते ब्राह्मणादयः ॥

“ आकाशं वायुरग्निश्च मेघ्यं भूमिगतं जलम् । न दुष्यन्ति च दर्भश्च यज्ञेषु चमसा यथा ” ॥ इति ।

सेयं दुर्ब्राह्मणी स्वनिवासाय पत्युर्मातुर्वा जारस्य वाऽन्यस्य वा दाक्षिण्यवतः यस्य कस्यचिद्गृहं

२० प्रविशति तद्गृहं चण्डालाध्युषितगृहमिवात्यन्तमपवित्रं भवति । तत्रोष्टेष्वनं भूमेस्तेन कुड्यादिलेपनादिकमुपलक्ष्यते । वस्त्रकाष्ठयोर्धान्यादीनां संभाराणां च यथोक्तं शोधनं कुर्यात् । नालिकेरादिफल-संभूतानां पात्राणां गोवालैर्मार्जनम् । ताम्रस्याम्लादिना शुद्धिरुक्ता पूर्वम्\* । अत्र तु पञ्चगव्येनेति विशेषः । कांस्यपात्राणां दशकृत्वो भस्मनाऽघषर्मणम् । गृहस्वामी तु परिषिन्निर्दिष्टं सदाक्षिणं प्राजापत्य-

द्वयं चरेत् । अन्येषां तु तद्गृहवासिनामुपवासः पञ्चगव्यप्राशनं च । तद्गृहवासिभिः सह व्यवहृत्णां

२५ गृहान्तरवासिनां निर्दिष्टेनोपवासादीनामन्यतमेन शुद्धिः । तद्गृहसंबन्धिनामाकाशादीनां निर्लेपत्वात् न यत्नसंपादनीया शुद्धिः । तत्र दृष्टान्तो यज्ञेष्विति । चिरकालवासविषयमिदं परिशोधनम् ।

सकृतप्रवेशे तु मार्जनादिभिः शुद्धिरिति माधवीये ।

ब्राह्मण्याश्चण्डालादिगमने प्रायश्चित्तम् । अकामकृते चण्डालसंसर्गे ब्राह्मण्याः प्रायश्चित्तमाह पराशारः ( १०।१८-२३ )—

३० “ चण्डालैः सह संपर्कं या नारी कुरुते ततः । विप्रान् दशावरान् कृत्वा स्वकं दोषं प्रकाशयेत् ॥

“ आकण्ठसम्मिते कूपे गोमयोदककर्दमे । तत्र स्थित्वा निराहारा त्वहोरात्रेण निष्क्रमेत् ॥

“ सशिखं वपनं कृत्वा भुज्जीयाद्यावकोदनम् । त्रिरात्रमुपवासित्वा त्वेकरात्रं जले वसेत् ॥

“ शङ्खपुष्प्यालतामूलं पत्रं च कुसुमं फलम् । सुवर्णं पञ्चगव्यं च काथयित्वा पिबेज्जलम् ॥

\* पृष्ठे

“ एकभुक्तं चरेत्पश्चाद्यावत्पुष्पवती भवेत् । व्रतं चरति तथावत्तावत्संवसते बहिः ॥

“ प्रायश्चित्ते ततश्चीर्णे कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् । गोद्वयं दक्षिणां दद्याच्छुद्धिं पाराशारोऽब्रवीत् ” ॥ इति ।  
कामकृते सकृद्गमने त्वद्कृच्छ्रमसकृद्गमने अग्निप्रवेशः ।

“ सकृच्चण्डालगमने कामतस्तु कृते स्त्रियः । अब्दकृच्छ्रं स्मृतं तस्या अभ्यासेऽग्निप्रवेशनम् ” ॥ इति  
स्मृतेः ।

५

रेतस्सेकान्तचण्डालगमनस्य प्रायश्चित्तमभिधाय रेतस्सेकात्प्राङ्ग्निवृत्तौ प्रायश्चित्तमाह  
पराशारः ( १०२४ )—

“ चातुर्वर्णस्य नारीणां कृच्छ्रं चान्द्रायणं स्मृतम् । यथा भूमिस्तथा नारी तस्मात्तां न तु दूषयेत् ” ॥  
दूषणं त्यागः । चातुर्वर्णस्येति ब्राह्मणीव्यतिरिक्तस्त्रीविषयम्

“ रेतस्सेकात्प्राङ्ग्निवृत्तौ चण्डालगमने सति । ब्राह्मणी निष्कृतिं कुर्याच्चान्द्रायणचतुष्टयम् ” ॥ इति १०  
स्मृतेः ।

ब्राह्मण्या म्लेच्छुरजकादिगमने प्रायश्चित्तम् । संवर्तस्तु—

“ चण्डालं पुलकसं म्लेच्छं श्वपाकं पतितं तथा । एतान् श्रेष्ठा तु या गच्छेत्कुर्याच्चान्द्रायणत्रयम् ॥

“ रजकव्याधशैलूषवेणुचर्मोपजीविनः । ब्राह्मण्येतान् समागच्छेत्कुर्याच्चान्द्रायणत्रयम् ” ॥ इति ।  
गर्भधारणे जाबालिः—

१५

“ विप्राङ्गनायाच्छण्डालगर्भे तां दण्डयेन्नृपः । निष्कृत्य कर्णनासं तु निर्वास्य पतनाद्वहिः ॥

“ राजा कार्यस्त्याग एव न वधस्त्रीषु सम्मतः । क्षत्रवैश्यस्त्रियो राजा कारीषवधमाचरेत् ” ॥ इति ।  
तदेवं ब्रह्महत्यासुरापानस्वर्णस्तेयगुरुतल्पगमनानां महापातकानां प्रायश्चित्तानि निरूपितानि ।  
प्रसङ्गादितरहननस्यापेयान्तरपानस्य स्तेयान्तरस्यागम्यागमनमात्रस्य च प्रायश्चित्तमुक्तम् ।

अथ संसर्गस्य महापातकत्वाविचारः । महापातकिसंसर्गस्य प्रायश्चित्तमुच्यते । तस्य च २०

महापातकित्वमुक्तं मनुयाज्ञवल्क्यादिभिः ( मनुः ११५४ )—

“ ब्रह्महत्यासुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः । महान्ति पातकान्याहुः संयोगं चैव पञ्चमम् ” ॥ इति ।

“ संवत्सरेण पतति पतितेन समाचरन् ( १८० ) । ब्रह्महा मद्यपस्तेनस्तथैव गुरुतल्पगः ॥

“ एते महापातकिनो यश्च तैः सह संवसेत् ” ॥ इति । तत्त्वप्रायश्चित्तं च संसर्गिण उक्तम् ॥

“ यो येन पतितेनैषां संसर्गं याति मानवः । स तस्यैव व्रतं कुर्यात्संसर्गस्य विशुद्धये ” ॥ ( १८१ ) इति । २५  
एतद्युगान्तरविषयम् । अत एव कलियुगधर्माभिधाने प्रवृत्तः पराशारः ब्रह्महत्यादिमहापातक-  
चतुष्टयस्य प्रायश्चित्तमुक्तवान् । कलियुगे संसर्गदोषाभावमभिप्रेत्य संसर्गप्रायश्चित्तं नाभ्यधात् ।

कर्मण एव पातित्यहेतुत्वम् । तथा कर्मणा पातित्यं कण्ठरेणाह पराशारः ( १२५ )—

“ कृते संभाषणादेव त्रेतायां स्पर्शनेन च । द्वापरे त्वन्नमादाय कलौ पतति कर्मणा ॥

“ त्यजेद्देशं कृतयुगे त्रेतायां ग्राममुत्सृजेत् । द्वापरे कुलमेकं तु कर्तारं तु कलौ युगे ” ॥ इति । ३०

सुमन्तुः—“ ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः । महापातकसंज्ञानि चत्वार्येव कलौ युगे ” ॥ इति ।

अत्र चतुर्ग्रहणादेवकाराच्च संसर्गिणो न महापातकित्वम् । स्मृतिकामधेनौ—

“ संसर्गदोषो नैव स्यान्महापातकिभिः कलौ । संसर्गदोषः स्तेनाद्यैर्न महापापनिष्कृतिः ” ॥  
तथा स्मृत्यन्तरे कलौ वर्जनीयानामनुक्रमे संसर्गदोषः पापेष्विति पठितम् ।

कलौ संसर्गस्य पापमात्रहेतुत्वम् । संसर्गदोषस्य पातित्यापादकत्वाभावेऽपि पाप-  
मात्रापातकमस्तीत्याह पराशारः ( १२।७१ )—

“आसनाच्छयनाद्यानात्संभाषात्सहभोजनात् । सङ्क्रामन्ति हि पापानि तैलविन्दुरिवांभसि” ॥ इति ।  
तत्र प्रायश्चित्तमाह स एव ( ४।८ )—

५ “ यो वै समाचरेद्विप्रः पतितादिष्वकामतः । पञ्चाहं वा दशाहं वा द्वादशाहमथापि वा ॥

“ मासार्धमासमेकं वा मासद्वयमथापि वा । अब्दार्धमब्दमेकं वा तदूर्ध्वं चैव तत्समः ॥

“ त्रिरात्रं प्रथमे पक्षे द्वितीये कृच्छ्रमाचरेत् । तृतीये चैव पक्षे तु कृच्छ्रं सान्तपनं चरेत् ॥

“ चतुर्थे दशरात्रं स्यात्पराकः पञ्चवे ततः । कुर्याच्चान्द्रायणं पष्ठे सप्तमे चैन्दवद्वयम् ॥

“ शुद्धवर्थमष्टमे चैव षण्मासान् कृच्छ्रमाचरेत् । पक्षसंख्याप्रमाणेन सुवर्णान्यपि दक्षिणा” ॥ इति ।

१० समाचरणं सहशयनादि ।

“ एकशय्यासनं पङ्किभाष्टपङ्कच्छमिश्रणम् । याजनाध्यापने योनिस्तथैव सहभोजनम् ॥

“ नवधा सङ्करः प्रोक्तो न कर्तव्योऽधमैः सह ” ॥ इति बृहस्पतिस्मरणात् । पतितादिष्वित्यादि-  
शब्देन तत्पुत्रादयो गृह्यन्ते “ पतितोत्पन्नः पतितो भवति ” इति वस्तिष्ठेन ( १३।५१ )  
तन्निन्दनात् । प्रथमः पक्षः पञ्चाहसंसर्गः । तत्र त्रिरात्रोपवासमाचरेत् । द्वितीये पक्षे प्राजापांत्यम् । तृतीये

१५ सान्तपनम् । अत्र सान्तपनं सप्तरात्रं गृह्यते । अर्धमाससंसर्गश्चतुर्थः पक्षः । तत्र दशरात्रोपवासमाचरेत् ।

ऐन्दवद्वयं चान्द्रायणद्वयम् । किंचिद्दूनसंवत्सरसंसर्गः अष्टमः पक्षः । अत्र षण्मासान् कृच्छ्र-  
माचरेत् । षट्सु मासेषु प्राजापांत्यकृच्छ्राणि पञ्चदश संपद्यन्ते । तदूर्ध्वं संसर्गे समपापे ‘तदूर्धं स्यात्’  
इति वचनेन तत्त्वायश्चित्तार्थं द्रष्टव्यम् । सर्वेषु पक्षेषु यथोक्तं प्रायश्चित्तमनुष्ठाय तदङ्गत्वेन  
दक्षिणा दातव्या । तत्र प्रथमपक्षे सुवर्णमेकम् । एवमपरेष्वपि पक्षेष्ववगन्तव्यम् । कूर्मपुराणेऽपि—

२० “ सङ्गं कृत्वाऽर्धमासे तु उपवासान् दशाचरेत् । पराकं माससंसर्गे चान्द्रं मासत्रये व्रतम् ।

“कृत्वा षण्माससंसर्गं कुर्याच्चान्द्रायणद्वयम् । किञ्चिन्न्यूनाब्दसंसर्गे षण्मासं कृच्छ्रमाचरेत्” ॥ इति ।

गोचर्मक्षेत्रलक्षणम् । महापातकानां संधारणं प्रायश्चित्तमाह पराशारः ( १२।४३ )—

“ गवां शतं सैकवृषं यत्र तिष्ठत्ययन्त्रितम् । तत्क्षेत्रं दशगुणितं गोचर्मपरिकीर्तितम् ॥

“ ब्रह्महत्यादिभिर्युक्तो मनोवाक्यायकर्मजैः । एतद्वोचर्मदानेन मुच्यते सर्वकिल्बिषैः ” ॥ इति ।

२५ एकवृषेण सहितं गोशतं यन्त्रणा रहितं विश्रमाय यावन्तं प्रदेशमाकम्य व्यवतिष्ठते तावान्  
भूप्रदेशो दशगुणितः सन् गोचर्मशब्देनाभिधीयते ।

मिथ्याभिशंसनप्रायश्चित्तम्—अभिशंसने दोषं प्रायश्चित्तं च दर्शयति याज्ञवल्क्यः

( प्रा. २८५-२८७ )—

“ मिथ्याभिशंसने दोषो द्विः समोऽनुत्वादिनः । मिथ्याभिशस्तदोषं च समादत्ते मृषा वदन् ॥

३० “ महापोपपापाभ्यां योऽभिशंसेन्मृषा परम् । अब्दमक्षो मासमासीति स जापी नियतेन्द्रियः ॥

“ अभिशस्तो मृषा कृच्छ्रं चरेदाश्वेयमेव वा । निर्वपेत्तु पुरोडाशं वायव्यं पशुमेव वा ” ॥ मनुः—

“ पतितं पतितेत्युक्त्वा जारं चोरोति वा पुनः । वचनात्तुल्यदोषः स्यान्मिथ्या द्विर्देषभागभवेत् ” ॥

गौतमः ( २१।१७-१९ )—

“ ब्राह्मणस्याभिशंसने दोषस्तावान् द्विरेनसि । दुर्बलहिंसायां चाविमोचने शक्तश्वेत् ” ॥ इति ।

**बोधायनः—**“ मिथ्याभिशंसने कृच्छ्रस्तदर्धमभिशंसितुः ” ॥ इति । **मरीचिः—**

“ स्तेयं वा व्यभिचारो वा हत्या वाऽप्यस्ति सर्वदा । इति यो वदते साधून् स मिथ्यावादवान् द्विजः ॥

“ देवकार्येषु पित्र्येषु निर्गाहों मिथ्यया वदन् । अस्ति चेत्तुल्यपापी स्यानिमथ्यात्वे द्विगुणं भवेत् ॥

“ तस्य पापविशुद्ध्यर्थं प्रायश्चित्तं महत्तरम् । विप्रेषु तप्तकृच्छ्रं स्यादङ्गनास्त्विह च कायिकम् ॥

“ बालावृद्धातुरेष्वेवं वदन्पाराकमाचरेत् । क्षत्रियादिषु सर्वेषु प्राजापत्यमुदीरितम् ” ॥ इति । ५

**गालवः—**

“ मिथ्यापापेन वा बद्धो ह्यभिशस्त इतीरितः । पापमस्ति न वा लोके वार्ता सर्वत्र गण्यते ।

“ अयोग्यो हव्यकव्येषु निन्दितः सर्वदा जनैः । तस्माद्देहविशुद्ध्यर्थं प्राजापत्यं चरेद्विजः ।

“ ततः शुद्धो भवत्येवं मिथ्यात्वे विप्रपुङ्ग्नः । दोषस्तु विद्यते यत्र तत्रोक्तां निष्कृतिं चरेत् ” ॥ इति ।

दोषस्य सत्वे प्रतिपदोक्तं प्रायश्चित्तं कुर्यादित्यर्थः । असकृदभिशंसने शङ्खः—“ नास्तिको १०

नास्तिकवृत्तिः कृतप्नः कूटव्यवहारी मिथ्याभिशंसीत्येते पञ्चवत्सरं ब्राह्मणगृहे भैशं चरेयुः ” ॥ इति ।

यत्तु नास्तिकविषये वसिष्ठवचनम् ( २१२९-३० ) “ नास्तिकः कृच्छ्रद्वादशरात्रं चरित्वा विरमेन्नास्तिकव्याच्चानास्तिकवृत्तिस्त्वनिकृच्छ्रम् ” । इति तत्सकृत्करणविषयमिति माधवीये ।

**ब्राह्मणापगुरणादि प्रायश्चित्तम् । ब्राह्मणापगुरणादौ पराशरः ( ११५१ )—**

“ अपगूर्य त्वहोरात्रं त्रिरात्रं क्षितिपातने । अतिकृच्छ्रं च सधिरे कृच्छ्रेऽभ्यन्तरशोणिते ” ॥ इति । १५

अपगूर्य वधार्थं दण्डमुद्यम्य दिनमेकमुपवसेत् । भूमौ निपात्य त्रिरात्रं उपवसेत् । प्रहोरे सधिरे

निर्गते अतिकृच्छ्रं चरेत् । निर्गतं सुधिरमन्तरेव एकत्र घनीभूतं चेत्कृच्छ्रं चरेदित्यर्थः । एतत्कलियुगाभिप्रायम् । “ कलौ पाराशराः स्मृताः ” इति स्मरणात् ।

**युगान्तरे तु मनुः ( ११२०६-२०८ )—**

“ अपगूर्य त्वब्दशतं सहस्रमभिहत्य तु । जिधांसया ब्राह्मणस्य नरकं प्रतिपद्यते ॥

२०

“ शोणितं यावतः पांसून् संगृह्णाति द्विजन्मनः । तावंत्यब्दसहस्राणि तत्कर्ता नरके वसेत् ॥

“ अपगूर्य चरेत्कृच्छ्रमतिकृच्छ्रं निपातने । कृच्छ्रातिकृच्छ्रे कुर्वीत विप्रस्योत्पाद्य शोणितम् ” ॥

**याज्ञवल्क्यः ( प्रा. २९३ )—**

“ विप्रदण्डोद्यमे कृच्छ्रो ह्यतिकृच्छ्रो निपातने कृच्छ्रातिकृच्छ्रोऽसृक्पाते कृच्छ्रोऽभ्यन्तरशोणिते ” ॥ इति ।

**बोधायनोऽपि ( २११७ )—**

२५

“ अपगूर्य चरेत्कृच्छ्रमतिकृच्छ्रं निपातने । कृच्छ्रं चान्द्रायणं चैव लोहितस्य प्रवर्तने ॥

“ तस्मान्नैवापगुर्वीत न च कुर्वीत शोणितम् ” ॥ इति ।

**ब्राह्मणतिरस्कारे प्रायश्चित्तम् । ब्राह्मणस्य तिरस्कारे पराशरः ( ११४९ )—**

“ हुङ्गरं ब्राह्मणस्योक्त्वा त्वंकारं च गरीयसः । स्नात्वा तिष्ठन्नहःशेषमभिवाद्य प्रसादयेत् ” ॥

ब्रह्मविदं प्रति हुङ्गरं यः प्रयुक्ते यश्च वयसा विद्यया वा ज्येष्ठं प्रति त्वमित्येकवचनं प्रयुक्ते ३०

तावुभौ स्नात्वा यावदस्तमयं निराहारौ स्थित्वा रात्रावभिवादनेन तं क्षमापयेतामित्यर्थः ।

**ब्राह्मणताडनादौ प्रायश्चित्तम् । ताडनादौ प्रायश्चित्तमाह स्त एव ( ११५० )—**

“ ताडयित्वा त्रृणेनापि कण्ठे बद्धा च वाससा । विवादेन विनिर्जित्य प्रणिपत्य प्रसादयेत् ” ॥ इति ।

प्रणिपातेन उपवासोऽप्युपलक्ष्यते । तथा च मनुः ( ११२०४-२०५ )—

“ हुंकारं ब्राह्मणस्योक्त्वा त्वंकारं च गरीयसः । स्नात्वाऽनश्वन्नहःशेषमभिवाद्य प्रसादयेत् ॥

“ ताडियित्वा तृणेनापि कण्ठे वाऽब्रह्म वाससा । विवादे वा विनिर्जित्य तमुपोऽव्य प्रसादयेत् ” ॥

याज्ञवल्क्यः ( प्रा. २९२ )—

५ “ गुरुं त्वंकृत्य हुंकृत्य विप्रं निर्जित्य वादतः । बद्धा वा वाससा क्षिप्रं प्रसाद्योपव सेद्विनम् ” ॥ इति  
गुरुपित्राद्यधिक्षेपप्रायश्चित्तम् । पित्राद्यधिक्षेपे स्कान्दे—

“ पुत्रादिर्जनकं ज्येष्ठं गुरुं वापि न पीडयेत् । एकशब्देन नामोक्त्या त्वंकारं हुंकृतिं च वा ।

“ तद्वोषपरिहार्थं नाचिकेतवतं चरेत् ॥

“ नाचिकेतः पुरा राजन् गुरुमुद्वालकं प्रति । परिभाष्य ततो गत्वा दृष्ट्वा यमपुरं महत् ॥

१० “ पुनर्गत्वा भुवः पृष्ठं पितरं प्रणिपत्य च । तद्वाक्येन ततः पश्चाद्वेहशुद्ध्यर्थमाद्रात् ॥

“ अपिबन्मण्डलं तत्र गवां क्षीरं दिने दिने । पत्वा शुद्धिमनुप्राप्तो मण्डलाद्विप्रसत्तमः ॥

“ असकृत् गुर्वधिक्षेपे व्रतमेतच्चरेद्विजः । अथवा देहशुद्ध्यर्थं षडब्दं कृच्छ्रमाचरेत् ” ॥ इति ।

वसिष्ठः ( २१२८ )—“ गुरोरलीकनिर्बन्धे कृच्छ्रं द्वादशरात्रं चरित्वा सचैलस्नातो गुरु-  
प्रसादात्पूतो भवति ” ॥ इति । तदेतदमतिपूर्वे मतिपूर्वे सकृदनुष्ठाने वेदितव्यम् इति माधवीये ।

१५ विष्णुः ( ५४।१४ )—“ समुत्कर्षे गुरोरलीककनिर्बन्धे क्षीरेण पयसा वा मासं वर्तेत् ” ॥ इति ।

पतनीये समुद्रयानादौ प्रायश्चित्तम् ।

पतनीयानां प्रायश्चित्तमाह—बोधायनः ( २१।४१ )—

“ समुद्रयानं ब्रह्मस्वन्यासापहरणं भूम्यपां हरणमन्तवदनं सर्वापिण्यैव्यवहरणं शूद्राभिगैमनं यश्च

“ शूद्रायामभिप्रजायते तदपत्यं च भवति तेषां निर्वैशः चतुर्थकालं मितभोजिनः स्थुरपोभ्यपेयुः

२० “ सवनानुकल्पम् । स्थानासनाभ्यां विहरन्त एते त्रिभिर्वर्षैस्तदपहन्ति पापम् ” इति । चतुर्थः

काले येषां तथाद्य दिवा भुवत्वा इत्रो रात्रौ भुञ्जते तथोक्ताः । तथा मितभोजिनः अमृष्टाश्विनः ।

अपोभ्यपेयुः भूमिगतास्वप्सु स्नानं कुर्युः । सवनानुकल्पं त्रिष्वणं स्थानासनाभ्यां तिष्ठेयुः । अहनि

रात्रौ चासीरन् । एवं विहरन्तः कालं क्षिपन्तः एते त्रिभिर्वर्षैस्तत्पापमपनुदन्तीत्यर्थः ।

शूद्राभिगमने इदं महत्प्रायश्चित्तं क्रतूपगमने अपत्योत्पत्तौ द्रष्टव्यम्

२५ “ वृष्टर्लीकेनर्पीतस्य निश्वासोपहतस्य च । तस्यां चैव प्रसूतस्य निष्कृतिर्न विधीयते ” ॥ इति स्मृतेः ।

दुर्जनसेवाप्रायश्चित्तम् । दुर्जनसेवायां प्रायश्चित्तमाह—देवलः—

“ पिशुनश्च खलश्चैव मद्यपः कितवस्तथा । स्तेयी च दुर्जना एते सेवामेषां करोति यः ॥

“ पराकस्त्वेकदिवसे पक्षे तप्तमुदीरितम् । ग्राजापत्यं ततो मासे वर्षे चान्द्रस्य भक्षणम् ॥

“ कृत्वा शुद्धिमवाप्नोति वर्षद्वूर्ध्वं पतत्यसौ ” ॥ इति ।

३० शूद्रसेवाप्रायश्चित्तम् । शूद्रसेवायां बोधायनापस्तम्बौ ( आप. १।९।१०।११; बौधा.  
२।१।४२ )—

“ यदेकरात्रेण करोति पापं कृष्णं वर्णं ब्राह्मणः सेवमानः ॥

“ चतुर्थकाल उदकाभ्यवार्यी त्रिभिर्वर्षैस्तदपहन्ति पापम् ” ॥ इति । कृष्णवर्णः शूद्रः तदाज्ञा-  
करो भूत्वा वृत्त्यर्थं सेवमानो ब्राह्मणः त्रिभिर्वर्षैर्मितमेव चतुर्थकाले मितं भुञ्जानः त्रिष्वणस्नायी

३५ एकदिनसेवाकृतं पापं हन्तीत्यर्थः । बोधायनः ( २।१।४४-४५ )—“ भैषज्यकरणं ग्रामयाजनं

१ ग—प्रणिपत्य । २ ग—वर्व । ३—‘ जननं ’ मुद्रितपाठः ।

रङ्गोपजीवनं नाट्याचार्यता गोमहिषरक्षणं यच्चान्यदप्येवं युक्तं कन्यादूषणमिति । तेषां तु निर्वेशः पतितवृत्तिर्दीर्घं संवत्सराविति ” अन्यदप्येवं युक्तमिति अन्यदपि उपपातकमित्यर्थः ।

अशुचिकरणां प्रायश्चित्तम् । स एव ( २।१।४६-४८ ) “ अथाशुचिकरणि । वूत-मभिचारोनाहिताग्नेरुच्छवृत्तिता समावृत्तस्य भैक्षचर्या तस्य चैव गुरुकुले वास ऊर्ध्वं चतुर्भ्यो मासेभ्यस्तस्य चाध्यापनं नक्षत्रनिर्देशश्चेति । तेषां तु निर्वेशो द्वादशमासान् द्वादशार्धमासान् ५ द्वादशद्वादशाहान् द्वादशषडहान् द्वादशत्र्यहान् द्वादशाहं षडहं त्र्यहमहोरात्रमेकाहमिति यथाकर्माभ्यासः ” इति । द्वादशमासाधेकाहान्तकालविकल्पः यथाकर्माभ्यासः तथा वेदितव्यः । बुद्धिपूर्वे सानुबन्धेऽभ्यासे च भूयांसं कालं प्रायश्चित्तं कुर्याद्विपरीते विपर्यय इत्यर्थः ।

अभिचारशापादिप्रायश्चित्तम् । आपस्तंबः-( १।१।०।१।१।५-१६ ) “ अभीचारानु-व्याहारावशुचिकरावपतनीयौ पतनीयाविति हारीतः ” ॥ इति । अभिचारः इयेनेनेत्यादि । अनु-१ व्याहारः शापः । तौ ब्राह्मणविषये क्रियमाणावित्यर्थः । स एव ( १।१।०।२।९।१।७-१।८ )—“ पतनीयवृत्तिस्त्वशुचिकरणां द्वादशमासान् द्वादशार्धमासान् द्वादशद्वादशाहान् द्वादशसप्ताहान् द्वादशत्र्यहान् द्वादशद्वादशाहान् द्वादशाहं सप्ताहं त्र्यहव्यहमेकाहमिति ” । अशुचिकरणां कर्मणां येषां प्रातिस्विकं प्रायश्चित्तं नोक्तं तेषामपि कर्मणां पतनीयेषु कर्मसु या वृत्तिः प्रायश्चित्तं सैव । शिष्टं स्पष्टम् । अशुचिकरणि तेनोक्तानि ( १।७।१।१।२-१।७ )—“ अथाशुचिकरणि शूद्र-१।५ गमनमार्यस्त्रीणां प्रतिषिद्धानां मांसभक्षणं शुनो मनुष्यस्य च कुकुटसूकरणां ग्राम्याणां क्रव्यादैसां मनुष्याणां मूत्रपुरीषप्राशनं शूद्रोच्छिष्टमपपात्रागमनं चार्याणामिति ” । क्रव्यादसः गृध्रादयः । शूद्रोच्छिष्टं भुक्तमशुचिकरम् । अपपात्राः प्रतिलोमस्त्रियः । मनुः ( १।१।९।७-१।९।८, १।९।१ )—“ व्रात्यानां याजनं कृत्वा परेषामन्त्यकर्म च । अभिचारमहीनं च त्रिभिः कृच्छ्रैविशुद्धति ॥ २० “ शरणागतं परित्यज्य वेदं विष्णुव्य च द्विजः । संवत्सरं यवाहारस्तत्पापमपसेधति ॥ “ येषां द्विजानां सावित्री नानूच्येत यथाविधि । तांश्चारयित्वा त्रीन् कृच्छ्रान्यथाविध्युपनाययेत् ” ॥ याज्ञवल्क्यः ( प्रा. २।८ )—

“ त्रीन् कृच्छ्रानाचरेद्वात्ययाजकोऽभिचरन्वपि । वेदप्लावी यवाश्यब्दं त्यक्त्वा च शरणागतम् ” ॥ इति ।

पैठीनसिः—‘शूद्रयाजकः तद्व्यत्यागात्पूतो भवति । प्राणायामसहस्रेषु दशकृत्वोऽभ्यस्तेष्विति ॥

यत्तु मनुराह—

“ पुरोधाः शूद्रवर्णस्य ब्राह्मणो यः प्रवर्तते । स्नेहादर्थप्रसङ्गाद्वा तस्मृच्छ्रै विशेषाधनम् ” ॥ इति । तदशक्तविषयम् । पराशरः—

“ गृहीत्वा दक्षिणां यस्तु शूद्रस्य जुहुयाद्विः । ब्राह्मणस्तु भवेच्छूद्रः शूद्रस्तु ब्राह्मणो भवेत् ” ॥ इति । जुहुयात् वैदिकैर्मन्त्रैः । “ शूद्रस्तु ब्राह्मणो भवेत् ” इति तत्कर्मफलप्राप्नोतीत्यर्थः ।

भूतकाध्यापनाध्ययनप्रायश्चित्तम् । भूतकाध्यापनं निन्दति शौनकः—

“ वेदाक्षराणि यावन्ति नियुक्ते त्वर्थकारणात् । तावतीर्थूणहत्या वै लभते नात्र संशयः ” ॥ इति ।

द्यासोऽपि—

“ यो विप्रो भूतकं हृत्वा मासि मासि प्रचोदितम् । शिष्यानध्यापयेद्वै साक्षात्त्वारायणात्मकम् ॥

“ स वै नारायणद्वोही सर्वदा सूतकी भवेत् । अयोग्यो हव्यकव्येषु सर्वथा तं परित्यजेत् ” ॥ इति ।

तस्य प्रायश्चित्तमाह जाबालिः—

“अब्दं यो भूतकं हृत्वा वेदपाठं द्विजातये । तस्य चान्द्रवर्यं प्रोक्तमब्दमात्रप्रपूरणे ॥

“अब्दद्वयं नदेवस्तु हृत्वा मूल्यं द्विजन्मने । तस्य पापविशुद्धयर्थं प्रोक्तं चान्द्रचतुष्टयम् ॥

“अब्दवर्ये चान्द्रवट्कं कुर्याद्विशुद्धये ।

५ “अत ऊर्ध्वं ब्रह्महन्ता ललाटे तापवर्जितः । ब्रह्महत्याव्रतं कुर्यात्कपालध्वजवर्जितः” ॥ इति ।

भूतकाध्ययने उद्यासः—

“भूतकाध्यापितो यश्च भूतकाध्यापकश्च यः । अनुयोगप्रदानेन त्रीन् पक्षांस्तु पयः पिवेत्” ॥

ब्रह्मोज्ज्ञप्रायश्चित्तम् । ब्रह्मोज्ज्ञे वसिष्ठः ( २०।१२ )—“ब्रह्मोज्ज्ञः कृच्छ्रं द्वादशरात्रं चरित्वा पुनरुपयुजीत् वेदमाचार्यात्” इति । एतत्प्रामादिकत्यागविषयम् । नास्तिकतया त्यागे

१० सुरापानसमामिति भनोर्मतम् ।

अनाश्रमवासे प्रायश्चित्तम् । अनाश्रमवासे हारीतः—“अनाश्रमी संवत्सरं प्राजापत्यं चरित्वाऽऽथ्रममुपगच्छेत् । द्वितीयेऽतिकृच्छ्रं तृतीये कृच्छ्रातिकृच्छ्रमत ऊर्ध्वं चान्द्रायणम्” इति । गौतमः—

“अग्निपूतो गृहस्थः स्यात्सोमयाजी विशेषतः । तयोर्यदि भूता भार्या तज्जन्म विफलं भवेत् ॥

१५ “अनाश्रमी द्विजो यस्तु यावज्जीवति भूतले । मासि मासि स कुर्वीत प्राजापत्यं विशुद्धये ॥

“अशक्तश्चेत्था कर्तुं कुर्याद्वा भूत्यनन्तरम् । मासि मासीह तावन्ति गणयित्वा तदात्मजः ॥

“ततः शुद्धिमवाप्नोति परलोकं च विन्दति” ॥

पञ्चाशद्वत्सरादुपरि विवाहनिषेधः । स एव—

“पञ्चाशद्वत्सरादूर्ध्वं न कार्यं पाणिपीडनम् । कलेर्युगस्य दुष्टत्वात् त्याज्यमाहुर्मनीषिणः ॥

२० “युवानं प्रेक्षते नारी स्वयं जीर्णापि सर्वदा । व्यभिचारात्कुलं नश्येत्कुलनाशात्कुलाङ्गनाः ॥

“अश्यन्ति सङ्करो भूयात्सङ्करो नरकाय च” ॥ इति ।

“यस्तु सन्त्यज्य गार्हस्थ्यं वानप्रस्थो न जायते । परिवाद्वापि मैत्रेय स नमः परिकीर्तिः” ॥ इति विष्णुपुराणवचनमधिकारिविषयम् ।

ऊढायाः पुनरुद्धाहे प्रायश्चित्तम् । ऊढायाः पुनर्विवाहे जाबालिः—

२५ “पूर्वमुद्वाहितां कन्यां पिता भ्राता धनेच्छया । अन्यस्मै चेत्पुनर्द्वातिपितरो यान्त्यधोगतिम् ॥

“सा कन्या पांसुला ज्ञेया तत्पुत्राः कुण्डसंज्ञिताः । एतद्वेषविशुद्धयर्थं प्रायश्चित्तं समाचरेत् ॥

“दाता रामधनुष्कोट्यां प्रत्यहं स्नानमाचरेत् । वर्षमात्रेण संशुद्धो नान्यथा शुद्धिरिष्यते ॥

“तद्भृता तां परित्यज्य कुर्याच्चान्द्रायणत्रयम् । तस्योपनयनं भूयः शुद्धिमाप्नोति पौर्विकीम् ॥

“सा कन्या पूर्वकं चान्यं त्यक्त्वा चान्द्रायणं चरेत् । पुत्रोत्पादे तु पुत्राणां तस्यां च त्याग इष्यते” ॥ इति

३० संगोत्राद्विविवाहे प्रायश्चित्तम् । संगोत्रविवाहे बोधायनः ( २१।३८ )—“संगोत्रां

“चेदमत्योपयच्छेन्मातृवदेनां विभूयात् । प्रजाता चेत् कृच्छ्राब्दपादं चरित्वा यन्म आत्मनो

“मिन्दाभूतपुनरग्निश्चक्षुरदादित्येताभ्यां जुहुयात्” इति । कल्पसारे—

“अमत्योढा संगोत्रा चेन्मातृवद्विभूयात् ताम् । चान्द्रायणं चरित्वाऽन्यामुपयच्छेत् कन्यकाम् ॥

“कृच्छ्राब्दपादं कुर्वीत प्रजाता यदि सा भवेत् । मिन्दाहुती द्वे जुहुयात्तस्यान्ते चरितव्रतः ॥

“ तस्यां प्रसूतो निर्देषः काश्यपो गोत्रतः स्मृतः ।

“ ऊढा चेद्बुद्धिपूर्वं स्याद्गुरुतल्पव्रतं चरेत् । तस्यां प्रसूतश्चणडालः सर्वकर्मबहिष्कृतः ” ॥  
स्मृत्यर्थसारे—

“ यदि कश्चित् ज्ञानतस्तां कन्यामूढोपगच्छति । गुरुतल्पव्रताच्छुद्धो गर्भस्तज्जोऽन्त्यतां वजेत् ॥

“ भोगतस्तां परित्यज्य पालयेऽजननीमिव । अज्ञानाच्चेदैन्दवेन शुद्धयेद्वर्भस्तु काश्यपः ” ॥ इति । ५

शातातपः—

“ समानप्रवरां कन्यां सगोत्रामुपयम्य च । उत्सृज्य तां ततो भार्या मातृवत्परिपालयेत् ॥

“ कृत्वा तस्यां समुत्सर्गमतिकृच्छ्रं विशोधनम् ” इति । देवलः—

“ समानगोत्रजामूढा समानप्रवरां तथा ।

“ यदि पुष्पवर्तीं गच्छेऽप्तेभात्कामातुरः सकृत् । मातृगामी स विशेषः सर्वकर्मबहिष्कृतः ” ॥ १०

“ गुरुतल्पव्रतं कुर्यान्मुक्तच्छेदविवर्जितम् । पुत्रोत्पत्तौ तयोः पुत्रा अन्त्यजत्वमवाप्नुयुः ” ॥ इति ।

परिवित्त्यादेः प्रायश्चित्तम् । परिवेदनादौ पराशरः ( ४।२०-२१ )—

“ परिवित्तिः परिवेत्ता च यया च परिविद्यते । सर्वे ते नरकं यान्ति दावृथाजक्षपञ्चमाः ॥

“ द्वौ कृच्छ्रौ पैरिवित्तेस्तु कन्यायाः कृच्छ्रं एव च । कृच्छ्रादिकृच्छ्रौ दातुस्तु होता चान्द्रायणं चरेत् ” ॥ इति ।

यत्र ज्येष्ठो नोद्धहति कनिष्ठश्च उद्धहति तत्र ज्येष्ठः परिवित्तिः कनिष्ठः परिवेत्ता कन्या परिवेदिनी १५

तस्याः पित्रादिर्दीता याजको विवाहहोमस्य कारयिता अत्र परिवित्तेः परिवेत्तुश्च द्वौ कृच्छ्रौ । यत्र

कुब्जादौ विषयविशेषे पूर्वमपवादा उक्ताः तत्र न प्रायश्चित्तापेक्षा । बोधायनस्तु ( २।१।३९ )—

“ परिवित्तिः परिवेत्ता दाता यश्चापि याजकः । कृच्छ्रद्वादशरात्रेण त्रिरात्रेण विशुद्ध्यति ” ॥ इति ।

शङ्खलिखितौ—“ परिवित्तिः परिवेत्ता च संवत्सरं ब्राह्मणगृहे भैश्चं चरेयुः ” इति ।

अत्र ज्ञातज्ञातभेदेन प्रायश्चित्तगौरवलाघवव्यवस्था ।

२०

प्रायश्चित्तानन्तरं परिवेत्तुः कर्तव्यमाह वसिष्ठः ( २०।८ )—“ परिविविदानः कृच्छ्रतिकृच्छ्रौ चरित्वा

तस्मै दत्वा निवेद्य पुनस्तामेवोपयच्छेत् ” ॥ इति । तस्मै ज्येष्ठाय निवेद्य पुनस्तामेवोद्धरेदित्यर्थः ।

अयमेव न्याय आधानव्युत्क्रमे भगिन्योर्विवाहव्युत्क्रमे चेति माधवीये ।

उष्ट्रादियुक्तयानारोहणे प्रायश्चित्तम् । उष्ट्रादियुक्तशकटाद्यारोहणे भनुः ( १।२०।१ )—

“ उष्ट्रयानं समारुद्ध्य खरयानं च कामतः । स्नात्वा च विप्रो द्विग्वासाः प्राणायामेन शुद्ध्यति ” ॥ इति । २५

याह्नवलक्यः ( प्रा. २९।१ )—

“ प्राणायामं जले स्नात्वा खरयानोष्ट्रयानगः । नग्नः स्नात्वा च भुक्त्वा च गत्वा चैव दिवा स्त्रियम् ” ॥ इति ।

खराद्यारोहणे प्रायश्चित्तम् । खराद्यारोहणे मार्कण्डेयः—

“ खरमारुद्ध्य विप्रोऽसौ योजनं यदि गच्छति । तस्मकृच्छ्रत्रयं कुर्याच्छुद्धिमाप्नोति वै द्विजः ॥

“ उष्ट्रं च महिं चैव ह्यनद्वाहं द्विजः सकृत् । आरुद्ध्य योजनं गच्छेत्प्राजापत्यमुदीरितम् ” ॥ इति । ३०

“ अजं वस्तं समारुद्ध्य पूर्ववद्यादि गच्छति । तत्र सान्तपनं प्रोक्तं शरीरस्य विशोधनम् ॥

“ पुनः कर्म प्रकुर्वीत तेन शुद्ध्येन संशयः ” ॥ इति । पुनःकर्म पुनरुपनयनम् ।

कारागृहवासप्रायश्चित्तम् । कारागृहवासे गौतमः—

“ बलाद्वन्दीकृतो यस्तु म्लेच्छचणडालदस्युभिः ।

“ कारागृहे मासमात्रमुषित्वा कायमाचरेत् । प्राजापत्यं च चान्द्रं च चरेत्संवत्सरोषितः ” ॥ ३५

यमः—“कारागृहाद्विनिर्गत्य प्रायश्चित्तं यथोदितम् । कृत्वा विप्रः पुनः कर्म कृत्वा शुद्धिमवान्नुयात् ॥  
 “ बलाद्वन्दीकृता नारी तत्रैव निवसेद्यदि । पक्षमासमृतुं चाब्दमुत्सृष्टा चेत्तदा पतिः ॥  
 “ षष्ठिभिर्मृतिकाभिश्च धूतशोचमनन्तरम् । कारयित्वा विधानेन स्नापयित्वा नदीजलैः ॥  
 “ कारयेत्पूर्ववद्विप्रः प्रायश्चित्तमनुक्रमात् ॥  
 ५ “ अर्धमुक्तं तु नारीणां प्रायश्चित्तं विशोधनम् । तस्या दोषानिवृत्तिः स्यात् जनयोगेन हीयते ॥  
 “ अतस्तत्पोषणं कुर्यात्संसर्गदीन् न कारयेत् । तत्रैव गर्भसंपत्तौ परित्यागो विधीयते ” ॥ इति ।

कुशास्पवासप्रायश्चित्तम् । कुशामवासे मरीचिः—

“ श्रोत्रियश्च तटाकादिस्तृणं पर्णं तथेन्धनम् । बान्धवः स्वकुलीनाश्च विद्या चैवोपकारिणी ॥  
 “ न सन्ति यत्र ग्रामे तु स कुशाम इतीरितः ॥  
 १० “ तत्र ग्रामे द्विजो यस्तु हव्यकव्यपराङ्गुखः । एकत्र दिवसे तिष्ठन्महाचान्द्रायणं चरेत् ” ॥

दुर्देशगमने प्रायश्चित्तम् । दुर्देशगमने बोधायनः ( ११२९ )—

“ सिन्धुसौवीरसौराष्ट्रांस्तथा प्रत्यन्तवासिनः । अङ्गवङ्गकलिङ्गांश्च गत्वा संस्कारमर्हति ” ॥  
 प्रत्यन्तवासिनः चण्डालादिवासप्रदेशान् । स एव ( ११३० )—  
 “ पम्बां स कुरुते पापं यः कलिङ्गानप्रपयते । क्रषयो निष्कृतिं तस्य प्राहुैश्वानरं हविः ” ॥ इति ।

१५ श्वशूगालादिदंशने प्रायश्चित्तम् । श्वादिदंशे याज्ञवल्क्यः ( आ. २७७ )—

“ पुंश्चलीवानैरस्वर्देष्टः श्वोष्ट्रादिवायसैः । प्राणायामं जले कृत्वा धूतं प्राश्य विशुद्ध्यति ” ॥  
 मनुः ( १११९९ )—

“ श्वशूगालस्वर्देष्टो ग्राम्यैः क्रव्याद्विरेव च । नराश्वोष्ट्रैर्वर्गाहैश्च प्राणायामेन शुद्ध्यति ॥  
 एतन्दीस्नानादेरप्युपलक्षणम् । तथा च बोधायनः ( १५११२६ )—  
 २० “ शुना दृष्टस्तु यो विप्रो नदीं गत्वा समुद्रगाम् । प्राणायामशतं कृत्वा धूतं प्राश्य विशुद्ध्यति ॥  
 “ सुवर्णरजताभ्यां वा गवां शृङ्गोदकैश्च वा । नवैर्वा कलशैः स्नात्वा सद्य एव शुचिर्भवेत् ” ॥ इति ।  
 हारीतः—“ श्वानो वा क्रोष्टुको वापि नारी वा यदि वानरः । आखुर्नकुलमार्जारवायसग्राम्यसूकराः ॥  
 “ एतैर्देष्टे द्विजस्याङ्गे प्रायश्चित्तं कथं भवेत् ॥

“ स्नानं कृत्वा सचेलं तु विप्राणामनुशासनात् । प्रोक्षणीभिः त्रिभिर्विग्निभिः कारयेन्मार्जनं द्विजः ॥  
 २५ “ प्राणायामत्रयं कुर्यात् दद्याद्वोभ्यस्तृणं नरः । सह द्विजैश्च भुक्तेन शुद्ध्यते नात्र संशयः ” ॥ इति ।

अडिगराः—

“ ब्रह्मचारी शुना दृष्टस्यहं सायं पयः पिवेत् । गृहस्थस्तु द्विरात्रं वा एकाहं वाऽग्निहोत्रवान् ॥  
 “ नाभेरुर्व्वं तु दृष्टस्य तदेव द्विगुणं भवेत् । स्यादेतत्रिगुणं वक्त्रे मस्तके तु चतुर्गुणम् ॥  
 “ अव्रती सवती वापि शुना दृष्टस्तथा द्विजः । दृष्टाऽग्निन् हूयमानांस्तु सद्य एव शुचिर्भवेत् ” ॥ इति ।

३० पराशरः ( ५१-९ )—

“ वृकश्वानशृगालवैर्देष्टो यस्तु द्विजोत्तमः । स्नात्वा जपेत्स गायत्रीं पवित्रां वेदमातरम् ॥  
 “ गवां शृङ्गोदकस्नानं महानयोस्तु सङ्गमे । समुद्रदर्शनाद्वापी शुना दृष्टः शुचिर्भवेत् ॥  
 “ वेदविद्याव्रतस्नातः शुना दृष्टो द्विजो यदि । सहिरण्योदकैः स्नात्वा धूतं प्राश्य विशुद्ध्यति ॥

“ सवतस्तु शुना दृष्टः यस्त्रिरात्रमुपावसेत् । घृतं कुशोदकं पीत्वा व्रतशेषं समापयेत् ॥

“ अत्रतः सवतो वापि शुना दृष्टो भवेत् द्विजः । प्रणिपाताद्वेत्पूतो विप्रैश्चशुभिरीक्षितः ॥

“ शुनाग्रातावलीदस्य नसैर्विलिखितस्य वा । अद्विः प्रक्षालनं प्रोक्तमाग्निना चोपचूलनम् ॥

“ शुना तु ब्राह्मणी दृष्टा जम्बुकेन वृक्षेण वा । उदितं ग्रहनक्षत्रं दृष्टा सद्यः शुचिर्भवेत् ॥

“ कृष्णपक्षे यदा सोमो न दृश्येत कदाचन । यां दिशं वजते सोमस्तान्दिशं वाऽवलोकयेत् ॥ ५

“ असद्ब्राह्मणके ग्रामे शुना दृष्टो भवेद्विजः । वृक्षं प्रदक्षिणीकृत्य सद्यः स्नात्वा विशुद्ध्यति ” ॥ इति ।

वृक्षशुनोरारण्यकत्वग्राम्यत्वाभ्यां भेदः । शृगालो जम्बुकः । आदिशब्देन वराहादृश्या गृह्णन्ते । तैर्दृष्टः

स्नात्वा गायत्र्यष्टशतं जपेत् । जपसंख्याविशेष उशनसा दर्शितः ‘ दंष्ट्र्यादिदृष्टे गायत्र्यष्टशतं

प्राणायामशतं वा ” इति । एतच्चासमर्थविषयम् । समर्थस्तु गोशृङ्गोदकस्नानादिकमाचरेत् । तत्र

गोशृङ्गोदकस्नानं नाम शृङ्गपूरितेनोदकेन गायत्र्या शतवारमाभिमन्त्रितेन सेचनम् ‘ गोशृङ्गेण शतं १०

स्नानम् ” इति हारीतस्मरणात् । शृङ्गोदकस्नानसङ्गमस्नानसमुद्रदर्शनानामधमध्यमोत्तमाङ्ग-

भेदेन वा दंशतारतम्येन वा व्यवस्था । वेदाध्ययनं वा सौम्यप्राजापत्यादिवतानि वा समाप्य स्नातो

वेदविद्याव्रतस्नातः । स यदि शुना दृष्टः तथा हिरण्यमुदके निधाय तेनोदकेन स्नात्वा घृतं प्राश्य

विशुद्ध्यति । तत्रापि ब्राह्मणश्चेत् गायत्रीं शतकृत्वो जपेत् । तदाह बोधायनः—

“ वेदविद्याव्रतस्नातः शुना दृष्टस्तु ब्राह्मणः । शतपर्यायमावृत्य गायत्रीं शुद्धिमाप्नुयात् ” ॥ इति । १५

चान्द्रायणादिवतेन सहितः सवतः । स त्रिरात्रमुपोष्य चतुर्थेऽह्नि घृतं प्राश्य कुशोदकं च पीत्वा

पश्चाद्व्रतशेषं समापयेत् । सवताव्रतावुभावपि विप्रान् प्रणिपत्य तैर्निरीक्षितौ यथोक्तप्रायश्चित्ता-

चरणेन पूतौ भवतः । यदा ब्राह्मणी श्वादिभिर्दृष्टा तदा सा रात्रावुद्दितान् ग्रहान् सोमादीनक्षत्राणि

कृत्तिकादीनि दृष्टा शुद्धा स्यात् । सोमदर्शनासंभवे तदवस्थितियोग्यां दिशां वा पश्येत् । तच्च

दर्शनं पश्चगव्यप्राशनस्य चोपलक्षणम् । अत एवाङ्गिराः— २०

“ ब्राह्मणी तु शुना दृष्टा सोमे दृष्टिर्निर्पातयेत् । समुद्रदर्शनाद्वाऽपि शुना दृष्टा शुचिर्भवेत् ॥

“ सोममार्गेण सा पूता पश्चगव्येन शुद्ध्यति ” ॥ इति । सोमादर्शनासंभवे समुद्रदर्शनं दिग्वलोकनं

वा कार्यम् । यत्र ब्राह्मणा न सन्ति तत्र ब्राह्मणप्रणिपातनिरीक्षणयोः स्थाने वृषभप्रदक्षिणं

द्रष्टव्यम् । एतेषु वचनेषु यत्र यत्र प्रायश्चित्तबाहुल्यं तत्रोत्तमाङ्गविषयत्वं दंशनावृत्तिविषयत्वं

चोहनीयम् । ब्रह्मचारिण्हस्थाँग्निहोत्रिष्ठूतरोत्तरं तपोबाहुल्यात्प्रायश्चित्तहास इति माधवीये । २५

शरीरे क्रिम्युत्पत्तौ प्रायश्चित्तम् । शरीरे क्रिमिजनने शातातपः—

“ ब्राह्मणस्य व्रणद्वारे यदा संपद्यते क्रिमिः । प्रायश्चित्तं तदा कार्यमिति शातातपोऽब्रवीत् ” ॥ इति ।

“ गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् । स्नात्वा दत्वा च भुक्त्वा च क्रिमिदृष्टः शुचिर्भवेत् ” ॥ इति ।

बोधायनः ( १५।१२३ )—

“ ब्राह्मणस्य व्रणद्वारे पूयशोणितसंभवे । क्रिमिरुत्पद्यते तत्र प्रायश्चित्तं कथं भवेत् ॥ ३०

“ गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् । त्यहं स्नात्वा च पीत्वा च क्रिमिदृष्टः शुचिर्भवेत् ” ॥

एतच्च नाभेरधोभागे द्रष्टव्यम् । उपरिभागे तु भानुराह । नाभेस्तपरिचेद्वानुराह—

“ नाभिकण्ठान्तरोद्भूते व्रणे चोत्पद्यते क्रिमिः । षड्ग्रात्रं तु तदा प्रोक्तं प्राजापत्यं शिरोवणे ” ॥

१ क्ष-निरीक्षितः । २ ग-षं । ३ क-वानरा । ४ क्ष-स्थो । ५ गघ-त्यहं स्नात्वा च पीत्वा च ।

दुर्बाह्णणगृहभोजने प्रायश्चित्तम् । अभोज्यभोजने प्रायश्चित्तमुच्यते । तत्र दुर्बाह्णणगृहे  
भोजने भरद्वाजः—

“ निराचारस्य विप्रस्य निषिद्धाचरणस्य च । अन्नं भुक्त्वा द्विजः कुर्याद्विनमेकमभोजनम् ” ॥ इति ।  
तदशक्तौ पराशरः ( १२।५४ )—

५ “ सदाचारस्य विप्रस्य तथा वेदान्तवेदिनः । भुक्त्वाऽन्नं मुच्यते पापाद्वोरात्रान्तरात्मरः ” ॥ इति ।  
एतदनभ्यासविषयम् । अभ्यासे तु स एव ( ११।४३ )—

“ परपाकनिवृत्तस्य परपाकरतस्य च । अपचस्य च भुक्त्वाऽन्नं द्विजश्चान्द्रायणं चरेत् ” ॥ इति ।  
तेषां लक्षणं स एवाह ( ११।४५-४७ )—

“ गृहीत्वाऽग्निं समारोप्य पञ्चयज्ञानं निर्विपेत् । परपाकनिवृत्तोऽसौ मुनिभिः परिकीर्तिः ।  
१० “ पञ्चयज्ञानं स्वयं कृत्वा परान्नेनोपजीवति । सततं प्रातस्तथाय परपाकरतस्तु सः ।

“ गृहस्थधर्मा यो विप्रो ददातिः परिवर्जितः । कषिभिर्धर्मतत्त्वज्ञैरपचः परिकीर्तिः ” ॥ इति ।  
ददातिरब्दानपरः । तद्वर्जितः स्वयमेव यो भुक्ते सोऽपच इत्युच्यते । तस्य निन्दा प्रत्यक्षश्चुता-  
वाम्नायते ( उदकशान्तिः )—‘ नार्यमणं पुष्यति नो सखाऽयं केवलाघो भवति केवलादी ’ ॥  
शातातपबृहस्पती—

१५ “ यो हि हित्वा विवाहाग्निं गृहस्थ इति मन्यते । अन्नं तस्य न भोक्तव्यं वृथापाको हि स स्मृतः ॥  
“ वृथापाकस्य भुज्ञानः प्रायश्चित्तं चरेद्विजः । प्राणायामशतं कृत्वा धृतं प्राश्य विशुद्धयति ” ॥ इति ।  
वृथापाके यत्प्रायश्चित्तं तदेव ब्राह्मणनिन्दकादावपि द्रष्टव्यम् । निन्दावचनेन सह पाठात् । तथा च  
व्यासः—“ पङ्किभेदी वृथापाकी नित्यं ब्राह्मणनिन्दकः । आदेशी वेदविक्रेता पञ्चैते ब्रह्मघातकाः ” ॥ इति ।  
शौनकः—“ कनिक्रदं जपेन्मन्त्रं दशवारं यदा तदा । वेदविक्रियिणो गेहे भुक्त्वा पापात्प्रमुच्यते ” ॥ इति ।

२० हारीतः—

“ यद्दन्नं प्रतिलोमस्य शूद्रजस्योत्तमस्त्रियाम् । महापातकिनां चैव यद्दन्नं स्त्रीकृतधनयोः ॥

“ आरुदपतितस्यैव सगोत्राभर्तुरेव च । पाषण्डानाश्रितानां च यतेश्वैव तथैव च ॥

“ आतिकृच्छ्रं चरेद्वृक्त्वा प्रमादाद्वाह्णणः सकृत् । मत्या चान्द्रायणं कुर्यादामं चेदर्धमेव च ॥

“ तद्वस्तभोजने वापि त्रिगुणं सह भोजने । चतुर्गुणं तदुच्छिष्टे पानीये त्वर्धमेव च ॥

२५ “ कृच्छ्राब्दपादमुद्दिष्टमभ्यासात् ज्ञानभोजने । मत्याभ्यासे तथा कुर्यात् त्रिंशत्कृच्छ्रं द्विजोत्तमः ” ॥  
उत्तमस्त्री ब्राह्मणी । तस्यां प्रातिलोम्येन शूद्रादुत्पन्नश्वण्डालः । सत्यपि सामर्थ्ये नास्तिक्येन किञ्चि-  
दप्याश्रममप्राप्तः अनाश्रितः ।

राजाध्वनभोजनफलानि । सुमन्तुः—

“ राजान्नं तेज अदत्ते शूद्रान्नं बहवर्चसम् । आयुः सुवर्णकारान्नं यशश्चर्मविकृतिनैः ।

३० “ कारुकान्नं प्रजा हन्ति बलं निर्णेजकस्य च । गणान्नं गणिकान्नं च लोकेभ्यः परिकृन्तति ॥

“ रूपं चिकित्सकस्यान्नं पुंश्चल्यास्त्वन्मिन्द्रियम् । विष्णा वार्दुषिकस्यान्नं शस्त्रविक्रियिणो मलम् ॥

“ एवमेते त्वभोज्यान्नाः क्रमशः परिकीर्तिः ॥

“ भुक्त्वाऽतोऽन्यतमस्यान्नमत्याक्षणं च्यहम् । मत्या भुक्त्वाऽऽचरेत्कृच्छ्रं रेतोविष्णमूत्रमेव च ” ॥ इति ।

**विष्णुः ( ४८२१ )**—“गणकगणिकास्तेनगायकान्नानि भुक्त्वा सप्तरात्रं पयसा वर्तेत् । तक्षणोऽन्नं चर्मकर्तुश्च इवपाकवार्धुषिककदर्यदीक्षितबद्धनिगलाभिशस्तपाषण्डानां च पुंश्वलीदांभिक-चिकित्सकलुड्यकक्लूरोच्छिष्टभोजिनां चावीरस्त्रीसुवर्णकारसपत्नपतितानां च क्रतुधर्मसोमविक्रियिणां च शैलूषतन्तुवायकृतद्धनिषादरङ्गावतारिवेदशस्त्रविक्रियिणां च श्वर्जीविशौणिडकतैलिकचेल-निर्णेजकानां च रजकानां च रजस्वलासहोपपतिवेशमनां च भ्रूणद्धनोक्षितमुदक्यासंसृष्टं पत्रिणा- ५ वलीढं शुना स्पृष्टं गोद्रातं च कामतः पादस्पृष्टमवक्षतं च मत्तकुद्धातुराणां चानचिंतं वृथा-मांसं च त्रिरात्रमुपवसेत् ” इति । त्रिरात्रोपवासः अकामकृतस्कृद्धोजनविषयः ।

अत्रैव विषये लिखितोऽपि—

“भुक्त्वा वार्धुषिकस्यान्नं सवतस्यात्रतस्य वा । शूद्रस्य च तथा भुक्त्वा त्रिरात्रं स्यादभोजनम्”॥ इति ।

अस्मिन्नेव विषये अशक्तस्यं पराशारः ( ११४-५ )— १०

“शूद्रान्नं सूतकस्यान्नमभोज्यस्यान्नमेव च । शङ्कितं प्रतिषिद्धान्नं शूद्रोच्छिष्टं तथैव च ॥

“यदि भुक्तं तु विप्रेण चाज्ञानादापदापि वा । ज्ञात्वा समाचरेत्कुच्छुं ब्रह्मकूर्चं तु पावनंम्”॥ इति ।

अज्ञाने आपदि च ब्रह्मकूर्चमेव ज्ञाने प्राजापत्यमिति योज्यम् ।

अकामकृतस्कृद्धोजनविषये अशक्तस्य हारीतः—

“मृतसूतकशूद्रान्नं सदोषेणापि संस्कृतम् । शङ्कितं प्रतिषिद्धान्नं विद्विषोऽन्नमथापि वा ॥ १५

“यदि भुजीत विप्रो यः प्रायश्चित्तं कथं भवेत् । एकारात्रोपवासश्च गायत्र्यष्टशतं भवेत् ।

“प्राशयेत्पञ्चभिर्मन्त्रैः पञ्चगव्यं पृथक् पृथक् । एतेन शुध्यते विप्रो ह्यन्यैश्वाभोज्यभोजनैः”॥

अकामकृताभ्यासे तु विष्णुनोक्तं सप्तरात्रं पयोव्रतम् । मनुस्तु यवयवागूपानमाह ( १११५२ )—

“अभोज्यानां तु भुक्त्वा श्वीशूद्रोच्छिष्टमेव च । जग्ध्वा मांसमभक्ष्यं च सप्तरात्रं यवान् पिबेत्”॥ इति ।

कामकृताभ्यासे हारीतोक्तं चान्द्रायणम् । तथा शंखोऽपि— २०

“शूद्रान्नं ब्राह्मणो भुक्त्वा तथा रङ्गवतारिणः । चिकित्सकस्य कूरस्य तथा स्त्रीमृगजीविनः ॥

“अभिशस्तस्य चोरस्य अवीरायाः स्त्रियस्तथा । चर्मकारस्य वैणस्य कूर्वस्य पतितस्य च ॥

“रुक्मिकारस्य तक्षणश्च रजकस्य च वार्धुषिः । कदर्यस्य वृश्चस्य वेश्यायाः कितवस्य च ॥

“गणान्नं भूमिपालान्नं मृगजीविश्ववृत्तिनाम् । सौनिकान्नं सूतकान्नं भुक्त्वा मासव्रतं चरेत् ॥

“गणान्नं सूतकान्नं च भुक्त्वा मासव्रतं चरेत्”॥ मासव्रतं चान्द्रायणमित्यर्थः । २५

शुक्तादिभक्षणे मनुः ( १११५३ )—

“शुक्तानि च कषायांश्च भुक्त्वा असेध्यान्यपि द्विजः । तावद्धवत्यप्रयतो यावत्तन्न व्रजत्यधः”॥

आपस्तम्बः ( ११२७।३-४ )—‘अभोज्यं भुक्त्वा नैष्पुरीष्यन्तसप्तरात्रेण वाप्यत’ इति ॥

अभोज्यमांसादिभक्षणे निष्पुरीषभावः कर्तव्यः । यावदुदरं निष्पुरीषं भवति तावदुपवस्तव्यम् ।

तच्च सप्तरात्रेणावप्यते । येवां त्रिरात्रेण नैष्पुरीष्यं तेषां तावदेव शुद्धिः ॥ तथा च ३०

गौतमः ( २३।२३-२४ )—

“अभोज्यभोजने निष्पुरीषभावस्त्रिरात्रमभोजनं सप्तरात्रं वा”॥ इति ।

व्यतीपातादिभोजने प्रायश्चित्तम् । व्यतीपातादिभोजने देवलः—

“व्यतीपाते यदन्नं च महापुरुषभोजनम् । कर्मण्यरिजने भुक्तिर्दशाहे बलिभोजनम् ॥

“भूतप्रेतपिशाचानां यदन्नं परिकल्पितम् । कलुषं वर्जनीयं तत् ब्रह्मराक्षसभोजनम् ॥ ३५

“ एतेष्वदंस्तु यो विप्रो धनलोभपरायणः । तदानीं मृत्युमासोति जीवेद्वा पाषकार्यसौ ॥

“ तत्र दोषोपशान्त्यर्थं प्रायश्चित्तमिदं स्मृतम् ।

“ प्राजापत्यद्वयं कृत्वा पुनस्संस्कारपूर्वकम् । पञ्चगव्यं पिबेत्पश्चाच्छुद्धो भवति भूतले ” ॥

अयुतसहस्रभोजने प्रायश्चित्तम् । अयुतसहस्रभोजनादौ मार्कण्डेयः—

५ “ अयुते वा सहस्रे वा द्विजो ब्राह्मणभोजने । जिह्वाचापल्यतः क्षिप्रं भुज्ञीतापः पिबेत्तु वा ॥

“ पक्षं वा मासमथ वा भुक्त्वा विप्रो निरन्तरम् । कृच्छ्रं पराकं चान्द्रं च कृत्वा शुद्धिमवाप्नुयात् ॥

“ वर्षोपरीह शूद्रत्वमवाप्नोतीति निश्चितम् ” ॥

देवलः—“ अयुते वा सहस्रे वा नानावर्णसमागमे । पतितक्षीबैडालब्रात्यतस्करपूरिते ॥

“ कुण्डगोलकसंधांते नटगायकसङ्कुले । पाषण्डजनसंसर्गे सर्वपातकिसङ्कुले ॥

१० “ भाण्डोच्छिष्टस्वयंपाके छीजनैरुपशोभिते । यो विप्रो लोभमन्विच्छन्नभुज्ञीयात्कदाचन ” ॥

सत्रभोजनेऽप्येवम् । दीर्घसत्रे तु देवलः—

“ वर्षद्वयं वा वर्षं वा यो वा को वा द्विजो भुवि । सङ्कल्प्य भोजयेद्विप्रान् तदीर्धं सत्रमुच्यते ॥

“ विप्रस्तत्र न भुज्ञीयात् पूर्ववत् दुष्टसंगमात् । पक्षं वा मासमथवा भुक्त्वा निष्कृतिमाचरेत् ॥

“ पक्षभुक्तौ पराकं स्याच्चान्द्रं स्यान्मासभोजने ।

१५ शूद्रसत्रे तु स एव—

“ शूद्रसत्रे न भुज्ञीत प्राणैः कण्ठगतैरपि । भुज्ञन्नरकमासाद्य वायसत्वमवाप्नुयात् ॥

“ पक्षे मासे ऋतावब्दे भोजने तु यथाक्रमम् । यावकं तस्मृच्छ्रं च प्राजापत्यमर्थैन्दवम् ॥

“ कृत्वा शुद्धिमवाप्नोति द्विजः पापक्रियाक्रमात् ” इति ।

शूद्रादिगृहे स्वयंपाकादिना भोजनेऽपि प्रायश्चित्तम् । शूद्रादिगृहे स्वयं पक्त्वा भोजने

२० पराशरः—

“ शूद्रालये वा वैश्या वा गृहे वाऽन्नं तदर्पितम् । पक्त्वा भुक्त्वा स पापीयान्महान्तं नरकं ब्रजेत् ॥

“ तदोषपरिहारार्थं प्रायश्चित्तमिदं स्मृतम् ॥

“ परेयुर्वा तदानीं वा वापयित्वा शिरोरुहान् । स्नानं कृत्वा ततः पश्चात्तत्कृच्छ्रं समाचरेत् ॥

“ पञ्चगव्यं पिबेत्पश्चाच्छुद्धो भवति नान्यथा ” ॥ इति ।

२५ सङ्कल्पभोजने प्रायश्चित्तम् । सङ्कल्पभोजने गौतमः—

“ सङ्कल्पीय द्विजा ये तु मार्गे तीर्थगमेऽपि वा । स्वद्रव्यमेलनं कृत्वा पक्त्वा भुक्त्वैकदेशतः ॥

“ ते सर्वे नरकं यान्ति शूद्रतुल्या न संशयः । तेषामिदं मुनिप्रोक्तं प्रायश्चित्तं विशुद्धिदम् ॥

“ एकरात्रे पञ्चगव्यं द्विरात्रे यावकं पिबेत् । प्राजापत्यं त्रिरात्रे च पक्षे चान्द्रायणं स्मृतम् ॥

“ मासे तु शूद्रतुल्याः स्युः स्त्रीणामर्थं समीरितम् ” ॥

३० क्रीतान्नभोजने प्रायश्चित्तम् । क्रीतान्नभोजने देवलः—

“ देवालयेषु मार्गेषु ग्रामेषु नगरेषु च । विप्रः क्रीतान्नभोक्ता चेत्तदा नरकमाप्नुयात् ” ॥

महाभारतेऽपि—

“ क्रीतान्नं देवतागारे ग्रामे वा पत्तैने पथि । यो भुङ्गे पूर्वजो ज्ञानान्नरकं स समाप्नुयात् ” ॥

हेमाद्री—

“ विप्रः कण्ठगतप्राणः क्रीतान्नं यदि भुञ्जते । ग्रामे वा नगरे तीर्थे महादेवालयेऽपि वा ॥

“ स गत्वा नरकं धोरं नानायोनिषु जायते । तस्मात्स्य विशुध्वर्थं प्रायश्चित्तमुदीरितम् ।

“ त्रिरात्रभोजने कायं पक्षे तसं समाचरेत् । महातसं तु मासे च वत्सरे चान्द्रमुच्यते ॥

“ अतःपरं शूद्रतुल्यो विद्वानपि न संशयः । विप्रस्त्रीणामेतदर्थं यतीनां द्विगुणं भवेत् ॥

५

यागान्नभोजने प्रायश्चित्तम् । यागान्नभोजने कण्वः—

“ यज्ञेषु पशुबन्धेषु अन्नमत्ति यदा द्विजः । स वै नरकमाप्नोति स बिडालसमो भवेत् ॥

“ भुङ्गे यदि वपाहोमान्प्राक् पापं महदश्वते । पुनस्तस्योपनयनं प्राजापत्येन शुद्ध्यति ॥

“ वपायागात्परं विप्रो यो भुङ्गे दीक्षितालये । प्राजापत्यं विशुध्वर्थं मुनिभिः परिकीर्तितम् ” ॥ इति ।

कात्यायनः—

१०

“ क्रत्विजां च परस्त्रीणां भोक्तृणां यागसद्वनि । उपोष्य रजनीमेकां पञ्चगव्येन शुद्ध्यति ॥

“ सुवासिनी चेत्तद्वर्तुः पिबेत्पादोदृकं तथा । विववा वपनं कृत्वा प्रपिबेद्वह्न्यकूर्चकम् ॥

“ यतिश्च ब्रह्मचारी च पूर्वं यागान्नभक्षणे । चान्द्रं कुर्याद्वपाहोमात्परं कायं समाचरेत् ” ॥

अस्नात्वा भोजने प्रायश्चित्तम् । अस्नात्वा भोजने गौतमः—

“ अस्नात्वा भोजनं विप्रो नीरोगः कुरुते यदि । स मलाशी सदा ज्ञेयः सर्वकर्मवहिष्कृतः ।

“ श्राद्धकालेषु चान्द्रं स्यात् ग्रहणे तद्दद्यं स्मृतम् । पञ्च पर्वसु तसं स्यादितरत्र तु यावकम् ॥

“ द्विगुणं विधवानां तु यतीनां ब्रह्मचारिणाम् ” ॥

अशुचिकालभोजने प्रायश्चित्तम् । शातातपः—

“ मूत्रोच्चारं द्विजः कृत्वा शौचहीनः कथंचन । मोहाद्भुक्त्वा त्रिरात्रं स्यान्मत्या सांतपनं चरेत् ॥

“ मूत्रायित्वा बजन्मार्गं स्मृतिप्रिंशाज्जलं पिबेत् । अहोरात्रोषितः स्नात्वा जुहुयात्सर्पिषा हविः ” ॥ २०

व्याघ्रः—

“ अस्पृश्यस्पर्शनं कृत्वा यदा भुङ्गे गृहाश्रमी , अकामतस्त्रिरात्रं स्यात् षड्हरात्रं कामतश्चरेत् ” ॥

प्रजापतिः—“ अस्नात्वा तु यदा भुङ्गके पिण्डं दत्वा पितुर्वती ॥

“ स्पृष्टा शवमुदक्यां वा चण्डालं सूतिकां तथा । अकामतस्त्रिरात्रं स्यान्मत्या सांतपनं चरेत् ” ॥

पिण्डं प्रेतपिण्डम् ।

२५

पर्युषितान्नभोजने प्रायश्चित्तम् । पर्युषितभोजने स एव—

“ जले निधाय पूर्वेद्युर्दन्तं पिठोद्वृतम् । तत्पर्युषितसंज्ञं स्याद्भुक्त्वा चान्द्रायणं चरेत् ॥

“ त्रिरात्रं पञ्चरात्रं वा भुक्त्वा पर्युषितं द्विजः । तस्योपनयनं भूयश्चान्द्रायणमथाचरेत् ॥

“ हिङ्गुजीरकसंमिश्रं तिन्तिणीरसवेष्टितम् । दुर्गन्धरहितं यन्तु भोक्तव्यं द्विजपुङ्गवैः ॥

“ दध्ना घृतेन तैलेन यदन्तं संस्कृतं भवेत् । दुर्गन्धरहितं भोजयमन्यथा चान्द्रमुच्यते ” ॥ ३०

ओदनवटकमाषबटकादिभक्षणे प्रायश्चित्तम् । गालवः—

“ ओदनान्निर्मितं वस्तु शुष्कीभूतं यदा भवेत् । अभोजयं भक्षयित्वा तद्यावकं कृच्छ्रमाचरेत् ॥

“ दुर्गन्धरहितं भक्षयं तथा पर्युषितं च यत् । वटकं माषसंभूतं शष्कुल्यादि तथैव च ॥

“ तैलादिपाकैहीनं च भक्षयमाहुर्मनीषिणः ॥

“ माषसंभूतवटकान् शष्कुलीं च तथाविधाम् । निष्कारणतया विप्रो न भुजीत कदाचन ॥

“ पित्र्यर्थं देवकार्यार्थं पक्त्वा भुक्त्वा न दोषभाक् । वृथा तानीह भक्षित्वा यावकं कृच्छ्रमाचरेत् ” ॥

परमान्नकृसरभक्षणे कालनियमः । देवलः—

“ परमान्नं च कृसरं वृथा पक्त्वा द्विजोत्तमः । भुजीत यदि छर्दित्वा उपोष्य रजनीं ततः ॥

५ “ पञ्चगव्यं पिबेत्पश्चाच्छुद्धो भवति नान्यथा ।

“ रवौ धनुः समायाते गृहे कन्या रजस्वला । पितृदेवनिमित्तं च परमान्नं प्रशस्यते ” ॥ इति ।

गौतमः—

“ धनुर्मासे गृहे कन्या यदि स्यात्प्रथमार्तवा । तथैव देवयात्रायां कृसरान्नं न दोषभाक् ॥

“ पितृकार्येषु सर्वेषु दैवे बन्धुसमागमे । पक्त्वा भोज्यं तदन्नं स्यात् प्रभूतक्षीरसंभवम् ॥

१० “ निमित्तेन विना भुक्त्वा दिनमेकमभोजनम् । पञ्चगव्यं पिबेत्पश्चाच्छुद्धो भवति निश्चितम् ” ॥

कन्या द्वुहिता भगिनी स्नुषा च । धनुर्मासे च द्वुहितरि भगिन्यां स्नुषायां च प्रथमार्तवायां

पितृदेवकार्ये बन्धुसमागमे च पायसकृसरान्नभोजने न दोषः । उक्तनिमित्तादन्यत्र दिनमुपवासः

पञ्चगव्यप्राशनं च कर्तव्यमित्यर्थः ।

ब्रात्यकुष्ठचायन्नभोजने प्रायश्चित्तम् । ब्रात्यान्नभोजने देवलः—

१५ “ ब्रात्यान्नं यदि कुष्ठचन्नं भुज्ञते विप्रः क्षुधातुरः । एकादश्यन्नमुक् चैव शुद्धैर्यै चान्द्रायणं चरेत् ॥

“ कुण्डगोलक्योरन्नं परिवित्तेस्तथैव च । परिवेत्तुर्यदन्नं च भुक्त्वा चान्द्रायणं चरेत् ॥

“ देवार्चकस्य यो भुज्ञते तथा गणकवेशमनि । उभौ तौ पापिनौ प्रोक्तौ प्रायश्चित्तमथार्हतः ॥

“ एकरात्रे पञ्चगव्यं द्विरात्रे यावकं स्मृतम् । मासमात्रे पराकं स्याद्बद्धे चान्द्रमुदीरितम् ॥

“ ततः परं तत्समः स्यात् स्त्रीणामर्धमुदीरितम् ।

२० “ यतेराराधने भूत्वा यत्यन्नं भोज्यनोपरि । इम्पत्योर्भुक्तशिष्टं यत् भुक्त्वा चान्द्रायणं चरेत् ॥

“ उद्धाङ्कितं पादहतं बिडालादिंविमिदितम् । देवपूजाविहीनं यद्वैश्वदेवविवर्जितम् ।

“ देवालयेषु यद्गुक्तं यदन्नं मूल्यसंभवम् । शीतीकृतं यदन्नं च शूर्पेण वदनेन वा ।

“ तुषपाषाणसंयुक्तं फलीकरणमिश्रितम् । असाक्षिकं यदन्नं च यदन्नं जीवितण्डुलम् ॥

“ एतद्गुक्त्वा विशुद्ध्यर्थं पराकं कृच्छ्रमाचरेत् ” ॥ इति ।

२५ भोक्तुरागमनात्पूर्वं भोजनपात्रे यत्परिवेषितं तदसाक्षिकम् ।

अन्तःशवधामभोजने प्रायश्चित्तम् । अन्तःशवधामभोजने संवर्तः—

“ यत्र ग्रामे तु कुणपो विप्रो वर्तत तत्र वै । पाकयज्ञं तथा भुक्तिं जलाहरणमेव च ॥

“ न कुर्यात्तावता विप्रो यावन्नान्यत्र नीयते । कुणपेनाश्रिते ग्रामे विप्रो भुक्त्वा स पापकृत् ॥

“ प्राजापत्यं तु कुर्वीत पञ्चगव्यमतः परम् । द्विजानां क्षीरपाने तु न दोषो गृहमेधिनाम् ” ॥

३० उपरागभोजने प्रायश्चित्तम् । उपरागभोजने मनुः—

“ सूर्योपरागे यो भुज्ञते तस्य पापं महत्तरम् । तस्य पापविशुद्ध्यर्थं तत्कृच्छ्रमुदीरितम् ॥

“ चन्द्रोपरागकाले तु भुक्त्वा कायं समाचरेत् । उभयोर्भोजने विप्रः पुनः संस्कारमहंति ” ॥

मरीचिरपि—

“ सूर्यग्रहे तु नाश्चीयात्पूर्वं यामचतुष्यम् । चन्द्रग्रहे तु यामांस्त्रीन् भुक्त्वा पापं समश्नुते ॥

“ इमं धर्मं परित्यज्य यो विप्रस्त्वन्यथा चरेत् । तस्योपनयनं भूयस्तसं सांतपनं स्मृतम् ” ॥  
सूर्यग्रहे तप्तम् । अन्यत्रान्यदित्यर्थः । उभयोः पुनःसंस्कारे इत्यर्थः ।

**भिन्नपात्रभोजने प्रायश्चित्तम् । भिन्नपात्रादिभोजने गालवः—**

“ स्वर्णपात्रं तथा कांस्यं राजतं भिन्नमेव यत् । तत्र भुक्त्वा चरेत्कृच्छ्रैमन्यथा दोषमाप्नुयात् ॥

“ येषु पर्णेषु यो भुद्धके यदा तत्र भुजिं चरेत् । पर्णान्तरं नैं भुजीति तदा चैन्द्रवमाचरेत् ॥ ५

**गौतमोऽपि—**

“ एकजातीयपर्णेषु कांस्ये चाभिन्नभाजने । भोजनं कुरुते यस्तु संपूर्णायुर्भवेदिह ” ॥

**रजस्वलापक्वान्नभोजने प्रायश्चित्तम् । रजस्वलापकभोजने मार्कण्डेयः—**

“ अज्ञात्वा पुष्पिणी नारी कृत्वा वै पचनक्रियाम् । पश्चाच्छुष्कं रजो दृष्टा यदा तस्मादपक्रमेत् ॥

“ तां दृष्टा भाषणं कृत्वा भुक्तवन्तो यदि द्विजाः । चान्द्रायणेन शुद्धः स्युः पञ्चगव्येन चेत्था ॥ १०

“ पुनः कर्म प्रकुर्वीरन् भवेयुः पापिनोऽन्यथा ” ॥ इति ।

**निषिद्धदिने द्विर्भोजने ब्रह्मायज्ञानकरणे च प्रायश्चित्तम् ।**

**निषिद्धदिने द्विर्भोजने स एव—**

“ अर्कद्विपर्वरात्रौ च मृताहात्पूर्ववासरे । तथा चतुर्दश्यष्टम्योः संक्रान्तौ च महोत्सवे ।

“ पितरौ व्याधिनाक्रान्तौ गुहणां दुःखसंभवे । श्रोत्रिये मरणं प्राप्ते महाराजनिपातने ।

१५

“ न द्विवारं समश्रीयान्नश्येत् द्विर्वारभोजनात् ” ॥

“ न द्विवारं समश्रीयात् विप्रो धर्ममनुस्मरन् । तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थं सहसा निष्कृतिं चरेत् ॥

“ पञ्चगव्येन शुद्धः स्यात् विप्रो द्विर्वारभोजने ” ॥ इति ।

**एतदनभ्यासविषयम् । अभ्यासे तु भोजनप्रकरणोक्तं द्रष्टव्यम् । स एव—**

“ वैश्वदेवं देवतार्च्च नित्यहोमं तथाविधम् । ब्रह्मयज्ञं पितृणां च तर्पणं द्विजवल्लभः ॥

२०

“ त्यक्त्वा भुक्त्वा तथा विप्रः सुरापीत्युच्यते बुधैः । तस्मकृच्छ्रं चरेत्पापी तस्मात्पापात्प्रमुच्यते ॥

“ पञ्चगव्येन पूतात्मा नान्यथा शुद्धिरिष्यते ” ॥ इति । एतदसकृत्करणविषयम् । सकृत्करणे तु

“ वेदोदितानां नित्यानां कर्मणां समतिकमे । स्नातकव्रतलोपे च प्रायश्चित्तमभोजनम् ” ॥ इति

मनूक्त ( ११२०३ ) एकरात्रोपवासो द्रष्टव्यः ।

**स्वस्वकाले गर्भाधानाद्यकरणे प्रायश्चित्तम् । स्वस्वकाले गर्भाधानाद्यकरणे हेमाद्रौ— २५**

“ स्नातवत्यामृतौ पत्न्यां चतुर्थे पञ्चमेऽहिं वा । कृत्वाऽभ्युदयिकं प्रातस्तद्रात्रौ मन्त्रपूर्वकम् ॥

“ गर्भाधानं ततः कुर्यात् प्रतिगर्भं न तत् स्मृतम् । अन्यथा गर्भधाती स्याद्यथा जारः तथैव सः ॥

“ प्राजापत्यत्रयं कुर्यात् द्वितीये पुनरार्तवे ।

“ सीमन्तपुंसवनयोः स्वकालाकरणे सति । प्राजापत्यद्वयं कृत्वा शुद्धो भवति नान्यथा ” ॥ इति ।

“ जातकर्म न कुर्वीत नास्तिक्याद्यदि पूर्वजः । प्राजापत्यद्वयं कुर्यान्नास्ति चौले तथा व्रते ॥ ३०

“ एकादशे द्वादशे वा नामकर्म विधीयते । अतिपत्तौ पिता कुर्यात् प्राजापत्यद्वयं ततः ॥

“ अन्नप्राशनचौलादिकाले कुर्याद्वितेऽपि वा ।

“ मुख्यकालपरित्यागादन्नप्राशनकर्मणः । व्रतबन्धे तु गौणं स्यात्प्राजापत्यमुदीरितम् ॥

“ देशकालानुरोधेन यदि चौलं विलम्बयते । प्राजापत्यद्वयं कृत्वा तत्पापं परिशोधयेत् ॥

“ पञ्चमाब्दं विलम्ब्यांशु शिशोरक्षरसंग्रहे । कायिकं तत्र कर्तव्यमन्यथा दोषमाप्नुयात् ॥

“ यदि कामादृष्टमाब्दं लङ्घयित्वा चरेद्व्रतम् । नवमे तस्कृच्छ्रं स्याद्वशमे तच्च कायिकम् ॥

“ एकादशो द्वादशो वा द्वातिक्रम्यैन्द्रवं चरेत् । तत आ षोडशात्कुर्यादैन्द्रवत्रयमेव च ॥

“ अजिनं मेषलां दण्डं ब्रह्मचारी यदि त्यजेत् । प्राजापत्यं पक्षमात्रे मासे ततं समाचरेत् ॥

५ “ अब्दमात्रपरित्यागे कुर्याच्चान्द्रायणवतम् ।

“ अग्निकार्यं ब्रह्मयज्ञं देवर्षिपितृपर्णम् । अकृत्वा वत्सरे चान्द्रं तत्परं पतितो हि सः ” ॥

उष्णोदकस्नाने प्रायश्चित्तम् । उष्णोदकस्नानादौ देवलः—

“ कूपोदकेन सप्ताहं स्नानमुष्णेन वारिणा । मृत्तिकाभिर्विना शौचं कृत्वा सप्ताहमेव च ॥

“ प्राजापत्यं विशुद्ध्यर्थं चरेत् पूतो भवेद्विजः । पञ्चगव्यं ततः पीत्वा शुद्धो भवति नान्यथा ” ॥ इति ।

१० यज्ञोपवीतादिना विना भोजने प्रायश्चित्तम् । यज्ञोपवीतादिनाविना भोजने सौं एव—

“ विना यज्ञोपवीतेन शिखया च द्विजोत्तमः । उच्छिष्ठो यदि मोहात्मा पापकृत्स भवेद्विजः ॥

“ उपोष्य रजनीमेकां पञ्चगव्येन शुद्ध्यति ” ॥ इति । शिखया शिखाबन्धेनेत्यर्थः ।

शिखोपवीतभ्रंशे प्रायश्चित्तम् । शिखानाशे तु गौतमः—

“ शिखां विना द्विजश्रेष्ठः कण्ठे गोवालरोमभिः । भूत्वा तद्वेषशान्त्यर्थं प्राजापत्यं समाचरेत् ॥

१५ “ यावच्छिखा पुनर्जीता तावत्कण्ठेण धारयेत् । ब्रह्माविष्णुमहेशार्थ्या ब्रह्मसूत्रस्य तन्नव ॥

“ एकस्मिंस्त्रुटिते विप्रः पुनर्धृत्वा नवं मुदा । नित्यकर्म प्रकुर्वीत त्रुटिं निक्षिपेजजले ॥

“ ब्रह्मसूत्रं तु वामांसात् भ्रष्टं स्याच्चतुरङ्गुलम् । प्राणायामत्रयं कृत्वा स्वस्थाने पूर्ववत् क्षिपेत् ॥

“ मणिबन्धे यदा भ्रष्टं प्राणायामसहस्रकम् । कृत्वा शुद्धिमवाप्नोति वामहस्तादधोगतम् ॥

“ यत्सूत्रं सहसा त्यक्त्वा धारयेदन्यसूत्रकम् ।

२० “ जले भ्रष्टं परित्यज्य सहस्रं वेदमातरम् । जप्त्वा शुद्धिमवाप्नोति नान्यथा शुद्धिरीति ” ॥ इति ।

भोजनकाले क्षुतादौ प्रायश्चित्तम् । भोजनकाले क्षुतादौ विष्णुः—

“ द्विजो भोजनकाले तु जृम्भणं क्षुतमेव च । अपानवायुमोक्षं वा कुर्वन्निष्कृतिमाचरेत् ॥

“ अन्यो दोभ्यां जलं धृत्वा तस्य मूर्धनि विन्यसेत् । पृच्छेत जन्मसदनं दिवा वा यदि वा निशि ॥

“ क्षुते च जृम्भणे चैव कृत्वैवं स विशुद्ध्यति ।

२५ “ अपानवायोरुत्सर्गं जातेऽन्नं परिवर्जयेत् । लोभेन भुक्त्वा तद्भक्तं स्नात्वा कायं समाचरेत् ” ॥

शिवनिर्माल्यभोजने प्रायश्चित्तम् । शिवनिर्माल्यभोजने देवलः—

“ शम्भोर्निर्वोदितं भक्तं तत्तर्थं शाकमेव वा । विप्रः सकृन्न भुञ्जीयात् भुक्त्वा ततं समाचरेत् ” ॥

मार्कण्डेयः—

“ शिवे निवेदितं भक्तं प्रत्येकं देवतां विना । द्विजोऽज्ञानाद्यदा भुङ्गेते तस्कृच्छ्रं समाचरेत् ” ॥ इति ।

३० सालग्रामादिसाहित्ये जाबालिः—

“ शिवे विष्णवादिमदेवर्वैष्टिते यत्समर्पितम् । तद्भुक्त्वा विप्रवर्योऽसौ न भवेद्वेषभागज्ञेनः ” ॥

हारीतः—

“ सालग्रामादिभिः शम्भोर्वैष्टितस्य यद्विष्टिम् । तद्भुक्त्वा द्विजैर्नित्यं ततोष्यं च पिवेद्विजः ” ॥ इति ।

फलाधिक्यमाह योगयाज्ञवल्क्यः—

“ शिवे निवेदितं भक्तं सालग्रामादिवेष्टिते । तद्भुक्त्वा चान्द्रं कृत्वान्नात्र संशयः ।

३५ “ अन्यथा मांसतुल्यं स्यात्ततोयमसृजासमम् ” ॥ इति ।

पत्न्या सहभोजने प्रायश्चित्तम् । पत्न्या सहभोजने देवलः—

“द्विजः कामातुरो यस्तु पत्न्या सह यदान्नभुक् । पश्चाच्चान्द्रायणं कृत्वा शुद्धिमाप्नोति पौर्विकीम्”॥इति।

गालवः—“एकयांने समारोहमेकपात्रे तु भोजनम् । विवाहे पथि यात्रायां कृत्वा विप्रो न दुष्यति ॥

“अन्यथा दोषमाप्नोति पश्चाच्चान्द्रायणं चरेत् । अभ्यासे द्विगुणं चैव कृत्वा शुद्धिमवाप्नुयात्”॥

गौतमः—“पिताऽनुजस्य पुत्रस्य तयोः प्रीतिं समुद्धन् ।

६

“निक्षिपेत्कवलं तत्र न दोषस्तस्य भोजने । ताभ्यां सह न भुञ्जीत भुक्त्वा दोषमवाप्नुयात्”॥ इति ।

नीलवस्त्रधारणनिषेधः । नीलवस्त्रादिधारणे आपस्तम्बः—

“नीलीरकं यदा वस्त्रं ब्राह्मणोऽङ्गेषु धारयेत् । अहोरात्रोषितो भूत्वा पञ्चगव्येन शुद्ध्यति ॥

“रोमकूपे यदा गच्छेद्रसो नील्यास्तु कस्यचित् । त्रिवर्णेषु तु मासान्त्यं तपस्कृच्छ्रँ विशोधनम् ॥

“पालनं विक्रियं चैव तद्वृत्त्या तूपजीवनम् । पतनं तु भवेद्विप्रः त्रिभिः कृच्छ्रैव्यपोहति ॥

१०

“स्नानं दानं तपो होमः स्वाध्यायः पितृतर्पणम् । वृथा तस्य महायज्ञा नीलीसूत्रस्य धारणात् ॥

“नीलीमध्ये तु गच्छेत्यः प्रमादाद्वाह्मणः कचित् । अहोरात्रोषितो भूत्वा पञ्चगव्येन शुद्ध्यति ॥

“नीलीदार्ढर्यदा भिन्न्याद्वाह्मणस्य शरीरकम् । शोणितं दृश्यते यत्र द्विजश्चान्द्रायणं चरेत् ॥

“स्त्रीणां क्रीडार्थसंभोगे शयनीयं न दुष्यति ।

“नीलरक्तेन वस्त्रेण यदन्नमुपजीव्यते । दातारं नोपतिष्ठेत भोक्ता भुञ्जीत किल्बिषम् ।

१५

“कम्बले पट्टवस्त्रे च नीलीरागो न दुष्यति” ॥ नीलीवस्त्रं धृत्वा भोजने देवलः—

“नीलीवस्त्रं तु तच्चिह्नं धृत्वा कर्म करोति यः । स विप्रस्तु न कर्महस्तत्कर्म विफलं भवेत् ॥

“एकस्मिन् दिवसे भुक्त्वा धृत्वा रक्तमयं पठम् । कुर्याद्विविशुद्ध्यर्थं यावकं मुनिचोदितम् ॥

“अभ्यासे तु पराकं स्यात् वत्सरे चान्द्रमुच्यते” ॥ इति । तच्चिह्नं वस्त्रान्ते मध्ये वा नीलतन्तुभि-

श्चिह्नितमित्यर्थः । गौतमः—

२०

“नीलवस्त्रं पटं धृत्वा विप्रस्तचिह्नमेव वा । कृत्वा कर्मणि भुक्त्वा वा न तत्कर्मफलं लभेत् ॥

“भोजने मांसभुग्विप्रः सर्वथा परिवर्जयेत्” । देवलः—

“नीलवस्त्रं तु तच्चिह्नं धृत्वा ज्ञानान्तु यश्चरेत् । स विप्रस्तवशुचिनिर्त्यं न कर्महर्तो भवेद्विह” ॥ इति ।

परान्नभोजने प्रायश्चित्तम् । परान्नभोजने शौनकः—

“यस्मिन्वयं जपेन्मन्त्रं शतवारं दिने दिने । सदा परान्नभोक्ता च विमुच्येत हि किल्बिषात्” ॥ २५

यमः—

“न पङ्कौ विषमं दद्यान्न याचेन्न च दापयेत् । प्राजापत्येन कृच्छ्रेण मुच्यते कर्मणस्ततः” ॥ इति ।

नवश्चाद्वादिभोजने प्रायश्चित्तम् । श्राद्धभोजने विष्णुः—

“प्राजापत्यं नवश्चाद्वे पादोनं त्वाद्यमासिके । त्रैपक्षिके तदर्थं स्यात्पञ्चगव्यं चैव मासिके” ॥ इति ।

एतच्चापद्विषयम् । अनापदि तु—

३०

“चान्द्रायणं नवश्चाद्वे प्राजापत्यं तु मिश्रके । एकाहस्तु पुराणेषु प्रायश्चित्तं विधीयते” ॥

इति हारीतोक्तं द्रष्टव्यम् ।

‘प्राजापत्यं तु मिश्रक’ इति आद्यमासिकविषयम् । ऊनमासिकादिषु तु पादोनप्राजापत्यादीनि कर्तव्यानि । तदुक्तं चतुर्विंशतिमते—

“प्राजापत्यं नवश्राद्धे पादोनं त्वाद्यमासिके । त्रैपक्षिके तदर्थं स्यात् द्वौ पादौ मासिके ततः ॥

“पादोनं कुच्छुमुद्दिष्टं षण्मासे चाब्दिके तथा । त्रिरात्रं चान्यमासेषु प्रत्यब्दं चेदहः स्मृतम्” ॥ इति ।

५ अत्र ‘प्राजापत्यं नवश्राद्ध’ इत्ययमंश आपद्विषयः । अनापदि चान्द्रायणम् । तथा मरीचिः—

“नग्नश्राद्धं नवश्राद्धमाशौचम्यन्तरे द्वयम् । तत्रामं प्रतिगृह्याशु महारौरवमश्चुते ॥

“नग्नश्राद्धे नवश्राद्धे चान्द्रायणमुद्दीरितम् ॥

“आद्यश्राद्धे तथा चान्द्रं सपिण्डीप्रेतभोजने । चान्द्रायणं पराकं वा कुर्यात्तदोषशान्तये” ॥ इति ।

‘प्राजापत्यं तु मिश्रक’ इत्येतदावृत्ताद्यमासिकविषयम् । तत्र चान्द्रायणं महैकोद्दिष्टविषयम् । तद-  
१० नावृत्तौ तु चान्द्रायणत्रयं कार्यम् ।

“आद्यमासिकमेकश्वेद्भुद्धके ब्राह्मात्स हीयते । चान्द्रायणत्रयं कृत्वा कूष्माण्डैर्जुहुयात्ततः ॥

“पुनः कर्म प्रकुर्वीत ततः पूतो भवोद्दिजः” ॥ इति स्मृतेः । यत्तु शङ्खवचनम्

“चान्द्रायणं नवश्राद्धे पराको मासिके स्मृतः । पक्षत्रये तुं कुच्छुं स्यात् षण्मासे कुच्छुं एव तु ॥

“आब्दिके पादकुच्छुं स्यात् एकाहः पुनराब्दिके” ॥ इति । अत्र यत्पराकादिविधानं तत्सर्पादि-  
१५ हतविषयम् आपद्गुक्तेयविषयं च ।

“चण्डालादुदकात्सर्पात् ब्राह्मणाद्वैतादपि । दंष्ट्रिभ्यश्च पशुभ्यश्च मरणं पापकर्मणाम् ॥

“पतनानशनैश्चैव विषोद्भन्यनतस्तथा । भुद्धके यः षोडशश्राद्धे कुर्यादिन्दुवतं द्विजः” ॥

“आपाङ्गुक्तेयान्यदुद्दिश्य श्राद्धमेकादशेऽहनि । ब्राह्मणस्तत्र भुक्त्वाऽन्नं शिशुचान्द्रायणं चरेत् ॥

“मासश्राद्धे तथा भुक्त्वा तस्मुच्छ्रेण शुध्यते । संकाल्पिते तथा भुक्त्वा त्रिरात्रं क्षपण स्मृतम्” ॥ इति ।  
२० भारद्वाजेन प्रायश्चित्तविशेषामिधानात् ।

श्राद्धभोजने ब्रह्मचारिणः प्रायश्चित्तम् । ब्रह्माचारिणस्तु बृहद्यमो विशेषमाह—

“मासिकादिषु योऽश्नीयात् असमाप्ततो द्विजः । त्रिरात्रमुपवासोऽत्र प्रायश्चित्तं विधीयते ॥

“प्राणायामशतं कृत्वा घृतं प्राश्य विशुद्धते” ॥ इदमज्ञानविषयम् । ज्ञानपूर्वके तु स एव—

“मधु मांसं तु योऽश्नीयाच्छ्राद्धे सूतक एव वा । प्राजापत्यं चरेत्कुच्छुं व्रतशेषं समापयेत्” ॥ इति ।

२५ क्षत्रियादिश्राद्धभोजने प्रायश्चित्तम् । क्षत्रियादिश्राद्धभोजने चतुर्विंशतिमते—

“चान्द्रायणं नवश्राद्धे पराको मासिके स्मृतः । त्रैपक्षिके सांतपनं कुच्छुं मासद्वये स्मृतम् ॥

“क्षत्रियस्य नवश्राद्धे व्रतमेतदुदाहतम् । वैश्यस्याधार्धिकं प्रोक्तं क्षत्रियात्तु मनीषिभिः ॥

“शूद्रस्य तु नवश्राद्धे चरेच्चान्द्रायणद्वयम् ।

“सार्धं चान्द्रायणं मासे त्रिपक्षे त्वैन्दवं स्मृतम् । मासद्वये पराकं स्याद्वृद्धं सान्तपनं स्मृतम्” ॥ इति ।

३० यत्तशनसोक्तम्

“दशकृत्वः पित्रेदापो गायत्र्या श्राद्धभुग्दिजः । ततः सन्ध्यामुपासीत शुध्येत्तु तदनन्तरम्” ॥ इति ।  
तदनुक्तप्रायश्चित्तश्राद्धविषयम् ।

नान्दीश्राद्धभोजने प्रायश्चित्तम् । संस्काराद्भुज्ञाद्धभोजने व्यासः—

“प्रवृत्ते चूडाहोमे तु प्राङ्गनामकरणात्तथा । चरेत्सान्तपनं भुक्त्वा जातकर्मणि चैव हि ॥

“अतोऽन्येषु तु भुक्त्वान्नं संस्करेषु द्विजोत्तमः । नियोगादुपवासेन शुद्ध्यते नित्यभोजनात्” ॥ इति ।  
सीमन्तोन्नयनादिषु धौम्यो विशेषमाह—

“ब्रह्मौद्देने च सोमे च सीमन्तोन्नयने तथा । जातश्राद्वे नवश्राद्वे भुक्त्वा चान्द्रायणं चरेत्” ॥ इति ।  
ब्रह्मौद्दनाख्यं कर्मग्न्याधानाङ्गभूतम् । यत्तु भारद्वाजेनोक्तम्—

“ भुक्तश्वेत्पार्वणश्राद्वे प्राणायामान् षडाचरेत् । उपवासस्त्रिमासादिवत्सरान्तं प्रकीर्तितम् ” ॥ ५  
एतदप्यापद्विषयम् । अनापवधिकप्रायश्चित्तस्योक्तत्वात् । आमश्राद्वे सर्वत्रार्धम् । “ आमश्राद्वे  
भवेदर्धम् ” इति षट्क्रिंशन्मतेऽभिधानात् ।

**आद्वशिष्टान्नभोजननिषेधः ।** आद्वशिष्टान्नभोजनं प्रतिषेधति देवलः—

“ अमायां पैतृकश्राद्वे मासिश्राद्वे महालये ।

“ श्राद्वे च षण्ठवत्याख्ये सपिण्डीकरणे तथा । मासिकेषु तथा विप्रो न कुर्याच्छेषभोजनम्” ॥ १०  
**महाभारते—**

“ श्राद्वकर्मणि भोक्तारो भोक्तारो यज्ञकर्मणि । श्राद्वशिष्टान्नभोक्तारस्ते वै निरयगामिनः ॥

“ सगोत्राणां सकुल्यानां न दोषः शिष्टभोजने । पुत्रिणामन्यगोत्राणां विधवानां तु दुष्यति ” ॥

**जाबालिः—**

“ श्वशुरस्य गुरोर्वपि मातुलस्य महात्मनः । एतेषां श्राद्वशिष्टान्नं भुक्त्वा दोषो न विद्यते ॥ १५

“ पित्रोश्च ब्रह्मनिष्ठस्य ज्येष्ठप्रातुश्च ज्ञानिनः । पैतृकेषु न भोक्तव्यं विधवानां तु सर्वदा ॥

“ विप्रस्त्वन्यकुले श्राद्वे कुर्याच्चेच्छेषभोजनम् । ग्राजापत्यं विशुद्धिः स्यात् ज्ञातीनां तु न दोषभाक् ।

“ व्रतिनां च स्वपित्रादौ न दोषः शिष्टभोजने । विधवा केशवपनं कृत्वा तसं समाचरेत् ॥

“ यतिश्च ब्रह्मचारी च पराकं कृच्छ्रमाचरेत् । संन्यासी वपनं कृत्वा लक्षं च प्रणवं जपेत् ” ॥ इति ।

चन्द्रिकादावनेऽस्मृतिवचनाभिधानपूर्वकं श्राद्वशिष्टान्नभोजनं नै दोषावहमित्युक्तम् । तच्च २०

प्रतिपादितमधस्तात् । हेमाद्रौ तु विशेषवचनमुदाहृत्य श्राद्वशिष्टान्नभोजने प्रायश्चित्तं चाभिहितम् ।

अत्र निषेधस्य प्राबल्यात् श्राद्वशिष्टान्नभोजने प्रायश्चित्तोपदेशात् शिष्टाचारबाहुल्याच्च तद्वर्जनमेव  
युक्तमित्याहुः ।

**चौलायन्नभोजने देवलः—**

“ चौलकर्मणि सीमन्ते मुहूर्ताद्वोजने परम् । सुरापानसमं प्रोक्तमतो नेच्छन्ति सूरयः ” ॥ २५

गौतमः—“सीमन्ते पुंसवे चैव चौले कर्मणि यो द्विजः । असगोत्रस्तदशादः सुरापीत्युच्यते बुधैः” ॥

**मार्कण्डेयः—**

“ चौले कर्मणि सीमन्ते पुंसवे योऽसगोत्रजः । मुहूर्ताद्विष्वभुक्तपापी सुरापानमवाप्नुयात् ॥

“ प्रायश्चित्तं द्विजैः प्रोक्तमत्र शिष्टान्नभोजने । मुहूर्तात्परतस्ततं तत्पूर्वं भोजनं चरन् ॥

“ जप्त्वा शुद्धिमवाप्नोति सहस्रं वेदमातरम् । स्त्रीणामर्थं यतीनां च व्रतिनां चान्द्रमुच्यते ॥ ३०

“ चौलकर्मणि पूर्वत्रापत्र च समं भवेत् ” ॥ स्मृत्यन्तरे च—

“ चौलोपनयने चैव सीमन्ते पुंसवे तथा । क्रतूत्सवेऽप्यहशेषं भुक्त्वा चान्द्रायणं चरेत् ” ॥

अहशेषमिति वचनात् रात्रौ तद्गृहभोजने नैतत् प्रायश्चित्तम् । उच्छिष्टभोजनादीनां प्रायश्चित्त-  
माहिकपरिच्छेदे भोजनप्रँकरणे निरूपितम् । तत एवावधार्यम् ।

अनुक्तप्रायश्चित्तेषु शङ्खलिखितौ—

“ क्रयविक्रयदुष्टभोजनप्रतिग्रहेषु अनुद्विष्टप्रायश्चित्तेषु सर्वेषु चान्द्रायणं प्राजापत्यं वा ” ॥ इति ।  
मनुः ( १११६० )—

“ अभोज्यमन्म नात्तव्यमात्मनः शुद्धिमिच्छता । अज्ञातभुक्तमुद्गार्यं शोध्यं वाप्याऽशु शोधनैः ” ॥

५ स्मृत्यन्तरे तु—

“ भक्ष्याभक्ष्याप्यशेषाणि ब्राह्मणानां विशेषतः । तत्र शिष्टा यथा ब्रूयुस्तत्कर्तव्यमिति स्मृतम् ” ॥

अविक्रेयविक्रये प्रायश्चित्तम् । अविक्रेयविक्रये हारीतः—“ गुडतिलपुष्पमूलफल-पक्काभ्यविक्रये सोमेलाक्षालवणमधूनां तैलक्षीरतकदधिघृतगन्धचर्मवाससामन्यतमविक्रये चान्द्रायणं तथोर्णकेशकेसरिभूधेनुवेशमाश्मशस्त्रविक्रये च मत्स्यमांसास्थिशृङ्गनखशुक्रिविक्रये तस्मृच्छ्रं १० हिङ्गुगुगुलुहरितालमनशिलाञ्जनैरिकलाक्षालवणमणिमुक्ताप्रवालवैणवस्त्रमयेषु च आरामतटाकोप-वनपुष्करिणीसुकृतविक्रये त्रिष्वणस्नाय्यधःशायी चतुर्थकालाहारो दशसहस्रं जपेद् गायत्रीं वत्सरेण पूतो भवति हीनमानोन्मानोन्मापनसंकरसंकीर्णविक्रये च ” इति ।

चतुर्विंशतिमते—

“ सुराया विक्रयं कृत्वा चरेत्सौम्यचतुष्टयम् । लाक्षालवणमांसानां चरेच्चान्द्रायणत्रयम् ॥

१५ “ मध्वाज्यतैलसोमानां चरेच्चान्द्रायणद्वयम् । पयःपायसापूपानां चरेच्चान्द्रायणत्रयम् ॥

“ दध्याज्येष्वरसानां च गुडखण्डादिविक्रये । सर्वेषां स्नेहपक्कानां पराकं तु समाचरेत् ॥

“ सिद्धाभ्यविक्रये विप्रः प्राजापत्यं समाचरेत् । उपवासं तु तकस्य नकं काश्चैनविक्रये ॥

“ पूर्णीफलानि मञ्जिष्ठां राजसर्जूरेव च । एतेषां विक्रये कृच्छ्रं पनसस्य दिनद्वयम् ।

“ कदलीं नारिकेलं च नारङ्गं बीजपूरकम् । एतेषां पादकृच्छ्रं स्यात् जम्बीरादेस्तथैव च ॥

२० “ कस्तूरिकादिगन्धानां विक्रये कृच्छ्रमाचरेत् । कर्पूरादेस्तदर्थं स्याद् दिनं हिंग्वादिविक्रये ॥

“ तिलानां वि यं कृत्वा प्राजापत्यं समाचरेत् । यज्ञार्थं कृषिजातानां दानलघ्वस्य विक्रये ॥

“ रक्तपीतानि वस्त्राणि कृष्णाजिनमथापि वा । एतेषां विक्रये कृच्छ्रं गर्गस्य वचनं यथा ॥

“ गोविक्रयं द्विजः कुर्यात्तिभार्थं धनमोहितः । प्राजापत्यं प्रकुर्वीत गजानां त्वैन्दवं स्मृतम् ॥

“ खराश्वाजादिकानां च करभाणां च विक्रये । पराकं तत्र कुर्वीत शानि द्विगुणमाचरेत् ॥

२५ “ नारीणां विक्रयं कृत्वा चरेच्चान्द्रायणं व्रतम् । द्विगुणं पुरुषाणां च व्रतमाहुर्मनीषिणः ॥

“ चान्द्रायणं प्रकुर्वीत एकाहं वेदविक्रये । अङ्गानां तु पराकं स्यात् स्मृतीनां कृच्छ्रमाचरेत् ॥

“ इतिहासपुराणानां चरेत्सांतपनं द्विजः । रहस्यपात्ररात्राणां कृच्छ्रं तत्र समाचरेत् ॥

“ गाथानां नीतिशास्त्राणां प्राकृतानां तथैव च । सर्वासामेव विद्यानां पादकृच्छ्रं समाचरेत् ” ॥ इति ।

नारङ्गः—“ तण्डुलांश्च तिलान्माषान् फलपुष्पगुडायपि । नागवल्लीदलं पूर्णपर्णं कर्पूरमेव च ॥

३० “ कस्तूरीं कुड्कुमं मूलं मुद्रं दधि घृतं पयः । कृष्णाजिनं च रुद्राक्षं ब्रह्मसूत्रं कमण्डलुम् ॥

“ ताम्रं कांस्यं तथा वस्त्रं कम्बलं रोचनं तथा । तिन्तिणीं लवणं मूलं पक्कमन्म द्विजो यदि ॥

“ विक्रयित्वा तु यो जीवेत् स तु शद्रो न संशयः । एतानि विक्रयित्वा तु हव्यकव्यानि नाचरेत् ॥

“ एतानि विक्रयित्वा तु प्राजापत्यं समाचरेत् । धनस्य संग्रहार्थं तु द्विगुणं कृच्छ्रमाचरेत् ॥

“ विप्रस्तु पक्षमात्रं च गोरसं विक्रयेद्यदि । तस्य देहविशुद्ध्यर्थं तस्मृच्छ्रमुद्दीरितम् ॥

३५ “ मासमात्रं विक्रयित्वा चरेच्चान्द्रायणव्रतम् । ऋतुद्वयं विक्रयित्वा मण्डलं यावकं चरेत् ॥

“ऋतुत्रयं विक्रयित्वा ब्रह्महन्ता भवेद् ध्रुवम् । षण्मासं गोरसं पक्षं पीत्वा शुद्धिमवान्नयात् ॥

“लवणं पक्षमन्नं च यदि मासं तु विक्रयेत् । तस्यैव निष्कृतिरियं यावकं वत्सरं चरेत् ॥

“तस्योपनयनं भूयः कर्तव्यं शुद्धिमिच्छता” ॥

**कूर्मपुराणे-**“अश्वेनुमनुष्याश्च रासमः कुञ्जरस्तथा । कन्या नारी च मेषश्च पुस्तकं ब्रह्मसूत्रकम् ॥

“लवणं पलुं चर्म लशुनं गृजनं तथा । पिप्पली च मरीचाश्च हरिद्राश्च लवङ्गिकाः ॥ ५

“ओषधानि च यावन्ति मत्स्यकुकुटसूकराः । हिङ्गजीरकवस्तूनि ताङ्गं कांस्यादिकं तथा ॥

“एतानि मूल्यैः कृत्वा तु स्वल्पैर्वापि ततोऽधिकैः । विक्रयित्वाऽत्मभरणं कुर्यादिस पापभाक् ॥

“मृत्वा नरकमासाद्य किमिरुपे पतत्यधः । तस्मादेतद्विशुद्ध्यर्थं प्रायश्चित्तमिहोच्यते ॥

“एकवारं द्विवारं वा बहुवारमनेकशः । तसं पराकं चान्द्रं च यावकं वर्षमाचरेत् ॥

“तस्योपनयनं भूयः पञ्चगव्येन शुद्ध्यति ॥ १०

“वृद्धेरपि च या वृद्धिश्चकवृद्धिरुदाहता । मासिमासि च या वृद्धिः सा शिखावृद्धिरिष्यते ॥

“ताम्यां जीवेद्यदा विप्रः स वार्धुषिक उच्यते ।

“मासं जीवेद्यदा विप्रः पराकं कृच्छ्रमाचरेत् । मासद्वये तु तसं स्याच्चान्द्रं मासत्रये स्मृतम् ॥

“षण्मासे तु महाचान्द्रं वत्सरे द्विगुणं स्मृतम् । पतितः स्यात्परं विप्रः सर्वकर्मबहिष्कृतः” ॥

**ऋणादि कृत्वा ब्रताद्याच्चरणनिषेधः । हेमाद्रौ—**

१५

“स्वस्याकिंचन्यमज्ञात्वा ऋणं कृत्वा व्रतं चरेत् । भोगासक्तश्च यः स्वात्मविक्रयीत्युच्यते बुधैः ॥

“नित्यकर्मणि काम्यानि इष्टापूर्तादिकानि च । सर्वं तस्यैव भवति स्वयं वै निष्फलो भवेत् ॥

“अर्वाग्धनस्य द्वैगुण्यात् तस्माद्यात्सवृद्धिकम् । ऊर्ध्वं तु कर्मणां भ्रंशात् पतितः स्यान्न संशयः ॥

“हिरण्यगर्भं तस्योक्तं प्रायश्चित्तं महर्षिभिः । धनिने च धनं दत्वा प्रायश्चित्तं समाचरेत्” ॥ इति ।

“कल्पान्ते भ्रूणहा मुच्येतर्णीं तु न कदाचन” इति वचनमकृतप्रायश्चित्तविषयम् । २०

यन्तु संवर्त आह—

“आभिहोत्री तपस्वी च ऋणवान्नियते यदि । अग्निहोत्रं तपश्चैव सर्वं तद्वनिनां धनम्” ॥

इति तद्वैगुण्यादूर्ध्वं मरणे धनग्राहिपुत्रावभावे चावगन्तव्यम् ।

**ब्राह्मणादिविक्रये प्रायश्चित्तम् । हेमाद्रौ—**

“पूर्वजः पूर्वजं वापि बाहुजोरुजंपादजान् । वशीकृत्यौषधैर्मन्त्रैर्विक्रयेद्यादि पापधीः ॥ २५

“बाले चान्द्रं द्विजे प्रोक्तं पौगण्डे तद्दद्यं चरेत् । तरुणे तु महाचान्द्रं प्रौढैः प्रोक्तं तु तत्त्वयम् ॥

“भिन्नवर्णे विक्रये तु सहस्रं कृच्छ्रमाचरेत् ।

“विप्रं यः क्षत्रियो हृत्वा विक्रयेद्यादि पापधीः । ब्रह्महत्याव्रतं कृत्वा शुद्धिमाप्नोति पौर्विकीम् ॥

“तदेनैव शुद्धः स्यादूर्जो विप्रविक्रये । शूद्रस्तु विक्रयेद्विग्रं मौसलं वधमर्हति ॥

“जारजं वाऽत्मजं वापि विक्रीणीयात्सुतं यदि । तद्वोषपरिहारार्थं महासान्तपनं चरेत् ॥ ३०

“बाले सान्तपनं प्रोक्तं पौगण्डे तद्दद्यं स्मृतम् । कौमारे प्रौढकाले च महासान्तपनत्रयम् ॥

“स्वपल्नीं विक्रयेद्यस्तु सतीं दुष्टामथापि वा । सतीं विक्रीय चान्द्रं स्यात्पराकं दुष्टचारिणीम् ॥

“बालिकायां षड्बदं स्यात् बुद्धायां नास्ति निष्कृतिः । ज्ञात्वा विक्रयते यस्तु द्विगुणं व्रतमाचरेत् ॥

“विवाहार्थं धनं गृह्णन् यत्किंचिद्व्याजमाश्रितः । स कन्याविक्रयी तस्य शुद्धिश्चान्द्रायणत्रयात् ॥

“द्विजः संपाद्य यो दासीं गृहकर्मसुखाप्तये । युवतिं विक्रायित्वा तां षडव्दं कृच्छ्रमाचरेत् ॥  
 “स्नानादिनित्यकर्माणि इष्टापूर्तादिकानि च । उपोषणब्रतादीनि श्रौतस्मार्तादिकानि च ॥  
 “विक्रीणीयान्तु यो विप्रो माघस्नानं तथैव च । चान्द्रयणत्रयं कृत्वा पुनःसंस्कारकृत्तथा ॥  
 “पञ्चगव्यं ततः पीत्वा शुद्धिमाप्नोति नैष्ठिकीम्” ॥

५ श्रुतिस्मृत्यादेः विक्रये प्रायश्चित्तम् । वसिष्ठः—

“श्रुतिं स्मृतिं धर्मशास्त्रं पुराणं ज्योतिषं तथा । पुस्तकं फलकं वापि तत्साधनमथापि वा ॥  
 “विक्रयेद्यदि लोभात्मा महान्तं नरं ब्रजेत् । चान्द्रायणं पराकं वां कृत्वा शुद्धिमवाप्नुयात्” ॥ इति ।  
 मार्कण्डेयः—“सालग्रामशिलां यो वै तत्तच्चक्राङ्कितां द्विजः ।  
 “शिवलिङ्गं चक्रपाणिप्रतिमां यदि विक्रयेत् । चान्द्रायणं प्रकुर्वीत पश्चात्तापसमन्वितः ॥  
 १० “लक्ष्मीनृसिंहं वामनं च गोपालं श्रीधरं तथा । लक्ष्मीनारायणं चैव दधिवामनमेव च ॥  
 “हिरण्यगर्भमित्यादिमूर्तीः पापापहारिणीः । रामादिविक्रये विप्रश्चेच्चान्द्रायणत्रयम् ॥  
 “लक्ष्मीनारायणं चैव तद्वयं दधिवामने । महाचान्द्रं प्रकुर्वीत लक्ष्मीनृसिंहविक्रये ॥  
 “पराकं देहशुद्ध्यर्थं चरेद्विप्रो विचारयन् । लिङ्गे तु स्फाटिके चैव तथा मारकते द्विजः ॥  
 “मासं दीक्षामुपागम्य प्रातः स्नात्वा यथाविधि ।  
 १५ “सूर्योदयं समारम्भ्य यावदस्तंगतो रविः । प्रत्यहं दशसाहस्रं जपेच्चैवं षडक्षरम् ॥  
 “फलाहारं प्रकुर्वीत यदा मन्दायते रविः । स्थणिडले शश्यनं कृत्वा मासान्ते शुद्धिमाप्नुयात्” ॥ इति ।  
 जलाग्न्यादिषु भर्तुमुद्यम्य निवृत्तस्य प्रायश्चित्तम् । चतुर्वर्णेषु यः कोऽपि स्वात्मघातार्थ-  
 मुपैक्रम्य कथंचित् वातात्प्रागेव निवर्तेत तस्य प्रायश्चित्तं प्रश्चपूर्वकमाह पराशारः ( १२।५-८ )—  
 “जलाग्निपतने चैव प्रव्रज्यानशनेषु च । प्रत्यावसितवर्णनां कथं शुद्धिर्विधीयते ॥  
 २० “प्राजापत्यद्वयैनैव तीर्थाभिगमनेन च । वृषेकादशादानेन वर्णः शुध्यन्ति ते त्रयः ॥  
 “ब्राह्मणस्य प्रवक्ष्यामि वनं गत्वा चतुष्पथे । सशिखं वपनं कृत्वा प्राजापत्यद्वयं चरेत् ॥  
 “गोद्वयं दक्षिणां दद्यात् शुद्धिं पाराशरोऽब्रवीत् । मुच्यते तेन पापेन ब्राह्मणत्वं च गच्छति” ॥ इति ।  
 नद्यादिप्रवेशनमग्निप्रवेशनं भूगुपतनं महाप्रस्थानगमनमनशनं चेति जलाग्न्यादयः पञ्च मरणहेतवः ।  
 जलादिमरणं द्विविधम् । विहितं प्रतिषिद्धं चेति । तत्र विहितमपि द्विविधम् । काम्यतपोरुपं प्राय-  
 २५ श्चित्तरूपं चेति । तत्तु कलौ वर्जनीयम् । युगान्तरेष्वपि विहितत्वेन न प्रायश्चित्तर्हम् । क्रोधादिना  
 यज्जलादिमरणं तत् प्रतिषिद्धम् । तदेवात्र परिशिष्यते । जलाग्नीति विषवन्धनोद्वन्धनादेरप्युपलक्षणम् ।  
 तत्र मर्तुमुद्यम्य मृतस्य प्रायश्चित्तं नास्ति । तत्कर्तुरभावात् । यस्तूद्यम्य मरणान्विवर्तते तस्योद्यम-  
 निमित्तमिदं प्रायश्चित्तम् । प्रत्यवासिता निवृत्ताः । क्षत्रियस्य प्रायश्चित्तद्वयं वैश्यस्य तीर्थयात्रा  
 शूद्रस्य वृषसहितगोदशकदानं ब्राह्मणस्य वनगमनादि व्रतम् । आत्मनो हननोद्यमेन ब्राह्मणत्वमप-  
 ३० गतं चण्डालत्वमागतम् । पुनर्वृत्तचरणेन चण्डालत्वनिवृत्तौ पुनः पूर्वसिद्धं ब्राह्मणं प्रतिपद्यते ।  
 तदाह वृद्धपराशारः—  
 “अनाशकान्विवृतस्तु चातुर्वर्णर्यव्यवास्थितः । चण्डालः स तु विजेयो वर्जनीयः प्रथत्नतः ॥  
 “ब्राह्मणानां प्रसादेन तीर्थाभिगमनेन च । गवां च दश दानेन वर्णः शुध्यन्ति ते त्रयः ॥  
 “ब्राह्मणस्य प्रवक्ष्यामि गत्वारण्यं चतुष्पथम् । सशिखं वपनं कृत्वा त्रिसन्ध्यमवगाहनम् ॥

“ साविद्यष्टसहस्रं तु जपेच्चैव दिने दिने । मुच्यते सर्वपापेभ्यो ब्राह्मणत्वं च गच्छति ।  
“भैक्षार्थं विचरेद् ग्रामं गृहान् सप्त वने वसन् । धौतां भिक्षां समश्रीयादबद्धर्वेन विशुद्ध्यति” ॥ इति ।  
तत्रैव व्रतान्तराण्याह वासिष्ठः (२३।१९-२२) — “जीवन्नात्मत्यागी कृच्छ्रं वा द्वादशरात्रं चरेत् ।  
त्रिरात्रं वोपवसेत् । नित्यं स्निग्धेन वाससा । “ प्राणानात्मनि संयन्य त्रिः पठेद्गमर्षणम् ।  
“अपि वैतेन कल्पेन गायत्रीं परिवर्तयेत् । अपि वाग्मिपाधाय कूष्माण्डैर्जुहुयात् घृतम् ” ॥ इति ॥ ५

तत्र जपहोमौ विद्वद्विषयौ कल्पनीयौ । द्वादशरात्रित्रात्रौ त्वविद्वद्विषये शक्ताशक्तमेदेन  
व्यवस्थिताविति माधवीये ।

**पारिव्राज्यात् प्रचयुतौ प्रायश्चित्तम्** । “ प्रवज्यानशकेन च ” इति पराशरवरचने  
यः प्रवज्याशब्दः तस्यार्थान्तरमप्युक्तं तत्रैव । परिवृज्यते विवर्ज्यते । तथा च सति पारि-  
व्राज्यात् प्रचयुतस्य ब्राह्मणस्य प्राजापत्यं प्रायश्चित्तमुक्तं भवति । तदिदं श्रद्धालोः पुनरुप- १०  
नयनादिपुरःसरं पारिव्राज्यं जिघृक्षोर्वेदितव्यम् । मोहान्निवृत्तौ संवर्तः—

“ संन्यस्य दुर्मतिः कश्चित् प्रत्यापत्तिं बजेद्यदि । स कुर्यात्कृच्छ्रमश्रान्तः षण्मासान् वत्यनन्तरम् ॥

“ पुनः परिव्रजेद्विप्रो यथाविधि समाहितः ” ॥ इति । अत्यन्ताशक्तमुग्धविषये वृद्धपराशरः—

“ यः प्रत्यवसितो विप्रः प्रवज्यातो विनिर्गतः । अनाशकनिवृत्तश्च गार्हस्थ्यं चेच्चिकीर्षति ॥

“ चरेत् त्रीणि च कृच्छ्राणि त्रीणि चान्द्रायणानि चाजातकर्मादिभिः सर्वैः संस्कृतः शुद्धिमाप्यात् ” ॥ इति ॥ ५

शक्तो यस्तु पुनः पारिव्राज्यं न जिघृक्षति तस्य मरणान्तिकं राजदासत्वादिकम् ।

अत्र नारदः—

“ राज्ञ एव तु दासः स्यात् प्रवज्यावसितो द्विजः । न तस्य प्रतिमोकोऽस्ति न विशुद्धिः कथंचन ” ॥ इति  
कात्यायनः—

“ प्रवज्यावसिता यत्र त्रयो वर्णा द्विजातयः । निर्वासं कारयेद्विप्रं दास्यं क्षत्रविशेषं ” ॥ २०  
दक्षः—

“ पारिव्राज्यं गृहीत्वा तु यः स्वधर्मे न तिष्ठति । श्वपदेनाङ्गयित्वा तं राजा शीघ्रं प्रवासयेत् ” ॥

याज्ञवक्त्यः (व्य. १८३) — “ प्रवज्यावसितो राज्ञो दासः स्यान्मरणान्तिकम् ” ॥ अङ्गिराः—

“ संन्यासं चैव यः कृत्वा पुनरुत्तिष्ठते द्विजः । न तस्य निष्कृतिर्दृष्टा स्वधर्मात् प्रचयुतस्य तु ॥

“ आरूढो नैष्ठिकं कर्म पुनरावर्तयेद्यतिः । आरूढपतितो ज्ञेयः सर्वकर्मवहिष्कृतः ” ॥ २५

“ चण्डालाः प्रत्यवसिताः परिव्राजकतापसाः । तेषां जातान्यपत्यानि चण्डालैः सह वासयेत् ॥

“ नैष्ठिकानां वनस्थानां यतीनामवकीर्णिनाम् । शुद्धानामपि लोकेऽस्मिन् प्रत्यापत्तिर्न विद्यते ” ॥ इति ।

बहूचपरिशिष्टे—

“ धीपूर्वं रेत उत्सर्गो द्रव्यसंग्रह एव च । पतत्यसौ ध्रुवं भिक्षोद्दीयं भवेत् ” ॥

आत्मघातिनः शववहनादौ प्रायश्चित्तम् । आत्महननस्यातिकष्टत्वमुक्त्वा तच्छववहनादौ ३०  
प्रायश्चित्तमाह पराशरः ( ४।१-४ )—

“ अतिमानादतिक्रोधात् स्नेहाद्वा यदि वा भयात् । उद्धनीयात् स्त्रीपुमान्वा गतिरेषा विधीयते ॥

“ पूयशोणितसंपूर्णे त्वन्धे तमसि मञ्जति । षष्ठिं वर्षसहस्राणि नरकं प्रतिपद्यते ।

“ नाशौचं नोदकं नास्मि नाश्रुपातं च कारयेत् ।

“ वोढारोऽग्निप्रदातारः पाशच्छेदकरास्तथा । तस्मृच्छ्रेण शुद्धवन्तीत्येवमाह प्रजापतिः ॥

“ तस्मृच्छ्रेण शुद्धास्ते कुर्युर्ब्राह्मणभोजनम् । अनङ्गुत्सहितां गां च दद्याद्विप्राय दक्षिणाम्” ॥ इति ।  
अन्यतमस्तीत्रो नरकविशेषः । यन्तु स्मृत्यन्तरे—

५ “एतानि पतितानां तु यः करोति विमोहितः । तस्मृच्छ्रद्धयेनैव तस्य शुद्धिर्न चान्यथा” ॥ इति ।  
एतानि दहनादीनि तेषां प्रकृतत्वात् तत् कामकारविषयम् । “विहितं यदकामानां कामतो द्विगुणं  
भवेत्” इति स्मरणात् । यच्च वृहस्पतिनोक्तम्—

“ विषोब्दन्धनश्चेण यः स्वात्मानं प्रमापयेत् । मृते मेधयेन लेतव्यो नान्यं संस्कारमर्हति ॥

“पाशच्छेत्ता तु यस्तस्य वोढा चाग्निप्रदस्तथा । सोऽतिकृच्छ्रेण शुद्ध्येन पिण्डदो वा नराधमः” ॥ इति ।

१० यच्च यमेनोक्तम्—

“गोब्राह्मणहतं दग्ध्वा मृतमुद्धन्धनेन च । पाशं छित्वा तथा तस्य कृच्छ्रं सान्तपनं चरेत्” ॥ इति ।  
तत् देशकालादितारतम्यपेक्षयोक्तम् । देशादितारतम्यस्य प्रायश्चित्ततारतम्यहेतुत्वात् ।  
तथा च व्याघ्रः—

“देशं कालं वयः शक्तिं ज्ञानं बुद्धिकृतं तथा । अबुद्धिकृतमभ्यासं ज्ञात्वा निष्क्रयणं वदेत्” ॥ इति ।

१५ शक्त्यादितारतम्यवत् निमित्ततारतम्यमपि प्रायश्चित्ततारतम्ये कारणम् । अत एव स्पर्शाद्यल्पनिमित्ते  
स्वल्पं प्रायश्चित्तमाह प्रजापतिः—

“तच्छवं केवलं स्पृष्टा पातयित्वाश्रु वा तथा । एकरात्रं तु नाश्रीयात् त्रिरात्रं बुद्धिपूर्वकम्” ॥ इति ।  
निमित्तभूयस्त्वेऽधिकं प्रायश्चित्तमाह वसिष्ठः—

“य आत्मत्यागिनां कुर्यात् स्नानं प्रेतक्रियां द्विजः । तस्मृच्छ्रं तु सहितं चरेच्चान्द्रायणव्रतम्” ॥ इति ।

२० प्रमादादिकरणे पातित्याभावात् नैतत्प्रायश्चित्तम् । तच्चाधस्तात् प्रतिपादितम् ।

अनृतभाषणे प्रायश्चित्तम् । अनृतभाषणे मनुः ( ८१०६-१०७ )—

“ वाग्दैवत्यैस्तु चरुभिर्यजेरस्ते सरस्वतीम् । अनृतस्यैनसस्तस्य कुर्वाणो निष्कृतिं पराम् ॥

“ कूशमाणडैर्वापि जुहुयात् घृतमग्नौ यथाविधि । उद्दित्यूचा वा वारुण्या तृचेनाबैवतेन वा ॥

“ अनृती सोमपः कुर्यात् त्रिरात्रं परमं तपः । पूर्णहुतिं वा जुहुयात् सत्तेन घृतेन तु ” ॥ इति ।

२५ याज्ञवल्क्यः ( प्रा. २७९ )—

“मयि तेज इति च्छायां स्वां दृष्टाम्बुगतां जपेत् । सावित्रीमशुचौ दृष्टे चापले चानृतेऽपि च” ॥ इति ।

एतत्कामकारे द्रष्टव्यम् । अकामकृते अनृतवचने मनुः ( ५१४४ )—

“ सुप्त्वा क्षप्त्वा च भुक्त्वा च निष्ठीव्योक्त्वानृतानि च । पीत्वापोऽध्येष्यमाणश्च आचामेत्रयतोऽपि  
सन् ” ॥ इति ।

३० मिथ्याभूतचतुर्वर्णवधशापये प्रायश्चित्तम् । एतस्य कार्यस्याकरणे चतुर्वर्णेष्वन्यतमं  
हतवानस्मीति शपथं कृत्वा यस्तत् कार्यं न करोति तस्य प्रायश्चित्तमाह यमः—

“ विप्रस्तु वधसंयुक्तं कृत्वा तु शपथं मृषा । ब्राह्मणो यावकाञ्जेन व्रतं चान्द्रायणं चरेत् ॥

“ क्षत्रियस्य पराकं तु प्राजापत्यं तथा विशः । वृषलस्य त्रिरात्रं तु व्रतं शूद्रहणश्चरेत् ॥

“ केचिदाहुरपापं तु वृषलस्य वधं मुधा । न ममैतन्मतं यस्माद्धृतस्तेन भवत्यसौ” ॥ इति ।

प्रतिश्रुत्यानृतोक्तौ हारीतः—

“ प्रतिश्रुत्यानृतं ब्रूयान्मिथ्यासत्यमथापि वा । स तस्मैच्छ्रासहितं चरेच्चानन्दायणव्रतम् ” ॥ इति ।

ब्रह्मचार्यादिविषये गार्यः—

“ त्रिरात्रमेकरात्रं वा ब्रह्मचार्यनृतं चरेत् । मासं भुक्त्वा ब्रह्मचारी पुनः संस्कारमाचरेत् ॥

“ अभ्यासे चैन्ददं कुर्यान्नैषिको द्विगुणं चरेत् । वनस्थस्त्रिगुणं कुर्याद्यतिः कुर्याच्चतुर्गुणम् ॥ ५

“ मांसाशने चानृतोक्तौ शवनिर्वहणे तथा ” ॥ इति ।

क्वचिच्चु निमित्तविशेषेऽनृतमपि ब्रुद्दिपूर्वं वक्तव्यं तदाह याज्ञवकल्यः ( व्य. ८३ )—

“ वर्णिनां तु वधो यत्र तत्र साक्ष्यनृतं वदेत् । तत्पावनाय निर्वाप्यश्वरुः सारस्वतो द्विजैः ” ॥ इति ।

स्वोत्कर्षेऽनृतवचनं मनुना ( ११५५ )—“ अनृतं च समुत्कर्षे राजगामि च पैशुनम् ” इति

ब्रह्महत्यासमेषु मध्ये पठितम् । १०

“ निषिद्धभक्षणं जैह्नचमुत्कर्षस्य वचोऽनृतम् ” इति याज्ञवकल्येन ( प्रा. २२९ ) सुरापानसमेषु पठितम् । विष्णुना तु ( ३७१ ) ‘अनृतवचनमुत्कर्षे’ इत्युपपातकत्वमुक्तम् । अत्र च विषयभेद उक्तो माधवीये—‘द्वेष्यं पुरुषं राजादिभिर्मारयितुं तस्मिन्नविद्यमानमपि महान्तमपराधमारोप्यानृतं चेत् ब्रूयात् तत् ब्रह्महत्यासमं वधपर्यवसायित्वात् । यस्तु लाभपूजाख्यातिकामो राजसभादौ स्वस्मिन्नविद्यमानमपि चतुर्वेदाभिज्ञत्वादिकं प्रथयितुमनृतं ब्रूते तस्मिन्नविद्यमानकरणे च मासं पयसा वर्तेत् । यस्तु सुख- १५ गोष्ठचादौ परोपकारमन्तरेण वृथानृतं ब्रूते तस्यैतदुपपातकमिति । तत्राद्ययोः प्रायश्चित्तं विष्णुनोक्तम् ( ५४।१४ )—‘समुत्कर्षेऽनृते गुरोरलीकनिर्बन्धे तदवज्ञानकरणे च मासं पयसा वर्तेत् ’ इति । तृतीये तु याज्ञवल्क्याद्युक्तं द्रष्टव्यम्—‘ शतमश्वानृते हन्ति सहस्रं तु गवानृते ’ इत्यादिना\* प्रतिपादिते दोषतारतम्ययुक्तेऽनृते उक्तप्रायश्चित्तेषु तारतम्यं द्रष्टव्यम् ।

श्रौताग्नित्यागे प्रायश्चित्तम् । श्रौताग्नित्यागे प्रायश्चित्तमाह विष्णुः ( ५४।१३ )— २०

“ अग्न्युत्सादी त्रिष्वणस्नाय्यधःशायी संवत्सरं सकृद्भैक्षेण वर्तेत् ” इति । वसिष्ठः ( १२३ )—

“ योऽग्निपविधयेत् स कृच्छ्रं द्वादशरात्रं चरित्वा पुनराधानं कारयेत् ” इति । मनुः ( ११४१ )—

“ अग्निहोत्र्यपविध्याग्नीन् ब्राह्मणः कामकारतः । चानन्दायणं चरेन्मासं वीरहत्यासमं हि तत् ॥

“ अग्निहोत्र्यपविध्याग्नीन् मासाद्वर्धं तु कामतः । कृच्छ्रं चानन्दायणं चैव कुर्यादेवाविचारयन् ” ॥ इति ।

हारीतः—“ संवत्सरोत्सन्नेऽग्निहोत्रे चानन्दायणं चरित्वा पुनराद्ध्यात् । द्विवर्षोत्सन्ने चानन्दायणं २५ सोमायनं च कुर्यात् । त्रिवर्षोत्सन्ने संवत्सरं कृच्छ्रमध्यस्य पुनराद्ध्यात् ” इति । शंखोऽपि—

“ अग्न्युत्सादी संवत्सरं प्राजापत्यं चरेत् गां च दद्यात् ” ॥ इति । भारद्वाजः—“ द्वादशाहाति-

क्रमे ऋहमुपवासो मासातिक्रमे द्वादशाहमुपवासः संवसरातिक्रमे मासोपवासः पयोभक्षणं च ”

इति । एतत् सर्वमालस्यादिनिमित्तत्यागविषयम् । यत्तु भारद्वाजगृह्येऽभिहितम्—

“ प्राणायामशतमा दशरात्रं कुर्यादुपवासः स्यात् आ विंशतिरात्रमत ऊर्ध्वमा षष्ठिरात्रात् तिस्रो ३० रात्रीरुपवसेत् । अत ऊर्ध्वं मासं वत्सरात् प्राजापत्यं चरेत् । अत ऊर्ध्वं कालबहुत्वे दोषबहुत्वं इति तत् प्रामादिकत्यागविषयम् । यत्तु जातुकर्णिराह—“ अतिकालं च जुहुयादग्नौ विप्राय वा यवम् । नष्टेऽग्नौ विधिवद्यात् कृत्वाऽधानं पुनर्द्विजः ” ॥ इति । तदौपासनाग्निविषयम् ॥

१ घ-निःसारणे । \*मनु स्म. ८९९ ।

**नास्तिक्यप्रायश्चित्तम् ।** नास्तिक्यप्रायश्चित्तमाह वासिष्ठः ( ६५२९ )—“ नास्तिकः कृच्छ्रं द्वादशोरात्रं चरित्वा विरमेनास्तिक्यात् ” इति । तदेतदुपपातकनास्तिक्यविषयम् । पातकनास्तिक्ये तु शङ्खः—“ नास्तिको नास्तिकवृत्तिः कृतम्भः कूटब्यवहारी मिथ्याभिशंसीत्येवं पञ्च संवत्सरं ब्राह्मणगृहे भैक्षं चरेयुः ” इति । नास्तिकस्य त्रैविध्यमुक्तं माधवीये—

५ “ नास्तिकस्त्रिविधः प्रोक्तो धर्मजैस्तत्त्वदार्शिभिः । क्रियादुष्टो मनोदुष्टो वागदुष्टश्च तथैव च ॥

“ उपपातकस्तु वागदुष्टो मनोदुष्टस्तु पातकः । अभ्यासात्तु क्रियादुष्टो महापातक उच्यते ” ॥ इति । महापातकनास्तिके तु हारीतः—“ कन्यादूषी सोमविक्रियी वृषलीपतिः कौमारदारत्यागी सुरामयपः शूद्रयाजको गुरोः प्रतिहन्ता नास्तिको नास्तिकवृत्तिः कृतम्भः कूटब्यवहारी ब्राह्मणमित्रम्भो मिथ्याभिशंसी पतितसंब्यवहारी मित्रधुक् शरणागतधाती प्रतिरूपकवृतिरित्येते पञ्चतपोऽ-१० ग्रावकाशजलशयनान्यनुतिष्ठेयुः क्रमेण ग्रीष्मवर्षहेमन्तेषु मासं गोमूत्रयावकमश्चीयुः ” ॥ इति ।

एकपङ्क्तौ वैषम्येण दाने । एकपङ्क्त्युपविष्टानां वैषम्येण दानादौ यमः—

“ न पङ्क्त्यां विषमं दद्यान्न याचेन्न तु दापयेत् । प्राजापत्येन कृच्छ्रेण मुच्यते कर्मणस्ततः ” ॥ इति ।

अपाङ्गकेयपङ्क्तिभोजनादौ प्रायश्चित्तम् । अपाङ्गकेयपङ्क्तिभोजने मार्कण्डेयः—

“ आपाङ्गकेयस्य यः कश्चित् पङ्क्तौ भुक्ते द्विजोत्तमः । अहोरात्रोषितो भूत्वा पञ्चगव्येन शुद्ध्यति ” ॥

१५ पतितादिसंभाषणे गौतमः ( ११७-१९ )—“ न म्लेच्छाशुच्यधार्मिकैः सह संभाषेत् । संभाष्य पुण्यकृतो मनसा ध्यायेत् । ब्राह्मणेन वा संभाषेत् ” इति अप्सु मूत्रपुरीषकरणे सुमन्तुः—

“ अप्स्वमौ वा मेहतस्तप्तकृच्छ्रम् ” इति । आर्तविषये मनुः ( ११२०२ )—

“ विनाद्विरप्सु वाऽप्यार्तः शारीरं संनिवेश्य तु । सचेलो मुहुरापुत्य गामालभ्य विशुद्ध्यति ” ॥ कामकारे तु यमः—

२० “ आपद्गतो विना तोयं शारीरं यो निषेवते । एकाहं क्षपणं कृत्वा सचेलः स्नानमाचरेत् ” ॥ इति । ब्रह्मसूत्रं विना मूत्रपुरीषादिकरणे प्रायश्चित्तमुक्तं स्मृत्यंतरे—

“ विना यज्ञोपवीतेन यद्युच्छिष्टो भवेत् द्विजः । प्रायश्चित्तमहोरात्रं गायत्र्यष्टशतं तु वा ॥

“ अकामतस्तु पिवतो मेहतश्चैव भुञ्जतः । प्राणायामत्रिकं षट्कं नक्तं च त्रितयं क्रमात् ” ॥ इति । संवर्ततः—

२५ “ अनाचान्तः पिबेदस्तु अपि वा भक्षयेत् द्विजः । गायत्र्यष्टसहस्रं तु जपं कृत्वा विशुद्ध्यति ” ॥ इति ।

पलाशदारुशयनादौ प्रायश्चित्तम् । शङ्खः—

“ अध्यास्य शयनं यानमासनं पादुके तथा । द्विजः पलाशवृक्षस्य त्रिरात्रं तु व्रती भवेत् ॥

“ द्वौ विप्रौ ब्राह्मणाभ्नी वा दंपती गोद्विजोत्तमौ । अन्तरेण यदा गच्छेत् कृच्छ्रं सांतपनं चरेत् ॥

“ होमकाले तथा दोहे स्वाध्याये दारसंग्रहे । अन्तरेण यदा गच्छेत् द्विजश्चान्द्रायणं चरेत् ॥

३० “ क्षत्रियस्तु रणे पृष्ठं दत्त्वा प्राणपरायणः । संवत्सरं व्रतं कुर्यात् छित्वा वृक्षं फलपङ्क्तम् ” ॥ इति स एव—“ दुःस्वमारिष्टदर्शनादौ हिरण्यं घृतमर्पयेत् ” ॥ इति ।

श्राद्धे निमन्त्रितस्य कालातिक्रमे प्रायश्चित्तम् । श्राद्धे निमन्त्रितस्य कालातिक्रमे यमः—

“ केतनं कारयित्वा तु योऽतिपातयते द्विजः । ब्रह्महत्यामवाप्नोति शूद्रयोनौ प्रजायते ॥

“ एतस्मिन्नेनसि प्राप्ते ब्राह्मणो नियतवतः । यतिचान्द्रायणं चत्वां ततश्चान्द्रायणं चरेत् ” ॥ इति ।

क्षत्रियाद्यभिवादनादौ प्रायश्चित्तम् । क्षत्रियाद्यभिवादने हारीतः—“ क्षत्रियस्याभिवादने ऽहोरात्रमुपवसेत् । वैश्यस्य द्विरात्रं शूद्रस्य त्रिरात्रमुपवासः । शश्यारूढपादुकोपानदारोपितपादोच्छिष्टान्धकारस्थश्राद्धकृजजपेवपूजादिरनाभिवादने त्रिरात्रमुपवासः । अन्यत्र निमन्त्रितस्यान्यत्र भोजने त्रिरात्रमुपवासः ” ॥ इति । ५

शूद्रस्य वेदवाक्यश्रवणे प्रायश्चित्तम् । शूद्रस्य वेदवाक्यश्रवणादौ गौतमः (१२४)—

“ अथ हास्य वेदमुपशृण्वतस्त्रुपुजतुभ्यां श्रोत्रप्रतिपूरणमुदाहरणे जिह्वाच्छेदो धारणे शरीरभेदः ” ॥ इति । १०

प्रतिग्रहविचारः । अथ प्रतिग्रहो निरूप्यते । वृत्त्यर्थं सत्प्रतिग्रहे न प्रायश्चित्तापेक्षा ।

“ विहितात् प्रतिगृहीयात् गृहधर्मप्रसिद्धये । आत्मनो वृत्तिमन्विच्छन्न गृहीयात्साधुतः सदा ॥

“ अनापद्यपि गृहीयात् याज्यतः शिष्यतस्तथा । धर्मतस्तु द्विजो गृह्णन् न धर्मात् परिहीयते ” ॥ इति स्मृतेः । असत्प्रतिग्रहे प्रायश्चित्तं कर्तव्यम् । स पञ्चविधः—

“ असत्प्रतिग्रहः प्रोक्तः कालतो देशतस्तथा । स्वरूपतो जातितश्च कर्मतश्चेति पञ्चधा ” ॥ इति १५

स्मरणात् । कालो ग्रहणादिः । देशः कुरुक्षेत्रादिः । स्वरूपं मेषीकृष्णाजिनतुलोभयतोमुख्यादिकम् ।

जातिः शूद्रादिः । कर्म पतनीयवृत्तिः । मनुः ( १०१०९ )—

“ प्रतिग्रहः प्रत्यवरः प्रेत्यै विप्रस्य गर्हितः । प्रतिग्रहेण विप्राणां ब्राह्मणे तेजो विनश्यति (४।१८६) ।

“ प्रतिग्रहीतुर्यत्पुण्यं दातारमधिगच्छति । दातुश्चैव हि यत्पापं प्रतिग्राहिणमृच्छति ॥

“ प्रायश्चित्तमतः कार्यं भीरुणा चानुतापिना ॥ २०

“ यद्गर्हितेनार्जयन्ति कर्मणा ब्राह्मणा धनम् । तस्योत्सर्गेण शुद्ध्यन्ति जपेन तपसैव च ( ११।१९३ ) ” ॥

इति । उत्सर्गेण त्यागेन । जपेन वेदपारायणगायत्र्यादिजपेन । तपसा कृच्छ्रचान्द्रायणादिना च शुद्ध्यन्तीत्यर्थः । वृद्धमनुः—

“ कृषेस्तु विंशकं भागं वाणिज्यात् षष्ठमंशकम् । प्रतिग्रहे तुरीयांशं त्यक्त्वा पापात्प्रमुच्यते ” ॥ इति ।

व्यासः— २५

“ वाणिज्यस्याष्टमं भागं भागं विंशतिमं कृषेः । प्रतिग्रहे चतुर्थांशं त्यक्त्वा पापैः प्रमुच्यते ॥

“ अन्यथा निष्कृतिर्नास्ति जपैस्तीर्थनिषेवया ” ॥ इति । चतुर्विंशतिमते—“ प्रतिषिद्धेषु दानेषु षष्ठांशं परिकल्पयेत् ” ॥ इति । हेमाद्रौ—“ अथ चेत्रतिगृहाति ब्राह्मणो वृत्तिकर्तिः ॥

“ दशांशमार्जितात् दद्यादेवं तत्र न हीयते । गृहीतात् षोडशांशं तु पञ्चमांशमथापि वा ” ॥

अत्राभियुक्तैर्यवस्था दर्शिता—पञ्चदोषदुष्टप्रतिग्रहे साङ्गं द्रव्यत्यागं कुर्यात् । ३०

“ अज्ञानाद्यदि वा मोहादसद्व्ययं प्रगृह्य तु । सर्वं द्रव्यं परित्यज्य चान्द्रायणमथाचरेत् ॥ ” ॥ इति स्मरणात् । त्यक्तं च द्रव्यं ब्राह्मण एव गृहीयात् । ‘प्रहीणं ब्राह्मणस्येति’ स्मरणात् । एवं कृत्वा जपतपोभ्यां शुद्धिः कार्या । त्रिचतुरदोषदुष्टस्य दरिद्रस्य चतुर्थांशत्यागः । आद्वयस्य त्वर्धत्यागः कार्यः ।

‘असत्प्रतिग्रहे तु त्वर्धं त्यक्त्वा पापात्प्रमुच्यते’ इति स्मरणात् । दोषद्वययुक्तस्य पञ्चमांशत्यागः ।

एकदोषदुष्टस्य षष्ठींशत्यागः । दरिद्रस्योभयत्रापि दूशांशत्यागः षोडशांशत्यागो वा कार्यः । सर्वत्र द्रव्यत्यागानन्तरं जपादिरूपं प्रायश्चित्तं च कर्तव्यम् । कृष्णाजिनकालपुरुषतिलघेनूभयतो-मुखीमहिषीमेषीदानादीनां निषिद्धप्रधानद्रव्याणां प्रधानद्रव्यं दक्षिणाद्यङ्गद्रव्यस्य चतुर्थीशं च त्यक्त्वा प्रायश्चित्तं च कार्यम् । अन्ये तु प्रधानद्रव्यं परित्यज्य दक्षिणाद्यङ्गद्रव्यं स्वीकृत्य ५ प्रायश्चित्तं कार्यमिति । स्वल्पद्रव्यपरिग्रहे प्रायश्चित्तमुक्तं षट्क्रिंशन्मते “भिक्षामात्रे गृहीते तु पुण्यं मन्त्रमुदीरयेत्” ॥ इति । हारीतः—“मणिवासोगृहांदीनां प्रतिग्रहे सावित्र्यष्टसहस्रं जपेत्” ॥ याज्ञवलव्यः—( प्रा. २९० )

“गोष्ठे वसन् ब्रह्मचारी मासमेकं पयोव्रतः । गायत्रीजप्यनियतः शुद्ध्यतेऽसत्प्रतिग्रहात्” ॥ इति । अत्र जपसंख्या मनुना दर्शिता ( १२२९४ )

१० “जपित्वा त्रीणि गायत्र्याः सहस्राणि समाहितः । मासं गोष्ठे पयः पीत्वा मुच्यतेऽसत्प्रतिग्रहात्” ॥ इति । एतच्च दावृद्रव्ययोरुभयोरसत्वे वेदितव्यम् । अन्यतरस्यासत्त्वे तु षट्क्रिंशन्मते दर्शितम्—  
“ऐन्दवेन मृगरेष्टया कदाचिन्मित्रविन्दया । पवित्रेष्टया विशुद्ध्यन्ति सर्वे घोराः प्रतिग्रहाः” ॥ इति ।  
“देव्या लक्षजपैैव शुद्ध्यन्तेऽसत्प्रतिग्रहात्” ॥ इति ।

यत्तु वृद्धहारीतवचनम्—“राजः प्रतिग्रहं कृत्वा मासमप्सु सदा वसेत् ॥

१५ “षष्ठे काले पयोभक्षः पूर्णे मासे प्रमुच्यते । तर्पयित्वा द्विजान् कामैः सततं नियतव्रतः” ॥ इति  
तत् पञ्चदोषदुष्टप्रतिग्रहविषयमिति माधवीये ।

तुलापुरुषादिप्रतिग्रहे । तुलादिषोडशमहादानप्रतिग्रहे प्रातिस्विकं प्रायश्चित्तमुक्तं हेमाद्रौ ।

तदिदानीं निरूप्यते । तत्र देवस्वामी—“तुलाप्रतिग्रहीता च पूर्वजो विषयातुरः ।

“सोऽरण्ये निर्जले देशे भवति ब्रह्मराक्षसः । नास्त्येव निष्कृतिस्तस्य नवलक्षजपाद्वते” ॥

२० देवलः—“ऋणापकरणार्थं वा तथा यागार्थमेव वा । द्विजः प्रतिग्रहं कृत्वा तदर्थं विनियोजयेत् ॥

“सुवर्णरत्नरजतैस्तुलाश्च त्रिविधाः स्मृताः । तासां प्रतिग्रहे विप्रः ऋणयागादिभिर्विना ॥

“रौरवे नरके घोरे कृत्विग्भिः सह मज्जति” ॥ इति । ऋत्विजो ब्रह्मा सदस्यो होतारो जापकाश्च ।

देवीपुराणे—

“आत्मतुल्यसुवर्णं यः प्रतिगृह्य धनातुरः । अकृत्वा निष्कृतिं तस्य कृत्विग्भिः सह राक्षसः” ॥ इति ।

२५ गारुडपुराणे—

“श्रीशैले हेमकूटे वाऽप्यचले गन्धमादने । अहौबिले वैकटाद्रौ काश्यादिषु विशेषतः” ॥

“सूर्योपरागकालेषु अन्यकालेषु पर्वमु । प्रतिगृह्य तुलां विप्रो राजो यो भोगलालसः” ॥

“सोऽरण्ये निर्जले देशे दृष्टिहीनो निराश्रयः । सहस्राब्दं भवेद्विष्णु नवलक्षजपाद्वते” ॥ इति ।

ब्रह्माण्डे—

३० “सेत्वादिपुण्यतीर्थेषु उपरागादिपर्वमु । पूर्वजः प्रतिगृह्णाति तुलां राजो विशेषतः” ॥

“भवेद्रक्षः सहस्राब्दं दृष्टिहीनो निराश्रयः । निष्कृतिस्तस्य गायत्र्या नवलक्षजपाद्विह ॥

“यदा प्रतिग्रहस्तस्यास्तदा पातित्यमर्हति । सन्ध्यादिनित्यकर्माणि विफलानि न संशयः ॥

“सावित्रीपतितं विद्यात् पुनःसंस्कारमर्हति” ॥

स्कान्देऽपि—

“ प्रतिगृह्य तुलामाशु नवलक्षं जपेद्वृधः । चतुर्थशब्दयं कृत्वा यज्ञं वा सर्वदक्षिणम् ॥

“ तदर्थं ब्रह्मणः प्रोक्तं तदर्थं सदस्पतेः । होतृणां द्वारपालानां पाठकानां महामुने ॥

“ जापकानामिदं प्रोक्तं तयोरर्थं विचक्षणैः ” ॥ तयोः ब्रह्मसदस्ययोः । अर्थं सर्वेषां प्रायश्चित्तमित्यर्थः ।

मार्कण्डेयपुराणे तु—“ तुलाप्रतिग्रहीता च प्रायश्चित्तमिदं चरेत् । ४

“ चतुर्थधिशभागेन परिषद्विधिपूर्वकम् । चतुर्थां धनं सर्वं चतुर्धा भागमाचरेत् ॥

“ अनुवादे भागमेकं भागमेकं विधायके । भागः परिषदि प्रोक्तः शेषं कृच्छ्रादिषु न्यसेत् ” ॥

मार्कण्डेयपुराणे तु--

“ प्रधानं संपरित्यज्य यागार्थं दक्षिणां वहन् । तस्यैव निष्कृतिरियं मुनिभिः परिकीर्तिता ॥

“ परेद्युर्वा तदानीं वा स्नात्वा शुचिरलंकृतः । नीलवर्णं च गामेकां श्यामां वाऽऽद्याय निर्गदाम् ॥ १०

“ आपोहिष्टादिभिर्मन्त्रैः प्राङ्मुखीं मार्जयेज्जलैः । रक्तेन वाससाच्छाद्य त्रिः परिक्रम्य यत्नतः ॥

“ तन्मूत्रस्नानमासाद्य जपेन्मन्त्रमिदं सुधीः । हिरण्यगर्भ इत्येनामृतमान्तं समुच्चरन् ॥

“ विष्णुर्योनिमित्येताभिरान्ताभिरनुमन्त्रयेत् ॥

“ स्थित्वा मुहूर्तं गोगर्भे स्वमूर्धनिं निधाय च । अष्टयोनिमष्टपुत्रामनुवाकं जपेद्वृधः ॥

“ ततः परं पुनर्जातं मन्येतात्मानमाद्वतः । स्वयं पिताथ वाचार्यो जातकर्मादि भावयेत् । १५

“ व्रतान्नं तत्र तदद्वयं दत्वाचार्यं क्षमापयेत् । ततः पूतो भवेदेषु दक्षिणामात्रसंग्रहे ” ॥

प्रधानत्यागाभावे पूर्वोक्तैरष्टलक्षजपादिभिः पूतो भवति । तथा च हेमाद्रौ—

“ अन्यथा निष्कृतिर्नास्ति श्यकृत्वा निष्कृतीरिमाः । सहस्राब्दं भवेद्रक्ष आचार्यो द्रव्यलोभतः ॥

“ ब्रह्मा सदस्पतिश्वैव तदर्थं राक्षसो भवेत् । द्वारपा ऋत्विजश्वैव होतारो जापका अपि ॥

“ तयोरर्थं भवेयुस्ते राक्षसा घोरस्तपिणः ॥ २०

“ आचार्यार्थं जपः प्रोक्तो ब्रह्मणः सदस्पतेः । तयोरर्थं तु होतृणामितरेषामिति स्थितिः ” ॥

नागरखण्डे—“ एवं हिरण्यगर्भस्य ग्रहणे निष्कृतिः पुरा । दृष्टा मन्वादिभिर्विप्रैर्धर्मशास्त्रपरायणैः ॥

“ अन्यथा निष्कृतिर्नास्ति प्रायश्चित्तैर्जडोदितैः ” ॥

ब्रह्माण्डघटविषये—

“ ततः परं विशुद्धधर्मादिह लोके परत्र च । पुनः संस्कारविधिना ह्यभ्यसेद्वेदमातरम् ॥ २५

“ ब्रह्मोपदेशं तत्रापि कुर्यादाचार्यवाक्यगौः । ततः परं जपेद्वेदमातरं प्रत्यहं सुधीः ॥

“ प्रतिग्रहपरान्नेषु विष्णुमादरात् । चिन्तयन्वर्तयन् विप्रः सुखी भव परत्र च ॥

“ एवं कृत्वा द्विजो यस्तु निष्कृतिं शुद्धमानसः । तुलाप्रतिग्रहे राजन् शुद्धो भवति नान्यथा ॥

“ अकृत्वा निष्कृतीरेता एकां वापि नरेश्वर । सन्ध्यादि नित्यकर्माणि पितृकर्माणि यानि च ॥

“ न फलन्तीह सर्वाणि भस्मनि न्यस्तहव्यवत् । पुनः संस्कारमात्रेण पुनरायान्ति तानि वै ॥ ३०

“ ततः प्रतिग्रहीता तु आत्मदेहविशुद्धये । कुर्याद्वै विरजाहोमं पञ्चगव्यमनन्तरम् ” ॥ इति ।

हिरण्यगर्भविषये हेमाद्रौ—

“ पूर्वजो द्रव्यलोभेन ऋणयागादिभिर्विना । गर्भं स्वर्णमयं धूत्वा ऋत्विग्भिः सह राक्षसः ” ॥

पाद्मे—“ हिरण्यगर्भं भूपालात् पूर्वजो भोगलालसः । प्रतिगृह्य स शीघ्रेण नक्तंचारी भवेद्वृति ॥

“ ऋत्विजः कीकसा नाम पिशाचाः संभवन्त्यथ । कर्थंचिन्निष्कृतीर्दृष्टा पुनर्गर्भान्न चान्यथा ” ॥ ३५

**देवीपुराणे—**

“ दक्षिणामात्रमालम्ब्य प्रधानं संपरित्यजेत् । तथापि धर्मयागादिं कृत्वा शुद्धिमवाप्नुयात् ॥

“ शेषयेदस्तु मोहेन वृत्त्यर्थं भोगलालसः । तस्योपनयनं भूयो जननं गर्भगोलतः ॥

“ पञ्चायुतेन शम्भोर्वा ह्यभिषेकेण मुच्यते । अष्टलक्षजपो देव्याः कूष्माण्डायुतहोमतः ॥

५ “ चतुर्भार्गव्ययो वापि यज्ञो वा सर्वदक्षिणः । एवं कुर्यात् द्विजो यस्तु तस्माद् दोषात्प्रमुच्यते ” ॥

**देवलः—**

“ ब्रह्माण्डं यस्तु गृह्णाति द्विजः कृत्वादिभिर्विना । ऋत्विग्मिः सह दुष्टात्मा राक्षसो भवति ध्रुवम्” ॥

**मार्कण्डेयः—**

“ ब्रह्माण्डं पुण्यतीर्थेषु प्रतिगृह्णाति यो द्विजः । निष्कृतिस्तस्य नास्तीह वसुलक्षजपाद्वते ” ॥

१० **ब्रह्मकैवर्ते—**

“ ब्रह्माण्डघटसंशं तु प्रतिगृह्णाति यो द्विजः । अष्टलक्षजपादस्य निष्कृतिर्ब्रह्मराक्षसात् ” ॥ इति ।

**गालवः—**

“ ब्रह्माण्डं यो द्विजो धृत्वा वसुलक्षं जपेदिह । पूतो भवति दुष्टात्मा इह लोके परत्र च ॥

“ नियुतेनाभिषेकस्य शम्भो रुद्रविधानतः । चतुर्भार्गव्ययं कृत्वा यज्ञं वा बहुदक्षिणम् ॥

१५ “एषैव निष्कृतिस्तस्य ऋत्विग्मिः सहितस्य च । अन्यथा निष्कृतिर्नास्ति सहस्राब्दं पिशाचता ” ॥

**भविष्योन्तरे—**

“ आचार्यार्थं तयोः प्रोक्तं प्रायश्चित्तमिदं प्रभो । द्वाःस्थानां हि तदर्थं स्यादितरेषां हि पूर्ववत् ॥

“ अथवा तच्चतुर्भार्गव्ययं तु कुरुते द्विजः । अन्यथा निष्कृतिर्नास्ति दानैस्तीर्थावगाहनैः ॥

“ आचार्यं प्रविशेत्पापं राज्ञो दानाधिकारिणः । पादहीनं तयोः प्रोक्तं शेषं सर्वेषु संविशेत् ॥

२० “ प्रायश्चित्तैर्विना राजन्न पुनन्ति प्रतिग्रहात् । तस्मादिदं प्रकर्तव्यं प्रायश्चित्तं द्विजातिभिः ” ॥ इति ।

**कल्पतरुविषये मार्कण्डेयः—**“ आपत्स्वपि सदा विप्रो न गृह्णीयादिमं तरुम् ।

“ यान्यस्य सन्ति पर्णानि फलानि कुसुमानि च । तावतीस्तु समा भूयाद्राक्षसो निर्जने वने ॥

ऋत्विग्मिः ब्रह्मणा सार्धमधःपादविवर्जितः ” ॥ इति ।

**गारुडे—**

२५ “ न द्विजः क्वापि गृह्णीयात् बहुभिः कारणैर्विना । तरुमेनं पर्णवन्तं रक्षो भवति कानने ॥

“ द्वृष्ट्या पर्णां विना राजन् ऋत्विग्मिः सह निर्जले । यावन्ति तस्य पर्णानि तावद्बद्धं नराधिप ” ॥ इति ।

**गौतमः—**

“ द्विजो ऋणविमुक्त्यर्थं गृह्णीयात्कल्पभूरुहम् । यागार्थं स्वकृतग्रामतटाकादिविनाशने ॥

“ सर्वं तदर्थं सहसा व्ययं कृत्वा न दोषभाक् । शुद्धो भवति मानुष्ये न भवेद्ब्रह्मराक्षसः ” ॥ इति ।

३० **मार्कण्डेयपुराणे—**

“ प्रतिगृह्य द्विजो मोहात् तरुमेनं सुखाप्तये । निष्कृतिस्तस्य नास्तीह नरकादेकविंशतेः ॥

“ कथंचिन्निष्कृतिर्दृष्टा मनुनारदगालवैः । अष्टलक्षाद्वेदमातुश्चतुर्थाशब्द्ययैन वा ॥

“ अभिषेकेण वा शम्भोर्भूर्मीर्वा त्रिः परिक्रमात् । रामसेत्वादितर्थेषु ऋब्दाब्दस्नानतोऽपि वा ॥

“ एता निष्कृतयो दृष्टास्तरोरेतस्य संग्रहे ” ॥

३५ **तत्रैव—**“ बाहुजादेकगुणितं पादजाद्विगुणं चरेत् । मुखजाङ्गुकमानेन ऊरुजात् लक्ष्मवन्त्यूप ॥

“ एताभ्यो निष्कृतिभ्यश्च गतिर्नान्यत्र विद्यते ” ॥ इति ।

गोसहस्रप्रतिग्रहे प्रायश्चित्तम् । गोसहस्रप्रतिग्रहे देवलः—

“ तुलायां गोसहस्रेषु आचार्यस्य पुनर्भवः । आब्रह्मणोऽवृपर्यन्तं नास्ति भूमौ पिशाचतः ” ॥  
पिशाचत्वान्निवृत्तिर्नास्तीत्यर्थः । मार्कण्डेयः—

“ धृत्वाग्रजो गोसहस्रं राजोऽन्यस्मात् द्विजन्मनः । नवलक्षं जपेद् देव्याः पुनः संस्कारमर्हति ” ॥ ५  
मत्स्यपुराणे—

“ पुण्यशेत्रे पुण्यतीर्थे सूर्याचन्द्रमसोर्ग्रहे । धेनूनां यः सहस्रं च प्रतिगृह्य धनातुरः ” ॥

“ भुवः प्रदक्षिणं कृत्वा नवलक्षं जपेद्ग्रुधः । केशानां वपनं कृत्वा पुनः संस्कारमर्हति ” ॥

राजविषये—

“ सहस्रधेनुदाने तु आचार्यत्वं यदि ब्रजेत् । तस्यैव निष्कृतिर्नास्ति नवलक्षजपाद्वते ” ॥ १०

“ भूमेः प्रदक्षिणं कृत्वा केशानां वपनं पुनः । प्रायश्चित्तेन पूतात्मा पुनः संस्कारमर्हति ” ॥

कूर्मपुराणे—

“ सहस्रधेनुदाने तु आचार्यो यदि लोभतः । भूमेः प्रदक्षिणं कृत्वा नवलक्षं जपेद् द्विजः ” ॥

“ तदशक्तो महाशम्भोर्नमकैश्चमकैः शुभैः । कृत्वाऽभिषेकं विधिवत् अयुतं प्रयुतं तु वा ॥

“ सर्वव्ययं च यागे वा कृत्वा शुद्धिमवाप्नुयात् ” ॥ १५

नागरखण्डे—“ ब्रह्मा सदस्यः पूर्वोक्तप्रायश्चित्तार्धमर्हति ।

“ तदर्थं द्वारपालानां पाठकानां तथैव च । होतृणां जापकानां च पूर्ववन्मुनिभिः स्मृतम् ” ॥

लिङ्गपुराणे—

“ तुलायां गोसहस्रे च आचार्यो यद्द्वनं हरेत् । अकृत्वा तद्वयं धर्म्यं पत्नीपुत्रपरिष्कृतः ” ॥

“ तत्पत्नीनां च पुत्राणां मनुजानां जनाधिप । हव्यकव्येषु यो भोक्ता ये वा संबन्धिब्रान्धवाः ” ॥ २०

“ ते वै कुच्छुद्वयं कुर्युः निष्कृतिः कथितोत्तमैः ” ॥

हिरण्यकामधेनुप्रतिग्रहे प्रायश्चित्तम् । हिरण्यकामधेनुविषये महाभारते—

“ राजां पापनिबद्धानां सर्वदा पापचेतसाम् । पापनिर्मोर्चनी तेषां कामधुक् पुण्यवर्धनी ॥

“ एतादृशीं पुण्यरूपां स्वर्णकामदुहं द्विजः । प्रतिगृह्णाति यो लोभात् स सद्यः पतितो भवेत् ॥

“ अष्टलक्षजपाद्राजन् व्ययाद्वा अष्टभागतः । अभिषेकेण वा शम्भोः यज्ञाद्वा सर्वदक्षिणात् ” ॥ २५

“ एतैः शुद्धिमवाप्नोति ह्युभयोर्लोकयोरपि ” ॥

कौर्मे—“ स्वर्णकामदुहं राजा स्वर्चितां शास्त्रवर्त्मना । प्रत्यगृह्णाद् द्विजो यस्तु स सदा सूतकी भवेत् ॥

“ प्रायश्चित्ती भवेत्सद्यः पुनर्ब्रह्मोपदेशतः । अष्टलक्षं जपं कृत्वा प्रत्यहं विधिपूर्वकम् ॥

“ धनस्याष्टमभागेन प्रायश्चित्तिं समाचरेत् । अभिषेकेण वा विप्रो यज्ञात्सर्वस्वदक्षिणात् ॥

“ एतेषुक्तेषु राजेन्द्र प्रायश्चित्तेन बुद्धिमान् । इह लोके परत्रापि शुद्धिमाप्नोत्यनुत्तमाम् ” ॥ ३०

हिरण्याश्वप्रतिग्रहे प्रायश्चित्तम् । हिरण्याश्वप्रतिग्रहे कौर्मे—

“ हिरण्यवाजेन गृह्णन् द्विजो लोभपरायणः । जन्मत्रये राक्षसत्वमनुभूय पिशाचताम् ॥

“ तदन्ते भुवमासाद्य रासभत्वमवाप्नुयात् । तदन्ते रोगवान् भूत्वा नरकं याति पाण्डव ” ॥ इति

## वामनपुराणे—

“ हिरण्याश्वं द्विजो लोभात् राज्ञः पुण्यदिनेष्विह । प्रतिगृहात्मभोगार्थं स भवेद्ब्रह्मराक्षसः ।

“ ततः खरत्वमासाद्य रोगवान् जन्मनां त्रये । ततो नरकमासाद्य तिष्ठत्या चन्द्रतारकम् ॥

“ तस्यैव निष्कृतिनास्ति व्यष्टलक्षजपादृते ” ॥ इति ।

५ ब्रह्मकैवर्ते—“हिरण्याश्वं द्विजो धृत्वा तस्य निष्कृतिरीरिता । अष्टलक्षजपाद्वापि नियुताद्वाभिषेकतः ॥

“ अष्टमांशव्ययेनापि यागैर्वा सर्वदक्षिणैः । ततः शुद्धिमाप्नोति पुनर्माझीविधानतः ॥

“ तद्ब्रह्मा च सदस्यश्च प्रायश्चित्तार्धमर्हतः । द्वाःस्थास्तज्जापका राजन्महन्त्यधर्यार्थमिंशतः ॥

“ अन्यथा दोषवन्तस्ते न संभाष्याः कदाचन । न संस्पृश्यास्त्वपाङ्गक्ये नालपेत्तानिह द्विजान् ” ॥

## हिरण्याश्वरथप्रतिग्रहे प्रायश्चित्तम् । हिरण्याश्वरथप्रतिग्रहे ब्रह्मकैवर्ते—

१० “ हिरण्याश्वरथं यस्तु द्विजो गृह्णन्नाराधिपात् । सोऽरण्ये निर्जले देशे क्रत्विभिः सह राक्षसः ॥

“ तस्यैषा निष्कृतिर्दृष्टा मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः । नवलक्षजपाद्वापि नियुताद्वाभिषेकतः ॥

“ अष्टमांशव्ययेनापि प्रायश्चित्तविधानतः । तदन्ते वपनं कृत्वा पुनःसंस्कारमर्हति ॥

“ एवं चेच्छुद्धिमाप्नोति प्रायश्चित्तेन भूयसा । अन्यथा तु न शुद्धः स्यान्न संभाष्यः कदाचन ॥

“ ब्रह्मादीनां तदर्धशिन्यायः पूर्वोक्ते इष्यते ” ॥ इति ।

१५ हिरण्यहस्तिप्रतिग्रहे प्रायश्चित्तम् । हिरण्यहस्तिप्रतिग्रहे ब्रह्माण्डपुराणे—

“ हिरण्यहस्तिनं धृत्वा पुण्यकालेषु पर्वसु । यो विप्रो लोभमोहेन राज्ञो दानार्थिनो नृप ॥

“ न तस्य निष्कृतिर्दृष्टा दशलक्षजपादृते । लक्षहोमेन कूष्माण्डैः शुद्धिमाप्नोत्यनुत्तमाम् ” ॥ इति ।

## ब्रह्मकैवर्ते—

“ हिरण्यहस्तिनं भूपात् द्विजो लोभविमोहितः । पुण्यकालेषु पुण्येषु तीर्थेष्वायतनेषु च ॥

२० “ प्रतिगृह्य ततो लोभाद्कृत्वा निष्कृतिं नृप । सोऽरण्ये निर्जले देशे राक्षसोऽस्वरचारवान् ॥

“ तस्यैव निष्कृतिनास्ति नवलक्षजपाद्विना । लक्षहोमेन कूष्माण्डैः शुद्धिमाप्नोति दैहिंकीम् ।

“ अष्टमांशव्ययेनापि प्रायश्चित्तविधानतः । केशानां वपनं कृत्वा पुनःसंस्कारमाचरेत् ॥

“ तदर्धं ब्रह्मणः प्रोक्तं तथैव सदस्पतेः । तदर्धं द्वारपालानां जापकानां तदर्थतः ॥

“ प्रायश्चित्तमिदं प्रोक्तं हेमहस्तिप्रतिग्रहे ” ॥ इति ।

२५ पञ्चलाङ्गलप्रतिग्रहे प्रायश्चित्तम् । पञ्चलाङ्गलप्रतिग्रहे वसिष्ठसंहितायाम्

“ लाङ्गलं मुखजो धृत्वा पञ्च वाप्येकमेव वा । तस्यैव निष्कृतीर्वक्ष्ये शृणु नान्यमनाः प्रभो ॥

“ दशलक्षजपं वाथ प्रयुतं वाभिषेचनम् । चतुर्भोगव्ययं कुर्याद्यज्ञं वा सर्वदक्षिणम् ॥

“ एतत्पापविशुद्ध्यर्थं परेद्युवीप्यन्यतोऽपि वा । मार्तण्डस्योदयाद्वार्कः स्नानं कृत्वा यथार्हतः ॥

“ नित्यकर्म समाप्याशु यावत्सूर्योदयो भवेत् । तावद्गत्वा जलाधारं नदीं पुष्करिणीमपि ॥

३० “ कण्ठद्वजले स्थित्वा स्मरन्नारायणं विभुम् । मुखमुद्धृत्य मार्तण्डं पश्यन्नुत्तानपाणिकः ॥

“ अघमर्षणसूक्तं च जपन् पापविमुक्तये । यावदस्तं गतो भानुस्तावत्कालं जपेत्सुधीः ॥

“ मध्ये माध्याह्निकं कृत्वा ब्रह्मयज्ञं च तर्पणम् । मनसा देवमाराध्य पुनर्गत्वा जलं जपेत् ॥

“ सायं सन्ध्यामुपासित्वा सायं होममनन्तरम् । मौनं त्यक्त्वा तदा राजन् मिताहारं समाचरेत् ॥

“ ओदनं यावकं भक्षेदथवा मुद्भक्षणम् । अधशायी भवेत्तत्रैः पापं कृतमनुस्मरत् ॥

३५ “ प्रभातायां तु शर्वर्यां पूर्ववद्वत्माचरेत् ॥

“ एवं तु मण्डले पूर्णे विरजाहोममाचरेत् । उपोष्य दिनमेकं च पञ्चगव्यं पिवेत्तः ।

“ ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चात् तेभ्यो दद्याच्च दक्षिणाम् । पश्चात्स्वयं प्रभुञ्जीयात् तद्विप्रानुज्ञया सह” ॥ इति ॥

एतत् प्रायश्चित्तमाचार्यस्य । सर्वेषां प्रायश्चित्तमुक्तं मात्स्ये —

“ ब्रह्मा सदस्पतिश्वैव तदर्थं भागमर्हतः । द्वारस्थानां तदर्थं स्यात्तदर्थमितरेषु वै ॥

“ प्रायश्चित्तविधिश्वैष नान्यथा गतिरास्त हि ” ॥ इति ।

५

**धराप्रतिग्रहे प्रायश्चित्ताम् । धराप्रतिग्रहे शिवपुराणे —**

“ धरामभ्यर्च्य गन्धार्थैर्यो राजा पुण्यकालतः । विप्रसात्कुरुते तत्र पुण्यस्यान्तो न विद्यते ।

“ गृह्णीयायो धरामेनां पुण्यकालेषु पर्वसु । तस्य विप्रस्य चास्तीह न पुनर्जन्म राक्षसात् ॥

“ ब्रह्मोपदेशः कर्तव्यः सावित्रीदानमेव च । ततः परं जपेहेव्या दशलक्ष्मतन्द्रितः ” ॥ इति ।

पाद्मे—“ धरामभ्यर्चितां राजा धर्मशास्त्रानुसारतः । यो विप्रः प्रतिगृह्णीयात् द्रव्यलोभपरायणः ॥ १०

“ यज्ञादिकमकृत्वा चेत् भवति ब्रह्मराक्षसः । दशलक्ष्मजपादेव्यास्तस्य निष्कृतिरीरिता ॥

“ सदस्यब्रह्मणोर्वर्ध द्वारपानां तदर्थकम् । तदर्थं जापकानां च होतृणां च तथैव च ॥

“ मार्जनं सर्वदानानामाचार्याणां स्वयंभुवा । उक्तं पुरा देवमध्ये लोकस्यास्य हितैषिणा ॥

“ अन्यथा मृत्युमामोति कुर्यादेतत्प्रयत्नतः ” ॥ इति ।

**विश्वचक्रप्रतिग्रहे प्रायश्चित्ताम् । विश्वचक्रप्रतिग्रहे मार्कण्डेयः —**

१५

“ विश्वचक्रं द्विजो धृत्वा निर्निमित्तेन लोभतः । अरण्ये निर्जले देशे भवति ब्रह्मराक्षसः ॥

“ न तस्य पुनरावृत्तिः सहस्राब्दं महाभयात् । एषा वै निष्कृतिर्दृष्टा वसिष्ठेन महात्मना ।

“ चतुर्भागव्ययं कृत्वा प्रायश्चित्तविधानतः । पुनःसंकारविधिना पुनःसंस्कारमाचरेत् ॥

“ ब्रह्मोपदेशं सावित्रीमध्यसेद् द्विजपुङ्गवात् । प्रयुतेनाभिषेकस्य निष्कृतिस्तस्य नान्यथा ॥

“ तदर्थं ब्रह्मणः प्रोक्तं तथैव सदस्पतेः । द्वारपानां जापकानां तयोरर्थं प्रकल्पयेत् ” ॥ इति । २०

**कल्पलताप्रतिग्रहे प्रायश्चित्ताम् । कल्पलताप्रतिग्रहे लिङ्गपुराणे —**

“ दक्षामिमां कल्पलतां राजभिः पूजितां शुभाम् । यो गृह्णीयात् द्विजः कामात् स भवेद्ब्रह्मराक्षसः ॥

“ यावज्ज्योतींषि तिष्ठन्ति तावत्तिष्ठति राक्षसः । तद्विष्णा च सदस्यश्च द्वारपा जापका अपि ॥

“ राक्षसाः क्रूरकर्मणो भवन्त्येव न संशयः । सहस्राब्दं तदर्थं च तदर्थं च यथाक्रमम् ॥

“ प्रायश्चित्तं कल्पतरोर्यत्तदेव समाचरेत् ” ॥ इति ।

२५

**सप्तसागरप्रतिग्रहे प्रायश्चित्ताम् । सप्तसागरप्रतिग्रहे लिङ्गपुराणे —**

“ मुखजो धनलोभेन गृह्णीयात्सप्तसागरम् । कुलेन सह संयुक्तो राक्षसो निर्जले भवेत् ॥

“ यागार्थं दक्षिणां गृह्णन् प्रधानत्यागमाचरेत् । योगे सर्वव्ययं कृत्वा नास्ति तस्य पिशाचता ।

“ प्रायश्चित्तेन पूतात्मा इह लोके परत्र च । चतुर्भागव्ययं वापि प्रायश्चित्तं समाचरेत् ॥

“ तस्योपनयनं भूयः सावित्रीदानमेव च ॥

३०

“ ब्रह्मा सदस्यस्तस्यार्थं प्रायश्चित्तमिहार्हतः । द्वारस्थानां तयोरर्थं जापकानां यथाक्रमम् ” ॥ इति ।

**चर्मधेनुप्रतिग्रहे प्रायश्चित्ताम् । चर्मधेनुप्रतिग्रहे वामनपुराणे —**

“ धृत्वा चर्ममयीधेनुं धनलोभपरायणः । सप्तजन्मसु राजेन्द्र विपिने निर्जनेऽजले ॥

“ कृतं पापमनुस्मृत्य स भवेद्ब्रह्मराक्षसः ।

“ तस्यैषा निष्कृतिर्दृष्टा देव्या द्वादशलक्षतः । तस्योपनयनं भूयः पुनःसंस्कारकर्मणा ” ॥ इति । ३५

**पराशरः—**

- “ मुख्यो यस्तु गृहीयात् चर्मधेनुं नृपात्मजात् । ग्रहणादिषु कालेषु पुण्यतीर्थेषु येषु च ॥
- “ चतुर्भागव्ययं कुर्यात् प्रायश्चित्तविधानतः । देव्या द्वादशलक्षेण नियुतेनाभिषेकतः ॥
- “ एषामन्यतमैव पुनःसंस्कारतः शुचिः । सदस्यब्रह्मणोर्धर्ममृतिजामपि पूर्ववत् ” ॥ इति ।
५. गारुपुडराणे—“तुलायां गोसहस्रे च लाङ्गले सप्तसागरे । विश्वचक्रे चर्मधेनौ महाभूतघटे तथा ॥
- “ हेमहस्तिरथे चैव आचार्यं मृत्युराविशेत् । तस्मात्तन्मार्जनं कर्म मृत्यूतरणहेतवे ॥
- “ तदानीं वा परेद्युवा पक्षे वा पञ्चमे दिने । मासमात्रे त्रिमासे वा वत्सरे पूर्णतां गते ॥
- “ प्रायश्चित्तेन पूतात्मा पुनःसंस्कारमर्हति ॥
- “ व्यवहारक्षमो भूयादुभयोर्लोकयोरपि । अन्यथा दोषमाप्नोति न मुक्तिर्ब्रह्मराक्षसात् ” ॥ इति ।
- १० महाभूतघटप्रतिग्रहे प्रायश्चित्तम् । महाभूतघटप्रतिग्रहे देवलः—
- “ पञ्चभूतघटं गृह्णन् विप्रो भवति राक्षसः । सहस्राब्दं वने घोरे निर्जले निर्जने वसेत् ॥
- “ पक्षमात्रं जपेद्युवीं द्विजः पापविशुद्धये । तस्योपनयनं भूयः पुनःसंस्कारकर्मणा ॥
- “ नियुतेनाभिषेकेण चतुर्भागव्ययेन च । नान्यथा शुद्धिमाप्नोति ब्रह्मराक्षसदेहतः ॥
- “ तदर्थं ब्रह्मणः प्रोक्तं तथैव सदस्स्पतेः । द्वाःस्थानां जापकानां च तयोरर्थं प्रकल्पयेत् ” ॥ इति ।
- १५ स्कान्दे तु—“प्रतिगृह्य तुलादीनि राज्ञः पापपरायणात् । प्रायश्चित्तेन पूतात्मा पुनःसंस्कारमर्हति ॥
- “ गङ्गायां मौसलस्नानाच्छुद्धिमाप्नोति दैहिकीम् । रेवायां तु तथा स्नात्वा शुद्धिमाप्नोति पौर्विकीम् ॥
- “ प्रातरारभ्य गण्डक्यामा सायं स्नानमाचरेत् । वर्षद्वयेन पूतात्मा ह्युभयोर्लोकयोः शुचिः ॥
- “ तथैव शोणभद्रायां पूर्वजः शुद्धिमाप्नुयात् । गौतम्यां नियतः स्नात्वा नित्यकर्मपरायणः ॥
- “ विश्वाया मौसलस्नानैरब्दमात्रेण शुद्ध्यति । भीमरथ्यां महानव्यामर्धरात्रे जितेन्द्रियः ॥
- २० “ जानुदध्ने जले स्थित्वा जपेन्मन्त्रं त्रियम्बकम् । सहस्रं पूर्णतां याति यावत्तावद्विरम्यते ॥
- “ एवं मासत्रयं कृत्वा शुद्धिमाप्नोति पौर्विकीम् । अखण्डायां तु कावेर्या प्रातः स्नात्वा यथाविधि ॥
- “ नित्यकर्म समाप्याशु कण्ठदग्ने जले वसन् । जपेच्च पौरुषं सूक्तमष्टोत्तरशतं द्विजः ॥
- “ यदा समाप्तिर्वति तदा मौनं परित्यजेत् । एवं कुर्यात्प्रतिदिनं शुद्धः स्याद्दतुमात्रतः ॥
- “ ताम्रपर्णीनदीतोये अवगाश्य दिनत्रयम् । त्रियम्बकं जपेन्नित्यं संख्यामनुपधारयन् ॥
- २५ “ दिनत्रये तु पूर्णेऽस्मिन् निर्विघ्नेन जनाधिप । पूतो भवति विप्रोऽसौ तुलादीनां प्रतिग्रहात् ॥
- “ धनुष्कोट्यां तुलादीनां ग्रहीता धनलोभतः । स्नात्वा मध्याह्नवेलायां गत्वा रामेश्वरालयम् ॥
- “ औपासनाग्नौ जुहुयाद्विरजाहोममादितः । अधश्यायी भवेन्नित्यं मासमेकं निरन्तरम् ॥
- “ दुर्धाहारं फलाहारं द्वयोरेकं समाचरेत् । सेतुदर्शनमात्रेण ब्रह्महत्या विनश्यति ॥
- “ अर्वाचीनानि पापानि नश्यन्तीत्यत्र का कथा ” ॥ इति । आहिताग्निः संपूर्णदक्षिणेन पुनः
- ३० स्तोमेन वा यजेत् । ‘यो वा वहु प्रतिगृह्य गरगीर्णमिव मन्येत पुनःस्तोमेन यजेत्’ इति श्रुतेः ।
- ‘उशनसः स्तोमेन गरगीर्णमिवात्मानं मन्यमानो यजेत्’ इत्याश्वलायनसूत्रम् । (श्रौतसू. ३.५।१)
- उशनसस्तोमो नाम एकाहः पुनःस्तोम इति चास्यैव संज्ञा । गरः विषं गरो गीर्णो येन स गरगीर्णः । यो बहुप्रतिग्रहादिना पापादिभयादात्मानं गरगीर्णमिव मन्येत स एतेन यजेतेति नारायणीयवृत्तिः ।

इति प्रतिग्रहप्रायश्चित्तम् ।

यत्र प्रतिपदं प्रायश्चित्तं नोक्तं नोपलभ्यते वा तत्र साधारणं प्रायश्चित्तमुच्यते ।  
अतिपातकिप्रायश्चित्तम् । तत्रानुपातकप्रायश्चित्तं विष्णुराह ( ३६८ )—

“ अनुपातकिनस्त्वेते महापातकिनो यथा । अश्वमेधेन शुद्ध्यन्ति तीर्थनुसरणेन वा ” ॥ इति ।  
तत्राश्वमेधः सार्वभौमराजविषयः “ राजा सार्वभौमोऽश्वमेधेन यजेत् ” इति श्रुतेः ( आप. श्रौ. सू. २०१२; सत्पाषाढसू. १४१ ) । तीर्थस्नानमितरविषयम् । ५

उपपातकिप्रायश्चित्तम् । उपपातकप्रायश्चित्तमाह स एव ( ३७३६ )

“ उपपातकिनस्त्वेते कुर्युश्चान्द्रायणं नराः । पराकमथवा कुर्युर्यजेयुर्गोसवेन वा ” ॥ इति ।  
याज्ञवल्योऽपि ( प्रा. २६५ )—

“ उपपातकशुद्धिः स्यादेवं चान्द्रायणेन वा । पयसा वापि मासेन पराकेणाथ वा पुनः ” ॥ इति ।

संकरीकरणादिप्रायश्चित्तम् । संकरीकरणादेः प्रायश्चित्तमाह विष्णुः ( ३९२२-४०१२ )— १०

“ संकरीकरणं कृत्वा मासमश्रीत यावकम् । कृच्छ्रातिकृच्छ्रमथवा प्रायश्चित्तं तु कारयेत् ॥

“ अपात्रीकरणं कृत्वा तप्तकृच्छ्रेण शुद्ध्यति । शीतकृच्छ्रेण वा शुद्धिः महासान्तपनेन वा । (४११५) —

“ मलिनीकरणीयेषु तप्तकृच्छ्रं विशेषधनम् । कृच्छ्रातिकृच्छ्रमथवा प्रायश्चित्तं विशेषधनम् ॥ ” इति ।

मनुः ( १११२५ )—

“ संकरापात्रकृत्यासु मासं शोधनमैन्दवम् । मलिनीकरणीयेषु तप्तः स्याद्यावकं द्यहम् ” ॥ इति । १५

अनुकानां सर्वेषां पापानां साधारणं प्रायश्चित्तमाह पराशारः ( १२०७२ )—

“ चान्द्रायणं यावकं च तुलापुरुष एव च । गवां चैवानुगमनं सर्वपापप्रणाशनम् ” ॥ इति ।

तुलापुरुषः कृच्छ्रविशेषः। पापगौरवलाघवानुसारेण चान्द्रायणादीन्यावृत्तान्यनावृत्तानि वा अनुष्टेयानि ।

स एव ( ११५३ )—

“ सर्वेषामेव पापानां संकरे समुपास्थिते । दशसाहस्रमध्यस्ता गायत्री शोधनी परम् ” ॥ इति । २०

शङ्खलिखितौ—“ क्यविक्रियदुष्टभोजनप्रतिग्रहेष्वनादिष्टप्रायश्चित्तेषु सर्वेषु चान्द्रायणं प्राजापत्यं वा ” ॥ इति ।

शातातपः—“ अनुक्तेषु विधिं ज्ञात्वा प्राजापत्यं समाचरेत् । सर्वत्र सर्वपापेषु द्विजश्चान्द्रायणं चरेत् ” ॥

उशनाः—

“ यत्रोक्तं यत्र वा नोक्तमिह पातकनाशनम् । प्राजापत्येन कृच्छ्रेण शुद्ध्यते नात्र संशयः ” ॥ इति । २५

मनुविष्णुविश्वामित्राः ( ११२०९ )—

“ अनुक्तनिष्कृतीनां तु पापानामपनुत्तये । शक्तिं चावेक्ष्य पापं च प्रायश्चित्तं प्रकल्पयेत् ” ॥ इति ।

याज्ञवल्क्यः ( प्रा. २७५ )—

“ देशं कालं वयः शक्तिं पापश्चावेक्ष्य यत्नतः । प्रायश्चित्तं प्रकल्प्यं स्याद्यत्र चोक्ता न निष्कृतिः ” ॥

स एव—

“ यदा यदा तु संकीर्णमात्मानं मन्यते द्विजः । तदा तदा तिलैर्हेषो गायत्र्या वाचनं तथा ” ॥ इति ।

गौतमः ( १११७-२० )—“ संवत्सरं षष्ठ्मासाश्रत्वारस्त्रयो द्वावैकश्चतुर्विंशत्यहो द्वाविंशाहाः

षड्हस्त्रयहोरात्रः ” इति कालाः । एतान्येवानादेशो विकल्पेन क्रियेन्नेनःसु गुरुषु गुरुणि लघुषु

लघूनि कृच्छ्रातिकृच्छ्रौ चान्द्रायणमिति सर्वप्रायश्चित्तम् ” ॥ इति । ३०

१ गद्य—तिपातकसमपातकयोः । २ घ—दशा । ३ गद्य—षड्हस्त्रहः अहोरात्र ।

स्मृत्यन्तरे—“सर्वजन्मार्जितानीह भ्रूणहत्यादिकान्यपि । सर्वपापानि नश्यन्ति कुच्छिद्वैदर्दशवाषिकैः॥  
“ जन्मप्रभूति यत् किंचित्पातकं चोपपातकम् । अर्वाक्तु भ्रूणहत्यायाः षडब्दान्धश्यति ध्रुवम् ॥  
“ अब्दात् सकृदम्यस्तं बुद्धिपूर्वमसन्महत् । तच्छुद्ध्यत्यब्दकुच्छेण महतः पातकाद्वते ” ॥ इति ।  
त्रिंशत्कुच्छा अब्दकुच्छः कुच्छः प्राजापत्यः । स च प्रतिनिधिना कार्यः ।

४ रहस्यप्रायश्चित्तानि । अथ रहस्यप्रायश्चित्तानि । यत्पापं कर्तृव्यतिरिक्तेनान्येन केनापि न ज्ञातं तद्रहस्यम् । तस्य प्रायश्चित्तमपि रहस्येव कर्तव्यम् । तथा च यमहारीतौ—‘रहस्ये रहस्यं प्रकाशो प्रकाशम्’ इति । रहस्यत्वादेव नास्ति तत्र परिषदनुमत्यपेक्षा । तदाहतुर्वृहस्पतियाज्ञवल्क्यौ ( प्रा. ३०१ )—

“ प्रख्यातदोषः कुर्वीत पर्षदोऽनुमतं व्रतम् । अनभिख्यातदोषस्तु रहस्यं व्रतमाचरेत् ” ॥ इति ।

१० न च विना परिषदं व्रतज्ञानाभाव इति शङ्कनीयम् । शास्त्रज्ञस्य तद्विज्ञानसंभवात् । इतरेणापि बुद्धिमता विद्वगोष्ठयां केनचित् व्याजेनावगन्तुं शक्यत्वात् । रहस्यकृतं पापं स्वल्पेनापि जपादिना निवर्तते । अत एव प्राजापत्यादिव्रतानां जपादीनां च व्यवस्थामाह मनुः ( ११-२२६ )—“एतैर्द्विजातयः शोध्या व्रतैराविष्ट्वैतनसः । अनाविष्टतपापांस्तु मन्त्रैर्होमैश्च शोधयेत् ” ॥ इति । तत्र रहस्यानां साधारणं प्रायश्चित्तमाह स एव ( ११२४५-२४६, २४८ )—

१५ “ वेदाभ्यासोऽन्वहं शक्त्या महायज्ञकिया क्षमा । नाशयन्त्याशु पापानि महापातकजान्यपि ॥

“ यथैधस्तेजसा वह्निः प्राप्तं निर्दहति क्षणात् । तथा ज्ञानाग्निना पापं कृत्स्नं दहति वेदवित् ॥

“ सव्याहृतिकाः सप्रणवाः प्राणायामास्तु षोडश । अपि भ्रूणहनं मासात् पुनन्त्यहरहः कृताः ” ॥

बोधायनः ( २१४।१८ )—

“ यदुपस्थकृतं पापं पम्यां वा यत्कृतं भवेत् । बाहुभ्यां मनसा वाचा श्रोत्रघ्राणेन चक्षुषा ॥

२० “ सर्वं दहति निःशेषं प्राणायामैस्त्रिभिः कृतैः ” ॥

गौतमः ( २५।७-१० ) “ अनार्जवपैशुनप्रतिसिद्धाचारानाद्यप्राशनेषु शूद्रायां च रेतः सिक्त्वा अयोनौ च दोषवति च कर्मणि अभिसन्धिपूर्वेऽपि आब्लिङ्गाभिरप उपस्पृशेत् । वारुणीभिरन्त्यैर्वा पवित्रैः । प्रतिषिद्धवाङ्मनसापचारे व्याहृतयः पञ्च । सर्वास्वपो वा आचामेदहश्च माऽऽदित्यश्च पुनात्विति । प्राता रात्रिश्च मा वरुणश्च पुनात्विति सायमष्टौ वा सामिध आदद्यात् । देवकृतस्येति हुत्वैवं २५ सर्वस्मादेनसो मुच्यते मुच्यत ” इति । अनार्जवमनृजुत्वं मानसं कर्मशार्थं वा । पैशुनं परपरिवादः । वाचिकं प्रतिसिद्धाचारः । नियमलोपः कायिकं अनाद्यस्यानेकविधस्योपभोगः अनाद्यप्राशनम् । एतदादौ दोषवति कर्मणि च ।

आपस्तम्बः ( ११२६।७ )—“ अनाद्यानपयः प्रतिषिद्धभोजनेषु दोषवच्च कर्माभिसन्धिपूर्वकं कृत्वाऽनभिसन्धिपूर्वं वा शूद्रायां च रेतः सिक्त्वा योनौ चाब्लिङ्गाभिर्वारुणीभिश्चोपस्पृश्य प्रयतो ३० भवति । औंपूर्वाभिर्व्याहृतिभिः सर्वाभिः सर्वपापेष्वाचामेत् । आचमनादेव सर्वस्मातपापात् प्रमुच्यते । अष्टौ वा समिध आदद्यात् । देवकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा । मनुष्यकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा । पितृकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा । आत्मकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा । यद्विवा च नक्तं चैनश्चकृम तस्यावयजनमसि स्वाहा । यत् स्वपन्तश्च जाग्रतश्चैनश्चकृम-तस्यावयजनमसि स्वाहा । यद्विद्वांसश्चाविद्वांसश्चैनश्चकृमतमस्यावयजनमसि स्वाहा । एनस

एनसोऽवयजनमसि स्वाहा । इत्येतैरष्टभिर्हुत्वा सर्वस्मात् पापात्प्रमुच्यते । क्रतं च सत्यं चेत्यघमर्षणं त्रिरन्तर्जले पठेत् । सर्वस्मात्पापात् प्रमुच्यते । आयंगौः पृथिवकमीदिति तृचं च त्रिरन्तर्जले पठेत् । सर्वस्मात् पापात् प्रमुच्यते । द्वुपदादिवेन्मुमुचान इति एनामृचं त्रिरन्तर्जले पठेत् । सर्वपापात् प्रमुच्यते । हंसः शुचिषदित्येतामृचं त्रिरन्तर्जले पठेत् । सर्वपापैः प्रमुच्यते । अपि वा सावित्रीं गायत्रीं पच्छोऽर्धर्चशः समस्तामिति त्रिरन्तर्जले पठेत् । सर्वपापैः प्रमुच्यते । अपि वा व्याहृतीर्व्यस्ताः समस्ताश्वेति ॥  
त्रिरन्तर्जले पठेत् । सर्वस्मात्पापात् प्रमुच्यते । अपि वा प्रणवमेव त्रिरन्तर्जले पठेत् । सर्वस्मात् पापात् प्रमुच्यते । पवित्रैर्मर्जिनं कुर्वन् रुद्रैकादशिनीं जपन् । मुच्यते सर्वपापेभ्यो महतःपातकादृते” ॥ इति । आपस्तम्बः ( ११२६।७ )—“ अनार्जवपैशुनप्रतिषिद्धाचारेषु अभक्ष्यभोज्यपेयप्राशने शूद्रायां च रेतः सिक्तवायोनौ च दोषवत्कर्माभिसन्धिपूर्वं कृत्वानभिसन्धिपूर्वं वा अब्लङ्घाभिरप उपसूक्षेत् वारुणीभिर्वान्यैर्वा पवित्रैर्यथाकर्माभ्यासः ” इति । १०

यमः—“ विरजाद्विगुणं जप्त्वा तदहैव विशुद्ध्यति । पौरुषं सूक्तमावृत्य मुच्यते सर्वकिल्बिषात् ॥  
“ क्रष्णं शतशो जप्त्वा तदहैव विशुद्ध्यति । वेदमेकगुणं जप्त्वा तदहैव विशुद्ध्यति ॥  
“ रुद्रैकादशकं जप्त्वा तदहैव विशुद्ध्यति । जपेद्वाप्यस्य वामीयं पावमानीरथापि वा ॥  
“ कुन्तापं वालखिल्यांश्च निवित्प्रैषं वृषाकपिम् । होतृन् रुद्रान् पितृन् जप्त्वा मुच्यते सर्वपातकैः” ॥ इति ।  
होतृन् चित्तिः सुगादीन् । पितृन् परे युवांसमित्यादीन् । चतुर्विंशतिमते— १५  
“ पावमानीस्तथा काष्ठं पौरुषं सूक्तमेव च । सपुत्रं माधुच्छन्दसं जप्त्वा पापैः प्रमुच्यते ।  
“ मण्डूकं ब्राह्मणं रुद्रं शक्रियं मोक्षकं तथा । वामदेव्यं बृहत्साम जप्त्वा पापैः प्रमुच्यते ॥  
“ यज्ञायज्ञियमादित्यज्येष्ठसाम च राजनम् । पौरुच्छेषं च सामानि जप्त्वा पापैः प्रमुच्यतं ॥  
“ अर्थर्वाशिरसं चैव पौरुषं सूक्तमेव च । नीलरुद्रांस्तथैवैन्द्रं जप्त्वा पापैः प्रमुच्यते ॥  
“ आर्थर्वणाश्च ये केचित् मन्त्राः कामविवर्जिताः । ते सर्वे पापहन्तारो याज्ञवल्क्यवचो यथा ॥ २०  
“ अग्नेऽन्वेऽनुवाकं तु जपेदेनमनुत्तमम् । सिंहे मे मन्युरित्येतमनुवाकं जपेद् द्विजः ॥  
“ जप्त्वा पापैः प्रमुच्येत बोधायनवचो यथा ।  
“ ऋग्वेदमभ्यसेद्यस्तु यजुःशास्वामथापि वा । सामानि सरहस्यानि अर्थर्वाङ्गिरसस्तथा ॥  
“ यत्किंचित्पातकं कुर्यात् किंचेत्माता च तं जपेत् । हंसः शुचिषदित्येतां जपेद्वापि त्रियम्बकम् ॥  
“ ब्राह्मणानि च कल्पांश्च षडङ्गानि तथैव च । आख्यानानि तथान्यानि जप्त्वा पापात्प्रमुच्यते ॥ २५  
“ इतिहासपुराणानि देवतास्तवनानि च । जप्त्वा पापैः प्रमुच्येत धर्मस्थानैस्तथापरैः” ॥ इति ।  
विष्णुः ( ५६।१-२७ )—“ अथातः सर्वदैवपित्र्याणि भवन्ति । येषां जपैश्च होमैश्च द्विजातयः पापैश्च पूयन्तेऽघमर्षणं देवकृतं शुद्धवत्यस्तरत्समन्दीधावति कूशमाण्डाः पावमान्यः दुर्गा सावित्री अतिषङ्गयः पदस्तोभा व्याहृतयो भारुण्डानीन्द्रसामं पुरुषवतं दैवतं भासमब्लङ्घं बाहस्पत्यं वावसूक्तं गोसूक्तं अश्वसूक्तं मध्वृचः सामानि चेन्द्रशुद्धं शतरुद्रीयमर्थवैशिरः त्रिसुपर्णो महावतं ३० नारायणीयं पुरुषसूक्तम् । “ त्रीण्याज्यस्तोमानि रथंतरं चाग्नेर्वतं वामदेव्यं बृहच्च ।  
“ तानि जप्त्वा पुनन्ति जन्तून् जातिस्मरत्वं लभते य इच्छेत् ” इति । पैठीनसिः—  
“ सर्वपापप्रसक्तोऽपि ध्यायन्निमिषमच्युतम् । पुनस्तपस्वी भवति पद्मिन्पावनपावनः ” ॥

**वसिष्ठः—**

“हित्वा सकलपापानि लब्ध्वा सुकूतसंचयम् । स पूतो जायते धीमान्मुरजिन्नामकीर्तनात्” इति ।

**भृगुः—**“कोटिशो मनुजानां वै भीतिदं समुपस्थितम् । रामरामेति संकीर्त्यं तं नाशयति मानवः ॥

“सर्वेषामेव पापानां प्रायश्चित्तमिदं स्मृतम् । नातः परतरं पुण्यं त्रिषु लोकेषु विद्यते” ॥ इति ।

**५ योगयाज्ञवल्क्यः—**

“न तावत्पापमेधेत यन्नाम्ना न हतं हरेः । अतिरेकमयादाहुः प्रायश्चित्तान्तरं वृथा” ॥ इति ।

**ब्रह्मकैर्वते—**

“सर्वपापयुतो वापि कीर्तयन्ननिशं हरिम् । शुद्धान्तःकरणो भूत्वा जायते पाङ्गोपावनः” ॥

रहस्यब्रह्महत्यादिपापानां प्रतिपदोक्तप्रायश्चित्तम् । अथ प्रतिपदोक्तानि ।

**१० व्यासः—**“योऽनूचानं द्विजं मर्त्यो हतवानर्थलोभतः । स जपेत्पौरुषं सूक्तं जलस्थश्चिन्तयन् हरिम्” ॥

“तथैव ब्रह्महत्याया मुच्यते नात्र संशयः” ॥ इति ।

**यमः—**“ब्रह्महत्यासुरापानस्वर्णस्तेयगुरुतल्पेषु प्राणायामैः श्रौताघर्षणं जपेत्” ॥ इति ।

**याज्ञवल्क्यः ( प्रा. ३०२ )—**

“त्रिरात्रोपेषितो जप्त्वा ब्रह्महा॑ त्वघर्षणम् । अन्तर्जले विशुध्येत गां दत्वा तु पयस्विनीम्” ॥

**१५ शङ्खलिखितौ—**“त्रिरात्रोपेषितोऽन्तर्जलेऽघर्षणं त्रिरात्र्तयेत्” ॥ इति । चतुर्विंशतिमते—

“त्रिमधुत्रिसुपर्णं च नाचिकेतत्रयं तथा । नारायणं जपेत्सर्वं मुच्यते ब्रह्महत्यया” ॥ इति ।

**बोधायनः ( ३१४ )—**“ग्रामात् प्राचीमुदीचीं वा दिशमुपनिषद्म्य स्नातः शुचिः शुचिवासा उदकान्ते स्थणिडलमुपलिप्य सकृत्कृत्वासा गोशकृत्पूतेन पाणिनादित्याभिमुखोऽघर्षणं स्वाध्यायमधीयीत प्रातःशतं मध्याह्ने शतमपराह्ने शतमपरिमितं चोदितेषु नक्षत्रेषु प्रसृतियावकं प्राशी-

**२० यात्** । ज्ञानकृतेभ्योऽज्ञानकृतेभ्यश्चोपपातकेभ्यः सप्तरात्रात् प्रमुच्यते । द्वादशरात्रान्महापातकेभ्यः ब्रह्महननं गुरुतल्पगमनं स्वर्णस्तैर्न्यं सुरापानमिति च वर्जयित्वा एकविंशतिरात्रात् तान्यतितरति” ॥ इति । बृहद्विष्णुः—“ब्रह्महत्यां कृत्वा प्राचीमुदीचीं वा दिशमुपनिषद्म्य प्रभूतेनेन्दनेनाग्निं प्रज्वाल्याघर्षणेनाष्टसहस्रमाज्यैर्जुहुयात् । तेनैव तस्मात् पूतो भवति” ॥ इति ।

**मनुः ( २१२४९-२५१ )—**

**२५** “कौत्सं जप्त्वाऽपनोत्येतद्वासिष्ठं च तृचं प्रति । माहित्रं शुद्धगङ्गः च सुरापोऽपि विशुध्यति ॥

“सकृज्जप्त्वास्य वामीयं शिवसंकल्पमेव च । सुवर्णमपहत्यापि क्षणात् भवति निर्मलः” ॥

“हविष्मन्तीयमभ्यस्य न तमं ह इतीति च । जप्त्वा च पौरुषं सूक्तं मुच्यते गुरुतल्पगः” ॥

“मन्त्रैः शाकलहोमीयैरब्दं हुत्वा धृतं द्विजः । सर्वमध्यपहन्त्यैनो जप्त्वा वामेन इत्यृचीं” ( २५६ )

“महापातकसंयुक्तोऽनुगच्छेद्गाः समाहितः । अभ्यस्याब्दं पावमानीः भैक्षाहारो विशुध्यति” ( २५७ )

**३०** “अरण्ये वा त्रिभ्यस्य प्रयतो वेदसंहिताम् । मुच्यते पातकैः सर्वैः पराकैः शोधितस्त्रिभिः” ( २५८ )

“ञ्यहं तुपवसेद्युक्तः ञ्यहं तूपनयन्यपः । मुच्यते पातकैः सर्वैः त्रिर्जप्त्वा वाघर्षणम्” ॥

**यमः ( २-५ )—**“सुरापः कण्ठमात्रमुदकमवतीर्य सुतसोमात् प्रसृतिमादाय औंकारेणाभिमन्त्य पिबेत् ।

ततोऽप्सु निमग्नो मानस्तोकीयं जपेत् । ब्राह्मणः स्वर्णस्तेयं कृत्वा हिरण्यशालायां प्रक्षिप्याप्सु

निष्णातो श्रीवामात्र उदके हिरण्यवर्णभिश्वतसुभिरात्मानमभ्युक्ष्य त्रीन् प्राणायामान् कृत्वा

**३५** तदेतस्मात् पूतो भवति । गुरुतल्पगमनं कृत्वा घर्षणमन्त्रं जले त्रिरावृत्य तदेतस्मात् पूतो भवति” ॥

१ घ-स्तेयं । २ घ-प्रतीत्यृचं । ३ गघ-वत्यश्च । ४ घ-ष्या । ५ घ-नम् । ६ घ-चम् ।

रहस्यसुरापानादिप्रायश्चित्तम् । सुरापानादौ याज्ञवल्क्यः ( प्रा. ३०४-३०५ )—

“त्रिरात्रोपेषितो हुत्वा कूश्माण्डीभिर्घृतं शुचिः । ब्राह्मणः स्वर्णहारी तु रुद्रजापी जले स्थितः ॥

“सहस्रशीर्षा जापी तु मुच्यते गुरुतत्पगः । गोदैया कर्मणोऽस्यान्ते पृथगेव पयस्विनी” ॥ इति ।

शातातपः—“मद्यं पीत्वा गुरुदारांश्च गत्वा स्तेयं कृत्वा ब्रह्महत्यां च कृत्वा ॥

“भस्मच्छब्दो भस्मशश्याशयानो रुद्राध्यायी मुच्यते सर्वपापैः” ॥ इति ।

जपश्चैकादशकृत्वः कार्यः । तदाहात्रिः—

“एकादशगुणान्वापि रुद्रानावर्त्य धर्मवित् । महापापैरपि सृष्टो मुच्यते नात्र संशयः” ॥ इति ।

बोधायनः—

“अघमर्षणं देवकृतं शुद्धवत्यस्तरत्समाः । कूश्माण्डः पावमान्यश्च विरजामृत्युलाङ्गलम् ।

“दुर्ग्याहुतयो रुद्रा महापातकनाशनाः” ॥ इति । आश्वलायनः—

“कुन्तार्पं वालखिल्यांश्च जप्त्वा पापैः प्रमुच्यते । ब्रह्महत्यादिपापेभ्यः पावमानात्प्रमुच्यते” ॥

संवर्तः—

“षष्ठ्मासं पञ्चमासं वा नियतो नियताशनः । जप्त्वा तु पौरुषं सूक्तं मुच्यते सर्वपातकैः” ॥ इति ।

बोधायनः—“मातुदुहितृस्नुषास्वसृसवर्णाविधवागमनं कृत्वा यः पुरुषसूक्तं त्रिरुच्चारयेत् तदानीमेव पूतो भवति” इति । कूर्मपुराणे—

“जपस्तपस्तीर्थसेवा दौनं ब्राह्मणपूजनम् । ग्रहणादिषु कालेषु महापातकशोधनम् ॥

“उपोषितश्चतुर्दश्यां कृष्णपक्षे समाहितः ।

“यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च । वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च ॥

“प्रत्येकं तिलसंयुक्तान् दद्यात् सप्तोदकाङ्गलीन् । स्नात्वा नद्यां तु पूर्वाङ्गे मुच्यते सर्वपातकैः” ॥ इति ।

अत्र ज्ञानाज्ञानाभ्यासानभ्यासैर्वर्यवस्था द्रष्टव्या । संसर्गी तदीयमेव प्रायश्चित्तं कुर्यात् । २०

‘स तस्यैव व्रतं कुर्यात्’ इत्यादिना पूर्वमेवोक्तत्वात् ।

उपपातकरहस्यप्रायश्चित्तम् । उपपातकरहस्यप्रायश्चित्तमाह याज्ञवल्क्यः ( प्रा. ३०६ )—

“प्राणायामशतं कार्यं सर्वपापापनुत्तये । उपपातकजातानामनादिष्टस्य चैव हि” ॥ इति ।

स्मृत्यन्तरेऽपि—

“इशप्रणवसंयुक्तैः प्राणायामैश्चतुःशतैः । मुच्यते ब्रह्महत्यायाः किं पुनः शेषपातकैः” ॥ इति । २५

प्राजापत्यकृच्छ्रुलक्षणम् । अथ कृच्छ्रुलक्षणम् । तत्र प्राजापत्यस्य बोधायनः ( ४१५१६ )—

“प्राजापत्यो भवेत्कृच्छ्रो दिवा रात्रावयाचित्तम् । क्रमशो वायुभक्षश्च द्वादशाहं ऋयं ह ऋयहम्” ॥

आपस्तम्बः ( १९२७७ )—“ऋयहमनक्ताशी अदिवाशी ततस्त्रयहं ऋयहमयाचित्तव्रतस्त्रयहं नाश्राति किं च नेति कृच्छ्रुद्वादशरात्रस्य विधिः” ॥ इति ।

मनुः ( ११२१-१ )—

“ऋयहं प्रातस्त्रयहं सायं ऋयहमयादयाचित्तम् । ऋयहं परं तु नाश्रीयात् प्राजापत्यं चरन्वतम्” ॥ इति ।

अस्यैवाधिकारिभेदेन प्रयोगान्तरमाह वसिष्ठः ( ७०।४२ )—

“ अहः प्रातरहर्नक्तमहरेकमयाचितम् । अहः परं चोपवास एवं चतुरहौ परौ ॥

“ अनुग्रहार्थं विप्राणां मनुर्धर्मभूतां वरः । बालवृद्धातुराणां च शिशुकृच्छ्रमुवाच ह ” ॥  
बोधायनः ( ४।५।७ )—

५ “ अहरेकं तथा नक्तमज्ञातं वायुभक्षितम् । त्रिवृदेष परावृत्तो बालानां कृच्छ्र उच्यते ” ॥  
याज्ञवल्क्यः ( प्रा. ३।१९।३२० )—

“ एकभुक्तेन नक्तेन तथैवायाचितेन वा । उपवासेन चैकेन पादकृच्छ्रः प्रकीर्तिः ।

“ यथाकथंचित् त्रिगुणः प्राजापत्योऽयमुच्यते ” ॥ इति । एकभुक्तेन दिवा सकृद्भोजनेन नक्तेन  
रात्रौ सकृद्भोजनेन अयाचितेन न विद्यते यावितं यस्मिन् भोजने तेनात्र कालविशेषाप्रतीतिः दिवा  
१० रात्रौ वा सकृद्भोजनेनायाचितेनोपवासेनानाशनेन पादकृच्छ्रो भवति । अयमेव पादकृच्छ्रः स्वस्या-  
वृत्त्या स्वस्थानविवृद्ध्या वा यथाकथंचित् त्रिगुणः त्रिरम्यस्तः प्राजापत्य इत्युच्यत इत्यर्थः ।

एकभुक्तादिषु ग्राससंख्यां परिमाणं चापस्तम्बो दर्शितवान्—

“ सायं द्वाविंशतिर्ग्रीसाः प्रातः षड्विंशतिः स्मृताः । चतुर्विंशतिर्याचिते परं निरशनं स्मृतम् ॥

“ कुकुटाण्डप्रमाणं तु यथावास्यं विशेषस्यम् ” ॥ चतुर्विंशतिमते—

१५ “ प्रातस्तु द्वादशग्रीसाः सायं पञ्चदशैव तु । अयाचितेन द्वावष्टौ त्रिदिनं मारुताशनः ” ॥ इति ।  
अत्र शक्त्यपेक्षया व्यवस्था द्रष्टव्या ।

पादकृच्छ्राणां वर्णभेदेन व्यवस्था ।

आपस्तम्बः चतुरः पादकृच्छ्रानुकृत्वा तेषां वर्णभेदेन व्यवस्थामाह—

“ व्यहं निरशनं पादः पादश्चायाचितं व्यहम् । सायं व्यहं तथा पादः प्रातः पादस्तथा व्यहम् ॥

२० “ प्रातः पादं चरेच्छ्रद्धः सायं वैश्यस्य दापयेत् । अयाचितं तु राजन्ये त्रिरात्रं ब्राह्मणे स्मृतम् ” ॥  
अर्धकृच्छ्रपादोनकृच्छ्रयोः स्वरूपमाह स एव—

“ सायं प्रातर्विनार्थं स्यात् पादोनं नक्तवर्जितम् ” ॥ अयमर्थः—अयाचितोपवासयोः  
व्यहद्यानुष्ठानेनार्थकृच्छ्रो भवति । नक्तव्यतिरिक्तव्यहत्रयानुष्ठानेन पादोनकृच्छ्रो भवतीति ।  
अन्यथा अर्धकृच्छ्रस्तेनैवोक्तः—

२५ “ सायं प्रातस्तथैवोक्तं दिनद्वयमयाचितम् । दिनद्वयं तु नाश्रीयात् कृच्छ्रार्थं तद्विधीयते ” ॥ इति ।  
यत्तु जपहोमादिवाद्याङ्गविहितं प्राजापत्यकृच्छ्रं गौतमेनाभिहितं ( २६।१-१७ )—“ हविष्या-  
न्प्रातराशान् भुक्त्वा तिस्रो रात्रीर्नश्रीयात् । अथापरं व्यहं नक्तं भुजीताथापरं व्यहं न किंचन  
याचयेत् । अथापरं व्यहमुपवसेत् । तिष्ठेदहनि रात्रावासीत क्षिप्रकामः । सत्यं वदेदनायैर्न संभाषेत् ।  
रौरवयौधाजपे नित्यं प्रयुजीतानुसवनमुदकोपस्पर्शनमापो हि ष्ठेति तिस्राभिः पवित्रवतीभिर्मार्जयीत

३० हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका इत्यष्टाभिरथोदकतर्पणं नमोऽहमाय मोहमाय मंहमाय विधून्वते  
तापसाय पुनर्वसवे नमो नमो मौञ्ज्यायोम्याय वसुविन्दाय सार्वविन्दाय नमो नमः पाराय सुपाराय  
महापाराय पारयिष्णवे नमो नमो रुद्राय पशुपतये महते दैवताय व्यम्बकायैकचरायाधिपतये  
हराय शर्वायेशानायोग्राय वज्रिणे घृणिने कपर्दिने नमो नमः सूर्यायादित्याय नमोनमो नीलग्रीवाय  
शितिकण्ठाय नमो नमः कृष्णाय पिङ्गलाय नमो नमो ज्येष्ठाय श्रेष्ठाय वृद्धायेन्द्राय हरिकेशा-  
३५ योर्ध्वरेतसे नमो नमः सत्याय पावकाय पावकवर्णाय कामाय कामरूपिणे नमो नमो दीप्ताय

दीपरूपिणे नमो नमस्तीक्ष्णाय तीक्ष्णरूपिणे नमो नमः सोभ्याय सुपुरुषाय महापुरुषाय मध्यम-  
पुरुषायोत्तमपुरुषाय ब्रह्मचारिणे नमो नमश्वन्दललाटाय कृत्तिवाससे नमः । इत्येतदेवादित्योपस्थान-  
मेता एवाज्याहुतयो द्वादशरात्रस्यान्ते चरुं श्रपयित्वैताभ्यो देवताभ्यो जुहुयादग्नये स्वाहा  
सोमाय स्वाहाऽग्नीषोमाभ्यामिन्द्राग्निभ्यामिन्द्राय विश्वेभ्यो देवेभ्यो ब्रह्मणे प्रजापतयेऽग्नये स्विष्ट-  
कृते स्वाहेत्यन्ते ब्राह्मणभोजनम् ॥ इति । हविष्यानित्याद्युपवसेदित्यन्तेन प्राजापत्यस्वरूपमुक्तम् । ५  
तिष्ठेदित्यादिना तस्येतिकर्तव्यतोच्यते । क्षिप्रकामः शीत्रं शुद्धिकामः । भोजनाद्यविरुद्धकालेषु  
अहनि तिष्ठेत रात्रौ निद्रामप्यासीन एव सेवेत । एवं सत्यं वदेदित्याद्यज्ञकलापे क्षिप्रकाम इत्यधिकारि-  
विशेषणमनुषञ्जनीयम् । अनेन यः शनैः शुद्धो भवामीति भन्यते तस्य नायं नियम इति गम्यते ।  
रौरवयौधाजये सामनी नमोऽहमायेत्याद्यस्त्रयोदशमन्त्रास्तर्पणसूर्योपस्थानाज्यहोमेषु द्रष्टव्याः ।  
अथवा संप्रदानविभक्त्यन्ताः षट्पञ्चाशनमन्त्राः । एतन्मन्वाद्युक्तजपहोमाद्यज्ञरहितप्राजापत्यद्वयः ॥ १०  
स्थाने वेदितव्यमिति आधवीये ।

अतिकृच्छ्रलक्षणम् । अतिकृच्छ्रस्य मनुः ( ११२१३ )—

“एकैकं ग्रासमश्रीयात् ऋहाणि त्रीणि पूर्वतः । ऋहं चोपवसेदन्त्यमतिकृच्छ्रं चरन् द्विजः” ॥ इति ।  
एकभुक्तनक्तायाचितदिवसेषु नवस्वैकैकं ग्रासमश्रीयात् । ऋहं चोपवसेत् अयमतिकृच्छ्रो भवतीत्यर्थः।  
यमः—“एकैकं पिण्डमश्रीयात् ऋहं काले ऋहं निश्चिः । अयाचितं ऋहं चैव वायुभक्षः परे ऋहम् ॥ १५

“ अतिकृच्छ्रं चरेदेतत्पवित्रं पापनाशनम् ” ॥ बोधायनः ( ४५१८ )—

“ एकैकं ग्रासमश्रीयात् पूर्वोक्तेन ऋहं ऋहम् । वायुभक्षस्त्रयहं चान्यदतिकृच्छ्रोऽघनाशनः ” ॥

यनु याज्ञवल्कयेनोक्तम् ( प्रा.-३२० )—“ अयमेवातिकृच्छ्रः स्यात् पाणिपूरान्नभोजने ” इति  
अयमेव प्राजापत्यकृच्छ्र एव एकभुक्तनक्तायाचितदिवसेषु नवसु पाणिपूरान्नभोजनयुक्तोऽतिकृच्छ्रो  
भवतीत्यर्थः । तथा च पराशारः ( ११५२ )—

२०

“नवाहमतिकृच्छ्रः स्यात् पाणिपूरान्नभोजनः । त्रिरात्रमुपवासः स्यादतिकृच्छ्रः स उच्यते” ॥ इति  
तदेतदशक्तविषयम् । पाणिपूरान्नस्य ग्रासपरिमितान्नादधिकपरिमाणत्वात् ।

कृच्छ्रातिकृच्छ्रलक्षणम् । कृच्छ्रातिकृच्छ्रस्य बोधायनः ( ४५१९ )—

“ अब्मक्षस्त्रयहानेतान्वायुभक्षस्ततः परम् । एष कृच्छ्रातिकृच्छ्रस्तु विज्ञेयः सोऽतिपावनः ” ॥  
एकभुक्तनक्तायाचितदिवसेषु यो भोजनकालः तस्मिन्ब्रेव काले केवलमुद्देनैव वर्तनं त्रिरात्रमुपवासश्च २५  
कृच्छ्रातिकृच्छ्र इत्यर्थः । यनु एकविंशतिदिनपर्यन्तं क्षीरेणैव वर्तनमुक्तं याज्ञवल्कयेन ( प्रा. ३२१ )

“ कृच्छ्रातिकृच्छ्रः पयसा दिवसानेकविंशतिम् ” इति तदशक्तविषयम् ।

तस्मृकृच्छ्रलक्षणम् । तस्मृकृच्छ्रस्य मनुः ( ११२१४ )—

“ तस्मृकृच्छ्रं चरन् विप्रो जलक्षीरघृतानिलान् । प्रतिऋहं पिबेदुष्णान् सकृत्स्नायी समाहितः ” ॥

बोधायनः ( ४५११० )—

३०

“ ऋहं ऋहं पिबेदुष्णं पयः सर्पिः कुशोदकम् । वायुभक्षस्त्रयहं चान्यत् तस्मृकृच्छ्रः स उच्यते ” ॥

सांतपनकृच्छ्रलक्षणम् । सांतपनस्य मनुबोधायनौ ( ११२१२; ४५१११ )—

“ गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् । एकरात्रोपवासश्च कृच्छ्रः सांतपनः स्मृतः ” ॥ इति ।

एतस्य द्विरात्रसाध्यत्वमाह याज्ञवल्क्यः ( ३१५ )—

“गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् । जग्धवा परेऽहन्त्युपवसेत् कृच्छ्रं सांतपनं चरन्” ॥ इति ।

महासांतपनलक्षणम् । महासांतपनं त्रिविधं सप्तरात्रं पञ्चदशरात्रमेकविंशतिरात्रं चेति ।

तत्र सप्तरात्रस्य स्वरूपमाह याज्ञवल्क्यः ( प्रा. ३१६ )—

५ “पृथक् सांतपनद्रव्यैः षडहः सोपवासकः । सप्ताहेन तु कृच्छ्रोऽयं महासांतपनः स्मृतः” ॥ इति ।

यमः पञ्चदशाहमाह—

“ ऋहं पिबेत्तु गोमूत्रं ऋहं वै गोमयं पिबेत् । ऋहं दधि ऋहं क्षीरं ऋहं सर्पिस्ततः शुचिः ॥

“ महासांतपनं ह्येतत् सर्वपापप्रणाशनम् ” ॥ इति । जाबालिस्त्वाह—

“ षण्णमेकमेतेषां त्रिरात्रमुपयोजयेत् । ऋहं चोपवसेदन्ते महासांतपनं विदुः” ॥ इति ।

१० एतत् त्रयं पापतारतम्यविषयं द्रष्टव्यम् । पराकलक्षणम् । पराकस्य मनुः ( ११२१५ )—

“ यतात्मनोऽप्रमत्तस्य द्वादशाहमभोजनम् । पराको नाम कृच्छ्रोऽयं सर्वपापप्रणाशनः” ॥ इति ।

पर्णकुच्छुलक्षणम् । पर्णकुच्छुस्य याज्ञवल्क्यः ( प्रा. ३१७ )—

“ पर्णोदुम्बरराजीवबिल्वपत्रकुशोदकैः । प्रत्येकं प्रत्यहं पीतैः पर्णकुच्छ्र उदाहृतः” ॥ इति ।

पलाशोदुम्बरराजविन्दुबिल्वपर्णनामेकैकेन काथितमुदकं प्रत्यहं पिबेत् । कुशोदकं चैकस्मिन्नहनीति

१५ पञ्चाहसाध्यः पर्णकुच्छ्रः । पर्णकुच्छुस्य लक्षणान्तरमाह यमः—

“ एतान्येव समस्तानि त्रिरात्रोपेषितः शुचिः । काथयित्वा पिबेदद्दिः पर्णकुच्छुस्य लक्षणम्” ॥ इति ।

पलाशपर्णान्येकीकृत्याम्भसा काथयित्वा त्रिरात्रोपवासान्ते काथितं तत्पयः पिबेत् । अयं पर्णकुच्छ्रो भवतीत्यर्थः ।

फलकुच्छ्रादिलक्षणम् । फलकुच्छ्रादीनां स्वरूपमाह मार्कण्डेयः—

२० “ फलैर्मसेन कथितः फलकुच्छ्रो मनीषिभिः । श्रीकुच्छ्रः श्रीफलैः प्रोक्तः पद्माक्षैरपरस्तथा ॥

“ मासेनामलकैरेवं श्रीकुच्छ्रः परमः स्मृतः । पत्रैर्मतः पत्रकुच्छ्रः पुष्पैस्तत्कुच्छ्र उच्यते ॥

“ मूलकुच्छ्रः स्मृतो मूलैस्तोयकुच्छ्रो जलेन तु ” ॥ इति । यदा बिल्वादिफलान्यम्भसा काथयित्वा मासमेकं तदम्भः पिबति तदा फलकुच्छ्रो भवति । यदा बिल्वपद्माक्षामलकानामन्यतमस्य काथं मासमेकं पिबेत् तदा श्रीकुच्छ्रो भवति । यदा त्वेषां पत्रपुष्पमूलानां काथं पिबेत् ।

२५ तदा पत्रपुष्पमूलकुच्छ्राणि भवन्ति ।

वारुणस्त्रीसौम्यकुच्छुलक्षणम् । वारुणस्त्रीकुच्छ्रयोर्लक्षणमाह यमः—

“ ब्रह्मचारी जितकोषो मासेऽयुदकसकूकान् । पिबेत्त्र नियताहारः कृच्छ्रं वारुणमुच्यते ॥

“ ऋहं पिबेत्तु गोमूत्रं ऋहं वै गोमयं पिबेत् । ऋहं वै यावकेनैव स्त्रीकुच्छ्रं ह्येतदुच्यते ” ॥ इति । सौम्यकुच्छुस्य याज्ञवल्क्यः ( प्रा. ३२२ )—

३० “ पिण्याकाचामतक्राम्बुसकूनां प्रतिवासरम् । एकरात्रोपवासश्च कृच्छ्रः सौम्योऽयमुच्यते ” ॥ इति ।

आचामः ओदननिष्यावः । पिण्याकादीनां पञ्चानां एकैकं प्रतिदिनमुपभुज्य षष्ठेऽहन्युपवसेत् । स एष सौम्यकुच्छ्रः । यत्तु जाबालेन चतुरहव्यापी सौम्यकुच्छ्र उक्तः—

“ पिण्याकं सक्तवस्तकं चतुर्थेऽहन्यमोजनम् । वासो वै दक्षिणां दद्यात् सौम्यो वै कृच्छ्र उच्यते ” ॥ इति तदेदशक्तविषयम् ।

तुलापुरुषकृच्छ्रलक्षणम् । अथ तुलापुरुषकृच्छ्रमाह जावालिः—

“पिण्याकं च तथाचामस्तकं चोदकसक्तवः । त्रिरात्रमुपवासश्च तुलापुरुष उच्यते” ॥ इति सोऽयमष्टदिवससाध्यः । याज्ञवल्क्यः पञ्चदशाहसाध्यमाह ( प्रा. ३२३ )—

“एषां त्रिरात्रमभ्यासात् एकैकस्य यथाक्रमम् । तुलापुरुष इत्येवं ज्ञेयः पञ्चदशाहिकः” ॥ इति । एषां पिण्याकादीनां पञ्चानाम् । यमस्तु एकविंशतिदिनसाध्यमाह—

“आचामाँचितपिण्याकं तकं चोदकसक्तुकान् । ऋहं ऋहं प्रयुज्ञानो वायुभक्षस्यहद्वयम् ॥ “एकविंशतिरात्रस्तु तुलापुरुष उच्यते” ॥ इति । तदेतत् त्रयं पापतारतम्यविषयतया व्यवस्थापनीयम् ।

अघमर्षणकृच्छ्रलक्षणम् । अघमर्षणकृच्छ्रस्य शङ्खः—

“ऋहं त्रिष्वणस्नायी मुनिः स्नात्वाऽघमर्षणम् । मनसा त्रिः पठेदप्सु न भुजीत दिनत्रयम् ॥

“अघमर्षणमित्येतद्वतं सर्वाघसूदनम्” ॥ इति । प्रकारान्तरमाह विष्णुः ( ४६२-९ )—

“ऋहं नाश्रीयात् ऋहं त्रिष्वणस्नानमाचरेदप्सु त्रिरघमर्षणं जपेत् । दिवा तिष्ठेद्रात्रावासीत कर्मणोऽन्ते पयस्विनीं गां दद्यादित्यघमर्षणम्” ॥ इति ।

दैवतकृच्छ्रलक्षणम् । दैवतकृच्छ्रमाह यमः—

“यवागूँ यावकं शाकं क्षीरं दधि घृतं तथा । ऋहं ऋहं तु प्राश्रीयात् वायुभक्षः परं त्रयम् ॥

“कृच्छ्रं दैवं तु तन्नाम सर्वकल्मषनाशनम्” ॥ इति ।

यज्ञकृच्छ्रम् । यज्ञकृच्छ्रस्याङ्गिराः—

“युक्तस्त्रिष्वणस्नायी संयतो मौनमास्थितः । प्रातः स्नानं समारभ्य कुर्याज्जप्यं च नित्यशः ॥

“सावित्रीं व्याहृतीश्चैव जपेदृष्टसहस्रकम् । आँकिरमादितः कृत्वा रूपे रूपे तथादितः ॥

“भूमौ वीरासने युक्तः कुर्याज्जप्यं तु संयतः । आसीनश्च स्थितो वापि पिबेद् गव्यं पयः सकृत् ॥

“गव्यस्य पयसोऽलाभे गव्यमेव भवेद् दधि । दध्नोऽभावे भवेत्तक्रं तक्रालाभे तु यावकम् ॥

“एषामन्यतमं यत्तु उपपदेत तत् पिबेत् । गोमूत्रेण समायुक्तं यावकं चोपयोजयेत् ।

“सर्वपापहरो दिव्यो नाम्ना यज्ञ इति स्मृतः । एकाहेन तु कृच्छ्रोयमुक्तस्त्वाङ्गिरसा स्वयम् ॥

“एतत्पातकयुक्तानां तथा चाप्युपपातकैः । महाद्विश्वापि युक्तानां प्रायश्चित्तमिदं शुभम्” ॥ इति ।

यावककृच्छ्रलक्षणम् ।

यावककृच्छ्रस्य देवलः—“यावकानामप्सु साधितानां सप्तरात्रं पक्षं मासं वा प्राशनं यावकम् । २५ एतेन यावकपायसोदकानि व्याख्यातानि” । शङ्खः—

“गोपुरीषं यवाभ्यासो मासमेकं समाहितः । व्रतं तु यावकं कुर्यात् सर्वपापापनुत्तये” ॥ इति ।

प्रसूतियावककृच्छ्रलक्षणम् । प्रसूतियावककृच्छ्रमाह हारीतः—“य आत्मकृतैः कर्मभिः गुरुमात्मानं पश्येत् । आत्मार्थं प्रसूतियावकं श्रपयेत् । ततोऽग्नौ जुहुयात् । तेन दैवबलिकर्म । श्रुतमभिमन्त्रयेत् ।

“यवोऽसि धान्यराजोऽसि वारुणो मधुसंयुतः । निर्णोदिः सर्वपापानां पवित्रमृषिभिः स्मृतम् ॥

“घृतं यवा मधु यवा आपोहिष्ठामृतं यवाः । सर्वं पुनन्तु मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥

“वाचा कृतं कर्मकृतं मनसा दुर्विचिन्तितम् । अलक्ष्मीं कालकृणीं च सर्वं पुनीतैः मे यवाः” ॥

श्रव्यमाणं रक्षां कुर्यात् । नमो रुद्राय भूतपतये सावित्री मानस्तोकेति पात्रे त्रिः निषिद्ध्य ये देवा  
मनोजातो मनायुजः सुदक्षा दक्षपितरस्ते नः पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यो नमः स्वाहेति  
आत्मनि जुहुयात् । त्रिरात्रमेवात्रातिपापकृत् षड्ग्रात्रं पीत्वा पूतो भवति सप्तरात्रं महापातकी  
द्वादशरात्रं पीत्वा सर्वं पुरुषकृतं पापं निर्दहति । निर्वृत्तानां यवानामेकं विंशतिरात्रं पीत्वा गणान्  
५ पश्यति गणाधिपं पश्यति विद्यां पश्यति विद्याधिपं पश्यति योऽश्चीयायावकं पक्षं गोमूत्रेष्वसकृत्  
दधिक्षीरसर्पिःषु मुच्यते सौंहसः क्षणात् इत्याह भगवान् मैत्रायाणः” इति ।

**चान्द्रायणकृच्छ्रलक्षणम्** । अथ चान्द्रायणस्य प्रकार उच्यते । तच्च द्विविधं  
पिपीलिकामध्यं यवमध्यं चेति । यथा पिपीलिकायाः शिरःपृष्ठभागौ स्थूलौ मध्यं शून्यं तथा यस्य  
चान्द्रायणस्य मध्ये अमावास्यादिने सर्वग्रासह्रासः तस्य मध्यमभागसौक्ष्म्यात् पिपीलिका-  
१० मध्यत्वम् । तद्यथा कृष्णप्रतिपदि व्रतं संकल्प्य चतुर्दश ग्रासान् भुजीत । ततो द्वितीयामारभ्य  
प्रतिदिनमैककग्रासस्य ह्रासे सति अमावास्यायामुपवासः संपद्यते । पुनः शुक्लप्रतिपदि ग्रासमेक-  
मुपक्रम्य प्रतिदिनमैककग्रासवृद्धया पूर्णिमायां पञ्चदशग्रासाः संपद्यन्ते । स एष पिपीलिकामध्य-  
चान्द्रायणस्यानुष्ठानप्रकारः । तथा यवं मध्यस्थूलमुभावन्तौ शून्यौ । तथाहि—शुक्लप्रतिपदमारभ्य  
प्रतिदिनमैककग्रासवृद्धया पूर्णिमायां पञ्चदशग्रासाः संपद्यन्ते । कृष्णप्रतिपदमारभ्यैककग्रासह्रासे  
१५ सति अमावास्यायामुपवासः इति मध्यभागस्थौल्यायवमध्यत्वम् ।

तत्र पिपीलिकामध्यमाह वस्त्रिष्टः ( प. ७०।४५ )—

“ मासस्य कृष्णपक्षादौ ग्रासान्याच्चतुर्दश । ग्रासापचयभोजी सन् पक्षशेषं समापयेत् ॥

“ तथैव शुक्लपक्षादौ ग्रासं भुजीत चापरम् । ग्रासोपचयभोजी सन् पक्षशेषं समापयेत् ” ॥

**पराशारः ( १०२ )—**

२० “ एकैकं ह्रासयेद् ग्रासं कृष्णो शुक्ले तु वर्धयेत् । अमावास्यां न भुजीत ह्येष चान्द्रायणो विधिः ” ॥ इति ।

चान्द्रायणद्रयमाह देवलः—“ चान्द्रायणं द्विविधं यवमध्यं पिपीलिकामध्यं चेति । एकग्रासममा-  
वास्यादिं यवमध्यं पञ्चदशग्रासं पौर्णिमास्यादि पिपीलिकामध्यम् ” इति ।

**मनुरपि ( ११२।६—२।७ )—**

“ एकैकं ह्रासयेद् ग्रासं कृष्णो शुक्ले च वर्धयेत् । उपस्थूश्चिष्ववणमेतच्चान्द्रायणवतम् ॥

२५ “ एवमेव विधिं कृत्सनमाचरेद्यवमध्यमे । शुक्लपक्षादिनियतश्चरेच्चान्द्रायणवतम् ” ॥ इति ।

**वपनादिकमः** । वपनादीतिकर्तव्यतामाह गौतमः ( २७।३—१५ )—“ वपनादिवतं चरेत् ।  
श्वोभूतां पौर्णिमासीमुपवसेदाप्यायस्व सं ते पयांसि नवो नव इति चैताभिस्तर्पणमाज्यहोमो हविषां  
चानुमन्त्रणमुपस्थानं चन्द्रमसो यद्देवा देवहेलनमिति चतस्रभिराज्यं जुहुयात् । देवकृतस्येति  
चान्ते समिद्धिः । औं भूर्भुवः सुवर्महर्जनस्तपः सत्यं यशः श्रीरूपिंडौजास्तेजः पुरुषो धर्मः शिव  
३० इत्यैतर्यासानुमन्त्रणं प्रतिमन्त्रं भनसा । नमः स्वाहेति वा सर्वनेतैरेव ग्रासाननुभुजीत । ग्रास-  
प्रसाणमास्याविकारेण । चरुभैक्षसकुकणयावकशाकपयोदधिवृत्तमूलफलोदकादीनि हवीष्युत्तरोत्तरं  
प्रशस्तानि । द्वादशैतानि पौर्णिमास्यां पञ्चदशग्रासान् भुक्त्वा एकैकापचयेनापरपक्षमश्चीयात् ।  
अमावास्यायामुपोष्यैकोपचयेन पूर्वपक्षं विपरीतमेकेषामेष चान्द्रायणो मासः ” इति ।

पुनरपि प्रकारान्तरेण त्रिविधं कषिचान्द्रायणं शिशुचान्द्रायणं यतिचान्द्रायणं चोति ।  
तेषां स्वरूपमाह यमः—

“त्रिंशीन् पिण्डान् समश्रीयात् नियतात्मा दृढवैतः । हविष्यान्नस्य वै मासमृषिचान्द्रायणं स्मृतम् ॥

“चतुरः प्रातरश्रीयात् चतुरः सायमेव च । पिण्डानेतद्वा बालानां शिशुचान्द्रायणं स्मृतम् ॥

“पिण्डानष्ट समश्रीयात् मासं मध्यंदिने रवौ । यतिचान्द्रायणं ह्येतत् सर्वकल्मषनाशनम्” ॥ इति ॥ ५

विष्णुः पञ्चविधमाह ( ४७।१-९ )—“अथातश्चान्द्रायणं ग्रासानास्याविकारमश्रीयात् । तांश्च कलाभिवृद्धौ क्रमेण वर्धयेत् । हानौ च हासयेत् । अमावास्यायां च नाश्रीयात् ।”

दक्षः—“चान्द्रायणो यवमध्यः पिपीलिकामध्यो वा यस्यामावास्या मध्या भवति स पिपीलिकामध्यः ।

“यस्य पौर्णमासी स यवमध्यः । अष्टौ ग्रासान् प्रतिदिनमश्रीयात् स यतिचान्द्रायणः । सायं

“प्रातश्चतुरश्चतुरः स शिशुचान्द्रायणः । यथाकथंचित् पिण्डानां तिस्रोऽशीतीर्वा समश्रीयात् ॥ १०

“ससामान्यचान्द्रायणः” इति ।

चान्द्रायणे ग्रासपरिमाणम् । चान्द्रायणेऽभिहितस्य पिण्डस्य परिमाणमाह  
पराशरः ( १०।३ )—

“कुकुटाण्डप्रमाणं तु ग्रासं वै परिकल्पयेत् । अन्यथाभावदोषेण न धर्मो न च शुद्ध्यति” ॥  
ब्रताचरणानन्तरं कर्तव्यमाह स एव ( ८।४८ )— १५

“प्रायश्चित्ते ततश्चीर्णे कुर्यात् ब्राह्मणभोजनम् । गोद्वयं वत्ससंयुक्तं दद्वाद्विप्राय दक्षिणाम्” ॥ इति ।  
संख्याविशेषानुपादानात् शक्त्यनुसारेण ब्राह्मणभोजनम् ।

चान्द्रायणफलनिरूपणम् । चान्द्रायणस्य फलं दर्शयति यमः—

“यत् किंचित् क्रियते पापं कर्मणा मनसा गिरा । द्विजश्चान्द्रायणं कृत्वा तस्मात्पापात् प्रमुच्यते ॥

“एतानि विधिवत् कृत्वा षड्भिर्मासैर्हविष्यभुक् । व्यपेतकल्मषो विप्रश्चन्द्रस्यैति सलोकताम्” ॥ २०

ब्रतग्रहणप्रकारः । ब्रतग्रहणप्रकारमाह विष्णुः—

“सर्वपापेषु सर्वेषां ब्रतानां विधिपूर्वकम् । ग्रहणं संप्रवक्ष्यामि प्रायश्चित्ते चिकीषिते ॥

“दिनान्ते नखरोमादीन् प्रवाप्य स्नानमाचरेत् । भस्मगोमयमृद्वारिपञ्चगद्यादिकल्पितैः ॥

“मलापकर्षणं कार्यं बाह्यशौचोपसिद्धये” ॥ इति । जाबालिः—

“आरम्भे सर्वकृच्छ्राणां समाप्तौ च विशेषतः । आज्येनैव हि शालाग्रौ जुहुयाद् व्याहृतीः पृथक् ॥ २५

“कायाभ्यङ्गं शिरोभ्यङ्गं ताम्बूलमनुलेपनम् । ब्रतस्थो वर्जयेत्सर्वं यच्चान्यत् बलरागकृत्” ॥ इति ।

गृही तस्य ब्रतस्यासमापने प्रत्यवायमाह छागलेयः—

“पूर्वं ब्रतं गृहीत्वा तु नाचरेत् कामतो हि यः । जीवन् भवति चण्डालो मृतः श्वा चाभिजायते” ॥

ब्रह्मकूर्चस्वरूपं तत्परिमाणं च । ब्रह्मकूर्चस्य स्वरूपमाह पराशरः ( ११।२७-३७ )—

“गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् । निर्दिष्टं पञ्चगव्यं तु पवित्रं पापनाशनम् ॥ ३०

“गोमूत्रं कुष्णवर्णयाः श्वेतायाश्वैव गोमयम् । पयश्च ताम्रवर्णया रक्ताया गृह्यते दधि ॥

“कपिलाया घृतं ग्राह्यं सर्वं कापिलमेव वा । मूत्रमेकपलं दद्वादङ्गुष्ठार्थं तु गोमयम् ॥

“ क्षीरं सप्तपलं दद्यात् दधि त्रिपलमुच्यते । घृतमेकपलं दद्यात् पलमेकं कुशोदकम् ॥

“ गायव्यादाय गोमूर्चं गन्धद्वारेति गोमयम् । आप्यायस्वेति च क्षीरं दधिकावृणस्तथा दधि ॥

“ तेजोऽसि शुक्रमित्याज्यं देवस्य त्वा कुशोदकम् । पञ्चगव्यमृचा पूर्तं स्थापयेदग्निसंनिधौ ॥

“ आपो हि ष्टेत्यूचालोड्य मानस्तोकेति मन्त्रयेत् । सप्तावरास्तु ये दर्भा अच्छिन्नाग्राः शुक्त्विषः ॥

५ “ एतैरुद्धृत्य होतव्यं पञ्चगव्यं यथाविधि । इरावती इदं विष्णुमार्मानस्तोकेति शर्वति ॥

“ एताभिश्चैव होतव्यं हुतशेषं पिबेद् द्विजः । आलोड्य प्रणवैवैव निर्मश्यं प्रणवेन तु ॥

“ उद्धृत्य प्रणवैवैव पिबेच्च प्रणवेन तु । मध्यमेन पलाशस्य पद्मपत्रेण वा पिबेत् ॥

“ स्वर्णपत्रेण रौप्येण ब्रह्मतीर्थेन वा पुनः । यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति देहिनाम् ॥

“ ब्रह्मकुर्चो दहेत्सर्वं प्रदीपोऽग्निरिवेन्धनम् । पवित्रं त्रिषु लोकेषु देवताभिरधिष्ठितम् ॥

१० “ वरुणश्चैव गोमूर्चे गोमये हंसवाहनः । दधिन वायुः समुद्दिष्टः सोमः क्षीरे घृते रविः ” ॥

यथोक्तपरिमाणानि द्रव्याणि पलाशादि पात्रे गायव्याभिः संयोज्य स्थापयित्वा आपो हि ष्टेति उद्यूचेनालोड्य मानस्तोकेत्यभिमन्त्र्य सप्तावरैः हरितवर्णैः दर्भेरादाय इरावति इदं विष्णुमार्मानस्तोके शंनो देवीरिति चतस्रभिरग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा औं स्वाहा अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा । इति प्राजापत्योक्तर्मन्त्रैश्च पलाशपत्रेण हुत्वा हुतशेषं हस्तेन काषेन वा निर्मन्थ्य

१५ पिबेत् । गोमूर्चादीनां परिमाणान्तरमाह प्रजापतिः—

“ गोमयात् द्विगुणं मूत्रं सपिर्दीद्याच्चतुर्गुणम् । क्षीरमष्टगुणं देयं दधि पञ्चगुणं तथा ” ॥ इति ।

अत्र गोमयस्य परिमाणविशेषानभिधानात् वचनान्तरादङ्गुष्ठार्धपरिमितं ग्राह्यम् । पर्वद्वयोपेतमङ्गुष्ठ

तत्रोपरितनपर्वणा समानपरिमाणं गोमयं स्वीकृत्य यथोक्तोत्तराभिवृद्ध्या गोमूर्चादीनि योजयेत् ।

एतच्च पूर्वोक्तपरिमाणेन सह विकल्प्यते । स एव—

२० “ पालाशं पद्मपात्रं वा ताप्रं वाऽथ हिरण्मयम् । गृहीत्वा सादयित्वा तु ततः कर्म समारभेत् ॥

“ स्थापयित्वाऽथ दर्भेषु पालाशैः पत्रैकरथ । तत्समुद्धृत्य होतव्यं देवताभ्यो यथाक्रमम् ॥

“ अग्नये चैव सोमाय सवित्रे च तथैव च । प्रणवेन तथा हुत्वा स्विष्टकृत्वा तथैव च ” ॥ इति ।

ब्रह्मकुर्चस्य कालविशेषमाह स एव—“ चतुर्दश्यामुपोष्याथ पौर्णमास्यां समाचरेत् ” ॥ इति ।

जाबालिरपि—

२५ “ अहोरात्रोषितो भूत्वा पौर्णमास्यां विशेषतः । पञ्चगव्यं पिबेत्प्रातर्ब्रह्मकुर्चमिति स्मृतम् ” ॥

देशविशेषमाह शातातपः—

“ नदीतीरेषु गोष्टेषु पुण्येष्वायतनेषु वा । तत्र गत्वा शुचौ देशे ब्रह्मकुर्चं समाचरेत् ” ॥ इति ।

प्राजापत्यादिप्रत्याम्नायः । अथ पूर्वोक्तानां व्रतानां केनचिन्निमित्तेनानुष्टानाशक्तौ यथायोगं

प्रत्याम्नाया उच्यन्ते । तत्र प्राजापत्यप्रत्याम्नायाश्चतुर्विशतिमते दर्शिताः—

३० “ कुच्छ्वोऽयुतं तु गायव्या उद्वासस्तथैव च । धेनुप्रदानं विप्राय सममेतच्चतुष्टयम् ॥

“ तिलहोमसहस्रं तु वेदपारायणं तथा । विप्रा द्वादश वा भोज्याः पावकेष्टस्तथैव च ॥

“ अन्या वा पावमानेष्टः समान्याहुर्मनीषिणः ” ॥ तिलहोमसहस्रं गायव्या ।

पराशरः ( १२५६-५७ )—

“ कृच्छ्रे देव्ययुतं चैव प्राणायामशतद्वयम् । पुण्यतीर्थेनार्द्धशिरः स्नानं द्वादशसंख्यया ॥

“ द्वियोजनं तीर्थयात्राकृच्छ्रमेकं प्रकल्पितम् ” ॥ इति । अनार्द्ध शिरो यस्यासावनार्द्धशिराः तस्य स्नानमनार्द्धशिरःस्नानम् । सकृत् स्नात्वा तदङ्गानुष्ठानं च कृत्वा केशान् शोषयित्वा ततो द्वितीयस्नानमाचरेत् । एवंविधस्नानद्वादशकं पुण्यतीर्थे कृतमित्यर्थः । हेमाद्रौ— ५

“ कृच्छ्रोऽयुतं तु गायत्र्या विप्रद्वादशभोजनम् । तिलहोमसहस्रं वा सममेतच्चतुष्टयम् ” ॥ इति । द्वादशब्राह्मणभोजनं निर्धनविषयम् । धनिकस्य प्रतिदिनं पञ्चपञ्चेति द्वादशसु दिवसेषु षष्ठि-ब्राह्मणा भोजनीयाः । अत एव स्मृत्यन्तरम्—

“ प्राजापत्यं चरन् विप्रो यद्यशक्तः कथंचन । प्रत्यहं पञ्च विप्राग्रचान् भोजयेत्सम्यगीप्सितान् ” ॥

अन्यत्रापि—

१०

“ षष्ठिश्चतुर्विंशतिर्वा भोजया द्वादश वा द्विजाः । तावद्दोजनपर्यातं धान्यं तन्मूल्यमेव वा ॥

“ तत्समृद्ध्यसमृद्धिभ्यां संख्यावैषम्यभाषणम् ” ॥ इति । माधवीये—

“ प्राजापत्यक्रियाशक्तौ धेनुं दद्यात् द्विजोत्तमः । धेनोरभावे दातव्यं मूल्यं तुल्यं न संशयः ” ॥ इति । मूल्यं च यथाशक्ति देयम् ।

“ गवामभावे निष्कं स्यात् तदर्थं पादमेव वा । पादहीनं न कर्तव्यमिति शातातपोऽब्रवीत् ” ॥ इति १५

स्मरणात् । स्मृत्यन्तरेऽपि—

“ कृच्छ्रोऽयुतं तु गायत्र्या उद्वासस्तथैव च । समुद्रगानदीस्नानं सममेतच्चतुष्टयम् ” ॥ इति । नदीस्नानं मृत्तिकास्नानम् ।

चान्द्रायणादीनां प्रत्याम्नायाः । चान्द्रायणादीनां प्रत्याम्नायाश्चतुर्विंशतिमते दर्शिताः—

२०

“ चान्द्रायणं मृगरेषिः पवित्रेषिस्तथैव च । मित्रविन्दाकृतिश्चैव कृच्छ्रं मासत्रयं तथा ॥

“ तिलहोमायुतं चैव पराकद्वयमेव च । गायत्र्या लक्षजप्त्यं च समान्याह प्रजापतिः ॥

“ नित्यनैमित्तिकानां च काम्यानां चैव कर्मणाम् । इष्टीनां पशुबन्धानामभावे चरवः स्मृताः ॥

“ पराकतसकृच्छ्राणां स्थाने कृच्छ्रत्रयं चरेत् । व्रतहोमादिकान्वापि कल्पयेत् पूर्वकल्पवत् ” ॥ इति ।

स्मृत्यन्तरे—

“ चान्द्रायणं त्रयः कृच्छ्रा गायत्र्या अयुतत्रयम् । तथा महानदीस्नानं सममेतच्चतुष्टयम् ” ॥ इति । २५

महानदीपरिगणनम् । महानद्यः परिगणिताः

देवलः—“ अथ गङ्गा सरस्वती यमुना नर्मदा विपाशा वितस्ता कौशिकी नन्दा विरजा चन्द्रभागा सरयूः शारवती सिन्धुः कृष्णवेणी शोणा तापिनी पाषाणगा गोमती गण्डकी बाहुदा पम्पा देविका कावेरी ताप्रपर्णी चर्मणवती वेत्रवती गोदावरी तुङ्गभद्रा सुचक्षुररुणा चेति महानद्यः पुण्यतमाः ” ॥ इति । चतुर्विंशतिमते— ३०

“ प्राजापत्ये तु गमेकं दद्यात् सांतपने द्वयम् । पराकतसकृच्छ्रेषु तिस्सित्स्सस्तु गाः स्मृताः ॥

“ अष्टौ चान्द्रायणे देयाः प्रत्याम्नायविधौ सदा । यथावित्तानुसारेण दानं दद्याद्विशुद्धये ” ॥ इति ।

यत्तु स्मृत्यन्तरे चान्द्रायणस्य गोदानत्रयमभिहितम्

“ प्राजापत्ये तु गामेकामतिकृच्छे द्वयं स्मृतम् । चान्द्रायणे पराके च तिस्रस्ता दक्षिणास्तथा ” ॥ इति  
तान्निर्धनविषयम् । गोदानादावशक्तो गोभ्यस्तृणं दद्यात् । तदाह कण्वः—

“ एकमध्ययनं कुर्यात् प्राजापत्यमथापि वा । दद्यात् द्वादशसाहस्रं गवां मुष्टिं विचक्षणः ” ॥ इति ।

५ चतुर्विंशतिमते—“ कृच्छे पञ्चातिकृच्छे त्रिगुणमहरहस्तिंशदेवं वृत्तीये ।

“ चत्वारिंशिंच्च तसे त्रिगुणनगुणिता विंशति स्यात्पराके ॥

“ कृच्छे संतापनाख्ये भवति षडाधिका विंशतिः सैव हीना ।

“ द्वाभ्यां चान्द्रायणे स्यात्तपसि कृशबलो भोजयेद्विग्रमुख्यान् ” ॥ इति । अहरहरिति सर्वत्र  
संबध्यते । वृत्तीयः कृच्छ्रातिकृच्छः । अध्ययनजपादीनां पुरुषविशेषेण व्यवस्था तत्रैव दर्शिता—

१० “ धर्मनिष्ठास्तपोनिष्ठाः कदाचित्पापमागताः । जपहोमादिकं तेभ्यो विशेषेणाभिधीयते ॥

“ नामधारकविप्रा ये मूर्खा धर्मविवर्जिताः । कृच्छ्रचान्द्रायणादीनि तेभ्यो दद्याद्विशेषतः ॥

“ धनिना दक्षिणा देया प्रथत्नविहिता तु या । एवं नरविशेषेण प्रायश्चित्तानि पातँयेत् ” ॥ इति ।  
यत्र यावत्संख्यया प्राजापत्यान्यावर्तनीयानि भवन्ति तत्र तावत्संख्यया गोदानादीन्यावर्तनीयानि ।  
तदपि चतुर्विंशतिमते दर्शितम्—

१५ “ जन्मप्रभृति पापानि बहूनि विविधानि च । अर्वाकर्तु भ्रूणहत्यायाः षडब्दं कृच्छ्रमाचरेत् ॥

“ प्रत्याम्नाये गवां देयं साशीति धनिना शतम् । तथाष्टादशलक्षाणि गायत्र्या वा जपेद्वृधः ” ॥ इति ।

इति श्रीवाधूलवंशमुक्ताफलवैद्यनाथदीक्षितविरचिते स्मृतिमुक्ताफले  
प्रायश्चित्तनिरूपणं नाम षष्ठः परिच्छेदः ॥

# स्मृतिमुक्ताफलपुस्तकोद्धृतऋषिवचनानाम्

## अकारादिवर्णतः सूचिः ।



| ऋषिः                      | पृष्ठम् | ऋषिः                   | पृष्ठम् | ऋषिः                           | पृष्ठम् |
|---------------------------|---------|------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| अखण्डादर्शः               |         | यो देवः सविता          | ३२७     | उपस्थानं ब्रतादेशः             | ८७०     |
| अत्रोदकपिण्ड              | ६१९     | राजकार्यनियुक्तानां    | ६०३     | एकमातृप्रसूतानां               | १४५     |
| अनुपकेशो यः               | ५८७     | श्रीरामनवमी            | ८३६     | एकादशगुणात्                    | ३४९     |
| अप्रायत्यं निहन्त्येव     | २४६     | अन्निः                 |         | कामतो मरणं                     | ४८९     |
| अब्रान्ते वाथ             | ४८९     | एकचित्यां समाहृत्य     | ६९६     | कृत्वा मूत्रपुरीषं वा २१३, २६७ |         |
| अष्टमार्शो चतुर्दश्याः    | ६१३     | अन्निवेश्यः            |         | कृत्वा यंज्ञोपवीतं तु २१२      |         |
| असपिण्डो यदि              | ५९९     | बोधायनमापस्तम्बं       | ९       | गृहे यस्य मृतः ५२५             |         |
| उच्छिष्ठेन तु संयुक्ता    | २७८     | आन्निवैश्वायनिः        |         | चण्डालपतितादीनां ४३२           |         |
| एकस्मिन्मासे              | ७०५     | त्रिपुण्ड्रं ब्राह्मणो | २९३     | चित्रकर्म यथा ७३               |         |
| कूटस्थमन्तराले            | १२६     | अन्निस्मृतिः           |         | जनने मरणे चैव ४८९              |         |
| जननमरणयोः                 | ५३३     | त्र्याहादेकोदकानां     | ४९८     | जावालिनांचिकेतश्य ८            |         |
| ज्ञातीनां स्नानमेव        | ५१०     | पुंजन्मनि सपिण्डानां   | ४९८     | तिस्तः कोट्यधं १६९             |         |
| ततो गृहं समागम्य          | ६००     | खीषु त्रिपुरुषं        | ४९९     | त्रयोदश्यां कृष्णपक्षे ७४८     |         |
| चीनीत्यं मातृतः           | १२८     | अन्निर्दिशः            |         | दृम्पत्योः सह ६३८              |         |
| दम्पती शिशुना             | ५९०     | अतिक्रान्ते दृशाहे     | ५४०     | दासी दासश्च सर्वे ४८६          |         |
| दायप्राप्तैः स्वकृष्ट्या  | २३      | अनभिमत उत्क्रान्ते     | ५३९     | दाहकस्तु दशाहान्तः ५३३         |         |
| दाहं विनालंकरणं           | ५४४     | अनिर्दिशाहे जनने       | ५०४     | दाहकस्त्वा दशाहात्तु ६३५       |         |
| न तिथिर्न च               | ६०५     | अनुजातस्य तावत्        | ५०७     | दाहयित्वा तथा ५१८              |         |
| पित्रोः सपिण्डीकरणं       | ६८४     | अन्नसत्रप्रवृत्तानां   | ४८०     | द्वादशाहे त्रिपक्षे ६६५        |         |
| मुक्त्वा तु सुखमासीनः     | ४५५     | अयुजो भोजयेत्          | ७७७     | द्विविधं गहितं ४३३             |         |
| रजस्वलाया भोजनं           | २७९     | अविशेषेण वर्णानां      | ५११     | धर्मस्य संपदश्चैव ८६९          |         |
| वाग्यतः प्राङ्मुख         | ३३७     | आतुराणां विशेषो        | ३७५     | न जातिकुस्मानि ७८९             |         |
| सायमासीनः                 | ३२३     | आ द्वादशाहात्          | २७७     | नारायणबलिः कार्ये ४९०          |         |
| शूर्पवायुर्नसा            | २५६     | आममेवादृदीत            | ९६      | नाशौचं सूतके ५०२               |         |
| सोदकवाससो                 | ५९६     | आम्बुंपुनागबिल्वानां   | २४१     | नाशीयुस्तद्विने ६०६            |         |
| - १२९, ४९९, ५०१, ५०६, ५११ |         | आतानां मार्गमाणानां    | ८७०     | पातके तु शतं ८७०               |         |
| अगस्त्यः                  |         | आशौचं यस्य             | ५४०     | पिण्डं काकादिपक्षिभ्यो ६०३     |         |
| अथाचान्तेषु               | ८१३     | उत्थाय पश्यमे यामे     | २११     | पुराणश्वरणात् २०४              |         |
| एकादशोऽन्ति               | ६४७     | उत्पन्ने संकटे         | १७४     | प्रच्छन्नानि ३२१               |         |
| चैत्रशुद्धा तु            | ८३६     | उद्भास्य पुत्रीं       | १४५     | प्रथमा प्रसृतिर्ज्ञेया २१८     |         |
| नित्यमेव तु               | ८३६     |                        |         | प्रमाणानि प्रमाणज्ञैः २        |         |

| क्रषिः                     | पृष्ठम्  | क्रषिः                | पृष्ठम्  | क्रषिः                    | पृष्ठम्  |
|----------------------------|----------|-----------------------|----------|---------------------------|----------|
| अंगिराः                    |          | संन्यासं चैव          | २०७, ११९ | उभाभ्यामेव हस्ताभ्यां     | २३०      |
| प्राक् स्नानात्            | ४९९      | संपूर्णा दशमी         | ८३७      | ऊर्ध्वपुङ्ग्र विहीनं      | २९३      |
| प्राप्ते वैदानुवचने        | ११३      | सतिलं दर्भेष्वसावेतत् | ५९७      | एकादशगुणात्               | ३४९, १३५ |
| प्रायो नाम तपः             | ८५९      | सद्यःशौचे तु          | ४८१      | एकोद्दिष्टे सपिण्डे       | ७९९      |
| प्रथमेऽहि तृतीये           | ६०५      | सर्वे वर्णाः सूतके    | २७२, ४८५ | कौपीनियुगुलं              | १८५      |
| बहिः पिण्डप्रदानं          | ६०९      | सर्वेषामेव वर्णानां   | ४९५      | क्षमं पात्रं च            | २०३      |
| ब्रह्मचारी शुना            | २७०, १०४ | सर्वे वर्णः सूतके     | ७१७      | क्षीरं लवणसंयुक्तं        | ४२७      |
| ब्रह्मवर्चस कामस्य         | ८७       | साध्वाचारा न तावत्    | २७७      | गोत्रसंबंधं               | ८०५      |
| ब्राह्मणी तु शुना          | १०५      | साध्वीनामेव           | १६२      | घृतं वा यदि वा            | ४३०      |
| भूमिप्रदानं                | ८७९      | सायं सगोपनार्थं       | ८७६      | चतुरोऽयं वसेत्            | २०५      |
| मातामहमातुल-               | ५२६      | सायमायन्तयो           | ८३८      | जन्मभे जन्मदिवसे          | १४७      |
| मौर्जीनिवन्धवत             | १४७      | सूतके मृतकं चेत्      | ५३०      | ते तं तथेत्य              | ७७८      |
| यज्ञोपवतिं कर्णे च         | २१२      | सूतके सूतिकावर्जं     | ४९९      | तोयं पाणि                 | ८६५      |
| यनु क्षेत्रगतं             | ४८०      | सूत्रांतरेण यत्       | ५७८      | दक्षे वाऽप्यथवा           | ८०६      |
| यनु राशीकृतं               | ५६       | स्नानं रजस्वलायास्तु  | २७६      | दिवा स्वापं न             | ४५४      |
| यत्पूर्वं मनुना            | ६        | स्वपात्रे यन्तु       | ४४६      | दैवमार्घे ततो             | १७७      |
| यदा मनसि                   | १७३      | स्वस्त्रे विद्यमाने   | ५७८      | न तावन्मुच्यते            | १७६      |
| यदि कथित्प्रमादेन          | ४८७      | स्वाभिप्रायकृतं       | ३६४      | न मृन्मयानि               | ७८९      |
| यद्यप्यकृतचूडो             | ५०९      | —                     | ५०९, ५५४ | न व्रतेनोपवासेन           | १५८      |
| यस्तु छायां श्वपाकस्य      | २६६      | अङ्गिरा स्मृतिः       | ८६८      | नोपतिष्ठन्ति ये           | ३१४      |
| यस्य संवत्सरात्            | ६५२      | आत्रिः                |          | पार्विं च यथा             | १७७      |
| या ख्वी ब्राह्मणजातीया     | १६२      | अंगुलीमूलदेशे तु      | २३०      | पिता पितामहो              | ७६९      |
| युक्तखिष्पवण               | १३९      | अंगुल्या दन्तकाष्ठं च | २४१      | पिता भ्राता स्वसा         | २०६      |
| यो द्यात्कांचनं            | ३६६      | अगोधूमं च             | ७८१      | पुत्रो भ्राताथ            | ३९९      |
| यः कथित्प्रिहरेत्          | ५४६      | अनित्यं वै            | २०२      | प्रथमेऽहि निवास           | ७७८      |
| रजश्चतुर्विंश्च इयं        | २७७      | अपसव्यं ततः           | ७९९      | प्राणाद्वृत्तौ घृताभावे   | ४२७      |
| लौकिके वैदिके              | ३९६      | अपः पाणिनखाग्रेभ्यः   | २२३      | प्रेतार्थं सूतकान्ते      | ६४८      |
| वयोधिकां नोपयच्छेत्        | १२५      | अविकोष्ट्योश्य        | ४३८      | भिन्नमातृष्यस्तुः         | ५२८      |
| विप्रे न्यूने              | ५०९      | अविकोष्ट्याश्य        | ८८२      | भूम्यां पादौ प्रतिष्ठाप्य | ४१८      |
| विरक्तः संन्यसेत्          | १७३      | अशुद्धः स्वयमप्यन्नं  | ४२८      | मधुपर्के च सोमे           | २३९      |
| शयनासनयानानि               | ४६९      | असाति प्रातिबन्धे     | २०६      | मातामहप्रितृव्याणां       | ५८९      |
| शवस्पर्शमधोदक्याम्         | २६४      | अस्नानाशी मलं भुक्ते  | २४५      | मासप्रोक्तेषु             | ७३४      |
| शालामौ तु पचेत्            | ३९६      | अहिंसा सत्यम्         | १९०      | मासप्रोक्तेषु कार्येषु    | ६९२      |
| शुद्धा भर्तुश्चतुर्थेऽन्हि | २७७      | आकेशाग्रान्           | ३२४      | मुखे पर्युषिते            | २४०      |
| शूद्रस्य प्रेतस्य          | ५४२      | आचार्तोऽप्यशुचिः      | ४५३      | मौनव्रतं महाकष्टं         | ४२३      |
| पष्टि कुलान्यतीतानि        | १७५      | आत्तंवा यदि           | २७९      | यदि कर्ता व्रतस्थः        | ५१४      |
| पष्टे तथा द्वादशे          | ८७       | आस्थेन न पिबेत्       | ४२९      | रजस्वलायां स्नातायां      | २७७      |
| संन्यसेद् ब्रह्म           | १७२      | उभाभ्यामेव पाणिभ्यां  | २३०      | वपनानंतरं                 | २०५      |

| ऋणिः                    | पृष्ठम्      | ऋणिः                    | पृष्ठम् | ऋणिः                    | पृष्ठम् |
|-------------------------|--------------|-------------------------|---------|-------------------------|---------|
| विवाहे वितते            | १३७          | देशांतरमृते             | १६२     | आर्थर्वणम्              |         |
| शब्देनापः पयः           | ४२२          | न ऐ चन्द्रेऽष्टमे       | ८८      | प्रणवं देवा             | २९      |
| शाकभक्षाः पयोभक्षा      | ९६           | न स्वपद्येषु            | ७७      | यस्यामिहोत्रं           | २९      |
| शिखिनस्तु श्रुतः        | १८४          | निन्दा मृत्युपदं        | ४६४     | हरेः पादाकृति-          | २९२     |
| शुचौ देशो तथा           | १९१          | मंत्रवत्संस्कृतस्यापि   | ६२६     | आर्थर्वणिकम्            |         |
| शूद्रान्नं सूतकान्नं    | ४४८          | विभवे चामिहीनस्य        | ४४३     | यस्यामिहोत्रं           | ७३३     |
| षड्डिस्तु परतो          | ७६९          | शुचिं देवाश्य रक्षान्ति | २२०     | आर्थर्वणी श्रुतिः       |         |
| षोडशोद्वाहगर्भाक्षदे    | ५९३          | —                       | ६६२     | ब्रह्मसूत्रमहम्         | १७९     |
| संच्यात्रयं तु          | ३१२, ३१५     | अमरसिंहः ( अमरकोशः )    |         | सखा मा गोपाय            | १८०     |
| संपर्काज्ञायते          | ५००          | ११४१                    | ७०२     | आर्थर्वसंहिता           |         |
| साम्रिकः पितृयज्ञान्तं  | ३९८          | ११४५                    | ५२६     | ४१३१९                   | १४३     |
| सिंहकर्कटयोर्मध्ये      | २८७          | २१४१३                   | १०      | आदित्यपुराणम्           |         |
| सुहृदन्नं गुरोरन्नं     | ७८१          | २१४१३                   | ७८१     | अटवी पर्वताः            | ७५८     |
| स्नानं त्रिष्वरणं       | १९३          | २१४१३                   | ७८६     | आमंत्रितश्चिरन्         | ७८०     |
| हस्तदत्ता तु            | ९७           | २१४१०                   | ७६९     | चापं गते ततः            | ३९९     |
| हस्तेन मुक्तं           | ८०५          | ब्रतीनामासनं            | ७८८     | त्रिपुङ्ग्रधारी सततं    | ३०३     |
| हितं मितं सदा           | २०२          | अमृताबिन्दूपनिषद्       |         | दुर्वाससो मुनेः         | ३०५     |
| हुङ्कारेणापि            | ८०९,         | मनो हि द्विविधं         | १९३     | पश्चान्तरेऽपि कन्यास्थे | ७१६     |
| —                       | ३२, ४७५, ५२८ | तदेव निष्कलं            | १९५     | पितृन्संतर्प्य          | ४०७     |
| अर्थर्वशिरस्            |              | अर्णलः                  |         | प्रावृद्धतौ यमः         | ७४७     |
| —                       | ३०९          | अन्नप्राशनवैवाहे        | १४७     | ब्राह्मण्या भार्यया     | ४२६     |
| अनुसृतिविषयः            |              | अर्णवः                  |         | भगिन्यो बांधवाः         | ४४०     |
| पितृसूर्ध्वविधिं        | ६४६          | अशक्तौ वा जलाभावे       | २३६     | मधुकं रामठं             | ७८१     |
| अन्नगीतिः               |              | आगमः                    |         | लिंगे स्वायंभुवे        | ४४०     |
| यो मामदत्त्वा           | ४०९          | वैदिकं तु पुरा          | ६२७     | वसन्ति पितरः            | ८२२     |
| अपराक्षः                |              | सर्वेषामेव वर्णनां      | ६२७     | सौराष्ट्रसिन्धु         | ११७     |
| अधिमासमृतानां           | ७३१          | आचारसारः                |         | स्त्रीशूद्रयोर्धर्मानं  | २१९     |
| अनार्यता निष्पुरता      | १३५          | प्रातस्तीर्थोवगाहन-     | २४६     | आदिपुराणम्              |         |
| अभोजयं ब्राह्मणस्यान्नं | ४४५          | मालती मल्लिका           | ३८७     | अधर्मदेश                | ९       |
| अष्टाक्षरेण देवेशं      | ३८७          | शुचिं देशं विविक्तं     | ४५७     | जातश्राद्धे न दद्यात्   | ७९      |
| आचार्यो ब्रह्मलोकेशो    | ४१७          | आत्रेयः                 |         | संकान्तावुपवासेन        | ७५०     |
| कांसिकस्य तु            | ४१९          | अंतःशवो यदा             | ५४१     | सूतके तु मुखं           | ४९९     |
| गर्भिण्यौ यस्य भार्ये   | ५१२          | अभिषेकेऽपि नाक्षत्रं    | ७०२     | आनुशासनिकम्             |         |
| छाया स्याद्वासवर्गः     | ४६४          | कालेऽल्पदोषे            | ६१०     | आचाराळभते               | ५       |
| जातिदुष्टं क्रियादुष्टं | ४३३          | मृन्मयान्यश्मसयानि      | १७९     | कलमषं गुरुशुश्रूषा      | ७७      |
| दिवा कपित्थ-            | ४३८          | —                       | ३४      | गृहानाश्रयमाणस्य        | ४२६     |
| दुर्मृतौ सद्य एव        | ४१०          |                         |         | यदा श्राद्धं पितृभ्यः   | ८१९     |

| क्रमिः             | पृष्ठम्  | क्रमिः       | पृष्ठम् | क्रमिः        | पृष्ठम्       |
|--------------------|----------|--------------|---------|---------------|---------------|
| आनुशासनिके         |          | ११४१४१९८-२०  | ५४७     | ११६१९०१९९     | १००           |
| अ. १०१६४           | ४४       | ११४१९५       | ९८      | ११६१२०१२९     | ३८            |
| अ. १०२१९           | ५०       | ११४१९६-१७    | ९८      | ११६१२२        | ३८            |
| आपस्तम्बः (ध. सू.) |          | ११४१२०-२१    | २२४     | ११६१२३-२४     | ३८            |
| १११३१२६            | ४११      | ११४१२१       | ११४     | ११६१२४१२०     | ८७२           |
| १११४-५             | ६९       | ११५१९-८      | ११६     | ११६१२४१२८     | ८७३           |
| १११४१९२            | ४२६      | ११५१९२-१६    | १०८     | ११६१२४१२५     | ८६८           |
| १११६               | १०९      | ११५१९५१२-६   | २२४     | ११६१२५१७      | ८८७           |
| १११६-८             | ६८       | ११५१९५१८     | २८०     | ११६१२५१३      | ८७९           |
| १११९-१०            | १००      | ११५१९५१९९    | २३५     | ११६१२५१४      | ८८३           |
| १११९९              | ६९२      | ११५१९५१९३-१४ | २६६     | ११६१२५१९३     | ८७७           |
| १११९९-१२           | ९९       | ११५१९५४-१२   | ३६०     | ११६१२६१४-४    | ४३७           |
| १११९४-१५           | १०८      | ११५१९५१९६-१७ | २६७     | ११६१२६१७      | ८६८, ९३२, ९३३ |
| १११९६-१८           | ८८       | ११५१९६१२-८   | २२६     | ११६१२७१३-४    | ९०७           |
| १११२७              | ८९       | ११५१९६१५     | २२६     | ११६१२७१७      | ९३५           |
| १११२७-३७           | ८९       | ११५१९६१८-१५  | २३६     | ११६१३४१२३     | ८६३           |
| १११३३              | ८८       | ११५१९६१९     | २३६     | ११६०१२७१९०    | ८९९           |
| ११२-३              | २        | ११५१९६१९०    | २३७     | ११६०१२८१९-५   | ८८६           |
| ११२१०              | ९४       | ११५१९६१९९    | २३८     | ११६०१९९१९५-१६ | ९०९           |
| ११२११-१६           | ११९      | ११५१९६१९२-१३ | २३८     | ११६०१२८१९६-१७ | ८६८           |
| ११२१२              | १४८      | ११५१९६१९४    | २३५     | ११६०१२८१९९-२० | ८९४           |
| ११२११९-२४          | ११५      | ११५१९६१९९-२० | ५०३     | ११६०१२९१६     | ८७४           |
| ११२१३०             | ११३      | ११५१९७१९९-१३ | ४६८     | ११६०१२९१७     | ८७४           |
| ११२१३८             | ९३       | ११५१९७       | ११२     | ११६०१२९१७५-१८ | ९०९           |
| ११२१४०-४७          | १४       | ११५१९७१९४-१९ | ४३७     | ११६१३०१७      | ४६२           |
| ११३११-२            | १४       | ११५१९७१२०    | ४३७     | ११६१३०१८      | ३३६           |
| ११३१११४-१५         | ५४३      | ११५१९७६१९    | ४९८     | ११६१३०१८-९    | ३९५           |
| ११३११०१५           | ५४५      | ११५१९७१२१-२५ | ४३७     | ११६१३०१९      | ३३८           |
| ११३१११-२१          | ११५      | ११५१९८-१९    | १११     | ११६१३०१९०     | २५१           |
| ११३१११२३-२४        | ३६८, ३७० | ११५१२१-२२    | १११     | ११६१३०१९०-१४  | ४६२           |
| ११३११२             | १३७      | ११६१९८१९०-१३ | ४४३     | ११६१३११९-१६   | ४६२           |
| ११३११५-१८          | १४८      | ११६१९११२-१०  | ४४२     | ११६१३११९-२१   | ४६३           |
| ११३१२५-२६          | ९७       | ११६१९११४-१५  | ४४२     | ११६१३११९-३२   | ४३१           |
| ११३१३१-३६          | ९७       | ११६१३५       | १११     | ११६१३११९१९    | ४११           |
| ११४११२११-२         | ३७०      | ११७११११२-१७  | १०९     | ११६१३११९१९    | ४११           |
| ११४११२१३-७         | ३७१      | ११७१२११२०    | ८६४     | ११६१३११४      | ४२३, ४७८      |
| ११४११२१९           | ३७२      | ११८११११२-२०  | १११     | ११६१३१२१९     | २४३           |
| ११४११२१५           | ४०३      | ११९११४       | १११     | ११६१३१२१२१    | ४६२           |
| ११४११३१            | ४०३, ४०५ | ११८१६-६      | ३८      | ११६१३१२१७     | २५६           |

| क्रमिः     | पृष्ठम् | क्रमिः       | पृष्ठम् | क्रमिः       | पृष्ठम् |
|------------|---------|--------------|---------|--------------|---------|
| आपस्तंबः   |         | २१२३३४       | ३९९     | २११२३१७७     | ५७९     |
| ११३-२२     | २७      | २१२३३१०१३-१४ | ३९९     | २११२४१७-८    | १६७     |
| ११३१६-७    | २९      | २१२३१२-१४    | ३९८     | २१०१७-२      | ४३      |
| ११४१७-२    | २७      | २१२३१५       | ४००     | २१०१३        | ४४      |
| ११४१४-२२   | १०६     | २१२३१६-१७    | ३९७     | २१०१४        | १८      |
| ११४२१      | ५८९     | २१२३१७       | ४००     | २१०१८-१९     | ५०      |
| ११४२६-३७   | ११०     | २१२३१८-२३    | ३९९     | २१०१२७८      | ८९९     |
| ११५११      | ९२      | २१२४१७-९     | ३९९     | २१०१२७९      | ८९३     |
| ११५१२      | ९८      | २१२४८-१४     | ४१५     | २१०१२७१९९-१३ | ८८७     |
| ११५१२२     | ९       | २१२४८        | ३९७     | २१०१२७१९६-१७ | ८८५     |
| ११५१२३     | २१७     | २१२४९११-१२   | ४०८     | २११५४-९      | १०७     |
| ११८११      | ५७      | २१२४९६-१९    | ४०९     | २१११५४-१६    | १२७     |
| ११९१६      | ५५३     | २१२४९२७-२२   | ४५३     | २१११७        | १३४     |
| १२०१६-७    | ३       | २१४४१२३      | ४५४     | २१११२९१७-२   | ८६३     |
| १२०१८-९    | ३       | २१२८-९       | २६५     | २१२१३-१५     | २१०     |
| १२०१९०-११  | ६१      | २१३१६१३      | ४१२     | २१३१७        | १८      |
| १२०१९२-१३  | २८६     | २१३१६५       | ४१२     | २१३१७-९      | ५       |
| १२०१९२-१६  | ६१      | २१३१६७-८     | ४१४     | २१३१९०       | ८८, १०३ |
| १२१११-४    | ६१      | २१३१६७-१५    | ४१४     | २१३१९१       | १४२     |
| १२११२७, २९ | ३८      | २१३१७१९-३    | ४१६     | २१५१९२       | ८८      |
| १२१५       | २८, १५३ | २१३१७१७      | ४१३     | २१५१९४-१८    | ३९८     |
| १२५१९०     | ८८३     | २१४१५४-९     | ४१५     | २१५१९९-२५    | ८५, ८६, |
| १२६१८-९    | १२२     | २१४१५५-६     | ४१२     | २१०१२२       | ७६      |
| १२७११      | ६९      | २१४१११०-१३   | ४१२     | २१२१२        | १७२     |
| १२८१३-५    | ५८      | २१४१११३      | ४२४     | २१२१६        | १२९     |
| १२८११९-२   | १६४     | २१४११७       | ४२६     | २१२११०-१७    | १११     |
| १२९१८-१८   | १५३     | ३४१२१-२२     | ४२      | २१२११२-१३    | १५१     |
| १३०१९५-२०  | २१४     | २१५१८        | ३१      | २१३१२        | १२४     |
| १३०१२१     | २१५     | २१६१५१२      | ५२९     | २१२५१५       | ६५      |
| १३११२      | २११     | २१६१५१३      | ४०५     | २१२६१-४      | ६५      |
| १३११३१     | २१२     | २१७१७१९९-१२  | ७७६     | २१२७१२-६     | १४      |
| १३२१२      | ७७      | २१७१७१६      | ८२०     | २१२७१५       | ६८      |
| १३७१४७     | ९७      | २१८१८१९-२    | ४३६     | ३१७१७-१८     | १५०     |
| २११११२     | ४१७     | २१८१९१७-८    | ४२४     | ३१७१९-२२     | ३५४     |
| २११४-६     | ३४९     | २१८१९१३-४    | ४२०     | ३१९१         | ७४      |
| २११११३-१४  | ३५४     | २१८१९१५-६,   | ४२४     | ३११०१२-४     | ८७      |
| २११२१२-३   | ३       | २१८१९१५-६,   | ४२४     | ५११६१९       | ८२      |
| २१११५      | ४६२     | २१८१९१९-११   | ४२४     | ६११५१८       | ८२      |
| २११२३      | ७७      | २१८१८-९      | ४३      | ६११५१८       | ८१      |
| २१३११      | ३९९     | २११२३११०-१२  | १६७     | ६११५१९-१०    | ८२      |

| क्रषिः              | पृष्ठम् | क्रषिः                      | पृष्ठम्  | क्रषिः                     | पृष्ठम्  |
|---------------------|---------|-----------------------------|----------|----------------------------|----------|
| आपस्तंवः            |         | किञ्चिद्वेव तु              | ८७७      | भोजयेद्वाक्षणान्           | ७७०      |
| ६१५।११              | ८२      | कृष्णपक्षेऽष्टमी            | ८५१      | मासि मासि कार्यं           | ७५१      |
| ६१६।६-७             | ८३      | केशनप्रकर्त्ति              | ५९७      | यत्नेन धारयेत्             | ४१९      |
| ८२।९                | ८१५     | क्षत्रिविद् क्षत्रियाणां    | ४९५      | यदंगारेषु व्यवशातेषु       | ३६३      |
| अग्निमिभाण्ड        | ५८१     | घृतं तैलं च                 | ४३०      | यदि जीवपिता                | ७४२      |
| अग्निनाधायैतस्मिन्  | २४      | छन्दसां साधनार्थं           | ११७      | यदि पत्नी विद्वेशस्था      | ८१७      |
| अचूडायां तु         | ५१४     | तमसृधा कृत्वा               | ७४४      | यदीष्ट्या यदी              | ८५६      |
| अजिनं मेखला         | ११७     | तयोर्यः पूर्वं              | ५७२      | यदुदिते जुहोति             | ३५८      |
| अटव्यां ये          | ७१८     | तृतीयैन्हि नवं              | ५१३      | यद्याहितामिः ५५६, ५७०, ५७४ |          |
| अथास्य दक्षिणेन     | ५८०     | तेषामुत्सन्नाः              | १        | यद्येतस्मिन्कृते           | ६३३      |
| अथैनं चितावुपर्य-   | ५८३     | च्यहः निशनं                 | ९३६      | यशार्थहरः                  | ५६३, ६७० |
| अथैनमुपोषति         | ५८३     | दहनदोषं जोषयते              | ५८२      | यादृच्छिकं तु              | २८३      |
| अध्वर्युरुप         | ४८२     | दारकर्मणि ।                 | २५       | या माध्याः पौर्णमास्या     | ७४४      |
| अनशनान-             | ६०६     | दुहितृमते अधिरथं            | ६८९      | यायावरा ह                  | ३५९      |
| अनुपेतान् कन्याश्च  | ५१३     | द्वादशगृहीतेन               | ५७६      | यावज्जीवं                  | ९६९      |
| अन्नदाने न          | ५२      | द्वावेवाश्रमिणौ             | ४४१      | येषां परंपरा               | ९३१      |
| अपरपक्षे पित्त्याणि | ८०३     | द्वेधा दक्षिणाग्नान्        | ६७७      | लौकिकानां पाक              | ६८       |
| अपरेयुस्तृतीयस्यां  | ६०७     | धून्वने अन्वारंभणे          | ५८४      | विना तु सततस्नानं          | २८३      |
| अपाङ्गक्षेयैहता     | ३४८     | न ग्राममध्यात्              | २४       | व्यापाद्येद्य              | ४८९      |
| अपि वृक्षसूर्यं     | ३५७     | नापितकर्मणि च               | ५८६, ५९१ | शरोगारा अध्यूहन्ते         | १३६३     |
| अष्टवर्षा भवेद्वौरी | १५५     | नालिकाभिन्                  | ३५३      | शूद्राणां हीनजातीनाम्      | ६६७      |
| अस्पृश्यस्पर्शने    | २४७     | निमंत्रयेत व्यवरान्         | ७१८      | शिरः परिवेष्टनं प्रथमं     | २१३      |
| अहरहर्यजमानः        | ३५५     | निर्मथयेन पत्नीम्           | ५६९      | श्वोभूतेन्वण्कां           | ७४४      |
| अन्हि शौचं तु       | २१८     | नीलकर्षणकारी                | १७५      | संकल्पथाद्वे               | ७३८      |
| आकाशं गतयेत्        | ६०२     | नीलरिक्तं यदा               | ९९३      | स न मन्येत                 | ३५८      |
| आदिके मासिके        | ७०४     | नोर्धवं नाधो न तिर्यक् च    | २१२      | सप्तमात्परतो यस्तु         | ७११      |
| आत्मास्तुदेष्वभिषु  | ५७३     | पयसा पशुकामस्य              | ३६०      | समानप्रवरां कन्यां         | ९२७      |
| आहितामिं विजने      | ५७५     | पर्वणि केशमश्रूणि           | ५९४      | समित्पुष्पकुशा             | ९०९      |
| आहितामिनर-          | ८४७     | पितृपितामह                  | ७५१      | समुद्रो वा एष              | ३५७      |
| आहितामिनरङ्गान्     | ९७      | पुंसवनं व्यक्ते             | ७८       | सर्वान्लोकान्              | ७०२      |
| उत्तरं पितृमेधं     | ५७९     | पुमांसं जनयति               | ७८       | सर्वेषामनु                 | ४९६      |
| उपर्यमावरणी         | ३६५     | पौर्णमास्यां तु             | ८५५      | सायं द्वाविंशतिः           | ९३६      |
| उषस्युपोद्यं        | ३५७     | प्रतिपत्सद्वितीया           | ८२६      | सायं प्रातर्विनार्धं       | ९३६      |
| ऊर्ध्वं प्राणा      | १०८     | प्राजापत्यं सौम्य           | ९९७      | सायं प्रातस्तयौवोक्तं      | ९३६      |
| ऋतिक् शशुर          | ११०     | ब्रह्मविदाश्रोति            | ५५२      | समिंतोन्नयनं               | ७८       |
| एकशास्त्रां समारूढ  | २६६     | ब्राह्मणान्भोजयेत्          | ७६७      | सौम्यव्रतं प्रकुर्वीति     | ९९७      |
| एवं गोदान-          | ११९     | भस्म स्यादभि                | २९०      | हर्वीषि च                  | ५८१      |
| एवमहरहरञ्जलि        | ५९७     | भुक्तवतोऽनुवज्य             | ६७७      | - ८७, १२१, ५०४, ५६९, ५७०,  |          |
| औदुवर्यामासंद्यां   | ५८१     | मूर्मौ निक्षिष्य तद्द्रव्यं | २४०      | ५७२, ५७३, ५७६, ५७८         |          |
| औपसनेनाहितामिं      | ५६९     |                             |          |                            |          |

| ऋणि:                                       | पृष्ठम् | ऋणि:                     | पृष्ठम् | ऋणि:                      | पृष्ठम् |
|--------------------------------------------|---------|--------------------------|---------|---------------------------|---------|
| आपस्तम्बः                                  |         | वेदमादौ समारभ्य          | ३६९     | उपमोगादन्यत्र             | २१४     |
| ५८४, ६२७, ६५०, ६८४,<br>६८७, ६८९, ७१०, ८०५, |         | शृणु पाण्डव              | ३८६     | उपेतपूर्वस्य              | ६३३     |
| आपस्तम्बगृह्यसूत्रम्                       |         | श्रुतिः स्मृतिर्मैवाज्ञा | ४       | एकत्रैव दिने              | ६९५     |
| २१५।१५—१८                                  | ३६४     | सांगोपांगान् तथा         | ४१६     | एकरात्रं वसेत्            | ९९९     |
| ३।७।१९                                     | १५०     | स्नातः शुचिः शुचौ        | ४१८     | कुलमध्ये परीक्षेत         | १३४     |
| ८।१०।१९०                                   | ९४      | हरिचिन्त्यात्मा          | २८७     | कुन्तापं वालखिल्यं        | ३८८     |
| ९६।३                                       | ८३      | आश्वलायनसूत्रम्          |         | कृतसायमाग्नि              | ७७६     |
| आपस्तम्बपरिशिष्टम्                         |         | १।२।१                    | ४०५     | क्षत्रियत्वा वैश्यवृत्तिः | ६०      |
| वैश्वदेववलि                                | ४०३     | १।२।१—२                  | ३९७     | गंगा गोदावरी              | ७५८     |
| आपस्तम्बस्मृतिः                            |         | १।२।८—९                  | ४००     | चतुर्थे पञ्चमे            | ६०७     |
| अथ वक्षे ह्याचमनं                          | २२१     | १।५।४—६                  | १४८     | चत्वारि वेदवतानि          | ११७     |
| आयुर्वेदः                                  |         | १।१।१९                   | ६७९     | जपेच रुद्रवत्             | १६१     |
| सौरबृहस्पति                                | ७०९     | ३।१।८                    | ४०५     | तांबूलक्सरा               | ७८७     |
| आरण्यकोपनिषद्                              |         | ३।४।९                    | ३६७     | त्वक्संगं मुनिं           | ७६८     |
| उपर्विं भूमा                               | १७९     | ४।२।९—३                  | ६६४     | त्यागान्मूत्रपुरीषस्य     | २१५     |
| गृहस्थो ब्रह्मचारी                         | १७२     | ४।२।९                    | ५८३     | इनाध्ययन                  | ८१९     |
| आरण्युषानिषद्                              |         | ४।२।९—१०                 | ५८१     | देवपूर्वे तु यच्छ्राद्धं  | ६६३     |
| अरणि प्राजापत्यः                           | १८६     | ४।४।९                    | ५८१     | दौहित्रस्तु गुणैः         | ७७०     |
| ब्रह्मचर्यमहिंसा                           | १९२     | ४।४।९—६                  | ५८८     | नक्षत्रे क्षत्रियाणां     | ६३१     |
| आरुणिश्रुतिः                               |         | ४।४।९—६—१६               | ५९८     | नवमिश्रं षडुत्तरम्        | ६६१     |
| काममेकं वैणवं                              | १८०     | ४।४।१६                   | ६०६     | न शूद्रं भोजयेत्          | ८१८     |
| यतयो भिक्षार्थं                            | २०१     | ४।४।२—५                  | ५२९     | नैकत्रदिवसे               | ६९६     |
| वर्षासु ध्रुव                              | १९१     | ४।४।१९                   | ५२९     | पत्न्यां रजस्वलायां च     | ६७७     |
| दाने सुतोदये                               | ४८१     | अथाभ्युदयिके             | ५२९     | पद्यसा नित्यहोमो          | ३६०     |
| आश्वमेधिकम्                                |         | अदंतजाते पर्याते         | ५२९     | पिण्डान्निर्वृण्यात्      | ७४२     |
| अर्कपुष्पाणि                               | ३७४     | अनवेक्षमाणा              | ६०८     | पितुरेव पितुः             | ७२१     |
| उत्थाय च पुनः                              | ४२६     | अपराह्णे प्रातः          | ८०९     | पितृनावाह                 | ७९७     |
| उदक्यामपि चप्डालं                          | ४२८     | अथनुदुहो                 | ५२५     | प्रदोषान्तो होमकालः       | ३५८     |
| उपपूर्वे चन्द्रमसो                         | ७।१७    | आ दन्तजाते च             | ५१०     | प्रधानस्य क्रियायां       | १५१     |
| दूराध्वं श्रान्तम्                         | ४१२     | आपन्नश्याशुचिः           | ४७८     | प्रागंदूषजलात्            | ८१३     |
| पचनाग्नि न गृह्णीयात्                      | ४६६     | अविष्टुतब्रह्म           | ७६७     | प्रावोदद्वृत्तमुख आसीनः   | २४३     |
| पाणिना जलमुद्दृत्य                         | ४२१     | अस्थनां संचयनात्         | ५०२     | प्राचीनाग्नां             | ७५६     |
| पादाभ्यंगम्बु                              | ४१४     | आपन्नश्याशुचिः           | ३३८     | प्राचीनावीती              | ८०२     |
|                                            |         | आहार्येणानाहिताग्निः     | २५      | प्रातमुद्दृत्ताद॒र्वाक्   | ५९५     |
|                                            |         |                          |         | बांधवानां स्वजातीनां      | १५६     |
|                                            |         |                          |         | भुक्तवस्त्वना             | ६७७     |
|                                            |         |                          |         | भुक्तवस्त्वाचांतेषु       | ८१६     |
|                                            |         |                          |         | भोक्ता भोजयिता            | ८१०     |

| ऋषिः                     | पृष्ठम्                                                   | ऋषिः                  | पृष्ठम्  | ऋषिः                    | पृष्ठम् |
|--------------------------|-----------------------------------------------------------|-----------------------|----------|-------------------------|---------|
| मन्वादिभ्यो युगादिस्तु   | ७०६                                                       | पूर्वेयुरपेरेयुर्वा   | ८५२      | माधूकरम्-               | २००     |
| मासे त्वज्ञायमाने        | ६३१                                                       | शिवरात्रिव्रत         | ८५१      | माषमज्जनमात्रा          | २२२     |
| मृते भर्त्यर्युत्रा      | १६०                                                       | उज्जवला               |          | मूत्रपुरीषरेतः          | ४६७     |
| यन्मास्येवाब्दिकं        | ६९३, ६९५                                                  | पृ. २७।८              | ३७२      | यत्रोक्तं यत्र वा       | ९३१     |
| यत्र स्युर्वहवः          | ६०१                                                       | अपरेणामि              | ४०३      | यथाकथंचिदपि             | ७६८     |
| यथा कथाऽपि               | ५७                                                        | उत्तररामायणम्         |          | यस्तु ब्राह्मणो         | ८९१     |
| लाक्षां लशुनं            | २०३                                                       | ये च मद्विषया         | ६०१      | विद्वराह                | ७८६     |
| वरस्योदूक् स्थितां       | १४९                                                       | उपमन्युः              |          | व्यभिचारिणीं            | १६३     |
| वामं वामेन               | १०८                                                       | अनपत्या च             | १६२      | व्यभिचारिणीं भार्या     | ८९३     |
| विप्राणां दासवृत्तिः     | ६४                                                        | शिवलिंगं तु           | ४४       | शयनस्य शिरस्थाने        | ४००     |
| शर्मातं ब्राह्मणस्योक्तं | ८१                                                        | उपनिषद्               |          | सच्छूद्रः स्नायात्      | ६८      |
| शेषयेद्गोजने             | ८१०                                                       | दश वा नव वा           | ४९४      | स्नात्वाऽनुपहतं वस्त्रं | २५२     |
| श्रौतं वा यत्र           | १५                                                        | उशनाः                 |          | स्वल्पाशौचस्य           | ५३१     |
| सरुन्निमज्ज्य            | ५९७                                                       | अग्निसमीप             | ३९६      | —                       | ९०५     |
| सतिलं तण्डुलं            | ५८३                                                       | अत्यक्त्वा जुहुयात्   | ३९८      | ऋग्विधानम्              |         |
| सत्पात्राणामलाभे         | ७६९                                                       | अनुगम्य मृतं          | ५८५      | इन्द्राय सोमसूक्तेन     | ८९९     |
| समानो मन्त्रः            | ६७७                                                       | अपत्नीकः प्रवासी      | ७१५, ८२१ | यदादीघ्ये जपेत्         | ३१४     |
| सवश्चेद्दनुगता           | २४                                                        | अर्धमण्डलसंप्राप्ते   | ३५८      | ऋग्वेदसंहिता            |         |
| सहैवाभ्युदय              | ७५३                                                       | आचार्येणाभ्य          | १७२      | २।२।२४                  | ३९०     |
| साग्राभ्यासृजु           | २३३                                                       | आमन्त्रितस्तु यः      | ७७९      | २।२।२५                  | ३९१     |
| सार्वकालिकं              | १४८                                                       | एकोद्धिष्टं न         | ६६३      | २।३।१४                  | ३४७     |
| स्मार्तर्धिनामिभिः       | ५६९                                                       | कुसुंभं नालिकाशाकं    | ४३४      | ४।३।२८                  | ३००     |
| स्वयं पर्वणि             | ३५६                                                       | गमने तु व्रतं         | ८८८      | ५।१।२२                  | ८३      |
| हेमन्तशिशिरतो            | ७४४                                                       | गोमयोद्कैः            | ७८१      | ७।४।९                   | ३००     |
| —                        | ६२, ७८, ४००,<br>५२९, ५८२, ५९१, ६०५,<br>६८०, ६८९, ७९४, ८१२ | ज्वराभिभूता या नारी   | २७९      | ७।६।१४                  | ३४७     |
| आश्वलायनकारिका           |                                                           | तेनोदकेन              | ३५३      | ७।८।३                   | ३१४     |
| आधायाशमानमेकं            | ६०३                                                       | दक्षिणाभिमुखो         | २४२      | १०।१।१७-६               | २०९     |
| चरुमुद्रृत्याज्य         | ६४९                                                       | दशरूत्वः पित्रेत्     | ९९४      | ऋतुः                    |         |
| स्नातः पवित्रपाणिः       | ५७७                                                       | द्विचन्द्रदर्शनं      | ६१३      | श्राद्धं कृत्वा पुनः    | ६९४     |
| आश्वलायनपरिशिष्टम्       | ३१८                                                       | न वेष्टिताशिरः        | २५२      | ऋष्यशृङ्गः              |         |
| तिलोदकं प्रदातव्यं.      | ६४५                                                       | नाङ्गुलीभिर्द्वन्नान् | २४।      | आब्दिके चैव             | ७१६     |
| ईशानसंहिता               | ७४५                                                       | नादत्वा मृष्टमशीयात्  | ४२७      | आशौचमन्तरा              | ६१२     |
| एवमेतत् व्रतं            | ८५२                                                       | नालिकाशण              | ७८४      | एकादशी न                | ८३८     |
|                          |                                                           | परान्नं परवस्त्रं     | ४४५      | एकोद्धिष्टे तु          | ६५४     |
|                          |                                                           | पितुः पितामहे         | ६८०      | कृत्वा पूर्वं मृतस्यादौ | ६९७     |
|                          |                                                           | पृथक् चितिं समा       | १६२      | कृत्वा पूर्वमृतस्यादौ   | ६३९     |
|                          |                                                           | भोजनं तु न            | ८१०      | जातकमैणि                | ६१२     |

| क्रषिः                  | पृष्ठम्  | क्रषिः                  | पृष्ठम्  | क्रषिः                 | पृष्ठम्  |
|-------------------------|----------|-------------------------|----------|------------------------|----------|
| <b>ऋग्यशूङ्गः</b>       |          | <b>एकरात्रं वसेत्</b>   | ११०      | <b>कल्पपरिशिष्टम्</b>  |          |
| धाराशौचं न कर्तव्यं     | २१६      | एकादशीमुपवसेत्          | ४४९, ८३८ | मृताहिताम्भेः          | ५७०      |
| पत्न्याः पुत्रस्य       | ६४०      | तृतीयात्क्षत्रियो       | १२८      | <b>कल्पसारः</b>        |          |
| पारणाय न लभ्येत         | ८४३      | त्रीनुद्दिश्य तु        | ७३६      | अमत्योढा सगोत्रा       | १२७, १०२ |
| पुत्राणां मध्यमो वाऽपि  | ५५६      | नमस्कृत्य तथा           | २०२      | <b>कल्पसूत्रकाराः</b>  | ३००      |
| पुत्रेषु विदमानेषु      | ५५८      | नवश्राद्धं मासिकं       | ६५४      | <b>कविषः</b>           |          |
| प्रथमेऽहनि यत्          | ६०४      | नवश्राद्धे मासिके       | ६०५      | प्रवेशनादिकं           | ५८५      |
| भवेद्यादि सपिण्डानां    | ६३८, ६९६ | यज्ञेषु पशु             | ९०९      | पित्रोः प्रत्याबिद्धकं | ३८२      |
| यत्र त्रिरात्रं         | ५११      | यलोत्सर्गं गृहीत्वा     | ८९२      | मनुष्यवर्जं विप्राणां  | ४९०      |
| यस्मिन् स्थाने कृतं     | २१६      | शौचमाचमनं               | ४७९      | अनुगम्य शर्वं          | ५४२      |
| वाससा यज्ञोपवीतार्थान्  | ९२       | श्लेष्माद्युपहतानां     | ४६७      | <b>काठकम्</b>          |          |
| शुचीभूतेन दातव्यं       | ७१६      | <b>कपर्दिः</b>          |          | यज्ञोपवीतं             | १८६      |
| संवत्सराति              | ७३२      | अधोभागस्य               | ५९१      | <b>काठकगृह्यम्</b>     |          |
| सपिण्डीकरणं येन         | ६६६      | अपत्नीको                | २५       | प्रवृत्तं मलमासात्     | ७३३      |
| सर्वत्रैकादशी           | ८४३      | आधारदार्वाणि            | ७९३      | मलेनन्यगतिं            | ७३३      |
| खीणामायस्य वै           | ६८२      | अस्ति स्वामित्वं        | २६       | महालयाष्टका            | ७३२      |
| —                       | ६४०, ७३२ | आहिताम्भिः पूर्वमूर्तां | ५६९      | यस्मिन्मासे न          | ७२४      |
| <b>ऐतेरेयब्राह्मणम्</b> |          | नष्टेत्सृष्टानलं        | ५७१      | रविसंकमहीने            | ७३५      |
| ७५१५                    | ९३       | पत्नीदाहोपयुक्ता        | २६       | विवाहदिवसात्           | १२३      |
| <b>और्वः</b>            |          | प्रजापतिमुखान्          | ३५       | सोमयागादि              | ७३३, ७९६ |
| आस्यं प्रक्षाल्य        | ४५३      | यदि त्वनेक              | २५       | <b>काठकब्राह्मणम्</b>  |          |
| बालापत्याश्य            | १६२      | <b>कपर्दिभाष्यम्</b>    |          | चतुर्वर्णेषु           | २०१      |
| बालापत्याश्य गर्भिण्यो  | ६४१      | ब्रह्मविद्भ्यः कर्तव्यो | ५७९      | <b>काठकश्रुतिः</b>     |          |
| <b>कठवल्ली</b>          |          | नष्टेत्सृष्टा           | २५       | एतद्वि देवपितृणां      | ७६०      |
| अशरीरं शरीरेषु          | १९५      | विच्छिन्नाम्भेः         | २५       | साशिखान् केशान्        | १७९      |
| <b>कठशाखा</b>           |          | <b>कपिलः</b>            |          | <b>कात्यायनः</b>       |          |
| धृतोर्ध्वपुंड्रो        | २९२      | अद्वयः स्वाहा           | १७९      | अकाले चेत्कृतं         | ६९९      |
| <b>कठश्रुतिः</b>        |          | <b>कर्मप्रदीपः</b>      |          | अक्रिया त्रिविधा       | ५७८      |
| त्रिगुप्तसातमश्रीयात्   | ४४०      | देवाचर्चने जपे          | ३२३      | अग्निहोत्रादि          | १५७      |
| <b>कण्वः</b>            |          | वामहस्तेन गणयन्         | ३२३      | अथ सपिण्डीकरणं         | ६६४      |
| अग्निमतोपि              | ३९६      | <b>कर्मप्रदीपिका</b>    |          | अथानवेष्ट              | ५८४      |
| अग्निहोत्रहृष्वं        | ४७९      | अनन्तरममा               | ६६८      | अनन्तर्गम्भिं          | २३३      |
| अथ वेदेतिहास-           | २२६      | कन्याबालकयोः            | ५०८      | अनियेनामंत्रितो        | ७७९      |
| उदयोपरिविद्वा           | ८३९      | <b>कल्पकारिका</b>       |          | अनिवृत्ते दशाहे        | ५०३, ५०६ |
| एकमध्ययनं               | ९४४      | पत्युर्वेदाभिसंस्कारे   | ६४४      | अनुजा वाऽग्रजा वापि    | ५६६      |
| एकमुद्दिश्य यत्         | ६५८      | लोकाभावितरौ             | ५७२      | अन्वाधानं भूततिथ्यां   | ८५७      |
| एकमुद्दिश्य             | ७५७      |                         |          |                        |          |

| ऋणिः                     | पृष्ठम्  | ऋणिः                   | पृष्ठम्  | ऋणिः                     | पृष्ठम् |
|--------------------------|----------|------------------------|----------|--------------------------|---------|
| कात्यायनः                |          | कात्यायनः              |          | कात्यायनः                |         |
| अपत्नीको यदा             | ६८६      | कर्मादिषु च            | ७५३      | नानिष्ठा तु              | ७५५     |
| अपत्नीकः प्रवासी         | ६८८      | कर्षसमन्वितं मुक्त्वा  | ५६२, ७१८ | नान्दीमुखान्             | ७५६     |
| अपत्यार्थं स्थियः        | १३४      | कालातीतेषु             | ९९       | नाष्टकादौ भवेत्          | ७५७     |
| अपरपक्षे श्राद्धं        | ७४६      | कुशवस्त्यां भूमा       | ७९९      | निक्षिप्याभिं            | ३५६     |
| अपेरेद्युस्तृतीये        | ६०७      | कृच्छ्रास्तु चतुरः     | १७६      | नित्योपवासी              | ८५०     |
| अपुत्रस्याथ कुलजा        | ५६३, ५६६ | गणशः क्रियमाणेषु       | ७५३      | निर्वर्त्य वृद्धितंत्रं  | ६५७     |
| अपुत्रोऽहं प्रदास्यामि   | ६८१      | गन्धान् ब्राह्मण       | ८०१      | नृणां भोजनकाले           | ४३०     |
| अभावे शिष्यान्           | ७७०      | गायत्रीं मधुमर्तीं     | ८१२      | परेऽग्निं घटिका          | ८५६     |
| अर्थवादं हरे:            | ३५१      | गृहीत्वोदुंबरं         | ८४९      | पालाशः समिधः             | ३६०     |
| अल्पत्वाद्वोम            | २४६      | ग्राम्याभिरोषधीः       | ७८३      | पिंडान्वाहार्यकं         | ७४१     |
| अव्यक्तिलिंगा            | १९३      | घृतेनाभ्यक्त           | ५८०      | पितृमातृस्वसु            | ८४८     |
| अश्रस्तु जपेत्           | ८०७      | चंडालपतितो             | ४२८      | पितृवंश्या मातृवंश्या    | ३८०     |
| अष्टवर्षाधिको            | ४४९, ८४७ | चण्डालसूतिको           | २६५      | पित्रा श्राद्धं न        | ५६६     |
| असंस्कृतोऽनपत्यश्च       | ५५९      | चतुर्दशी दिनान्ते तु   | ८५६      | पित्र्ये यः पङ्किं       | ६८६     |
| असमक्षं तु               | ३५६      | चत्वारि पात्राणि       | ६७४      | पुत्रः शिष्योऽथवा        | ५६७     |
| आधाने होमयोः             | ७५५      | चेतोवद्विहृते          | ४९०      | पुत्रोत्पत्तिप्रतिष्ठासु | ७५५     |
| आपद्यनमौ                 | ७१५      | छायां यथेच्छेच्छ       | ३८०      | पुरोहितस्य गोत्रेण       | ६८२     |
| आपोहिष्ठादिभिः           | २१०      | जान्हव्यादित्यसम्भूता  | २८८      | पूर्वं मृतस्य            | ५७०     |
| आमंत्रितोऽन्यन्न         | ७७९      | जुहूषुश्च हुते         | ३६२      | पूर्वदत्ता तु या         | १३६     |
| आमपात्रेऽन्नमादाय        | ५८२      | तत्प्रयुक्तोपवासस्य    | ८४४      | पूर्वमुखो धृतिं          | २४३     |
| आवर्तनात्प्राक्          | ८५५      | तथानवेक्षमेत्यापः      | ५९७      | पैतृकं प्रथमं            | ७९९     |
| उत्थायाकं प्रतिप्राप्त्य | ३२०      | तर्जन्याद्विभूयादौष्यं | २३२      | प्रत्यब्दं यो यथा        | ६९९     |
| उद्गुत्य घृताक्त         | ८०१      | तेषामभावे तु           | ५६४      | प्रथमेऽग्निं तृतीये वा   | ६१३     |
| उद्गुत्य हविरासिच्य      | ३९९      | तैलमूर्दूर्तनं         | ७८७      | प्रधानस्याक्रियायां      | ६५६     |
| उन्मत्तः पतितः           | १३५      | त्रिकालमेक             | १९८      | प्रवृत्ते श्रावणे        | २८८     |
| उपन्यस्तेन               | ५५       | त्रिवृतं चोपवीतं       | ९०       | प्रवेशाद्वरुणस्याप्तु    | २७१     |
| उपवासेत्वं शक्ता         | ८४८      | त्रिवृदूर्धं वृतं      | ९०       | प्रत्यक्षशवसंस्कारे      | ५५५     |
| उपवासे यदा नित्यः        | ७२३      | दक्षिणं पातयेत्        | ७९४      | प्रत्यब्दं यदुपाकर्म     | ३५      |
| उपवासो यदा               | ८४८      | दक्षिणाशिरसं           | ५८३      | प्रवरैरेषामविवाहः        | १२७     |
| उपाकर्मणि चोत्सर्गे      | २८९      | दत्तानूढा च            | १०३      | प्रवज्यावसिता            | ९९९     |
| ऋतुस्नातां द्विजो        | ८९३      | दुर्बलं स्नापयित्वा    | ५५३      | प्रातः स्नात्वा          | ८५०     |
| ऋत्विजां च               | ९०९      | देशान्तरस्थक्लीबे      | १५२      | प्रावृद्धकाले महानद्य    | २८८     |
| एकदण्डधरा                | १८६      | द्वे बहूनि निमित्तानि  | ६९४      | ब्रह्मचर्याद्वाहात्      | १७२     |
| एकादशाहं निर्वर्त्य      | ६६८      | धनुः सहस्राण्यष्टौ     | २५५      | भार्या भर्तुर्मतेनैव     | १५६     |
| एकादशीषु स्त्रियासु      | ८४५      | ध्वजाकारं निराकारं     | ४०१      | भार्या भर्तुर्मते-       | ८४७     |
| एकादश्यामुष              | ८३८      | न भो न भस्ययोर्मध्ये   | २८७      | महापापं चातिपापं         | ८६७     |
| एवं कृतोदकान्            | ६०४      | न यष्टव्यं चतुर्थेऽशो  | ८५४      | मातृयागक्रिया-           | ७५३     |
| कर्कटादौ रजोदुष्टा       | २८८      | नांगुष्ठादधिका         | ९८       | मुखे वक्षं               | ५८०     |

| ऋणिः                    | पृष्ठम् | ऋणिः                      | पृष्ठम्  | ऋणिः                    | पृष्ठम्  |
|-------------------------|---------|---------------------------|----------|-------------------------|----------|
| <b>कात्यायनः</b>        |         | <b>सपवित्रेषु</b>         | ७१९      | <b>कारिकारत्नम्</b>     | पृष्ठम्  |
| यजनीयेऽन्हि             | ८५८     | सपितुः पितृकृत्येषु       | ७३७, ७४२ | अद्याहात् द्वादशाहात्   | ६९०      |
| यत्र दिव्यनियमो         | १५      | सप्त दर्भाः शभा           | २३१      | अनन्तिं गर्भिणीनाथं     | ७७१      |
| यथाहनि तथा              | २४६     | सर्वप्रायश्चित्तं च       | ६४       | मातुः पित्रोमांसिकादीन् | ७२२      |
| यन्नाम्नातं स्व-        | १५      | सर्वेषामेव वर्णानां       | ६६७      | <b>काण्डाजिनिः</b>      |          |
| यवस्तिलार्थः            | ७५५     | सव्यान्वारधेन             | ७३७      | अत ऊर्ध्वं न            | ६५९      |
| यस्त्वाधायामि           | ७७३     | सशिखं वपनं                | ११५      | अपसव्येन कर्त्तव्यं     | ८०३      |
| यावत्सम्यड्न            | ३५७     | साधं प्रातर्              | ४०५      | अर्वांगब्दायत्र         | ६५९      |
| याः शोषमुपगच्छन्ति      | २५८     | सायं प्रातर्वैश्वदेवः     | ३९७      | अशक्तानुग्रहार्थं       | ७६९      |
| रजस्वलां चतुर्थेऽहि     | ७४      | सिनीवाल्यपराह्ने          | ८५६      | आदौ मध्येऽवसाने         | ७४६      |
| रजस्वला चतुर्थेऽन्हि    | २७७     | सुरूपाः सुताः             | ७६३      | आपन्नोऽप्याब्दिकं       | ७१६      |
| रात्रौ दग्ध्वा तु       | ५९६     | सूतके च प्रवासे           | ८२०      | ऊनान्यूनेषु             | ६५५      |
| वरयित्वा तु यः          | १३८     | सूतके प्रेतके च           | ४७७      | ऊरे तु यथा              | ७०६      |
| वर्णन्त्रयस्य विप्राणां | ८९३     | सूर्येऽस्तशैलमप्राप्ते    | ३५७      | क्रते नैमित्तिकं        | ७४८      |
| वस्त्रं संशोधयेत्       | ५८४     | सौवर्णराज                 | ७८९      | कन्यापुत्रविवाहेषु      | ७५५      |
| विद्ध्यादौरसः           | ५६४     | स्त्रीधर्मचारिणी          | २५       | दर्शे स्नात्वा          | ७३५      |
| विधिवत्केतनं            | ७७९     | स्पृष्टमुद्धृत            | ७९९      | देवानां च पितॄणां       | ३७७      |
| विप्रादीनां तु          | ८८४     | स्मृतेवेदविरोधे तु        | १२८      | नमस्यकृष्णपक्षे         | ७४७      |
| विश्वान् देवान्         | ७९७     | स्वपितृभ्यः पिता          | ७५२      | नाभिमात्रजले स्थित्वा   | २४८      |
| विशेषां देवानां         | ७९८     | स्वशाखाविधिं              | ५७८      | नाभिमात्रे जले          | २४८      |
| विष्णुधर्मोत्तरे चाप्तु | ६०६     | स्वाहाकारवषट्             | ४०४      | पित्रोः श्राद्धे समं    | ६३६, ६९५ |
| विहायामि सभार्यः        | २४      | स्वाहाकारैर्जुहुयात्      | ३९७      | पुत्रमुत्पाद्य          | १९       |
| वैष्णव्यचरा             | ८०४     | स्वाहा स्वधा नमः          | ८०२      | प्रत्नापत्तासु          | ५१५      |
| व्युत्कमाच्च मृते       | ६७०     | हरिता यज्ञिया दर्भाः      | २३९      | प्रादुर्भावे पुत्र      | ७५४      |
| शमीपलाश                 | ६०९     | हविष्येषु यवा             | ३६१      | भक्ष्यभोज्यानि          | ८०८      |
| शिरसो मार्जनं           | ३९९     | हविस्तु त्रिविधं          | ३६०      | भिक्षां वा पुष्कलं      | ४०४      |
| शिरः प्रावृत्य कुर्वीत  | २१९     | हस्ते हुतं यदश्वीयात्     | ६८६      | भूतविद्वाममा            | ७३९      |
| शेषस्य कर्मणः           | १७८     | -५१०, ५७०, ५७७, ६००, ७३९, | ७७७      | मृताहेऽहर               | ७५२, ७५७ |
| श्राद्धं वा पितृयज्ञः   | ४०२     | कात्यायनस्मृतिः           |          | मौंजीवन्धाद्विवाहाच्च   | ६७०      |
| श्राद्धे यज्ञे जपे      | ३०२     | ततः संवत्सरे पूर्णे       | ६६४      | ये के चास्मत्कुले       | २५०      |
| श्रोत्रियं सुभगं गां च  | २११     | मृतं दग्ध्वा त्रिरात्रेण  | ५१२      | श्राद्धं तु नैक         | ७४९      |
| षष्ठिप्रस्थमितं         | ३५६     | ८५५ कामिकः                |          | श्राद्धे विवाहकाले      | २४७      |
| संधिश्वेत्संगवात्       | ८४७     | आदित्यासामये              | ८५२      | सपिण्डीकरणं कुर्यात्    | ६६७      |
| संध्यादिकं भवेत्        |         | ८५७ माघमास्यसिते          | ८५१      | हस्तक्षस्थे दिनकरे      | ७४७      |
| संप्राप्ते श्रावणे मासि | २८७     | ६६१ उपायनाम्नौ            | ६११      | कालदीपे                 |          |
| संबंधिवान्धवा           |         | ८४ कारिकाकारः             |          | आरवारे च सौरे           | ६१२      |
| संस्कारा अतिपद्येरन्    |         | १३० अग्ने भिक्षेत         | ९६       | भातृद्वये स्वसृयुगे     | १४६      |
| स तु यद्यन्यजातीयः      |         |                           |          |                         |          |

| क्रषिः                      | पृष्ठम्            | क्रषिः                      | पृष्ठम्  | क्रषिः                     | पृष्ठम्  |
|-----------------------------|--------------------|-----------------------------|----------|----------------------------|----------|
| <b>कालनिर्णयः</b>           |                    | <b>अलाभे वा निषिद्धे वा</b> | २४४      | <b>न नन्दासु भृगोर्वरे</b> | ७४८      |
| अस्तमयाद्वाक्               | ८५६                | अशक्त्या पार्वणं            | ७३८      | नभस्यस्यापरः               | ७४५      |
| आदित्यगति                   | ७०९                | अष्टकापरपक्षा               | ७०३      | नित्यदार्शिकयोः            | ६९४      |
| उपवासे निषिद्धे तु          | ८४५                | अस्मिन्या भरणी              | ७२८      | नित्यस्य सोदकुम्भस्य       | ६९५      |
| एकादशीमात्र                 | ८४२                | आद्यगर्भोऽस्थ               | १४७      | निमित्ततोऽपि               | २७१      |
| ग्रस्यमाने भवेत्            | २७३                | आद्वादशाहात्                | ६०५      | नैकः श्राद्धद्वयं          | ६९४      |
| तत्र पञ्चधा                 | ७०७                | आपदायकृतं                   | ६५४      | नैमित्तिकं तु              | ७५४      |
| तिथ्यर्थे प्रथमे            | ७२६                | आपदयपि च                    | ७१६      | पञ्चधा पञ्चदशधा            | ७०७      |
| दिवा श्राद्धक्रियाया        | ७१०                | आब्दोदकुम्भ                 | ७३१      | पक्षाद्यादि च              | ७४६      |
| द्वादशीमात्रवृद्धौ          | ८४२                | आयश्चाद्वं द्विजेऽप्नौ      | ६५१      | पक्षाद्याद्यासु            | ७६४      |
| नित्यं सदा यावत्            | ८३६                | आवर्तनादधः                  | ८५४      | पत्नीभ्रातृसुता-           | ६३९      |
| नैमित्तिकं तु कर्तव्यं      | २७२                | आश्रमस्वीकृतिः              | ७२८      | पत्न्यादीनां च पित्रोश्च   | ६४०      |
| पूर्वद्युरसती               | ८३०                | उपोष्यैकादशार्हा            | ८४५      | पर्वणि क्षयगे वृद्धौ       | ८५६      |
| यस्मिन्वर्षे                | ८३३                | एकादशो द्वादशो              | ६६५      | पितुसृतस्य                 | ६७२      |
| रात्रौ संक्रमणे             | २७६                | एकादशोऽन्हि                 | ६५२      | पित्रोस्तु पितृपूर्वत्वं   | ६१५      |
| वसंतादत्तवो                 | ७०९                | एकोद्दिष्टं तु              | ७०६      | पित्रोः संघातमरणे          | ६३७      |
| शरीरमंतःकरण-                | ८४९                | कुर्यान्मातामह              | ६८१      | पूर्णिमा प्रतिपत्सन्धिः    | ८५५      |
| शुद्धाविद्युयो              | ८४३                | गुरोरज्येष्ठ                | ६६१      | पूर्वं चोर्ध्वमन-          | ३९       |
| शुद्धा विद्वा तिथिः         | ८२७                | चतुर्थः पर्वणो              | ८५५      | पूर्वप्रातिपदोः            | ८५४      |
| श्राद्धेऽपराह्ण             | ७४०                | चोदनादपराण्हस्य             | ७०९      | पूर्वमासस्थ                | ७२८      |
| सप्तमी पूर्वविद्वैव         | ८३१                | जट्याद्वकं द्वयं            | ८५०      | प्रत्याद्विदकस्य           | ७१७      |
| सूर्यग्रहो यदा              | २७३                | तिथिवारसमायोगे              | २८४      | प्रत्याद्विद्कादि          | ८२७      |
| सूर्योदयस्योपरि             | ८५४                | तृतीये वा चतुर्थे           | ७८       | प्रत्याद्विद्केष्येव       | ७१४      |
| —                           | ७०८,               | त्रिपक्षात्पूर्वतः          | ६४७      | प्रत्यूष आश्वयुक्          | २८४      |
|                             | ७१२, ७२६, ७३२, ७४१ | त्रिपुष्करे च नन्दासु       | ६५५      | प्रमादाद्वक्ते             | ६६९      |
| <b>कालनिर्णयसंग्रहः</b>     |                    | त्रिभिर्द्वौभ्यां           | ६५५      | प्रातर्मध्यंदिनं           | ३६९      |
| अभावेऽपि प्रतिपदः           | ८२८                | त्रिमुहूर्तास्तमानात्       | ८२९      | बलीनां वैश्वदेवस्य         | ४०३      |
| कुतपाद्यपरा-                | ७१४                | दशो दशाहमध्ये               | ६१४      | भौमार्कशुक्रवारेषु         | २८४      |
| <b>कालाग्निरुद्रोपनिषद्</b> | ३०९                | दाहात् दशाहपर्यन्ताः        | ५६२      | भ्रातृद्वये स्वसृद्वये     | १००      |
| <b>कालादर्शः</b>            |                    | दाहादि मंत्रवत्             | ५६०      | मन्वाद्यासु युगाद्यासु     | ३६१, ७६३ |
| अध्यायानाम्                 | ३२                 | देवतैकये काम्या             | ६९८      | मलमासे द्विसंकान्तौ        | ७३५      |
| अनाकर्णितवार्तस्य           | ६३१                | दैवार्थे पाणी               | ६८६      | मालिङ्गुचान्य              | ७३१      |
| अनुवर्ज्य च                 | २७०                | द्वादशाहनिषिद्धादौ          | ६९०      | मार्गशिर्णि च पौषे         | ७४४      |
| अपुत्रो भ्राता              | १०२                | द्वादशाहसपिण्डयन्तं         | ७२७      | मासाज्ञाने दिनज्ञाने       | ६३१      |
| अमावास्या द्विधा            | ७४०                | द्वितीया त्रिमुहूर्ता       | ८५७      | मिहिरेण सहात्यन्तं         | ७३४      |
|                             |                    | न जीवपितृकः                 | ७३७      | मुक्त्वाद्यपक्षं           | ७४७      |
|                             |                    | न तत्संन्यासिना             | ६६२, ६६३ | मैत्रेद्वाग्निस्वाति       | ७४४      |
|                             |                    |                             |          | मौजीबन्धाद्वत्सर्वं        | ६७०      |

| ऋणिः                     | पृष्ठम्             | ऋणिः                      | पृष्ठम् | ऋणिः                    | पृष्ठम् |
|--------------------------|---------------------|---------------------------|---------|-------------------------|---------|
| कालादर्शः                |                     | बालानामदन्तजातानां        | ५१०     | प्राणस्तु देहजो         | २०७     |
| यद्यागच्छत्              | ६३३                 | ब्रह्मणो हृदयं            | ३१०     | प्रातस्तु दन्तकाष्ठं वै | २४५     |
| रजस्वलांगनो              | ७१५                 | योजयेन्मातुरर्थ्य         | ६७८     | यथोत्तरे दक्षिणे        | ८४५     |
| रजो दृष्टेश्यतुरथ्याद्या | ७७                  | व्युत्कर्मेण प्रभीतानां   | ६७३     | राजानः शुद्रभूयिष्ठा    | १२      |
| रवीन्द्रोर्यो            | ८२५                 | षष्ठे वा सप्तमे           | ७८      | विनिन्दन्ति महादेवं     | ३१०     |
| रवेः कन्यागत्वेन         | ७४६                 | संत्वयज्य विधिवत्         | ५८५     | सङ्गं कृत्वार्धं        | ८९८     |
| वर्गद्वयं समुद्दिश्य     | ७५१                 | सप्तपौनर्भवाः             | १३७     | सृष्टासृष्टिच्छलेनाह    | ३०४     |
| विवाहपुत्रभेदेन          | ६८१                 | सूर्यस्य त्रिनमस्कारं     | ८९२     | केशवीयम्                |         |
| वृद्धौ तान्यप            | ६५७                 | कुणिडन्यः                 |         | यस्मिन्मासि न           | ७२५     |
| वैश्वदेवे बलिहता         | ८०४                 | दीक्षितोऽप्येकपुत्रश्चेत् | ५६०     | कैवल्यश्रुतिः           |         |
| शुद्धा विद्धा हृद्या     | ८४१                 | कुत्सः                    |         | २४                      | ३४९     |
| श्राद्धं दर्शेऽप्यह      | ७३०                 | आचार्तो नाभिदेशं          | ४३३     | उमासहायं                | १९५     |
| श्राद्धं शश्वहतस्यैव     | ७५०                 | कूर्मपुराणम्              |         | कौटिल्यअर्थशास्त्रम्    |         |
| श्राद्धद्वयं तथोद्दिष्टं | ७५७                 | उ १११५                    | ९३      | २१२५                    | १०७     |
| संकातिरहितो              | ७२५                 | अ. उ. १४१८-८३             | ३९      | कौत्सः                  |         |
| संकात्यादिनिषेधश्च       | ८४४                 | १४१८-८७                   | २९      | उत्तराहस्त              | ७४६     |
| सप्तमी नवमी दर्श         | २८३                 | उ. १५१९९                  | ७६      | कौर्मे                  |         |
| सर्वस्मृतिपुराणोति-      | ८६८                 | उ. १५१९२                  | ७८      | अंकितो यः               | २९९     |
| साग्रो कर्तर्युभावादौ    | ६६८                 | उ. १८५२-५४                | ३७४     | अर्थैव सात्वता          | २९७     |
| सिंहकर्कटयोर्नद्यः       | २८८                 | उ. १८८८-८९                | ३८३     | अन्यानि चैव             | २९७     |
| सीमन्तव्रत               | ७५४                 | उत्त. १११९                | ४२५     | एकादशी द्वादशी          | ८४४     |
| सीमन्तोन्नयनं            | ७८                  | उ. २६४-८                  | ४०      | एकादश्यां न             | ८४५     |
| स्नेहाद्विप्रादिकैः      | ५६७                 | ३१९१२०-२२                 | ४२६     | एकादशी न भुजीत          | ८४५     |
| --                       | २७६,                | अकृत्वा तु द्विजः         | ४०६     | कापालिकाः पाशुपताः      | ३०६     |
|                          | ५६०, ५६१, ६१४, ६३६, | अथवा देवमीशानं            | ३९९     | कास्योपवासे             | ८४८     |
|                          | ६७०, ७२६, ७४९, ८४३, | अप्रायत्ये समुत्पन्ने     | २९९     | द्विस्पृगेकादशी         | ८४४     |
| कालादर्शटीका             |                     | अश्वधेनुमनुष्याः          | ९९७     | नैमित्तिकं तु           | ७०६     |
| एकोद्दिष्टपदम्           | ६५४                 | आदित्यवारे                | ७६३     | प्रदोषव्यापिनी          | ८२९     |
| --                       | ६३९                 | उच्छिष्ठोऽद्विरनाचान्त    | २६८     | बुद्धश्रावक             | २९९     |
| कालिकापुराणम्            |                     | गोदोहमात्रकालं            | ४०८     | मद्रकः रंकरद्वेषी       | ३१०     |
| एकादशी तु                | ८०२                 | गोपीचन्दनधारी             | २९६     | यदीच्छेद्विष्णु         | ८३८     |
| एकोद्दिष्टे तु           | ६५०                 | चण्डालसूतिका              | २६५     | वदन्तीह पुराणानि        | ८३८     |
| कुलशीलविहीनस्य           | १३८                 | जपस्तपस्तीर्थ             | ९३५     | सर्वांगमेषु निष्ठानां   | २९६     |
| कुविवाहैः क्रियालोपैः    | १४४                 | तस्मात्तु वेदवाहानां      | २९७     | सृष्टा तानूचतुः         | २९८     |
| काश्यपः                  |                     | न विष्णवाराधनात्          | ३९१     | स्वर्णकामदुहं           | ९२७     |
| गर्भधारणमारभ्य           | १५९                 | नैमित्तिकं तु             | ७६२     | द्विरप्यवाजिनं          | ९२७     |
| नीलं वाऽप्यथ             | ६४५                 | प्रक्षाल्य पाणी पादौ      | २३७     |                         |         |
| बालानामदन्त-             | ५०९                 |                           |         |                         |         |

| क्रषिः                  | पृष्ठम् | क्रषिः                   | पृष्ठम्   | क्रषिः                    | पृष्ठम्   |
|-------------------------|---------|--------------------------|-----------|---------------------------|-----------|
| <b>कौशिकः</b>           |         |                          |           |                           |           |
| कुशासनं परं पूतं        | २३०     | अथवा त्वकृतं             | ६६५       | गारुडपुराणम्              |           |
| गवां वालपवित्रेण        | २३३     | अन्तर्दशाहे संप्राप्ते   | ६०८       | उपोष्यैकादशी              | ८३७       |
| न ब्रह्मण्डनिनाचामेत्   | २३१     | एकमातृप्रसूतानां         | १४५       | तुलायां गोसहस्रे          | ९३०       |
| नैष्ठिकानां व्रतस्थानां | ८९२     | कुर्शं काशं पलाशं        | २४२       | दशमीशेषसंयुक्तो           | ८३९       |
| प्रातःस्नाने विशेषो     | २४९     | कृतदारो न वै             | ३५६       | न द्विजः क्वापि           | ९२६       |
| भिन्नासनं योगपदं        | ४१९     | कृष्णपक्षे तु            | ६५६, ६६६  | पुनः प्रभातसमये           | ८४१       |
| वामहस्ते स्थिते         | २३२     | गुरौ सिंहस्थिते          | १४७       | भस्मना तूर्ध्वपुंड्रं     | २९५       |
| विधिदृष्टं तु यत्कर्म   | २५४     | गृही स्यादेकपत्नीकः      | १५३       | यदा त्वल्पा               | ८४७       |
| <b>क्रातुः</b>          |         | चतुर्दश्यां तु           | ६६२       | श्रीशैले हेमकूटे          | ९२४       |
| अन्वष्टकासु             | ७३७     | जन्मनः षोडशो             | ११९       | श्रुतयः स्मृतयः           | ३०४       |
| असुराणां कुले           | ७८९     | ज्येष्ठस्य ज्येष्ठकन्यया | १४७       | —                         | ९२९ टीप   |
| अहमेवाक्षरं             | १७३     | तैलस्नानं सदा            | २८३       | <b>गार्यः</b>             |           |
| तेषामारक्षभूतं          | ७९२     | त्रिसंध्यं वायतो         | ३५३       | आक्षिपक्षम्               | ८२५       |
| द्वर्मपाणिद्विः         | ७९४     | दशांगुलं तु विप्राणां    | २४२       | अधिमासः स                 | ७२३       |
| देवराज्ञ सुतोत्पत्तिः   | ९३९     | दिव्यं वायव्यमाभ्यं      | २८९       | अनादिदेवता                | ७३४       |
| पंचसप्त                 | २०४     | न च स्पृश्या             | २८२       | अनूराधे च मूले            | ६३४       |
| पूर्वसंकल्पितद्रव्यं    | ४८४     | परोन्हि संगवात्          | ३३        | अपुत्रा ये मृताः          | ६६१       |
| ललाटे वर्तुलं           | ८००     | पुत्रचूडाकृतौ            | < ३       | अर्धरात्रादधः             | ३३        |
| विवाहोत्सव              | ४८४     | पुत्रजन्मनि संकान्तौ     | २८३       | कुर्यान्नैमित्तिकं        | २६४       |
| संप्रार्थितम्           | २०९     | पुत्रीपरिणयात्           | १४६       | कुर्यान्नैमित्तिकं स्नानं | २८५       |
| क्रमदीपिका              |         | प्रतिपद्यप्रविष्टाचां    | ८५५       | कृतकियेऽपि पितरि          | ६२०       |
| रजस्वला च या            | ७७१     | प्रत्यावृत्तेऽभसि        | २५८       | खर्वा दर्पा तथा           | ८२५       |
| क्रियाकल्पकारिका        |         | प्रधानं वैदिकं           | १९        | चतुर्दश्यां तु            | ७५०       |
| पतिव्रता त्वन्यदिने     | ६४३     | मलव्यपोहनफलं             | २८३       | चित्रा श्रविष्टा          | ६३४       |
| <b>क्रियासारः</b>       |         | यो वैदिकमनादृत्य         | ३५५       | तिथिनक्षत्र               | ८२५       |
| मध्यांगुलित्रयेणैव      | ३०३     | व्रतं कुर्यात्           | ११७       | त्रयोदश्यां तृतीयायां     | २८२       |
| शूद्रहस्तस्थितं         | ३०५     | प्रतिश्चिदाद्विकं        | ११९       | त्रिरात्रमेक              | ९२१       |
| <b>गणकारिका</b>         | —       | सर्जं धैर्यं वटे         | २४२       | दृत्वा हस्ते              | ७९९       |
| प्रत्यक्षमितरान्        | ७४२     | सापिण्डयात् प्राक्       | ६५१       | दन्तकाष्टे त्वमावास्या    | २४४       |
| <b>गमस्तिः</b>          |         | सोदर्यो तिष्ठति          | १५२       | दशिकित्सैमहीरोगैः         | ४८८       |
| एकोद्विष्टं तु          | ७२९     | —                        | २८२, २८३, | नन्दायां भार्गवदिने       | ६०५, ६५५, |
| न कुर्यान्मल            | ७२९     | ऋतुकाले प्रयोग           | ३९३,      |                           | ७४८       |
| <b>गर्गः</b>            |         | एतत्पाद्कौशिकं           | १५९       | नामकर्म च                 | ७३४       |
| अतीतेऽब्दे तु           | ५३८     | गायत्रीसारः              | १२८       | पञ्चविंशतिर्दी            | ५५५       |
|                         |         | तत्सावितुर्बृह्मा        | ३३१       | पर्वण्योदयिके             | ३२        |
|                         |         |                          |           | प्राप्तकालमतिकम्य         | ६३४       |
|                         |         |                          |           | भद्रे त्रिपदनक्षत्रे      | ६१०       |
|                         |         |                          |           | भद्रे भूमिप्रदानं स्यात्  | ५५३       |
|                         |         |                          |           | भार्यान्तरविवाहः          | ९५२       |

| क्रिपि:                   | पृष्ठम् | क्रिपि:            | पृष्ठम्  | क्रिपि:                   | पृष्ठम् |
|---------------------------|---------|--------------------|----------|---------------------------|---------|
| मधासु कुर्वतः             | ७४८     | मध्ये विषुवति दानं | २७६      | गान्धर्वासुरपैशाच         | १४५     |
| मातृश्राद्धं तु           | ७५४     | मिथ्यापापेन वा     | ८९९      | धर्म्येष्वेव विवाहेषु     | १४८     |
| माससंज्ञे यथा             | ७६४     | वधे प्राथमिकात्    | ८७२      | पितामहस्य तत्पत्न्या      | ५६२     |
| मेष्टराशौ यदा             | ७६४     | वर्षे वर्षे तु     | ७३१      | प्रोषितोष्यात्म           | ४०५     |
| मैत्रक्षर्मात्पेडश        | २७      | सपिण्डीकरणं        | ६७४      | मलं वदन्ति कालस्य         | ७२३     |
| यदि समिततः                | ७९      | सपिण्डीकरण         | ६६६      | य एवाहितान्नः             | ६३३     |
| यो यस्य विहितः            | ७०६,८३० | सपिण्डीकरणात्      | ६६७      | यत्र पाणितले              | ६८६     |
| रवौ चापगते                | ६३३     | सर्वकूलेशयुतो      | ३५१      | यज्ञोपवीतं परमं           | ९०      |
| ललाटसंमिते                | ७५४     | स्थिरभे विष्णुपदं  | २७४      | येन सायं                  | ३६०     |
| विवाहादौ स्मृतः           | ७०२     | स्वर्णपात्रं तथा   | ९९९      | शाकं वा यदि               | १९८     |
| वृषे वा मिथुने            | ७६४     | -                  | ९९३ टीपि | संप्राप्ते पार्वणश्राद्धे | ४०७     |
| शुक्रादिशुभवाराश्च        | ६१०     | गीता               |          | स्वगृह्योक्तेन विधिना     | ३६३     |
| शौक्रे च बुधवारे          | ६०६     |                    |          | गृह्यरत्नम्               |         |
| शौक्रे वारे निशायां       | ५८६     |                    |          | अंगवंगकलिङ्गः             | ११८     |
| मुखानुकूले                | ४५७     | गुरुः              |          | गृह्यवृत्तिः              |         |
| स्पर्शे स्पर्शे भवेत्     | ७९१     | संपूर्णकादशी       | ८४०      | पवित्रपाणिनवं             | ३७८     |
| स्वाहेति चैव              | ७९८     | गृह्यकारः          |          | गृह्यसंग्रहकारः           |         |
| गार्यायणिः                |         | अन्वष्टक्यं च      | ६४५      | अथातः प्रेताधान           | ५७६     |
| अन्तरेणैव यो              | ६५७     | शूद्रस्यापि निषेक  | ६७       | गोपालभाष्यम्              |         |
| सोपानत्कः                 | ३५३     | गृह्यपरिशिष्टम्    |          | उपोषणं दहनं               | ५८३     |
| गालवः                     |         | ११५                | ३३९      | औपासनं हि                 | ५८०     |
| आमश्राद्धं तु             | ७५४     | ११५                | ३३७      | गोभिलः                    |         |
| ऊनषाणमासिकं               | ६५२,६५५ | ११६                | ३३३      | ११३१६                     | ३४५     |
| एकचित्यां समाख्यां        | ६५३,६७८ | ११०                | २५९      | ११४२२-४४                  | ४०५     |
| एकयाने समारोहम्           | ९९३     | ११२                | ३९६,३९७  | ११९१३-१३                  | ३५८     |
| ओदनान्निर्मितं            | ९०९     | ११२१               | २९९      | अंतश्चरसि भूतेषु          | ४२२     |
| कृतोदके तु                | ६२३     | ३१७                | ६०८      | अगस्तिर्माधव              | ४५७     |
| कृतोदके तु षणमासात्       | ५३६     | अथ गृहस्थो         | ३८८      | अस्मिहेत्रे तु            | ४७८     |
| तिथ्यादिषु च              | ७६२     | अथ संवत्सरे        | ६६४      | अस्मिहेत्रे तु            |         |
| तीर्थेऽनमावापदि           | ७१५,७५६ | अनस्तमित           | ३५७      | अनुक्रकालेष्वपि           | ६७३     |
| त्रिपक्षादिषु कालेषु      | ६५२     | अवषट्कारहोमश्रं    | ७३३      | अरुणोदयवेलायां            | ८३९     |
| त्रिभिर्वा दिवसैः         | ६५५     | अष्टमाद्वत्सरात्   | ५१४      | आयातु वरदा                | ३२६     |
| दौहित्रः पुत्रिकापुत्रो   | ५२२     | असगोत्रः सगोत्रो   | ६०२,६१८  | आवर्तने यदा               | ८५४     |
| पित्रोराशौचमध्ये          | ६१४     | उत्तानेन तु        | ३६२      | उपमूलं लूनाः              | २३१     |
| पुरोहिते मृते             | ५२६     | उपवीतमयुगम्        | ९०       | उभयत्र स्थितैदैर्भैः      | २३२     |
| प्रेतश्राद्धं सपिण्डयन्तं | ७५२     | ऋतुमस्त्वपि        | ६८७      | एकचित्यां समाख्यां        | ५३२     |
| ब्रह्माण्डं यो            | ९२६     | एतद्वपनं संस्कर्त् | ५८६      | एकपक्त्युपविष्टानां       | ४२७     |

| क्रमिः                 | पृष्ठम्       | क्रमिः     | पृष्ठम् | क्रमिः  | पृष्ठम् |
|------------------------|---------------|------------|---------|---------|---------|
| गोभिलः                 |               | गौतमः      |         |         |         |
| एकवस्त्रो न भुज्जति    | २५३           | ११९        | २       | २१५६    | १०५     |
| कुशमूले स्थितो ब्रह्मा | २२९           | ११३-४      | ५       | ३११     | १७२     |
| खर्वा दर्पा तथा        | ८२६           | ११५        | ७, ७०३  | ३१३     | १६७     |
| खर्वा दर्वा तथा        | ७१४           | ११६०       | ८७      | ३१४-८   | १२१     |
| छांदोगाभिहिताः         | ३३            | ११७        | ८७      | ३१०-१२  | १११     |
| तूष्णीमेताः क्रियाः    | ८४            | ११९३       | ८९      | ३१४७-२४ | १११     |
| दशरात्राच्छत-          | ८१            | ११९५       | ९५      | ३१२०    | १११     |
| द्वादशाहादिकालेषु      | ६६९           | ११९६       | ९३      | ३१२१    | १८५     |
| न शंखेन पित्रेत्       | ८३८           | ११९७-१८    | ९४      | ३१४८    | ११६     |
| नागन्धां स्वर्जं       | १२३           | ११९९-२०    | ९४      | ३१४९    | ११६     |
| नित्यं सततनिर्वर्त्य   | २५४           | १२१        | ९३      | ३१५१-५३ | १११     |
| नोदकेषु न पात्रेषु     | ३७६           | १२४-२५     | ९३      | ३१५४-५५ | १२०     |
| न्युद्वजं कुर्यात्     | ७९९           | १२४-३३     | ४७०     | ३११३    | १२५     |
| पक्षांता उपवस्तव्याः   | ८५४           | १३४        | २१५     | ३१२-१३  | १४२     |
| पर्वण्यौदयिके          | ५३            | १३५-३९     | २२६     | ३१९     | १४३     |
| पिदान्ति शिरसो         | २५०           | १४१-४३     | २३८     | ३१७     | ६८७     |
| पूर्वाण्हः प्रहरः      | ७०७           | १४४        | २३७     | ४१९-३   | ७६      |
| प्राङ्मुखावस्थितो      | ४१८           | १४५        | ४६८     | ४१८-५   | ३६७     |
| प्राणाहुतौ हुतायां     | ४२४           | १४६        | ४६८     | ४१६-७   | ३५४     |
| प्रातगार्यन्त्री       | ३३३           | १५३        | १११     | ४१९     | ३९७     |
| ब्राह्मणं भोजयेत्      | ६५१           | १६०        | ३६      | ४१०-१५  | ४००     |
| मतिमान्न कदाचित्तु     | ३४१           | २१         | १०९     | ४१६     | ४१०     |
| यज्ञोपवीतं कुरुते      | ९९            | २११२       | ८४      | ४१८     | ४९      |
| यस्य संक्तसरात्        | ६५२           | २११-१०     | ८५      | ४११-२२  | ४४      |
| वज्रो यथा मुरेन्द्रस्य | २२९           | २१७        | ८६      | ४१२१    | १३७     |
| विरिचेन सहेत्पन्न      | २३४           | २८         | ८६      | ४१२३    | ४०८     |
| व्याहृतीभिर्गायत्र्या  | ४२१           | २१२        | ९८      | ४१२५-२९ | ४१५     |
| शुचौ देशो शुचिभूत्वा   | २३४           | २१५        | १२५     | ४१२७    | २४०     |
| श्रौतस्मार्तक्रियो     | २१८           | २१७        | ३३६     | ४१३०-३३ | ४१४     |
| संध्या येन न           | ३११           | २१९९-२१    | ११४     | ४१३४-३४ | ४१४     |
| साम्निकस्तु यदा        | ६६८           | २२५        | ८५      | ४१३६    | ४१२     |
| —                      | ४८३, ७०७, ८२० | २१३८       | ११४     | ४१३९-४२ | ४१२     |
|                        | ८५४           | २१४१       | ९६      | ६१५     | १०८     |
| गोविन्दस्वामी          | १४२           | २१४२       | ९६      | ६१९     | ११०     |
| गौणकारिका              | ७४२           | टिप्प. ७४३ | ९५      | ७१९     | ३१      |
|                        |               | २१४६       | ७४२     | ७१६-७   | ६०      |
|                        |               |            | ९७      | ७१८-२३  | ६२      |

| क्रषिः        | पृष्ठम् | क्रषिः          | पृष्ठम्      | क्रषिः                        | पृष्ठम् |
|---------------|---------|-----------------|--------------|-------------------------------|---------|
| गौतमः         |         | १४२७            | ८६, २६४, २६७ | अंगुलया जपसंख्यानं            | ३४२     |
| ७१९८-२०       | १०७     | १४१३१           | ५२१          | अंगुष्ठं मोक्षदं              | ३४३     |
| ७१२१-२२       | १०७     | १४१३१-३३        | ५१६          | अभिपूतो गृहस्थः               | ९०२     |
| ८१९४-२४       | ७३      | १४१३४           | ५४७          | अग्रजो वाऽनुजो                | ६६९     |
| ८१९५          | १४४     | १४१३४-३९        | ६०६          | अग्ने भिक्षेत                 | ९६      |
| ८१९८-२४       | १९      | १४१३६           | ५९८          | अदैवं पार्वणशाद्वं            | ६९०     |
| ८१२५          | ७३, ८७४ | १४१३७           | २६४, ५८७     | अनेन विधिना                   | ३४३     |
| ९१२-३         | १२३     | १४१३०२          | ७३५          | अपरपक्षे श्राद्धं             | ७४६     |
| ९१४           | २५२     | १५१७-८          | ७७७          | अपुत्रस्य पितृव्यस्य ५५८, ५८९ |         |
| अ. ९ प. ५     | २५२     | १५१९३-१४        | ५६३          | अमावास्योदये                  | ७२१     |
| ९१८, ९, १५-२५ | ४६३     | १५१२९-२२        | ७६९          | अस्नात्वा भोजनं               | ९०९     |
| ९१५           | २१५     | १५१२३           | ७७९          | आम्रेयां वाध                  | ५८२     |
| ९१७-१९        | ९२२     | १५१२९           | ३४८          | आचांतः पुनराचामेत्            | ४५३     |
| ९१२६          | ७७      | १६११            | ३२           | आदित्येऽहनि                   | ८४५     |
| ९१४५-५५,      | ४६३     | १६१५-१३, १४     | ३८           | आस्ये चक्षुषोः                | ५८३     |
| ९१६३-६४       | ३७५     | १६१३७-३८        | ३९           | उद्घृतस्नेह-                  | ४३६     |
| ९१६५          | १०, ४६३ | १७१७            | ४४२          | एकचित्यां समारूढौ             | ६४३     |
| ९१६८          | ३९      | अ. १७ सू. १-५   | ५७           | एकजातीयपर्णेषु                | ९११     |
| ९०१९-३        | १८      | १७१८-९          | ४३३          | एकद्वित्रिदिनैः               | ६५५     |
| ९०१२-९        | ८६८     | १७१९२-१४        | ४३७          | काहलभ्रामण                    | ४३१     |
| ९०१५          | ६२      | १७१८-२१         | ४३७          | क्रिया ह्यर्थकारिता           | ७४२     |
| ९०१७-१८       | ६५      | १७१२५           | ४३६          | गच्छतस्तिष्ठतो                | ३४२     |
| ९०१४३-४४      | ६५      | १७१२७           | ४५१          | गणदूषस्याथ समये ३२१, ४५३      |         |
| ९०१५१-५८      | ६७      | १८१९७-१८        | १५२          | गायत्रीं पच्छोर्ध्वर्चशः      | २६१     |
| ९०१६०-६७      | ६७      | १९११७-२०        | ९३१          | गायत्रीं यस्य यो              | १२९     |
| ९११२०         | १२८     | २११७-२          | १२७, ८६३     | ज्येष्ठस्य चानपत्यस्य         | ५५८     |
| ९२११          | ८७३     | २११९०           | ८६४          | त्रसरेणुसमं                   | ८८३     |
| ९२११-५        | ६८      | २११९७-१९        | ८९८          | दक्षिणायेषु                   | ६५०     |
| ९२१२-३        | ८९३     | २३१९-३          | ८७९          | दक्षिणायेषु दर्भेषु           | ६५०     |
| ९२१४          | ९२३     | २३१९७-१९        | ९२२          | दातृगोत्रसमुद्भूतां           | १४६     |
| ९२१२५         | ५९, ८८६ | २३१२३-२४        | ९०७          | दिवोत्तरायणे शुक्ल            | ५५३     |
| ९४१५-६        | ५३०     | २५१७-१०         | ९३२          | देशकालादि                     | ६५३     |
| ९४१५-७        | ५०४     | गौतम धर्मसूत्रः |              | द्वादशीं श्रवणक्षेत्रं        | ८४६     |
| ९४१८-११       | ८८७     | २५१९            | ३१८          | द्विजो रणविमुक्तयर्थं         | ९२६     |
| ९४१९२         | ८९७     | २६१९-१७         | ९३६          | द्विजः कामातुरो               | ८८८     |
| ९४१९५-१६      | ५२७     | २७१३-१५         | ९४०          | धनुमसि गृहे                   | ९१०     |
| ९४१२५         | ५२५     | २८१७            | ९२६          | नीलीमयं पटं                   | ९१३     |
| ९४१२६         | ५४५     | ५९१९९           | २२८          | पञ्चमाद्वत्सरात्              | ५१३     |

| ऋणिः                                                                      | पृष्ठम् | ऋणिः                    | पृष्ठम्       | ऋणिः                   | पृष्ठम्  |
|---------------------------------------------------------------------------|---------|-------------------------|---------------|------------------------|----------|
| गौतमः                                                                     |         | अधस्तान्नवमान्          | ४९४           | मृतजातकयोः             | ५३०      |
| पञ्चाशद्वस्तरात्                                                          | १०२     | अर्हचार्वाकं            | ७             | यद्विवा विहितं         | २१८      |
| पत्नी जुहुयात्                                                            | ३५५     | अलाभे येन               | ३९८           | यस्य धान्यसमृद्धिः स   | ५५५      |
| पाकयज्ञास्य                                                               | १५०     | आचार्य गुरु             | ७५२           | रजसा शुद्ध्यते         | ४७५, ८९३ |
| पितानुजस्य पुत्रस्य                                                       | ९१३     | आमश्राद्धं यदा          | ७५६           | विष्णुत्रभक्षणे        | ४४८, ८८९ |
| पितृपत्न्याः सर्वा                                                        | ५६५     | आरनालं तथा              | ८४६           | विधवागमने कृच्छ्र      | ८९१      |
| प्रथमेऽहि तृतीये                                                          | ५९८     | उपव्युषसि यत्स्नानं     | २४७           | शूद्रस्य तु नवश्राद्धे | ४४८      |
| प्राङ्मनाभिवर्धनात्                                                       | ८०      | एकं नामापरं             | ७५६           | श्वकाकोच्छिष्ट         | ४३२      |
| प्राणानां ग्रंथिरसि                                                       | ४५३     | कंदमूलफलादीनि           | ४३५           | सम्बन्धिनः श्वियं      | ८८८      |
| प्राधान्येन विधानाच्च                                                     | ३४      | कांस्यपित्तल            | ८८४           | सावित्र्यास्तु         | ३३५      |
| बलाद्वन्दीकृतो                                                            | १०३     | कृच्छ्रे पञ्चाति        | ९४४           | सीदंश्येत्प्रति        | ५६       |
| ब्रह्मस्वं यस्तु                                                          | ८८४     | कृच्छ्रोऽयुतं           | ९४२           | सुराया विक्रयं         | ९९६      |
| ब्राह्मणान्नं ददृत्                                                       | ४४५     | कृष्णसर्पं द्विजं       | ४६४           | खीक्षीरं च             | ४३८      |
| मन्त्रब्राह्मण उच्चारयतो                                                  | २३८     | केचिदिच्छन्ति           | ७१९           | खीक्षीरं तु            | ८८२      |
| मातामहे च तत्पत्न्याः                                                     | ५८९     | कोद्रवान् राजमार्पाश्च  | ७८१           | खीणां नास्ति परित्यागो | ८९४      |
| मृतं दग्ध्वा                                                              | ५१३     | गर्भपाते समुद्दिष्टं    | ८९४           | स्नानमब्दैव            | २४६      |
| मुसलं दृष्टं चैव                                                          | ८८५     | चतस्र एव                | ८९४           | स्नानादनन्तरं तावत्    | २४७, २५० |
| यदा रहः पुष्पवर्तीं                                                       | ८९०     | चान्द्रायणं नव          | ८९४           | स्मृतेर्वेदविरोधेन     | ७        |
| ये समाना इत्यर्थं                                                         | ६७७     | चान्द्रायणं मृगारेषिः   | ९४३           | चन्द्रिका              |          |
| शशाप तान्                                                                 | ३०६     | जन्मप्रभृति पापानि      | ९४४           | पृ. २४ पं. ७           | ८४       |
| शिखां विना द्विज                                                          | ९१२     | जीवे पितरि              | २३            | पृ. ९८ पं. ३०          | २३५      |
| शिवलिंगसमीपे तु                                                           | २५९     | ज्येष्ठधात्रा           | २३            | पृ. ९९ पं. १           | २३५      |
| श्वशूश्वशुर-                                                              | ५२६     | तिस्सस्तिस्सः शलाका     | ७१८           | पृ. १०५ पं. ७          | २४३      |
| सङ्गीभूय द्विजा                                                           | ९०८     | तृतीयां वा चतुर्थी      | ९३०           | पृ. १०६।१९             | २४२      |
| सर्वस्मिन्वा द्रव्य-                                                      | ७४६     | त्रिसधु त्रिसुपर्णं     | ९३४           | पृ. १११ पं. २६         | २८२      |
| सीमन्ते पुंसवे                                                            | ९१५     | दीर्घं तक्रमपेयं        | ८३७           | पृ. ११२                | २५१      |
| सूत्वा नारी मृता                                                          | ५५४     | द्वे द्वे शलाके         | ७९८           | पृ. ११३ पं. ४          | २५०      |
| स्नापयित्वाऽलंकृत्य                                                       | ५८०     | धर्मनिष्ठास्तपो         | ९४४           | पृ. ११३ पं. २९         | २५२      |
| हंविः प्राश्य यथा                                                         | २०१     | पात्रालंभं द्विजः       | ८०५           | पृ. ११४ पं. २८         | २५३      |
| — ५२, ६९, १३१, १७२,<br>२६५, ३०१, ४००, ५०९, ५२७,<br>५५४, ६५१ टीप, ७२३, ७७७ |         | पावमानीस्तथा            | ३५०, ९३३      | पृ. ११६ पं. १३         | २६५      |
| गौतमसूत्रम्                                                               |         | प्रतिषिद्धेषु दानेषु    | ९२३           | पृ. ११७ पं. २०         | २६६      |
| ४२०                                                                       | ४९६     | प्राजापत्यं नव          | ४४८, ९९४      | पृ. ११८ पं. १          | २७७      |
| चक्रोपनिषद्                                                               |         | प्राजापत्ये तु          | ५५५, ९४३      | पृ. ११९ पं. २०         | २६७      |
| तस्माद्वृद्धां मासेव                                                      | २९९     | प्रातस्तु द्वादशग्रासाः | ९३६           | पृ. १२३ पं. ७          | २८०      |
| चतुर्विशातिमतम्                                                           |         | बौद्धान्पाशुपतान्       | २६७, ३०६      | पृ. १२५ पं. १०         | २८३, २८४ |
| अभ्येमन्वेनुवाकं                                                          | ३४८     | ब्राह्मणीगमने           | ८८८           | पृ. १२५ पं. १४         | २८३      |
|                                                                           |         | भ्राता वा भ्रातुपुत्रो  | ६५८, ६६९, ६९३ | पृ. १२६ पं. २          | २८०      |

| क्रमिः             | पृष्ठम् | क्रमिः                     | पृष्ठम् | क्रमिः                    | पृष्ठम् |
|--------------------|---------|----------------------------|---------|---------------------------|---------|
| पृ. १२९ पं. २      | २५९     | क्रमिः<br>चंद्रिका         | २५९     | क्रमिः<br>चंद्रिका        | पृष्ठम् |
| पृ. १२९ पं. १२     | २५६     | अद्य श्राद्धं करिष्य       | ४८३     | कात्ताधिकारसिद्धयर्थं     | ५५४     |
| पृ. १२९ पं. ३०     | २५६     | अनतीतद्विवर्णः             | ५०९     | कालशाकं महाशाकं           | ७८३     |
| पृ. १३२ पं. ३९     | २५७     | अन्नमंगुष्ठ                | ८०५     | कुकुटो विड्वराहः          | ७८६     |
| पृ. १३५ पं. १०     | ३३७     | अन्वष्टकासु वृद्धौ         | ७१९     | कीता द्रव्येण             | १४४     |
| पृ. १३९ पं. ८      | ३४४     | अमावास्यादूयं              | ७२३     | क्षयाहं वर्जयित्वैकं      | ७१९     |
| पृ. १३९ पं. १३     | ३४५     | अर्धं तु श्मशान            | ५८३     | गायत्रीं चिन्तयेत्        | ३१३     |
| पृ. १४० पं. १-१२   | ४७८     | अस्पृश्यस्पृष्टमरणे        | ५५४     | गायत्रीमात्र              | ७००     |
| पृ. १४३ पं. ३३     | २३४     | आच्छादनं तु                | ७१०     | गृहस्थानां सहस्रेण        | ७६८     |
| पृ. १४४            | ३३०     | आत्मपितृष्वसुः             | ५२६     | गोदोहकालं कांक्षेत        | ४०८     |
| पृ. १४४ पं. २०     | ३२९     | आदिदकं प्रथमं              | ७३०     | चण्डालादीन्जपे            | २३६     |
| पृ. १४५            | ३३१     | आर्यावर्त्तमतिक्रम्य       | ९       | चत्वारो ब्राह्मणस्याद्याः | १४२     |
| पृ. १४९ पं. २०     | ३३९     | आशौचनिर्गमात्              | ६४८     | जनने मरणे चैव             | ५४७,५९० |
| पृ. १५१ पं. ४      | ३३८     | आशौचमस-                    | ५२९     | जन्मनाम्नोर-              | ४९७     |
| पृ. १५२ पं. १९     | ३४२     | आशौचान्ते ततः              | ६४७     | जानुमात्रजले तिष्ठन्      | २२८     |
| पृ. १६३ पं. १      | ३६०     | आसनेष्वासनं                | ७१५     | जैनान्पाशुपतान्           | ३०६     |
| पृ. १६४ पं. १,४,६  | ३६५     | आहिनामेस्तु                | ६२७     | ज्यायानपि कनीयांसं        | १०९     |
| पृ. १६८ पं. १५     | ३६६     | आहितामेस्तु विधिवत्        | ५३८     | ज्येष्ठेन वा कनिष्ठेन     | ६२०,६२४ |
| पृ. १९४ पं. ६      | ३८२     | उत्सृजेत् वृषभं            | ६४५     | ततः तस्मात्               | ५१४     |
| पृ. १९४ पं. २४     | ३८१     | उन्मत्तः किलिष्णी          | १५३     | तीर्थायतनसंपूर्णं         | ३६२     |
| पृ. २०१ पं. २६     | ३८८     | उपमूलं तथा लूनाः           | २३१     | ब्रयोदशी भाद्रपदी         | ७४९     |
| पृ. २०१ पं. २१६    | ४०४     | उपरागसहखाणि                | ५५४     | त्रिशन्मासादूर्ध्वं       | ७२५     |
| पृ. २२१ पं. १८     | ४१८     | उपास्य पश्चिमां            | ३११     | त्रिरात्राद्याशौचिनां     | ५३५     |
| पृ. २२३ पं. २१     | ४२४     | उरसा मनसा                  | ३८९     | दध्वा रात्रौ तु           | ५८६     |
| पृ. २२६ पं. १९     | ४२५     | उर्वारुकं कारवल्ली         | ७८२     | दध्यादियुक्तं             | ४३७     |
| पृ. ३३८ पं. ३      | ५६१     | ऋतुर्वसन्तः                | ८७      | दर्शादर्शश्यान्द्र        | ६९९     |
| पृ. ४८७ पं. २२     | ४०६     | एकदेशं तु वेदस्य           | ५२९     | दशष्ट्रादशान्             | ६७८     |
| पृ. ४८७ पं. २५     | ४०७     | एकोदिष्टे तु               | ६५०     | दाने विशिष्ट              | ४८०     |
| पृ. ४८८ पं. ८-११   | ४०६     | एतत् सपिण्डीकरणात्         | ७२९     | द्विवा शौचस्य निश्यर्थं   | २१८     |
| आ. ६७२ पं. १८      | १२७     | एतेषु सर्वेषु              | ६६२     | दीक्षितस्य यज्ञा-         | ४८२     |
| अंगुष्ठे चैव       | ३३१     | एभिर्वचनैः                 | ७१९     | देवरेण सुतोत्पत्ति        | १३९     |
| अक्षयासनयोः        | ७९६     | एवं देवान्                 | ४४०     | देशकालबला-                | ७७८     |
| अग्नौकरणानन्तरं    | ४०७     | करकालाबुकांस्येन           | २२४     | द्विजाते सूतिकाया         | ५०१     |
| अचिरगर्भस्त्वावे   | ४९२     | करेण दृक्षिणोर्ध्वं        | ९०      | धर्मशास्त्रं तु           | ११६     |
| अजीर्णेऽन्युदिते   | ५८५     | कर्तुरन्येषां च            | ५७८     | धार्योऽनामिकया दर्भे      | २३०     |
| अतीते सूतके        | ५३४     | कर्मण्यत्रादृशार्थानि      | ४९३     | धियमाणे तु                | ७२१     |
| अथ देवप्रतिष्ठायां | ४८१     | कामकालौ वैश्वदेवे          | ६७५     | नमपञ्चादन                 | ५९६     |
| अदत्त्वा कर्षको    | ६३      | काणादीन्भोजयेत्            | ७७६     | न मातृषु पृथक्            | ७३६     |
|                    |         | काम्यश्राद्धं काम्यसिद्धिः | ७६४     | नरेन्द्रसत्रिवतिनां       | ४८२     |

| क्रषिः                 | पृष्ठम् | क्रषिः                | पृष्ठम् | क्रषिः                   | पृष्ठम् |
|------------------------|---------|-----------------------|---------|--------------------------|---------|
| चंद्रिका               |         | यस्त्वासन्नम्         | ७७०     | हंसे हस्तस्थिते          | ७४९     |
| नासनासूर्यपादस्तु      | ४२६     | यस्मिन्देशो स्थितो    | ५७३     | हृदि रूपं मुखे           | ३८९     |
| निमंत्रयीति            | ७७७     | यस्मिन्नमौ भवेत्      | ३९६     | --                       | १२९,    |
| निमंत्रयीति पूर्वेषुः  | ७७६     | याज्ञवल्क्येन कालस्तु | ७२२     | १३१, १३३, १३८, ३१३, ३३७, |         |
| नीवीमध्ये तु           | २३२     | यान्युपरि पात्राणि    | ८०४     | ४८५, ४९२, ४९४, ४९९, ५०४, |         |
| नैपालकम्बला            | ७८८     | लिंगस्य दर्शनं        | ३९२     | ५०५, ५०६, ५०९, ५१०, ५१५, |         |
| नोदन्वदंभसि            | ४६७     | लोहे सून्मये वा       | ९७      | ५१६, ५२४, ५२५, ५२६, ५२०, |         |
| पंगादीनाम्             | १२१     | वर्णत्वमेक            | ४       | ५३१, ५३५, ५६०, ५६१, ५६३, |         |
| पल्नीभ्रातृसुतादीनां   | ६६१     | वानप्रस्थाश्रम        | ५१९     | ५७०, ५७८, ६१४, ६५४, ६६३, |         |
| पाणिपादमुखा            | ७९५     | विदेशस्थो गृही        | ६२८     | ७१९, ७२६, ७३२, ७३६, ७४९, |         |
| पिण्डालुकं च           | ७८५     | विधिना देवपूर्व       | ८०४     | ७६१, ७८३, ७८४, ७८५, ७८७, |         |
| पितामहादिभिः           | ६८०     | विपौ तु प्राङ्मुखे    | ७९४     | ७८९, ७९८, ८१२, ८१६, ८१९, |         |
| पितृमात्रग्रजा         | ६६१     | विष्णोरायतनं          | २६१     | ८२१, ९१५.                |         |
| पुत्राचार्यः स         | ७७२     | वृद्धौ समर्चयेत्      | ७५४     | चर्यापादः                |         |
| पुत्राभावे सपिण्डास्तु | ५६६     | वैशदेविक              | ७९७     | पादौ हस्तौ च             | ३१६     |
| पैतृकब्राह्मणेषु       | ८११     | व्रात्यस्याकृत        | ८९      | च्यवनः                   |         |
| पौत्राभावे प्रपौत्रो   | ५८६     | शखघातिनो यदा          | ७५०     | श्रुतिस्मृतिपुराणेषु     | ३५१     |
| प्रत्यक्षे चाप्रतिहतौ  | ५५४     | शिष्ये दशरात्रा-      | ५२५     | छागलेयः                  |         |
| प्रेतस्य पुत्रो दाहादि | ५५६     | थुक्प्रतिपदादि        | ७००     | पूजयेच्छाद्व             | ७६८     |
| ब्राह्मणान्मोजयित्वा   | ८१२     | श्राद्धकता गृहीत      | ७९६     | पूर्वं ब्रतं गृहीत्वा    | ९४१     |
| भद्रं भोजयं च          | ४३९     | श्राद्धे न देयाः      | ५२३     | प्रख्यापनं प्राध्ययनं    | ३१      |
| भर्तारमनुगच्छन्त्या    | ६४१     | श्रुतेत्यत्र तु       | ३०८     | प्रायश्चित्तमकामानां     | ८६७     |
| भोजनीयास्तथा           | ७६८     | श्रौतस्मार्तक्रियाः   | ४७९     | यः शूद्राद् द्विजो       | २२      |
| मलं वदान्ति कालस्य     | ७३३     | श्रौतानामप्यमि        | ४८३     | सर्वलक्षणसंयुक्तैः       | ७६५     |
| मातापित्रोः            | ५१७     | संभृतसंभार            | २३५     | छन्दोग्ब्राह्मणम्        |         |
| मातुले श्वशुरे         | ५२६     | सन्देहेषु च सर्वेषु   | ३७४     | यो ह वा                  | २८      |
| मातृष्वस्त्रादिषु      | ५२५     | सन्ध्या सावित्री      | ४९१     | छान्दोग्यम्              |         |
| माधूकरं य आदाय         | ४११     | सपिण्डस्य जनने        | ७२९     | कस्माद्ब्रह्मणः          | ३३७     |
| मासपक्षतिथि            | ६९९     | सपिण्डीकरणात्         | ७७०     | छान्दोग्यश्रुतिः         |         |
| मासस्थितिवाँ           | ६३२     | सप्तपूर्वान्          | ७७८     | अन्यैः शतहुता            | ३५६     |
| मासे त्रिंशत्तम        | ७२५     | समृद्ध्यपि यस्य       | ७३७     | आहारशुद्धौ               | २०३     |
| मृता चेद्रभिणी         | ६४४     | सव्यं जानु ततो        | ३७६     | ब्रह्मवादिनौ वदान्ति     | ३११     |
| मेखलामजिनं             | ११३     | साध्यामादूर्ध्वं      | १४०     | जमदान्तिः                |         |
| यज्ञादौ माससंवत्सर     | ७०२     | साशीति पण-            | १०      | अपसव्यं तु               | ८१४     |
| यदा अतिथिः             | ८०९     | सौराष्ट्रं सिंधु-     | ५०७     | अपसव्येन कर्त्तव्यं      | ८०७     |
| यदि पुत्रो गयां        | ७७६     | खीणं तु पतितो         | ६७६     | अल्पं पुनरुत्सुष्ट       | ८१०     |
| यदैकस्मिन्नहनि         | ७४७     | स्वधाशब्दं धूपदीपी    | ३८३     |                          |         |
| यद्यपि नाशौचम्         | ८८१     | स्वशाखोक्त्रियां      | ३९९     |                          |         |

| ऋषिः                       | पृष्ठम् | ऋषिः                   | पृष्ठम् | ऋषिः                       | पृष्ठम् |
|----------------------------|---------|------------------------|---------|----------------------------|---------|
| जमदग्निः                   |         | नैयोगिकी तिथिर्येषा    | ७४६     | तुलायां मकरे               | ७४०     |
| आपाद्य सह                  | ६५८     | पात्राणि चालयेत्       | ८१८     | त्रयोदश्यां तृतीयायां      | २८२     |
| आविद्वकं श्रद्धया          | ८२१     | पितरि प्रोषिते         | ६३०     | त्र्यहं समानो              | ५१८     |
| कन्यां वामकरे              | १४९     | पितुः पितृगण           | ६५९,६९८ | दशाहेन सपिण्डानां          | ४९६     |
| ज्येष्ठपुत्रेण कर्तव्या    | ५५७     | प्रत्यब्दं पार्वणैव    | ६५९     | देवान्वह्नकर्षणश्चैव       | २६४     |
| दण्डात्मनोस्तु             | १८६     | मूत्रपुरीषाद्          | ८७३     | द्विजः कामातुरो            | ८८९     |
| दर्भमुष्टिं प्रदीप्याम्भौ  | ५६८     | मृताशौचे समुत्पन्ने    | ८०      | न पारक्ये जले              | २५६     |
| दीक्षितस्याहितामेः         | ५६८     | वस्त्रोत्तरीयाभावे     | २५३     | न भाषेत विधं               | १९२     |
| नदी वैतरणी नाम             | ६७७     | व्याममात्रं समुत्सृज्य | ८१६     | नाधीयीत नरो                | ३७      |
| न निन्देयुर्नाव            | ८१०     | शंखं प्राहुरमा         | ७६०     | नित्यं न हापयेत्           | २८३     |
| न भवेयस्य                  | ८२१     | सूतके तु समुत्पन्ने    | ८७९     | नित्यं नैमित्तिकं          | ७३३     |
| पितुः पुत्रेण कर्तव्याः    | ५५६     | <b>जावालशाखा</b>       |         | निमन्त्रितस्तु             | २०४     |
| पितृदेवक्रियां             | ८४४     | रुद्रेणात्तमशंति       |         | निष्ठिडितं धौतवस्त्रं      | २५०     |
| मध्यंदिनकृतो               | ३६७     | जावालश्रुतिः           |         | पतितेऽनशने प्रेते          | ४८९     |
| यो नामकरणात्               | ५०७     | अथ परिवाङ्             |         | पतिव्रता सुशीला            | ६४६     |
| वैश्वदेवं दिवा रात्रा      | ४०३     | अथ पुनरवती             |         | पत्नी चैव सुतो             | ६४०     |
| शुद्धवत्योऽथ               | ७८७     | अथ हैनं                |         | पिण्याकं च                 | ९३९     |
| सलिलं नाम-                 | ८१४     | व्रक्त्वर्यं समाप्य    |         | पिण्याकं सक्तवस्तकं        | ९३८     |
| <b>जयन्तकारिका</b>         |         | पुर्वाङ्गे चेदमावास्या |         | पुत्रस्वकारमाचेण           | १०३     |
| शरीराणि न                  | ५७४     | <b>जावालिः</b>         |         | मासं शूद्रस्य              | ४९६     |
| <b>जातिनिर्णयसंग्रहः</b>   |         | भकामकृतपापानां         |         | मृतं बालं च                | ५४२     |
| ब्राह्मणात् द्विजकन्यायां  | ३०७     | अजं बस्तं गृहे         |         | यतिहस्तगतं                 | ५८      |
| <b>जातुकर्णिः</b>          |         | अतथात्वे               |         | यदि गृहमेव                 | १२१     |
| अग्न्यभावे तु              | ६८५     | अन्तदंशाहे दर्शे       |         | यद्येकत्र भवेतां           | ६९७     |
| अत ऊर्ध्वं न               | ६५९     | अपराह्नद्वय            |         | रात्रावपि च शंसंति         | ७१०     |
| अतिकालं च                  | ९२१     | अद्वं यो भृतकं         |         | पैतानासौ स्वयं             | ४७९     |
| अन्वष्टव्यं तथा            | ७१९     | अशिरस्कं भवेत्         |         | शिवे विष्णवादिभिः          | ६९२     |
| अलाभे कन्यायाः             | १३३     | अशिरस्कं भवेत्स्नानं   |         | शादं कृत्वा तु ६५९,६५३,६९४ |         |
| ऊर्ध्वं त्रिपक्षायच्छाद्वं | ६४७     | अहोरात्रोषितो          |         | श्वशुरस्य गुरोः            | ९१५     |
| ऊर्ध्वं नाभेः              | २६८     | आगतेऽपि रवौ            |         | षणामेकैकं                  | ९३८     |
| काणायं रुणवस्त्रं          | २५२     | आचरेदुषसि स्नानं       |         | संकान्तौ पुण्यकालस्तु      | २७३     |
| कुर्यात्स्य च              | ६३१     | आरम्भे सर्वकृच्छ्राणां |         | संध्ययोरुभयोः              | ३३०     |
| खण्डितं वतिना              | ८९२     | एकराशौ स्थिते          |         | संध्या पंचमहा-             | ४७७     |
| ग्रहोपरागे विषुवे          | ७६०     | एकस्मिन्नपि            |         | संन्यासनिश्चयं             | ५७४     |
| तिलोदकं तथा                | ५९६     | कुर्यान्नैमित्तिकं     |         | सततं प्रातरुत्थाय          | २४५     |
| द्वादश प्रतिमास्यानि       | ६५२     | कुशान्काशांश्य         |         | सदैव तिथ्योरुभयोः          | ८२९     |
| द्वितीये वा तृतीये         | ७८      | चण्डालीं रूपसंपन्नां   |         | सपिण्डीकरणं                | ६६७     |
|                            |         | तक्षा च तिलयन्त्री च   |         | समानोदकानां                | ४९७     |

| क्रषिः                            | पृष्ठम्  | क्रषिः                | पृष्ठम्  | क्रषिः                  | पृष्ठम्  |
|-----------------------------------|----------|-----------------------|----------|-------------------------|----------|
| स्नात्वा निरस्य                   | २५१      | क्रते महायज्ञेभ्यः    | ३९७      | २११८                    | ९३       |
| स्नानं कृत्वाद्र्वासा             | २५०      | पंचमहायज्ञेभ्यः       | ४०४      | २१२५                    | ८०       |
| हरेनामपरं                         | ३५१      | तिथिदर्पणम्           |          | २१३१५                   | ९३       |
| --                                | २८२, ९०२ | औद्यिके संगवस्पर्शे   | ३३       | २१५१७                   | ७४       |
| जावालोपनिषद्भू                    |          | तुण्डीरमण्डलीयम्      |          | २१५१९०३                 | ८७       |
| अभिरिति भस्म                      | ३०१      | त्रियामायास्तृतीयांशे | ५४०      | २१५१९११                 | ९२       |
| जौमिनि:                           |          | तैत्तिरीयक            |          | ३१२९                    | ५५१      |
| १११                               | १६७      | अग्नये पथिकृते        | ७३३      | ३१३१०                   | २५       |
| अवश्यं तु त्यजेत्                 | ३९८      | वेदान्तविज्ञान        | १७६      | ३१३२                    | ७००      |
| आहितामिश्रेत्                     | २५       | तैत्तिरीयकोपनिषद्     |          | ५१२-३                   | ५८०      |
| तन्त्रिमित्तोप                    | ८४४      | धर्म इति धर्मेण       | ३        | ५१३२                    | ७००      |
| नातिषोडश-                         | ९०       | धर्मो विश्वस्य        | ३        | ५१३७७                   | ९३       |
| यावद् ब्रह्मोप                    | ९८       | तैत्तिरीयब्राह्मणम्   |          | ६११३                    | २१९      |
| यावन्न छिद्यते                    | ५०५      |                       |          | ६१२१                    | २६       |
| सेतुर्नापेक्षते कालं              | २५७      | १११२                  | ७००      | ६१५२                    | ७०१      |
| --                                | ५०६      | १११३                  | ९३       | ७१११४                   | ८६       |
| ज्योतिषार्णवः                     |          | १११९                  | ६६५      | ७१५६                    | ६९९      |
| श्रावण्यां प्रौष्टपद्यां          | ८३२      | ११३१०                 | ७००      | ८१११                    | ३००      |
| ज्योतिःपराशारः                    |          | ११८५                  | ६६५      | ८११२                    | ३१२      |
| सिनीवाली माति                     | ७३२      | १११२२१७               | २४       | ८१२२                    | ३१३      |
| ज्योतिःशास्त्रम्                  |          | २११९                  | ३६३      | ८१२                     | ३१३      |
| अब्दद्वयं चाष्टमासाः              | ७२४      | २१८८,                 | २५७      | ८११                     | २२७, ३६७ |
| अरुणः सूर्यो भानुः                | ७१४      | ३११९                  | ४०८      | ८१३१९                   | ३७०      |
| तत्र दत्तमदत्तं                   | ७३४      | ३११७                  | ४०८      | १११४                    | ३७०      |
| दर्शान्तः पूर्णिमान्तश्च ७००, ७२७ |          | ३११७५                 | ७००, ७०९ | १०१९                    | ३४७      |
| माघादिषु तु                       | ८८       | ३११७                  | ३१७      | १०१९४                   | ३२७      |
| संतापः कान्तिरल्पायुः             | २८३      | ३११७                  | ३१७      | १०१९                    | ३२७      |
| —                                 | ७२५      | ३११७                  | ८५८      | दाने सर्वं प्रतिष्ठितम् | ५५३      |
| ज्योतिःसिद्धान्तः                 |          | ३११७                  | ९३ टीप   | न कंचन वसतौ             | ४१६      |
| असंक्रान्तिमासो                   | ७२४      | ३११७                  |          | —                       | ३६९      |
| यदा कन्यागते                      | ७२६      | ११४९                  |          | —                       | ५८४ टीप  |
| तन्त्रम्                          |          | ११५१                  | ९७       | ११४९                    |          |
| चतुर्दश्यष्टमी                    | ७८       | ११५२                  | २४       | अथ यदि ते               | ८        |
| तात्पर्यदर्शनम्                   |          | ११५१०                 | ७००      | तैत्तिर्यक्षश्रुतिः     | ११५      |
| अत्र यद्यपि                       | ७१९      | ११६१७                 | ८९       | ११५१०                   |          |
| अष्टधा कृत्वेति                   | ७४४      | ११६१९                 | ८५८      | तौल्यलिः                |          |
|                                   |          | ७४४                   | २०       | क्रियागुणत्वात्         | ७२३      |
|                                   |          |                       | ५७९      | मतं दूषयति न            | ७२३      |

| ऋणिः                  | पृष्ठम्  | ऋणिः                          | पृष्ठम् | ऋणिः                     | पृष्ठम् |
|-----------------------|----------|-------------------------------|---------|--------------------------|---------|
| <b>त्रिकाण्डी</b>     |          | <b>दक्षः</b>                  |         | <b>मातापित्रोर्गुरो</b>  | ५०      |
| २११६९                 | ६३६      | अशिरस्कं भवेत्                | २८९     | मृताशौचनिमित्ते          | ५३३,६३५ |
| अनाहितान्निः          | ५६८      | अहोरात्रस्य यः                | ३१०     | मृद्गोमयादिभिः           | २६०     |
| अपि दुष्कृत           | १६१      | आग्नेयं वास्तं                | २८९,२९० | मेखलाजिनदण्डेन           | ४६६     |
| चान्द्रो मासः श्रुतिः | ७०३      | आपद्यपि च कष्टायां            | १०३     | यज्ञोत्सवे व्रते         | ४८४     |
| तदेवं कुमारस्य        | १४       | इतिहासपुराणाभ्यां             | २०४,४५४ | यद्विवा विहितं           | १९६     |
| नष्टेष्वमिष्वथा-      | ५७३      | एकाहात्परतो                   | ११०     | यस्तु जापी सदा           | ५९      |
| मृते भर्तरि दाहात्    | ६३७      | कुशपाणिः सदा                  | २९३     | राक्षसासुर               | १४८     |
| यस्मिन्नाशौ स्थिते    | ७०३      | कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां        | ३८१     | रात्यन्त्ययाम            | ३१०     |
| यस्य भायाँ            | २५       | ग्रन्थार्थतो विजानाति         | ५१८     | वाग्दण्डो मौनमेव         | १८४     |
| यस्य भार्या विदूरस्था | ५७७,६०८  | ग्रहाश्रमात्परो               | १५५     | वृत्तिमेदेन मिन्नाः      | १८३     |
| वैश्वदेवं दिवा        | ३९७      | चतुर्थे तु तथा                | २४९,३७५ | वेदस्वीकरणं              | २९      |
| सपिण्डीकरणार्थ        | ५९५      | चान्द्रायणो यवमध्यः           | ९४१     | शुद्ध्येद्विप्रो दृशाहेन | ४९४     |
| —                     | ५२२, ५५४ | जातमात्रः शिशुः               | ८५      | संध्यात्रयेऽपि           | ३२३     |
| <b>दक्षः</b>          |          | तस्मात्यक्त                   | १७४     | संहृत्यांगुष्ठमूलेन      | २२६     |
| अ. २                  | २४५      | तीर्थे शोचं न कुर्वति         | २१५     | सपिण्डीकरणात्            | ७९९     |
| २१०                   | २४३      | त्रिंशत्परान्                 | १७५     | समं द्विगुण              | ४९      |
| २१२०                  | ३५४      | द्विविधो ब्रह्मचारी           | १२०     | सर्वेऽपि क्रमशः          | १७१     |
| २१२१                  | ३७५      | ध्यायेन्नारायणं               | २४६     | सूतकं तु प्रवक्ष्यामि    | ५३९     |
| २१२२                  | ३६६      | न शोचं वर्षधारा               | २१६     | स्नात्वाऽऽचमेद्यदा       | २४७     |
| २१२५                  | ३७४      | नामगोत्रे समुच्चार्य          | १४९     | स्नात्वाऽऽचमेद्यदा       | २२९     |
| २१२८                  | ३७४      | नैकः श्राद्धद्वयं             | ६५३,६९३ | स्नानाङ्गतपर्णं रुत्वा   | २४९     |
| २१२९-३२               | ३७५      | पञ्चमे च तथा                  | ३९५     | स्वकं कर्म परित्यज्य     | १५      |
| ३११-१९                | १६४      | पंचापाने दशैकस्मिन्           | २१७     | स्वीकरोति यदा            | ११९     |
| ३१२६                  | ८७३      | परिव्रज्यां गृहीत्वा          | २०८     | होमे च फलं               | ३५५     |
| ५१५                   | २१८      | पारिव्राज्यं गृहीत्वा         | ११९     | —                        | २४७,३९३ |
| ५१७                   | २१८      | पितामहं च                     | ६७२     | <b>दत्तात्रेयः</b>       |         |
| ५१८                   | २१८      | पितामहं च जीवन्तं             | ६७३     | निर्माल्यं भक्षयित्वैव   | ४४०     |
| ५१२                   | १६५      | पितृगृहे तु                   | ५१      | ब्रह्मरात्रीं ततो        | १७९     |
| ५१३                   | २१७      | पूर्वं प्रादेशिकां            | ३६०     | भैक्षादन्यं न            | २०४     |
| ६१२                   | ४८१      | पैशून्यममृतं                  | ४६५     | वेदव्रतानि               | ११७     |
| ६१५                   | ४८२      | प्रथमा धर्मपत्नी              | १५१     | <b>दृशकम्</b>            |         |
| ६१९                   | ४८८      | प्रदोषपश्चिमौ                 | ४५७     | अल्पात्पञ्चदिना          | ५३१     |
| ६१८                   | ४८३      | प्रातमाध्यान्हयोः             | ११३     | उत्पन्ने त्रिदिनं        | ५२६     |
| ६१९                   | ४८०      | बुधो ह्याभरणं                 | १८९     | जातमरणे पित्रोः          | ५१०     |
| अनाश्रमी ष तिष्ठेत    | १२३      | ब्रह्मा मुरारिश्चिपुरान्तकश्च | २१०     | मातुर्गर्भविपत्स्वधं     | ४९१     |
| अयने विषुवे           | ४५०      | महागुरुनिपाते                 | ५२३     | —                        | ४९४     |

| क्रषिः               | पृष्ठम्  | क्रषिः                  | पृष्ठम्  | क्रषिः                  | पृष्ठम्  |
|----------------------|----------|-------------------------|----------|-------------------------|----------|
| दशकटीका              | ५१९      | अहः षोडशकं              | ७४५      | चान्द्रायणं द्विविधं    | ९४०      |
| दीपिका               |          | आचान्तेभ्यो द्विजेभ्यः  | ८१४      | चौलकर्मणि               | ९१५      |
| अनुपेत उपेते         | ५१७      | आवार्यं स्वमुपाध्यायं   | ५४५      | ज्येष्ठायां चयन्        | ७७४      |
| अष्टमात्प्राक्       | ४९७      | आत्मानं न शपेत्         | ४६२      | ततः कर्मणि              | ८१७      |
| गर्भनाशादि           | ४९९      | आ त्रिपक्षात्           | ५३५      | ततः सर्वाशनं            | ८१६      |
| जनकस्य जनन्याश्य     | ५३३, ६३६ | आददीति प्रवृत्तेभ्यः    | १८६      | तथैव यन्त्रितो          | ७८०      |
| पक्षिण्यामुभया-      | ५२६      | आद्यश्राद्धमशुद्धोऽपि   | ६३६      | तद्विने वा परदिने       | ६४३      |
| पितृगेहे मृतायां     | ५१६      | आमश्राद्धं गृहीत्वा     | ७७९      | तद्देशं गृहीत्वा        | २०२      |
| पुत्री पौत्री तथा    | ४९८      | आशौचान्नोत्सृजेच्छिश्वं | २१५      | तर्जन्यज्ञष्ठ           | ३७७      |
| पुरुषाणां सपिंडानां  | ४९९      | आसनानि न कुर्वीति       | २४३      | तिलानवकिरेत्            | ७८१      |
| मातापित्रोरधे        | ५३७      | आसन्नसंक्रमं            | २७५      | तुलायां गोसहस्रेषु      | ९२७      |
| सावपातावप्रसवो       | ४९९      | इत्येवमद्विराजानु       | २२१      | तृतीया रोहिणी           | ७६९      |
| —                    | ५६०      | इष्टपूर्तमृताहेषु       | ७८५      | तृतीये पञ्चमे           | ६०५      |
| देवणभद्रः            | १३२      | उद्गृताश्यापि           | २८५, ४७३ | तैलमुद्गृत्तनं          | ७८८      |
| देवरातः              |          | उन्मादस्त्वक्           | ७७२      | दक्षिणां पितृविप्रेभ्यो | ८१२      |
| नाम्नो दन्तोद्रमात्  | ५०८      | उपवासेषु सर्वेषु        | ८२८      | दग्धवास्थि पित्रोः      | ५३७, ६२८ |
| देवलः                |          | उपाकर्मं तथोत्सर्गं     | ३४       | दशमेऽहनि संप्राप्ते     | ५१०, ६०६ |
| अंगुष्ठमूलदेशे       | ३७७      | उपाध्यायः पिता          | १०४      | दशम्यामेक               | ८३८      |
| अंगारनुषकीटास्थ      | २१६      | ऋणापकरणार्थं            | १२४      | दिवाहृतैर्जलैः          | २७१      |
| अगारदाही             | ७७८      | एकां नदीं समासाद्य      | २५३      | देये प्रत्यादिके        | ७१६      |
| अमेर्वृष्टलभुकस्य    | ४६६      | एकाग्रप्रणे पित्रोः     | ३०७      | देवार्चनपरो             | ७७३      |
| अघृतं भोजयेत्        | ४९८      | एकेन ग्रंथिना           | ५०       | देवार्थं ब्राह्मणार्थं  | ४०८      |
| अतः परामष्टा         | ११९      | एतेन विधिना             | ७५२      | देवालयेषु मार्गेषु      | ९०८      |
| अथ गङ्गा सरस्वती     | ९४०      | ओंकारः प्रथमस्तंतु      | १०       | द्वायां नैव             | ७५१      |
| अधीतविस्मृते         | ७७३      | आर्णकौशिय               | ४६९      | देवोत्सवे प्रवृत्ते     | १४८      |
| अन्नपानक             | ८०८      | कंडूरं श्वेतवृत्ताकं    | ४३४      | द्विजः कामातुरो         | ११३      |
| अपुत्रकस्य स्वं      | ५६५      | कदली मातुलुकं           | ८८५      | द्वितीयां वै तु         | ५७१      |
| अप्स्वीक्षितास्तु    | २२२      | कार्पासक्षौम            | ८१       | द्विविधो गृहस्थो        | ६०       |
| अभिसन्धिकृते         | ८६७      | कूपोदकेन सप्ताहं        | ९१२      | द्व्यामुष्यायणका        | ५६९      |
| अभोज्यं प्राहुराहारं | ४३६      | क्लिनं भिन्नं           | ४७४      | धमनीमन्तरे कृत्वा       | ३६२      |
| अमायां पैतृक         | ९१५      | गान्धर्वादिविवाहेषु     | १४५      | धर्मविद्वस्तिं हस्तं    | २१६      |
| अयुते वा सहस्रे      | ९०८      | यौगपद्ये तु             | ७५       | धर्म्यं वै दृश्यं       | ११६      |
| अरोगः प्रकृतिस्थश्च  | ८२२      | यामणीः प्राङ्गविवाकश्च  | ८८६      | ध्रुवमजस्तकं            | ४०       |
| अर्वाक् त्रिपक्षात्  | ५३५      | चण्डालश्च तुलुष्कश्च    | ८८९      | नक्षत्रदर्शनात्         | ८२९      |
| अवलीहं श्वमाजारं     | ४३१      | चण्डालाम्भिः            | ५११      | नाशौचं प्रसव-           | ५३६      |
| असंभवे परेद्युः      | ७७७      | चत्वार्यधीत             | ५१८      | नास्ति मातृसमं दैवं     | १०६      |

| क्रमिः                   | पृष्ठम्  | क्रमिः                           | पृष्ठम्  | क्रमिः                   | पृष्ठम्       |
|--------------------------|----------|----------------------------------|----------|--------------------------|---------------|
| नीलवस्त्रं तु            | ११३      | मृतं पतिमनुव्रज्य                | ५३२      | संस्पृश्यागुच्छि         | २६५           |
| पञ्चभूतघटं               | १३०      | मृताहं समतिक्रम्य                | ७०६      | सकृच्च संस्कृता          | ७८            |
| परतः परतो                | ५३१      | यज्ञोपवीतं कुर्वीति              | ९०       | सप्तम्यां रविवारे        | ३७७           |
| परदाराभिगो               | ७७३      | यज्ञोपवीतं विश्राणां             | ८००      | सदैवांदडमुखः कुर्यात्    | २१२           |
| परमान्नं च               | ११०      | यत्र प्रसूयते                    | ४७१      | समानगोच्रजां             | १०३           |
| परेयुरनुयाने             | ६४३      | यथा स्नानं च                     | २७२      | समानोदकानां              | ४९६           |
| पात्रालाभेऽपरं           | ८२०      | यस्मिन्देशो य                    | १३१      | सम्यक् कृतोपलेपः         | ४९८           |
| पादौ प्रक्षाल्य          | ४१७      | यः शूद्रान्प्रतितान्             | २८       | सालप्रामं शैवलिङ्गं      | ८८५           |
| पापानां तारतम्येन        | ८६१      | यां तिथिं समनु-                  | ८२७, ८३० | स्तनाटूर्ध्वमधो          | ९९            |
| पितरौ प्रमीतौ            | ६९९      | यागाध्ययन                        | ६०       | खीगूढं यवकीर्णः          | ७७२           |
| पितृकर्माणि सर्वाणि      | ७७०      | याजनं योनि-                      | २८       | स्थलीषु गिरि             | ७५८           |
| पित्रोहपरतौ पुत्रः       | ६३१      | याजनं योनिसंबंधं                 | १५३      | स्वदासो नापितो           | ४२७           |
| पिशुनश्च खलः             | ९००      | यावकानामप्सु                     | ९३९      | स्वयं दारान्             | ७६            |
| पुनर्दृहनमारभ्य          | ६१७      | यावत्तु शुद्धिं मन्येत           | २१७      | स्वयै धातेनं कर्तव्या    | २५२           |
| पुनः प्राप्तं दशाश्रात्  | ५३०      | यावत्पिता च                      | १०६      | स्वल्पत्वं वा बहुत्वं    | ४३            |
| पूर्वांगे दैविकं         | ६४८, ७०९ | ये मृताः पापमार्गेण              | ६३०      | स्वाशौचकालात्            | ५१०           |
| पूर्वं विवाहाश्रत्वारः   | १४२      | वंध्या तु वृष्टर्णि ५२, १३५, ७७३ |          | हिन्तालताल               | ८८०           |
| प्रमीतौ पितरौ            | ६९२      | वर्षद्वयं वा वर्षं               | ९०८      |                          | ५०२, ५३५, ६३७ |
| बद्धुधान्योद्भव-         | ८७८      | वल्लिमुपोतकीं                    | ४३४      | देवस्वामी                |               |
| बीमत्सुमशुर्चिं          | ७८६      | वस्त्रेण वाथ                     | ३६२      | एकोद्धिष्टे तु           | ६५४           |
| ब्रह्मचारिण एकं          | ९१       | विना यज्ञोपवीतेन                 | ९१२      | चर्मकारस्त्रियं          | ८८९           |
| ब्रह्मचारी न कुर्वीति    | ५४५      | विप्रस्य पीतशेषं                 | ८८१      | तुलाप्रतिग्रहीता         | ९२४           |
| ब्रह्मण्डं यस्तु         | ९२६      | विहितं तु सपिण्डानां             | ५४४      | नक्षत्रेषु तु            | ७६४           |
| ब्राह्मणानां कुले        | ४९       | व्यतीपाते यदन्नं                 | ९०७      | यस्मिन्काले यद्विहितं    | ७१२           |
| ब्राह्मणो मदलोभेन        | ८९१      | व्यवहारादिकलहे                   | ८८५      | स्थूलतनुस्तृते           | ८८५           |
| ब्राह्मण्यां ब्राह्मणात् | १८       | ब्रात्यान्नं यदि                 | ९१०      |                          | ६६२, ७१३      |
| भुक्तोच्छिष्टं समादाय    | ४५२      | शम्भोर्निवेदितं                  | ९१२      | देवीपुराणम्              |               |
| भुक्त्वाऽऽचामेत्         | ४५३      | शिखां बध्वा वसित्वा              | २२३      |                          |               |
| भुक्त्वाचामेयथोक्तेन     | २३९      | शुक्लैस्तु तर्पयेत्              | ३७७      | अर्धरात्रे त्वसंपूर्णे   | २७५           |
| भृतकाध्यापको             | ७७२      | शूद्रसत्रे न                     | ९०८      | आत्मतुल्यसुवर्णं         | ९२४           |
| भोजने दत्तलभानि          | २३८      | शौद्रोऽयं धर्मो                  | ६७       | गोत्रं नाम तु            | १४९           |
| मन्वादृयः प्रयोक्तारो    | २        | श्राद्धं कृत्वा तु               | ८१९      | दक्षिणामात्र             | ९२६           |
| मरणोत्पत्तियोगे          | ५३०      | श्वपाकं पतितं                    | २६८      | धर्मदीपः                 |               |
| महागुरुनिपाते तु         | ६४०      | श्वपाकं पतितं                    | ७७६      | ब्राह्मणस्य पूर्वशौच     | ५३०           |
| महिषीत्युच्यते           | ७७४      | श्वः कर्ताइस्मीति                | ८४७      |                          |               |
| मातुश्च ब्राह्मणश्चैव    | ४९       | संकटे विषमे                      | ८४७      | धर्मशास्त्रसारः          |               |
| मानुषास्थिवसां           | २९१      | संक्रान्तिसमयः                   | २७३      |                          |               |
| मुत्रोच्चारे कृते        | २९५      | संस्कार्यश्च पिता                | ५६६      | चान्द्रायणानि कृच्छ्राणि | १०            |

| क्रमिः                      | पृष्ठम्  | क्रमिः              | पृष्ठम्  | क्रमिः                 | पृष्ठम् |
|-----------------------------|----------|---------------------|----------|------------------------|---------|
| <b>धर्मशास्त्रसुधानिधिः</b> |          | उपवासत्रभावेन       | ८७२      | जननात्सममे             | ५०२     |
| गोत्रान्मातृ                | १३       | ऊरुजस्तु सुरां      | ८८४      | जन्ममासे च             | १४७     |
| <b>धर्मसारः</b>             |          | एवं हिरण्यगर्भस्य   | ९२५      | तण्डुलांश्च तिलान्     | ९९६     |
| खगबाताः शूर्पवातो           | ४६४      | चण्डालवत्सशून्      | ८९०      | तृतीयां मातृपक्षाच्च   | ९३०     |
| गोविप्रयोग्रात्पाणा-        | ४६५      | नभो नाथ नभस्यो      | ७३२      | दर्शं च पूर्णमासं      | ७१३     |
| यद्गृहे कलहो                | १५७      | व्रह्मा सदस्यः      | ९२७      | दीर्घकुत्सित           | १२४     |
| सालग्रामशिला                | ३८८      | ये वै कट्कुटीरस्था  | ८८९      | द्यूतं पुराणशुश्रूषा   | ११६     |
| <b>धर्मसारसुधानिधिः</b>     |          | वर्णत्रयाद्वा       | ८९५      | धनमूलाः क्रियाः        | ५५      |
| अलाबुं गृजनं                | ४३४      | <b>नारदः</b>        |          | धिग्जन्माचार           | ५       |
| त्रिपुङ्कं सदा              | ३०३      | १२१५-६              | ९३३      | नष्टेन्दुपर्वकालः      | ७२४     |
| विप्रं वसन्ते क्षितिपं      | ८८       | १२१७                | ९२६      | नोपोष्या दशमी          | ८४३     |
| <b>धर्मोद्योतः</b>          |          | १३१२०-२३            | ९४०      | पितृकार्यं तु          | ७०४     |
| अस्ताताशी मलं               | ४१७      | १२१२६               | ९६६      | पुस्तकप्रत्ययाधीतं     | ३०      |
| काले साम्यं                 | ४२४      | १२१३३               | ९३९      | पूर्वेयुश्चापरेयुः     | ७७८     |
| तृतीये पुंसवः               | ७८       | १२१४६               | ९३९      | प्राणो वायुः           | ३२४     |
| सौराणां रौद्रमंत्राणां      | ४५६      | १२१७५-७५            | ८६४, ८८७ | बृहस्पतिमनुर्दक्षः     | ३८५     |
| <b>धारेश्वरः</b>            |          | १२१९७               | ९३९      | ब्राह्मणाय यदुद्धिष्ठं | ४८      |
| धूर्तस्वामी                 | ६८४      | १३११०               | ९३८      | भर्तुराधिक्यभावेन      | ७२०     |
| <b>धौम्यः</b>               |          | १३११०-१३            | ९३८      | मन्त्रं विना तु        | ६२६     |
| पितरो यत्र पूज्यन्ते        | ७४९      | १३१२४               | ९३८      | मध्यान्हे त्रिमुहूर्तं | ७११     |
| ब्रह्मोदने च                | ४४९, ९१५ | १३१३१               | ९३८      | महादेव विरुपाक्ष       | ३५२     |
| <b>नन्दिकेश्वरः</b>         |          | १३१३२               | ९३७      | मृत्यनन्तरतो           | ६३३     |
| यः प्रयच्छेद्रवां           | ३९२      | अन्तर्देशाद्वे      | ५३३, ६३५ | यदि दैवात्मु           | ८४३     |
| <b>नन्दिपुराणम्</b>         |          | अयने विषुवे         | ३७       | यस्यां तिथौ मृतिः      | ६९९     |
| विष्णुः पितास्य             | ६६३      | अविद्याग्रहणात्     | ९१५      | यो वै यतीन्            | ७६७     |
| <b>नन्दिसूरिः</b>           |          | अष्टाब्दादधिकां     | ८२७      | योऽहेरिव गणाद्रीतिः    | ११६     |
| नूलोपवीतविन्यासे            | २३५      | अपराह्नद्वय         | ७३९      | राजा एव तु             | ९९९     |
| वामहस्तस्थदर्भो             | २३२      | आपस्त्वपि हि        | ६३       | लेखनीं बन्धसूत्रं      | ८८५     |
| <b>नन्दिसूरिस्मृतिः</b>     |          | इंदुक्षयेऽर्क       | ८४५      | लोकेऽस्मिन्मंगला-      | ३६६     |
| स्नानखादनपानेषु             | २३६      | उदयात् प्राक्       | ८३९      | विप्राणां वपुराश्रित्य | ३८४     |
| <b>नागरखण्डम्</b>           |          | उद्भाहिताऽपि        | ९३९      | विवाहस्त्वष्ट्वा       | ९४४     |
| आमन्त्रयेयतीन्              | ७६७      | एकादशी द्वादशी      | ८४४      | वेदे तु पौरुषं         | ३८४     |
| आपाद्याः पञ्चमे             | ७४६      | एकादशीसिं           | ८३७, ८३८ | शुक्ला वा यदि          | ८४६     |
|                             |          | केदोरे तपस्कृच्छं   | ८४५      | शुभकृत्पुत्रिको        | ९४६     |
|                             |          | क्षयाहस्य तिथिः     | ७१२      | श्राद्धं दद्यात्       | ७७१     |
|                             |          | गुरो तु सिंहाशिस्थे | ९४७      | श्वशूद्रपतितां         | ३४०     |
|                             |          | चण्डालीं तु द्विजः  | ८८८      | षंडस्य पुत्रहीनस्य     | १५      |
|                             |          | चतुर्थो घटिकाः      | २४७      | संकान्तिरहितो          | ७३५     |

| क्रषिः                 | पृष्ठम्  | क्रषिः                 | पृष्ठम् | क्रषिः                  | पृष्ठम् |
|------------------------|----------|------------------------|---------|-------------------------|---------|
| <b>नारदः</b>           |          | आसत्येनोद्वयं          | ३४४     | <b>नृसिंहः</b>          |         |
| संगवस्पृक्             | ७२०      | उपवीती बद्धशिखः        | २४७     | कन्यां कुंभगते          | ६३४     |
| संत्यज्य सप्तमं        | ७११      | केतनं कारयित्वा        | ७८०     | कन्या कुंभगते           | ६६६     |
| संपूर्णकादशी           | ८१०, ८११ | प्राङ्मुखोद्दण्मुखो    | ३१५     | <b>नृसिंहपुराणम्</b>    |         |
| संपूर्णकादशी यत्र      | ८१०      | यद्वयं यत्पवित्रं      | ८०३     | गंगा च यमुना            | २८८     |
| सुवर्णमानं यस्मिन्     | ८१४      | वारुणीभिः आदित्यम्     | ३४४     | गंगा यमुना              | ५२३     |
| सूनोर्मापि             | ८३       | सभार्यस्तु शुचिः       | ३१६     | पौरुषेण तू सूक्षेन      | ३०५     |
| सौचिको वस्त्रसन्धानी   | ८१०      | स्पृष्टा चाभिष्टुता    | ३१९     | भिक्षां च भिक्षवे       | ४१०     |
| खीशूद्रपूजितं          | ३१०      | <b>नारायणीयम्</b>      |         | <b>पतञ्जलिः</b>         |         |
| स्नातवा दग्धवा पुनः    | ५१६      | ओंकारेण सह             | २२६     | अविद्यांसः प्रत्यभि     | ११२     |
| हस्तहीनस्तु            | ३०       | <b>नारायणीयवृत्तिः</b> |         | <b>पद्धतिः</b>          |         |
| हीनाङ्गामधिका          | १२५      | —                      | १३०     | अथ द्वादशाहे            | ६६५     |
| <b>नारदीयम्</b>        |          | <b>नारायणोपनिषद्</b>   |         | अन्तर्दशाहे संप्राप्ते  | ६१२     |
| अक्षारलवणाः            | ८४९      | अथ पुरुषो ह            | १७      | ऊर्ध्वपुंड्रं चिपुंडं   | ३०९     |
| अग्न्यभावे तु          | ६४५      | न कर्मणा न             | १७५     | एकमुद्दिश्य             | ६४९     |
| अल्पायामपि             | ८४७      | — ३ टीप १८ टीप ४० टीप  | १८      | त्रिरात्रं च वतं        | २७७     |
| ऊर्ध्वपुंड्रयः         | २१४      | <b>निगमः</b>           |         | नन्दां भद्रां कलितिथिम् | ६३४     |
| एकादश्याः कला          | ८४९      | अनुज्ञातो गृहान्       | ८२०     | पूर्वभागेऽधवा           | ६४५     |
| कलावेदेऽपि             | ८३९      | अपहतां इति             | ७९६     | मलमासे निपतिते          | ३३      |
| तिथिनक्षत्रसंयोगे      | ८३६      | अवश्यमर्थयेत्          | ८०७     | मातापित्रोहृजः          | ५१२     |
| तृतीयैकादशी            | ८५१      | कृष्णपक्षेऽष्टमी       | ८३९     | श्राद्धे च शावक्षोरे    | ५८७     |
| तैलाभ्यंगं महाराज      |          | तुष्णीं भुंजीरन्       | ८०९     | षष्ठ्यष्टमी प्रतिपद्    | ५९५     |
| दर्शी च पौर्णमासं      | ८५४      | नान्नपानादिकं          | ८०८     | सत्पांशुदिनात्          | ६५५     |
| नष्टाप्तिर्दूरभार्यश्च | ६८८      | पूर्वविद्वाम्भु        | ८२८     | <b>पद्धतिग्रन्थः</b>    |         |
| स्वकर्मत्यागिनो        | २१९      | मांसापूपफले-           | ८०९     | —                       | ३४      |
| हरिपादोदकं             | ५४९      | युग्माप्तियुग          | ८२६     | <b>पद्मपुराणम्</b>      |         |
| —                      | ८३८      | यो जीवति पितृणां       | ७२१     | सांगान्यश्रुतुरो        | ७६६     |
| <b>नारदीयपुराणम्</b>   |          | यो वा जीवति            | ७४२     | <b>परमहंसोपनिषद्</b>    |         |
| द्वे तु शुक्ले         | ७६१      | शुक्लपक्षेऽष्टमी       | ८३९     | असौ स्वपुत्र            | १८६     |
| पारणे मरणे             | ७१३      | षष्ठ्यष्टमी            | ८५१     | सौवर्णादीनां            | १९३     |
| पित्र्ये मूलं तिथेः    | ७१३      | सर्वप्रकारवेदो         | ८३९     | <b>पराशारः</b>          |         |
| शैवान् पाशुपतान्       | ३०६      | <b>निरुक्तम्</b>       |         | ११२०                    | ८       |
| संप्राप्ते माघमासे     | २८२      | ११८                    | २९      | ११२१                    | ८       |
| <b>नारदीयसांहिता</b>   |          | ११९                    | ३१७     | ११२३                    | ११,८७०, |
| अधर्मात्रियुता         | ८५२      | <b>निरुक्तभाष्यम्</b>  |         | ११२५                    | ११,८९७, |
| <b>नारायणः</b>         |          | ७७९                    | ३२३     | ११२९                    | ११      |
| अचालयित्वा             | ८१८      | यद्वक्षु नित्यं        |         |                         |         |
| आमंत्रितस्तु यः        |          |                        |         |                         |         |

१७२

## सूचिः

| ऋणिः        | पृष्ठम्       | ऋणिः        | पृष्ठम्  | ऋणिः     | पृष्ठम्  |
|-------------|---------------|-------------|----------|----------|----------|
| पराशारः     |               | पराशारः     |          | पराशारः  |          |
| ११३०-३९     | ११            | ६१३         | २, ८७७   | ७१३१     | ४७०      |
| ११३४        | १३            | ६१७         | ४३२      | ७१३२     | ४७०      |
| ११३७        | ६२            | ६१९६        | ८७४      | ७१३३     | २६८      |
| ११३९-४०     | ४१९           | ६१९७        | ८७४      | ७१३६-३७  | ४७५      |
| ११४३-४५,    | ४१०           | ६१९८        | ४४२      | ८११      | ८७०      |
| ११४४-४७     | ४१०           | ६१९८-२०     | ८७४      | ८११२     | ८६८      |
| ११४६        | ४१०, ४११      | ६१२३        | ८८१      | ८११२-१४  | ८७०      |
| ११५६१५७, ५९ | ६६            | ६१२४        | ४७०, ८८१ | ८११५     | ३        |
| ११६०        | ६६            | ६१२६        | ८८१      | ८११५-३४  | ८६९      |
| ११६१        | ६६            | ६१२७        | ८८१      | ८१२२     | ८७०      |
| ११६२        | ६६            | ६१२८        | ८८१      | ८१२८     | २९       |
| २११-२       | ६२            | ६१३२        | ४७२      | ८१३५     | ८७०      |
| २१४-५       | ६३            | ६१३४-३५     | ४७२      | ८१३७     | ८७०      |
| २१६         | ६३            | ६१३७-४०     | ४७२      | ८१४८     | ९४१      |
| २१७         | ६४            | ६१४१-४२     | ४७२      | ८१४९     | ८७६      |
| २१८         | ६४            | ६१४३।४५     | ४७२      | ८१२      | ८७६      |
| २१९         | ६३            | ६१४५-४६     | ४७४      | ८१३      | ८७६      |
| २११३        | ६३            | ६१५०        | ५५०      | ९१४      | ८७६      |
| ३१३         | -७७           | ६१५१        | ५५०      | ९१११     | ८७६      |
| ३१५-६       | ५१८           | ६१५२        | ५५९      | ९११७     | ८७६      |
| ३११०-११     | ४१७           | ६१६०-६९     | ५५९      | ९१२०     | ८७६      |
| ३११२        | ४८५           | ६१६२        | ४३३      | ९१३२     | ८७६      |
| ३११३।३०-३३  | ५६३           | ६१६३,       | ४२५      | ९१४६     | ८७६      |
| ३११४        | ४१०, ४२२, ६३२ | ६१६४        | ४२५, ५५१ | ९०१२     | ९४०      |
| ३११६        | ५०८           | ६१६६-६७     | ४३२      | ९०१३     | ९४१      |
| ३१३५        | ५३०           | ६१६७-६८     | ४३२      | ९०१९०-११ | ८८६      |
| ३१४४-४७     | ५४६           | ६१६९        | ४३२      | ९०१९३-१४ | ८८७      |
| ३१४८        | ५४७           | ७१५         | ८८५      | ९०१९५    | ८९९      |
| ३१४९-५२     |               | ७१९         | ४७१      | ९०१९६    | ८९२      |
| ४११-२       | ९११           | ७११३-१६     | ४७८      | ९०१९८    | ४७३      |
| ४१८         | ९१८           | ७११७        | ४७७      | ९०१९८-२३ | ८९६      |
| ४११३-१४     | ९४९           | ७११७-१९     | ७४       | ९०१२०    | ८७५, ८१५ |
| ४११४        | ७४, ८१२       | ७११९        | ८९०      | ९०१२३    | ८७५      |
| ४१२०        | ९५३           | ७१२०        | २७९      | ९०१२४    | ८९७      |
| ४१२०-२१     | ९०३           | ७१२१-२२     | २६८      | ९०१२५-२६ | ८९४      |
| ५११-९       | ९०४           | ७१२३        | ४६७      | ९०१२७    | ८७९      |
| ५११०        | ८८८           | ७१२४-२५, २७ | ४६८      | ९०१२८    | ८८०      |
| ६११         | ९२            | ७१३०        | ४७०      | ९०१३२    | ८९५      |

| क्रषिः    | पृष्ठम्  | क्रषिः                | पृष्ठम् | क्रषिः                     | पृष्ठम् |
|-----------|----------|-----------------------|---------|----------------------------|---------|
| पराशरः    |          | पराशरः                |         | पराशरः                     |         |
| १०१३३     | ८९५      | १२१५५                 | ५५४     | कृतं त्रेता द्वापरं        | ११      |
| १०१३४     | ८९६, ८९५ | १२१५६-५७              | ९४३     | कृत्वा तु शौचं प्रक्षालय   | २२०     |
| १०१३५     | ८९६, ८९५ | १२१५७                 | ८९२     | ग्रामैकरात्र               | २०९     |
| १०१३६-४२  | ८९६      | १२१५८                 | ८७१     | क्षत्रियस्तु दशाहेन        | ४९५     |
| १११९      | ८८०      | १२१५९-६३              | ८७१     | गजस्य चतुरङ्गस्य           | ८७७     |
| १११८-५    | ८८६, ९०७ | १२१६४                 | ८७१     | गोवाटे वा                  | ८७५     |
| १११८-९    | ८२७      | १२१६४-६६              | ८७१     | गृहीत्वा दक्षिणां          | १०१     |
| १११९०     | ८८२      | १२१६७                 | ८८०     | चंडालस्वात                 | ४७४     |
| १११९०-११  | ८३४      | १२१६९-७०              | ८८३     | जातदन्तेऽनुजाते            | ५०९     |
| १११९४     | ८४६      | १२१७१                 | ८९८     | ज्ञात्वा विषः सकृत्        | ८९९     |
| १११९५-१७  | ८४८      | १२१७२                 | ९३१     | ज्येष्ठो भ्राता यदा        | २३      |
| १११९८, १९ | ८४६      | १३१५०-५२              | ८९३     | ततः प्रक्षालय              | ४२२     |
| १११२०-२३  | ८४७      | १११५-८                | ९१८     | तत्र परमहंसा               | १८५     |
| १११२४-२६  | ८४७      | २११५१९                | ४४७     | तस्मिन्नाचमनं              | २६९     |
| १११२७-३७  | ९४१      | अस्मिकार्यपरिभ्रष्टाः | ५२      | तिथ्वः कोट्यर्थं           | १६९     |
| १११३८-४२  | ८४७      | अभिना भस्मना          | ४२७     | दग्धिं व्याधितं            | १५६     |
| १११४३     | ९०६      | अम्बौ करिष्य          | ८०२     | दिनत्रयेण शुद्ध्यति        | ४९६     |
| १११४९     | ८९९      | अतिथिं तत्र           | ४१३     | दुर्भिक्षे राष्ट्रसंधानौ   | ४८६     |
| १११५०     | ८९९      | अधिमासमृतानां         | ७२८     | द्वादशैवं तु               | १५२     |
| १११५१     | ८९९      | अपृष्ठा चैव           | ८४८     | द्वा इमौ पुरुषौ            | १३५     |
| १११५२     | ९३७      | अभावे तु सपिण्डानां   | ५६६     | धर्मविघ्नकरीं ( माधवीय )   | १५१     |
| १११५३     | ९३१      | अर्धसुक्के तु यो      | ४२९     | नदी वेगेन शुद्ध्येत        | ४७३     |
| १२१९      | २६५      | अवधूनोनि यः           | २२९     | निवापेन पितृन्             | १६५     |
| १२१२-३    | ८८०      | अवृता ह्यन            | ९७, ४११ | परिव्रज्या तु              | १७३     |
| १२१९-११   | २८९      | असमर्थोऽन्न           | ७५६     | पातके तु सहखं              | ८६०     |
| १२११६     | २२९      | आ चतुर्थांत् भवेत्    | ४९१     | पापं प्रख्यापयेत्          | ८७०     |
| १२१२०     | २७१      | आत्मानं वा वियुक्तीत  | ७७०     | पिण्डं प्रदीयते            | ६०२     |
| १२१२२     | ८०, ४८०  | आमं वा यदि            | ४४५     | पितुर्गतस्य देवत्वम्       | ६६९     |
| १२१२३     | २७१      | आयसेन तु              | ४३०     | पितृव्यपुञ्चः              | २३      |
| १२१२४     | २७०      | आवाहनक्रिया           | ६४९     | पुण्यतीर्थेनार्द्धशिरः     | ५५०     |
| १२१२५     | २६५      | आहितामिर्द्विजः       | ५७४     | पुञ्चः पौञ्चः प्रपौञ्चो वा | ५६०     |
| १२१२६     | २६९      | ऊढायाः पुनरुद्धाहो    | १३      | पुनर्दाहक्रियाः            | ६१७     |
| १२१२७     | २७१      | एकपादं चरेत्          | ८७५     | पूर्वाः क्रिया मध्यमाश्र   | ५६२     |
| १२१३२     | ६९       | एकपिण्डास्तु दायादाः  | ४९५     | प्रभासादीनि तीर्थानि       | २३६     |
| १२१४१     | २५७      | ऋतौ तु गर्भ           | २६५     | ब्राले देशान्तरस्थे        | ८८७     |
| १२१४३     | ८९८      | कामं कोर्धं तथा       | १८७     | बालैर्नकुल                 | ४३२     |
| १२१४७     | २६६      | कालोऽम्रिः कर्म मृद्  | ४६७     | ब्राह्मणानां प्रसूतौ       | ५००     |
| १२१५४     | ९०६      |                       |         | भास्करस्य करैः             | २७०     |

| ऋणिः                    | पृष्ठम् | ऋणिः                      | पृष्ठम् | ऋणिः                        | पृष्ठम् |
|-------------------------|---------|---------------------------|---------|-----------------------------|---------|
| <b>पराशारः</b>          |         | <b>पाञ्चरात्रम्</b>       |         | <b>पारस्करः</b>             |         |
| भुज्ञानेषु तु           | ८६४     | एकांतिनो महाभागा          | २९६     | ११७११                       | ८१      |
| मद्यमांसरतं             | ८८६     | <b>पाणिनीयस्मृतिः</b>     |         | ११७१४                       | ८२      |
| मर्त्यबुद्धिरुरी        | ३९५     | ८१२८३                     | ११२     | २४५।१६-१८                   | ९४      |
| मातृष्वसृगमे            | ८८७     | <b>पाण्ड्यकुलोदयः</b>     |         | ३१०                         | ६०३     |
| मासः कन्यागते           | ७३२     | स्थापिते सदसि             | १०      | ३१०।१६                      | ४९६     |
| मुख्जो यस्तु            | ९३०     | <b>पादम्</b>              |         | अन्तः सूतके                 | ५०३     |
| मृतसूतकमध्ये            | २७८     | अन्तरात्मा भवेत्          | ६६४     | अस्थिसंचयनाद्               | ५४३     |
| मृते भर्त्तरि           | १६१     | अस्थनां कृत्वाऽथ          | ६०९     | आशौचे वर्तमाने              | ५३७,६२८ |
| यतीनामातुराणां          | २०१     | आचम्य भस्मना              | ३०७     | आहितामेस्तु दहनात्          | ५३८,६२७ |
| यदि गर्भो विपद्येत      | ४९१     | आपो नारायणो देवः          | २८२     | उपनीतस्य पूर्णाघम्          | ५१९     |
| यदि गेहे न              | २७१     | ऊर्ध्वपुङ्गविहीनं         | ३०८     | ऐतैरारब्धपिण्डस्य           | ६२३     |
| यदि पत्न्यां प्रसूतायां | ५००     | ऊर्ध्वपुङ्गस्य माहात्म्यं | २९४     | गर्भे यदि विपत्तिः          | ५०५     |
| यस्तु वेदमधीयानः        | ९६      | एष मोहं सृजाम्याशु        | २९७     | गायत्रीं त्रिः              | ८०६     |
| यस्य छत्रं हयः          | ४१४     | कपालकेशभस्मास्थि          | ३०६     | गृहीत्वा प्रेतपाषाणं        | ६०३     |
| चानुधानप्रियो           | ७३२     | गृहे यस्य सदा             | २९४     | चतुर्थऽहनि                  | ६०७     |
| युक्तिछ्लेन             | ५१      | ततः स्वयं तु              | ४२०     | जीवन् जातो यादि             | ५०३     |
| रजकश्चर्मकारश्च         | ८०९     | तिलपूर्णं ताम्रपात्रं     | ४५      | तेऽपि कुर्युस्तु            | ६१८     |
| रजसा शृण्यते            | ४७५     | तर्थे तु ब्राह्मणं        | ७५९     | दत्तोऽपि न                  | ५२२     |
| रविणा लंघितो मासः       | ७२३     | देवालयसमीपस्थान्          | २८०     | दत्वा गन्धादि               | ८०९     |
| विष्णून्नभक्ष्य         | ११८     | धरामभ्यर्चितां            | ९२९     | द्विजातिः सूतिका या         | ४९३     |
| वृक्षवानशृगाला          | २६९     | न जीवन्तमिति              | ७२९     | द्विजाते सूत्रिका या        | ५०९     |
| वैतानं प्रक्षिपेदप्सु   | ४८९     | नैवेद्यपात्रं             | ३८८     | न ब्राह्मणेन कर्तव्यं       | ५६७     |
| व्यालग्राही यथा         | १६१     | पयसा पाचयेत्              | ७८४     | नाभिरुक्तनतः                | ५०६     |
| शूद्रालये वा            | ९०८     | पितुरेव पितुः             | ७१८     | निषेककाले                   | ७५५     |
| शूद्राहृत्स्तु नाचामेत् | २२४     | प्रतयोनिगतानां            | ८३३     | पुत्रस्यासनिधाने            | ६१६     |
| सदाचारस्य विप्रस्य      | ४४५     | बाणलिंगे स्वयं भूते       | ४२०     | पुत्रो भ्राताऽथ शिष्यो      | ६१८     |
| सन्ध्या स्नानं          | ३१२     | मद्रकः शंकरद्वेषी         | ३१०     | प्रथमे दिवसे देयाः          | ५९९     |
| सव्यादांसाद्भृष्टपटं    | २५३     | मध्यान्हव्यापिनी          | ८२८     | ब्राह्मणे दशपिण्डास्तु      | ६०९     |
| सीरखातप्रपातोयं         | ४७४     | मानुर्मृताहे संप्राप्ते   | ७२१     | या सप्तनीसुता               | ५२८     |
| सुतृमैस्तैरनु           | ८१६     | यस्यांतकाले               | ५४९     | संकल्प्य पितृदेवेभ्यः       | ८०७     |
| सूतकं मातुरेव           | ५०१     | संक्रान्त्यामुपवासेन      | ८४५     | सीमन्तोन्नयने               | ७५५     |
| सौरालाभे ततः            | ७०५     | सामिदादिहृतानां           | २९५     | हिरण्यं विश्वेभ्यो          | ८१४     |
| स्नाने नैमित्तिके       | २७८     | हिरण्यगर्भं               | ९२५     | <b>पारस्कर गृह्यसूत्रम्</b> |         |
| होमदेवार्चनायासु        | २५३     | श्रौतं वैखानसं            | २९५     | २१६।३२                      | २५३     |
| —                       | १३,१४६, | <b>पारस्करः</b>           |         | पाराशारः(see पराशार above)  |         |
| २६६,४९७,५०८,५५४,६९७,    |         |                           |         | ११३३                        | १३      |
| ९१९                     |         |                           |         | ७८ तंत्रनिष्ठुः शिवे        | २९६     |
|                         |         |                           |         |                             |         |

| ऋणिः                        | पृष्ठम्  | ऋणिः                    | पृष्ठम् | ऋणिः                     | पृष्ठम् |
|-----------------------------|----------|-------------------------|---------|--------------------------|---------|
| <b>पाराशारः</b>             |          | <b>ऋणिः</b>             |         | <b>ऋणिः</b>              |         |
| भस्मना वेदमंत्रेण           | ३०४      | उ॑ भूर्विन्यस्य         | ३३१     | तच्चैतेदेके              | ६५८     |
| मृदं मंत्रेणाभिमंत्र्य      | २९५      | गायत्र्यास्तु च्यः      | ३३४     | चांद्रात् सौराति         | ७२६     |
| विनिर्वर्त्य यदा            | ५४३      | चतुरश्रं ब्राह्मणस्य    | ४१८     | जीवापितृकस्य             | ७२९     |
| श्रुतिभ्रष्टः स्मृतिप्रोक्त | २९८      | दैवे कर्मणि पित्र्ये    | ७०२     | तत्त्वमासवृद्धौ          | ७२९     |
| श्रौतधर्मैक                 | ३०५      | द्वापारादियुगे          | २०३     | दृशाहान्तस्त्र्यह        | ५९९     |
| षड्ग्रात्रं स्यात्          | ४९५      | नक्षत्रज्योतिराभ्य      | ३१०     | दाहकस्तु स्वदेवं         | ६९७     |
| सपिण्डता तु                 | ४९७      | नैवेद्यं तुलसी          | ३१०     | दूरभार्ये प्रेते         | ५७७     |
| <b>पाराशारोपपुराणम्</b>     |          | पद्ममुद्रा सौरभेयी      | ३३३     | द्वादशायदिवसे            | ५९९     |
| श्रौतं लिंगं                | २९५      | पाणिना जलमादाय          | ३२०     | न द्वादशाहादौ            | ६९०     |
| <b>पारिज्ञातः</b>           |          | पात्राद्वा जलमादाय      | ३७७     | नित्यदार्शिकाभ्यां       | ६९४     |
| अग्नौ च गच्छन्              | २१३      | प्रणवस्य ऋणिः           | ३३८     | नैकथ्राद्वद्वयम्         | ६९४     |
| अन्वष्टकासु                 | ७१९      | बदूदकः स                | १८४     | पत्न्यादीनामन्येषां      | ६४०     |
| अपवित्रेण                   | ३०७      | मित्रस्येति तृचस्येह    | ३४४     | पित्रोभूताद्वे           | ५८८     |
| ईषन्नन्नः प्रभाते           | ३२०      | य एतन्नाभिजानाति        | ९१      | पित्रोस्तु पञ्चदशात्     | ६३१     |
| चण्डालादिहते                | ६६४      | शूद्रराज्येऽपि          | १०      | पुंसः स्त्रिया वा        | ६७९     |
| तर्जन्यंगुष्ठयोरयं          | २३३      | सविता देवता             | ३२६     | प्रथमषष्ठु               | ६५५     |
| तृणराजसमुत्पन्नैः           | २४३      | सूर्यश्चेत्यनुवाकेन     | ३१७     | प्राङ्मुखावुद्           | ७९४     |
| द्वूरे साम्रिः पतिः         | ५७४      | सोमयागादि               | ७३२     | प्रारब्धे केनचित्        | ६२४     |
| नान्तः प्रक्षालयेत्         | ७१२      | हंसस्तृतीयो             | १८४     | भुक्तिशिष्टमन्नं         | ६५०     |
| पितुर्नं नाम                | ६७४      | —                       | ३४४     | मातृमृताहे               | ७१८     |
| पित्रोः श्राद्धे समायाने    | ७१८      | <b>पितृगाथा</b>         | —       | मृतिजन्मनोर्दशाहे        | ५९२     |
| पुत्रो दूरगतः               | ५७५      | अपिनः स कुले            | ३८०     | यदि प्रेतकृत्य           | ६३२     |
| मासिकान्यसमा-               | ६५५      | एषव्या बहवः             | ६४६     | यदि शमशानासिः            | ६९१     |
| सदाचारेण देवत्वं            | ७        | कुलेऽस्माकं स           | ७५९     | यद्विप्रेभ्यो            | ७५६     |
| हस्ते हृतं तु               | ६४९, ६८६ | <b>पितृभेदसारः</b>      | —       | यद्यनेकेषान्             | ६३९     |
| <b>पिङ्गलः</b>              |          | अग्रेभिमिथ              | ५८१     | योषित्सु स्त्रावा        | ५८५     |
| जात उभयोः कृते              | ५०३      | अथोदकुम्भ               | ६००     | विधिवत्संस्कारे          | ६२६     |
| <b>पितामहः</b>              |          | अष्टोदकुम्भ             | ७४४     | १२श्वादिसापिण्डेऽपि      | ७१९     |
| अकृत्वा वपनं यस्तु          | २१५      | अष्टकास्वष्टौ           | ५८३     | संकटेष्वयुग्माहेषु       | ५९८     |
| अत्रिभूर्गुश्च              | ३२४      | आदित्याभिमुखः           | ५८४     | संघातानुमृत्योः          | ६३७     |
| अमावास्या व्यतीपात ७३६, ७४५ | ७३६, ७४५ | आनुपूर्व्यात् यथावृद्धं | ५८४     | सर्ववर्णानां मृताहात्    | ६४८     |
| अयाचित                      | २००      | आसमात्सैः प्राचीन       | ७९३     | साम्रिः कर्ता द्वादशाह   | ६६९     |
| आयात्वित्यनु                | ३२६      | आसुरादिविवाहे           | ६८१     | सिंहान्तं कृष्णपक्षस्य   | ७०६     |
| उभाभ्यां तोयमादाय           | ३१९      | उद्गृत्यावोक्ष          | ५८२     | सौरमास्येक               | ७०५     |
| एकादश्यां दिनक्षय           | ८४५      | एकोत्तरवृद्धिश्राद्ध    | ६९१     | स्नात्वा शक्तितो         | ६४२     |
| सूत्रं ज्ञात्वा तु          | ५१८      | कादलीजाति               | ७८२     | हिरण्यकलशनम्             | ६३८     |
| एवं जत्प्वा यथाशक्ति        | ३४३      | कृते दृशाहकृत्ये        | ६१९     | हुतशेषमिश्रैः            | ६७७     |
|                             |          | कृत्यस्कन्दने           | १९६     | — ५७८, ५७९, ५८७, ५९१,    |         |
|                             |          |                         |         | ५९४, ६१४, ६२०, ६४१, ७२६, |         |
|                             |          |                         |         | ७४९, ७९३.                |         |

| ऋणिः                    | पृष्ठम्  | ऋणिः                  | पृष्ठम्  | ऋणिः                  | पृष्ठम्       |
|-------------------------|----------|-----------------------|----------|-----------------------|---------------|
| पिपलादशाखा              |          | दिनत्रयमृते           | ८४४      | अलाभे विप्रकन्यायाः   | १३३           |
| सशिखं वपनं              | १८५      | वेदमूलतया             | ३००      | असमानार्थेयां         | १२५           |
| पुराणम्                 |          | पुरुषार्थवीधिः        |          | आद्यन्तावेव           | ६१२           |
| अतसी तुलसी              | ४३९      | विभूतिधारणविधिं       | ३०५      | आहितामिश्र्येत्       | ५३८, ५३९, ६२७ |
| अस्थयभावे पलाशोऽथैः     | ५३७, ६२९ | पुलस्त्यः             |          | उद्घोत सगोत्रां       | १२७           |
| आमं ददातु               | ७५६      | अयनद्विनये            | ७६१, ७३० | एकादशोऽहि             | ६३६, ६४७      |
| आसने चासनं              | ७९५      | इष्टद्वौतं नवं        | २५२      | एकोद्धिष्ठं हि        | ६६०           |
| उपमूलं सकृत्            | ७८८      | एकादश्यां न           | ८३८      | काकोलुकस्पर्शने       | २६७           |
| चतुर्दश्यष्टमी          | २८३      | ऋमः कामप्रदः          | ३५०      | गृहं गत्वा स्थिता     | ६०५           |
| जपेदायंतु               | ७९७      | कुटीचको बहूदश्य       | ६६३      | जनौ सपिण्डाः          | ४९९           |
| तत्प्रमानास्तप-         | ८०४      | कृत्वा तर्पणमेवं      | २५०      | ततो ब्राह्मणहस्तेषु   | ७९९           |
| तिथिनक्षत्रवरेषु        | २८५      | तेन द्रव्याण्यशेषाणि  | ३५३      | तृणपर्णोदके           | २४४           |
| दक्षिणं चरणं विप्रः     | ७७६      | दध्यादीनां विकागणां   | ३८७      | त्रिनितिय मातृतः      | १२८           |
| दिने दिने तु            | १९९      | डुर्मृतः सुमृतो वापि  | ६३७      | त्रिमधुखिसु           | ७७६           |
| देवालये तु परितः        | २१४      | पानसद्राक्ष           | ८८०      | दक्षिणामुखस्थीन्      | ५९८           |
| धर्मो मित्रं प्रसीतस्य  | ४६६      | पुण्यजातिषु           | ३८७      | दत्तकतिकृत्रिम        | ५२९           |
| पादशौचं विना            | ७८७      | पुष्ये च जन्मनक्षत्रे | २८०      | दत्ता कन्या           | ५१६           |
| पितरौ चेन्मृतौ          | ६२१      | भोजनं तु न            | ४३१      | दशरथे व्यतीते         | ६१९, ६२०      |
| पितृपक्षं प्रतीक्षिन्ते | ७२७      | मुन्यनं ब्राह्मणस्य   | ७८३      | धुवो धर्मश्च          | ३७८           |
| प्रातिवासरिको           | ८१९      | संध्यामिष्टि          | ३१४, ३७८ | नित्यानि तु निवर्तेन् | ४७९           |
| प्रापणेन महाविष्णोः     | ४४०      | सूतके च नरः           | ८८८      | पंचमी सप्तमी चैव      | ८२५           |
| यज्ञोपवीतं दातव्यं      | ७९१      | सूतके मृतके           | ३१८      | पक्षद्वयोऽपि          | ८२७           |
| यथा ब्रतस्थोऽपि         | ५५९      | पूर्णसंग्रहः          |          | पायसेन षण्मासानि      | ७८३           |
| ये कुर्वन्ति मही-       | ७२३      | एवं च भोजनं           | ६८२      | पितरौ चेन्मृतौ        | ५२३           |
| वांचं करीरं             | ७८४      | यद्यप्ते चैव गंगायां  | ८०       | पितृपाकात्            | ८१९           |
| विष्णुपूजाविहीनस्य      | ३९९      | महालयादिषु            | ७५१      | पितृपाकात् समुद्दृत्य | ४०७           |
| संबंधिनस्तथा            | ७७०      | --                    | १२९, ७१० | पितृमातृष्वसृ         | ९२७           |
| सूतके तु नरः            | ५४७      | पैठिनसिः              |          | प्रतिकृतिं कुशमर्थी   | २८६           |
| सेतौ कवेरकन्याया        | २५७      | अकृतचूडानां           | ५१०      | प्रवलीकृतधर्मस्य      | ३५६           |
| हुत्वावशिष्ट            | ८०२      | अभिरंगुष्ठतः          | २२६      | प्रशस्तशुद्धपात्रेषु  | ४१९           |
| पुराणसारम्              |          | अथ दत्तकृत            | ६८९      | प्रेतं मनसा           | ५१७           |
| अपि वा मातरं            | ८६५      | अथ दत्तकीत            | १२९      | पोषितधातृमरणे         | ५३६, ६२२, ६२३ |
| पापं यदि कृतं           | १६३      | अनभिमत उत्क्रान्ते    | ५३९      | ब्राह्मणान्सप्त       | ७७७           |
| पुराणान्तरम्            |          | अनूदकमूत्रपुरीष       | २९२      | भार्या भर्तुवैतं      | ८४८           |
| ईशानविष्णु              | ८०६      | अपसव्यं ततः           | ३७६      | मलमासमृतानां          | ७३१           |
| ऊर्ध्वपुंड्रं त्रिशूलं  | २९६      | अपुत्रायां मृतायां    | ६७०      | मातृष्वसृतत्सुत       | ५२७           |
|                         |          | अवाक्सपिण्डीकरणात्    | ६५२      | मृतानुगमनं            | १६२           |
|                         |          |                       |          | मौञ्जी मेखला          | ९५            |

| क्रिया:                 | पृष्ठम्  | क्रिया:                   | पृष्ठम् | क्रिया:                | पृष्ठम् |
|-------------------------|----------|---------------------------|---------|------------------------|---------|
| <b>पैठीनसिः</b>         |          | <b>प्रचेताः</b>           |         | <b>प्रचेताः</b>        |         |
| युग्मान्देवे यथाशक्तिः  | ७७७      | आपोशनकरा                  | ८०६     | मृमये पर्णपृष्ठे वा    | ४२०     |
| वसवः पितरो              | ७९३      | ईषद्घौतं नवं              | ९४,७९०  | मौजीबन्धदिने           | ९९      |
| विद्या तपोधिकानां       | ७९५      | उदकं पिंडानं च            | ६१६     | यज्ञीयवृक्ष            | ७९८     |
| विभक्तैस्तु पृथक्       | ७९८      | एकादशी विवृद्धा           | ८३८,८४३ | यः सायं वैश्य-         | ४१३     |
| विवाहकाले यज्ञोषु       | ८०१      | एकादशोऽन्हि               | ६६९     | ये अभिदग्धेति          | ८१२     |
| वृत्ताकनाक्तिका         | ८३४      | एकैकस्य तु                | ७९८     | वपनं कृत्वा            | ५९७,६१६ |
| शद्रुयाजकः              | ९०१      | एकोद्धिष्टं यते           | ६६३     | वस्त्रांतरितसंस्पर्शः  | २६६     |
| श्राद्धं निर्वर्त्य     | ४०७,४१९  | ओं कुरुष्वेत्य            | ६०९     | विहिते च वृषोत्सर्गे   | ६४६     |
| श्रौतस्मार्तक्रियाः     | ७३२      | कृतापसव्यः                | ७७६     | वृक्षारोहण             | ६६२     |
| षण्मासिकाब्दिक          | ६५३      | कृष्णमाषास्तिलाः          | ७८९     | वैश्वानरेण यत्किंचित्  | ३५३     |
| षोडशाशं स लभते          | २८६      | गोदूनं षोडशे              | ११९     | शिरःप्रभृति            | ७९७     |
| संक्रान्तिरहिते         | ७३३      | गोभूतिलहिरण्याज्य         | ५५२     | श्राद्धभुक् प्रातर्    | ७८०     |
| सपिंडिकरणं पुत्रः       | ६६८, ६८३ | गोशकून्मृत्यं             | ४१९     | षोडशानीह सर्वाणि       | ६५३     |
| सपिण्डीकरणात्           | ६५८      | ज्ञातयः सप्तमात्          | ६१६     | संगृद्याभ्युक्षणं      | ३५३     |
| सर्वपापप्रसक्तो         | ३५२      | ताम्बूलाभ्यञ्जने          | ४१९     | सर्वं प्रकृतं          | ८०४     |
| सर्वपापप्रसक्तोऽपि      | ९३३      | तृष्णि बुध्वाऽन्न         | ८१९     | सर्वं प्रेषयेत्        | ७७६     |
| सव्ये पाणौ शेषा         | २२६      | तैलमुद्रन्तं              | ७८७     | सार्षपं गन्धतैलं       | २८५     |
| सूतके सावित्र्यांजलि    | ४७८      | त्रिगुणं प्रदक्षिणा       | ९५      | सूतिका सर्ववर्णानां    | ४९३     |
| सूतके सावित्र्या        | ३१४      | त्रीण्येवोदपात्राणि       | ७९८     | खीशूद्धश्वपचश्चैव      | ७९      |
| सूतिकां पुत्रजननीं      | ४९३      | दंतच्छेदं हस्तपानं        | ८१०     | स्नानं प्रेतस्थ        | ५८०     |
| सौवर्णं राजतं           | ४२०      | दक्षिणाग्राश्य दर्भाः     | ६०९     | स्यादन्वपरि            | ७७८     |
| स्त्रीमुखं रतिसंसर्गे   | ४७५      | दर्भश्चैवासने             | ७९५     | हारीतमुद्ध--           | ७८३     |
| स्वशास्त्राध्ययनं       | ३६९      | दिने दिनेऽजलीन्           | ५९८     | —                      | ७३१     |
| — १२८, ४०७, ४१९, ५०९,   |          | न जपेत्पैतृकं             | ७५५     | <b>प्रजापतिः</b>       |         |
| ५२३, ६२०, ७३१,          |          | नदीकूलं ततो               | ५९७     | अग्निहोत्रफला          | २१      |
| <b>पैङ्कवः</b>          |          | न नमं तु दृहेत्           | ५८३     | अत्याहृतेषु दारेषु     | ५२१     |
| गर्भस्थे प्रेते         | ५१०      | न स्पृशेद्वाम             | ८०९     | अभिगच्छति              | ८९६     |
| जात उभयोः               | ५०४      | नान्तर्वासिसा बहिर्वासिसा | २२३     | अष्टोन्तरशतं           | ३४२     |
| <b>प्रचेताः</b>         |          | नावाहनामौ                 | ४०२     | अस्नात्वा तु           | ९०९     |
| अनुष्णाभिरकेनाभि        | २२३      | नाहरेदेकजाति              | ३५३     | आशौचे तु               | ८०      |
| अपरिज्ञाते अमावास्यायां | ६३२      | पीत्वापोशन                | ८०९     | आशौचे तु समुत्पन्ने    | ५३३     |
| अपरिज्ञातेर्मृताहे      | ६३२      | पूर्वांषे देविकं          | ७५४     | उदक्यायाः करेणान्नं    | ४२८     |
| अप्रदक्षिणम्            | ७९९      | प्रथमेऽहन्यमावास्या       | ६१३     | उपकम्यावशिष्टस्य       | २३५     |
| अमीमांसा बहिः           | ७        | प्रथमे पितृपात्रे         | ७९९     | क्षौमं वासः प्रशंसन्ति | २५२     |
| अलाबुताम्ब्रपात्रं      | २२४      | बहिस्तु प्राक्क्लेषु      | ७५६     | गोमयात् द्विगुणं       | ९४२     |
| असंस्कृतानां भूमौ       | ६०९      | भुक्तवत्सु ततो            | ८१८     | ग्रासमात्रं भवेत्      | ४०५     |
| आपोशानं प्रदायाथ        | ८०६      | मातृज्वसामातुलयो          | ५२५     | चतुर्दश्यामुपोष्याथ    | ९४२     |

| क्रषिः                  | पृष्ठम् | क्रषिः                 | पृष्ठम् | क्रषिः                       | पृष्ठम्  |
|-------------------------|---------|------------------------|---------|------------------------------|----------|
| प्रजापतिः               |         | मातुलस्य पितृव्यस्य    | ५८९     | बृहद्यमः                     |          |
| जलपूर्णं तथा            | ९१३     | यो भुक्त्वा पीठाद्     | ८१३     | उत्पलत्रयकंदं                | ४३५      |
| जले निधाय               | ९०९     | प्रलहादसंहिता          |         | मधुमांसं च योऽश्रीयात्       | ४४९      |
| तच्छवं केवलं            | ९२०     | शरीरं दद्यते यस्य      | ५८३     | मधु मांसं तु                 | ९१४      |
| दाहायैकादशा-            | ६६९     |                        |         | माता वा भगिनी                | ४२६      |
| द्विवर्षात्पाक्         | ९३६     | फलहः                   |         | मासिकादिषु                   | ४४९      |
| नवश्रादं दशाहान्तं      | ६६१     | शिरः प्रावृत्य कण्ठं   | २२३     | मासिकादिषु यो                | ९१४      |
| पालाशं पद्मपात्रं       | ९४२     | बृहूचम्                |         | बृहद्याज्ञवल्क्यः            |          |
| पुत्रं गृहीत्वा         | ९०३     | अपत्नीको               | २५      | कामादपि च                    | ८८०      |
| प्रमादात्कुर्वतां       | ३४१     | बृहूचपरिशिष्टम्        |         | बृहद्वसिष्ठः                 |          |
| प्रसूतिका तु            | २७७     |                        |         | एकादशी तथा                   | ८३१      |
| ब्राह्मैरानंत्यमाप्नोति | ३४३     | अथ पुत्रान्            | ९७९     | द्वादशी घटिका                | ८३८      |
| वैश्वदेवं बलिहृतिं      | ३९७     | अथ सकून्               | ९७८     | द्वितीया पंचमी               | ८२६      |
| शूद्राणां द्वादशाहे     | ६६६     | अथास्मै नाम            | ९८२     | द्वितीया पंचमी चैव           | ८५०      |
| शद्धधानस्य भोक्तव्यं    | ४४१     | अथास्य शिरसि           | ९८२     |                              |          |
| सपिण्डिकरणं             | ६६३     | अन्तर्धाय तृणैः        | ९९६     |                              |          |
| स्वधर्मस्य परित्यागी    | ५१      | जननाद्वाशरात्रे        | ८१      | बृहद्विष्णुः                 |          |
| —                       | ५२४     | धीपूर्वं रेते          | ९९९     | अभोज्यानां च                 | ८६६      |
| प्रत्यवायस्मृतिः        |         | पतत्यसौ ध्रुवं         | २०८     | ब्रह्महत्यां कृत्वा          | ९३४      |
| अप्रिकार्यपरिभ्रष्टः    | ३७२     | पवित्रं विष्णुनैवेयं   | ३९०     | पितुर्मरणमारभ्य              | ६७५      |
| प्रदीपिका               |         | प्राङ्मुखस्तिष्ठन्     | ९७९     | ब्राह्मणो ब्राह्मणोऽच्छिष्टः | ४३१      |
| जले मध्ये यदा           | २५०     | मुमुक्षुरात्म          | ९७६     | संस्कृत्य वन्हौ              | ५८५      |
| निशायां तु              | ३५८     | —                      | ९९३     | बृहन्निरुक्तः                |          |
| संहतांगुलिना तोयं       | २२१     | बृहूचब्राह्मणम्        |         | पाद्यं चैव                   | ७९२      |
| प्रपञ्चसारः             |         | द्वादशमासाः पंचतर्वः   | ७००     | बृहन्मनुः                    |          |
| काननवृत्त               | ३२२     | पर्वण्यपत्त्यपर        | ३५५     | आषाढीमवधीं                   | ३८१, ७४६ |
| प्रभासखण्डम्            |         | —                      | ४८      | एकादशोऽन्हि                  | ६४८      |
| सा शुद्धा स्यात्        | ७१५     | बादरायणः               |         | चत्वारीमानि कर्मणि           | २०९      |
| प्रयोगक्रमः             |         | चण्डालोदकसपर्यैः       | ४९०     | जीवन् जातो यदि               | ५०५      |
| पादौ हस्तौ च            | ३२०     | पार्श्वयोः संस्थितौ    | ९४६ ५५७ | दशाहाभ्यन्तरे                | ५०३, ५०५ |
| प्रयोगपारिज्ञातः        |         | बाह्यस्पत्यम्          |         | देशनामनदी                    | ५२३      |
| ऊनानां नापकर्षः         | ६५७     | मातुलानां पितृव्याणां  | ५८९     | यस्यामस्तं रविः              | ७०९      |
| न विवाहोपनयने           | ९९      | यस्मिन्मासेन संकान्तिः | ७२५     | रेवत्यादिषु क्रक्षेषु        | ७४८      |
| प्राङ्मुख उपवीती        | २४८     | बृहत्प्रचेताः          |         | —                            | ५०५      |
| प्रयोगसारः              |         | मुहूर्तं जीवितो        | ५०५     | बृहस्पतिः                    |          |
| पितुरेव पितुः           | ७१८     | एतमेव प्रव्राजिनौ      | ९७६     | ९५१३                         | ४७       |

| ऋषिः                     | पृष्ठम् | ऋषिः                    | पृष्ठम्  | ऋषिः                  | पृष्ठम् |
|--------------------------|---------|-------------------------|----------|-----------------------|---------|
| बृहस्पतिः                |         | बृहस्पतिः               |          | बृहस्पतिः             |         |
| अंत्यत्रिभागः            | ६६६     | जन्मतः पंचमं            | ५०२      | बध्वासनं नियम्या      | ३२३     |
| अकृते प्राप्तकाले        | ६६६     | जातमात्रे मृते          | ५०३, ५१० | बन्धानमोक्ष           | २०५     |
| अग्न्यगारे गवां          | ४२६     | जाते मृते मृते          | ५०३      | बहीनामेकपत्नीनां      | ५६५     |
| अज्ञातो हि मृताहः        | ६३१     | ज्ञातयो बान्धवाः        | ८१४      | बाले वा यदि           | ७३४     |
| अतीतान्न स्मरेत्         | १७२     | तां निशां ब्रह्मचारी    | ८२०      | ब्राह्मणस्याजिनं      | ९४      |
| अतोयं सात्विकं           | ४३      | तीर्थे विवाहे           | २८०      | भक्ष्यभोज्यगुणान्     | ८०४     |
| अधो वायुसमुत्सर्गे       | २३६     | त्रिंशद्वूर्षो दशाब्दां | १२५      | भाजनेषु च             | ८१८     |
| अन्तर्दशाहे दृशः         | ६१४     | त्रिरात्रेण विशुद्धयेत् | ५१८      | भिन्नोदराणां          | ५२२     |
| अन्यदेशगता               | ८१७     | त्यहं मातामहा—          | ५२५      | मुञ्जानस्य तु         | २१९     |
| अन्यदेशे मृतं            | ५६४     | दशाहेन सपिण्डास्तु      | ४९६, ५१८ | मध्यान्ताद्या त्वया   | ७३९     |
| अभावे स्नातकानां         | ७६८     | दानं यज्ञः सतां         | ३        | महानद्यन्तरं          | ५२३     |
| अमावास्या कलामात्रं      | ७४१     | दिनमासौ न विज्ञातौ      | ६३२      | मातापित्रोमृति        | ५५३     |
| अयने विंशतिः             | २७४     | दिवा निद्रां परान्नं    | ८५०      | मार्जारमूषकस्पर्शे    | ४२९     |
| अरण्येऽनुदके रात्रौ      | २४०     | द्वादशाहादि             | ६६५      | मार्जालमूषिकस्पर्शे   | २६८     |
| अवकीर्णिग्रतं            | ९८      | द्वौ शुक्लौ द्वौ        | ७१२      | मासिकाब्दिक           | ७०४     |
| आशौचे वर्तमाने           | ५३६     | न तीर्थवासी             | ११०      | मासे संवत्सरे         | ७०३     |
| उद्भाव्यते दाक्षिणात्यैः | १३०     | नवमे वाससां             | ६०६      | य एवं वेत्ति          | ८२२     |
| उपकाराय यो               | ४६५     | नवश्राद्धस्य            | ४३१      | यथा विद्या यथा        | ४६५     |
| उपवीती ततो               | ७७६     | नष्टं शौचे              | ४११      | यदा मासो तु           | ६३१     |
| ऋतुकालाभिगमनं            | ७४      | नित्यैनैमित्तिके        | ७३३      | यद्येकं भोजयेत्       | ७६५     |
| ऋणिं छंदो                | ३२६     | नियोगमुक्त्वा           | १०२      | यस्तैः सह सपिण्डोऽपि  | ५४०     |
| एकशत्यासनं               | ८९८     | नैष्ठिकानां वनस्थानां   | ४८१      | यस्य न श्रूयते        | ६३०     |
| एकस्मिन्दिवसे            | १०६     | नोच्छिष्टं ग्राहयेत्    | ४२७      | यो हि हित्वा          | ९०६     |
| एकादशाहे यच्छाद्वाद्वं   | ६४७     | पंचशाद्विसात्           | ८३       | वायव्यं गोरज          | २९९     |
| एकादशोऽहि                | ६२४     | पतितात्यश्वपाकैश्च      | २७८      | विवाहोत्सव            | ४८४     |
| एकैकमथ वा                | ७७७     | परे वा बंधुवर्गे        | ७३       | विषोद्धनश्वेण         | ४८९     |
| एवं दंडादिभिः            | १०४     | पर्णपृष्ठे न भुजीयात्   | ४३०      | विषोद्धन              | ३२०     |
| कांक्षिति पितरः          | ६४६     | पाणिग्रहणका             | ६८१      | विहितस्यानु-          | ८५९     |
| कार्पासिकं सदा           | ९०      | पादौ शुची ब्राह्मणानां  | ४७५      | शखेणाभिमुखो           | ४८७     |
| कुसीदं कृषिवाणिज्यं      | ६२      | पितुर्गृहे तु           | १३६      | शान्तिं कृत्वा        | ३४      |
| कृते यदद्वद्धर्मः        | १३      | पित्रोर्मृतौ तदारभ्य    | ५१३      | शावाशौचं तु           | ५००     |
| कृष्णपक्षः शुभः          | ६३४     | पित्रा प्रमादतो         | ८८०      | शिल्पिनः कारवौ        | ४८६     |
| कृतुर्द्धक्षो वस्तुः     | ७९३     | पौत्रश्र पुत्रिकापुत्रः | ५६१      | शुक्रवर्गा विवर्ज्याः | ५८७     |
| सादितार्थं पूनः          | ४२५     | प्रख्यातदोषः            | ९३२      | शौर्यवीर्यार्थं       | ४       |
| गर्भाधानमृतौ             | ७८      | प्रचरन्नपानेषु          | २४०      | श्रोत्रिये चैव        | ४९      |
| गौडो मार्घी              | ८७९     | प्रमीतस्य पितुः         | ५६१, ५६७ | श्वशूद्रपतितांश्चैव   | २३६     |
| च चार्वाकतर्पणात्        | ३६७     | प्रस्थथान्यचतुःष्ठे     | ३६२      | संसारमेव              | ९७३     |
| चतुर्थीगणनाथस्य          | ८३१     |                         |          | सद्यो गृहीत           | ९५९     |

| ऋणिः                | पृष्ठम् | ऋणिः       | पृष्ठम्  | ऋणिः        | पृष्ठम् |
|---------------------|---------|------------|----------|-------------|---------|
| बृहस्पतिः           |         | बौधायनः    |          | बौधायनः     |         |
| सन्ध्याऽभिकार्यं    | १२०     | १५।११-१२   | २२५      | २।१।४३-४४   | ८६६     |
| सपिण्डीकरणं पित्रोः | ६२१     | १५।१७-२२   | १३१      | २।१।४४-४५   | ९००     |
| समभ्यच्छ्योद-       | ८१७     | १५।१८      | २२२      | २।१।४६-४८   | ९०९     |
| सायंप्रातस्तनौ      | ३५९     | १५।१९      | २३८      | २।१।४९-५१   | ९५४     |
| सायमाद्यन्तयोः      | ८५०     | १५।२०      | २३९      | २।१।५३      | ६९      |
| सूतके मृतके         | ३५६     | १५।२२-२४   | २३९      | २।१।६२      | २८, १५४ |
| सूतके मृतके चैव     | ४७९     | १५।४६      | २२०      | २।२।१       | १६६     |
| सूर्यादिवासरे       | ७६४     | १५।४६, ४८  | ४६७      | २।२।२९-३२   | १२२     |
| स्त्रियाः शुक्रे    | ७५      | १५।४७      | २१८      | २।२।५१      | १५१     |
| स्वेन भर्त्रा समं   | ७१९     | १५।५८-५९   | ४७१      | २।३।११-१८   | ४०९     |
| बृहस्पतिस्मृतिः     |         | १५।६८      | २१२      | २।३।२८-३१   | ४६४     |
| बृद्धो च माता       | ५६      | १५।७४      | २३६      | २।३।४०      | ४६४     |
| बैजावापः            |         | १५।७५      | ३४१      | २।३।६०      | ४११     |
| कीर्त्ति पितृणां    | ७९८     | १५।८२      | १९       | २।३।६१-६२   | ४०९     |
| खादिरौडुम्बर        | ७८९     | १५।८५      | ६४       | २।४।५-१०    | ३३७     |
| तस्योपरि कुशान्     | ६००     | १५।८७      | ४६६      | २।४।५       | ३४४     |
| बौधायनः             |         | १५।८९      | २३८      | २।४।७       | ३३९     |
| १।१।५               | ३       | १५।९१      | ४९४, ५३३ | २।४।९-१०    | ३४४     |
| १।१।९८-१९           | ४२६     | १५।९०२     | ४९६      | २।४।१६      | ३१४     |
| १।१।२३-२४           | १३१     | १५।९०४     | ६५       | २।४।१८      | ९३२     |
| १।१।२९              | ९०४     | १५।९०५-९०६ | ५३०      | २।४।१९-२४   | ३४४     |
| १।१।२९-३१           | ९०      | १५।९१६     | ४९९      | २।५।५-६     | ८७      |
| १।१।३०              | ९०४     | १५।९२३     | ५२५      | २।५।१४      | ३३८     |
| १।२।१-६             | ९९९     | १५।९२६     | ९०५      | २।६।२९      | १६७     |
| १।२।६               | ९९      | १५।९२३     | ९०४      | २।६।५८-५९   | १६      |
| १।२।९३-१४           | ९५      | १६।३३-३४   | ३२       | २।७।२-४, ६  | ४२१     |
| १।२।१६              | ९३      | १६।४७      | ४७०      | २।७।३       | ४२४     |
| १।२।२७-२८           | ९९९     | १९।१९-१७   | ४६८      | २।७।५       | ४३२     |
| १।२।३९-३४           | ९०८     | १९।१९      | १४२      | २।७।७-८     | ४२५     |
| १।२।४२-४३           | ३९      | १९।४१      | ३७८      | २।७।९-१४    | ४५२     |
| १।२।४६              | ९९०     | २।१।७      | ६०७, ६०८ | २।७।१२-१४   | ४२४     |
| १।२।४९-५०           | ३१      | २।१।२८-२९  | ८९९      | २।७।११      | ४०९     |
| १।२।५२-५४           | ९८      | २।१।२९-३१  | ८९२      | २।८         | ४००     |
| १।३।२-६             | ९२३     | २।१।३८     | ९०२      | २।८।१११६    | ४२५     |
| १।४।२३              | ४७४     | २।१।३९     | १५३, ९०३ | २।९।०।२-७   | १७२     |
| १।५।९               | २१५     | २।१।४७     | ८६३, ९०० | २।९।०।१४-२७ | १७८     |
| १।५, ९, १०, १४, १५, | २२३     | २।१।४२     | ९००      | २।९।०।४६-५० | २०३     |

| ऋणिः<br>बौधायनः       | पृष्ठम् | ऋणिः<br>बौधायनः         | पृष्ठम् | ऋणिः<br>बौधायनः       | पृष्ठम् |
|-----------------------|---------|-------------------------|---------|-----------------------|---------|
| २१०५४                 | २००     | अथ वृषोत्सर्जनम्        | ६४५     | उपरिष्टान्माध्याः     | ७४५     |
| २१४                   | ३८६     | अथ संवत्सरे पूर्णे      | ६६४     | उपलिप्ते समस्थाने     | ८१८     |
| २१७                   | ३९२     | अथाम्बयोऽथ              | ५८१     | उपाकर्मस्त्यन्ये      | ६९२     |
| ३२१६                  | १८०     | अथाम्बर्विपत्तिं        | ३६५     | उषःकाले समुत्थाय      | १८७     |
| ३३१५९                 | २५३     | अथातो द्विजातीनां       | ३०१     | ऋतुस्नातां तु         | ७६      |
| ३११४                  | ९३४     | अथातो विभूति-           | ३०२     | ऋतौ न गच्छेत्         | ८९३     |
| ३१०११९                | ३४८     | अथादित्यम्              | ३६७     | एक एव ऋणिः            | १२६     |
| ३१७११९                | ६४७     | अथान्तर्वेदि            | १८०     | एकाम्ब्रेखिविधं       | ३६४     |
| ३३५                   | १७२     | अथास्य भार्याः          | ५८१,५८४ | एकोद्विष्टान्त एव     | ६१८,६५० |
| ४१११२                 | १३५,१३६ | अथैकोद्विष्टे           | ६४९     | एतस्मिन् काले         | ५८१,५८८ |
| ४१११३—१६              | १३६     | अथैकोद्विष्टेषु         | ६४९     | एष एव व्यञ्जनानां     | ४००     |
| ४१३१२—५               | २२७     | अथोपनीतस्य              | ११७     | ओदूनं तु              | ४३८     |
| ४१३१६                 | ३९५     | अनाश्रमी चतुरः          | १७७     | कक्कुटाण्डप्रमाणं     | ६०२     |
| ४१४१७                 | ३४८     | अन्नाभावे द्विजाभावे    | ७९      | कमण्डलुद्विजातीनां    | १३९     |
| ४१५१६                 | ९३५     | अपराणहृष्य              | ७१२     | कार्तिक्यां वैशाख्यां | ७२८     |
| ४१५१७                 | ९३६     | अपोवगाहनं स्नानं        | २५४     | कुटीचकस्तु            | १८३     |
| ४१५१८                 | ९३७     | अप्रत्तासु च            | ५१६     | कृत्वा तु पञ्च        | ५४४     |
| ४१५१९                 | ९३७     | अमत्या वारुणीं          | ११७     | केशानोष्य ततः         | ५१७     |
| ४१५१०                 | ९३७     | अयुग्मान् ब्राह्मणान्   | ७१५     | कोकिलस्य यथा          | ६८०     |
| ४१५११                 | ९३७     | अयोवर्णोदके             | २५८     | क्षत्रविद्युद्ग्र     | ४९५     |
| ४१६१४, ३              | ३४९     | अरणि रुणमार्जरं         | ३६७     | क्षुरकर्मपूर्वकत्वात् | ५८६     |
| ११५१०                 | २६२     | अष्टम्यां च             | २८३     | घटिकैकाष्य            | ७३९     |
| १६१३४—३८              | ४६८     | अस्थीनि यद्यलव्यानि     | ५७४     | चतुर्दशी चतुर्यामे    | ८५६     |
| २३—६१                 | ४४      | आचमने चामि              | ७९३     | चतुर्दशी तु संपूर्णा  | ८५६     |
| अङ्कुरं च प्रतिसरं    | १४९     | आत्मास्त्रो निमज्जेद्वा | ३६५     | चतुर्वेदस्य चत्वारि   | ९२      |
| अंगारान् भस्म         | ३९८     | आदीत मृदोऽपश्य          | २१९     | चत्वारि वेदवतानि      | ११७     |
| अम्बये स्वाहेत्यादि   | ४०३     | आदिशेत्पथमे             | ६८०     | जघन्ये रात्रिपर्याये  | ४५८     |
| अघमर्षणं देव          | ९३५     | आमश्राद्धे तु           | ४४९     | जलावगाहनं             | २९०     |
| अचोदितेन पाकेन        | २४      | आम्रं च शृंगिवेरं       | ४३९     | जातकर्मादिसंस्कारे    | १००     |
| अत ऊर्ध्वं पतित       | ८९      | आऽवाक् त्रिरात्रादय     | ३६४     | ततो मध्यान्हसमये      | २५४     |
| अथ गर्भिण्यन्तर्वत्ती | ६४४     | आसनं शयनं               | ४७६     | तदभावे रहस्य          | ७६९     |
| अथ चेदौपासना          | १४९     | आहिताभिमाभिभिः          | ५६८     | तेषां ग्रहणे          | ३९९     |
| अथ निवीति             | ५८१     | इष्टापूर्तानि कर्मणि    | ३५१     | त्रिमधुस्त्रिणा       | ७६६     |
| अथ ब्राह्मे मुहूर्ते  | १७९     | इष्टेरलं प्रतिपदो       | ८५७     | त्रिवर्षाद्युदकं      | ५१३     |
| अथ यज्ञोपवीतं         | १७९     | उक्तयोः कालयोः          | ३५८     | त्रिषु वर्णेषु        | ७२      |
| अथ यदि यदि            | ५७६     | उत्तरापोशना             | ८१२     | त्रीणि पितृणां        | ७९८     |
| अथ यद्युपनय-          | १४९     | उत्थाय नेत्रे प्रक्षालय | २४०     | दध्याज्यतण्डुल        | ५८३     |
| अथ यद्युप             | ६१०     | उद्धोनोदके              | १०      |                       |         |

| ऋणिः                  | पृष्ठम्  | ऋणिः                     | पृष्ठम् | ऋणिः                     | पृष्ठम् |
|-----------------------|----------|--------------------------|---------|--------------------------|---------|
| बौधायनः               |          | बौधायनः                  |         | बौधायनः                  |         |
| दास्त्रचितिं          | ५८३      | ग्रियमाणस्य चेत्         | ५७७     | सर्वत एव सहसा            | ५८४     |
| दैवं चैवार्षकं        | १७७      | यज्ञोपवीतं प्रति         | ११      | सर्वत्र एव सहसा          | ५८२     |
| द्वितीया त्रिमुहूर्ता | ८५७      | यत्तु द्वादशाहे          | ६६७     | सर्वसंगनिवृत्तस्य        | ५४६     |
| द्व्यार्षेयसंनिपाते   | १२६      | यदा चतुर्दशीयाम्         | ८५७     | सर्वोपकरणैः              | ६७७     |
| धर्मशास्त्ररथा        | ३        | यद्यनव्याय               | ३९      | सायंप्रातः संध्योः       | ३७      |
| न च माता न च          | ५६६      | यवीयान्यवीयान्           | ५८४     | सूतकं मातुरेव            | ५०९     |
| न जीवपितृकः           | ३७८      | यस्तु पाणिगृहीताया       | ७६      | स्वसूत्रेऽविद्यमाने      | ६५०     |
| निशि कृष्णे च         | ५५६      | यस्मिन्काले विरोधो       | १४८     | स्वाध्यायिनं कुले        | ८७४     |
| पंथा देयो ब्राह्मणाय  | १०७      | यस्मिन्नप्तौ कर्म        | ३०४     | हंसः कमण्डलुं            | १८४     |
| पादेन पादमाकस्य       | ८०९      | यस्य नित्यानि            | २१      | — २५, १०९, १०३, १८५,     |         |
| प्रदक्षिणं तु         | ७९४, ७९५ | योनिगोत्रसंबंधानां       | ७७०     | ३०९, ३१३, ३४८, ४४९, ४७५, |         |
| पुरुषसंस्मितं         | ६०९      | रजस्वला तु भुजाना        | २७८     | ५६९, ५७३, ५७६, ५७८, ५९९, |         |
| प्रजामुत्पादयेत्      | ५५७      | रजस्वला तु संस्पृष्टा    | २७८     | ६२७, ६६०, ७०९, ८०९, ८०६, |         |
| प्रणवव्याहृति         | ४८४      | वत्सरान्ते ततः           | ६६४     | ८१२, ८५६, ८५८.           |         |
| प्रवासं गच्छतो        | ४०५      | वपनं मेखलादण्डौ          | ६३३     | बौधायनगृह्यम्            |         |
| प्राचीनावीतिना        | ५७९      | वर्धमानस्य पक्षस्य       | ८२६     | — १४९, १५०               |         |
| प्रायश्चित्तैरप       | ४७४      | वर्षे वर्षे तु           | ६६०     | बौधायनगृह्यसूत्रम्       |         |
| प्रेताहुत्यनंतरं      | ५८०      | वाग्दत्ता मनोदत्ता       | १३७     | २६१। १७-२१               | ३५४     |
| फालकृष्णेनले          | २९३      | विधवाविधुराप्तौ          | ५६९     | २। २। १९-२               | ३९४     |
| बालान् मृतान्         | ५१३      | विधिर्योज्जुष्टिः        | १३९     | २। २। २। ८               | ३९४     |
| ब्रह्मचारिणः शवकर्मणो | ५५८      | विरमेद ब्राह्मणे         | ३४०     | ७। ९। ७                  | ३९४     |
| ब्राह्मणकन्यक्या      | ९२       | विश्वेदेवाः शृणुत        | ७। ९। ७ | ५। ४                     | २५३     |
| ब्राह्मणक्षत्रिय      | २०१      | वृक्षमूलिको              | १९८     | बौधायनगृह्यशेषसूत्रम्    |         |
| भर्तृहिते यत्मानाः    | १५१      | वेदविद्याव्रत            | ९०५     | ५। ४                     | २६२     |
| भवति भिक्षां देहि     | ९५       | वेदानां किंचित्          | ४९      | बौधायनधर्मसूत्रम्        |         |
| भिक्षां न दद्युः      | २०२      | ब्रीहीणां वा यवानां      | ३६२     | २। ८। १-२                | ३१७     |
| भिक्षापत्र            | २०२      | शमान्तं ब्राह्मणस्योक्तं | ६८२     | २। ८। १-२                | ३१७     |
| भूमौ दर्भास्तृतायां   | ५५२      | शौचे यत्नः सदा कार्या    | २२०     | २। ५। १६-३१              | ३७८     |
| भोजने हृवने           | २३७      | शौणितशुक्रसंभवो          | १०३     | २। १। ०। ४२, ४४, ५०      | २००     |
| मन्त्रेणैव द्विराचम्य | ४१८      | श्रान्तोऽदृष्टपूर्वः     | ४१२     | बौधायनस्मृतिः            |         |
| मधुत्रयेण             | ६७६      | श्वः करिष्यामीनि         | ७८७     | सद्येन गो शक्त्          | ३०२     |
| मध्यान्हव्यापिनी      | ८२८      | संक्रमेऽन्नद्विजाभावे    | ७। १७   | ब्रह्मकैर्वर्तम्         |         |
| मध्यान्हात्परतो       | ७३९, ८५८ | संवत्सरे मातरि           | ६०७     | ६०७                      |         |
| मरणादिविषमेषु         | ६०५      | संवत्सरे सपिण्डीकरणं     | ६६४     | अर्धरात्रे तु            | ८३९     |
| मातृदुहितृस्तुषा      | ९३५      | संस्कार्यश्च पिता        | ५६६     | गयाशीर्षे यदा            | ७५९     |
| मिथ्याभिःसन्ते        | ८९९      | सच्चैला दक्षिणाभिमुखाः   | ५८५     | चतस्रो घटिकाः            | ८४०     |
| मुण्डः काषायवासा      | १८८      | सन्ध्ययोरुभयोः           | ३४१     | तिर्यग्भस्ममृदं          | ३०७     |
| मेहकांचन              | ४५५      | सप्तम्यां रविवारे        | ३७७     | त्रयोदशी प्रकर्त्तव्या   | ८५०     |

| क्रमिः                    | पृष्ठम् | क्रमिः                     | पृष्ठम् | क्रमिः                     | पृष्ठम् |
|---------------------------|---------|----------------------------|---------|----------------------------|---------|
| ब्रह्मकैवर्तम्            |         | महापातकयुक्तोऽपि           | ३५२     | कर्ता नोपवसेत्             | ८४९     |
| धार्यं भस्म               | ३०५     | ये पूर्वं पूजिता           | ४९      | जपादिकुसुमं                | ७९०     |
| प्रतिपत्पञ्चमी            | ८२६     | स्नानं स्यादुपरागादौ       | २७३     | ब्रयाणामाश्रमाणां          | ६६३     |
| प्राप्ते हरिदिने          | ८४९     | <b>ब्रह्मसिद्धान्तः</b>    |         | त्रिपुण्ड्रं शूद्रकल्पानां | ३०६     |
| ब्रह्माण्डघट              | ९२६     | अमावास्या परिच्छिन्नो      | ६९९     | देशो काले च                | ७५७     |
| भूतविद्वा न कर्तव्या      | ८५३     | चान्द्रमासो द्यसंकान्तौ    | ७२३     | नमाद्यो न                  | ७८६     |
| मुण्डान् जटिल             | ७६८     | चान्द्रसावन                | ७०९     | नभस्यरुण्णपक्षे            | ७४६     |
| रंभाख्यां वर्जयित्वा      | ८३१     | चान्द्रः शुक्लादिदर्शान्तः | ६९९     | निराशो नित्यभुक्           | ८०८     |
| सर्वपापयुतो               | ९३४     | चैत्रादर्वाक्              | ७२६     | पात्राभावे द्विजः          | ८४९     |
| सर्वेष्वेवोप              | ८३५     | तिथिरेकगुणा प्रोक्ता       | २८४     | प्रक्षाल्य हस्तपात्रादि    | ८०३     |
| हिरण्याश्वं द्विजो        | ९२८     | मासत्रये त्रिंशदूर्ध्वं    | ७२५     | महिषीं वत्ससंयुक्तां       | ४५      |
| हिरण्याश्वरथं             | ९२८     | यावान्कालः                 | २७३     | मृत्तिकाचंदनं भस्म         | २९५     |
| <b>ब्रह्मपुराणम्</b>      |         | शुद्धा विद्वा दशम्या       | ८४९     | यतिखिदण्डी                 | ७८८     |
| अनाहितामेमरणात्           | ५३९     | <b>ब्रह्मा</b>             |         | शिखिभ्यो धातु              | ७६७     |
| अनाहितामेः                | ६०८     | अथातो दर्शयेत्             | ३३१     | शुक्लाः सुमनसः             | ७८९     |
| अध्याः पुष्टैश्च          | ७९९     | ऋगंते मार्जनं              | ३१६     | श्राद्धं करिष्य            | ७९६     |
| अलाभे ध्यानि              | ७६७     | कृत्वा चैवाक्षर            | ३२९     | श्राद्धभूदक्षिणां          | ८१४     |
| अस्थीनि माता              | ६०९     | गायत्र्या न परं            | ३३५     | श्राद्धाहृण्णयोगेऽपि       | ७७५     |
| उपमर्दे लक्षणुणं          | २७३     | दक्षिणांगुष्ठमारभ्य        | ३३०     | श्रवेतचन्दनं               | ७९०     |
| गोदावरी भीमरथी            | २८७     | धाराच्युतेन                | ३१६     | सर्वेषामेव                 | ७८६     |
| ग्रामाद्विः शुचौ          | ६०१     | नद्यां तीर्थे हृदे         | ३१६     | हविषामथ पक्वानां           | ७८७     |
| तप्तमुद्रा त्वंत्यजाय     | २९१     | भुवि मूर्धि तथाकाशे        | २९१     | हिरण्यहस्तिनं              | ९२८     |
| दाहाद्यशौचं विज्ञेयं      | ५३९     | मन्त्रपूतं जलं             | ३१६     | --                         | २६७     |
| दुर्भिक्षे प्राणरक्षार्थं | ८०६     | मातर्यपि च वृत्तायां       | ६७३     | <b>ब्राह्मम्</b>           |         |
| नामगोत्रे समुच्चार्यं     | ५९८     | संमुखं संहतौ               | ३३२     | अकालमृत्योः                | ८००     |
| प्रतिपद्येक               | ८२८     | चापं गते दिवानाथे          | ३११     | अनाथं ब्राह्मणं            | ५४६     |
| प्रेतयोनिगतानां           | ८३५     | सेत्वादिपुण्य              | ९८४     | अनाथं ब्राह्मणं दग्धवा     | ५६७     |
| ब्राह्मणार्थं गवार्थं     | ८८७     | <b>ब्रह्माण्डपुराणम्</b>   |         | अस्थीन्यादाय               | ६०९     |
| यद्वा शताङ्गलीन्          | ५९८     | पृ. १७९-पं. १०             | २३१     | तावद् गृहीत                | ८८२     |
| वैशाखशुक्ल                | ७६१     | अनापद्यपि                  | ५६      | प्रमादादेव निःशङ्कं        | ८८८     |
| शृङ्गिदंशिनिः             | ८८७     | अन्नं पश्येयुः             | ७८६     | ब्राह्मणी क्षत्रिया        | ५०९     |
| षण्ठो मूकश्च              | ७७०     | अशौचं जायते                | २७२     | मृते पितरि यस्याथ          | ६७१     |
| संपूज्य विधिवत्           | ८४९     | अस्मान् वृणीष्व            | ७७५     | विवाहकाले कन्यायाः         | ८८३     |
| सपिण्डता तु               | ८९८     | आपोशनं न                   | ८०६     | शौचाशौचं                   | ८९६     |
| <b>ब्रह्मरातनम्</b>       |         | आषाढ्याः पंचमे             | ७४८     | <b>ब्राह्मणः</b>           |         |
| ब्राह्मणस्योर्ध्वपुण्ड्रं | ३०६     | आसनास्त्रः                 | ७८५     |                            |         |
| <b>ब्रह्मवैवर्तम्</b>     |         | कल्पवुण्ड्रप्रमाणानि       | २९३     | तमसो वा एष                 | ६९२     |
| कावेरतिरिवासी             | ६०९     |                            |         |                            |         |

| ऋणिः                 | पृष्ठम्       | ऋणिः                     | पृष्ठम्  | ऋणिः                     | पृष्ठम्  |
|----------------------|---------------|--------------------------|----------|--------------------------|----------|
| भगवद्वीता            |               | कंडूय पृष्ठतो            | १०८, ३६७ | यः समानोदृकं             | ६११      |
| ३१०-१२               | १९            | कर्मावसाने कर्मादौ       | ५७९      | वनस्पतिगते सोमे          | ७०९      |
| ३१३                  | ३१८           | कूर्चेन वा पवित्रेण      | २३३      | वस्त्रनिष्पीडिनं         | ३८९      |
| ३२८                  | ३६६           | कृष्णांगारचतुर्दश्यां    | २५७      | वस्त्रोदृकमपेक्षन्ते     | २४९, २५३ |
| ३३७                  | १९५           | क्षौरं च सागरस्नानं      | २५७      | विद्वे पर्वाणि           | २५८      |
| ६१२४-२६              | १९२           | ग्रन्थियुक्तपवित्रेण     | २३१      | विष्णुक्रांतां शर्मीं    | ३६८      |
| १०१४१                | ४१४           | चण्डालैरन्त्यजैरुक्तौ    | २१२      | व्यतिपाते वैद्वतौ        | ४८       |
| १३११०-११             | १८९           | जंघान्तं जानुपर्यन्तम्   | २२१      | शावे शवगृहं              | २६९      |
| १७१११-१३             | १९            | ततः प्रदक्षिणीकृत्य      | ३२०      | षोडशो वर्षेऽस्य          | ११९      |
| १७१२३                | ३२७           | तर्पणं देवतादिभ्यः       | २२५, २४८ | संकल्परहितं कर्म         | २६४      |
| १७१२५ (२)            | ५५२           | ताम्रपात्राश्ववालैश्च    | २२८      | सप्तैव व्याहृतिरिताः     | ३२४      |
| १८१२                 | १६५           | दंपत्योरुभयोः            | २६       | सर्वेषु पाकयज्ञेषु       | ३१६      |
| भगवान्               |               | नक्तोद्वृतं तु           | ७८५      | सूर्यानुवाकस्यामि        | ३१७      |
| वर्णनामाश्रमाणां     | ४             | नदीमहानदीस्रोतः          | २५६      | स्नानपानक्षुतस्वाप       | २३७      |
| वर्णश्रमविधिं        | १६६           | निराचारस्य               | २४५, १०६ | भविष्यत्पुराणम्          |          |
| भद्राचार्यः          |               | निर्मथयेन पत्नीम्        | ५६६      | अभिहोत्रार्थं            | ८६४      |
| पापक्षयो हि          | ४७७           | निष्ठिवज्जन्मणे          | ३४९      | अथापि प्रजापतेः          | १६७      |
| भरद्वाजः             |               | पक्षं सफेनकलुषं          | २२२      | अनभिस्तु यदा             | ६६८      |
| अंगुष्ठादिकं         | ३३१           | पादावाजानु वा            | ७९२      | अरुणोदयकाले              | ८३९      |
| अज्ञाता यदि वा       | १६            | पितृणामन्न               | ८०६      | आदौ कर्कटके सर्वां       | २८७      |
| अथ यज्ञोपवीतस्य      | ३४            | पुत्र्याखिरात्रं         | ५२४      | एकादशी दिशा              | ८४२      |
| अथातो व्रतादेश       | ११७           | पूर्वाण्ह एव नान्दी      | ७५४      | एकादश्यामुपवसेत्         | ८४८      |
| अथापक्षणविष्णुत्रं   | २१५           | प्रक्षाल्य चरणौ          | २४०      | कृत्वा श्राद्धं महाबाहो  | ४०६      |
| अपांक्तेयान्         | ४४९           | प्रणवस्य ऋणिः            | ३२४      | गृहीतविद्यो गुरवे        | १७२      |
| अपि वा स्त्री        | ३५५           | प्राङ्मुखश्चरणौ          | २९०, ३०२ | जीवमानेन देयं            | ७४२      |
| अभ्यंगस्नपने         | २८२           | बद्धचूडः कुशकरो          | २२९      | तथा व्रतस्थोऽपि सुतः     | ५६३      |
| अलब्धात्मीय          | ५७८, ६२७, ६८२ | ब्रह्मयज्ञे विशेषोस्ति   | २२७      | दंडं तु वैणवं            | १८६      |
| अशक्यः स्याद्यादि    | ३२३           | ब्राह्मणान्सम्यगभ्यर्च्य | ५५३      | दशरूत्वः पित्रेत्        | ८२०      |
| असपिण्डशवस्य         | ५४४           | भुक्त्वा अमृता—          | ४५२      | दिनमेव विजानाति          | ६३९      |
| अस्पृश्यस्पर्शने     | २६६, ५८५      | मंत्रं सदैवमुच्चार्य     | ९९       | नव सप्तविंशां            | ६०५      |
| आयतं दक्षिणं कृत्वा  | २२२           | मलमूत्रं त्यजेयस्तु      | २१३      | पलद्वयं तु प्रसृतिः      | ४३२      |
| आयात्वित्यनु         | ३२६           | महानदीनद्                | २५५      | पापानामपि बाहुल्यात्     | ३०५      |
| आ सायमाहुति          | ३५८           | मातुर्मृताहेसंप्राप्ते   | ७२९      | पारणं तु त्रयोदश्यां     | ८४३      |
| उत्तरायण आपूर्य-     | ११७           | मुद्राढकीम्              | ७८४      | पिण्डनिर्वापणं           | ७५६      |
| उद्गृत्वा भूधरेऽभोधि | २८८           | यदि संगवकाल              | ७४०      | प्रत्यक्षमर्चनं          | ७२१      |
| अपस्थाय नमस्कुर्यात् | ३४५, ३७६      | यद्यात्मरण्योर्वा        | ५७३      | प्रत्यक्षमर्चनं श्राद्धे | ७४२      |
| एकामिद्वादिशाहं      | ३६४           | यस्मिन्सूत्रे विवाहः     | ५७८      | प्रविश्य भानुः           | ७११      |
|                      |               | यावन्तो नियमाः           | २४८      | प्रवृत्ताशौचतंत्रस्तु    | ६१२      |

| ऋषिः                            | पृष्ठम्  | ऋषिः                     | पृष्ठम्  | ऋषिः                     | पृष्ठम्  |
|---------------------------------|----------|--------------------------|----------|--------------------------|----------|
| <b>भाविष्यतपुराणम्</b>          |          | <b>भारतम्</b>            |          | <b>भाष्यान्तरम्</b>      |          |
| ब्राह्मणः सर्ववर्णानां          | ११०      | जातस्य हि ध्रुवो         | ६०४      | ब्रह्मशब्देन             | ५७१      |
| ब्राह्मणातिक्रमो                | ७७०      | तुलसीपत्रमादाय           | ३७५      | भाष्यार्थसंग्रहकारः      | ८५५      |
| भोजनात्किञ्चिदन्नात्            | ४२१      | दिने हिंगभिषेकश्च        | ४०८      | अन्वाहितिश्चाः           | ८५५      |
| मुहूर्तो न दिनं                 | ८२९      | पारक्ये भूमिदेशे         | ७५८      | माध्यन्दिनात्            | ८५५      |
| मृताहं समतिकम्य                 | ७०६      | य इच्छत्यूर्ध्वं-        | ४१९      |                          |          |
| यजमानोऽभिमान्                   | ६६८      | यो मृत्युकाले संप्राप्ते | ५५२      | <b>भास्करः</b>           |          |
| यथा व्रतस्थोऽपि सुतः            | ५६२      | सतिलेन ततोऽन्नेन         | ८१६      | अहन्यहनि                 | ७५२      |
| ये त्वादित्यदिने                | ८२९      | स्यादुत्तरायणे           | ५५३      | कालातिपत्तिः             | ३५८      |
| व्यतिक्रान्ते न दोषो            | ७७०      |                          |          | दश द्वादश                | ९९       |
| श्रावणी दुर्गनवमी               | ८३२      | <b>भारद्वाजः</b>         |          | पात्राणां बाहुमात्रे     | ८१७      |
| षष्ठे षाणमासिकम्                | ६५५      | अष्टाचत्वारिंशत्         | ११९      | <b>भास्करीयम्</b>        |          |
| सपिण्डीकरणं कुर्यात् ६६४, ६६८   | ६६४, ६६८ | आधाय विधिवत्             | २७       | अयनं दक्षिणं             | ३९९      |
| सर्वं वा विचरेद्                | ९६       | आसनं स्वस्तिकं           | १५       |                          |          |
| —                               | १६८      | चण्डालादुदकात्           | ११४      | <b>भृगुः</b>             |          |
| <b>भाविष्योन्तर ( पुराणम् )</b> |          | जननमरणयोः                | ३५९      | अत ऊर्ध्वं प्रवद्यामि    | ३९३      |
| आचार्यार्थं तयोः                | ९२६      | द्वादशाहाति              | १२१      | अशतिर्यस्य               | १६४, ८९३ |
| कथयामि कुलखीणां                 | ८५३      | बन्धुनां मातुलादीनां     | ५१६      | आरनालद्वयं               | ४३५      |
| दशार्वाङ्गनाडिकाः               | २७४      | भार्यासंभोगसमये          | ७७       | उपवीतं बटोरेकं           | ९९       |
| दैवे ह्यौदयिकी ग्राह्या         | ८५१      | भुक्षश्चेत्पार्वण        | ११५      | उपवीतविहीनेन             | २९२      |
| प्रतिवर्षं विधानेन              | ८३३      | यजमानस्यैवा-             | ५७०      | एककाले गतासूनां          | ६९६      |
| मार्गशीर्षं ततो                 | ८२७      | यज्ञोपवीतमाजिनं          | ९५       | एकादश्यष्टमी             | ८३०      |
| मासि भाद्रपदे                   | ८३२      | यद्यपत्नीकः              | २५       | कोटिरो मनुजानां वै       | ३५१      |
| संक्रमस्तु निश्चिदे             | २७५      | यः समानोदकं प्रेतं       | ५४५      | ग्रस्तावेवास्तमानं       | २७३, ४५० |
| सुवर्णयाचकानां                  | ४४       | सहस्रपरमां               | ३३७      | त्रिः पीत्वापो           | २२६      |
| <b>भागवतम्</b>                  |          | स्त्री चैवं भर्तरि       | ५७२      | न रक्तमुल्बणं वासो       | २५२      |
| कोद्दृस्थे सवितरि               | ३९९      | —                        | ५७०      | नैकवासा न च              | २६४      |
| गृहं शमशानं                     | ३९९      | <b>भारद्वाजगृह्यम्</b>   |          | पंचयज्ञांस्तु            | ४०६      |
| त्रिवक्त्राया उपश्लोकः          | २९७      | प्राणायामशतमा            | ९२१      | पित्रोर्मृताब्दे         | ६४०      |
| प्रजापतिर्नामं तयोः             | ५५७      | <b>भाष्यम्</b>           |          | ब्राह्मणस्य सितं वस्त्रं | २५१      |
| स लिंगानाश्रमान्                | १९४      | अथ चेद्वद्वपत्नीको       | ५७२      | भेदैस्तु कारवल्यानि      | ४३९      |
| <b>भानुः</b>                    |          | <b>भाष्यकारः</b>         |          | मंत्रपूतं रिथितं         | ९९       |
| नाभिकण्ठान्तरो-                 | ४७४      | निरूहोद्वासन             | ७९३      | मध्यांदिनं पितृणां       | ७४०      |
| —                               | ९०५      | यदि त्वनेक               | ५७१      | मलमासे मृतानां           | ७३०      |
| <b>भारतम्</b>                   |          | यद्याहितामिः             | ५७०      | माता भ्राता च            | ६४०      |
| अन्नं पूर्वं                    | ४२१      | स्वमूर्धं स्वं सेषुव     | ५८२      | मातामहं मातुलं           | ५४५, ५५८ |
| अश्वत्थसागरौ                    | २५७      | —                        | ३०१, ६०७ | यत्कलं सोमयागेन          | ४०५      |
| गुणास्तु षणिमत-                 | ४२४      |                          |          | या समारोहगं              | ६९६, ७२१ |

| ऋणिः                  | पृष्ठम् | ऋणिः                      | पृष्ठम्  | ऋणिः        | पृष्ठम् |
|-----------------------|---------|---------------------------|----------|-------------|---------|
| <b>भृगुः</b>          |         | <b>मत्सपुराणम्</b>        |          | <b>मनुः</b> |         |
| वृद्धिशाद्वं तथा      | ७३२     | पृ. १०८ दं. ११            | २३०      | २१९         | २       |
| नैक वृष्मैकशतं यत्र   | २६४     | अन्नं तु सदाधि            | ७८२      | २१५         | ७       |
| शावाशौचे समुत्पन्ने   | ५०२     | अन्हो मुहूर्ता            | ७०८, ७९१ | २१६         | १       |
| शावे च सूतके          | ६००     | अर्थज्ञो वेदवित्          | ७६६      | २१९         | १६६     |
| सदोपवीतिना            | ९१      | आशयुक् शुल्क              | ७६१      | २१११        | २       |
| सूतकं प्रेतकं         | २७८     | एवं स्नात्वा ततः          | २५१      | २११२        | ८१      |
| सूत्रं सलोमकं         | ९१      | कृतं शाद्वं               | ७६१      | २११४        | ७       |
| सोष्णीषो बद्धपर्यङ्कः | २२३     | जाताशौचस्य मध्ये          | ५३१      | २११५        | ३५७     |
| — २५३, ५१९, ५२८, ५५४, |         | ततश्च वैश्वदेवान्ते       | ४०६      | २११६        | ६       |
| <b>भृगूपनिषद्</b>     |         | दर्शे चाहरहः              | ७३२      | २१७         | ८८      |
| ११११०                 | ४१६     | नित्यं तावत्प्रवक्ष्यामि  | ४०२      | २१७-१८      | ९       |
| <b>मञ्जरी</b>         |         | निर्मन्त्रितास्तु         | ७७१      | २१९-२३      |         |
| त्रिवर्षादि दृहेत्    | ५१३     | पानीयमध्यत्र              | ३८१      | २१२६        | ७२, ५८० |
| <b>मत्स्यः</b>        |         | पितृयज्ञं तु निर्वर्त्य   | ७४१      | २१२७        | ७२      |
| अक्षताभिः सपुष्पाभिः  | ७१२     | पुण्यक्षेत्रे पुण्यतीर्थे | ९२७      | २१२८        | ४०५     |
| आधानं यज्ञकर्मापि     | ७३४     | भरणी पितृपक्षे            | ७४८      | २१२९        | ७९      |
| एकादश्यां तु          | ८४५     | भुक्तवत्सु ततस्तेषु       | ८१२      | २१३०        | ८१      |
| एवं निमन्त्रय         | ७७८     | विश्वान् देवान्           | ७९७      | २१३१        | ८१      |
| कुसंभं वीजपूरं        | ७८४     | वैशाखस्य तृतीया           | ७६१      | २१३३        | ८२      |
| गायत्रीजप्त्य         | ७६७     | <b>मदालसा</b>             |          | २१३४        |         |
| गृहद्वारसमीपे         | ७९१     | तदन्वाचमनार्थाय           | ८१३      | २१३५        | ८३, ५०९ |
| गृहीत्वास्थीनि        | ६०९     | <b>मनुः</b>               |          | २१३६        | ८५, ८६  |
| ततश्च वैश्वदेवान्ते   | ८१९     | ११३                       |          | २१३७        | ८७      |
| दक्षिणं जानुमालभ्य    | ७७६     | ११४-१६                    | १६       | २१३८        |         |
| दक्षिणां दिशां        | ८१५     | ११६७, ६९                  | १७       | २१३९        | ८९      |
| दिनक्षये तु           | ८४४     | ११८३                      | ११       | २१४०        | ८९      |
| नामगोत्रं पितृणां     | ७९३     | ११८८                      | ११       | २१४१        | ९३, ९४  |
| नामं गोत्रं पितृणां   | ८२३     | ११९०                      | ६६       | २१४२-४३     | ९५      |
| पद्मबिल्वार्क         | ७९०     | ११९३-९५                   | ६९       | २१४४        | ९०      |
| पुनर्भोजनम्           | ८२०     | ११९६-९७                   | ७०       | २१४५        | ९३      |
| ब्रह्मा सदस्पतिश्चैव  | ९२९     | ११९९-१००                  | ४८       | २१४६-४७     | ९३      |
| सिंहस्थिते सुरगुरौ    | ९४७     | ११९०३                     | ६        | २१४९        | ९५      |
| स्वस्तिवाचनकं         | ८१४     | ११९०८                     | २        | २१५०        | ९५      |
| शिवनेत्रोद्धवं        | ७८९     | ११९१०                     | ४        | २१५१        | ९७      |
| <b>मत्स्यपुराणम्</b>  |         | ११९२४                     | १०७      | २१५२-५५     | ४२९     |
| १७१६८                 | ३७      | ११९६-११७                  | ११३      | २१५३        | २२५     |

सूचि:

१८७

| क्रमिः    | पृष्ठम्  | क्रमिः   | पृष्ठम्  | क्रमिः  | पृष्ठम् |
|-----------|----------|----------|----------|---------|---------|
| मनुः      |          | मनुः     |          | मनुः    |         |
| २१५९      | २२५      | २१२७-१२९ | ११०      | ३१९     | ११६     |
| २१६०      | २२५      | २१३०     | ११०      | ३१४     | १२३     |
| २१६१      | २२२      | २१३३     | १०६      | ३१५     | १२४     |
| २१६२      | २२२      | २१३४     | ११०      | ३१६-७   | १३२     |
| २१६३      | ९२       | २१३५     | १०६      | ३१९१    | १२५     |
| २१६४      | ९१       | २१३६-१३७ | १०६      | ३१९२-१३ | १३३     |
| २१६५      | ८४       | २१३८-१३९ | १०७      | ३१९४    | १३३     |
| २१६६      | ८४       | २१४०-१४१ | १०४      | ३१९५    | १३३     |
| २१६७      | ३०       | २१४२     | १०२      | ३१९७-१८ | १३३     |
| २१७०      | १७८      | २१४२     | १०४      | ३१९९    | १३४     |
| २१७१      | १७९      | २१४३     | ८८१      | ३१२०-२१ | १४०     |
| २१७२      | १७१      | २१४३     |          | ३१२०-२१ | १४०     |
| २१७४      | ११३      | २१४३-१४५ | ९६       | ३१२३-२४ | १४१     |
| २१७६-७८   | ३३४      | २१४६-१४८ | १०५      | ३१२५    | १४१     |
| २१८०      | ३३४      | २१५०-१५६ | १०५      | ३१२७    | १४०     |
| २१८१      | ३१९      | २१५७-१५८ | २९       | ३१४३-४४ | १४५     |
| २१८३      | ३३४      | २१६५     | २८       | ३१४५-४९ | ७४      |
| २१८५, ८७  | ३५२      | २१६६     | २८       | ३१४९    | ७५      |
| २१८६      | ३३६      | २१६९-१७० | ८८       | ३१५१-५२ | १४३     |
| २१९८      | १२१      | २१७१-१७२ | ८६       | ३१५३    | १४२     |
| २१९००     | १८७      | २१७१     | ५५९      | ३१५४    | १४३     |
| २१९०१     | ३३६, ३३७ | २१८१     | ९२९      | ३१५५-६२ | १४३     |
| २१९०२     | ३३६      | २१८२     | ५६५      | ३१६५    | २८      |
| २१९०३     | ३३६      | २१८५-१८६ | ९८       | ३१६७    | ३९६     |
| २१९०४     | ३६८      | २१८७     | ९६, ९८   | ३१६८-७१ | ३९६     |
| २१९०५     | ३८       | २१८८     | ९६       | ३१७२    | ४०६     |
| २१९०५-१०६ | ३७१      | २१८९     | ७६८      | ३१७३-७२ | ३९६     |
| २१९०६     | ३७२      | २१९९-१९३ | ९९३      | ३१७६    | ३६६     |
| २१९१६     | ३०       | २२०५     | ९९९      | ३१८१    | ३९६     |
| २१९१७     | १०८      | २२०८     | ९०६      | ३१८०    | ४०६     |
| २१९१८     | ७६७      | २२०९     | ९९४      | ३१८२    | ४०२     |
| २१९१९     | १०८      | २२१०     | १०५, १११ | ३१८४-८६ | ३९७     |
| २१९२१     | १०८      | २२११     | ११४      | ३१८७-११ | ४०१     |
| २१९२२     | १०७      | २२२०-२२१ | २१०      | ३१९०    | ४००     |
| २१९२३     | ११२      | २२३३-२३७ | १०६      | ३१९२    | ४०१     |
| २१९२४     | ३७०      | २२३८     | ३०       | ३१९३    | ४०६     |
| २१९२५     | १११      | २२४३-२४४ | १२०      | ३१९४    | ४०६     |
| २१९२६     | ११२      | २२४६     | १२०      | ३१९५-९६ | ४०६     |

| क्रमिः   | पृष्ठम्  | क्रमिः          | पृष्ठम्       | क्रमिः    | पृष्ठम्       |
|----------|----------|-----------------|---------------|-----------|---------------|
| मनुः     |          | मनुः            |               | मनुः      |               |
| ३१७, ९८  | ४११      | ३१९९            | ७७९           | ३१२९९     | ७४९           |
| ३१००     | २१६, ७६५ | ३१२०२           | ७८८           | ३१३९३     | ७७५           |
| ३१०९     | ४१५      | ३१२०५           | ६७६           | ४१२-३     | ५९            |
| ३१०२-१०३ | ४१२      | ३१२०६           | ७५८           | ४१२-६     | ५९            |
| ३१०४     | ४२२, ५१५ | ३१२०८           | ७८८           | ४१३       | ३७५           |
| ३१०५     | ४१३      | ३१२१०           | ८०९           | ४१९       | ५९            |
| ३१०६     | ४१४      | ३१२११           | ८०२           | ४११०      | २९            |
| ३१०७     | ४१४      | ३१२१२           | ६८५, ६८६      | ३१९९-१२   | ५९            |
| ३१०८     | ४०४      | ३१२१५, २१६, २१८ | ८१५           | ४१४       | २३५, ३५५, ४५७ |
| ३१०९     | ४१५      | ३१२२०           | ७४७           | ४१२५      | ३५५           |
| ३११०     | ४०९      | ३१२२०-२२१       | ६७७           | ४१२५-२६   | २९            |
| ३१११-११६ | ४०९      | ३१२२३           | ८०७           | ४१२८      | २२            |
| ३११८     | ४०८      | ३१२२४           | ८०३           | ४१३०      | ७७५           |
| ३११९-१२० | ४१५      | ३१२२६           | ८०४           | ४१३२      | ४०९           |
| ३१२१     | ३९७      | ३१२२६-२२७       | ७८२           | ४१३३-३६   | १२२           |
| ३१२२     | ७४७      | ३१२२९-२३०       | ८०८           | ४१३४      | २४२, ४२४      |
| ३१२३     | ७६५      | ३१२३४           | ७७०, ७८८      | ४१३५-३६   | ४५८           |
| ३१२७     | ७३५      | ३१२३६-२३७       | ८०९           | ४१३७      | २१४, ४५८      |
| ३१२८     | ७६५      | ३१२३९-२०        | ७८६           | ४१४३      | ४२६           |
| ३१३४-१३५ | ४११      | ३१२४३           | ८०८           | ४१४५      | २१३           |
| ३१२५-१२६ | ७७७      | ३१२४४           | ८१२           | ४१४९      | २११           |
| ३१३६     | ७६५      | ३१२४५           | ८१०, ८१३      | ४१५०-४९   | २१२           |
| ३१३८     | ७७१      | ३१२४६           | ८१०           | ४१५३-५४   | ३६२           |
| ३१३९-१४१ | ७७१      | ३१२४७-२४८       | ६४९           | ४१६०-६९   | १०            |
| ३१४४     | ४११, ७७१ | ३१२६१           | ८१६           | ४१६२      | ४१७, ४२५, ४३६ |
| ३१४७-१४८ | ७६१      | ३१२६२-२६३       | ८१७           | ४१६५      | ४२०           |
| ३१४९     | ७६५      | ३१२६५           | ४०६           | ४१७६      | ४१७           |
| ३१५०-१६७ | ७७२      | ३१२६७           | ७८२           | ४१८४      | ५५            |
| ३१६७-१७० | ७७४      | ३१२७१-७२        | ७८२           | ४१८५      | ५५            |
| ३१७१     | १५३      | ३१२७४           | ७४९           | ४१८७, ९९  | ५५            |
| ३१७९-१७२ | ७७३      | ३१२७६           | ७४७           | ४१९२      | २०९           |
| ३१८३     | ७७५      | ३१२७७           | ७६३           | ४१९३      | ३३७           |
| ३१८३-१८६ | ७६७      | ३१२७८           | ७०७, ७०९, ७६४ | ४१९४      | ३११           |
| ३१८७     | ७७७      | ३१२७९           | ५७९, ७९४      | ४१९५-९६   | ३२            |
| ३१९८     | ७७९      | ३१२८०           | ७०९           | ४१९७      | ३४            |
| ३१९८९    | ७८०      | ३१२८२           | ८२३           | ४१९९      | ३१            |
| ३१९९०    | ७७९      | ३१२८९           | ४०८           | ४११०२-१०३ | ३६            |

| क्रमिः        | पृष्ठम् | क्रमिः  | पृष्ठम्     | क्रमिः     | पृष्ठम्  |
|---------------|---------|---------|-------------|------------|----------|
| मनुः          |         | मनुः    |             | मनुः       |          |
| ४१९०८         | ३६      | ५१४९    | ४५९         | ५१९००-९०९  | ५४४      |
| ४१९१८         | ३५      | ५१५३-५४ | ४५९         | ५१९०९-९०२  | ५९४,६९७  |
| ४१९१७         | ३६      | ५१५८    | ४९४         | ५१९०८      | २६७,५४५  |
| ४१९२४         | ३७      | ५१५९    | ५१४,५१७,५१८ | ५१९०६      | २६७      |
| ४१९२९         | २७०     | ५१६०    | १२५,४९६     | ५१९०७      | १७५,४७५  |
| ४१९२४         | २३५     | ५१६१-६२ | ५००         | ५१९०८      | २६७      |
| ४१९२६         | ३६६     | ५१६२    | ५१०         | ५१९१०-१११  | २६७      |
| ४१९४९         | २११     | ५१६३    | ५१४         | ५१९१४      | ४५१,२६८  |
| ४१९५६-१५८     | ४       | ५१६४    | ५२५         | ५१९१७      | २६९      |
| ४१९६२         | १०६     | ५१६५    | २७६,४११     | ५१९२२      | २७९      |
| ४१९७८         |         | ५१६६    | ५०७         | ५१९२४      | २३३      |
| ४१९८७         | ५८      | ५१६७-६९ | ५०८         | ५१९२७      | २२४,४७३  |
| ४१९८८-१८९     | ५८      | ५१६९    | ५०८         | ५१९२९-१३०  | ४७६      |
| ४१९९५-१९६     | ४१      | ५१७०    | ४१६,५२७     | ५१९३१      | २१९      |
| ४१९९७         | ४१      | ५१७१    | ५१५         | ५१९३२      | २७६      |
| ४१२००         | १८६     | ५१७२    | ५४७         | ५१९३३      | २१७, २१९ |
| ४१२०१-२०२     | २५५     | ५१७३    | ६०६         | ५१९३४      | २१९      |
| ४१२०३         | २५३     | ५१७४    | ५३४         | ५१९३५-१३६  | २१६      |
| ४१२०५-२०६     | २४२     | ५१७५    | ५३४         | ५१९३८      | ६८       |
| ४१२०७,२०९-२२३ | २४२     | ५१७६    | ५३६         | ५१९४०      | २३८      |
| ४१२२४-२२६     | २४१     | ५१७७    | ४८५,५०६,५३५ | ५१९४१      | २३८      |
| ४१२३१         | ४०      | ५१७९    | ५२५         | ५१९४२      | २३९      |
| ४१२३२-२३७     | ४१      | ५१८०    | ५१७,५२५,५२६ | ५१९४४      | १२०      |
| ४१२३८-२४०     | ४१      | ५१८२    | ५१८,५२९     | ५१९४५      | २३६      |
| ४१२३८-२४३     | ४       | ५१८३    | ५२२         | ५१९४८      | १५६      |
| ४१२४७         | १३२     | ५१८४    | २६४         | ५१९५०      | १४०      |
| ४१२४०         | ५६      | ५१८५    |             | ५१९५४      | ८४७      |
| ४१२४३         | ५७      | ५१८६    | २६७         | ५१९५६      | १६९      |
| ४१२४४-२४५     | ५७      | ५१८७    | ५१९१,५२०    | ५१९६०      | १६३      |
| ५१४           | ४३३     | ५१८९    | ४८९         | ५१९६६, १६७ | २४       |
| ५१५           | ४३३     | ५१९०    | ५४८         | ५१९६७      | २६       |
| ५१९८          | ४५१     | ५१९१    | ५८९         | ६१९        | १६९      |
| ५१९९          | ४३४     | ५१९२-९३ | ४८६         | ६१६-२३     | १६९      |
| ५१२०          | ४३५     | ५१९३    | ४८७         | ६१२५-३०    | १७०      |
| ५१३०          | ४५२     | ५१९४-९६ | ४८६         | ६१३९-३२    | १७०      |
| ५१३५          | ४५१     | ५१९५    | ४८७         | ६१३३-३४    | १७१      |
| ५१३९-४०       | ४५१     | ५१९६    | ५४८         | ६१३५-३७    | १७१      |

| क्रमिः    | पृष्ठम् | क्रमिः     | पृष्ठम् | क्रमिः        | पृष्ठम् |
|-----------|---------|------------|---------|---------------|---------|
| मनुः      |         | मनुः       |         | मनुः          |         |
| ६१४८      | १८६     | ९१९८-१००   | १४३     | १०१९०९        | १२३     |
| ६१४९      | १८७     | ९१९९       | १३७     | १०१९९९        | ५९      |
| ६१५१      | १९९     | ९१९०५      | ७६      | ११११६ (?)     | ५६      |
| ६१५३-५४   | २०२     | ९१९०७      | ७६      | ११११०         | ...     |
| ६१५५-५७   | १९९     | ९१९०८      | ११४     | १११२०         | ३१५     |
| ६१५८-६०   | १९९     | ९१९२५      | ५५७     | १११२१-१       | १३५     |
| ६१७०      | ३२५     | ९१९२५-१२६  | १४६     | १११२४         | २२      |
| ६१७२      | २०६     | ९१९२६      | ५५७     | १११२७         | २२      |
| ६१७४      | १९५     | ९१९२७      | १२६     | १११३०         | २१२,७६९ |
| ६१८९      | १६४     | ९१९३९      | ५६२     | १११३६-३७      | ३४५     |
| ६१९०      | १६५     | ९१९२९-१४२  | १०२     | १११४१         | २२      |
| ६१९४      | १७४     | ९१९४२      | ५२१     | १११४१         | १२१     |
| ६१९५      | ३६६     | ९१९५५      | ८९४     | १११४२,४३      | २२      |
| ७११३४     | ६६      | ९१९५९-१६०  | ५२०     | १११४४         | ८५९     |
| ८१७९      | ६०      | ९१९६६-१७७  | १०९     | १११४५         | ८६८     |
| ८१८१-८२   | ६०      | ९१९८०      | १०९     | १११४५-४७      | ९०६     |
| ८१८६-८९   | ६९      | ९१९८०      | ५६१     | १११४८         | ८६०     |
| ८१९०      | ६९      | ९१९८२      | १०२     | १११६८         | ८६६     |
| ८१९२-९३   | ६९      | ९१९८३      | ५६५     | १११४६         | ८६७,८६८ |
| ८१९०३     | ५४      | ९१९८६      | ८९७     | १११४६         | ८६८     |
| ८१९०६-१०७ | १२०     | ९१९८७      | १२५     | १११४८         | ८६३,८९७ |
| ८१९९२     | ५४      | ९१९८७-१८९  | ५६७     | १११४४         | ८६४,९२१ |
| ८१९४९     | ६३      | ९१९९६      | ५६४     | १११४६         | ८६४     |
| ८१२२८     | १३८     | ९१३०९-३९९  | ६४      | १११५७         | ८६४     |
| ८१३००-३०९ | ११६     | ९१३२६      | ६६      | १११५८         | ८६४     |
| ८१३४०     | ८८६     | ९१३३८, ३३५ | ६७      | १११५९-६६      | ८६६     |
| ८१३४२     | ५१,८८६  | १०१५-६     | ७०      | १११७२         | ८७१     |
| ८१३४६-३५० | ८७४     | १०१८       | ७०      | १११७४-७५      | ८७६     |
| ९१२-१७    | १५४     | १०१९९      | ७१      | १११७६-७९      | ८७२     |
| ९१४७      | १३७     | १०१८०      | ७२      | १११७६         | ८७६     |
| ९१५१-६०   | १०३     | १०१८१      | ४१५     | १११८८-८८      | ८६३     |
| ९१८०-८३   | १५१     | १०१७७      | १८      | १११०-६९       | ८७११    |
| ९१८८      | १३४     | १०१७७-७८   | ६४      | १११९३, १४, १५ | ८७८     |
| ९१८९      | १३६     | १०१८३-८४   | ६२      | १११९७         | ८८०     |
| ९१९०      | १३६     | १०१९५      | ६३      | १११९९-१०२     | ८८२     |
| ९१९४      | १३६     | १०१९०२     | ५६      | १२१००         | २९      |
| ९१९७      | १३६     | १०१९०४     | ४२६     | १११९०३-१०७    | ८८६     |

| क्रषिः      | पृष्ठम्  | क्रषिः                | पृष्ठम्  | क्रषिः                 | पृष्ठम्  |
|-------------|----------|-----------------------|----------|------------------------|----------|
| <b>मनुः</b> |          | <b>मनुः</b>           |          | <b>मनुः</b>            |          |
| ११११०५      | ८८७      | १११२१५                | ९३८      | उत्सर्गे प्रथमाध्याये  | ३५       |
| ११११२०, १२२ | ८९२      | १११२१६-२१७            | ९४०      | उपवीती ख्यिं           | ७७       |
| ११११२३      | १२२, ८९२ | १११२२६                | ९३२      | उभयत्र दशाहानि         | २७८      |
| ११११२५      | ९३१      | १११२२६-२२९            | ८६९      | ऊर्ध्वं नामेः          | २६७      |
| ११११२६-१३०  | ८७३      | १११२४५-४६             | ९३२      | एतदक्षरमेत्यं          | ३३८      |
| ११११३१-१३२  | ८७७      | १११२४८                | ३२५, ९३२ | एवं निर्वपणं           | ४४०      |
| ११११४०      | ८७७      | १११२५०-२५१            | ३५०      | कुत्सिते वामहस्तः      | १४       |
| ११११४८      | ८३२      | १२११०                 | ९८४      | कुर्वन्प्रतिपदि        | ७६३      |
| ११११५२      | ४३१      | १२१६९                 | ८६२      | कुसीदं कृषिवाणिज्यं    | ६२       |
| ११११५२      | ९०७      | १२१२४-२८              | ८६०      | गुरोरप्यवलिप्तस्य      | १०६      |
| ११११५३      | ९०७      | १२१६०-६८              | ८६०      | गृह्णन् गो भू          | ५६       |
| ११११५४      | ८८०      | १२१७८-८१              | ८६२      | गोत्रान्तरप्रविष्टानां | ५२४      |
| ११११६२-१६९  | ८८४      | १२१९२                 | ९९८      | गोरसं चैव सकूञ्च्य     | ४४६      |
| ११११६०      | ९९६      | १२११०-११३             | ८६९      | चतुरो निर्वपेत्        | ६७२      |
| ११११७१-१७२  | १२७      | १२११८                 | ९२२      | चतुर्दशैते मन्त्राः    | ३८१      |
| ११११७३      | ८९०      | १२११२४                | ९९६      | चन्द्रसूर्यग्रहे       | ८३०      |
| ११११७४      | ८९२      | १२११३८                | ८७४      | त्रीण्याहुरति-         | ४३       |
| ११११७६-१७७  | ८९४      | १२११५१                | ९९८      | दन्तवद्वदन्तलम्भेषु    | २३८      |
| ११११७८-१७९  | ७०३      | १२१२४९-२५१            | ९३४      | दर्शं च पौर्णमासं      | ४७९      |
| ११११८९      | ९६४      | १२१२९४                | ९२४      | दहनं दहनं वापि         | ५४५      |
| ११११९०      | ८६७      | अभिहोत्रस्य           | ३५५      | द्विजवादे महाचान्द्रं  | ८८६      |
| ११११९१      | ९०१      | अभिहोत्र्यप           | ३५६      | द्वौ देवे पितृकार्ये   | ७७७      |
| ११११९३      | ४७५      | अज्ञानात्प्राश्य      | ९९८      | धर्मव्यतिक्रमो         | ५        |
| ११११९७      | ९०१      | अनन्तरः सपिण्डो यः    | ५६६      | नष्टे मृते प्रवर्जिते  | १३९      |
| ११११९८      | २९, ९०९  | अनर्हते यत्           | ७२       | नायादन्तःशवे           | ५४०      |
| ११११९९      | ९०४      | अनिन्दनभक्षयेत्       | ४२३      | नारं स्पृष्टास्थि      | ५४७      |
| १११२०१      | ९०३      | अपुन्नाः स्वकुले      | ७५१      | नित्यं स्नात्वा शुचिः  | २६४      |
| १११२०२      | ९२२      | अमुक्तयोरस्त          | ४५०      | निमन्त्रयेत त्यवरान्   | ७१८      |
| १११२०३      | ३७०      | अलाभे देवखातानां      | २५५      | नियतो विचरेत्          | १८६      |
| १११२०३      | ९११      | अवरात्तुत्तमात्       | ७०       | पक्षादौ च रवौ          | २८३      |
| १११२०४-२०५  | ९००      | असपिण्डक्रियाकर्म     | ६५०      | पंतितं पतितेत्युक्त्वा | ८९८      |
| १११२०६-२०८  | ८९९      | अस्थीनी परकीयानि      | ८९०      | पितृगोत्रं कुमारीणां   | ६८९      |
| १११२०९      | ९३१      | अस्वर्घं लोकविद्विष्ट | १३१, ५१८ | पितृणां तु             | ७१०      |
| १११२११      | ५५०      | आचार्यं स्वमुपाध्यायं | ५४५      | पित्रोरुपरमे खण्णां    | ५२४      |
| १११२१२      | ९३७      | आदित्यमथ वा           | ३८८      | पीत्वाऽपोशन            | ४३१      |
| १११२१३      | ९३७      | आदिष्ठी नोदकं         | ५१९      | पुच्छे विडालकं         | २६८, ४२९ |
| १११२१४      | ९३७      | आहितामिर्यथा          | ५६८      | पुरोधाः शद्वर्णस्य     | ९०९      |

| क्रिप्ति:                  | पृष्ठम् | क्रिप्ति:                | पृष्ठम्  | क्रिप्ति:                        | पृष्ठम्   |
|----------------------------|---------|--------------------------|----------|----------------------------------|-----------|
| भनुः                       |         | भनुः                     |          | भरीचिः                           |           |
| पुण्यालंकारवस्त्राणि       | २४४     | २०१, ३३८, ४४१, ४९७, ५०६, |          | न वहिर्जानुराचामेत्              | २२३       |
| प्रत्यवान्तरकल्पं          | ८       | ५१९, ५२२, ५६०, ५६९, ७१३, |          | पक्षहोमानतो                      | ३५९       |
| बहूनामेककार्याणां          | ८६२     | ७४१, ८१२                 |          | पञ्चपर्वसु नन्दासु               | ९८३       |
| बहूचः सण्डवस्त्रेण         | ५८०     | मन्त्रः                  |          | पञ्चमे सप्तमे चैव                | १२७       |
| ब्राह्मणक्षत्रियविशाँ      | १६३     | आयुर्बलं यशो             | २४१      | पंडिता ज्ञानिनो                  | ७०६       |
| ब्राह्मणां सधवायां         | ७१      | संत्रिदीपिका             |          | पुत्रः पौत्रश्च तज्जश्य ५६०, ५६९ |           |
| मातापित्रोदशाहं            | ४९४     | देवस्य सवितुः            | ३२७      | प्रतिमासं मृताहे                 | ७२९, ७३१  |
| मार्जरश्चैव                | २६८     | मन्त्रदेवताप्रकाशिका     |          | प्रथमेऽहि तृतीये                 | ६०६       |
| यज्ञार्थं भिक्षितं         | २२      | आसनमन्त्रस्य             | ३२२      | प्रेतं पितंश्च                   | ७५७       |
| यद्धीतमविज्ञातं            | ३१६     | विष्णुं भास्वत्          | ३२५      | ब्राह्मणो द्यन्यवर्णस्य          | ५६७       |
| यदि पूर्वदिने              | ७०४     | मरीचिः                   |          | भूमिष्टमुद्गृतं                  | २५५       |
| यस्मिन्देशो तु             | २१६     | अथ हविर्विधिं            | ३१४      | मात्रैकया द्विपुत्रकौ            | ५२१       |
| यस्य देशं न                | १०९     | अनभिश्च प्रवासी          | ७१४      | यो विप्रः पापमज्जात्वा           | ८८५       |
| यस्यामस्तं रविः            | ७१३     | आदित्यदुहिता             | २८८      | लवणे मधुमांसे                    | ४८०       |
| यः कामतो                   | ४८८     | आाविद्के समनुप्राप्ते    | ७१५      | वारिपूर्वं प्रदत्ता              | ५१५       |
| या द्यहव्यापिनी            | ७१३     | आशौचान्ते ततः            | ६३६      | विदेया देवता पूजा                | ३८३       |
| येनांगेनावरो वर्णो         | ६८      | उपरागे पितृश्राद्धे      | ७३७      | विना रूप्यसुवर्णेन               | ३७७       |
| राहुदर्शन                  | २७०     | उपस्थर्शेच्चतुर्थस्तु    | २६५      | विप्रे शुक्ला तु                 | २१६       |
| राहुदर्शनसंकान्ति          | २७६     | एकाहस्तु सपिण्डानां      | ५२१      | विषशस्त्रश्वापदादि               | ६६२       |
| वटार्काश्वस्थपत्रेषु       | ४२०     | कदलीचूतपनस               | ४३९      | विषशस्त्रश्वापदि                 | ७५०       |
| वधे प्राथमिकात्            | ८७२     | कर्कटे सरितः सर्वा       | २८७      | श्राद्धविष्णे द्विजातीनां        | ८११       |
| वार्षीकूपतटाकेषु           | २१६     | कर्पूरकुमो               | ७९०      | श्राद्धविष्णे समुत्पन्ने         | ६३२, ६५४, |
| विधाय पितृयज्ञांतं         | ४०३     | कृत्तिकादिषु             | ७६४      | ७१०, ७१६                         |           |
| वीर्यहानिर्शोहानिः         | ४३८     | गर्भस्तुत्यां यथा        | ४९१      | श्राद्धेषु विकिरं                | ८१३       |
| वेदश्च वेदमूलानि           | २९७     | गृहप्रवेशगोदान           | ७३४      | श्राद्धेषु विनि-                 | ७९०       |
| व्याधितस्यार्थं            | ४१०     | गोत्रांतरप्रविष्टानां    | ५२१      | श्रोत्रियश्च तटाकादि             | ९०४       |
| शास्त्रसज्जन               | १९४     | घृताद्वा तिल             | ७९०      | स पवित्रिकरः                     | २९३       |
| शिष्टाचारस्मृतिः           | १३१     | चन्दनागरणी               | ७९०      | सर्पं दृष्ट्वा यथा               | ५४९       |
| शुक्लानि हि                | ४३६     | चूडायाः करणे             | ७९०      | सामान्येन निषेद्धेऽपि            | २८२       |
| संध्यारात्र्योर्न          | ७१७     | तिसृभिश्चातलात्          | ५१४      | सूतके कर्मणां                    | ३१४, ४७७  |
| सव्याहृतिकां               | ३२३     | दिवाहृतं तु यत्तोर्य     | २१७      | सूतके सूतके                      | ५२०       |
| सुवर्णं चंदनं              | ३६६     | दुर्बोधा वैदिकः          | २७१      | सूर्यग्रहे तु                    | ९९०       |
| सूर्योपरागे यो             | ११०     | द्विपुष्करेषु            | २        | सौवर्णेन च पात्रेण               | ३७७       |
| स्नास्यतो वरुणः            | ४२३     | द्विरशिमत्यां            | ६५५      | स्तेयं वा व्यभिचारो              | ८९९       |
| स्नेहाङ्गां समं            | ७१९     | द्व्यपराह्नव्यापिनी      | ३५७      | स्नावे मातुखिरात्रं              | ४९२       |
| — १३, २१, ४८, ७३, ८९, ९०२, |         | नमश्चाद्दं नव            | ७०८, ७१३ | हस्तं प्रक्षाल्य                 | ८९३       |
| — ११२, १२८, १४४, १४६, १७६, |         |                          | ९१४      | — ४७८, ४९२, ७१६                  |           |

| ऋणिः                    | पृष्ठम्  | ऋणिः                        | पृष्ठम् | ऋणिः                   | पृष्ठम्                  |
|-------------------------|----------|-----------------------------|---------|------------------------|--------------------------|
| <b>महाभारतम्</b>        |          | <b>माधवीयम्</b>             |         | <b>माधवीयम्</b>        |                          |
| १२४।६८ (शां. प.)        | १        | अत्यापादि                   | ६२      | पुञ्चः कुर्यात्पितुः   | ६७०                      |
| अग्निहोत्रफला           | ७६       | अत्र सुवर्णशब्दः            | ८८२     | पुनरपो दत्वा           | ७९१                      |
| आयुष्कामोऽथ वा          | ३०३      | अनतीतद्विवर्ष               | ५०९     | पूर्वकस्य मुख्यस्य     | ६९६                      |
| इतिहासपुराणाभ्यां       | २९२      | अनस्थिसंचये विश्रो          | ५४३     | पूर्वेऽहि रात्रौ       | ७७६                      |
| क्रीतान्नं देवनागरे     | ९०८      | अनुज्ञातः कनिष्ठो           | २३      | पौरुषेण तु             | ३८५                      |
| गंगास्नानं प्रकुर्वीत   | २७१      | अबुद्धिपूर्वसंस्पर्शे       | २६५     | प्रतिपत्प्रभृतिष्वेकां | ७४७                      |
| गृहस्थो ब्रह्मचारी वा   | १७२      | आचम्य च ततो                 | ३८३     | प्रदानं यत्र           | ६५९                      |
| ज्ञातीनां तु            | ७४९      | आचार्ये स्वमुपाध्यायं       | ५४५     | प्रागग्रेषु सुरान्     | ३७६                      |
| तत्रैव चेद्गाद्वपद      | ७४३      | आ ब्रह्मस्तंबपर्यंतं        | ३८०     | प्राजापत्यक्रिया       | ९४३                      |
| ते तथैव महाराज          | ३१३      | ऊर्ध्वपुण्ड्रं त्रिपुण्ड्रं | ३०७     | ब्राह्मणोद्देशेन       | ८९४                      |
| पंचके पंचके वर्षे       | ७२४      | एकोद्दिष्टं त्रिविधं        | ६६१     | मातरं जननीं            | ८८६                      |
| पंचरात्रविद्वि          | १४०      | एवं चः सर्वं                | ३८०     | मासं मासिकं            | ७१५                      |
| पादाभ्यंगं शिरोभ्यंगं   | २८५      | कण्ठं शिरोग्रं प्रावृत्य    | २२३     | यज्ञोपवीतं कुर्वीत     | ९०                       |
| ब्राह्मणैः क्षत्रियैः   | ३१०      | कन्यागते सवितरि             | ७४७     | यत्र कधनसंस्थानां      | ३८०                      |
| महानद्यो देविका         | २८७      | कुते चतुष्पात्              | १२      | यदा तु विदितं          | १८५                      |
| माघे हृष्टोदिते         | २८१      | सज्जमौक्तिक                 | ३७७     | यदुच्चन्नीच            | ३३९                      |
| यच्चोत्कोचादि           | ७८३      | गुस्वारेऽप्यमायां च         | २८०     | या तिथिः संक्रमात्     | ७०५                      |
| यमोऽथ लोकपालान्         | १५६      | ग्रामाद्वंशशतं              | ४७३     | लेपभाजश्चतुर्थाद्याः   | ४९६                      |
| या मन्वाद्या            | ७६२      | चण्डालादिव्यतिरिक्ता        | २६५     | वाचिकाख्य उपांशुः      | ३३९                      |
| यावद्यावदभूत्           | ११       | ज्योतिःशाखप्रसिद्धं         | ७२४     | शिवविद्या गुरुषां      | ३९४                      |
| ये च मद्विषया           | ६०१      | त एते देवयज्ञ-              | ४०३     | श्रवणाश्विध            | ७३६                      |
| राज्ञां पापनिबद्धानां   | ९२७      | ततो गोदोहमात्रं             | ४०८     | श्राद्धे यज्ञे च नियमे | २४४                      |
| विद्या प्रसवतो मित्रं   | ५५१      | ततो महाव्याहृतिभिः          | ४२१     | होमं च कृत्वा          | ३६६                      |
| श्रवणाश्विध             | ७४३      | तत्सूर्याभिमुख्य            | २१२     | —                      | ४,१६२,                   |
| श्राद्धकर्मणि भोक्तारो  | ९१५      | तिर्यग्यवोदरा               | ५२३     |                        | २२९, २४७, २५९, २६६, २६९, |
| सर्वस्वेनापि कर्त्तव्यं | ७१७      | दशाहीनेन वस्त्रेण           | २५९     |                        | ३१३, ३१६, ३६७, ३७६, ४०५, |
| —                       | २८९      | देवानां ह्येमकर्मणि         | ७९८     |                        | ४३२, ४४६, ४४९, ४९४, ४९७, |
| <b>महोपनिषद्</b>        |          | देवांश्चैव पितृंश्चैव       | ३८०     |                        | ४९९, ५०९, ५०५, ५०६, ५१८, |
| एको ह वै                | १७       | देशान्तरे स्थितः            | ६२०     |                        | ५३१, ५३५, ५८५, ५८९, ६०३, |
| धृतोर्ध्वपुण्ड्रः       | २९२      | द्वॄष्यं पुरुषं             | ९२१     |                        | ६०६, ६१४, ६३६, ६४७, ६५४, |
| <b>माण्डल्यः</b>        |          | ननु केवलपितृ                | ७४९     |                        | ६६२, ६६७, ६६८, ६७०, ६८७, |
| योनिसंवंध               | ५२७      | नन्वेवं कलौ                 | १३      |                        | ७१५, ७२४, ७४५, ७४९, ७५०, |
| शावे च सूतके            | ५४४, ६१७ | नादर्शे चैव                 | ११४     |                        | ७८४, ७८७, ८१२, ८१६, ८७२, |
| सपिण्डो वाऽसपिण्डो      | ६००      | नास्तिकश्चिविधः             | १२२     |                        | ८७९, ८८१, ८८७, ८९४, ८९६, |
| सुरापो ब्रह्महा         | ३५१      | नास्तिकयादृथं वा            | १९      |                        | ८९९, ९००, ९०३, ९०५, ९१९, |
| <b>माधवीयम्</b>         |          | नित्यं नैमित्तिकं           | २४७     |                        | ९२४, ९३७.                |
| अकामकृते                | ८६७      | नैक्रत्यामिषुविक्षेपम्      | २११     | <b>माधवीयपराशरः</b>    |                          |
|                         |          | पितुः पितृष्वसुः            | १२७     | परिभोगात्              | १७४                      |

| क्राणिः                  | पृष्ठम् | क्राणिः                | पृष्ठम् | क्राणिः                       | पृष्ठम् |
|--------------------------|---------|------------------------|---------|-------------------------------|---------|
| •माधवीयपराशारः           |         | मार्कण्डेयः            |         | मार्कण्डेयः                   |         |
| बहूदकश्च संन्यस्य        | १८४     | उद्दमुखः प्राङ्मुखो    | २४३     | पूजयित्वा हरिं                | ८५      |
| सूर्योदयात्प्राक्        | २०९     | उद्दमुखानां            | ८१२     | प्रतीचि दक्षिणाशां            | २४३     |
| —                        | ११२     | एकभक्तेन नक्तेन        | ८४८     | प्रातमुर्क्त्वा च यतवाक्      | २४३     |
| माध्यन्दिनगृह्यम्        |         | एवं गृहयलिं            | ४०१     | प्राप्ते तु पंचमे             | ८४      |
| भस्मना ललाटे             | ३०३     | कन्यागते सवितरि        | ७४५     | फलैर्मसेन                     | ६३८     |
| मानवम्                   |         | कालिन्दी गौतमी         | २८८     | ब्रह्माण्डं पुण्यतीर्थेषु     | ९२६     |
| अतश्च वेदा               | २९७     | कुशपाणिः सदा तिष्ठेत्  | २२९     | ब्राह्मादिषु विवाहेषु १२९,६८१ |         |
| आयुधैः शंखचक्रायैः       | २९९     | कुशवृस्यां             | ३२७     | भुक्त्वा तु ब्राह्मणाशौचे     | ४४८     |
| ब्राह्मणश्च पुरा         | २९८     | कैवर्तस्य खियं         | ८८९     | भूयोऽप्याचम्य                 | ४५४     |
| वेदप्रस्त्रिलितो         | २९८     | कीतलब्धाशनाः           | ६०६     | मार्जारं नकुलं                | ८४५     |
| —                        | ५१९     | खरमारुत्य विप्रो       | ९०३     | मेषसंक्रमणे भानोः             | ७०२     |
| मानवीयसंहिताम्           |         | गोधूमैरिक्षु           | ७८३     | यववीहिस                       | ७८१     |
| प्रातःकाले च             | ३०५     | ग्रहणं तु भवेत्        | ४५०     | यस्य संवत्सरात्               | ६९०     |
| मानवोपपुराण              |         | चतुर्भिर्दीर्भं        | २३०     | ये चापमृत्युना                | ८१३     |
| ऊर्ध्वपुङ्गं च शूलं      | २९५     | चन्दनागरु              | ७९०     | यो विप्रः पञ्च                | ८९०     |
| त्रिपुङ्गद्धारिणं        | ३०४     | चंद्रस्य यदि वा        | ४५०     | रक्षणीया तथा                  | ५०२     |
| मार्कण्डेयः              |         | चौले कर्मणि            | ९१५     | रौरवेऽपुण्यनिलये              | ४५२     |
| २७।२३—२४                 | ७६४     | जात्यश्च सर्वा         | ७८९     | वटासनार्कखंडिर                | २४२     |
| अग्न्यंबुहीने            | ५०२     | ततः शनैर्बलिं          | ४०२     | वज्या जन्तुमया                | ७५८     |
| अज्ञात्वा पुण्पिणी       | ९११     | ततो नित्यक्रियां       | ४०६     | विशिष्टाब्लाष्ण               | ७६२     |
| अनाहिताग्निः             | ६८५     | तन्त्रक्षत्रमहोरात्रं  | ८५८     | विश्वचक्रं द्विजो             | ९२९     |
| अन्यायोपार्जित-          | ८२२     | तस्याग्रतोऽथ           | ८३      | दैश्वदेवं देवतार्चा           | ९११     |
| अप्रत्तायां मृतायां      | ५१५     | दशाहं ब्राह्मणः        | ४७८     | शालमल्यश्वत्यभव्यानां         | २४२     |
| अमन्त्रेण कृतं           | २९३     | दासी मानधनं            | ८११     | शिवे निवेदितं                 | ९१२     |
| अन्युते वा सहस्रे        | ९०८     | देवतापुरतस्तस्य        | ८३      | शीतिमुण्णोदकात्               | २७२     |
| अर्कद्विपर्वरात्रौ       | ५११     | द्वादश्यामुपवासेन      | ८४६,८५० | शुक्रपक्षे तु                 | ७११     |
| अश्रीयात्तन्मना          | ४२४     | द्विमासं सरितः सर्वा   | २८७     | संपूर्णेकादशी                 | ८४२     |
| अह्नः षट्सु              | ७८७     | धृत्वाग्रजो गोसहस्रं   | ९२७     | सर्व्युरुत्सुन्न              | ५६७     |
| आपत्स्वपि सदा            | ९२६     | नारी खल्वननु-          | ९५८     | सपवित्रण हस्तेन               | २३१     |
| आपाङ्केयस्य              | ९२२     | नारी खल्वनुज्ञाता      | ८४७     | सम्यगाचम्य तोयेन              | २३६     |
| आम्रेक्षुखण्डताम्बूल     | २३९     | नित्यक्रियां पितॄणां   | ८१८     | सर्वंकालं तिलैः स्नानं        | २८०     |
| आम्रेक्षुखण्ड            | ३८९     | पक्षान्नं तु समादाय    | २४०     | सर्वे कण्टकिनः                | २४२     |
| आहितामिस्तु              | ६८४     | पात्राभावे तृष्णातस्तु | ८८१     | सर्वेषामपि                    | ३३५     |
| उच्छिष्ठेन तु संस्पृष्टे | २३९     | पिता पितामहश्चैव       | ९२९     | सालग्रामशिलां                 | ९१८     |
| उत्तरपोशनात्             | ४५२     | पितॄणां नामगोच्रेण     | ८१३     | सौचिकस्य खियं                 | ८९०     |
| उत्तरायणे सूर्ये         | ५५३     | पितॄनुद्विश्य          | ८०२     | सौरभेदयः सर्वहिनाः            | ४०८     |
|                          |         | पुराणानां नरेन्द्राणां | २५५     | खणिमुपनयन                     | ५१६     |
|                          |         | पूजयित्वाऽतिथीन्       | ८१०     | स्नातः स्नातान्               | ७९९     |
|                          |         |                        |         | —                             | ७९२,८१६ |

| ऋणिः                      | पृष्ठम् | ऋणिः                 | पृष्ठम् | ऋणिः                      | पृष्ठम् |
|---------------------------|---------|----------------------|---------|---------------------------|---------|
| मार्कण्डेयपुराणम्         |         | भैत्रेयसूत्रम्       |         | यमः                       |         |
| २७१९-२४                   | ५६३     | मासद्वये यदेऽ        | ७३२     | आदित्यस्य करौः            | २५८     |
| नुलाप्रतिग्रहीता          | ९२५     | मौक्षरत्यः           |         | आ निपाताच्छरीरस्य         | १२१     |
| पुत्रो भ्राता च तत्पुत्रः | ५६३     | अवालुकायुतं          | ५७८     | आपदगतो विना               | १२२     |
| प्रतिगृह्य द्विजो         | ९२६     | सहदध्यर्च्य          | ३८७     | आमंत्रितस्तु यः           | ७७९     |
| प्रधानं संपर्स्त्यज्य     | ९२५     | यजुष्                |         | आरभोमार्कवारेषु           | ६१०     |
| बाहुजादेकगुणितं           | ९२६     | २१४।८-९              | ३९९     | आषाढ्यामथ                 | ७६०     |
| मिताक्षरा                 |         | यज्ञपार्श्वः         |         | आसनं संस्पृशन्            | ७९५     |
| --                        | ८५      | ओषधीमन्तरे           | ७९८     | आहोन्मृत्तिकां प्राज्ञः   | २१५     |
| मुण्डकम्                  |         | दुहित्रा स्नुषया     | ३५५     | आहारमात्रात्              | ९७      |
| तद्विज्ञानार्थ            | ९८९     | पंचदश्याः परः        | ८५८     | आहारमात्रादधिकं           | ४११     |
| मुण्डकोपनिषद्             |         | होमान्तः पितृयज्ञः   | ७२२     | आहारस्य चतुर्भागं         | २०३     |
| ३-१-१०                    | ५५०     | यतिधर्मसमुच्चयः      |         | उत्तीर्णोदकमाचामेत्       | २३५     |
| तमेवैकं जनिथा.            | १९५     | आस्येन तु            | २०९     | उदकं च तृणं               | ४२७     |
| पाणिपात्रम्               | २०१     | क्षौमं शाणमयं        | १८६     | उद्गृत्य वामहस्तेन        | २२४     |
| मुद्गलः                   |         | देवं कृष्णं मुनि     | २०६     | उभे मुत्रपुरीषे           | १९६     |
| देवेषु द्वावेको           | ७५५     | यमः                  |         | ऊनद्विवर्षिकं             | ५०८     |
| मृकुण्डः                  |         | २१५                  | ९३४     | एकवासा अवासा              | १८१     |
| पंच चूडा आंगीरसो          | ८३      | अंके नारोपयेत्       | ४२६     | एकैकं पिण्ड               | ५३७     |
| मेधातिथिः                 |         | अंगुष्ठमात्रो भगवान् | ८०४     | एकोद्धिष्टे कुशाः कार्याः | २३१     |
| न स्नायादुत्सवे           | २७०     | अग्नौ करणवत्         | ८८६     | एतान्येव समस्तानि         | ९३८     |
| बहून्म पच्यते             | २०४     | अघवृद्धिमदा          | ५३१     | ओंकारपूर्विकाः            | ३२३     |
| भिक्षाटनं जपो             | १८८     | अदन्तजाते तनये       | ४९३,५०७ | कन्या द्वादशमे वर्षे      | १३६     |
| यावन्न स्युख्यो           | १८४     | अन्तर्जले जपेनमः     | २६१     | कपिलां विप्रमुख्याय       | ३८७     |
| संरक्षणार्थ               | १९०     | अन्तर्वतापि कर्तव्यं | ५८९     | काणाः कुठजाश्च            | ७७४     |
| --                        | ५१९     | अपचन्तमतिक्रम्य      | ४११     | कारागृहाद्विनिर्गत्य      | १०४     |
| मैत्रायणीश्वतिः           |         | अपः परनखं स्पृष्टा   | २२३     | कार्तिक्यां पुष्करे       | २८०     |
| इन्द्रस्य वज्रोऽसीति      | १८०     | अविवन्द्युर्यः       | २०४     | कार्पांसं क्षौम-          | ९४      |
| त्रिषु वर्णेष्वेका        | २०१     | अर्वांगदशाहात्       | ६१४     | किलिवर्षं हि              | ४४४     |
| यस्तु स्वैरप्रिभिः        | २५,५७०  | अल्पानामेव पयसां     | ४४७     | कुतूहलेन वा शूद्रं        | २३०     |
| भिक्षार्थं ग्रामं         | २०१     | अव्रतानाम्           | ५२      | कुलं च शीलं च             | १३४     |
| मैत्रेयः                  |         | अशुद्धौ तु परित्यागः | १०६     | कुलानीमान्यपि             | १३२     |
| मासद्वये यदेकराशि         | ७२३     | अष्टमात् द्वादशात्   | ६७०     | कुशाः काशास्तथा           | २३४     |
| मैत्रेयगृह्यपरिशिष्टम्    | ७३८     | अष्टमे तु भवेत्      | १३५     | कृच्छ्रद्वादश             | ८०७     |
| उद्वाहे पुत्रजनने         | ७३९     | अस्थिसंचयनात्        | ५६८,६३८ | केतनं कारयित्वा           | १२३     |
|                           |         | आचामाधित             | ९३९     | खंजः काणः                 | ७८६     |

| ऋणिः                     | पृष्ठम् | ऋणिः                        | पृष्ठम् | ऋणिः                    | पृष्ठम् |
|--------------------------|---------|-----------------------------|---------|-------------------------|---------|
| यमः                      |         | यमः                         |         | यमः                     |         |
| गुर्वधीनोऽस्वतंत्रः      | ११५     | द्वे लिंगे मृत्तिके         | २१६     | ब्रह्महत्यासुरापान      | ९३४     |
| गृहस्थो ब्रह्मचारी       | ७६७     | द्वौ हस्तौ युग्मतः          | २४८     | ब्रह्मा विष्णुश्च       | ६६३     |
| गोबाह्यणहतं              | १२०     | धर्मविद्वाहणः               | २२      | ब्रह्मोद्याश्च कथाः     | ७९६     |
| घृतं च सार्पं तैलं       | २८५     | न स्वरैरूपयातस्य            | ७७५     | ब्राह्मणं तु मुखं       | ७८०     |
| चक्रोपजीवी               | ४४३     | न पद्मकौ विषमं              | ११३     | भद्रं भोज्यं            | ७८५     |
| चक्षुर्दीयात्            | ४१३     | न पद्मक्त्यां विषमं         | १२२     | भिक्षुको ब्रह्मचारी     | ७६८     |
| चण्डालपुलकसानां          | ८८८     | न पृच्छेद्वोत्तरणे          | ४१३     | भूसुरो मद्यपाने         | ११८     |
| चतुर्थे प्रहरे           | ७११     | न शूद्रो यजमानं वै          | ५४५     | मद्यपः स्वैरिणी         | ७८६     |
| चतुर्दश्यष्टमी           | २४३     | न हस्तेन पिवेत्             | ४३०     | मसूरमाषसंयुक्तं         | ४३६     |
| चन्द्रसूर्यग्रहे         | ७३३     | नांकयेन्न दहेन्नात्रं       | २९९     | मातुमृताहे पित्रादीन्   | ७१८     |
| चीर्णवेदवतो              | १७२     | नाध्यापयति                  | १०४     | मातुः सपिण्डिकरणं       | ६८०     |
| जपेद्वाध्यस्य            | ३४७     | नाभेरधः स्वकायं             | ३४१     | मातृष्वसा मातृमुखी      | ८६३     |
| जातिक्रियाव              | ७७६     | नामधेयं दशम्यां             | ८१      | मूत्रे तिसः पादयोस्तु   | २१९     |
| जान्वालभ्य ततो           | ७९५     | नाशौचं नोदकं                | ४८९     | यजमाने चितास्तु ५८२,५८४ |         |
| जीवत्पिता पितामहा        | ६७८     | नित्यं नैमित्तिकं           | २५८     | यज्ञार्थमर्थं           | २२      |
| झानेन मुच्यते            | १७५     | नोदकेन न वाचा               | १३८     | यत् किञ्चित् कियते      | १४९     |
| ततस्तृतीये कर्तव्यं      | ८२      | पञ्चसूना गृहस्थस्य          | ३९५     | यत्तथा मध्यमं           | ८१७     |
| ततोऽन्नप्राशनं           | ८२      | पत्या चैकेन कर्तव्यं        | ६४३     | यत्रक्वचन               | ३८९     |
| ततः संवत्सरे पूर्णे      | ८३      | पत्न्या चैकेन               | ५३२,६७८ | यत्रक्वचन नद्यां        | ३८९     |
| ततः स्तात्वा             | ७९१     | परकीयपदेशेषु                | ७५८     | यत्सुखं त्रिषु लोकेषु   | ११०     |
| तथा क्षेभ्यतटाकादि       | ४७३     | परकीयरहस्यानि               | ४६५     | यदि संयोगकाले           | ७५      |
| तस्मादस्याधिकारो         | ६       | परपाकं सदा                  | ४४४     | यद्यद्रोचेत विश्रेभ्यः  | ८०८     |
| तस्मादुद्वाहयेत्         | १३६     | पात्राद्विरहितं             | ३५३     | यवहस्तस्ततो             | ७९६     |
| ताम्रपात्रस्थितं         | ८८२     | पादप्रक्षालनं               | ७९२     | यवागुं यावकं            | ९३९     |
| तावन्नोपस्पृशेद्विद्वान् | २२४     | पापोपकल्पनात्               | ४८२     | यश्चरेत्सर्वं           | २०१     |
| तिलदर्भसमायुक्तं         | २६४     | पितृव्यपुत्रान्             | १५३     | यस्तु प्रवजितात्        | २०८     |
| तुषाङ्गरकपालामि          | २१३     | पित्र्यं जीवपितुनोक्तं      | ७४२     | यस्त्वेकपंक्तौ          | ४२७     |
| तूष्णीं दम्पति           | ६७९     | पुनर्भौजन                   | ८२०     | यः सपिण्डिकृतं          | ६५९     |
| चीर्णनिः पिण्डान्        | ९४१     | पुराकल्पे तु नारीणां        | ८४      | या दिव्या आप            | ७९९     |
| च्यहं पिवेत्             | ९३८     | पूर्वं जलेन प्रक्षेत        | २१७     | यावद्विष्यं             | ८०८     |
| दक्षिणासंस्था            | ७८५     | पूर्वमेव परीक्षेत           | ७६५     | ये च संतानजा            | १७५     |
| दण्डं कमण्डलुं           | ११३     | प्रतिग्रहाध्यायन            | २८      | ये यजन्ति पितृन्        | ८२२     |
| दत्त्वा तोर्याजालिं      | १८०     | प्रतिश्रुताप्रदानेन         | ४८      | यो न वेत्यभि-           | ११२     |
| दृच्यां देवं शूतान्नं    | ४३०     | प्रत्यद्वमुखस्तु पूर्वाङ्गे | २१२     | यो मनुष्यां हि          | १४४     |
| दशप्रणवसंयुक्तैः         | ३२६     | प्रत्यादित्यं न मेहेत       | २१३     | रहस्ये रहस्यं           | ९३२     |
| दशवर्षा भवेत्कन्या       | १३६     | प्रयान्त्याचामतो            | २३८     | रात्रावर्वाक्षितेनापि   | २२३     |
| दैवविप्रकरेनाम्भिः       | ६८६     | प्रोक्षितं प्रणवे           | २०३     | रक्ष्यं कुमिहतं         | ७५८     |
| द्विजोऽज्ञानान्मलं       | ८८१     | ब्रह्मचारी जितक्षेधो        | ९३८     | रेतः सिक्त्वा कुमारीषु  | ८८९     |

| ऋषिः                    | पृष्ठम्                                      | ऋषिः                                                                             | पृष्ठम्                                                   | ऋषिः                                                                         | पृष्ठम्                                                   |
|-------------------------|----------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------|
| यमः                     |                                              | याज्ञवल्क्यः                                                                     |                                                           | याज्ञवल्क्यः                                                                 |                                                           |
| विद्यायुक्तो धर्मशीलः   | ४८                                           | ११६                                                                              | २                                                         | आ. ६३-६४                                                                     | १४०                                                       |
| विप्रस्तु वध            | ९२०                                          | आ. ७                                                                             | १                                                         | आ. ६५                                                                        | १३६                                                       |
| विप्रस्य दंडः           | ९३                                           | आ. ८                                                                             | ११४                                                       | आ. ६५                                                                        | १३७                                                       |
| विप्रस्य मेष्वला        | ९५                                           | ११८                                                                              | ३                                                         | आ. ६६                                                                        | १३९                                                       |
| विप्रः स्वृष्टो निशायां | २७१                                          | ११९                                                                              | ३                                                         | आ. ६७                                                                        | १३९                                                       |
| विरजाद्विगुणं           | ३५०, ९३३                                     | आ. ९                                                                             | ११६, ८६९                                                  | आ. ७०                                                                        | १६३                                                       |
| विवाहं चोपनयनं          | १३६                                          | आ. १०                                                                            | ७२                                                        | आ. ७१                                                                        | ४७५                                                       |
| वेदविद्यावत             | ७६१                                          | आ. ११                                                                            | ७८                                                        | आ. ७२                                                                        | १६३, ८९४                                                  |
| वैश्वदेवं पुरोडाशं      | ८६                                           | आ. १२                                                                            | ८१, ८३                                                    | आ. ७३                                                                        | १५७                                                       |
| शमीं देवश्च             | ८१                                           | आ. १३                                                                            | ८३, ८४                                                    | आ. ७५                                                                        | १५६                                                       |
| शलिं संवासतो            | ८९                                           | आ. १४                                                                            | ८७                                                        | आ. ७८                                                                        | १५४                                                       |
| शुना चैव श्वपाकेन       | २६७                                          | आ. १६                                                                            | २१२                                                       | आ. ७९                                                                        | ७४, १५९                                                   |
| संध्यामुपासते           | ३११                                          | आ. १८                                                                            | २२१                                                       | आ. ८०                                                                        | ७५                                                        |
| संवत्सरोषिते            | ११६                                          | आ. १९                                                                            | २२५                                                       | आ. ८१                                                                        | ७४                                                        |
| सततं प्रातहस्त्याय      | ३०, ११६                                      | आ.                                                                               | २२२, २२५                                                  | आ. ८२-८८                                                                     | १५६                                                       |
| सत्कृत्य भिक्षवे        | ४१०                                          | आ. २१                                                                            | २२२                                                       | आ. ८६                                                                        | १६०, ८९५                                                  |
| सपिण्डीकरणं नैव         | ६६३                                          | आ. २३                                                                            | ३२३                                                       | आ. ८९                                                                        | २४, ५६९                                                   |
| सपिण्डीकरणात्           | ६५९                                          | आ. २४-२५                                                                         | ३३६                                                       | आ. ९०                                                                        | १८, ८५                                                    |
| समानिक्रान्तकालाश्च     | ८९                                           | आ. २५                                                                            | ९८, ७५५                                                   | आ. ९१-९२                                                                     | ७०                                                        |
| समर्घं धनमादाय          | ५१                                           | आ. २६                                                                            | १०७, ११३                                                  | आ. ९३-९४                                                                     | ७१                                                        |
| समार्घं धनमुद्धृत्य     | ७७३                                          | आ. २८                                                                            | ३१                                                        | आ. ९५                                                                        | ७२                                                        |
| समुत्थितस्तु यो         | ४२८                                          | आ. २९-३०                                                                         | ९६                                                        | आ. ९६                                                                        | ७२                                                        |
| समूलस्तु भवेद्भर्भः     | २३१                                          | आ. ३१                                                                            | ९७                                                        | आ. ९७                                                                        | ६६३                                                       |
| सहस्रपरमां              | ३३७                                          | आ. ३२                                                                            | १६, ७६९                                                   | आ. ९७                                                                        | ३५४                                                       |
| सायाह्नस्त्रिमुहूर्तं   | ७११                                          | आ. ३३                                                                            | ११४                                                       | आ. ९८                                                                        | २४७, ३१५                                                  |
| सायाह्नस्त्रिमुहूर्तः   | ७०९                                          | आ. ३४-३५                                                                         | १०४                                                       | आ. ९९                                                                        | ३७४                                                       |
| खी यदा बालभावेन         | १५३                                          | आ. ३६                                                                            | ११८                                                       | आ. १०१                                                                       | ३७१                                                       |
| स्वस्तीति ब्राह्मणो     | ११०                                          | आ. ३७                                                                            | ८९                                                        | आ. १०२                                                                       | ३९६                                                       |
| हंसे वर्णासु            | ७४७                                          | आ. ३८                                                                            | ८९                                                        | आ. १०३                                                                       | ४०९                                                       |
| हस्तदृच्छा तु या        | ४३०                                          | आ. ३९                                                                            | ८८                                                        | आ. १०४, १०५, १०६                                                             | ४०९                                                       |
| होमाग्रदान              | ४०५                                          | आ. ४०                                                                            | २९                                                        | आ. १०६                                                                       | ४२२                                                       |
| —                       | २२ टीप, ५०, ५०४,<br>५३१, ७०८ टीप,<br>८०६ टीप | आ. ४१-४८<br>आ. ४९-५०<br>आ. ५१<br>आ. ५२-५३<br>आ. ५३<br>आ. ५५<br>आ. ५७<br>आ. ५८-६१ | ३७३<br>१२०<br>११९<br>१२५<br>४९७<br>१३४<br>१३२, १३३<br>१४१ | आ. १०७<br>आ. १०८<br>आ. १०९<br>आ. ११०<br>आ. १११<br>आ. ११२<br>आ. ११३<br>आ. ११४ | ४०९, ४१३<br>४१५<br>४१५<br>४१५<br>४१२<br>४१५<br>४१५<br>४१५ |
| याज्ञवल्क्यः            | .                                            |                                                                                  |                                                           |                                                                              |                                                           |
| ११२                     | ९                                            |                                                                                  |                                                           |                                                                              |                                                           |
| आ. ३                    | ६                                            |                                                                                  |                                                           |                                                                              |                                                           |
| आ. ४-५                  | ८                                            |                                                                                  |                                                           |                                                                              |                                                           |

| क्रषि:       | पृष्ठम् | क्रषि:       | पृष्ठम् | क्रषि:       | पृष्ठम्   |
|--------------|---------|--------------|---------|--------------|-----------|
| याज्ञवल्क्यः |         | याज्ञवल्क्यः |         | याज्ञवल्क्यः |           |
| आ. ११५       | २०९     | आ. ११६       | २३६     | आ. २६५-२६६   | ७६३       |
| आ. ११६       | १०६     | आ. ११८       | ६९      | आ. २६९       | ६६३       |
| आ. ११७       | १०७     | आ. २००       | ४८      | आ. २६९-२७०   | ८२२       |
| आ. ११८       | १८      | आ. २०२       | ५८      | आ. २७७       | ९०४       |
| आ. ११९       | ६४      | आ. २०३       | ४०      | आ. २९५       | २३७       |
| आ. १२०       | ३८३     | आ. २०४।२०५   | ४१      | आ. ३०९-३९९   | ६४        |
| आ. १२०।१२१   | ६७      | आ. २१३       | ५४      | आ. ३२५       | ७७७       |
| आ. १२३       | ४६५     | आ. २१५       | ५७      | आ. ३२८       | ६७६       |
| आ. १२४       | २१,६०   | आ. २१७-२१८   | ७६९     | आ. ३४२       | ६७७       |
| आ. १२५       | २२      | आ. २१९       | ७६६     | आ. ३४९       | २५६       |
| आ. १२७       | २२      | आ. २२०       | ७०६     | आ. ३६२-३६३   | ८८२       |
| आ. १२८       | ६०      | आ. २२२       | ७७२     | २१३७         | ६४        |
| आ. १३०       | ५५      | आ. २२५       | ८१८     | व्य. ८३      | ९२७       |
| आ. १३१       | २५१,४२६ | आ. २२६-२२८   | ७९४     | व्य. ११७     | ९२९       |
| आ. १३४-१३५   | २१४     | आ. २२७       | ७५८,७७७ | व्य. १२८-१३२ | १०१,५६९   |
| आ. १३८       | ४३०     | आ. २२८       | ७७७     | व्य. १३२     | ५६३       |
| आ. १४०       | ५६      | आ. २२९       | ७९६     | व्य. १३५     | ५६५       |
| आ. १४१       | ५५      | आ. २३०       | ७९७     | व्य. १४५     | ५६४       |
| आ. १४२       | ३२      | आ. २३१       | ७९९     | व्य. १७५     | ४७,४८,१०३ |
| आ. १४८-१५१   | ३५      | आ. २३३       | ७९७     | व्य. १८३     | ९९९       |
| आ. १५२-१५३   | ४६०     | आ. २३५       | ७९९     | व्य. २८६     | ८९४       |
| आ. १५६       | ५       | आ. २३६-२३७   | ८०१     | प्रा. १-२    | ५०८       |
| आ. १६१       | ४४३     | आ. २३८       | ८०४     | प्रा. ३-४    | ५१८       |
| आ. १६४-१६५   | ४४३     | आ. २३९       | ८०६     | प्रा. ४      | ६००       |
| आ. १६५       | ४२५     | आ. २४०       | ८०७     | प्रा. ७      | ६०४       |
| आ. १६७-१६८   | ४३१     | आ. २४१       | ८१२     | प्रा. ८-१०   | ६०४       |
| आ. १६९-१७०   | ४३६     | आ. २४२       | ८१५     | प्रा. ११     | ६०४       |
| आ. १७६       | ४३४     | आ. २४४-२४९   | ८१४     | प्रा. १२-१३  | ६०४       |
| आ. १७७       | ४५१     | आ. २४९       | ८१९     | प्रा. १४     | ५४६       |
| आ. १७८       | ४७१     | आ. २५१।२५२   | ६४८     | प्रा. १५     | ५५८       |
| आ. १७९       | ४५१     | आ. २५३       | ६७४     | प्रा. १६     | ५४७       |
| आ. १८४-८५    | ४६९     | आ. २५५       | ६९०     | प्रा. १६     | ६०६       |
| आ. १८६-१८७   | ४६९     | आ. २५५-२५६   | ६४७,६५९ | प्रा. १७     | ४७८,६०३   |
| आ. १८७       | ४७५     | आ. २५६       | ६३७,६९८ | प्रा. १८     | ५०१,५१८   |
| आ. १८९       | ४३३     | आ. २५८, २६०  | ७८२     | प्रा. १९     | ५०,५००    |
| आ. १९०       | ४६८     | आ. २६१       | ७४९,७८२ | प्रा. २०     | ४९१,५३०   |
| आ. १९१       | ४६८     | आ. २६२-२६४   | ७५०     | प्रा. २१     | ५३८       |
| आ. १९२       | ४७३     | आ. २६४       | ७४७,७८२ | प्रा. २२     | ४९४       |

| क्रषिः        | पृष्ठम्  | क्रषिः              | पृष्ठम्     | क्रषिः                   | पृष्ठम् |
|---------------|----------|---------------------|-------------|--------------------------|---------|
| याज्ञवक्लयः   |          | याज्ञवल्क्यः        |             | जपयज्ञो हि               | ३४८     |
| प्रा. २३      | ५०७,५१७  | प्रा. २५३-२५६       | ८७९         | जलमध्ये स्थितो           | २६९     |
| प्रा. २४      | ५२८      | प्रा. २५७-२५८       | ८८३         | त्रिरात्रं दशरात्रं      | ५१०     |
| प्रा. २५      | ५२९,५२९  | प्रा. २५९-२६०       | ८८६         | देशांतरसृतिं             | ४८५,५२२ |
| प्रा. २६      | ५४२      | प्रा. २६१           | ९५४         | द्वादशाहमनामिस्तु        | ३५६     |
| प्रा. २७      | ४८७      | प्रा. २६३-२६४       | ८७५         | पारंपर्यागितो            | २९      |
| प्रा. २८-२९   | ४८९      | प्रा. २६५           | ९३१         | प्रोषिते कालशेषः         | ५३४     |
| प्रा. ३०      | २६५      | ना. २६८-२६९         | ८७८         | ब्राह्मणं विनियोगं       | ३१६     |
| प्रा. ३२      | १७५      | प्रा. २७०-२७६       | ८७७         | मत्स्यकच्छपमण्डूका       | २५४     |
| प्रा. ३५      | ६०       | प्रा. २७५           | ९३१         | मद्मोहहना                | ८९५     |
| प्रा. ३६-४०   | ६२       | प्रा. २७८           | ८९२         | मृते स्नानेन             | ४९२     |
| प्रा. ४१      | ४८०      | प्रा. २७९           | ९२०         | मृत्तिका गोमयं           | २५९     |
| प्रा. ४५      | १७०      | प्रा. २८५-२८७       | ८९८         | य एष विस्तरः             | २६३     |
| प्रा. ५६-५७   | १७१      | प्रा. २८९           | ९०१         | यत्पुंसां पर             | १६४     |
| प्रा. ५८      | १८८      | प्रा. २९०           | ७०२ टी, ९२४ | यथा कर्थंचित्            | ४२      |
| प्रा. ५९      | १९९      | प्रा. २९१           | ९०३         | यदा यदा तु               | ९३१     |
| प्रा. ६०      | २०२      | प्रा. २९२           | ९००         | या संघ्या सा             | ३१३     |
| प्रा. ६५-६६   | १९२      | प्रा. २९३           | ८९९         | यो यस्य विहितः           | ७३८     |
| प्रा. ७५      | १६०      | प्रा. २९६           | ८७८         | वनस्पतिगते               | ७८८     |
| प्रा. ८३      | ४९४      | प्रा. २९८           | ८६४         | वृथा तूष्णोदकस्नानं      | २५८     |
| प्रा. १९०-१९३ | १६६      | प्रा. ३०१           | ८६८, ९३२    | शतमिन्दुक्षये            | ४७      |
| प्रा. २०६-२०८ | ८६०      | प्रा. ३०२           | ९३४         | सुरापः स्वर्णहारी        | ३४९     |
| प्रा. २०९-२१० | ८६०      | प्रा. ३०४-३०५       | ९३५         | — १२८, १३१, २३८          |         |
| प्रा. २१०-२१५ | ८६१      | प्रा. ३०६           | ३९५, ८८८    | ४४१, ४४७, ५१४, ५१९, ५२०, |         |
| प्रा. २१७     | ८६०      | प्रा. ३१०           | ३३५         | ५२१, ५६१, ८००, ८१२, ८६८, |         |
| प्रा. २१८     | ८६२      | प्रा. ३१५           | ९३७         | ८९७, ९२९                 |         |
| प्रा. २१९-२२० | ८५९      | प्रा. ३१७           | ९३८         | योगयाज्ञवल्क्यः          |         |
| प्रा. २२१-२२५ | ८५९      | प्रा. ३१९-३२०       | ९३६         |                          |         |
| प्रा. २२६     | ८६७      | प्रा. ३२०           | ९३७         | अग्न्यगारे जलान्ते       | ३२१     |
| प्रा. २२७     | ८६२      | प्रा. ३२१           | ९३७         | अग्राद्यास्त्वधमा        | २५८     |
| प्रा. २२८     | ८६४      | प्रा. ३२२           | ९३८         | अलाभे धौतवस्त्रस्य       | २५२     |
| प्रा. २२९     | ८६५, ९२९ | प्रा. ३२३           | ९३९         | असामर्थ्यात्             | ५४९     |
| प्रा. २३०     | ८६५      | अनातंश्रोत्सृजेत्   | ३१३         | असामर्थ्याच्छरीरस्य      | २८९     |
| प्रा. २३१     | ८६५      | अमत्रं वाथ          | ४१९         | आगम्यागमनात्             | २४५     |
| प्रा. २३४-२४२ | ८६६      | अमावास्याष्टका      | ७२२         | आचमनं स्वकीय             | ३१५     |
| प्रा. २३५     | ३१       | अविशेषेण पित्र्यस्य | ७३६         | आवाय पूर्वे              | ७३७     |
| प्रा. २४३     | ८७१      | अशक्ताविष्ट         | ९०२         | आसत्यक्षुर्च पूर्वे      | ३७६     |
| प्रा. २४४-४५  | ८७२      | गृहीतशिश्रोत्थाय    | २१५         | उत्थायावश्यकं            | ३३७     |
| प्रा. २५२     | ८६४, ८७२ | गोवालं दर्भसूत्रं च | २३२         |                          |         |

| क्रमिः                    | पृष्ठम्  | क्रमिः                   | पृष्ठम् | क्रमिः                     | पृष्ठम् |
|---------------------------|----------|--------------------------|---------|----------------------------|---------|
| योगयाज्ञवल्क्यः           |          | योगयाज्ञवल्क्यः          |         | रत्नावली                   |         |
| एवं संपूज्य               | ३९०      | यावन्नोदेति भगवान्       | २८७     | दंतानां शोभनं              | ४५३     |
| एवं संमार्जनं             | ३२३      | रजो दृष्टेभसि            | २६७     | दर्शे स्नानं न             | २६३     |
| ओंकारं पूर्वमुच्चार्यं    | ३३८      | रात्यन्तयामनाडी ह्वे     | २४७     | देशः कालस्तथा              | ७५७     |
| कव्यवाहोऽनलः              | ३७९      | वसून् रुद्रान्           | ३७८     | धार्याणि शिरसा             | ३६७     |
| गंगायां यमुनायां          | ६०९      | वायुभक्षो दिनं           | ३३५     | न पिता नात्मजो             | १५७     |
| गत्वोदकान्तं              | २५९      | व्याहृतीनां तु           | ३२५     | नैवेद्यस्य त्वलाभे         | ३८९     |
| ग्रहणोद्वाहसंक्राति-      | २७०      | शं न आपस्तु              | २९९     | पर्वभिश्च जपः              | ३४३     |
| घृतयुक्तैः                | ३३६      | शिवे निवेदितं            | ९९२     | पर्वभिस्तु जपेद्वेवी       | ३४३     |
| तिसूभिर्मध्यमाभि          | २२६      | संधौ संध्यामुपासीत       | ३१०     | पित्रोमृतान्तराले          | ५३३     |
| तूष्णीमेवावगाहेत          | २३९      | संध्ययोहमयोः             | ३२०     | प्रवासिनोऽग्नि             | ३५९     |
| त्रिशत्कोट्यस्तु          | ३१२      | सवर्णेभ्यो जलं           | ३७८     | भक्ष्यं चेच्छिशु           | ४३१     |
| त्रिरात्रफलदा             | २५५      | सहस्ररुत्वः              | ३३८     | मंगल्यं पूर्णकुम्भं        | ४५७     |
| देवानामर्चनं              | ३८४      | सौवर्णं राजतं            | ३५३     | मुकुलैनार्चयेद्वेवं        | ३८८     |
| धात्रीफलैः                | २८०      | स्नात्वैवं वाससी         | २५१     | वल्लीपलाशपत्रेणु           | ४१९     |
| न तांवत्पाप               | ३५९, ९३४ | स्नानं दानं जपं          | २५३     | विकिरे पिण्डदाने           | ३८३     |
| नद्यामस्तमिते             | २५७      | स्फटिकेन्द्राक्ष         | ३४२     | संकानिर्वाध दशों           | ६१५     |
| नव प्रणव                  | ३१५      | हस्तेऽश्रीयात्           | २७७     | सर्वं तु तरितुं            | ४२५     |
| नास्तिक्यभावात्           | ३८०      | हत्वा लोकानपीमांसु       | २६१     | राजाविषयः                  |         |
| पवित्रे स्थ इति           | ७९८      | —                        | २८१     | सहस्रधेनुदाने              | ९२७     |
| पादयोर्जघयो               | ३२५      | योगवासिष्ठम्             |         | रामायणम्                   |         |
| परकीयनिपानेषु             | २५६      | संसारान्मोक्ष            | ३५०     | सर्वे क्षयान्ता निचयाः     | ६०४     |
| पूरकः कुंभको              | ३२४      | योगीश्वरः                |         | सा स्वभावेन                | ३७४ दीप |
| पूरके विष्णुसायुज्यं      | ३२४      | आधीरात्रादधः             | ८३३     | सेतुबन्ध इति               | ८७१     |
| प्रथमं कर्कटादौ तु        | २८८      | रोहिणीसहिता              | ८३३     | रद्धरक्षकङ्कः              |         |
| प्रदक्षिणं समावृत्य       | ३६९      | स्वर्णयुक्तं ताम्रपात्रं | ४५      | खणिं सापिण्डये             | ६७९     |
| प्राणायामत्रयं            | ३२५      | रत्नकोशः                 |         | रोमशः                      |         |
| प्रातस्तिष्ठन् जपेत्      | ३३७      | हस्तो मूलश्रवण           | ७८      | निर्धारितो बन्धनाग्न्यादैः | ४९०     |
| प्रातः सह गोमयेन          | २४७      | रत्नमाला                 |         | लघुयमः                     |         |
| बाह्यानि करणानि           | ३२०      | जन्ममासि न च             | १४७     | अन्नहीनं क्रियाहीनं        | ८०६     |
| ब्रह्मचार्याद्विताभि      | ३३६      | रत्नावली                 |         | लघुव्यासः                  |         |
| ब्रह्माणं तर्पयेत्        | ३७८      | अनुज्ञा द्विगुणौ         | ६४९     | ऋगादिकम्                   | ११९     |
| भूर्भुवस्वर्मह            | ३२३      | अपकं स्नेहपकं            | ४३०     | वेदस्याध्ययनं              | १२६     |
| मांत्रं भौमं तथाऽऽस्त्रेण | ५४९      | अपि स्यात्सकुले          | ४०२     | लघुहारीतः                  |         |
| य एता व्याहृतीः           | ३२६      | उच्छिष्ठेत्रेव           | ८१३     | इन्द्राभी यत्र             | ७२३     |
| यादि वाग्यमलोपः           | ३४७      | कर्पूरागसु               | ३९३     | एकमध्यक्षरं                | १२०     |
| यद्युद्गतान्              | ३७७      | चण्डालाशुचि              | ३४०     | प्रत्यक्षदं द्वादशे        | ७०२     |
| यावद्वावानृष्टीश्चैव      | ३८३      |                          |         |                            |         |

| ऋणिः                    | पृष्ठम्  | ऋणिः                   | पृष्ठम्       | ऋणिः           | पृष्ठम्  |
|-------------------------|----------|------------------------|---------------|----------------|----------|
| <b>लिखितः</b>           |          | <b>लौकाक्षिः</b>       |               | <b>वसिष्ठः</b> |          |
| छिद्राण्येतानि          | ३९       | प्रत्यक्षे तु न        | ५५३           | ११४-५          | ७, १२८   |
| भुक्त्वा वार्धुषिकं     | १०७      | मध्यमानामिकां          | ३०२           | ११७            | १३१      |
| भुक्त्वोपस्थाय          | ४५४      | मातामहस्य गोच्रेण      | ६८९           | १२३            | १२९      |
| <b>लिखितपराशारः</b>     |          | मृतेऽहनि समासेन        | ६९६           | १२५-२७         | १३४      |
| परपाकनिवृत्तस्य         | ४४५      | श्राद्धं कुर्यात्      | ६९८           | २१३            | ८६       |
| <b>लिंगपुराणम्</b>      |          | श्राद्धं कुर्यादिवश्यं | ७३५           | २१६            | ८६       |
| इशानेन शिरोदेशं         | २९०      | श्राद्धानि षोडश        | ६५६           | २१७            | ८६       |
| तुलायां गोसहस्रे        | ९२७      | षष्ठे मासेऽन्नप्राशनं  | ८२            | २१३७-३९        | ६९       |
| दृत्तामिमां कल्पलतां    | ९२९      | सपिण्डिकरणात्          | ६९२           | ३१६-१७         | ८७४      |
| मुखजो धनलोभेन           | ९२९      | सर्वाभावे स्वयं        | ६७०           | ३१३५           | २२४      |
| ततो विष्णोः प्रसादेन    | २९७      | सिनीवाली द्विजैः       | ७३९           | ३१३६           | २२२      |
| त्रिपुङ्गं सुरविप्राणां | २९६, ३०८ | —                      | ५०९           | ३१३८           | २१६      |
| भस्म विद्वि परं         | ३०३      | <b>लौगाक्षिः</b>       |               | ३१५७           | ४७९      |
| केचित्कापाल             | ३०६      | त्रिपुङ्गधृग्विप्रवरो  | ३०८           | ४१८            | १२६      |
| <b>लौकाक्षिः</b>        |          | पितर्युपरते पुत्रो     | ६३७           | ४१४-१५         | ५४७, ६०६ |
| अन्येषां प्रेतकार्याणि  | ६४०      | मातामहस्य गोच्रेण      | १२९           | ४१८            | ४९८      |
| अप्रशस्तेषु             | ८१६      | श्रुतिस्मृतिविरोधे     | ७             | ४१२८-२९        | ४९५      |
| अमाश्राद्धं गयाश्राद्धं | ६७२, ७३७ | सायमेवामि              | ९८            | ४१३४           | ४९३, ५०९ |
| गृहामिद्विजदेवानां      | ४०७      | <b>वत्सः</b>           |               | ६१३            | ४, ९७    |
| तिथेः परस्या            | ८५६      | प्रदोषव्यापिनी         | ८२९           | ६१९८           | २१६      |
| तूष्णीमथोदकं            | ५१३      | सर्वोपायैरसाध्यः       | १४२           | ७१७-१७         | १२०      |
| तूष्णीमेवोदकं           | ५१९      | <b>वरदराजीयम्</b>      |               | ८१९-२          | १२५      |
| तृतीयस्य वर्षस्य        | ८३       | ईडाकरणपूर्व            | ९९            | ८१३०-३९        | ७७८      |
| तृतीये गर्भमासे         | ७८       | करणे ब्रात्यतां        | ९९            | ९०१२४          | २०९      |
| त्रीनंशानोपसर्थस्य      | ८५४      | तच्छब्दथ्रुते-         | ३२७           | ९११३           | ३९६      |
| न ख्याश्च वृक्षोत्सर्गः | ६४६      | दर्शे प्रेतदिनेषु      | ६१४           | ९२१२०          | ४२५      |
| नामान्नचौल              | ७५४      | प्रागद्वाज्जननी        | ५२४, ६२२      | ९१५५-५७        | ९३       |
| नियतेषु निमित्तेषु      | ७५४      | मृतजाते जातमरणे        | ५०३           | ९१६४-६६        | ९४       |
| पक्षान्तं कर्म          | ४०७, ८१९ | संपातात्पितु-          | ४९२           | ९१७६-७९        | ८९       |
| पत्नीपुत्रस्नुषा        | ६४०      | —                      | १२८, १२९, ४९४ | ९३५१           | ८९८      |
| पितामहादिभिः            | ६७८      | <b>वराहपुराणम्</b>     |               | ९४२०           | ९१४      |
| पित्र्यं निर्वपेत्      | ४०७      | मार्गशिर्षे सिते       | ८२९           | ९४२३           | ४३२      |
| पित्र्यं निर्वपेत्पाकं  | ८१९      | वस्त्रशौचादि           | ७७६           | ९४२८-२९        | ४३७      |
| पित्रोद्योर्दशाह        | ६४०      | —                      | ६६३           | ९४३७           | ४३६      |
| पुष्पवस्त्रपि           | ६८८, ७१४ | <b>वराहमिहिरः</b>      |               | ९५१३-६         | ४८, १०३  |
| पूर्वाङ्गे वाथ          | ८५४      | एकोद्दरप्रसूतानां      | ९४५           | ९५१९           | ५६९      |
|                         |          | देशाचारस्तावद्         | ९३९           | ९६१२३          | ४९९      |

| क्रमिः                 | पृष्ठम् | क्रमिः                     | पृष्ठम् | क्रमिः                     | पृष्ठम् |
|------------------------|---------|----------------------------|---------|----------------------------|---------|
| वसिष्ठः                |         | वसिष्ठः                    |         | वसिष्ठः                    |         |
| १७११-२                 | ७६      | अब्रता हनधीयाना            | ९७      | दद्यमानं तु                | ६४२     |
| १७११७                  | १२६,६८१ | अष्टौ दश द्वादश            | १५२     | द्वादशरात्रम्              | ८७२     |
| १७१५१-५३               | १५४     | आनृशंस्यं परो              | ७७१     | न निःशेषरुत्               | ४३१     |
| १७१७०                  | १३५     | आपोशनं सर्वतीर्थं          | ४२२     | नासाग्रवर्तनादोर्यैः       | ५५५     |
| १७१७२                  | १३८     | आपोहिष्टेदमापश्च           | २६०,२६१ | नास्तिक्यभावात्            | २४७     |
| १७१७३                  | १४५     | आविद्कं सौरमासे            | ७०५     | पञ्चमीं सप्तमीं            | १२८     |
| १७१७४                  | १३९     | आमंत्रितो योऽन्त्यः        | ११२     | पवित्रकर एकाग्रः           | २५४     |
| १८११                   | ८६७,८६८ | आशौचान्ते तु               | ६४५     | पितुर्मरणकाले तु           | ५५३     |
| २०१८                   | ९०३     | आ सप्तमात्                 | ४९७     | पित्र्येऽस्तमयवेलायां      | ७१३     |
| २०११२                  | ९०२     | उपवासे तथा                 | ८५०     | पुत्रजन्मनि यज्ञे          | ७९      |
| २०११३                  | ८८७     | उपवासे तथा श्राद्धे        | २४४     | प्रचरन्नभ्यवहार्येषु       | २४०     |
| २१११                   | ८९३     | उपस्थानं स्वकैर्मजैः       | ३४४     | प्रणवेनैव                  | २०७     |
| २१११०                  | ८९४     | उभयोर्हस्तयोः              | ८०६     | प्रमीतपितृकः               | ५३८,६२८ |
| २११२८                  | ९००     | ऊर्ध्वं चतुर्थ्याः         | ७४६     | प्राक्प्रत्यङ्गमुख         | ९४९     |
| २११२९                  | ४४५     | ऊर्ध्वं दशाहात्            | ५३४     | प्राक्प्रत्यङ्गमुखयोः      | ९४९     |
| २११२९-३०               | ८९९     | ऋक्सामार्थर्वं             | ३७४     | प्राणाहुनीषु सोमे च        | २३९     |
| २११५८-६०               | ९५      | एकस्मिन्सावने              | ८४४     | ब्रह्मचारिणः शवकर्मणो      | ५५८     |
| २३११-२                 | १२२     | एकादशी तृतीया              | ८३१     | ब्रह्मणकुले                | ७६९     |
| २३१७-८                 | ५४६     | एकादशीसमुत्थेन             | ८३८     | भस्म विद्वि परं            | ३०३     |
| २३१९-२२                | ९९९     | औदुंवर्यामथा               | ५८१     | भार्याहीनस्तु              | १५२     |
| २३१२५-२६               | ५४७     | कांस्यपात्रे हविर्दृष्ट्वा | ३०९     | मांसमन्नं तथा              | ४१४     |
| २३१३१                  | २६९     | किंचिद्वेदमयं              | ४९      | मृदैक्या शिरः              | २५९     |
| ४११२०                  | २४०     | कृष्णाष्टमी स्कंदषष्ठी     | ८३१     | य आत्मत्यागिनां            | ९२०     |
| ६५१२९                  | ९२२     | केचित्कापाल                | ३०६     | यच्छासीयैस्तु              | ११६     |
| ७०१४२                  | ९३६     | सुते निष्ठीविते            | २३६     | यतीन्साधून्वेति            | ७६७     |
| ७०१४५                  | ९४०     | गुरोरवज्ञया                | ३९५     | यत्कृतं प्रेतमुद्दिश्य     | ६२६     |
| अकृत्वा वैश्वदेवं      | ४०६     | गृहस्थ एव                  | १६९     | यदा यदा तु                 | ३३६     |
| अभिक्षेपो नातिशवं      | ५८३     | ग्रस्तोदये विधोः           | ४५०     | यां तिथिं समनु-            | ३३      |
| अग्न्याधेयं प्रतिष्ठां | ७२८     | ग्रहणे संक्रमे वाणिपि      | २७२     | यावन्न लज्जयांगानि         | १३५     |
| अज्ञातपूर्वाणि न       | २४२     | चतुर्विधानां भिक्षुणां     | ६६३     | ये ते शतम्                 | २६०     |
| अनाहिताम्भिः           | ५६८     | चतुर्हस्तसमायुक्तं         | २६३     | वाराणस्यां मृतो            | ४८८     |
| अनुयाने च पत्या        | ६४३     | चन्द्रसूर्यग्रहे           | २७२     | विशाखा रोहिणी              | ६०५     |
| अनुयाने तु             | ५३२     | चीर्णब्रह्मचर्यो           | १७२     | वैधे कर्मणि                | ३५      |
| अनुयाने तु पतिना       | ६७८     | जन्मन्यथोप                 | ७५३     | वैधे कर्मणि तु ५५३,५९२,६१२ |         |
| अप्रत्याख्यायिनं       | ९६      | ज्ञातयः सप्तमात्           | ५९०     | व्युत्क्षेणापि             | ६७३     |
| अप्रामाण्यं च          | ६       | ततो विष्णोः प्रसादेन       | २९७     | श्राद्धे नोद्वासनीयानि     | ८९८     |
| अधंप्रसृतिमात्रा तु    | २१८     | त्रिवित्तपूर्णा            | ३६६     | श्रुतिं स्मृतिं            | ९९८     |
| अवश्यं ब्राह्मणो       | ११      | दर्शे रविग्रहे             | ७१७     | संवत्सरमध्ये               | ७२९     |

| ऋणिः                      | पृष्ठम्  | ऋणिः                  | पृष्ठम् | ऋणिः                 | पृष्ठम् |
|---------------------------|----------|-----------------------|---------|----------------------|---------|
| <b>वासिष्ठः</b>           |          | <b>वामनपुराणम्</b>    |         | <b>विज्ञानेश्वरः</b> |         |
| सन्तपर्येन्निषिद्धे       | ३८२      | सत्यात्प्रमदितव्यं    | ३०९     | पृ. ५ पं. ३०         | २१७     |
| सप्तमेऽहि तृतीये          | ६०५      | सरस्वती नदी           | २८८     | पृ. १२ पं. २९-३०     | १२४     |
| सप्तागाराण्य              | २०१      | सरस्वती नदी पुण्या    | २८८     | पृ. १३ पं. १-५       | १२४     |
| सर्ववेदपवित्राणि          | ३४७      | हिरण्याश्वं द्विजो    | ९२८     | पृ. १३ पं. २५-२६     | १२६     |
| सव्योत्तराभ्यां           | ५९७      | --                    | २८३     | पृ. १४ पं. ७५        | १२८     |
| सूतकांते भवेन्नारी        | ४६३      | <b>वायुपुराणम्</b>    |         | पृ. २० पं. १-३       | ७४      |
| खीपुंसयोस्तु              | १३८      | अभार्यो दैविके        | ६८६     | पृ. २३ पं. २७-२८     | १६२     |
| स्नानशाट्यां              | २५०      | आहृत्य दक्षिणाग्निं   | ६८४     | पृ. २४ पं. १८-२०     | १६२     |
| स्वाध्यायिनं कुले         | ८७४      | गतंवीर्यश्य यो        | ८१७     | पृ. २५ पं. १४        | २५      |
| हारिपूजापरो               | ३५२      | जीरकं मरिचं           | ७८२     | पृ. २५ पं. १५        | ५७१     |
| हित्वा सकल                | ९३४      | ततस्थिपुङ्डं रचयेत्   | ३०९     | पृ. २६ पं. २२        | ७०      |
| हित्वा सकलपापानि          | ३५१      | ब्रयोदृश्यस्तगते      | ८५२     | पृ. २८ पं. २१        | ३५४     |
| -- ११०, १४६, ४७५, ४८३     |          | दिवसस्याष्टमे भागे    | ७११     | पृ. ३१ पं. १४        | ४१५     |
| <b>वासिष्ठधर्मसूत्रम्</b> |          | पत्न्यै प्रजार्थं     | ८१७     | पृ. ३२ पं. २४        | २०९     |
| ३१४                       | ४११      | परिवेषणं प्रशस्तं     | ८०३     | पृ. २४ पं. १६        | ६४२     |
| २६।१०                     | ३५२      | फलस्यानंतता           | ८०३     | पृ. २९ पं. १६-१७     | ३८३     |
| <b>वासिष्ठशातातपौ</b>     |          | बिल्वामलक             | ७८१     | पृ. ३८ पं. ६९        | ४२६     |
| नामेऽर्धमना-              | ९१       | याचते यदि             | ८०८     | पृ. ४१ पं. ११        | ३५      |
| <b>वासिष्ठसंहिता</b>      |          | एकादशी विष्णुना       | ८४१     | पृ. ४२ पं. ११        | ३६      |
| अथातः संप्रवक्ष्यामि      | ६४७      | संन्यासिनोऽप्याब्दि   | ७५०     | पृ. ४४ पं. २३-२४     | २५६     |
| अष्टमी रोहिणीयुक्ता       | ८३३      | सिंहगाशिगते           | ८३२     | पृ. ५२ पं. १९-२०     | ४६९     |
| अहोरात्रं तयोर्योगो       | ८३४      | --                    | ३०६     | पृ. ५४ पं. १५-१९     | ४७१     |
| यत्तु रुद्रार्चनं         | ३०६      | <b>वाल्मीकिः</b>      |         | पृ. ५४ पं. २५        | ४३३     |
| लाङ्गलं मुखजो             | ९२८      | ३।३७-३८               | १४१     | पृ. ६८ पं. २०-२१     | ६८५     |
| श्रावणे वा नभस्ये         | ८३२      | उत्पन्नपि चाकाशं      | ४८      | पृ. ६९ पं. २६-२७     | ७८२     |
| <b>वासिष्ठसिद्धान्तः</b>  |          | तीक्ष्णकामास्तु       | १४१     | पृ. ७० पं. ३         | ८०७     |
| द्वार्त्तिशद्रिग्तैः      | ७२८      | न पिता नात्मजो        | १५८     | पृ. ७० पं. ७         | ८१२     |
| <b>वाजसनेयगृह्यम्</b>     |          | <b>वासिष्ठम्</b>      |         | पृ. ७० पं. १३        | ८१६     |
| वनं प्रवेक्ष्यन्          | ४६३      | ४।३                   | ८७      | पृ. ७३ पं. १३-१६     | ६७४     |
| <b>वाधूलः</b>             |          | ऊर्ध्वपुङ्डं तु       | २९४     | पृ. ७३ पं. ११        | ६७९     |
| यत्र यत्र कर्म            | ३५०      | धर्मधिमोऽसुखं         | १९४     | पृ. ७४ पं. ४         | ६७२     |
| <b>वामनपुराणम्</b>        |          | <b>वासुदेवोपनिषद्</b> |         | पृ. ७५ पं. ५         | ६८१     |
| गोदावरी भीमरथी            | २८८, ५२३ | गोपीचन्दनं पापच्छ     | २९२     | पृ. ७५ पं. १२        | ६७८     |
| देशानुशिष्टं              | ४६६      | <b>वाहटः</b>          |         | पृ. ७५ पं. २७-३२     | ६८०     |
| धृत्वा चर्ममयी            | ९२९      | तांशूलं कटुतिक्षम्    | ४५५     | पृ. ७६ पं. १-२       | ६९०     |
| श्रुतिस्मृत्युक्त         | २९४      | भुक्त्वोपविशतः        | ४५४     | पृ. ७७ पं. २०-२४     | ६५९     |
|                           |          |                       |         | पृ. ७८ पं. १-१६      | ६६०     |

| क्रषि:                | पृष्ठम् | क्रषि:                      | पृष्ठम् | क्रषि:                | पृष्ठम् |
|-----------------------|---------|-----------------------------|---------|-----------------------|---------|
| <b>विज्ञानेश्वरः</b>  |         | <b>विज्ञानेश्वरः</b>        |         | <b>विराटः</b>         |         |
| पृ. ७९ पं. २१-२२      | ७४९     | इदमेकरात्राशौचं             | ५२५     | अनुवर्त्तते           | १६२     |
| पृ. ९० पं. १६-१७      | १०२     | एकादशो त्रिपक्षे            | ६५२     | <b>विवस्वाम्</b>      | .       |
| पृ. ९० पं. १७।१८ .    | ५६५     | एकादशोऽहि संप्राप्ते        | ६४६     | पर्वमात्रप्रपाणस्तु   | ११८     |
| पृ. १४१               | १२९     | कृच्छ्रपादोऽसपिण्डस्य       | ५४८     | अरन्तिमात्रं जलं      | २१६     |
| पृ. १४४ पं. ३१-३३     | ५३९     | दर्पादिना चण्डालादीन्       | ४८८     | मंत्रसंभारसंयुक्तं    | २५९     |
| प्रा. पृ. १६१ पं. ६-७ | ४७७     | देवत्वं गतस्य               | ६६९     | एकतः सर्वतीर्थानि     | २५५     |
| पृ. १६७ पं. १२        | ५५६     | नवभिर्दिवसैः                | ६०९     | अविदित्वेव यः         | २५४     |
| पृ. १७० पं. १८-१९     | ६०३     | न त्यत्र देवदत्तादयः        | ८२३     | <b>विश्वरूपः</b>      |         |
| पृ. १७३ पं. ५-१०      | ५१८     | नालिकाशणछत्राक              | ४३५     | —                     | ५१९     |
| पृ. १७३ पं. २०        | ५१९     | नित्यमन्नप्रद-              | ४८१     | <b>विश्वादर्शः</b>    |         |
| पृ. १७३ पं. २८        | ५००     | पित्रादीनां त्रयाणां        | ७१४     | आशौचमध्ये             | ६१४     |
| पृ. १७६ पं. ९         | ५०३     | प्रतिव्याहृति पृ. ७ पं. १-३ | ३२३     | यः कुर्यात्प्रथमे     | ६२४     |
| पृ. १७६ पं. १६        | ५०६     | प्रपासरण्ये घटके            | ४७४     | शुभकर्म न कुर्वीति    | ६५७     |
| पृ. १७६ पं. ११-२५     | ५०५     | प्रेतलोके तु वसतिः          | ६९२     | र्षापिण्डे पतिपिण्डगे | ६७८     |
| प्रा. पृ. १७६ पं. ३२  | २७७     | भगिन्यां संस्थितायां        | ५२७     | <b>विश्वामित्रः</b>   |         |
| पृ. १७८ पं. ४-५       | ५३९     | माता शुद्धेद्वशाहेन         | ४९३     | अथ तत्वानि वस्यामि    | ३२९     |
| पृ. १७९ पं. ६-७       | ५३४     | मातामहेन मातुः              | ७२२     | आदावखेण संशोध्य       | ३२९     |
| पृ. १७९ पं. १२-१३     | ६२१     | मृतस्य बान्धवैः सार्धं      | ५४३     | एतैविभिः              | ३२०     |
| पृ. १७९ पं. १५-१६     | ६२२     | यज्ञे संभृतसंभारे           | ४८३     | देवस्य सवितुः         | ३२७     |
| पृ. १८० पं. ६-७       | ४९५     | यदा संवत्सरात्              | ६५६     | धिया यदक्षर           | ३३९     |
| पृ. १८२ पं. १२        | ५११     | यद्यद्यदाति                 | ७५६     | नित्यं नैमित्तिकं     | ७५७     |
| पृ. १८२ पं. २७-२८     | ५२४     | यस्तु नयादि                 | ५२३     | पित्रोरनुपनितोऽपि     | ५५९     |
| पृ. १८३ पं. २०-२१     | ५२६     | यस्यानयति                   | ४३५     | प्रणवे नित्ययुक्तस्य  | ३३५     |
| पृ. १८३ पं. २४        | ५२१     | यस्यामंतःकुंडिकायां         | ५८१     | प्रणवोऽत्यत्र         | ३३९     |
| पृ. १८५ पं. १९        | ६०१     | येन केनापि मातुः            | ७१८     | यमार्याः क्रियमाणं    | २       |
| पृ. १८७ पं. ८-१०      | ५४८     | श्राद्धानि षोडशाकृत्वा      | ६५२     | विश्रुतानि बहून्येव   | ३५९     |
| पृ. १९१ पं. २४-२६     | १७६     | सद्यःशौचं सपिण्डानां        | ४९२     | —                     | ९३९     |
| पृ. १९९-२००           | १७२     | साम्रिक्ष्टु यदा            | ६६८     | <b>विष्णुः</b>        |         |
| पृ. २३५ पं. २४        | ८५९     | सूतकं जन्म-                 | ५०१     | १५१३९                 | ५६१,५६३ |
| पृ. २४० पं. २४-२५     | ८६५     | सूतके सूतके चापि            | ४८०     | १११७                  | ६०९     |
| पृ. २४२ पं. १९-२०     | ८६७     | —                           | १०७     | ११११०-११              | ६०७     |
| पृ. ३१४ पं. २३        | ४२८     | १२६,१४४,१६३,१८८,१९०,        | १११३    | ५२२,६१९               |         |
| पृ. ३४२ पं. ५         | ५५०     | ४०५,४४१,४९३,४९४,४९६,        | १११४    | ५८६                   |         |
| पृ. ३४३ पं. २०-२५     | ५५०     | ४९७,४९९,५०३,५०६,५१०,        | १११३    | ५११७                  |         |
| अग्नौ करिष्यन्        | ८०२     | ५१८,५१९,५२०,५२६,५२८,        | १११४    | ५८६                   |         |
| अनु पश्याज्ञायन्ते    | ५८६     | ५३५,५४०,५४२,५४३,६५६,        | १११२३   | ५१७                   |         |
| अस्थिसंचयने           | ६११     | ५३५,५४०,५४२,५४३,६५६,        | १११२०   | ६६६                   |         |
| आविदिके स्व स्व       | ३८३     | ५१२                         |         |                       |         |

| क्रमिः     | पृष्ठम् | क्रमिः                  | पृष्ठम् | क्रमिः                    | पृष्ठम् |
|------------|---------|-------------------------|---------|---------------------------|---------|
| विष्णुः    |         | विष्णुः                 |         | विष्णुः                   |         |
| २२१७       | ४४८     | ५१३९-४२                 | ४३७     | अर्वाक् त्रिपक्षात्       | ५३५     |
| २२१२२-२६   | ४९५     | ५२५४-८                  | ४७८     | अश्यं पित्रा परहेत        | ९३३     |
| २२१२६-२८   | ५०७     | ५४१२                    | ४७३     | अष्टकास्तिसः              | ७८८     |
| २२१३९-३३   | ५१६     | ५४१३                    | ९२९     | अस्कृजजलपानं              | ८५०     |
| २२१३४      | ५३०     | ५४१४                    | १००,९२१ | अस्पृष्टानां च            | ४८४     |
| २२१४१      | ५२५     | ५६१९-२७                 | ९३३     | आकृष्टाडितो               | ८६२     |
| २२१४२      | ५२०     | ६०१३, ७, १६, १७         | २१४     | आ जानुभ्यां भवेत्         | २६८     |
| २२१४३      | ५२९     | ६०१२२                   | २१३     | आद्यथ्राद्वामशुद्धो       | ६४७     |
| २२१४५      | ५२९     | ६४१९                    | २४७     | आवृत्य गणयेत्             | ३४३     |
| २२१५२      | ४८२     | ६४१९९                   | २६२     | आशौचापगमे                 | ६३६     |
| २२१६९      | २६७     | ६४१२४                   | २४७     | उत्थायोत्थाय              | २१०     |
| २२१७२      | २७९     | ६४१३६-३९                | ३५०     | उद्दिश्य कुपितो           | ८६३     |
| २२१७४, ७५  | २३७     | ६४१४०                   | २४७     | ऊर्ध्वपुङ्गवो             | ५४९     |
| २२१७६-७७   | २१९     | ६५१९                    | ८००     | एकरात्रोषित               | १७५     |
| २४९-१०     | १२५     | ६६१९-९                  | ३८८     | एकादश्यां न               | ४४९     |
| २५१४       | ६४१     | ६६१७                    | ७६०     | एकादश्यां निराहारः        | ८४९     |
| २५११४      | १६१     | ६७१३३                   | ४१६     | कण्टकीक्षीर               | १९६     |
| २५११६      | ८४७     | ६८१९६                   | २२९     | कराभ्यामजलिं              | ३२०     |
| २६१५       | १३३     | ६८१४६                   | ४२६     | कुञ्जवासन                 | १२१     |
| २८१३२      | ४५२     | ७११९                    | ७४२     | कुशाभावे कुशस्थाने        | २३४     |
| २९१२       | १०४     | ७३१२४-२५                | ८१३     | कृच्छ्रब्रयं चोपनेता      | ९९      |
| ३३११       | ८६५     | ७५१२                    | ७४२     | कौपीनाच्छादनार्थं         | १८५     |
| ३३११-५     | ८६२     | ७५१४                    | ६७२     | क्षत्रवैश्यगृहे           | ९६      |
| ३३१३       | ८६५     | ७५१४-७                  | ७४२     | गोभिर्युक्तेन             | २८६     |
| ३३१४-७     | ८६५     | ७८१९                    | ७६३     | गोमयेनोप                  | ७५८     |
| ३३१६       | १७०     | ७८१८                    | ७६३     | ग्रामान्ते निर्जने        | १९०     |
| ३४११       | ८६४     | ७९१२                    | ७८४     | जन्मप्रभृति               | १०८     |
| ३६१८       | ९३९     | ७९१९                    | ७९०     | जानुभ्यानु                | ३१९     |
| ३७११       | ९२९     | ७९११९                   | ७९०     | जानुभ्यामुपरिष्ठात्       | २२९     |
| ३८११-६     | ८६७     | ७९१२२                   | ८०४     | जानोरुद्धर्वं जले तिष्ठन् | २२८     |
| ३९१२२-४०१२ | ९३९     | ८०१९                    | ७८३     | ज्येष्ठो वाऽप्यनुजो       | ६७०     |
| ४६१२-९     | ९३९     | ९०१६२                   | ६       | ततः कृत्वा                | ३७६     |
| ४७११-९     | ९४१     | अच्छिन्नपादा            | ३३९     | तिस्रोऽष्टकाः             | ३५      |
| ४८१२१      | ९०७     | अनुच्छिष्ठेन संस्पृष्टे | २६८     | तृचाभिमंत्रितं            | २९०     |
| ५११३-५     | ९१८     | अनुलेपनवस्था            | ८००     | दंडवन्मज्जनम्             | ११३     |
| ५११४       | ४४८     | अन्नं व्याहृतिभिः       | ३९८     | दक्षिणापवर्गेषु           | ७९८     |
| ५११३८      | ८८२     | अपुत्रपौत्रसंताने       | ५६२     | दक्षिणाप्रवणे             | ७५७     |
| ५११३९      | ४३८     | अप्रबुद्धेऽविधूमे       | ३६२     | दानादौ ग्रहणे             | ४८५     |

| क्रषिः                  | पृष्ठम्  | क्रषिः                    | पृष्ठम्   | क्रषिः                   | पृष्ठम्  |
|-------------------------|----------|---------------------------|-----------|--------------------------|----------|
| <b>विष्णुः</b>          |          | <b>विष्णुः</b>            |           | <b>विष्णुधर्मोत्तरम्</b> |          |
| द्विजो निषिद्धया        | ४४१      | वितस्तिभाच्चमृजु          | २४१       | भगवन् कर्मणा केन         | ७०९      |
| द्विजो भोजनकाले         | ९१२      | विप्रान् स्वागतान्        | ७९५       | यथा विहन्ति              | ८०९      |
| नमो विश्वेभ्यो          | ८०५      | वृद्धानामातुराणां         | १९३       | यस्तु विद्याभिमानेन      | ८६४      |
| नवमे दशमे वाऽपि         | ४९४      | वेदानधीत्य यन्नेन         | १२३       | स ब्रह्महा स             | ८४५      |
| नामेरधः                 | २६७      | वैश्वदेवान्तिके           | ४१६       | सा तिथिस्तत्त्वं         | ८५८      |
| नीते त्वाशौचे           | ५३५      | शिष्याणां चारिषं          | १०८       | सौरसंवत्सर-              | ७२४      |
| पञ्चमात्सप्तमात्        | १२६      | श्रावयेत्पुण्यसूक्तानि    | ५५२       | सौरमासमाधि-              | ७०९      |
| पलाशशरीरं               | ६०८      | श्रौतं स्मार्तं च         | ३५६       | --                       | ६८५, ७०० |
| पिण्डानां निर्वप्तं     | ८१७      | श्वश्रादीनां तथा          | ५६७       | <b>विष्णुपुराणम्</b>     |          |
| पूर्वाङ्गे वाऽपराह्ने   | ५१४      | संन्यस्तमिति              | १७४       | ३११२५-२८                 | १९२      |
| पौषफालगुनयोर्मध्ये      | २८१      | सपिण्डिकरणं               | ६८३       | ३१११५                    | २०९      |
| प्रतिपत्पर्वषष्टीषु     | २४३      | सभासु चैव                 | १०९       | ३१११९७                   | २१७      |
| प्राजापत्यं नव          | ९१३      | सर्वपापेषु सर्वेषां       | ९४१       | ३१११२७-२८                | ३७६      |
| प्राजापत्यं नवशाद्वे    | ४४८      | सीमंतोन्नयनं              | ७९        | ३१११२९-३७                | ३८०      |
| प्रातःस्नातोऽपि         | २५४      | सुप्रक्षलित               | ४५७       | ३१११३९                   | ३८४      |
| बालाश्य तस्णा           | २८१      | सुसूक्ष्मं सूक्ष्मदन्तस्य | २४१       | ३१११४८-५३                | ४०१      |
| बाले समानवयसि           | १०५      | स्थले स्थित्वा            | ३७७       | ३१११६०                   | ४१३      |
| ब्रह्मक्षत्रविशां       | २५४      | स्नानाहस्तु निमित्तेन     | २७९       | ३१११६८-६९                | ४१०      |
| ब्राह्मणस्य कुलं        | ९३४      | स्मार्तंसौपासने           | ३५४       | ३१११७७                   | ४१९      |
| ब्राह्मणस्य सपिण्डानां  | ४७४      | —                         | ४८३       | ३१११७३                   | ४१७      |
| ब्राह्मणः अनाद्रेण      | २११      | ५२१, ५६५, ९०७, ९३१        | ३१११७५-७६ | ४१७                      |          |
| भुक्त्वोपविष्टो         | ४५४      | <b>विष्णुधर्मम्</b>       |           | ३१११८२                   | ४३१      |
| भैक्षं यवागुं           | २०३      | असंभाष्यांस्तु            | ८५०       | ३१११८६-९५                | ४५४      |
| मंटपे गोपुरे खट्टा      | ५५४      | अहोरात्रं न भुजीत         | ४५०       | ३११११०९-१०९              | ४५५      |
| मातुर्मृताहे पिण्डादीन् | ७२०      | वर्णत्रयात्सवर्णाद्वा     | ८९५       | ३११२१८-१०                | ४६९      |
| मृतायामपि               | २५       | <b>विष्णुधर्मोत्तरम्</b>  |           | ३११३१९९-१२               | ६०६      |
| मृतायामपि भार्यायां     | ५७०      | अथ काम्यानि               | ७६३       | ३११३१९४                  | ६०७      |
| मृत्पिङ्डतृणकाष्ठानां   | ४७१      | अष्टाविंशतिकोट्यः         | ८५९       | ३११३१३४-३७               | ५६२      |
| यज्ञोपवीतं दण्डं        | १८५      | एकादश्यष्टमी              | ८३१       | ३११४१२                   | ३७       |
| यत्राशुचि स्थलं         | ३७७      | याद्यं प्राणप्रदानं       | ५१        | ३११५१७                   | ८१२      |
| यादि भैक्ष्यं           | २०४      | तस्माच्छाद्वानि           | ७५८       | ३११५१२८-२९               | ८०६      |
| यानुद्दिश्य भवेत्       | ७१८, ७३६ | तीर्थशाद्वे सदा           | ८९७       | ३११५१३४, ३६              | ८०५      |
| यावदाशौचं तावत्         | ५९९      | त्रिशन्मुहूर्तश्च         | ७०६       | ३११६५४-६                 | ७८२      |
| ये क्षातदान्ताः         | ७६६      | न दद्यात्कुणपं            | ५८३       | ३११६१७-९, ११             | ७८४      |
| रजस्वलासंस्पृष्टो       | २७९      | धूपो गुगुलुजो             | ७९०       | ३११६-९३                  | ८८४      |
| वत्सरान्ते प्रेताय      | ६७४      | परस्थाने वृथादानं         | ५१        | अ. १११२-३                | ५        |
| वर्जयेच्छुते            | ४३४      | विभर्ति निलिले            | २०४       | अमावास्या यदा            | ७४३      |
| वर्षेरकेगुणां           | १२५      |                           |           | अमावास्यासु न छिंद्यात्  | २३४      |

| क्रषि:                 | पृष्ठम् | क्रषि:                  | पृष्ठम्   | क्रषि:                 | पृष्ठम् |
|------------------------|---------|-------------------------|-----------|------------------------|---------|
| <b>विष्णुपुराणम्</b>   |         | <b>वृद्धगार्यः</b>      |           | <b>वृद्धमनुः</b>       |         |
| उपतिष्ठन्ति वै         | ३१४     | ऋक्षेषूद्धाहनक्षत्रे    | ३७        | आरनालं च तकं           | ४५०     |
| गृहीतविदो              | १७२     | एकादश्यां दशम्यां       | २८३       | अराध्यं देवमाराध्य     | २७०     |
| जातस्य जात             | ७५२     | घटीपरिमितः              | ३३        | कुर्याद्दनुपनीतो       | ६८५     |
| तिलैः सप्ताष्टभिः      | ६००     | जयेष्ठस्य तु कतोः       | ४८४       | कुर्याद्दनुपनीतोऽपि    | ५५९     |
| दुष्टानां शासनात्      | ६६      | दशमी पुत्रनाशाय         | २८२       | रुषेस्तु विंशकं        | ९२३     |
| नदीनदत्ताकेषु          | २५५     | नभस्यापरपक्षे           | ७४९       | क्लीबाया नोदकं         | ५६७     |
| पितृव्यगुरुहौहित्रा    | ७६९     | नामान्नप्राशनं          | ७३४       | गुरुभागवयोः            | ३४      |
| पुत्रो भ्राता च        | ५६५     | निमित्तं कालमादाय       | ८२५       | ग्रामेश्वरे कुलपतौ     | ५२९     |
| प्रेतस्य तापोप         | ५९८     | प्राजापत्ये च पौष्णे    | ७४८       | जाते कुमारे            | ४८०     |
| माघासिते पञ्चदशी       | ७४३     | बुधव्रयेदुवाराणि        | ८८        | जाते कुमारे तदहः       | ८०      |
| यस्तु संत्यज्य         | ९०२     | मातुः सहोदरो            | ६६१       | जीवन् जातो             | ५०५     |
| यागी दानं जपो          | ३०४     | मीनमेषौ रविः            | ७०१       | जीवन्यादि समागच्छेत्   | ६३२     |
| येनकेनापि              | ३०७     | यदास्तमयवेलायां         | २७६       | ततः सम्याद्विराचम्य    | ३५३     |
| वैशास्तमासस्य          | ७६१     | रात्रौ यामदूयात्        | ३९        | त्रयोदश्यां च          | ३९      |
| शुशी वस्त्रधरः स्नातो  | २४८     | वर्षादौ सरितः सर्वा     | २८७       | दहनं वपनं वापि         | ५८९     |
| श्राद्धं श्रद्धान्वितः | ७३५     | शाखाधिपे बलिनिके        | ८८        | दीपोत्सवचतुर्दश्यां    | ३८०     |
| श्राद्धोपवासदिवसे      | २४८     | स्वाध्यायवियुजो         | ८८        | द्वादशेऽहनि विप्राणां  | ६६६     |
| सर्वं कालमुप-          | ४७७     | —                       | ४८८, ७. ३ | न पिबेन्न च            | ४२९     |
| स्वातिस्थिते           | २८५     | <b>वृद्धगौतमः</b>       |           | न प्रातर्न प्रदोषं च   | ३१३     |
| —                      | १२, ५६३ | अनुतवाङ् खलः            | ८६९       | न भस्यस्यापरः          | ७४५     |
| <b>विष्णुरहस्यम्</b>   |         | चंद्रसूर्यग्रहे         | ४५०, ८३०  | नाहरेदेकवस्तु          | ३५३     |
| अष्टमी रुष्णपक्षस्य    | ८३२     | मध्याह्नव्यापिनी        | ७०६       | नित्यामिहोत्रं         | २०      |
| असामथर्ये शरीरस्य      | ८४८     | यायाद्गर्जोतरे          | ३८        | निमन्त्र्य विप्राः     | ७७८     |
| एकादशी भवेत्काचित्     | ८४३     | सेचनान्मार्जनात्        | ४७२       | न नियुक्तः शिखा        | ८००     |
| द्वादशीतिथि-           | ८४३     | <b>वृद्धपराशरः</b>      |           | निष्पीड्य स्नानवस्त्रं | २५३     |
| निष्कामस्तु गृही       | ८४२     | अनाशकान्                | ९१८       | पात्रभूतोऽपि           | ५१      |
| परमापदमापन्नो          | ८३८     | कृत्वाथ शौचं प्रक्षाल्य | २२१       | बहुपत्नीकपक्षे         | ५७१     |
| यदीच्छेत् विष्णु       | ८३७     | तावत्तत्सूतकं           | ४९७       | भार्यापुत्रकनिष्ठानां  | ५८८     |
| रोहिण्यामर्धरात्रे     | ८३३     | प्रेतस्पर्शनसंस्कारैः   | ५४६       | मनुष्यतर्पणे स्नान-    | २४८     |
| श्राद्धोपवासदिवसे      | ८५०     | यः प्रत्यवसितो          | ९१९       | मासिके आब्दिके         | ७७९     |
| सूतके सूतके वाऽपि      | ५४७     | योऽसवर्णा तु मूल्येन    | ५४५       | मृते जन्मनि            | २५८     |
| <b>विष्णुस्मृतिः</b>   |         | लेखाप्रभृति             | ७०७       | यस्य त्रैवार्षिकं      | २०      |
| उपवीतं शिखाबंधं        | २९२     | —                       | ५४०       | रात्रौ यामदूयात्       | ३९      |
| एकादश्यां न            | ८३८     | <b>वृद्धमनुः</b>        |           | वपनं दहनं वापि         | ५५८     |
| शंखचक्राद्यकनं         | २९८     | अन्यायोपात्त            | २५६       | वस्त्रं त्रिगुणितं     | २५०     |
| <b>वृद्धगार्यः</b>     |         | अपुत्रा शयनं भर्तुः     | ५६३, ६७०  | श्वशुरयोश्य भगिन्यां   | ५२६     |
| अन्याधानाभि-           | ७५५     | अभिवादने तु             | ९१०       | षडौकारान् जपेत्        | ३३९     |
|                        |         |                         |           | संस्थिते पक्षिणीं      | ५२८     |

| क्रषिः                    | पृष्ठम्  | क्रषिः                  | पृष्ठम्  | क्रषिः               | पृष्ठम् |
|---------------------------|----------|-------------------------|----------|----------------------|---------|
| <b>वृद्धमनुः:</b>         |          | <b>वृद्धवसिष्ठः:</b>    |          | <b>वृद्धहारीतः:</b>  |         |
| सौकारा चतुरावृत्या        | ३३९      | मासत्रये चिरात्रं       | ५३५      | देवानां तर्पणं       | ३६२     |
| खीभिर्जितेषु              | ५१       | भुक्त्वा मकरकर्कटौ      | २७५      | मातामहपितृभ्यां      | ६८१     |
| स्वसूचेऽविद्यमाने         | ५        | मृते च सूतके            | ४८५      | राज्ञः प्रतिग्रहं    | ९२४     |
| <b>वृद्धमनुः:</b>         | ५०६, ६४९ | यतीनां तु न             | ६६३      | शुक्रवारेऽव्यति—     | ५८७     |
| <b>वृद्धमिहरः:</b>        |          | यस्यां तिथावस्त-        | ८२७      | संघातमरणे विश्रोः    | ६४०     |
| माधवाद्येषु               | ७२५      | यावन्मेषपर्षभौ          | ७०१      | सकास्यं नालिकेराम्बु | ४३८     |
| <b>वृद्धयाज्ञवल्क्यः:</b> |          | वापीकूपतटाकानां         | ७३४      | छुपुत्रकामो यः       | ४५८     |
| अध्यात्मपुस्तकं           | १८७      | विप्रस्य क्षत्रियस्यापि | ८८       | <b>वृद्धात्रेयः:</b> |         |
| आवस्थ्यमनादृत्य           | २४       | श्राद्धयेऽहनि           | ७२९      | यानुधानाः पिशाचाश्च  | ४१८     |
| आहिताभिर्यथा              | ५६८      | सपिण्डीकरणं             | ६७४      | <b>वेदाद्यासः:</b>   |         |
| इष्टकालोष्टपाषाणैः        | २४४      | सपिण्डीकरणं नैव         | ६७१      | वेदविक्रयजं          | ७८३     |
| कर्मणो यस्य यः            | ७०६, ७३० | सर्वेषामपि वर्णानां     | २७२      | <b>वैखानसः:</b>      |         |
| कुमारजन्मदिवसे            | ७९, ५०३  | सूर्यग्रहे तु           | ७१७      | आतुरे बाले           | ४७५     |
| पौर्वाङ्गिकास्तु          | ८३०      | सूर्यादि सौर्यन्तदिने   | २८४      | क्षुरकर्म न          | ३५      |
| मित्रे जामातरि            | ४८५      | स्नानार्थमभिगच्छन्तं    | २४६      | चिताया दक्षिणे       | ६०९     |
| <b>वृद्धवसिष्ठः:</b>      |          | —                       | ४९२, ५३५ | तिलदर्भास्तृते       | ६५०     |
| अभजस्तु यदा               | २३       | <b>वृद्धविष्णुः:</b>    |          | सूतकप्रेतयोः         | ६५०     |
| अनभिकस्तु                 | ३९८      | रजस्वलां हीनवर्णां      | २७९      | समानो मन्त्रः        | ६७७     |
| अयने कोटिपुण्यं           | २७६      | <b>वृद्धशातातपः:</b>    |          | अभिर्यजुर्भिः        | ५८३     |
| अयने द्वे                 | २७४      | अग्रजो वाऽनुजो          | ६२०      | शवेऽन्याशौचयुक्ते    | ५५६     |
| अहिंसंकरणे                | २७४      | अपेक्षितं यो न          | ८०७      | समिद्दिगर्भमयैः      | २९५     |
| अहन्यहनि यत्              | ७५७      | अशुचिं यः स्पृशेत्      | २६५      | <b>वैजयन्ती</b>      |         |
| इंदौ निरुपे               | ८५७      | आपोशनं परिधानं          | ४२२      | अलसान्द्रो राजमाषः   | ७८४     |
| कुशाभावेऽश्ववालो          | २३४      | आसने पादमारोप्य         | ८०९      | <b>वैजावापः:</b>     |         |
| गर्भवता ज्येष्ठेन         | ५५८      | उपविष्टस्तु विष्मूच्य   | २१९      | अथ सीमंतोन्नयनं      | ७८      |
| गर्भस्त्रावे मासतुल्या    | ४९२      | ज्ञानी यस्य             | ७६८      | छिन्ने नाले ततः      | ८०      |
| गवां कोटिप्रदानेन         | २३२      | त्रिष्वयेतेषु           | ७५५      | जन्मनोऽनन्तरं        | ७९      |
| चौलवन्सकलं                | १२३      | द्वितीया त्रिमुहूर्ता   | ८५७      | त्रिवर्षे चूडाकरणं   | ८३      |
| तुषामिना दहेत्            | ५६८      | पर्वणोयश्चतुर्थांशः     | ८५४      | पिता नाम करोति       | ८२      |
| त्रिदशाः स्पर्शसमये       | ७६०      | पीतशेषं तु              | ८८९      | पुरास्तमयात्प्राक्   | ९८      |
| दधिकर्कन्धु               | ७५६      | प्रीत्या श्राद्धं तु    | ५६७      | मासि द्वितीये        | ७८      |
| दन्तकाष्ठे त्वमावास्या    | २८३      | मातुलो भागिनेयस्य       | ५६७      | राजतानि प्रशस्तानि   | ७८९     |
| पितरं मातरं वापि          | २८६      | मुखे पर्युषिते          | १९६      | <b>वैयाग्रपादः:</b>  |         |
| पिता पितामहो              | ९९       | शावे च सूतके            | ५९०      | चण्डालं पतितं        | २६६     |
| प्रथमा स्याद्मावास्या     | ६६७      | संधिर्यवपराङ्गे         | ८५५      |                      |         |
| भगिन्यां संस्थितायां      | ५२६      | हस्तदृत्तास्तु          | ८०४      |                      |         |

| क्रषिः                      | पृष्ठम् | क्रषिः                 | पृष्ठम् | क्रषिः                    | पृष्ठम् |
|-----------------------------|---------|------------------------|---------|---------------------------|---------|
| त्रिविधो जपयज्ञः            | ३४०     | आर्तवे देशकालानां      | ७१५     | अधीत्य विधिवत्            | ११९     |
| प्रातःस्नायी भवेन्नित्यं    | २४६     | आर्तवेऽन्न             | ७५६     | अधीयीत गृहस्थोऽपि         | ३४      |
| स्मार्तकर्मपरित्यागो        | ४७९     | कृतचौलस्तु कुर्वीत     | ५६०     | अनध्यायेष्वधीतं           | ३१      |
| वैवस्वतः                    |         | ततो वस्त्रद्वयं शुद्धं | २५१     | अनुत्सृष्टे तु            | २५६     |
| द्वादशवर्तीतं               | २०७     | न चियेत समं            | १६२     | अनृतावृत्काले             | ७६      |
| व्याख्यातारः                |         | नवश्राद्वे मासिके च    | ५५९     | अन्नं दृष्ट्वा प्रणम्यादौ | ४२१     |
| —                           | ३६४     | नाधोमुखं न             | ५८३     | अन्नप्राशनमातिथ्यं        | १४७     |
| व्याघ्रः                    |         | प्रातः संक्षेपतः       | २४६     | अन्नहीनो दहेत्            | २१      |
| अन्तर्दशाहे जातस्य          | ५०३,५०४ | बाले मृते              | ५१०     | अन्यानीतैश्च              | ११८     |
| अवरश्चेत्परं वर्णं          | ५४५     | य एवं ब्राह्मणो        | २४०     | अन्यस्तमयवेलायां          | ७१३     |
| अस्पृश्यस्पर्शनं            | ९०९     | वपनं यो न              | ५९०     | अपराणे तु मध्यान्हे       | ४५०     |
| आदित्यांकिरणैः पूर्तं       | २७१     | विधिज्ञः श्रद्धयोपेतः  | ७०९     | अपवित्रः पवित्रो वा       | २२०     |
| उच्छिष्टमन्त्रं             | ६७      | शावे च सूतके           | ५९९     | अपां द्वादश गंडूषान्      | २२०     |
| उपेते विषमं                 | ५३६     | संस्कृतायां तु         | ६६७     | अभक्षस्य निवृत्या         | ४३३     |
| उभाभ्यामपि हस्ताभ्यां       | २४८     | सिंहकंट्योर्मध्ये      | २८७     | अभुक्तवति                 | ११५     |
| एकादशोऽन्हि                 | ६४०     | स्मार्तकर्मपरित्यागो   | २७२     | अमा वै सोमवारेण           | ७४४     |
| गन्धपुष्पाणि                | ८१७     | व्यासः                 |         | अयने विषुवे               | ४७      |
| चतुर्गुल                    | २०३     | ३१३६-३७                | ३७५     | अयाच्चितं यथा             | ११४     |
| तुल्यं वयसि                 | ५११     | ४१३५                   | ५०      | अरलिमात्रं                | ११६,८१७ |
| दहनाद्येव कार्यं            | ५३९     | १११९                   | ६५      | अर्थानामुदिते             | ४४      |
| देशं कालं वयः               | ९२०     | २५१९५                  | १६०     | अवमत्य च                  | १६३     |
| धात्रीफलं सदा               | ४३९     | अंगुष्ठमूलांतरतो       | २२५     | अविमुक्ते                 | ११०     |
| पतिव्रता तु या              | ६४४     | अङ्गुष्ठाङ्गुलिभिश्चैव | २६१     | अवेक्षेत च                | ६       |
| पत्या सहैकता                | ६००     | अंगुष्ठानामिकाभ्यां    | २३०     | अशक्तावशिरस्कं            | २८९     |
| बाले मृते                   | ५१०     | अक्षताभिः स            | ७९२     | अश्विनीश्रवण              | ८३      |
| बाले मृते सपिण्डानां        | ५०४     | अमिहोत्रपरो            | ७६७     | आचम्य च ततः               | ४०८     |
| ब्राह्मणो ब्राह्मणो गच्छेत् | ८८८     | अभेः पश्चिमतो          | ३९६     | आचम्य च यथाशास्त्रं       | ३७६     |
| मातुः प्रथमतः               | ६८०     | अग्न्याधेयं गवा-       | १७६     | आचम्यांगुष्ठ-             | ४५३     |
| स्नाने चैव तु               | २४७     | अछिन्ननाभ्यां          | ७९      | आच्छाद्यालंकृतां          | १४९     |
| —                           | ५०४,५०५ | अङ्गानात् बाहुजो       | ८७३     | आजन्मनस्तु                | ४५१     |
| व्याघ्रपादः                 |         | अतिथिं पूजयेत्         | ४१६     | आत्मार्थ भोजनं            | ३१      |
| असौं स्पृष्टा कराग्रेण      | २२६     | अतिथिं भोजयेत्         | ६९०     | आ दन्तजन्मनः              | ५०७     |
| आनन्द्यात्कुल               | ६९३     | अतीते दृशरात्रे        | ६६७     | आद्यमासिकमेव              | ६४८     |
| उपायनोदितः कालः             | १३६     | अथवा मन्त्रतः          | ३९८     | आपद्यनमौ तीर्थे           | २७२     |
| गंगातोयेन रूत्स्नेन         | २२०     | अथागम्य गृहं           | ३५४     | आपो नारा इति              | २४६     |
| अतिदेशस्योप-                | ८६४     | अथोपदिष्टेत्           | ३४४     | आपो हि ष्ठाः              | ३१७     |
| अभावे कूपवापीनां            | २८९     | अधम्या ये विवाहाः      | १४८     | आपोहिष्टृचैः              | ३१५     |

| क्रषिः                    | पृष्ठम्  | क्रषिः                | पृष्ठम् | क्रषिः                  | पृष्ठम् |
|---------------------------|----------|-----------------------|---------|-------------------------|---------|
| व्यासः                    |          | व्यासः                |         | व्यासः                  |         |
| आशौचं तु त्रिरात्रं       | ५२५      | कुतपप्रथमे            | ७०८     | ततस्तृप्तः सन्          | ४५२     |
| इत्येतदस्त्रिले           | ४५८      | कुरुक्षेत्रं गयां     | २५७     | ततो मध्यान्द्रसमये      | २५९     |
| उच्छिष्टं न               | ८१८      | कुरुपो वा             | १५७     | तर्पणं तु शुचिः         | २४८     |
| उच्छिष्टेऽद्विः           | ४२९      | कुर्वीतैवं दिवा       | २१९     | तिष्ठन् प्रातर्         | ३३७     |
| उत्तरे षडशीत्यां          | ७०५      | कुरुः पूतं भवेत्      | २२९     | तिसः कोट्यर्धकोटी       | २५०     |
| उदृक्यामपि चण्डालं        | ४२८      | कृतज्ञश्च तथाऽद्वोही  | ३१      | तुरीयं तु पदं           | ३३४     |
| उदृत्य दक्षिणं बाहुं      | ९२       | कृष्णाजिनं            | ५३      | तृतीयिया युता           | ८३०     |
| उपवीती बद्धशिखः           | ३१६      | कौपीनाच्छादनं         | १८५     | तृप्ताः स्थ इति         | ८१२     |
| उपस्वीते तृणं             | २३६      | क्रोधेनैव च           | ८०८     | ते देशास्ते जनपदाः      | १०      |
| उपाध्यायं पितरं           | १०६      | क्षत्रवृत्तिं पराम्   | ६०      | त्रेन स्मार्तमनु-       | ६       |
| उपासते तु यां             | ३११      | खटासंज्ञे च           | ४३४     | त्यक्ताग्नेः पार्वणं    | ८२१     |
| ऊढायाः पुनरुद्धाहं        | १३९      | गत्वा सेतुं समुद्रस्य | ८७१     | त्रिमुहूर्तः प्रदोषः    | ८२९     |
| ऊर्ध्वपुङ्गं त्रिपुङ्गं   | २०७      | गवाहिकं परगवे         | ४०८     | त्रिरात्रमृतमध्ये       | ५३१     |
| ऋणत्रयमपा                 | १७६      | गाण्डूषिकं जलं        | ३८९     | त्रिसंध्यासु जपेत्      | ३३९     |
| ऋत्विक्पुत्रोऽथ           | ३५५      | गान्धर्वासुरयोः       | १४९     | त्रिः पिबेद्धक्षिणे     | २२५     |
| ऋषीन्देवान्               | ४०६      | गायत्रीं तु गुरोः     | ९७      | दत्ता नारी पितुः        | ५१६     |
| एकं तु भोजयेत्            | ४०२      | गायत्री नाम           | ३१२     | दत्ता विप्रकरे          | ८००     |
| एकपंक्त्युपविष्टानां      | ४२७      | गुरुमूलाः क्रियाः     | १९३     | दद्यात्पूर्वमुखः        | १४९     |
| एकपादेन                   | १७०      | गुरुरमिर्द्विजातीनां  | १०६     | दशारूत्वः               | ३३५     |
| एकमुद्दिश्य यच्छाद्वं     | ७०६      | गुरुशुश्रूषया         | १२०     | दशाहं शावमाशौचं         | ४९५     |
| एकादशभ्यो विप्रेभ्यो      | ६४७      | गुह्यका राक्षसाः      | ३२१     | दिव्यतेजोमयः            | १७५     |
| एकादशाहे त्वाद्यस्य       | ६४८      | गृहस्थो वैश्वदेवाख्यं | ४०५     | दुर्विप्रा गणिका        | ५२      |
| एकादशी यदा                | ८४०, ८४२ | गृहीत्वा वामहस्तेन    | २३२     | दृष्टचन्द्रा सिनीवाली   | ७३९     |
| एकादशोऽन्हि               | ६४५      | गृहोक्तविधि-          | ९६      | देयं पितृभ्यो           | १७७     |
| एकैकमञ्जलिं               | ३७६      | गोकर्णाकृतिहस्तेन     | २२२     | देव देव जगन्नाथ         | ३८९     |
| एकोद्धिष्टं परित्यज्य     | ६५१      | गोभूहिरण्य            | ४५      | देवयज्ञं पितृयज्ञं      | ३९५     |
| एवं वनाश्रमे              | १७१      | ग्रामान्ते वृक्षमूले  | १९३     | देवाश्र्य पितरश्वैव     | ८०      |
| अौपनायनिकः                | ८९       | चण्डालपतितौ           | २६६     | देवासुरनरैः             | ४४०     |
| कदाचित्कवचं               | ११०      | चतस्रो घटिका          | १९६     | देशक्षोभे               | ३१३     |
| कन्थाकौपीन                | १८९      | चतुर्थस्यैव           | ८२१     | द्विव्याभावे द्विजाभावे | ८२२     |
| कन्याऽन्यस्मै             | १३८      | चत्वार आश्रमाः        | १७६     | द्वाविमौ पुरुषौ         | ४११     |
| कपिलायास्तु               | ३६०      | चीर्णवता गुणैः        | ७६७     | द्वारोपवेशनं            | १५७     |
| कराभ्यां तोयमादाय         | ३३९      | छत्रं च हरते          | २८६     | द्वावेतौ समवीर्यौ       | २०७     |
| करे कर्पटके चैव           | ४२०      | जन्मनामोरविज्ञान      | १२७     | द्विजातिभ्यो धनं        | ५५      |
| काम एव मनुष्याणां         | ११९      | जलदेवान्नमस्कृत्य     | ३८३     | द्वितीयादिक             | ८२६     |
| काषायवासाः                | ७८६      | जान्मवीतीरसंभूतां     | २९३     | द्विविधस्तु गृही        | ६०      |
| किं नु मे स्यादिदं कृत्वा | २१०      | जुषध्वमिति            | ८०६     | द्विहायनस्य वत्सस्य     | ६०२     |
| कुटुम्बार्थे तु           | २२, ५६   | जुहुयात् सर्पिणा      | ३९७     | द्वै द्वै वासुदेवस्य    | १७५     |

| क्रमिः                   | पृष्ठम्  | क्रमिः                   | पृष्ठम्  | क्रमिः                    | पृष्ठम् |
|--------------------------|----------|--------------------------|----------|---------------------------|---------|
| व्यासः                   |          | व्यासः                   |          | व्यासः                    |         |
| धर्म यो बाधते            | ७        | पञ्चमी दशमी चैव          | २८२      | प्राचीनावीतिनो            | ५९७     |
| धर्ममूलं वेदमाहुः        | ९        | पञ्चमी मातृपक्षात्तु     | १२६      | प्राणयात्रानिमित्तं       | २००     |
| धर्मार्थकाम-             | ६२       | पतिव्रता तु              | १५९      | प्राणाम्भिहोत्रं          | ४२३     |
| धूपार्थे धूरसी           | ८००      | पतिव्रता संप्रदीप्तं     | १६२      | प्रातरक्तान               | ३४०     |
| न किंचिद्द्वृज्येत्      | ८१०      | परदारान्न गच्छेत्तु      | ७६       | प्रातः काले तु संप्राप्ते | २४५     |
| न कुर्याद्द्वृहुभिः      | ४६९      | परपूर्वांसु भार्यांसु    | ५२०      | प्रातः स्नानेन संशुद्धा   | २४५     |
| नक्षत्रज्योतिरारभ्य त्वा | २११      | परमहंसस्त्रिदण्डं        | १८५      | बुधसोमौ शुभौ              | ६०७     |
| न तस्य विद्यते           | १९३      | परस्थाने वृथा            | ५१       | ब्रह्मावत्त्वः परो        | ९       |
| नद्यां देवालये           | २४४      | परित्यजन्ति ये           | १०६      | आत्मणक्षत्रिय             | ९६      |
| नद्या यज्ञ परिभ्रष्टं    | २५८      | पलाशपद्मपत्रेषु          | ३१९      | आत्मे मुहूर्ते उत्थाय     | २०९     |
| न निर्वपति               | ७३५      | पाठमात्रावसान            | ३१६      | भासवानरमार्जार            | २६८     |
| न पृच्छेद्रोत्तरणं       | ४१३      | पानीयं पायसं             | ४३१      | भुक्त्वा वै सुखम्         | ४५४     |
| न प्रकाशं                | ३४०      | पानीयानि पिवेत्          | ४३०      | भूतकाध्यापितो             | ९०२     |
| न भिन्नां प्रतिपदेत      | ३३४      | पापदेशाश्र               | १०       | भोज्यमन्नं पर्युषितं      | ४३७     |
| न मेहेतजल-               | २५५      | पालाश्यः समिधः           | ९८       | मधुपक्ते च सोमे           | २३९     |
| नर्मदोत्तरदेशे तु        | १४७      | पितृन् मातामहांश्यैव     | ५६२      | मध्यान्हसमये              | ३६७     |
| नाचामेद्वृष्टधाराभिः     | २२८      | पुरीषं यदि वा            | २१४      | मनसैव जपं                 | ३४०     |
| नाजीर्ण भोजनं            | ४२४      | पृथ्वीं ससागरां          | ३४९      | मन्त्रपूतैर्जलैः          | २५४     |
| नाद्यात्सूर्यग्रहात्     | ४५०, ८३० | पुष्करेष्वक्षयं          | ७५९      | महाप्रस्थानिकं            | १७१     |
| नान्यतो ज्ञायते          | ३७४      | प्रक्षाल्य च शुचौ        | २४२      | मातरं पितरं               | ७२०     |
| नाभिमध्ये स्थितं         | ३२४      | प्रक्षाल्य दन्तकाष्ठं वा | २४१      | मातापित्रोश्य             | ५०      |
| नामधेयं दशम्यां          | ८१       | प्रक्षाल्य पात्रे        | २०३      | मातामहो मातुलश्य          | १०४     |
| नास्नातां तु             | ७७       | प्रक्षाल्य पादौ हस्तौ    | २२१, २४१ | मार्जनं वामहस्तेन         | २१५     |
| नित्यं स्वाध्याय         | १६५      | प्रक्षिपेत्सूतके         | ३१४, ४७८ | मार्जयेद्वृक्षशेषेण       | २५१     |
| नित्यशाद्वे तु           | ४०२      | प्रणवव्याहृति            | ३३८      | मासान् दशोदरस्थे          | १०५     |
| निर्वृत्ते चूडाहोमे तु   | ४४९      | प्रतिगृह्य द्विजो        | ५९       | मुहूर्तंत्रितयं           | ७०७     |
| निहन्त्यन्नं मनः         | ४४४      | प्रतिपत्सैव              | ८२६      | मृद्रोमयाभ्यामालिष्य      | २६१     |
| नैवेद्यमन्नं             | ३९०      | प्रतिपद्मशष्ठीषु         | २४४      | मौजी त्रिवृत्समा          | ९५      |
| नैवेद्यार्थं पृथग्       | ३९५      | प्रतिश्रयाद्वक्षिण       | २११      | मोक्षाश्रमं यः            | २०८     |
| नैष्ठिकानां वनस्थानां    | ४८५      | प्रत्तानां तु तथा        | ४९८      | मौनं वाचो निवृत्तिः       | ४२३     |
| नोक्तरीयमधः              | २५१      | प्रथमं तु                | ४९       | मौनी वाप्यथवा             | ४२३     |
| न्यस्तपात्रे तु मुंजीत   | ४२०      | प्रथमा गतिरात्मैव        | ४६५      | यज्ञोपवीती मुञ्जीत        | ४१६     |
| पंगवंधवधिरा              | ५२       | प्रमादादक्ते             | ६६६      | यतिश्च ब्रह्मचारी         | ४१०     |
| पंचाद्र्दो भोजनं         | ४१७, ४२० | प्रवृत्तिलक्षणं          | १७४      | यत्कृते दशभिः             | १३      |
| पंथा देयो ब्राह्मणाय     | १०७      | प्रवृत्ते चूडाहोमे       | ९१४      | यत्तिथौ यज्ञ              | ८२५     |
| पक्षाभावे प्रवासे        | ३९८      | प्राकूक्लेषु             | ३१३, ३२३ | यथा गोषु प्रनष्टै         | ८२३     |
| पक्षिणीं योनि-           | ५२७      | प्राक्षपश्चात्संकमे      | २७३      | यदि निर्हरति प्रेतं       | ५४५     |
| पक्षिभेदी वृथा           | ९०६      | प्राङ्मुखोऽन्नानि        | ४१८      | यदि मासमहोमी              | ३५६     |

| क्रषिः                  | पृष्ठम् | क्रषिः                     | पृष्ठम् | क्रषिः                | पृष्ठम् |
|-------------------------|---------|----------------------------|---------|-----------------------|---------|
| <b>व्यासः</b>           |         | <b>व्यासः</b>              |         | <b>व्यासः</b>         |         |
| यदि स्यात्कुन्नवासा     | ३४१     | विशीर्णायुः क्षयं          | ३६०     | सजलं भाजनं स्थाप्य    | २१३     |
| यदि स्यात्तर्पणात्      | ३६७     | विश्वामित्रक्रषि           | ३२६     | समक्षं वा परोक्षं     | ८८३     |
| यदि स्याल्लौकिके        | ३९६     | विष्णोः प्रस्थापनोत्थान    | १४८     | समानोदकभावः           | ४९६     |
| यद्यमत्रं समादाय        | २३९     | वेदशाखविनोदेन              | ४६५     | समुद्रयानं मांसस्य    | ४५२     |
| यस्तु पाणितले           | ४२५     | वेदाभ्यासं ततः             | २९      | सर्वं गंगासमं         | २७१     |
| यस्य यावत्              | ३९७     | वेदाभ्यासोन्वहं            | ४१६     | सव्याहृतिकां          | ३२६     |
| यस्य हस्तौ च पादौ       | २८६     | वेदो वृक्षस्तथा            | १९८     | ससूतकं समृतकं         | २६५     |
| यस्यैतानि सुगुप्तानि    | १७३     | वैणवा ये स्मृता            | १८४     | सहस्रपरमां            | ३३७     |
| यः पात्रपूरणीभिक्षां    | ४१०     | वैणवीं धारयेत्             | १२३     | सहस्रपरमां नित्यं     | ३३८     |
| यः सूर्यसहितां          | ३१९     | वैश्वदेवस्तु कर्तव्यो      | ४०२     | सायंप्रातर्मनुष्यानां | ४१७     |
| यावद्वूर्णविभागो        | १७६     | व्याधितो बन्धनस्थो         | ७६      | सायमाभिश्य            | ३१७     |
| ये त्वेकजाता            | ४१७     | शवं दग्धवा यथान्यायं       | ५१७     | सुक्षेत्रे वापयेत्    | ४१५     |
| ये मृताः पापमार्गेण     | ४८९     | शालामौ लौकिके              | ३९६     | सुदूरादाशया           | ४१२     |
| योगपटोत्तरीयं च         | २३३     | शिरोललाट                   | ९३      | सूतकान्ते नरः         | ६५१,७२८ |
| योऽनुचानं               | ३५०     | शितिपनश्चित्रकाराद्याः     | ४८६     | सूतके तु              | ५०९     |
| योऽनुचानं द्विंजं       | ९३४     | शिवो वहिगुरुः              | ३९४     | सूतिकापतितो           | २६६     |
| यो मोहात्स्नानवेलायां   | २४३     | शीतास्वप्सु निषिद्ध्योष्णा | २५९     | सूतिकावासनिलया        | ५०२     |
| यो विप्रो भृतकं         | ९०९     | शुक्लाष्टम्यां तु          | ३८९     | सूर्योऽस्तशिखरं       | ४५५     |
| रविभ्रहे सूर्यवारे      | २७३     | शुक्लाष्टम्यां तु          | ३८९     | सोपानत्को             | २२९     |
| रवेरस्तमयात्            | ५५५     | शुचौ देशे                  | २९९     | स्नानं मध्यंदिने      | २५४     |
| रागद्वेषविमुक्तात्मा    | १८७     | शूद्रायोनौ पतद्वीजं        | १३४     | स्नानमद्वैव           | २९०     |
| रागांधौ हि              | १९२     | श्राद्धे यज्ञे च           | २४३     | सगोत्रां मातुरप्येके  | १२६     |
| रात्रेः पोडशके          | ३५७     | श्लेष्मशृंघाणिको           | ४३१     | सिन्धुसौवीर           | ११७     |
| रात्रौ चतुर्थ्यो        | ७५      | श्राद्धविघ्ने समुत्पन्ने   | ७१६     | सूतकान्ते नरः         | ६४७     |
| रात्रौ विवाह उत्पन्ने   | १५०     | श्रावण्यामथवा              | ३३      | स्थाप्याः प्रतिद्विजं | ८०९     |
| रात्रौ स्नानं न         | ७९      | श्लेष्मातकस्य              | ३७      | स्वकालातिक्रमे        | ७०९     |
| वक्त्रप्रमाणं विण्डाश्च | ४२५     | श्वभ्यश्च श्वपचेत्         | ४०९     | स्वयं प्रक्षाल्य      | ४१९     |
| वर्ज्जयेद्वन्तकाष्ठानि  | २४२     | षष्ठ्या तु दिवसैः          | ७२३     | स्वयमेवोपसन्नाय       | २९१     |
| वसंते ब्राह्मणस्य       | २४      | षष्ठिभिर्दिवसैः            | ७२९     | स्वाध्यायं चान्वहं    | १८३     |
| वाणिज्यस्याष्टमं        | ९२३     | षष्ठ्यैष्टमी पञ्चदशी       | २८३     | हंतकारमथाग्रं         | ४०४     |
| वासस्तण्डुलमप्यात्रं    | ५९६     | षट्क्षिप्तिः पादौ          | २६०     | हरिद्रां कुंकुमं      | १५८     |
| विद्वशौचं प्रथमं        | २१८     | षण्मासान्वर्जयेत्          | ५९३     | हरिरोमिति             | २९      |
| विद्यायहणशक्तस्य        | १००     | संज्ञाहानौ मरणेऽपि         | ५५२     | हव्यार्थे गोघृतं      | ३६१     |
| विना यच्छिक्षया         | ९९      | संनिकृष्टमध्यिन            | ५०      | हस्ते च विद्यमाने     | ४२९     |
| विन्यस्यैवं             | ३३१     | संपूज्य गन्धपुष्पाद्यैः    | ६४५     | हुत्वाभिं विधिवत्     | ४५५     |
| विप्रशातीतकालः          | ८८      | संवत्सरस्यैकमणि            | ४५१     | हृदि तत्सवितुः        | ३३९     |
| विप्राणां चरणस्पृष्टं   | २३३     | संवत्सरेण पतति             | २८,१५३  | हैमेन सर्वदा सर्वे    | २३२     |
| विरक्तिश्च द्विधा       | १८३     | संशद्दैर्यं जमानैः         | २३      | हौमः प्रतिग्रहो       | ३३१     |

| क्रषिः                  | पृष्ठम्    | क्रषिः                        | पृष्ठम् | क्रषिः                             | पृष्ठम्  |
|-------------------------|------------|-------------------------------|---------|------------------------------------|----------|
| होमे भोजनकाले           | २३७        | शङ्खः                         |         | शङ्खः                              |          |
| —                       | ४०         | आम्रांश्य कदली                | ७८१     | च्यहं त्रिष्वण                     | १३९      |
| १२१, १२५ टीप, २६६, ३३८, |            | इष्टश्राद्धे कतुः             | ७९२     | दधि भक्ष्यं च                      | ४३७      |
| ५०२, ६५५, टीप, ८४४,     |            | ईकारांतं स्त्रीणामेवं         | ८२      | दन्तवद्वन्तलभेषु                   | २३८      |
| व्यासस्तूत्रम्          |            | उग्रगन्धीन्य                  | ७८९     | दर्भाः कृष्णाजिना                  | २४३      |
| ७।१।३।९                 | ३।१८, ३।४६ | उच्छिष्टस्पर्शनं              | ८१०     | दशमान्तर्गते                       | ५०४      |
| ब्रतचतुष्टयम्           |            | उपलिसे शुचौ                   | ४।१७    | दशम्यामुन्थाय                      | ८१       |
| मेखलामजिनं              | ३५         | उपवीतं कटौ                    | ८००     | दानं प्रतिग्रहो                    | ४७७      |
| शक्तितन्त्रम्           |            | ऊर्ध्वं दशाहात्               | ५३५     | दारानाहरेत्                        | १२५      |
| आद्रें ज्वलति           | ३००        | ऊर्ध्वं वार्षिकाभ्यां         | ११०     | दीपामिं दीपतैलं                    | ३०७      |
| शङ्खरसंहिता             |            | काशहस्तस्तु नाचामेत्          | २३४     | दुःस्वप्नारिष्ट                    | १२२      |
| यत्र भुञ्जीत            | ३०५        | कुमारप्रसवे                   | ८०      | दूर्वा प्रवालमिं                   | ६००, ६०४ |
| शङ्खः                   |            | कुर्यान्निरवकाशं              | ६८८     | देशान्तरगतं                        | ५३४      |
| १६।२०—२१                | २१७        | कुलदेवतानक्षत्राभि            | ८।१, ८२ | न पुत्रः पितुः                     | १०५      |
| अभिहोत्रार्थं           | ४७९, ५०५   | कुशबृस्यां                    | ३३६     | न वेदमनधी—                         | ११५      |
| अग्न्युत्सादी           | ९२१        | कुशालाभे द्विजः श्रेष्ठः      | २३४     | नाघमण्णात्                         | ३३५      |
| अङ्गुष्ठमूलस्यान्तरतः   | २२६        | रुतेषु मासिकेष्वेव            | ६५६     | नानुक्ता गृहान्                    | १५६      |
| अजातदन्ते तनये          | ५०७        | केशावधिललाटान्                | ९३      | नानुद्को नामृत्तिको                | २१२      |
| अतीते दशरात्रे          | ५३४        | क्रियास्नानं प्रवक्ष्यामि     | २८६     | नाम चैव तथोत्पत्तिं                | ७९७      |
| अथांगुलीनां             | ३४३        | क्षीराणि यान्यपेयानि ४३८, ८८२ |         | नाल्पोदके निमज्जेत्                | २५६      |
| अध्यास्य शयनं           | ९२२        | गर्भसंदने                     | ७८      | नास्तिको नास्तिक                   | ८९९, ९२२ |
| अनध्यायेष्वधीयान्       | ७७५        | गृहाश्वरथ—                    | ४४६     | नोदकुंभहस्तो                       | १०९      |
| अन्वारोहे तु            | ६७८        | गोगजाश्वादि                   | ७५८     | पर्यटनशीलः                         | ११३      |
| अपुत्रायाः पतिः         | ६७०        | गोदोहमात्र                    | ४०८     | पितुः पुत्रेण                      | ६७०      |
| अपूपाः सर्कवो           | ४३७        | गोपुरीषं यवाभ्यासो            | ९३९     | पितृवेशमनि या                      | ५१५      |
| अद्विः समुद्रताभिस्तु   | २२२        | घृतेन दीपो दातव्यः            | ७१०     | पित्रादित्रयपत्नीनां               | ७१८      |
| अनौरसेषु पुत्रेषु       | ५२०        | चण्डालीं पुलकसीं              | ८८७     | पितावशोषितं                        | ४२९      |
| अभ्यवहार्याणां          | ४६८        | चतुर्थे दशरात्रं              | ५१८     | पुत्राणामसवर्णानां                 | ४९८      |
| अमावास्या तु            | ७४४        | चतुर्थे मासि कर्त्तव्यं       | ८२      | पुत्राभावे तु                      | ५६५      |
| अमाश्राद्धं प्रकुर्वीत  | ३८२        | चतुर्दश्यां तु                | ६६६     | पुरुवाद्वार्द्वी                   | ६६४      |
| अलाद्युशिग्रु           | ४३६        | चांद्रायणं नव                 | ९१४     | पूर्वाङ्ग्लै दैविकं                | ७०९      |
| अस्नातस्तु पुमान्       | २५४        | चांद्रायणं नवश्राद्धे         | ४४९     | प्रथमेऽहन्यारभ्य                   | ६१५      |
| आदित्या वसवो            | ४१८        | ज्येष्ठे तिष्ठत्यनूढे         | १५३     | प्रपदे वरुणं देवं                  | २६०      |
| आदो मध्ये तथाऽन्ते      | ६१५        | तिष्ठः कोट्यर्थ               | १६१     | प्रयतोऽपराह्ने                     | ७९९      |
| आद्यश्राद्धम्           | ६१९        | वृतीये वर्षे चूडाकर्म         | ८३      | प्राङ्मानकरणात्                    | ५०३      |
|                         |            | त्रियहं योनिबन्धूनाम्         | ६१७     | प्रातः संध्यां सनक्षत्रां ३१०, ३७५ | ७४९      |
|                         |            | त्रियहं च योनिबन्धूनाम्       | ५४५     | प्रोष्ठपद्यामतीतायां               |          |
|                         |            |                               |         | बालवृद्धमत्तोन्मत्त                | १०७      |

| क्रषिः                    | पृष्ठम्  | क्रषिः                 | पृष्ठम्      | क्रषिः                   | पृष्ठम्       |
|---------------------------|----------|------------------------|--------------|--------------------------|---------------|
| शाह्वः                    |          | शाह्वः                 |              | पाते सद्यस्तु कठिने      | ४९२           |
| ब्रह्मदेयानु              | ७६६      | सावकाशं तु             | ६९२, ७३४     | मुख्यकर्तुरधं            | ६९९           |
| ब्रह्महा कुषी             | ८६१      | सूर्योदैव तु           | ३१९          | वत्सरमध्ये तत्परं        | ६२२           |
| ब्राह्मणे न क्षत्रियायां  | ७०       | स्नातस्य वह्निसेन      | २५८          | —                        | ४९४, ५०२, ६२४ |
| ब्राह्मणोच्छिष्टाशने      | ४३१      | स्नानं तु द्विविधं     | २५३          | शतकव्याख्याकारः          |               |
| भूमौ माल्यं पिण्डं        | ६०१      | स्नाने भोजनकाले च      | २३७          | —                        | ६९३           |
| भृतकाध्यापको              | १०४      | स्वर्वर्णपदैः          | ३३८          | शाकटायनः                 |               |
| भोजयेदथ वा                | ७७८      | हस्तिच्छायासु          | ७६०          | बालस्वन्तदर्शाहे         | ५०६           |
| मनुयमदक्ष                 | <        | —                      | १२७ टीप, ५०४ | शास्त्रायांनिः           |               |
| मातर्यग्रे प्रमीतायाम्    | ५३२, ६३६ |                        | ५०५, ६७९     | आब्जं हिरण्मयं           | ३५३           |
| मातामहादेः                | ७७१      | शाह्वलिखितौ            | .            | ततः सूर्यमुपस्थाय        | ३५३           |
| मातुः सपिण्डीकरणं         | ६७८      | अथ चेदन्तरा            | ५३०          | नद्यादौ सम्यगाचान्तः     | ३५३           |
| यत्रक्षचन                 | ७५९      | अन्नपानं प्रभूतं       | ८०८          | नभस्यास्यपरे             | ७४५           |
| यथाविभव                   | ७९१      | आपत्स्वपि च            | ४६५          | पुण्यः कन्यागतः          | ...           |
| यदा विष्ट्व्यतीपात        | ७६०      | आहारं मैथुनं           | ४७           | प्रेतश्चाद्वानि शिष्टानि | ६५६, ६६९      |
| यद्यकेजाता बहव            | १२८      | उभाभ्यामपि हस्ताभ्यां  | ३७६          | यावत्कालमहोमी            | ३५६           |
| रथ्याकर्दम                | २६७      | कृतघ्नः कूट            | ८६६          | सपिण्डीकरणात्            | ६५६           |
| रथकारस्तस्येज्या          | ७१       | क्रयविक्रय             | ९९६, ९३१     | —                        | ६५८ टीप       |
| रागद्रव्याणि              | ४७०      | गुप्तायां वेश्यायां    | ९२२          | शाणिङ्गलयः               |               |
| रौद्रश्वेत्रस्तथा         | ७०७      | त्रिरात्रोपोषितो       | ९३४          | अन्नैः प्रभूतैः          | ४५५           |
| लथुनपलाण्डु               | ४३४      | द्रव्यहस्त उच्छिष्टे   | २४०          | अयाचितानि                | ४३            |
| वापीकूपतटाकेषु            | २७१      | ध्रियमाणे तु           | ७२१          | अयाचितोप                 | ६०            |
| वाराणस्यां कुरु           | ७५९      | नात्यधिकं दयात्        | ८०८          | अवकीर्णी द्विजो          | १२२           |
| विचार्यं च पुराणार्थान्   | ४५४      | नात्वे दिवा            | ७४           | आद्र्वासा न कुर्वीत      | ३५            |
| शतिपाकीमपि                | ७८४      | पत्नी मध्यमं           | ८१७          | उच्चैः स्वरेण यः प्रातः  | २११           |
| शुक्लपक्षे तिथिर्ग्राह्या | ८३७      | परिवित्तिः परिवेत्ता   | ६०३          | एकादश्यां सिते           | ३९१           |
| शद्रस्य सूतके मुक्त्वा    | ४४८      | बलिं बलिभुजो           | ८१३          | कुरुंचिनो विनाऽन्येषां   | २८७           |
| शूद्रान्नं ब्राह्मणो      | ९०७      | रागद्वेषामि            | ६            | ग्रहादिसेविते ऋक्षे      | २५८           |
| श्राद्धपंक्तौ तु          | ८१०      | सपिण्डता तु सर्वेषां   | ४९६          | जीवनार्थं हतं            | २८७           |
| श्राद्धपंक्तौ तु भुजानो   | ४२९      | स्वैरिण्यां वृषत्यां   | ८८८          | दीक्षितोप्येक            | ४८४, ५६०      |
| श्राद्धे नियुक्तान्       | ८०९      | शंभुः                  |              | द्वारवत्यां सेतुबन्धे    | ६०९           |
| संध्यादिनित्य             | ३१५      | उत्तरे क्षतसंयुक्तान्  | ७९२          | न गच्छेद्वर्भिणीं        | ७७            |
| संवत्सरं ब्रतं            | ८७८      | उदकपूवमुदीच्य          | ७९१          | त हुंकुर्यान्न           | ३९०           |
| संवत्सरात्प्राक्          | ८३       | शतकम्                  |              | नातिदोषावहं              | ४२०           |
| संस्कारैः संस्कृतः        | ७३       | आ त्रिपूरुष            | ४९८          | नावश्यं भोजने            | ४२३           |
| समानाशौचसंपाते            | ५३१      | कृच्छ्रादीनां समाप्तिः | ५२०          | पिवेत् भोजनपात्रेण       | ४३०           |
| सर्वासां द्विस्तनीनां     | ४३६      | दशरात्रं सदा           | ६२१          | प्रदक्षणे प्रणामे        | १६            |
| सर्वेषां सकुल्यानां       | ७९       |                        |              |                          |               |
| सहस्रं भोजयेत्            | २२       |                        |              |                          |               |

| काण्ठः                 | पृष्ठम् | काण्ठः              | पृष्ठम् | काण्ठः               | पृष्ठम् |
|------------------------|---------|---------------------|---------|----------------------|---------|
| <b>शाण्डिल्यः</b>      |         | <b>शातातपः</b>      |         | <b>शातातपः</b>       |         |
| प्रदक्षिणे प्रणामे     | ३४१     | एकोद्दिष्टं सुतः    | ६२६     | बालानां पंचम         | ८६      |
| बाहू जान्वन्तरा कृत्वा | २४१     | कुर्यात्सदायने      | २७६     | ब्राह्मणस्य व्रण     | १०५     |
| भुवं स्पृष्टा तु       | ४१८     | क्लीवि देशान्तरस्थे | १५२     | भिक्षा माधूकरी       | २०४     |
| मासादिचूणैः            | ४५३     | क्लीबैर्नं पतितैः   | ६७४     | भोजयेद्यस्त्वथ       | ७६५     |
| वानप्रस्थो यतिः        | ८९२     | गवां शृङ्गोदक       | २६९     | मण्डनं मुण्डनं चैव   | १४५     |
| वासो भूषणमाल्यादि      | ४४०     | गोकुले यज्ञ-        | २७५     | मर्यं पीत्वा         | ९३५     |
| शुद्धिं कुर्यात्तथा    | ४६१     | गोवालतृण            | ३५३     | मर्यपानप्रवृत्ता     | १५१     |
| <b>शातातपः</b>         |         | प्रासमात्रं भवेत्   | ४०४     | मातुलस्य सुताम्      | १२६     |
| अंगेषु नांकयेत्        | २९९     | चतुर्थेऽहनि         | ९४      | मातृश्राद्धं तु      | ७५३     |
| अन्युत्सादी            | ३५७     | चितौ दृहनमेतेषां    | ५८४     | मागे तु यत्र         | २७९     |
| अग्रासनोपविष्टस्तु     | ४२७     | चित्ते विभावयेत्    | ४१३     | मासिके चाढिद्विके    | ७१९     |
| अतिथिर्यस्य            | ४१६     | जन्मनैव महाभागो     | ६९      | मून्रोचारं द्विजः    | १०९     |
| अनधिरपि यो             | २७      | जपे होमे तथा दाने   | २३०     | मृता याज्ञुगता       | ६७८     |
| अनाद्यगर्भो            | ६६९     | तन्मात्रा तत्पिता   | ६८०     | मूल्यकर्मकराः        | ४८६     |
| अनुकेषु विधिं          | ९३१     | तपो दमो दया         | १८      | यथाकर्थंचित्         | ८२०     |
| अनृतं मर्यगन्धं        | ३१५     | तिलात् ददृत्        | ४२      | यथाश्वा रथ-          | ४९      |
| अन्त्यैरपि रुते        | २५६,४७४ | तैलं घृतं दधि       | ४४६     | यदेकजाता             | ४९७     |
| अन्नपानाश्व            | ५५१     | दन्तलम्बे फले मूले  | २३९     | या सृता सुभगा        | ६४३     |
| अन्यगोत्रोऽप्यसंबंधः   | ६१८     | दर्भंहीना तु या     | ३२०     | युवा सुवासा          | ७९९     |
| अपराह्ने पितृणां       | ७०९     | दर्शश्राद्धं तु     | ७३६     | योगिनं भोजयेत्       | ७६८     |
| अभिवाद्यो नमस्कार्यः   | १०९     | दारामिहोत्र         | २३,१५३  | यो हि हित्वा         | ४४५,१०६ |
| अमायां च नवम्यां च     | २८३     | नदीतीरेषु गोष्ठेषु  | ९४२     | रजकश्चर्मकृत्        | २६८     |
| अमावास्या भवेद्द्वारे  | २८०     | न यावदुपनीयंते      | २१९     | रात्रिशेषे द्व्यहात् | ५३०     |
| अर्धं पीत्वा तु        | ४५२     | नष्टं देवलके        | ५१      | रात्रौ धाना दधि      | ४३८     |
| अवमत्य च या            | १६३     | नाम्रयः परिविंदंति  | २३      | रेणवः शुचयः          | ४६५     |
| अविज्ञातं द्विजं       | ७७०     | निगृहीतेन्द्रिय     | २०६     | लघुनं गृजनं          | ११८     |
| आचम्य पात्रमुत्सृज्य   | ४५३     | नित्यश्राद्धमदैवं   | ४०२     | वत्सरान्तर्गतः पापो  | ७२३     |
| आभाकासित               | ३७      | निर्विपेच्चतुरः     | ६७७     | वनस्पतिगते सोमे      | ४४९     |
| आद्रामिलकमात्रा        | २१८     | पलांडुलशून          | ४३४     | वरश्येत्कुलशीलाभ्यां | १३८     |
| आशौचस्यापि             | ६०२     | पवित्रं तु करे      | ८००     | वरो वरयितव्यो        | १३४     |
| उद्गृत्य वामहस्तेन     | ४२९,८६५ | पिण्डनिवांपरहितं    | ७३८     | वसवः पितरो           | ८२३     |
| उष्णीक्षीरं मृगीक्षीरं | ४३८     | पुत्राणामसपिण्डानां | ४९७     | विश्वदेवनिविष्टानां  | ८१३     |
| एकमातृप्रसूतानां       | ९४६     | पूर्वांले मध्यमे    | ८५४     | वेदाक्षराणि          | ३१      |
| एकमूर्तिमायाति         | ७१९     | पृथक् दिने          | ७५४     | शुचिदेशात्           | ११६,२५९ |
| एकाददशसु विष्रेषु      | ६४७     | पूर्वांले मातृकं    | ७५४     | शेषमन्नमनु-          | ८२०     |
| एकादशशात्              | ४९५     | प्रश्नपूर्वं तु यो  | ३१      | श्रवणाहे न कुर्वीत   | ६२१     |
| एका लिंगे करे          | ११६,२१८ | बहुल्यं वा स्व      | १५      | श्राद्धे रुते तु     | ३८२     |
| एकोद्दिष्टं जलं        | ६६२,६६३ |                     |         |                      |         |

| क्रषिः                 | पृष्ठम्       | क्रषिः                    | पृष्ठम् | क्रषिः                  | पृष्ठम् |
|------------------------|---------------|---------------------------|---------|-------------------------|---------|
| <b>शातातपः</b>         |               | अल्पापराह्ने              | ७३९     | <b>शौनकः</b>            |         |
| श्रौतं यत्तस्वयं       | ३५५, ३६५      | ग्रहादिव्यतिरिक्तस्य      | ७११     | उत्तमेत्यनुवाकेन        | ३४४     |
| संक्रान्त्यां यानि     | २७३           | प्रातःकाले तु             | ७१०     | उभयोः सन्ध्ययोः         | २४६     |
| संधिन्या अंतर्दशाया    | ४३७, ८८२      | <b>शिवसर्वस्वम्</b>       |         | ऋग्यादीनि               | ३३६     |
| संनिकृष्टमधीयानं       | ५०            | यावन्न कीर्तयेत्          | १३      | एकं पादमथैकस्मिन्       | ३२१     |
| सत्यं शौचं तपो         | ३०३           | <b>शिवस्वामी</b>          |         | एकर्चंविधिना            | ५१२     |
| सद्यः पतति             | ६२            | न मासिकश्राद्धं           | ६५७     | एकैकस्य द्वौ            | ७७७     |
| सपिण्डिकरणं            | ६५८           | नव श्राद्धानि             | ६०५     | ३०५ भूर्भुवः सुवः       | १७९     |
| सपिण्डिकरणं रुत्वा     | ७१८           | <b>शुद्धिनिर्णयः</b>      |         | कनिकदं जपेत्            | ९०६     |
| समानप्रवराँ            | ९०३           | ऊर्ध्वेच्छिष्ठापेच्छिष्ठं | ५५३     | कल्केनामलके-            | २८०     |
| समानप्रवराँ कन्यां     | १२७           | इह केचिदनभिज्ञाः          | ५९१     | रुत्वौतानौ करौ          | ३४०     |
| सर्वस्वेनापि कर्तव्यं  | ७६२           | दशादिनपर्याप्ति           | ५९६     | रुणाजिने तु             | ५७४     |
| सुरां पत्वा            | ३४९           | महागुरुमरणे               | ५९३     | केचित् गणपति            | ३९४     |
| सूर्यसंक्रमणे          | २७३           | ब्रतान्ते विधिवत्         | ५९३     | गर्भिणीमरणे             | ६४४     |
| स्नानं दानं तथा        | २७२           | —                         | ५५२     | गर्भिणी यदि             | ९९      |
| स्वगोत्राद्भृश्यते     | ६८१           | <b>शैवः</b>               |         | गायत्र्या वाऽऽदाया      | २६०     |
| स्वर्गकामो वृषोत्सर्गे | ६४६           | ऊर्ध्वपुङ्गं त्रिपुङ्गं   | ३०७     | चण्डालसूतिको            | ५४७     |
| स्वाध्यायैनाभिः        | ४१५           | चापराशौ स्थिते            | ३९९     | जलमध्ये स्थितो विप्रः   | २४६     |
| हंसस्वरां मेघवर्णा     | १२४           | <b>शैवकः</b>              |         | ज्ञानं महेश्वरादि       | १९८     |
| हस्तदत्तानि            | ४३०           | अभिमुक्तपनं               | ५७९     | तत उद्धृततोयेन          | २१८     |
| हस्तवाताहतं            | ८००           | अभिर्विष्णुः              | ६०२     | तर्जनी मध्यमांगुष्ठ     | ४२३     |
| —                      | ४७५, ४८३, ७३१ | अभिश्वेत्यनुवाकेन         | ३०७     | ताः प्रतिग्राह          | ७९९     |
| <b>शालंकायनः</b>       |               | अथ बलिहरणम्               | ३९९     | तृतीये वर्षे चौलं       | ८३      |
| कुशाग्रस्तपर्येद्वेान् | २३१           | अथाग्न्योगर्ज्य—          | ३९९     | तेजसाश्ममय              | ७९८     |
| <b>शिक्षोपानिषद्</b>   |               | अनभिश्वेदाद्यं            | ५७१     | तेषु तदुक्तवत्          | ६८६     |
| —                      | ७३            | अन्त्यजैः खानिताः         | २४३६४   | दन्तानां धावनं कुर्यात् | २४३     |
| <b>शिवः</b>            |               | अमायां तु न               | ५६९     | दर्भन् द्विगुण          | ७९४     |
| —                      | ७४४ टीप       | अष्टम्यां च चतुर्दश्यां   | ३७८     | दहनादि सपिण्डचन्ते      | ६३३     |
| <b>शिवधर्मोत्तरम्</b>  |               | आ ब्रह्मलोकादा            | ३९७     | देवादीन्तर्ययेत्        | २४९     |
| मासिके चाढिके          | ७२०           | आयुष्कामो दिवारात्रौ      | ५७१     | दैवं च वार्षिकं         | १७७     |
| <b>शिवपुराणम्</b>      |               | आवाहनं तैत्तिरीये         | ६८६     | धनुः सहस्राण्यष्टौ      | २५५     |
| धरामभ्यच्यं            | ९२९           |                           | २५६     | न नदीषु नदीं            | २५७     |
| <b>शिवरहस्यम्</b>      |               |                           | २४८     | नवप्रणवयुक्तेन          | ३१६     |
| अन्यायाद्विप्र         | ८८४           |                           | २४९     | नातानमिति सूक्तं        | ५५२     |
| <b>शिवराघवसंवादः</b>   |               |                           | ३२१     | निरुद्धासु न कुर्वीन्   | २५६     |
| अमावास्या तु           | ७३९           |                           | ४०१     | निशायाः प्रथमे          | ४५६     |
|                        |               |                           | ३२६     | नैकपुत्रेण कर्त्तव्यं   | १०३     |
|                        |               |                           |         | पाकं सर्वमुपानीय        | ८०४     |

| क्रषिः                    | पृष्ठम् | क्रषिः                | पृष्ठम् | क्रषिः                 | पृष्ठम्  |
|---------------------------|---------|-----------------------|---------|------------------------|----------|
| <b>शौनकः</b>              |         | <b>शौनकः</b>          |         | <b>शृतिः</b>           |          |
| प्रक्षाल्य पादौ हस्तौ च   | २२७     | — १७९, ३३८, ५७१,      |         | १६१९                   | २०       |
| पाणिग्रहणात्              | ३५५     | ५७८, ५७७, ७७७.        |         | अपराणहः पितृणां        | ७०९      |
| पीडित्यित्वा य            | २०२     |                       |         | अपा वा एष              | ३६८      |
| पाणिपात्रं चरन्           | २०१     | <b>शौनकपरिशिष्टम्</b> |         | एतत्त्वं योऽनूत्सृज-   | ३७२      |
| पुरुषस्य हरे:             | ३५०     | यावत्यो रेचकम्        | २०७     | उत्तमं नाकं            | ३७२      |
| पूर्वेद्युनान्दीमुखं      | १७७     |                       |         | कुटीचको                | १८३      |
| प्रभूते विद्यमाने         | २५६     | गन्धमाल्यैः पात्रं    | ७९९     | जायमानो वै             | १५२      |
| प्रयतो मृदमादाय           | २५९     | <b>श्रीधरीयम्</b>     |         | ग्रामे मनसा            | ३७०      |
| प्राञ्चोदग्वा             | ३६९     | अस्थिसंचयन            | ६०७     | तद्यदिदूमाहुः          | ३६०      |
| प्राजापत्ययेष्वा          | १७९     | अस्थिसंचयनं कार्यं    | ६१०     | तस्माद्देवो न          | ६४२      |
| प्राणायामान्              | ३२६     | एकादशाहमारभ्य         | ६६५     | तस्य वा एतस्य          | ३७९, ३७२ |
| प्राणायामैदैग्ध-          | ३६९     | एकोद्दिष्टे तु        | ६५०     | तिस्रो रात्रिविंतं     | ७५       |
| प्रातराचमनं रुत्वा        | २४५     | कन्या कुम्भगते        | ६६६     | त्याग एव हि            | १७५      |
| प्राष्टपद्यापर            | ७५१     | केशान् मासत्रयात्     | ५९४     | त्रीनेव प्रायुद्गुक्त  | ३६९      |
| ब्राह्मणानां सपिंडेषु     | १०२     | चतुर्थं पंचमे चैव     | ६०७     | दक्षिणत उपवीय          | ९२       |
| ब्राह्मे मुहूर्ते         | १७९     | तृतीये पञ्चमे         | ६०५     | दक्षिणत उपवीयोप        | ३६९      |
| ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय  | २०९     | त्यजेत्संक्रमणं       | ६१२     | दक्षिणोत्तरौ पाणी      | ३६९      |
| भोजनोपरमात्               | ८११     | दशाहकमैण्यारब्धे      | ६१६     | दर्भाणां महदुपस्तर्यो- | ३६९      |
| मनः संतोषणं               | ३४०     | दशाहन्तः सपिण्डानां   | ५९९     | दानमिति सर्वाणि        | ४०       |
| महत्तत्प्रजपेत्           | २७      | दिवसं गुणदोषाभ्यां    | ६१०     | दिवा न रात्रौ          | ४२९      |
| यदा चैवोद्भूतं            | ७९८     | द्वादशाहप्रभृत्यस्य   | ६१०     | नव वै त्रिवृत्         | ९०       |
| यश्च श्रुतिजपः            | ३६९     | द्वादशाहे त्रिपक्षे   | ६८३     | न सुरां पिवेत्         | ८७९      |
| यस्मिन्वयं जपेत्          | ९९३     | द्विचन्द्रदर्शने      | ६१४     | नामावास्यायां          | ७४       |
| वक्ष्ये पुरुषसूक्तस्य     | ३८५     | नम्रपच्छादनं दद्यात्  | ५९६     | ब्राह्मणो वै           | ७०       |
| वापिकूपतटाकेषु            | २५६     | नर्मदोत्तरभागेषु      | १४७     | मध्यंदिने प्रबल        | ३७०      |
| विच्छिन्नवन्हि-           | ३६४     | पुत्रस्य पाणिग्रहणात् | १४५     | यच्चिराचामति           | ३६९      |
| विजातवृक्षं क्षुण्णाग्रम् | २४१     | भरणी यमदेवत्वात्      | ६३४     | यद्युचोऽधीते           | ३७३      |
| वेदाक्षराणि यावंति        | ३१, १०१ | मृताहे केशवपनं        | ५९९     | यद्यौ किं च            | ६        |
| व्याहृत्या सह             | ३११     | रात्रावापि            | ५८६     | विष्णुनात्ममश्रंति     | ४२०      |
| श्रुतिषु प्रबला           | ३४१     | रात्रौ यामदूयात्      | ५८७     | वरिहा वा               | २२       |
| समावृत्तो ब्रह्मचारी      | ३४      | वामपार्श्वे गृहद्वारे | ६००     | स वा एष                | ३७०      |
| स्नानवक्षेण यो विप्रः     | २५१     | श्राद्धमेकोत्तरं      | ५९८     | <b>श्रुतिरत्नम्</b>    |          |
| स्मार्तोऽग्निर्विधो       | ३५४     | षष्ठाब्दे द्वादशाब्दे | ५९३     | आपोशनमरुत्वा           | ४२३      |
| स्वर्धुन्या तु समानी      | २७२     | — ५५७, ६१८, ७२६       |         | श्रुत्यन्तरम्          |          |
| स्वाहांताः प्रणवादाश्च    | ४२२     | <b>श्रीपतिः</b>       |         | आत्मानं चेत्           | १९५      |
| हुतशेषण पृथक्             | ३९५     |                       |         | पूर्वाङ्गो वै          | ७०७      |
| हुतवाभौ परिशिष्टं         | ८०३     | आज्ञाया नरपते:        | ५९०     |                        |          |
| हैमन्ताशिशिरयोः           | ७४४     |                       |         |                        |          |

| क्रषिः                  | पृष्ठम्  | क्रषिः                 | पृष्ठम् | क्रषिः                   | पृष्ठम् |
|-------------------------|----------|------------------------|---------|--------------------------|---------|
| <b>श्लोकगौतमः</b>       |          | <b>षट्क्रिंशन्मतम्</b> |         | <b>संग्रहः</b>           |         |
| अन्तर्दशाहे दर्शः       | ६१४      | सर्वेषमेव वर्णानां     | ४५०     | अर्कशुक्ल                | ३७७     |
| अपुत्रा तु यदा          | ७१५      | —                      | ७८५     | अल्पं जपेत्              | ३८      |
| आरभ्य कुतपे             | ७०८      | <b>षडशीतिः</b>         |         | अष्टाशीतिसहस्राणि        | ८       |
| कन्यागते सवितरि         | ७४५      | अन्तर्दशाहे दाहे       | ६२९     | असंस्कारे कुलीनस्य       | ६३०     |
| द्वौ मासावेक            | ७२३, ७२५ | एवं पित्रोभिर्गिन्यौ   | ५२६     | अस्थिसंचयनं              | ६०७     |
| पूर्ववस्थथगै            | ७१९      | ज्ञानेर्मृतौ यदा       | ५२३     | अस्थिसंचयनात्पूर्व       | ६११     |
| पूर्वांहे चेत्          | ७२०      | त्रिदिनं त्रिषु        | ४९६     | आ चौलात्सद्य             | ५१५     |
| श्राद्धयेऽहनि           | ६८७      | देशकालादिभेदे          | ५२३     | आत्मार्थमपि              | ३५४     |
| <b>षट्क्रिंशन्मतम्</b>  |          | द्वितीये प्रथमे        | ५०९     | आद्योत्राश्रमिणो         | ५८५     |
| अपेयं हि सदा            | २७०      | नाभिरुतनतः             | ५०६     | अशौचान्तः कीकसादेः       | ६२८     |
| अपेयं हि सदा तोयं       | २३७      | पूर्वांशौचेन           | ५३३     | आतुराणां संन्यासे        | ९७४     |
| आगतो ज्येष्ठपुत्रस्तु   | ६२०      | पूर्वेण चापरेणापि      | ५३२     | आदित्यमंबिकां            | ३८४     |
| आपः स्वभावतो            | २५८      | यत्र नूद्वाहिता        | ५१७     | आनं शावेङ्गः             | ५००     |
| आमश्राद्धं यदा          | ८२२      | यावत्सूतक              | ५००     | आपोशनमहत्वा              | ४२१     |
| आमश्राद्धे भवेत्        | ९१५      | शावादल्पा समा          | ५३१     | आर्तवाभिष्ठुता नारी      | २७८     |
| उदिते विमले             | ३८२      | सूतकात्प्राक्          | ४८२     | आशौचांते रुतस्नानः       | ५४८     |
| उभाभ्यामपरि-            | ४८०      | <b>षडधर्मीयम्</b>      |         | आसनेष्वासनं              | ८०९     |
| ऐन्द्रेन मृगा           | ९२४      | गर्भिणीष्वसवर्णसु      | ५९२     | उत्तरं द्वादशाहेषु       | ९०३     |
| गोव्राह्यणहतानां        | ४८९      | दर्शो यत्रापगळं        | ७४०     | उद्धृत्य वन्हिं          | ३६५     |
| तस्मिन्दिने श्राद्धमेकं | ६२०      | सायनन्यपरत्र           | ७१४     | एककाले मृतौ              | ६३७     |
| ताम्बूले चैव सोमे       | २३९      | <b>षट्क्रिंशम्</b>     |         | एकगर्भप्रसूतौ            | ९००     |
| वृत्तीयां मातृतः        | १३०      | ब्राह्मणीं वार्धकीं    | ८८८     | एकोद्दिष्टस्य दिवसे      | ६५३     |
| दशरूत्वः पिबेदापो       | ४४९      | <b>संग्रहः</b>         |         | कन्यकाजनने               | ४९८     |
| देवयात्राविवाहेषु       | २८०      | अकृते प्रेतकार्ये तु   | ६९९     | करे कर्पटके चैव          | ४२०     |
| पापमार्गमृतौ नृणां      | ४९०      | अप्रिवेदाख्ययः         | ५९९     | कर्तुः सगोच्रिणः         | ७२२     |
| प्रेतकार्याणि सर्वाणि   | ६१५      | अप्रिहोत्रपरिभ्रष्टः   | २१      | कार्तिकाश्वयुजौ          | १४८     |
| भिक्षामात्रे गृहीते     | ९२४      | अघान्तं स्पर्शमेव      | ५०१     | कूपस्नानं तु             | १०      |
| भुंजानेषु तु            | ४८४      | अजखरकरभा               | ४६२     | कृच्छ्रदेवोत्सव          | ४८२     |
| मातुः सपिण्डीकरणं       | ६७८      | अद्ये भोक्तुर्धिया     | ४४८     | रुते नामादि              | ५११     |
| मासिकावदे तु            | ६५४      | अत्याशोचं दिनं         | ५३५     | कर्तुः सगोच्रिण          | ६९०     |
| यदाय्यजात-              | ५०९      | अविमासे हरेः           | ६३४     | केचित्तु पल्यः           | २४      |
| यस्य त्वेकगृहे          | ७७०      | अधिसंपर्कतोऽशोचं       | ५४०     | खननं दहनं                | ५८०     |
| विवाहोत्सव-             | ४८४      | अन्तर्दशाहाद्वाहे तु   | ५३७     | खल्वाटकश दुर्वालः        | ७७३     |
| शावाशौचे समुत्पन्ने     | ५३०      | अन्तर्दशाहे दर्शः      | ६१४     | गया गंगं कुस्तेत्रं      | २५८     |
| षण्डं तु ब्राह्मणं      | ८७४      | अन्तः शवोऽशुचिः        | ५४१     | गृहीत्वाऽपोशनं           | ४२२     |
| संनिकृष्टमधी-           | ७७०      | अन्नब्रह्मात्मकं       | ८०५     | गृहोक्तविधिना हुत्वा     | ३६४     |
| सपिण्डीकरणात्           | ६१३      | अन्वक्षं शुंगि-        | ४८८     | गोध्याश्र्य स्पर्शमात्रे | २६७     |

| क्रषिः                 | पृष्ठम् | क्रषिः                   | पृष्ठम् | क्रषिः                  | पृष्ठम्     |
|------------------------|---------|--------------------------|---------|-------------------------|-------------|
| संग्रहः                |         | संग्रहः                  |         | संग्रहः                 |             |
| गोविप्रखार्कते         | ४८७     | पितृणां तत्र सर्वेषां    | ८११     | बृद्धावादौ क्षये        | ४०७         |
| यहक्षयुक्तो            | ३५७     | पित्रान्यनन्तरा-         | ५३३,६३५ | वेत्रचर्मकृतं           | ४३०         |
| ग्रामश्मशानयोः         | ५८२     | पित्रा सहैव मातुश्र      | ६३८     | शत्याया वेत्रासने       | ४२६         |
| चण्डालान्नं द्विजो     | ११८     | पुण्यताप्तुच             | ८०      | शावे च सूतके            | ४७९         |
| चतुर्थे संचयः          | ६०७     | पित्रोर्भातुभवेत्        | ५३६     | शिलाविनाशो सति          | ६०३         |
| चतुर्थेऽहनि            | ६०७     | पुत्र्याः सापत्नकौ       | ५२८     | शिलान्तरे स्थापिते      | ६०३         |
| चौलात्परं भवेत्        | ५०७     | पूर्वमौपासनारंभ          | १४९     | शिष्टाहमेव सर्वेषां     | ५३४         |
| जनने क्षेत्रजादीनां    | ५२१     | प्रत्यवंदं प्रतिमासं     | ३८९     | शूद्राहृतानि            | ३७४         |
| जाते च सूतके           | ४९६     | प्रथमेऽहनि चण्डाली       | २७८     | श्राद्धपंक्तौ तु        | ८११         |
| ज्येष्ठा विवाहवन्हौ    | ५७२     | प्राङ्गनामकरणात्         | ५०८     | श्राद्धाहे जन्मदिवसे    | २८८         |
| तथा नैव क्रिया         | ५४०     | बन्धुष्वहृयहं            | ५१७     | श्राद्धोत्सवादौ         | ४८८         |
| तिलपिण्ठे गृजनं        | ४३५     | भक्ष्यजातं तथा           | ४८०     | श्रुतिस्मृतिपुराणेषु    | ७           |
| तुलसी श्राद्धकाले      | ७८९     | भर्तुर्यद्यद्धं          | ५२८     | श्रौतस्मार्तक्रियाः     | २९३         |
| तेषामभावे तु           | ५६४     | भिन्नपित्रोः जार-        | ५२८     | श्वश्रूस्वशुर           | ५२६,५२९     |
| त्यजेदनुपनीतान्        | ४४३     | भिन्नोदरकृते             | ६२३     | श्वश्रूश्वशुरतप्तुच     | ४८५         |
| च्यहं मासत्रये         | ४९६     | भ्रातरस्त्वनुजाः         | ५८६     | पंडपाण्डपातित-          | ४८९         |
| दधिक्षीरं घृतं         | ४८०     | भ्राता वा भ्रातृपुत्रो   | ५८६     | षण्मासादूर्ध्वम्        | ६४४         |
| दशारात्रं सदा          | ५३६     | मंत्रवत्संस्कृतस्यापि    | ६२६     | संकल्पं तु यदा          | ७३८         |
| दशाहं द्वादशाहं        | ४९५     | मातापित्रोमृताच्चै       | ५९३     | संपातात्पितु            | ४९२         |
| दशाहमध्ये संकान्तौ     | ६१५     | मातुः श्राद्धे           | ७२०     | सपिण्डा ज्ञातयः         | ५९८         |
| दारकर्मणि मृतौ च       | ५८८     | मातृष्वसृसुता            | ५२७     | सब्रह्मचारिणि           | ५२९         |
| देशान्तरगते            | १५३     | मासेषु कन्या-            | ५९५     | सभूमिजाकृष्ण            | २५७         |
| द्वादश्यां पार्वणेनैव  | ७५०     | मृतप्रियायाश्च           | ६८२     | साधु वाऽसाधु            | ३९०         |
| द्वौ हस्तौ युग्मतः     | ३२०     | मृतस्य तु यदा            | ५०९     | सायं प्राप्तायातिथये    | ४१३         |
| न देयं न प्रतिग्राह्यं | ४८०     | मृते च सूतके             | २७७     | सूतकान्तस्तु            | ५०४         |
| न विशेष्वतागारं        | ५४७     | यतीन्द्रानाथनिहरे        | ५४६     | सूतके तप्तुनः           | ५३१         |
| नाभेरधस्तात्           | २१६     | यदि संकमदर्शी            | ६१३     | सौरमासे तिथिद्वैधे      | ७०४         |
| निमित्तं पिंडानादेः    | ४७७     | यदि स्याल्लौकिके         | ३९६     | खिया अनाहिताम्भेः       | ६०९         |
| निर्मल्यं च निवेद्यं   | ४४०     | यमयोर्जातियोः            | १४६     | स्नातस्तूपयमात्         | १२३         |
| निशा व्यतीयात्         | ३५८     | यः प्रमीतमलंकुर्यात्     | ५४४     | स्नात्वा दूराज्जले      | २४९         |
| पक्षतैलं गन्धतैलं      | २८५     | याजुषाः सामगाः           | ४०७     | स्नानं कृत्वाद्रवस्त्रं | २५१         |
| पञ्चुमृताहान्य-        | ५३२     | यौगादिकं मासिकं          | ७२९     | स्पर्शं तु धार्यमाणं    | ३६५         |
| पराश्रिताया भार्या     | ५२१     | रात्रौ प्रहरपर्यन्तं     | १४      | स्वकाले तानि            | ६५२         |
| परोक्षे पक्षिणी नो     | ५२४     | राष्ट्रक्षोभे नृपाक्षिसे | ३१४     | स्वाशौचकालतः            | ५३३         |
| पातस्यान्ते पूर्वभागे  | ७४४     | वर्जयेत्तिलकं            | ३०८     | हैयंगवर्णिं             | ४४६         |
| पितुर्दीक्षान्तरे      | ५८८     | वर्ज्यं पौष्णमथांगना     | ७४८     | हस्तक्षेत्रुदये         | ३३          |
| पितुर्मृताहे पितरो     | ७२०     | विदेशगो वाजपि            | ७१५     | —                       | २६०,६३८,७३२ |

| क्रमिः                        | पृष्ठम्             | क्रमिः                  | पृष्ठम्  | क्रमिः                    | पृष्ठम्  |
|-------------------------------|---------------------|-------------------------|----------|---------------------------|----------|
| <b>संग्रहकारः</b>             |                     | <b>संग्रहान्तरम्</b>    |          | <b>संवर्त्तः</b>          |          |
| अमीन्धनादि                    | ८०२                 | प्राजापत्यं तीर्थकुच्छँ | ५६४      | जाते पुत्रे पितुः         | ७९       |
| अन्याभावे पिता                | ५६६                 | मातामस्यौ पिता          | ५२७      | जानुभ्यानुपरिष्ठातु       | २२९      |
| अर्वाकृ त्रिपक्षात्           | ६३५                 | <b>संवर्त्तः</b>        |          | ततोऽधीर्थीत वेदं          | ११३      |
| आचांतो विधिवत्                | ३१४                 | अकृत्वा पादशौचं तु      | २२३      | तिथिपर्वोत्सवाः           | ४१२      |
| एकोदराणां पुंसां              | १४५                 | अमिहोत्री तपस्वी        | ९१७      | दशवर्षा भवेत्कन्या        | १३६      |
| औपासनामौ                      | ५७२                 | अजा गावो महिष्यश्च      | ४९३      | दिवा स्वपिति चेत्         | ११५      |
| यादा वर्तनकालिकी              | ७०८                 | अनाचान्तः पित्रेत्      | ९२२      | देवागारे द्विजानां        | ३८८      |
| चन्द्रसूर्योपरागे             | ७१६                 | अपो निशी न              | २७१      | पंचयज्ञविधानं             | ४०६, ४७९ |
| चैत्रे मास्यसिते              | ८३७                 | अयने विषुवे             | ४७       | पाकयज्ञं तथा              | ५४१      |
| तिथ्यमीनतिथि                  | ७६२                 | अर्घ्यप्रदानतः          | ३१४      | पितामहो यस्य              | ६३८      |
| त्रिरात्रं त्रिषु             | ५३५                 | अष्टौ भिक्षाः           | २०१      | पितृदारान् समारुद्ध       | ८८७      |
| दशाहं दर्शनं                  | ५०१                 | आचम्यैव तु भुजीत        | ४१८      | पुलकसीगमनं                | ८८९      |
| दशाहमध्ये त्वथ                | ६१६                 | आशौचे निर्गते           | ५४८, ६४५ | पूर्वकर्ता दशाह           | ६३५      |
| नष्टे शावानले                 | ६१०                 | उत्तर्यि पडियेद्वाखं    | २५०      | पूर्वाङ्गे वाऽपराङ्गे     | ५१४, ६०२ |
| नित्यं सदा                    | ८३६                 | उत्पत्तिप्रलयौ          | ४९       | प्रणवादां तु              | ३३९      |
| पुत्रः कुर्यात्पितुः श्राद्धं | ५६३                 | उदक्यामपि चण्डालं       | ४२८      | प्रणवेन तु                | ३२३      |
| भुक्तां समुद्भृते             | १४९                 | उपासिता न चेत्          | ३१४      | प्राणायामैखिभिः           | ३२३      |
| भुजेर्निषेधकाले               | ७१७                 | उभाभ्यामपि              | २३०      | प्रातःसन्ध्यां सनक्षत्रां | ३१०      |
| श्राद्धोत्सवादौ               | ४८४                 | उष्णित्वैवं वने         | १७१      | प्राप्ते तु द्वादशे वर्षे | १३५      |
| श्रुतिस्मृतिपुराणेषु          | ७                   | एकाकी चिन्तयेत्         | १८९      | ब्रह्मचारी तु             | १२२      |
| श्रौतस्मार्तक्रियाः           | २९३                 | ऐहिकामुष्मिकं           | ३३५      | ब्रह्मचारी तु यः          | ८९२      |
| श्वश्रूश्वशुर                 | ५२६, ५२९            | उत्तरे दिवसे            | ७०३      | ब्राह्मणो ब्राह्मणी गत्वा | ८८७      |
| श्वश्रूश्वशुरतप्तुत्र         | ४८५                 | ओषधं स्नेहमाहारं        | ८६३      | ब्राह्मण्याः शूद्रसंपर्के | ८९४      |
| मास्येकस्मिन्                 | ७०४                 | कटिसूत्रं विना          | ९५       | मंत्रवत्प्राशनं           | ७९       |
| मृतानां तु सपिण्डानां         | ५३८, ६२९            | कथञ्चित् ब्राह्मणी      | ८९३      | महापातकसंयोगी             | २८       |
| यज्वा मृतस्त्रकि              | ५७३                 | कन्याविक्रियणो          | ९४४      | माता शुद्ध्येत्           | ५०९      |
| यज्वायज्व पुनर्दाहे           | ५३७                 | कपालैर्मिन्न            | ३५७      | मानसं वाचिकं              | ३२५      |
| यज्वायज्वपुनः                 | ६२९                 | कृते मूत्रे पुरीषे      | २६८, ४२९ | यत्र ग्रामे तु            | ९१०      |
| योज्यः पित्रादि               | ८०३                 | केशैः पिपीलिका          | ४३२      | यस्तु जापी सदा            | ५९       |
| रजोमध्ये तु भार्याया          | ५६४                 | क्रियाहीनस्य मूर्खस्य   | ४८८      | यावन्न लज्जते कन्या       | ९३५      |
| स त्री गृहीतनियमो             | ४८१                 | गच्छेदेवं वनं           | ९६९      | योगाभ्यासपरो              | ९९९      |
| —                             | ४९९, ५१४, ५३५, ५३७, | गृहस्थो ब्रह्मचारी      | ३३८      | रजस्वलां च                | ८९०      |
|                               | ५४०,                | चण्डालं पतितं           | २६५      | लोकवार्तादिकं             | ३४०      |
| <b>संग्रहान्तरम्</b>          |                     | चण्डालं पुलकसं          | ८९७      | वापीकूपतटाकानां           | ४७४      |
| नित्यादर्थं चतुर्थीवि         | ४५६                 | चतुर्विधा भिक्षवस्तु    | ९८३      | विप्रो दृशाहम्            | ४७८      |
| पुंसि जाते                    | ४९८                 | जलं जलस्थो नाचामेत्     | २२९      | वेदं चैवाभ्यसेत्          | २९       |
|                               |                     | जातस्यापि विधिः         | ४९५      | थुना पुष्पवती             | २७९      |

| ऋषिः                   | पृष्ठम् | ऋषिः                         | पृष्ठम् | ऋषिः                     | पृष्ठम् |
|------------------------|---------|------------------------------|---------|--------------------------|---------|
| <b>संवर्त्तः</b>       |         | <b>सत्यव्रतः</b>             |         | <b>सायणीयम्</b>          |         |
| शूद्राणां भाजने        | ४२०     | मन्त्रवन्मन्त्रहीनं च        | २८५     | नान्दीश्रादं पिता        | ७५३     |
| शूद्रा शुद्धैकहस्तैश्च | २२४     | राशिटूयं यत्र                | ७२४     | पितुः प्रत्याच्छिकं      | ७१७     |
| शूद्रीं तु ब्राह्मणो   | ८९१     | वर्षे वर्षे तु               | ७३०     | पुंसां दीपप्रशमनात्      | ४६६     |
| शूद्रोच्छिष्टं जलं     | ४३२     | सिलोच्छिनां                  | २०      | श्राद्धं सपिण्डनं        | ६६५     |
| श्रोत्रियाय कुलीनाय    | ४२      | खी यदाऽकृत                   | ७९      | श्राद्धद्वये च           | ६९५     |
| श्वकाकोच्छिष्ट         | ४३२     | <b>सत्याषाढसूत्रम्</b>       |         | श्राद्धभोजनकाले          | ८०७     |
| श्वराहस्तरा            | २६७     | १४।।                         | ९३।।    | पष्ट्यष्टमीं पंचदर्शीं   | ७५      |
| षष्ठमासं पञ्चमासं वा   | ३५०,९३५ | <b>सनत्कुमारः</b>            |         | सपिण्डिकरणं कुर्यात्     | ६८४     |
| संकटं विषमे चैव        | २६६     | १४।।                         |         | सपिण्डिकरणेऽवश्यं        | ६७६     |
| संन्यस्य दुर्मतिः      | २०८,९१९ | एकादशीं मुनिशेष्ट            | ४४९     | <b>सारसंग्रहः</b>        |         |
| सचैलं तु पितुः         | ४९९     | निष्कृतिर्मयप-               | ८३०     | चतुर्दर्शीं याऽश्वयुजस्य | २८५     |
| समित्पुष्पकुशादीनि     | ३७४     | भानुवरेण संयुक्ता            | ८४५     | <b>सारसमुच्चयः</b>       |         |
| सहस्रपरमां             | ३३७     | <b>सनत्कुमारसंहिता</b>       |         | एकतः कतवः                | ४३      |
| सीरखातप्रपातोयं        | ४७४     | एकादशीं सदोगोष्या            | ८३७     | गिरिकर्णिकया             | ३८८     |
| सूतके तु यदा           | ५०१     | <b>सप्तर्षिसंवादः</b>        |         | विंशं च श्वेतवृत्ताकं    | ४३५     |
| सौरमानविधाने           | ७०५     | धर्मर्थः संचयो               | ५५      | बीजानां वापनं            | ४६६     |
| स्नात्वा पीत्वा        | २३५     | <b>सरणी</b>                  |         | यो दर्भपाणिस्तोयेन       | २३२     |
| स्नानवस्त्रेण हस्तेन   | २५१     | --                           | ६५०     | <b>सार्वभौमः</b>         |         |
| स्वभावाद्यत्र          | ९       | <b>सांख्यायनः</b>            |         | एकोद्देश्याव             | १२५     |
| हृद्वानाभिरफेरनाभिः    | २२६     | गृहद्वारे वासपार्श्वे        | ६००     | <b>सार्वभौमीयम्</b>      |         |
| होमे पर्युक्षणे        | ३६४     | दिवा यदाहृतं                 | ७९      | ऋग्यजुः सामाध            | ३४      |
| —                      | ४३२     | यस्मिन्देशो प्राणा           | ६०४     | पाणिग्रहणात्             | २७      |
| <b>संस्कारमञ्जरी</b>   |         | सप्तमे मासि                  | ७८      | --                       | १२८     |
| अथ पुनःसंस्कारं        | ११८     | <b>सांख्यायनगृह्यम्</b>      |         | <b>सुदर्शनाचार्यः</b>    |         |
| यस्मिन्देशो य आचारः    | ५       | व्यायुषमिति                  | ३०३     | वेदार्थनिर्णयविधौ        | २९२     |
| <b>सत्यतपाः</b>        |         | येयकवस्त्रो यज्ञोपवीतं       | २१२     | <b>सुधानिधिः</b>         |         |
| अहतं यंत्रनिर्मुक्तम्  | २५२     | <b>सामसूत्रप्रयोगवृत्तिः</b> |         | यस्मिन्मासे सृतिः        | ६९९     |
| वर्षे वर्षे तु         | ७३।।    | मातुर्मृताहे संप्राप्ते      | ७२।।    | <b>सुधीलोचनः</b>         |         |
| <b>सत्यव्रतः</b>       |         | <b>सायणीयम्</b>              |         | अनाहितामेदाहस्य          | ६२७     |
| आदद्वयमञ्जरं           | ७२९     | इति वै देवलः                 | ६७६     | <b>सुधीविलोचनः</b>       |         |
| एकादशोऽहि              | ६४८     | उत्तरायणे सूर्ये             | ८४      | द्वितीय मासवृद्धौ        | ७२९     |
| कृतोपवीती देवैभ्यो     | ३७८     | कार्तिके पौषमासे             | ८२      | --                       | ७८७     |
| जर्चिलास्तु तिलाः      | ७८८     | गर्भाधानक्षी                 | ७७      | <b>सुन्दरराजीयम्</b>     |         |
| पिण्डपकारनालेन         | २८५     | गुरोः कवेलोहितस्य            | ८८      | प्राङ्गमुखौ विश्वेदेवा   | ६५०     |
| पुत्रजन्मन्या          | ८०      | तुलसीशतपत्रं                 | ७८९     | तस्मात्तमः संजायते       | ९७      |
| पितृभ्यः प्रत्यहं      | ३७८     |                              |         |                          |         |
| बलं रूपो यशो           | २४५     |                              |         |                          |         |

| क्रषि:                 | पृष्ठम् | क्रषि:                     | पृष्ठम्  | क्रषि:                  | पृष्ठम्  |
|------------------------|---------|----------------------------|----------|-------------------------|----------|
| सुवालोपानिषद्          |         | सुमन्तुः                   |          | सूतसंहिता               |          |
| शांतो दान्त            | १९५     | न जीवपितृकः                | ७४२      | श्रेयान्वेदोदितो        | २९७      |
| सुबोधः                 |         | न द्व्यहृष्ट्यापिनी        | ७१३      | स्वमातुः सोदरायां       | २९६      |
| स्वजातीजन्म            | ६०५     | नान्यथोक्तिः               | ३४१      | सूत्रकारः               |          |
| सुमतिः                 |         | नाभि व्याहारयेत्           | ५५९      | त्रयाणां वर्णानां       | १७६      |
| साध्मासात् द्विजानां   | ४९०     | पाकाभावेऽधिकारः            | ८२१      | ब्राह्मणभोजनाधीन्       | ४०७      |
| सुमन्तुः               |         | पिता पितामहे               | ६८०      | समावप्रच्छिन्नाग्रो     | २३३      |
| अक्रोधनो रसान्         | ८०९     | पितृपत्न्यः सर्वा          | १२८      | सौरधर्मः                |          |
| आभिविद्युत्पयः         | ४९०     | पितृष्वसृसुतां             | १२७      | आदित्योदयवेला           | ८३९      |
| अनुपेतोऽपि कुर्वीत     | ५५९     | पित्रस्योत्पत्तिमात्रेण    | ५६०      | सौरपुराणम्              |          |
| अन्नं निधाय्य          | ४२१     | प्रेतश्चेदाहिताभिः         | ६६८      | मूलं हि पितृ-           | ७१३      |
| अपुत्रे संस्थिते       | ६७०     | ब्रह्मचर्यं ततो            | ९८       | भस्मना छन्नसर्वांग      | ३०५      |
| अपुत्रे संस्थिते कर्ता | ५६३     | ब्रह्मचर्यं तपो            | ११५      | स्कन्दपुराणम्           |          |
| अप्स्वमौ वा            | ९२२     | ब्रह्महत्या सुरापानं       | ८९७      | अथवा शिवरात्रिं च       | ८५२      |
| अभ्यागतो ज्ञातपूर्वः   | ४१२     | मातुः पितश्च कुर्वीत       | ५५६, ५५८ | आवर्त्तनात्             | ७०७      |
| आकाशो निश्चिपद्वारि    | २४९     | यत्र शास्त्रगतिः           | ६८०, ७०३ | तत्रैवोपवसेत्           | ८५८      |
| आपत्काले तु            | ९७४     | यद्येकवस्त्रः स्याद्विप्रः | २१२      | दक्षिणाभिमुखो भूत्वा    | ३८१      |
| उदिते दैवतं            | ७१३     | येभ्य एव पिता              | ६७२      | दिनार्धसमये             | ८२८      |
| एकपिण्डकृतानां         | ७५०     | राजान्नं तेज               | ९०६      | ये न कुर्वन्ति          | ८३३      |
| एतान्यातुरस्य          | ४३६     | रात्रौ स्नानं न कुर्वीत    | २७६      | लक्षकोटिसहस्रस्य        | ३४३      |
| कन्याराशौ महाराज       | ७४७     | लशुनपलांडु                 | ४३६      | षष्ठ्येकादश्य-          | ८३१      |
| कर्तव्यं पार्वणं       | ६६०     | वर्ज्याश्राभिष्वा          | ७८४      | संमुखा नाम              | ८२६      |
| कमशूद्रः स्मृतो विप्रो | ५५९     | वर्षे वर्षे सुतः           | ६६०      | —                       | ८२७      |
| काणाः कुञ्जाश्च        | ७७५     | वानप्रस्थस्य पक्षान्नं     | ४७       | स्कान्दम्               |          |
| कुटीचके तु             | ६६४     | व्यसनासक्तचित्तो           | २३       | अज्ञानाज्जनकं           | ८७३      |
| खण्डवस्त्रावृत         | ३४१     | श्राद्धात्परतरं            | ८२२      | अक्रमेण मृतानां         | ६७१      |
| गर्भमासनुल्या          | ४९२     | सपिण्डिकरणात्              | ६६१      | अत्यंतस्खलितानां        | २९८      |
| चण्डालाद्यवेक्षित      | ७८७     | समत्वमागत                  | ६६२, ७५० | अयमेव परो               | १९७      |
| चित्यारोहणकाले         | ६४३     | स्वर्णस्तेयी द्वादश-       | ८८३      | अष्टमी नवमी             | ८३१      |
| तस्माद्वचन             | ६६०     | हंसः शुचिष्ट्              | २६९      | आत्मा पुत्रः पुरोधा     | १४       |
| तिथिनक्षत्रनियमे       | ८२७     | सुश्रुतः                   |          | उदयात् प्राक्           | २४७, ८३९ |
| तिथौ यत्रोपवासः        | ८२८     | ततः प्रभृति                | १५९      | उदये वाष्टमी            | ८३५      |
| तिरस्कृतो यदा          | ८६३     | सद्यो गृहीत                | १५९      | उपोषणं चतुर्दश्यां      | ८५३      |
| त्रयाणामपि पिण्डानां   | ६७१     | सूतसंहिता                  |          | एकादशी भवेत्पूर्णा      | ८४२      |
| दण्डग्रहणमात्रेण       | ६६३     | अनन्तशास्त्रा              | २९२      | एकादश्यां न             | ८४५      |
| दूरस्थोऽपि हि          | ५०      | ललाटे चैव                  | ३०५      | कृष्णाष्टमी स्कंदपृष्ठी | ८५३      |
| धर्मशास्त्रगति         | ७       | शैवागमोक्ता                | ३९६      | तिथिनामेव               | ८२६      |

| ऋणिः                   | पृष्ठम् | ऋणिः                         | पृष्ठम्      | ऋणिः                   | पृष्ठम् |
|------------------------|---------|------------------------------|--------------|------------------------|---------|
| <b>स्कान्दम्</b>       |         | <b>स्मृतिचंद्रिका</b>        |              | <b>स्मृतिभास्करः</b>   |         |
| त्रिमुहूर्तः प्रदोषः   | ३९      | पृ. ९९ पं. २१                | २४०          | शिष्टस्याभाव           | ३६९     |
| त्रयोदशी यदा           | ८५२     | पृ. १०६ पं. २५               | २४४          | सप्तभिर्द्वयंपुञ्जीलैः | २३०     |
| द्वादशी च प्रकर्तव्या  | ८५०     | पृ. १११ पं. १४               | २४७          | सर्वे चापि             | ११०     |
| नागो द्वादशा           | ८३९     | पृ. १२५ पं. २६               | २८३          | <b>स्मृतिरत्नम्</b>    |         |
| नामगोत्रे समुच्चार्य   | १४९     | पृ. १२९                      | ३८५          | अंगुल्यपैर्ण           | ३६२     |
| परमापदमापन्नो          | ८३९     | अंत्यकालेऽपि यस्यास्ये       | ५४९          | अंगुष्ठं घण्येदूङ्कु   | २३३     |
| परात्परतरं             | ८५२     | अधीत्य विधिवत्               | १७३          | अगुष्ठमूलेनाचामत्      | २२५     |
| पितृणां गति-           | ८४५     | आद्यन्तयोस्तु                | २१७          | अकृत्वा तर्पणं         | ३८०     |
| पुन्रं वा विनयोपेतं    | ८४८     | कृष्णसारैः                   | ९            | अशिरोगी ह्यपस्मारी     | ४५७     |
| पुत्रादिर्जनकं         | १००     | तद्वस्तशौचाभिप्रायं          | २१८          | अत्र मघा त्रयोदश्यां   | ७५०     |
| पुराणैरेव विस्पष्टो    | २९२     | द्वादशोऽहनि कर्तव्यं         | ८२           | अनुयाने मृतौ           | ६४२     |
| प्रतिगृह्य तुलां       | ९२५     | नावस्करेषु                   | १५९          | अन्तरङ्गक्षेपैषा       | ६३९     |
| प्रतिगृह्य तुलादीनि    | ९३०     | मनःप्रसादात्                 | १५           | अन्तर्जलगता ग्राह्या   | २१६     |
| प्रथमेऽहनि संपूर्णा    | ८४९     | यद्येककर्तव्यं               | ६३०          | अन्येन यस्य            | ६१७     |
| प्रदोषव्यापिनी         | ८२९     | सपिंडादिजनने                 | ४७७          | अहोऽष्टधा              | ३७५     |
| भस्मना वै त्रिसंधं     | ३०३     | —                            | ८६, ११२, ११९ | अपस्वये ततः            | ५९७     |
| भस्मरुद्राक्षधारी      | ५४९     | १३२, ३६७, ४८२, ४९३, ६८७      |              | अप्रजायामतीतायां       | ५६४     |
| भूतविद्वा सिनीवाली     | ८५३     | <b>स्मृतिचिन्तामणिः</b>      |              | अब्रह्मचारिदारायैः     | १३०     |
| मस्तेशो निरुदके        | ५६      | एक एव तु                     | ४१९          | अभर्तुर्योषितः         | ६८२     |
| माघकृष्णचतुर्दश्यां    | ८५३     | मासिमास्युद्धृत              | २३३          | अमायां च               | ६६६     |
| माघस्य कृष्णपक्षे      | ८५१     | मृताहे मासिकं                | ६९९          | अयुतं चो               | ३९३     |
| यदा भवेत्              | ८४७     | <b>स्मृतिदीपिका</b>          |              | अवलिप्सस्य             | ४४३     |
| यदीच्छेद्विपुलान्      | ८३७     | यस्यां रात्र्यां व्यतीतायाम् | २१०          | अस्थिसंचयनं            | ६४३     |
| यां तिथि समनु-         | ८२७     | अनुदूतैरुद्धृतैर्वा          | २८५          | आगम्य राक्षसीमाशां     | २१२     |
| शिवं च पूजयित्वा       | ८५२     | उद्धृतोदकमादाय               | २१२          | आचार्यं चैव            | ११२     |
| शुद्धा यदा समा         | ८४२     | चित्रभानुमनङ्गाहं            | ३६७          | आपोशनं तु              | ४२२     |
| संपूर्णकादशी यत्र      | ८४१     | <b>स्मृतिभास्करः</b>         |              | आश्वयुक् कृष्णपक्षे    | २८४     |
| स्नातकं ऋत्विजं        | ८७३     | आमं शूद्रस्य                 | ४४६          | इति बोधायनः प्राह      | ६७६     |
| <b>स्मृतिः</b>         |         | चतुरंगुलमयं च                | २३३          | उल्कान्तिवैतरण्यो      | ५५२     |
| धनुर्मीन्युग्म         | २७५     | तदित्येतत्परं                | ३२७          | उद्धृतोदकमादाय         | २१५     |
| <b>स्मृतिकामधेनुः</b>  |         | तावदन्तं विना                | २३           | उपावरोहणं कृत्वा       | ३६३     |
| संसर्गदोषो नैव         | ८९७     | दक्षिणं तु करं               | २२१          | ऋतिकिपतृव्य-           | ११०     |
| <b>स्मृतिचन्द्रिका</b> |         | निर्धनो धनसाध्येषु           | २२           | एकभृत्यकपल्नीनाम्      | ५६४     |
| पृ. ३८ पं. २           | १११     | रात्रेस्तु पश्चिमे यामे      | २०९          | एकस्मिन्शोभने          | १४५     |
| पृ. ६७ पं. ११          | १२४     | वनस्पतिगते                   | ३०३          | एकादशातीत              | ६६५     |
| पृ. ९२ पं. १७-२५       | २१७     | वाजपेये क्रतौ                | २२           | एकादशो द्वादशोऽहिं     | ६६५     |
| पृ. १५                 | २२८     | विवाहहोमे प्रकान्ते          | १३७          | एकादशोऽहिं             | ६५३     |

| क्रषिः                | पृष्ठम् | क्रषिः                      | पृष्ठम् | क्रषिः                 | पृष्ठम् |
|-----------------------|---------|-----------------------------|---------|------------------------|---------|
| <b>स्मृतिरत्नम्</b>   |         | <b>स्मृतिरत्नम्</b>         |         | <b>स्मृतिरत्नम्</b>    |         |
| एकादशोऽहि संप्राप्ते  | ६४५     | धौतवस्त्रैः                 | १२३     | षंठांघबधिर             | १००     |
| एकामुलकम्य            | १५१     | नन्दायां भार्गवेऽर्के च     | ६१०     | षष्ठी च द्वादशी        | ४५६     |
| एकाहमुपवासः           | ६०७     | न पादौ धावयेत्              | ४५९     | संपर्कमशनं पानं        | ५४०     |
| एकाहात् क्षत्रिये     | ५४२     | न सोपानत्पादुको             | २१४     | सकर्दमं तु             | २१९     |
| एकेऽभ्युदितहोमाः      | ३५९     | नित्यं नैमित्तिकं           | ४७९     | सहन्त्रियन्ते बहवः     | ६३८     |
| एकोद्दिष्टं तु        | ६५९     | पिता माता तथा               | १०४     | सत्यामाचमना            | २३६     |
| ओरसः पुनिकापुत्रः     | १०१     | प्रणवव्याहृतीनां            | ४५६     | सन्ध्ययोनैव            | १५९     |
| कदलीगर्भपत्रे         | ४१९     | प्राणाहुत्यूर्ध्वं          | ४२०     | सपिण्डीकरणे त्रीणि     | ६६६     |
| कन्यां लक्षणसंपन्नां  | ४५      | प्रेतश्राद्धं सपिण्डयन्तं   | ५६६     | सप्तमे चाष्टमे         | ८७      |
| कार्यै रूपैस्तथा      | ३६१     | प्रेतेभ्यस्तु स्वर्णेभ्यः   | ६०९     | सर्वैः स्वजन्मदिवसे    | ८१      |
| किंचिद्देयमिति        | ५८३     | प्रोक्षितं भक्षयेत्         | ४५१     | सुवर्णा कनका           | ३६३     |
| कुंकमागुरु            | ३८७     | चालनामदन्त                  | ५१०     | सूतके होमवत्कर्म       | ४७९     |
| कुशं पवित्रं ताम्रं   | २३२     | ब्राह्मणं त्वनधीयान         | ४०९     | सूर्यामिरुद्रदेवानां   | ३२१     |
| कोविदारं कर्जं च      | ३६०     | ब्राह्मणस्य सदाश्रीयात्     | ४४२     | स्नात्वा शुचिः         | २००     |
| कौपीनयुगुलं           | १८५     | ब्राह्मणानां नृपाणां        | ३०८     | सुक्पाणिकमना—          | ११०     |
| गायत्री मूल्यमादाय    | ३३६     | ब्राह्मे स्नानेन सूर्यार्थे | २२९     | हतं विच्छमदानेन        | ३५६     |
| गोमूत्रं गोमयं        | ३६७     | भूदेवस्तप्तमुद्रा           | २९९     | हस्तं प्रक्षालयेत्     | ४२२     |
| घृतात्केनं घृतात्     | ४३७     | भोक्ष्यमाणो ह्विराचामेत्    | २३७     | हस्तयोरुभयोद्दौ        | २३५     |
| चंडालं पतितं          | ४२८     | मकारं मन                    | ३३६     | हुतामिर्विदितगुरुः     | ४५५     |
| चतुर्दशभूतः           | ६१३     | मनुवृहस्पतिः                | ८       | — १६२, १७६, २३४,       |         |
| चतुर्भुजं महादेवं     | २९०     | मन्त्रैवेष्णव               | ३८४     | ३४३, ४१८, ४१९, ४२०,    |         |
| छन्दो गायत्री         | ३२८     | महाभारतमाख्यानम्            | २१०     | ४५३, ४५३, ४०४, ४१४,    |         |
| छायामन्त्यश्वपाकादेः  | २६६     | मृतस्य यावदस्थीनि           | ५४३     | ४१७, ४१९, ५०४, ५०८,    |         |
| जनौ सपिण्डाः          | ५०१     | यवानां त्रीहिंशालीनां       | ४०४     | ५१९, ५३१, ५३५, ५६९,    |         |
| जलजानां च सर्वेषां    | ३७४     | यस्य संवत्सरात्             | ६५८     | ५८५, ५१८, ६१४, ६३९     |         |
| जानुभ्यामूर्ध्वमाचम्य | २२८     | याजानाभ्यापने               | ३०      | <b>स्मृतिरत्नसारम्</b> |         |
| ततस्तु नाम            | ८१      | यावन्मासत्रयं               | ४१९     | अज्ञातकुलगोत्र—        | ४१३     |
| तैलयन्त्रेक्षु        | ४३९     | लशुनं गृजरं चैव             | ४३३     | <b>स्मृतिरत्नावलिः</b> |         |
| त्रेधा रुत्वा यामिनीं | १५०     | लोकामावितरौ                 | ५७२     | अच्छिन्नपादं           | ३३९     |
| द्रंतशोधनकाष्ठं       | ४५३     | लोहितो यस्तु                | ६४६     | गृहमेधिनि यत्प्रोक्तं  | २०९     |
| दक्षिणे रेचकं         | ३२४     | वत्सरान्ते तु               | ६५१     | देवतार्चनमंत्राणां     | ३७२     |
| दर्शः संकमणं          | ६१२     | वामहस्ते स्थिते दर्भे       | २३२     | प्राणामिहोत्रात्       | ४२३     |
| दर्शो दशाहमध्ये       | ६१४     | वासस्तिरोहितं               | ४६४     | भोक्तुकमे यदा          | ४१८     |
| दशाहाभ्यन्तरे         | ६१४     | शयनस्थो न भुंजीत            | ४२८     | मध्यमानामिकां          | ३०३     |
| दिवा तिथौ तु          | ४१३     | शरावे भिन्नपात्रे           | ३५७     | वर्षव्योऽधिका          | १०९     |
| दिवैव तर्पणं          | ६०७     | शुद्धयैव तु                 | ३३८     | संपुटैकषडोकारा         | ३३९     |
| देशान्तरगतो विप्रः    | २१६     | शुभमिच्छन्नरः               | ३९०     | सप्तवाताहतं            | २५२     |
| धर्मोऽयं सर्वं        | १६२     | श्वचण्डालादिभिः             | ६०३     |                        |         |

| क्रषिः                  | पृष्ठम् | क्रषिः                 | पृष्ठम् | क्रषिः                  | पृष्ठम् |
|-------------------------|---------|------------------------|---------|-------------------------|---------|
| सुरया लिपदेहस्य         | २८४     | सूर्यस्यामेर्गुरो      | ३२१     | अन्नेन मांसं            | ७८२     |
| स्नात्वा यज्ञोपवीती     | ३६९     | स्वाध्याये भोजने       | २९३     | अन्यदीयेन वत्सेन        | ५७४     |
| स्मृतिं विना            | ६       | स्तृतिसारसमुच्चयः      |         | अन्यमासे प्रमीतानां     | ७२९     |
| स्वकालादुत्तरो          | १४      | अशक्तः समयाचारे        | ३०३     | अन्वष्टकामु             | ७१९     |
| —                       | २२      | उत्सन्नबान्धवं प्रेतं  | ५६६     | अपराह्णे तु             | ७०९     |
| —                       | ३४३     | गृहस्थो ब्रह्मचारी     | ३३९     | अपसव्येन यस्त्वन्नं     | ८०३     |
| स्मृतिसंग्रहः           |         | त्र्यायुषश्चैव         | २९०     | अपि वानूचानेभ्य         | ७४५     |
| एकपाकेन वसतां           | ४०५     | परेद्युरनुयाने         | ६७८     | अपि वा मातरं            | ८८९     |
| कौपीनाच्छन्नं           | ९४      | पूर्वं निमन्त्य        | ६७६     | अपुच्चस्य परे           | ६७०     |
| गायत्रीं मूल्यमादाय     | ३१      | मुहूर्ते चतुरधे        | ३५८     | अपुत्रायाः सप्तनीजः     | ५६४     |
| त्रिपुङ्गं भस्मना       | २९५     | स्मृतिसारसुधानिधिः     |         | अपुत्रोज्जनिक           | ७४८     |
| देवार्चनपरो             | ५१      | अग्निभिर्वामिना        | ५८३     | अपूपभक्षणे भुक्तौ       | २२०     |
| निमज्ज्य देवर्षि        | २५१     | स्मृत्यन्तरम्          |         | अपूर्णद्वादशाब्दानां    | ६७१     |
| पुनर्दृहि दिनं          | ६३५     | अज्ञाने यस्तु          | ७३८     | अपेहितं द्विजो          | ८०७     |
| ब्रह्मचारी तु           | ९७      | अंगारेण भवेत्          | ८७०     | अब्दादुपरि संस्कार      | ६३४     |
| स्मृतिसारम्             |         | अकालमरणे मुक्त्वा      | ६३३     | अभिश्ववणहीनो            | ८०७     |
| अप्रबुद्धे तु           | ३९७     | अकाले यत्कृतं          | १५      | अमन्त्रपूर्वं दृधानां   | ६२६     |
| आब्दिके समनुप्रासे      | ३८२     | अरुत्वा पार्वणं        | ८०३     | अमापातश्च               | ७६२     |
| एकवेदस्य चैकं           | ९१      | अरुत्वा प्रेतकायाँणि   | ६९७     | अमायां तु दिवा          | ८५६     |
| एलालवंगकर्पूर           | २२६     | अग्निना भस्मना         | ४२७     | अमाया च सृतियस्य        | ६९३     |
| कराये करपृष्ठे          | २१७     | अग्निरित्यादिभिः       | ३०२     | अमाश्राद्धं गयाश्राद्धं | ६९३     |
| कुर्याच्चत्वारि         | १७७     | अग्न्यभावे घृताभावे    | ५४२     | अमा सोमेन               | ७४४     |
| कुशाः काशा यवा          | २३४     | अच्युतायैः समाचामेत्   | २२८     | अयोरूपं द्विजं          | ८७३     |
| कृत्वावकुण्ठनं चात्र    | २१२     | अज्ञातिं च नरं         | ६१७     | अर्कद्विपर्वराच्चौ      | ४४९     |
| क्षीरं लवणसम्मिश्रम्    | ८८२     | अतिशुक्लोग्र           | ७८५     | अर्धयेद् ब्राह्मणान्    | ८०९     |
| क्षीरे तु लवणं          | ४३८     | अतीते द्वे तु          | ६०८     | अर्धाजलिमपः             | ५८५     |
| गन्धीरुतपवित्रेण        | २३१     | अतीते पक्षिणीकाले      | ५३५     | अवर्जयित्वा             | ५९३     |
| च्छेदे विनाशो वा        | ९०      | अथानुगतवह्निः          | ५७०     | अष्टम्यां च चतुर्दश्यां | २४४     |
| पत्नी भाता च            | ५६६     | अथोर्ध्वं कृष्णपक्षस्य | ६१२     | अष्टैतान्यव्रत          | ८४५     |
| मध्यमानामिकां           | ४२३     | अदत्तमन्नं             | ८०८     | अष्टोत्तरशतैर्माला      | ३४२     |
| मातुलस्य सुतां          | १३०     | अदत्तमन्नं विप्रस्तु   | ८०५     | असंस्कृतप्रमीता         | ८९३     |
| मौर्जीयज्ञोप-           | ३५      | अनम्नेमरणात्           | ५३९,६०८ | असपिण्डो यदि            | ६९८     |
| यज्ञोपवीतिना            | ३८१     | अनाथमनुपेतं च          | ५४२     | असामर्थ्याच्छरीरस्य     | २९१     |
| रक्तमाल्यं न            | ४६५     | अन्तर्दशाहे तत्कर्तुः  | ६३५     | अस्थिसंचयनं             | ६०६     |
| विप्रस्य दृक्षिणे भागे  | २२०     | अन्तर्दशाहे दशः        | ६१४,६१६ | अस्थिसंचयनं चैकं        | ६४३     |
| श्रावण्यां पौर्णमास्यां | ३२      | अन्नं निधाय            | ८०२     | अस्थना पलाशवृन्तेवा     | ५३७     |
| सर्वस्य प्रभवो          | ४८      | अन्नस्य क्षुधितं       | ५०      | अहत्पात्रपि यथा         | ८७२     |

| ऋषिः                   | पृष्ठम् | ऋषिः                    | पृष्ठम्  | ऋषिः                      | पृष्ठम्  |
|------------------------|---------|-------------------------|----------|---------------------------|----------|
| आत्मपुत्रपितृ          | ४९८     | उभौ हस्तौ समौ           | ७९६      | कन्याज्ञ्यस्मै प्रदातव्या | १३९      |
| आदित्येऽस्तमिते        | ८५७     | ऊनद्विवन्सरात्          | ६७१      | कन्यामनुपनीतं             | ५६८      |
| आयथाद्वं निमित्तं      | ६४९     | ऊर्ध्वं पञ्चसु          | ४९६      | कपालोऽन्यः                | ५६८      |
| आधाने यज्ञदीक्षायां    | ५८९     | ऊसमानं शर्वं दृष्ट्वा   | ५४६      | कपित्थफलवच्चाद्वे         | ६०२      |
| आपोशने धार्यमाणे       | ८०६     | एकचित्यां समाहृढौ       | ६९६, ७२२ | कर्णे जपेदीशवाक्यं        | ५५२      |
| आद्वमम्बुधटं           | ६९०     | एकत्र निक्षिपेत्        | ६०२      | कर्ता भोक्ता च            | ७८०      |
| आद्विंकं प्रथमं        | ६९६     | एकत्र मासाद्विनयं       | ७२६      | कर्तुश्च पुत्रदाराणां     | ७८८      |
| आद्विंके समनु          | ७३७     | एकदा क्रियमाणानां       | ७५३      | कलाद्वयं त्रयं            | ८४७      |
| आद्विंके समनुपासे      | ७१६     | एकपंक्तौ तु             | ४२८      | कलार्धनापि                | ८३९      |
| आमलवयाः फलं            | ४३८     | एकभक्तेन नक्तेन         | ८४८      | कुर्याद्वामनवस्यां        | ८३६      |
| आरम्भदर्शी             | ७३४     | एकमासि तिथि             | ७०४      | कूण्डाण्डं माहिषं         | ७८५      |
| आरुद पत्नी             | ६४२     | एकश्वेद्वाल्पणो         | ७७८      | कृच्छ्रादिकरणाशक्तौ       | ५५०      |
| आर्द्रवस्त्रो वहिः     | ५५४     | एकस्मिन्द्वयोः          | ६६२      | कृच्छ्रो देव्ययुते        | ५५०      |
| आवाहनामौकरणं           | ७३८     | एकादशाहे यदि            | ६४८      | कृच्छ्रोऽयुतं तु          | ९४३      |
| आवाहनासने              | ७९३     | एकादशाहे पण्मासे        | ६४५      | कृतचौडस्य विप्रस्य        | ५१०      |
| आवाहनेऽर्घ्ये          | ५७९     | एकादशाहे संग्रासे       | ६४८      | कृतचौलोऽनुपेतस्तु         | ५६०      |
| आवृत्तिरन्य            | ७२८     | एकादशीं परित्यज्य       | ८४६      | कृते श्राद्धे             | ६२१      |
| आशौचं कर्ममध्ये        | ४८३     | एकादशी तथा              | ८२६      | कृते सपिण्डीकरणे          | ५१४      |
| आशौचं द्वादशाहान्तं    | ६९८     | एकादशी तु               | ८४०      | कृष्णपक्षे तृतीयायां      | ४०       |
| आशौचमध्ये              | ६०२     | एकादशी तु संपूर्णा      | ८४२      | कृष्णपक्षे उप             | ७६४      |
| आशौचान्तः कीकसादेः     | ५३७     | एकादशी न लभ्येत         | ८४३      | केशानाश्रित्य             | ५९०      |
| आशौचान्ते तु           | ५९१     | एकादशी यदा              | ८४०, ८४३ | गर्भादिप्राशनान्तानि      | ६९२      |
| आशौचे तु               | ४७८     | एकादशे भवेत्            | ६५२      | गवामभावे निष्कं           | ५५४      |
| आसनेषु सद्भेषु         | ७८८     | एकादशोऽहनि              | ६४७      | गान्धारिका पटोलानि        | ७८४      |
| आस्यतामिति             | ७९५     | एकादशोऽन्हि             | ६५०, ६५० | गुरुशुक्रारश-             | ६१०      |
| इन्दुक्षये यदा         | ६१३     | एकोत्तरं यथाशक्ति       | ५९८      | गृहस्थस्तु ख्ववंतीषु      | २५७      |
| इष्ट्यादि सर्वं काम्यं | ७३२     | एकोद्विष्टं यत्र यत्र   | ६६१      | गोत्रस्य त्वपरिज्ञाने     | ६८२      |
| उत्थाय वामहस्तेन       | २१५     | एकोद्विष्टेषु           | ३८१      | गोत्रान्तरप्रविष्टास्तु   | १०३, ५२१ |
| उत्सुजेद् वृषभं        | ६४६     | एकोद्विष्टेषु सर्वेषु   | ३८१      | ग्रस्यमाने रवौ            | २७३      |
| उदूक्या सूतिका         | ७८६     | एतानि पतितानां          | ९२०      | ग्रहणे तु द्वितीयेऽन्हि   | ७१७      |
| उद्गमुखस्तु देवानां    | ७९३     | औपासनामि                | ३६५      | ग्रामस्थे शवचण्डाले       | ५४१      |
| उद्यं याति चादित्ये    | ६१३     | औपासनाग्नौ              | ६४४      | घृतकुम्भे निषाद्यैनं      | ६३३      |
| उदुत्यं चित्रं         | ३२०     | औरसे तु समुत्पन्ने      | १४६      | चण्डालं पतितं             | २६९      |
| उद्धाहांकुर आरब्धे     | ४८८     | औरसो दत्तको वापि        | ६६९      | चण्डालस्य चतुःषष्टि       | २६६      |
| उपनेतुभजेत्            | ५२१     | कण्ठादूर्ध्वं वपेदाद्ये | ५९९      | चण्डालादुदकात्            | ४८८      |
| उपमूलान् समास्तीर्थं   | ८१६     | कदली जातयः पञ्च         | ७८२      | चतुरश्रं तीर्थपीठं        | २६३      |
| उपविष्टेषु विप्रेषु    | ८०९     | कनिष्ठायां मृतायां      | ५७१      | चतुर्थमध्यं               | ३१४      |
| उपायनो हि              | ९८      | कनिष्ठेन कृतं           | ६२४      | चतुर्थे प्रहरे            | ७११      |

| क्रषिः                     | पृष्ठम् | क्रषिः                    | पृष्ठम् | क्रषिः                | पृष्ठम् |
|----------------------------|---------|---------------------------|---------|-----------------------|---------|
| चतुर्थे स्यैरिणी           | ६८८     | त्रयोविंशति               | ५१३     | न पुञ्चस्य पिता       | ५६६     |
| चतुर्मुहूर्तं द्वादश्याम्  | ८५०     | त्रिवर्षादि देहेत्        | ६०८     | नमो ब्रह्मण           | ३७०     |
| चतुः शकाधिकैर्विष्णैः      | ५४१     | दंपत्योः सह               | ६३७,६३८ | नरं पर्णमयं           | ५३७     |
| चतुःसंवेष्ट्य              | २५०     | दग्धास्थि पित्रोः         | ५३७,६२९ | नवभिर्द्विष्टैः       | ६१९     |
| चन्द्रक्षये मृतोऽनाथो      | ६१३     | दत्तस्य पुत्रजनने         | ५२४     | नवश्राद्धं तु         | ६०५     |
| चान्द्रायणं त्रयः          | ५५५     | दत्तस्वसरि                | ५२८     | नवश्राद्धं सपिण्डत्वं | ५५६     |
| चितिग्रथा यदा              | ६४४     | दत्ताऽनूढा च              | ५१५     | न शिला न मृदा         | ६२४     |
| चौलाद्वे च विवाहाद्वे      | ५१३     | दर्शी क्षयाह              | ६९५     | नाड्यः षोडश पूर्वेण   | २७३     |
| चौलोपतयने चैव              | ९१५     | दर्शी तिलोदूकं            | ७३७     | नान्दीमुखेण्टका       | ७१८     |
| जननेष्येतन्                | ४९९     | दर्शी रविघ्रहे            | ७१७     | नालिकेरोदूकं          | ८६५     |
| जन्मत्रयं संचयने           | ६१०     | दशप्रणवसंयुक्तैः          | ९३५     | नासपिण्डीकृत्तेः      | ६९८     |
| जर्त्तिलाश्रैव             | ७८८     | दशम्याः प्रान्तमादाय      | ८३९     | निमंत्रितानां         | ७८७     |
| जले प्रवाहे कूले           | ६११     | दशाहमध्ये दर्शः           | ६१२     | निर्मात्र्यमपि        | ७४२     |
| जीवतस्तु पिता              | ७२१     | दशाहान्तं सपिण्डानां      | ५३८,६२७ | निवीतिनो वहेयुः       | ५८९     |
| जीवन्त्यां मातरि           | ७५१     | दद्यमाने शवे              | ५८४     | निशायां कृष्णपक्षे    | ५५६     |
| ज्ञातिभिश्चाद्वासोभिः      | ५१८     | दारकर्मण्यशक्तः           | ५६९     | निशावशेषे             | ५३०     |
| ज्येष्ठस्य तु कर्तोर्मध्ये | ५६०     | दिग्ंबरं मुक्तकच्छं       | ४६२     | पचेदन्नानि            | ७८०     |
| ज्येष्ठस्वसृणां            | ५८०     | दुर्मृतानां च             | ६३०     | पच्छोत्यर्धर्चं       | २९९     |
| ज्येष्ठानां तु सपिण्डानां  | ५८६     | दूरे पिताऽनभि             | ५७१     | पतितस्योदूकं          | ६००     |
| ज्येष्ठाभार्या मृता        | ५७१     | देवतान्तरनामानि           | ४२३     | पत्नी भ्राता च        | ५६५     |
| ज्येष्ठा विवाहवन्हौ        | ५७२     | देवर्णितर्पणं कृत्वा      | २४९     | पत्न्यग्रजपितृव्याणां | ६६९     |
| ज्येष्ठो वाऽपि कनिष्ठो वा  | ५५७     | देशान्तरे प्रमीतस्य       | ५७४     | पत्न्योरेका यदि       | ५७१     |
| ततः समाप्ते                | ५९४     | देशान्तरे स्थितः          | ५८८     | परस्याशौचिनः          | ५०२     |
| तत्रासनानि देयानि          | ७९५     | दैवं पिता ततो             | ७५१     | पवित्रपाणयः सर्वे     | ७३५     |
| तथायुज्यहितार्थाय          | ३७४     | दैवविप्रकरे               | ६४६     | पश्चिमाभिमुखो         | ५८३     |
| तदहश्येत्                  | ६५४     | द्वादशाब्दात्परं          | ६३०     | पाते पर्वणि           | २८४     |
| तर्पयेत्तिलसंमिश्रं        | ७३७     | द्वादशाहे यदा             | ५१५,६५३ | पात्रे यवकुशाः        | ८१३     |
| तस्मात् प्रथमं             | ७७७     | द्वादशोऽहनि               | ६६५     | पाददेशे तु            | ८०१     |
| तस्मादुभयसंबद्धः           | ५६१     | द्वादश्येकादशी            | ८४६     | पादमात्रमवच्छाद्य     | ५८०     |
| तावद्विः पलाशपर्णैः        | ५७४     | द्वारस्य दक्षिणे          | ६००     | पादेन स्थापयेत्       | २५०     |
| तिथिक्षये सिनी             | ७३९     | द्विगुणं क्षत्रियस्योक्तं | ८७३     | पितरि प्रोषिते        | ६३९     |
| तिथ्यक्षयोर्यदा            | ८३५     | द्विगुणा यामनश्छाया       | ७०९     | पितरि प्रोषिते प्रेते | ६२९     |
| तीर्थे पापं न              | ५५      | द्विजभोजन                 | २३      | पितरौ प्रमीतौ         | ६४०     |
| तृणं वा यदि वा             | ८८६     | द्वितीया तु               | ८३९     | पिता पितामहः          | ५२४     |
| तृणपर्णैः सदा              | २४४     | नक्तं निशायां             | ८२९     | पितुर्दशाहमध्ये       | ५८८     |
| तृणराजाव्हय                | २४३     | नमप्रच्छादनं कर्म         | ५९६     | पितृकार्येषु सर्वेषु  | ७७६     |
| तृणानि वा गवे              | ८२२     | न दानं नैव वरणं           | ६३३     | पितृदक्षिणत्वराले     | ५८८     |
| तृतीयमासादारभ्य            | ४६६,५४३ | नद्यादि देवसत्तेषु        | २५१     | पितृदैवतयोः           | ८१३     |

| क्रषिः                   | पृष्ठम्   | क्रषिः                     | पृष्ठम्  | क्रषिः                     | पृष्ठम्  |
|--------------------------|-----------|----------------------------|----------|----------------------------|----------|
| पितृमातृपति              | ८४८       | प्रेतस्य वत्सरात्          | ६३५      | मातृष्वसामातुलयोः          | ५२५      |
| पितृव्याघजयोः            | ७२२       | प्रेतस्य वासः स्त्रू       | ५४४      | मात्राशौचस्य मध्ये         | ६३६      |
| पित्रोमृतदिनात्          | ७५२       | प्रेतस्यास्थीनि            | ६०९      | मानस्तोकेति                | ३०१      |
| पित्रोमृताद्वे गर्भाद्वे | ५१४       | बहूनामेकवंश्यानां          | ६३०      | मासिकं सोदकुम्भं           | ६८३      |
| पित्रोमृतौ चेत्          | ५३४       | बालापत्या तु               | १६२      | मासिकानां तु               | ६५३      |
| पित्रोश्चैव पितुः        | ५५८       | बीजानां वापनं              | ५८६      | मासे संवत्सरे              | ७०४, ७३० |
| पुत्रश्च दुहिता चैव      | ५६२       | बीजिनः क्षेत्रिणश्चैव      | १२९      | मुख्यकर्त्तांगमे           | ६२३      |
| पुत्रस्त्वकृतचौलोडपि     | ५५९       | ब्राह्मणानां विना          | ५५३      | मुख्यकर्त्तांडगमेऽन्यस्तु  | ६१६      |
| पुत्रस्त्वनुपनीतोऽपि     | ५५९       | ब्राह्मानुहूत्ताद्यः       | ५५५      | मुनिभिर्भिन्न              | ६१६      |
| पुत्रः पित्रोस्तु        | ५३८, ६२८  | भक्ष्याभक्ष्याण्य          | ९९६      | मूकोन्मत्तौ न              | ९००      |
| पुनः प्रभातसमये          | ८४९       | भाषाभेदो महा               | ५२३      | मृतं पतिमनुवज्य            | ६४९      |
| पुराणपात्रपक्तं          | ७८०       | मिन्नस्थानगतौः             | ७१४      | मृतायां तु                 | ५७१      |
| पुष्टेस्तु गन्धमाल्यां   | ५८०       | भुक्तिक्रियायाः            | ८११      | मृते च सूतके               | ५४७      |
| पूर्व गृहीताशौचानां      | ५३८       | भुक्तिपात्रस्थं            | ८१८      | मृते भर्तरि                | ६८८      |
| पूर्वगृहीताशौचानां       | ६२८       | भुक्त्वोच्छिष्टः           | ४५३      | मृतेऽहनि तु                | ७१५      |
| पूर्वमेव मृता            | ५६८       | भोज्यपात्रेणाज्य           | ८०४      | मृत्पात्रेणार्थं           | ७१८      |
| प्रतिष्ठादिषु कालेषु     | ५४१       | भ्रातरः पितरः              | ५९०      | मेषादिस्थे सवितरि          | ६९९      |
| प्रत्यक्षमरणे पित्रोः    | ५५३, ५८८, | भ्रातुर्देशान्तर           | ५३६, ६२३ | यज्ञे संभृतसंभारे          | ४८३      |
|                          | ६३४       | भ्रातुर्स्तु पत्नीभर्गिनीं | ९२९      | यत्रकुत्रस्थितः            | ५२३      |
| प्रत्यद्वं प्रतिमासं     | ६३१       | मंत्रवत्संस्कृतस्यापि      | ६१७, ६२६ | यथेकुहेतोः                 | ४        |
| प्रत्यद्वाङ्गं तिलं      | ७१८       | मंत्रेण विकिरं             | ८१२      | यथैवात्मा तथा              | ५६५      |
| प्रत्याद्विके तिलं       | ३८३       | मधुमांसं न दातव्यं         | ७६९      | यदभिर्दूरतो                | ६८३      |
| प्रथमाद्विकमारभ्य        | ३८२       | मध्यान्हव्यापिनी           | ७१२      | यदा संवत्सरात्             | ६५२      |
| प्रथमेऽहनि यः            | ५११       | मध्याह्नः सज्जा            | ७८८      | यदि कन्या पितुः            | ५१७      |
| प्रदोषव्यापिनी           | ८५२       | महालयं चाद्विकं            | ३८२      | यदि नष्टो मृतो             | ६०३      |
| प्रमीतपितृकः             | ७३५       | महालये गयाश्राद्वे         | ६७०      | यदेन्दुः पितृदेवत्ये       | ७४९      |
| प्रांकणे मण्डले          | ७९१       | मातापित्रोमृतौ             | ५३२      | यद्यमान्तर्दशाहे           | ५२२      |
| प्राचीः पूर्वमुदकसंस्थं  | ३५४       | मातापित्रोवती              | ५५९      | यमला चैकगर्भे तु           | ५५७      |
| प्राजापत्यं चरन्         | ९४३       | मातापित्रोः                | ६९५      | यवीयसां पितृव्याणां        | ५८९      |
| प्राजापत्ये तु           | ९४४       | मातापित्रोः क्षयाहे        | ७२३      | यस्तु रामनवम्यां           | ८३६      |
| प्रातः प्रतिदिनं         | ४७१       | मातामहस्य तत्पत्न्याः      | ५८९      | यस्मिन्नहनि संक्रान्तेः    | ७०४      |
| प्रायः पित्र्येषु        | ६०१       | मातुर्सृतेऽन्हि            | ७२०      | यस्मिन्मासि मृतिः          | ६९९      |
| प्रेतकर्मणि वक्तणां      | ५४०       | मातुलानुज                  | ६६९      | या नारी भर्तृसुतयोः        | ६४६      |
| प्रेतकर्मोपदेशित्वं      | ५४०       | मातुः पितुश्च              | ६७९      | यानि शाखाणि                | २९९      |
| प्रेतकार्येषु सर्वत्र    | ६४९       | मातुः पित्रोमृतुलस्य       | ५६७      | यावत्पृष्ठमास-             | ४९०      |
| प्रेतत्वस्य विमोक्षार्थं | ६४७       | मातुः पित्रोमृतुलादेः      | ६८४      | रवौ पुष्पं गुरौ            | २८५      |
| प्रेतपक्षे चतुर्दश्यां   | ६६२       | मातुः सपिण्डीकरणं          | ६८०      | राष्ट्रक्षोभे नृपाक्षिप्ते | ४७७      |
| प्रेतस्य पार्श्वयोः      | ५८१       | मातृविद्वा प्रशस्ता        | ८३१      | रात्रौ प्रहरपर्यंतं        | ३५६      |

| ऋणिः                       | पृष्ठम् | ऋणिः                        | पृष्ठम्  | ऋणिः                    | पृष्ठम्  |
|----------------------------|---------|-----------------------------|----------|-------------------------|----------|
| रोचत इति                   | ६९४     | श्राद्धं मातामहानां च       | ५६२      | साध्वीनामेव             | ६४१      |
| वत्सरान्तेऽथ मध्ये         | ५९४     | श्राद्धपंक्तौ तु            | ६१०      | साश्रमं नैव             | ६१०३     |
| वर्षश्चाद्वे तु संप्राप्ते | ४८३     | श्राद्धभूमिं गयां           | ७१६      | सूक्ष्मस्तोत्रजपं       | ७१४      |
| वर्षे वर्षे तु             | ६५९     | श्राद्धे च भान्वकं-         | ५९५      | सूत्रं तु दक्षिणे कर्णे | २१२      |
| वस्त्रधान्यादि             | ४६९     | श्राद्धे निर्मितितो         | ७७९, ७८० | सूर्यश्चेत्यनुवाकस्य    | ३१८      |
| वस्त्रपाणाणकुम्भानां       | ६०२     | श्राद्धे भुंजन्             | ६१०      | सूर्यस्य सिंह           | ७६१      |
| वासांसि वाससि              | ७९०     | श्रुणोत्यनिर्दशं            | ६१६      | सोदर्याश्च मुतायाश्च    | ५२७      |
| विद्यमानधनो                | ७७१     | श्वसूकरशृगालादैः            | ५५६, ६०९ | सौरमासे तिथ्यभावे       | ७०५      |
| विद्वद्वाक्षण              | ८६६     | श्रोभूते नित्यकर्माणि       | ३०८      | सौरे वर्षे पंचमे        | ७२४      |
| विना यज्ञोपवीतेन           | ९२२     | षोढा विभज्य रजनीं           | ...      | स्तेनाभिशस्त            | ७७५      |
| विप्रगर्भे पराकं           | ८९४     | संकल्पः सूक्ष्मपठनं         | २४६      | श्रीमृताहे श्वियो       | ६७९, ७२० |
| विश्वेदेवा द्वितीयो        | ८१०     | सन्धिः संगवतः               | ३३       | श्रीशुद्धिर्थं          | ४७५      |
| विहितं यद्कामानां          | ८६७     | संनिधाने सपिण्डानां         | ५८८      | स्नात्वा स्वशक्त्या     | ५७९      |
| वैश्वदेवाहुतीः             | ८१९     | संपूर्णकादशी                | ८४२      | स्पृष्टस्पृष्टिं भाषणं  | ५००      |
| विष्णवर्षणविहीनं           | २९३     | संपूर्णकादशी यत्र           | ८४१      | स्पृष्टा रुद्रस्य       | २६७      |
| वृत्ते पितरि               | ६६४     | संभोजनी नाम                 | ७३९      | स्मृतानामेक             | ६३९      |
| वृद्धे पितरि संन्यस्ते     | ६७४     | संमार्जितोप                 | ७९१      | स्नावे चैव पितुः        | ४९३      |
| वृश्चिकादित्रिमासेषु       | ७०५     | संस्काराणां तु              | ६३५      | स्वगोन्नादभृत्यते       | ४९८      |
| वृषद्विनो मृतो             | ६४६     | सकृत्प्रसिद्धत्             | ५९९      | स्वभर्तृप्रभृति         | ७३७      |
| वैदिकैर्मन्त्ररहितं        | ३०८     | सद्यः स्पृश्यो गर्भदासो     | ८८६      | स्वमातृपितृदीक्षायां    | ५९२      |
| वैश्वदेवाहुती              | ४०७     | सपत्न्याः पुत्रवत्वेऽपि     | ५६५      | हन्ता मन्त्रोपदेशा      | ८६३      |
| व्याधितां श्वीप्रजां       | १५१     | सपिण्डनं विना               | ६६७      | हस्तेऽग्नौकरणं          | ६८५      |
| व्युत्क्रमाच्च प्रमीतानां  | ६७३     | सपिण्डीकरणात् ६६९, ६९३, ७१९ | ५९२      | हिरण्ये तूदकं           | ३८२      |
| व्रते चान्द्रमासं          | ७०३     | सपिण्डीकरणादूर्ध्वं         | ५९३      | होमस्तत्र न कर्तव्यः    | ४०६      |
| शयनिबोधनी                  | ८४५     | सपिण्डीकरणे                 | ६८७      | —                       | २२४,     |
| शवं दग्ध्वा यथा            | ५८५     | सपिण्डीकरणे प्राप्ते        | ६८७      | ४२३, ४९५, ४९७, ६९०,     |          |
| शवचण्डालपतित               | २६४     | सपश्याहृतिसंयुक्तां         | ३२४      |                         |          |
| शवानुगमने                  | ५८५     | सब्रह्मचारिणि               | ५२९      | स्मृत्यर्णवः            |          |
| शाखां विदार्थं तस्यास्तु   | २४१     | समानोदक-                    | ४९६      | अज्ञेभ्यो ग्रंथिनः      | ४८       |
| शाखाशौचे दहेत्प्रेतं       | ५४५     | समानोदका कुर्विरन्          | ६००      | सर्वेषां ब्राह्मणो      | ४६५      |
| शावमाशौचं                  | ४३५     | सर्वजन्मार्जिता-            | ९३२      | स्मृत्यर्थसारम्         |          |
| शिरोवारि शरीराम्बु         | २५०     | सर्वसंगनिवृत्तस्य           | ४८५      | अग्निस्तीर्थानि         | २३६      |
| शुक्रवारे च रात्रौ         | ५८७     | सर्वाभावे पिता              | ५६६      | अज्ञल्या धावयेद्वन्तान् | २४४      |
| शुची वो हृव्या             | २५२     | सर्वेषामेव वर्णानां         | ४९६      | अतीताशौचं तु            | ५३५      |
| शुद्धाऽप्येकादशी           | ८४२     | सहैव भत्रां                 | ६४३      | अनुपनीत                 | ५११      |
| शुभागमेऽप्रकृष्टानां       | ६५७     | सामिरमावन                   | ६८५      | अनुपनीतमरणे             | ५१०      |
| शूद्रं हन्ति द्विजो        | ८७३     | सा तिथिस्तद्वै-             | ८२६      | अनुमरणे सहमरणे          | ६७९      |

| क्रिया:                 | पृष्ठम् | क्रिया:                    | पृष्ठम् | क्रिया:                     | पृष्ठम् |
|-------------------------|---------|----------------------------|---------|-----------------------------|---------|
| अन्ततस्तरुणौ सायौ       | २३०     | गायच्यान्नम्               | ४२२     | प्रणवव्याहृती               | ३७१     |
| अन्धः श्विनी च          | १४८     | गुप्तमयथाम्बु              | ३५४     | प्रतिमा लोहजा               | ४७६     |
| अभिवादे नमस्कारे        | ११०     | चतुर्थ्यां पूर्वत्रात्रौ   | ३९      | प्रभात उत्थाय इष्टं         | २०९     |
| अमृतापिधानम्            | ४५३     | चतुर्दश्यष्टमी             | ३८      | प्राचीदिशामनुकौ             | १५      |
| अस्नेह औषधे             | २३९     | चतुर्मासाभ्यन्तरे          | ४९२     | प्रातर्होमे संगवान्तः       | ३५८     |
| अस्पृश्यस्पर्शन         | ५८५     | जपान्ते प्रातः             | ३४५     | प्रातः स्नानं सदा           | २४६     |
| अस्पृश्यस्पर्शनस्नाने   | २४७     | जलादुतीर्थं वस्त्रप्रान्तं | २५०     | प्रादेशमात्रं देवाना        | ७९१     |
| आददेशादन्यदेशे          | ६०२     | जाताशौचे मृताशौचे          | ४७९     | बर्हिः काशमयं               | २३४     |
| आदशाद्विष्णे            | ७२८     | जाते पुत्रे पिता           | ८०      | बाल उपनयनात्                | ४७६     |
| आदशाद्वस्य विष्णे       | ६४८     | तैलाभ्यंगनिषेषेषु          | २८४     | ब्रह्मचारी गृहस्थश्च        | ३३८     |
| आपोशनं गृहीत्वा         | ४२३     | तैलाभ्यज्ञेनिषिद्धाः       | २८५     | ब्रह्माणमीशं विषुं          | ३८४     |
| आपोशनं वामभागे          | ४२२     | दंडः पलाशन्यग्रोध          | ९५      | ब्राह्मतीर्थेन त्रिश्रुत्वा | २२७     |
| आपोहिष्टेत्यूचा         | ३१६     | दन्तवद्धन्तलम्             | २३८     | भूतयज्ञबलि-                 | ४०१     |
| आरंभो वरणं              | ४८२     | दशाद्वस्थाने               | ५१९     | भूतलं नारी                  | ४७२     |
| आसूर्यदर्शनात्          | ३३७     | दिवोदिनानि कर्माणि         | ३५८     | भोजने केशकीटादि             | ४३३     |
| आस्यगतश्मशु             | २३७     | देवयज्ञो वैश्वदेवास्यं     | ४०३     | मातापितृमरणे ५२३,६२१        |         |
| आस्ये चान्नस्य          | ४२३     | देवरेण सुतो                | ९३      | मुखजा विप्रुषः सूक्ष्माः    | २३८     |
| आहिनाम्नेर्विधि         | ६२७     | देशान्तरादवाङ्क्र          | ५२२     | मूत्रं पुरीषं समुत्सृजन्    | २१४     |
| उच्छिष्टस्पर्शनं        | ४२८     | द्रव्याभावे द्विजाभावे     | ७९६     | मृन्मयानां                  | ४७१     |
| उच्छिष्टायुप-           | २६४     | न जले शुष्कवस्त्रेण        | २२९     | यदि कश्चित्                 | ९०३     |
| उत्तरीयशिलापात्र        | ६०२     | न महानिशि                  | २७०     | यदि कश्चित् ज्ञानः          | १२७     |
| उत्तानदेवतीर्थेन        | ३१६     | नवमिश्रपुराणानि            | ६६१     | यस्यां हतश्यतुदृश्यां       | २८४     |
| उदक्यां सूतिकां         | ४०९     | न सर्वरक्तं कृष्णं         | २५२     | रजस्वला चतुर्थेऽन्हि        | २७७     |
| उपनयनं गर्भात्          | ९०      | नात्मानं पश्यन्नाचामेत्    | २२३     | वयोवस्थाविशेषम्             | ६७१     |
| उपनयनात्                | ११७     | नान्दीमुखे गया-            | ८०७     | वसंतकालेऽपि                 | १५०     |
| उपनयनात्पाक्            | ८६      | नान्योदग्न्युदक्षेष-       | २२२     | वस्त्रं यज्ञोपवीतार्थे      | ९२      |
| उपसंग्रहणं नाम          | १११     | नान्योन्यं पृष्ठतो         | २६३     | वस्त्रादिसहित               | २४०     |
| उपात्ते तु              | १६      | नाभिच्छेदात्               | ५०५     | वामेन पात्रमुद्दत्य         | २२४     |
| उपात्ते तु प्रतिनिधौ    | ५७८     | नाशुष्कपाणिपादो            | ४२८     | वायसैः सेविते               | ६०३     |
| एकपञ्जिषु भुजानो        | ४२८     | निभित्तशाद्व               | ६३५     | वासस्तण्डुलमण्पात्रं        | ५९६     |
| एका तु मृत्तिका         | २१९     | नित्यशाद्वमैवं             | ४०२     | विष्मूत्रशुक्ल              | ४६७     |
| एते संस्कारा            | ८४      | निवीती सनकादिभ्यो          | ४०४     | पिप्राग्न्यकां              | ३६६     |
| कनिष्ठा देशिन्यज्ञान्तु | २२५     | निषिद्धदिवसे वारे          | २८५     | विवाहात्परमाधाय             | २१      |
| कन्यामरणे               | ५१५     | निष्कामणं चन्द्रं          | ८२      | वैश्वदेवास्यं               | ४०५     |
| कुकुटाण्डप्रमाणं        | ६०१     | पवित्रकर आचामेत्           | २३१     | शालिः श्यामाक               | ३६१     |
| कृच्छ्रं तस्या यया      | २७९     | पादौ प्रक्षाल्य            | ४२०     | शालमल्यरिष्ट                | २४३     |
| कोद्रवं वरकं            | ३९८     | पादौ हस्तौ प्रक्षाल्य      | २२१     | शुक्लैस्तलैदेवान्           | २४९     |
| कोविदारशमीक्षा          | २४३     | पालाशः खादिरो              | ३६०     | श्रोत्रियं वेदवित्          | ६४९     |

| क्रषिः                   | पृष्ठम्  | क्रषिः                   | पृष्ठम्  | क्रषिः                  | पृष्ठम्  |
|--------------------------|----------|--------------------------|----------|-------------------------|----------|
| पंडांधादिषु              | १०१      | हारीतः                   | ११९-१३   | ऐशान्यमिमुखो            | २२१      |
| संनिधौ यजमानः            | ३५७      | ११९५                     | १७       | कंदुपकं खेहपकं          | ४४६      |
| संशोध्य दन्तानाचम्य      | २४५      | ११९६                     | १८       | कन्यादूषी सोम           | १२२      |
| संस्काराणामयोग्योऽपि     | ३६१      | ११९७-१८                  | १८       | कन्यामकरमीनेषु          | ७४०      |
| सपिण्डीकरणात्            | ६४५, ७२८ | अरुते वैश्वदेवे          | ४१०      | काम्यश्राद्धानि         | ७६८      |
| सपिण्डीकरणेष्वेतान्      | ६७७      | अभिं स्वात्मनि           | १७१      | कालेऽन्यथा गतं          | ८२३      |
| समस्येदपि                | ३५९      | अतिथीनागतान्             | ४०८      | कालेयपालाशको            | २४२      |
| सर्वदा नित्यकामार्थं     | २५९      | अथोद्भूत्यान्            | ८०९      | कुरुष्वेत्यनु           | ८०२      |
| सर्वेषां वा भवेत्        | २३०      | अदृष्टपूर्वमज्ञातम्      | ४१३      | कुर्वीत देवतापूजां      | ३६३      |
| सायं सन्ध्यामुपास्य      | ४५६      | अधिमासे न                | ७२९      | कुर्वीत सर्वकर्माणि     | ५५३, ६१० |
| सावित्र्यादिक्रियाः      | ३४५      | अध्यापनं च               | ३१       | कुशहस्तेन यज्जसं        | २२९      |
| सूतिकास्ववर्णा-          | ४९३      | अनाश्रमी संवत्सरं        | १०२      | कृतहोमस्तु भुजीत        | ४१७      |
| सौवर्णी राजतं            | ४६८      | अनुयानेन सापिण्डयं       | ७१८      | क्लिने भिन्ने           | ४७४      |
| स्त्रीषु सापिण्डयं       | ४९८      | अन्तरुर्वोररत्नी         | २२१      | क्लिने भिन्ने शबे       | ४४७      |
| स्नेहादिना जातिषूत्कष्ट- | ५४२      | अन्नपतये नमः             | ४२१      | क्षत्रियस्याभि          | ९२३      |
| स्पृष्टे रजस्कले         | २७९      | अपराङ्गः पितृणां         | ७०९, ७३९ | गर्भाष्टमेऽद्वे         | ८५       |
| स्वकर्महानौ              | ३६६      | अप्रावृत शिरा यस्तु      | २१२      | गुडतिलपुण्य             | ९९६      |
| हस्तेनावर्तयेत्          | ३४२      | अवकीर्णी नैऋत्यै         | १२२      | गृहस्थः पुत्रपौत्रादि   | १६९      |
| हृत्कण्ठतालुगामिस्तु     | २२२      | अवेष्येत च               | ६        | गोरक्षां कृषि-          | ६६       |
| होमे मुख्यो              | ३५५      | अष्टागवं धर्म्यहलं       | ६३       | गोशृङ्गेण शतं           | ९०५      |
| — ३२ टीप, ३६५, ३६७,      |          | असंकमे तु                | ७३०      | ग्रन्थिर्यस्य पवित्रस्य | २३१      |
| ५००, ५३६, ५४६, ५६१, ७८९, |          | असंकान्तेऽपि             | ७३०      | चतुर्थीसंयुता कार्या    | ८३१      |
| हरदत्तः                  |          | आदित्येन सह              | ३१२      | चतुर्थेहि स्नाताया      | ७४       |
| अन्यः पूर्वः पतिः        | ८०७      | आद्र्वस्त्रं परित्यज्य   | ५४२      | चत्वरोपद्वारयोनं        | २१४      |
| अभिवादनस्य यत्           | ११२      | आद्र्वासा जले            | ३४५      | चाटकं कुक्कुटं          | २६७      |
| गुरुत्र पिता             | ८०७      | आद्र्वासा जले कुर्यात्   | २२८      | चान्द्रायणं नव          | ९९३      |
| जाते कुमारे              | ८०       | आहारं च रहः              | २१५      | चांद्रायणं नवश्राद्धे   | ४४८      |
| तस्मिन्विषय              | २६७      | इमं श्राद्धविधिं         | ८२२      | चिकित्सकस्य             | ५७       |
| परिसंख्येयं भोजनस्य      | ४९७      | उच्छिष्ठेन तु संस्पृष्टे | २४०      | छंदःसु पादाक्षर         | ८७       |
| वाक्फर्मजन्यो            | २        | उद्भूत्य पाणिं           | ८०९      | जपेन देवता              | ३५२      |
| शोचेऽपि यथा स्थात्       | २१५      | उपक्रमं वृषोत्सर्गं      | ७३४      | जातपुत्रे मृतजाते       | ५०५      |
| सागं सकल्पं              | ४९       | उपनीतो माणवको            | ११५      | जलात्तीरं समासाद्य      | २५१      |
| — ८६, ८९, ९४,            |          | उपास्य विधिवत्           | ३५४      | जातमृते मृतजाते         | ४९४      |
| १०८, ११२, १४३, १५२, २२४, |          | एकवक्षो न भुजीत          | ४२६      | ततः संध्यामुपासीत       | ३१५      |
| ३१७, ३६८, ३१७, ३१९, ७१०  |          | एकादशो द्वादशो           | ६६५      | ततो देवान्              | ३८३      |
| हरिवंशः                  |          | एका लिंगे तिक्ष्णोऽपाने  | २१७      | तस्य तु कुमारीं         | १५४      |
| अभिजिन्नाम               | ८३२      | एवं वनाश्रमे             | १७१      | तीर्थद्रव्योप           | ७६०      |
|                          |          |                          |          | त्रयः स्नातका           | ११९      |

| क्रमिः                      | पृष्ठम्  | क्रमिः                  | पृष्ठम्  | क्रमिः                    | पृष्ठम्  |
|-----------------------------|----------|-------------------------|----------|---------------------------|----------|
| त्रयोदश्यां यदा             | ८३८      | प्रेतनिर्हरणं कृत्वा    | ५४४      | वामहस्ते कुशान् कृत्वा    | २३२      |
| त्रिदण्डं वैष्णवं           | १८३      | प्रेतसंस्कारकार्याणि    | ६६४      | वस्तुपालनभूतेभ्यो         | ३९९      |
| त्रिः पिबेद्विक्षितं तोर्यं | २२७      | ब्राह्मणेन वधे          | ४९०      | विदितात्प्रति             | ५६       |
| दंपत्योः सह                 | ६३७      | भक्त्या च शक्तिं        | ४१०      | विरक्तः प्रवजेत्          | १७३      |
| द्वर्भासीनो दर्भपाणिः       | ३६९      | भत्रां सहानुमरणं        | ६४२      | विवर्णं गन्धवत्तोर्यं     | २२२      |
| दृशाह एव                    | ५१९      | भूतविद्वा त्वमा         | ७४०      | वेदाः प्रमाणं             | २        |
| दृशाहान्त्वृद्यथे विप्रो    | ४९५      | भूमावेव निदध्यात्       | ८०२      | वेदो विद्या ब्राह्मणस्य   | ११५      |
| दाहकायद्वयं                 | ५३३, ६३५ | भैश्मपेक्षितं           | ९७       | वैश्वदेवो देवयज्ञो        | ४०३      |
| दृष्टर्थे द्विगुणं          | ५४५      | भ्रष्टशौचं नरं दृष्ट्वा | २२०      | शंखस्त्रियमयी             | ३४२      |
| देवता पितरश्चैव             | ३८०      | मंत्रमुच्चारयेत्        | ३३९      | शङ्कसैः शतगुणं            | ३४२      |
| द्विजः पुरुषसूक्ष्मस्य      | ३९५      | मंत्रार्थज्ञे जपन्      | ३०       | श्राद्धविन्ने द्विजातीनां | ६५५,     |
| द्विविध एव                  | ७३, ५८०  | मणिवासो गृहा-           | ९२२      | ७१५, ८२१                  |          |
| द्विविधा खियो               | ८४       | मधुना परमप्रीताः        | ७८३      | श्रौतस्मार्तेषु           | २३७      |
| न कार्णायसे मृन्मये         | ४२०      | महानवम्यां              | ३७       | श्वानो वा क्रोष्टुको      | ९०४      |
| न ग्रामाभिमुखं              | ५०१      | माघे नभस्यमा या         | २३३      | श्वोनिध्यायेऽद्य          | ३९       |
| न तत्र वीरा                 | ८२२      | मातृतः पितृतः           | ६४१      | संचिन्त्य पोष्यवर्गस्य    | ३७५      |
| न यस्य वेदा                 | २        | मार्जनाचर्चन            | ३१६      | संतिष्ठमानेष्व            | ७९५      |
| न रक्तमुल्बर्णं             | २५१      | मुक्तामयोपवीतं          | ९२       | संवत्सरोत्सन्ने           | ९२१      |
| न रूप्यं केवलं              | २३२      | मृतजातेऽपि वा           | ४९४      | सकृत्संस्कृत              | ७८       |
| न शूद्रप्रति-               | ४९६      | मृतवत्सापयः             | ८०२      | सर्वे कण्टकिनः            | २४१      |
| नष्टे जलपवित्रे             | १८८      | मृतसूतक                 | ९०७      | सर्वेषामाश्रमाणां         | २०६      |
| नामिहोत्रात्परो             | २०       | मृते भक्त्यरि या        | १६१      | सस्यां सन्ध्यागतः         | ७३८      |
| नोच्चरेदनुपस्थृत्           | २३५      | मृत्योः परस्तात्        | १२१      | सायंकाले तु               | २००      |
| पंचप्राणाहृतीः              | ४२३      | य आत्मकृतैः             | १३९      | सालग्रामादिभिः            | ९१२      |
| पतितपाषंड                   | ८५०      | यज्ञेन लोका             | ११       | सावित्र्याभिमंत्रित       | ३१९      |
| पथि दर्भाश्रितौ             | २३४      | यतैतैवंविधं             | ७७६      | सुषुप्तुर्भौत्यन्         | २३५      |
| परपूर्वासु भार्यासु         | ५२०      | यथा कथंचित्             | ७३५      | सोदराणां तु               | २३       |
| पाषण्डानाश्रितात्           | ४८८      | यथा हि वेदाध्ययनं       | ६        | सोन्तर्जलं प्रविश्याथ     | २४६      |
| पित्रादीन् मात्रादीन्       | ३७८      | यदन्तं प्रतिलोमस्य      | १०६      | सौरे यदि दिनं             | ७०५      |
| पित्रोस्तत्सह               | ५२७      | यद्वेष्यो जुहोति        | ४०६      | स्त्र्युच्छिष्ठस्थिता     | ४३२, ८८१ |
| पित्र्यं तूभय               | ७२०      | यस्यैतानि सुगुहानि      | १२०      | स्वल्पकाले मृताशौचे       | ५३१      |
| पुरा जग्राह वै              | ९८       | या तु पूर्वममावास्या    | ६६७      | हयरथगज                    | ११५      |
| पूर्वाङ्गे चेद्             | ७३९      | येभ्य एव पिता           | ७३८      | हस्तदृतभोजने              | ४४८      |
| प्रतिपत्सु चतुर्दश्यां      | ३५       | यो मोहादथवा             | ३१०      |                           |          |
| प्रतिश्रुत्यानृतं           | ९२१      | रहस्ये रहस्यं           | ८६९, ९३२ | — १३२, १५४, ५०३,          |          |
| प्रत्यद्वं द्वादशो मासि     | ७३०      | लोष्टेन परिसृंजीत       | २१५      | ५०६, ६६२, ७६६, ८६८, ९०७   |          |
| प्रत्युद्वाहो नैव           | ९४८      | वसित्वा वसनं            | ३७६, ७३७ | हिरण्यकेशी                |          |
| प्राङ्मानिच्छेदनात्         | ८०       | वस्त्रनिष्ठीङ्गं        | २५३      | पाणिग्रहणादि              | ३५४      |

| ऋणिः                      | पृष्ठम् | ऋणिः                    | पृष्ठम् | ऋणिः               | पृष्ठम् |
|---------------------------|---------|-------------------------|---------|--------------------|---------|
| हेमाद्रिः                 |         | धनार्थं क्षेत्रदारार्थं | ८६२     | यो विप्रो वृषभं    | ८७७     |
| अज्ञानात् ब्राह्मणं       | ८७९     | न्यायार्जितस्य          | ५०      | रवेरस्तमयात्       | ७०४     |
| अथ चेत्प्रति-             | ९२३     | पलद्वये पञ्चगव्यं       | ८८८     | वसुरुद्रा दितिसुता | ७९३     |
| अथानुमरणे पत्नी           | ६४२     | पूर्वजः पूर्वजं         | ९१७     | वामहस्ते तु        | ३०८     |
| अनड्डान् हन्यते           | ८७७     | पूर्वजो द्रव्यलोभेन     | ९२५     | विप्रः कण्ठगत      | ९०९     |
| अन्यथा निष्क्रतिः         | ९२५     | प्रतिपात्रं द्विजे      | ८०९     | विभक्ता वाऽविभक्ता | ७४९     |
| आमापाते भरण्यां           | ७४८     | भिक्षार्थमागतां         | ७६८     | सपिण्डीकरणं नाम    | ६८३     |
| असत्प्रातिग्रहः           | ५८      | महिषीहनने               | ८७८     | सुरापं दंडयेत्     | ८७९     |
| कृच्छ्रोयुतं तु गायत्र्या | ५५०     | मातापित्रोरेक-          | ६९५     | स्नातवत्यामृतौ     | ९१९     |
| जपे होमे तथा              | ३०८     | माधूकं शैल-             | ८८०     | स्वस्याकिंचन्य     | ९१७     |
| जातके नामकरणे             | ६५७     | मेषीं च महिषीं          | ५८      | स्वस्वेष्टदेवता    | ६४५     |
| तिर्यक्पुंड्रं            | ३०९     | यथा पुष्पवती नारी       | ५५४     | हृत्वा ब्रह्मस्व   | ८८३     |
| दर्शपाते भरण्यां          | ७४८     | यदि रोगनिवृत्यर्थं      | ८७९     | हृत्वा शतपलं       | ८६५     |
| देवाचार्चाद्विष्णादिः     | ७९६     | यस्त्वासनोप             | ७८८     |                    |         |
| देवालये राजगृहे           | ८८९     | यो विप्रो विधवां        | ८९१     | -- ११५, ९२४, ९४३   |         |

ADDENDA

| ऋणिः                 | पृष्ठम् | ऋणिः               | पृष्ठम् | ऋणिः                | पृष्ठम् |
|----------------------|---------|--------------------|---------|---------------------|---------|
| आपस्तम्बः            |         | भरद्वाजः           |         | आ. २१६              | ५६      |
| २१५।१२१३-४           | १४९     | वसन्ते ब्राह्मणं   | ८७      | प्रा. ४५            | १६९     |
| आपस्तम्बगृह्यसूत्रम् |         | समाहितमनाः         | ३२४     | योगयाज्ञवल्क्यम्    |         |
| ११३।१२०              | १२५     | भविष्योन्तरः       |         | असामर्थ्याच्छरीरस्य | ५४९     |
| पराशारः              |         | मिथुनात्कर्क       | २७६     | मांत्रं भौमं तथा    | ५४९     |
| उच्चिष्ठेन्त्वा      | ४२८     | मनुः               |         | वसिष्ठः             |         |
| प्रजापतिः            |         | ५।१३७              | २३५     | आग्रेयमार्दा        | ६३४     |
| सर्वसंस्थाधिकारी     | १९      | मरीचिः             |         | विष्णुः             |         |
| बैजावापः             |         | सर्पं दृष्ट्वा यथा | ५४९     | ऊर्ध्वपुंड्रधरो     | ५४९     |
| आज्यमासिन्य          | ८०२     | मार्कण्डेयः        |         | व्यासः              |         |
| बोधायनः              |         | देवाचनादि कार्याणि | २३५     | गृहे त्वेकगुणा      | ३१५     |
| ११५।१५।१६-२१         | २२७     | यमः                |         | न १८श्चूल्यं जन     | १२४     |
| अनुष्ठितं तु         | ५       | नारदः              | १२४     | स्नास्यतो वरुणः     | ३६४     |
| अन्नाभावे द्विजाभावे | २७२     | याज्ञवल्क्यः       |         | स्वस्वोक्तवर्णं     | ३२५     |
| मातृदुहितृ           | ३५०     | आ. ६५              | १३७     | व्यासस्मृतिः        |         |
|                      | २७      |                    |         | तथा बालस्य          | ५१३     |

| ऋषिः            | पृष्ठम् | ऋषिः        | पृष्ठम् | ऋषिः                | पृष्ठम् |
|-----------------|---------|-------------|---------|---------------------|---------|
| शङ्खः           |         | शौनकः       |         | सुमन्तुः            |         |
| गृहे त्वेक गुणं | ३२९     | अप नः शोशुच | ३४८     | कूर्मांडं बृहती     | ४३८     |
| गृहे मृतासु     | ५१७     | त्वं सुमेषं | ४४९     | स्मृत्यन्तरम्       |         |
| शातातपः         |         | संवर्तः     |         | उपवासादिने यो वै    | २४४     |
| तस्माद्दहरहः    | ७०७     | रजस्वलां च  | ७७      | प्रथमेऽहनि कर्ता ये | ६१५     |